



PK Amarasimha  
925 Namalinganusasana  
A53  
1913a



PLEASE DO NOT REMOVE  
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

---

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY

---













## OPINION.

### Nāmaligānus'āsana of Amarasimha.

(With the Commentary of Kshirasvāmin.)

Of all the Sanskrit lexicons, Amarakosha is considered to be the best. Every Brahman boy who learns Sanskrit has to get this *Kāsha* by heart, in whatever part of India he lives. Its popularity is further evidenced by the number of commentaries that have been composed on it and that form a literature by itself..... But the most ancient and important of them all is that of Kshirasvāmin known as *Amarakosha-bhātana*..... This arduous work has been undertaken by Mr. K. G. Oka. Part I of it, which contains the first two *Kāṇḍas*, is already out, and Part II is in the press and is expected to come out in three or four months' time. This last will contain the third *Kāṇḍa* together with a paper on Amarasimha and Kshirasvāmin, a list of works and authors quoted by the latter, a glossary of words and so forth.

The importance of Kshirasvāmin's commentary will be patent to any one, who reads Anundaram Borooah's preface to his partially published edition of the *Nāmaligānus'āsana*. The list of the lexicographical, medical and other authorities, which the commentator quotes, is as invaluable as it is extensive, and shows the depth and versatility of his knowledge. His critical acumen also is perceptible in the places when he sets right the errors not only of Amarasimha but also of other lexicographers.....

At times Kshirasvāmin gives us a peep into the relative priority and posteriority of authors as preserved by tradition in his time, and, as such, it is of immense value..... If his interpretation is correct, Kshirasvāmin implies that Amara was prior to Chandra. Amara must therefore be taken to have flourished prior to circa A. D. 450, when Chandra or Chandragomin, teacher of Vasurāta, is supposed to have flourished.....

The importance of Kshirasvāmin's commentary does not end here. One of its unique features is the quotations it gives from the works of Sanskrit poets.....

We are thus very glad to find that the edition of *Amarakosha* together with Kshirasvāmin's commentary has been undertaken by Mr. Oka. So far as part I, which is out, is concerned, he seems to have done his work, on the whole, satisfactorily. His edition contains very few misprints, and is free from the errors which are discernible in what little of this commentary was published by Anundaram Borooah. Mr. Oka has also succeeded in tracing many more quotations in the original works of Sanskrit authors from which Kshirasvāmin has cited them.....

— D.R.B. (the Indian Antiquary for October 1912.)

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
हिमवाल्मीकि	111	130	हृद्	25	31	हेमवती	9	36
हिमसंहति	}	17	हृदयंगम	102	64		64	60
हिमानी			हृदयान्त	30	18		72	103
हिमोद्यु	16	14	हृदय	166	3	हृदयवान	78	138
हिमावती	78	138	हृषीक	174	53	होतु	148	52
हिरण्य	154	90	हृषीकेश	26	8	होम	115	17
	154	91	हृष्ट	5	18	होम	115	14
	155	94	हृष्टमानस	181	103	होम	233	10
हिरण्यगर्भ	5	16	हृष्ट	167	7	होम	230	23
हिरण्यबाह	44	34	हृष्ट	228	7	हृद	43	25
हिरण्यरेतस्	12	55	होति	12	57	हृदि	182	113
हिरण्य	228	3		198	71	हृद	99	46
	228	7	हृद	24	28	हृत्वा	74	117
हिलमोचिका	82	158	हृद	52	3	हृत्वा	79	143
ही	228	10	हृद	56	22	हृदिनी	11	47
हीन	181	107	हृद	155	94		16	9
	206	128	हृद	235	23		44	30
हुतभुक्षिषा	116	21	हृद	22	18		75	124
हुतभुज्	12	55	हृद	64	64		204	112
हुम	226	253	हृद	66	72	ही	34	23
हुति	29	8	हृद	11	49	ही	}	179
	184	8	हृद	9	38	ही		
			हृद	36	32	ही		
हृद्	11	52	हृद	129	48	ही	75	122
हृणीषा	187	32	हृद	228	7	हृद	129	48

## ADDITIONAL NOTES.

195. प्रदार्पणभाण्डामनवेक्ष्यकारिणाम्—is the first line of a verse attributed to Vyāsa in the Subhāshitāvalī. Cf. Mahābhārata Anuśāsana-parvan II. 12.
205. पर्ववर्जं व्रजेच्येनाम्—See Manu. III. 45.
208. जामयो बानि गेहानि &c.—This line is found in Manu III. 58.
211. तानि हृत्वाहृतानीव—The remaining portion of the line is—विनश्यन्ति यमन्ततः in Manu. III. 58.
213. जवे भरिष्याः पुरमेव सारम्—This quotation is found in the Brihat-samhitā of Varāhamihira LXXIV. 1.
224. भहो वत महत्कष्टम्—The whole stanza runs thus :—भहो वत महत्कष्टं विपरीतमिदं जगत् ! येनापन्नपते साधुरसाधुस्तेन दुष्यति ॥ in the Subhāshitāvalī and attributed to Vyāsa.

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
स्वाही	73	108	हरिण	27	13	हृत्पदाहन	12	55
स्वाभ्यान्	120	47		85	8	हृत्	34	18
स्वान	30	23		196	51	हृत्तनी	144	30
स्वाम्त	25	31	हरिणी	196	50	हृत्तन्ती	144	29
स्वाप	37	37	हरित्	15	2	हृत्	105	86
स्वापतेव	154	90		27	14		107	98
स्वामिन्	125	18		235	19		197	59
	167	10	हरित	27	14	हृत्तधारण	183	5
स्वाराज्	10	43	हरितक	145	34	हृत्तिन्	127	35
स्वाहा	116	21	हरिताल	237	32	हृत्तिनक	51	17
	228	9	हरितालक	156	103	हृत्तिपक	131	60
स्वित्	224	243	हरिदध	19	30	हृत्पारोह		
स्वेद	36	34	हरिद्रा	146	41	हा	227	257
स्वेदन	173	51	हरिद्राम	27	14	हाटक	155	94
स्वेर	216	193	हरिद्रु	72	102	हायन	23	20
स्वेरिणी	93	11	हरिद्रमणि	155	92		204	108
स्वेरिता	183	2	हरिद्रिमा	7	27	हार	108	105
स्वेरिन्	168	15	हरिद्रमन्यक	143	18	हारीत	89	35
ह	228	5	हरिद्रालुक	75	121	हारै	35	27
हस	19	32	हरिद्रव	10	43	हाला	164	39
	88	24	हरीतकी	64	60	हालिक	150	64
	221	227	हरेणु	75	121	हाव	36	32
हसक	108	110		142	16	हास	24	19
हसिका	69	90	हर्म्य	50	9	हास्तिक	128	37
हसे	33	15	हर्म्यध	84	1	हास्य	34	19
हस	234	18	हर्ष	24	24	हाहा	11	52
हसदिकसिनी	76	130	हर्षमाण	167	7	हि	227	258
हठ	138	110	हल	142	13		228	5
हप्ते	33	15	हला	33	13	हिंस	222	230
हत	172	41	हलायुध	6	23	हिंसाकर्मन्	185	19
हय	76	130	हलाहल	39	10	हिंस	170	28
	106	90	हलिन्	6	24	हिका	232	8
हन्त	224	245	हलिप्रिय	60	42	हिङ्गु	146	40
हन्	180	97	हलिप्रिया	164	39	हिङ्गुनिर्गांस	64	62
हव	129	45	हस्य	141	8	हिङ्गुलु	235	20
हयपुच्छी	78	139	हस्या	188	41	हिङ्गुली	74	114
हयमारक	67	77	हलक	45	36	हिजल	64	61
हर	8	33	हव	184	8	हिन्ताल	84	170
हरण	126	29		219	208	हिम	17	19
हरि	84	1	हविस्	117	27		17	20
	214	176		148	52		235	22
हरिचन्दन	11	50	हव्य	116	24		52	3
	111	181	हव्यपाक	116	22	हिमवत्		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
स्थिरतर	176	73	स्फुट	54	7	स्रोतोञ्जन	156	100
स्थिरा	46	2		178	82	स्व	96	34
	74	116	स्फुटन	183	5		219	212
स्थिरायु	61	47	स्फुरण	184	10	स्वच्छन्द	168	15
स्थूणा	163	35	स्फुरणा			स्वजन	96	34
	196	51	स्फुलिङ्ग	12	57	स्वतन्त्र	168	15
स्थूल	175	61	स्फुल्लिक	60	39	स्वधा	228	9
	218	205	स्फूर्जधु	16	10	स्वधिति	136	93
स्थूललक्ष	167	6	स्फुट	182	113	स्वन	30	23
स्थूलशाटक	109	116	स्म	228	5	स्वानित	180	95
स्थूलोच्चय	209	148		230	18	स्वप्न	37	37
स्थेयस्	176	73	स्मर	7	25	स्वप्नज्	171	33
स्थोणेय	77	133	स्मरहर	8	33	स्वभाव	37	38
स्थोदिन्	129	47	स्मश्रु	107	99	स्वभू	5	18
स्व	184	9	स्मित	36	35	स्वयंवरा	92	7
स्वातक	119	43	स्मृति	28	6	स्वयम्	229	17
स्वान	110	122		35	29	स्वयंभू	5	16
स्वायु	102	66	स्यद	13	64	स्वर्	3	6
स्मिग्ध	124	12	स्यन्दन	57	25		226	255
	147	46		130	52	स्वर	28	5
	168	14	स्यन्दनारोह	131	61		31	1
सु	52	5	स्यन्दिनी	102	67	स्वरु	11	47
सुत	180	93	स्यम	180	93		213	168
सुषा	92	9	स्यात्	230	19	स्वरूप	37	38
सुर्	72	106	स्यूत	144	26		207	131
सुही				181	101	स्वर्ग	3	6
मेह	35	27	स्यूति	183	5	स्वर्जिकाक्षार	157	109
स्पर्श	26	7	स्योनाक	63	57	स्वर्ण	155	94
	185	14	ससिन्	57	28	स्वर्णकार	159	8
स्पर्शन	13	61	सज्	112	135	स्वर्णक्षीरी	78	138
	117	29	स्रव	184	9	स्वर्णदी	11	49
स्पश	124	13	स्रवद्रुर्भा	151	69	स्वर्णोनु	18	27
	220	215	स्रवन्ती	44	30	स्वर्णस्या	11	52
स्पष्ट	178	82	स्रवा	68	84	स्वर्णेश	11	51
स्पृक्षा	77	133	स्रष्टृ	5	17	स्वस्त	96	29
स्पृषी	70	94	स्रस्त	181	104	स्वस्ति	224	242
स्पृष्टि	184	9	स्राक्	227	2	स्वस्तिक	50	10
स्पृष्टा	35	27	स्रुत	180	93	स्वस्तीय	96	82
स्पृष्ट	185	14	स्रुव	116	25	स्वाति	238	88
स्फटा	38	9	स्रुवाःश्रु	60	38	स्वादु	202	94
स्फाती	184	9	स्रातम्	41	11	स्वादुकण्टक	59	37
स्फिन्	103	75		223	234		71	99
स्फिर	175	63	स्रोतस्वती	44	30	स्वादुरसा	79	144

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
सुपाटी	238	38	शौगन्धिक	45	36	स्तिमित	181	106
सुमर	86	11		83	167	स्तुत	182	110
सुष्ट	194	39		156	102	स्तुति	29	11
सुकपात्र	}	41	शौचिक	159	6	स्तुतिपाठक	137	98
सेचन			सोदामना	16	10	स्तुप्र	235	19
सेतु	48	14	सौध	50	10	स्तेन	162	25
	57	25	सौभागनेय	95	24	स्तेम	187	29
सेना	134	79	सौभाजन	58	31	स्तेय	}	162 26
सेनाङ्ग	127	34	सौम्य	18	27	स्तेन्य		
सेनानी	9	39		212	162	स्तोक	175	61
	131	63	सौरभेय	149	60	स्तोकक	87	17
सेनामुख	134	82	सौरभेयी	150	66	स्तोत्र	29	11
सेनारक्ष	131	62	सोराष्ट्रिक	39	10	स्तोम	90	40
सेवक	123	9	सौरि	18	27		208	141
सेवन	183	5	सोवर्चल	146	43	ब्री	91	2
सेवा	140	2		157	109	ब्रीधर्मिणी	94	20
सेव्य	83	165	सोविद	}	123	ब्रीर्पुसो	90	39
सैहिक्य	18	27	सोविदल			स्याण्डिल	115	18
सैकत	41	9	सौवीर	59	37	स्याण्डिलशासिन्	119	44
सैतवाहिनी	44	33		146	39	रथपति	114	9
सैनिक	131	62		156	100		197	61
सेन्धव	129	45	सैहित्य	149	56	स्थल	}	46 5
	146	42	स्कन्द	9	39	स्थली		
सेन्ध	131	62	स्कन्ध	54	10	स्थविर	98	42
	134	79		104	78	स्थविष्ठ	182	112
सेरन्ध्री	94	18	स्कन्धशाखा	54	11	स्थाणु	8	34
सैरिक	150	64	स्खलन	37	36		54	8
सैरिभ	85	4	स्खलित	138	110	स्थाण्डिल	119	44
सैरेयक	66	75	स्तन	104	77	स्थान	205	117
सोड	180	97	स्तनघयी	}	98	स्थानीय	48	1
सोदर्य	96	34	स्तनपा			स्थाने	229	12
सोपलव	21	10	स्तनयिरु	15	7	स्थापत्य	123	8
सोपान	51	18	स्तनित	16	9	स्थापनी	68	85
सोम	17	15	स्तवक	55	16	स्थामन्	137	103
सोमपा	}	114	स्तवधरोमन्	84	2	स्थायुक	123	7
सोमपीथिन्			स्तम्ब	54	9	स्थाल	237	32
सोमराजी	70	96		143	21	स्थाली	144	31
सोमवल्क	62	51	स्तम्बकरि	143	21	स्थावर	177	74
	189	9	स्तम्बघन	}	187	स्थाविर	97	40
सोमवल्ली	78	138	स्तम्बघ्न			स्थासक	110	122
सोमबल्लिका	70	96	स्तम्भरम	127	36	स्थास्तु	176	73
सोमवल्ली	68	83	स्तम्भ	207	134	स्थिति	126	27
सोमोद्भवा	44	32	स्तव	29	11		186	21



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
सुकुमार	177	78		66	73		37	2
सुकृत	24	24	सुमनोरजस्	55	17	सुषिरा	76	130
सुकृतिन्	166	3	सुमेरु	11	49	सुषेण	65	68
सुख	24	25	सुर	3	7	सुषेनिका	73	109
	235	23	सुरङ्गा	232	8	सुशु	227	2
सुखवर्चक	157	109	सुरज्येष्ठ	5	16		230	20
सुखसंशोभा	151	71	सुरदीर्घिका	11	49	सुखस्त	147	45
सुगत	4	13	सुरद्विधु	4	12	सुहृद्	124	12
सुगन्धि	26	11	सुरनिम्नगा	44	31	सूकर	84	2
	75	121	सुरपीति	10	43	सूक्ष्म	175	61
सुचरित्रा	92	6	सुरभि	22	18		209	144
सुखेलक	109	116		26	11	सूचक	173	47
सुत	95	27		208	136	सूचि	232	8
	197	60	सुरभी	75	124	सूत	131	60
सुतश्रेणी	69	88	सुरभि	11	48		156	99
सुतात्मजा	96	29	सुरलोक	3	6		158	3
सुत्रामन्	10	42	सुरवार्धमन्	15	1		197	62
सुत्वा	120	47	सुरसा	74	115	सूतिकाष्ट	50	8
सुत्वन	114	10	सुरा	164	39	सूतिमास	97	39
सुवर्धन	7	28	सुराचार्य	18	25	सूत्यान	161	19
सुवान	126	29	सुरामण्ड	165	43	सूत्र	162	28
सुवृर	176	69	सुरालभ	11	49	सूत्रवेदन	186	24
सुवर्धमन्	11	48	सुराष्ट्र	77	131	सूत्र	144	28
सुधा	11	48	सुवचन	30	17		201	91
	203	102	सुवर्ण	154	86	सूना	204	113
सुधांशु	15	14		155	94	सूत्र	95	27
सुधी	113	5	सुवर्णक	57	24	सूत्रत	30	19
सुनापीर	9	41	सुवर्णि	70	96	सूत्रकार	144	27
सुनिष्पन्नक	80	149	सुवहा	66	71	सूत्र	19	29
सुन्दर	173	52		74	115	सूत्रण	81	157
सुन्दरी	92	4		75	119	सूत्रत	168	15
सुपथिन्	48	16		75	124	सूत्रसूत्र	19	33
सुपर्ण	7	29		78	140	सूत्रि	113	6
सुपर्बन्	3	7	सुवासिनी	92	9	सूमा	163	35
सुपार्थक	61	43	सुमता	151	71	सूत्रे	19	29
सुप्रतीक	15	5	सुशीम	17	20	सूत्रतनय	44	32
सुप्रयोगविशिश	132	69	सुषम	173	52	सूत्रेन्दुसंगम	21	8
सुप्रदाप	30	17	सुषमा	17	18	सूत्रि	106	91
सुभगासुत	95	24	सुषवी	81	155	सूत्र	136	92
सुभिक्षा	76	125		145	37	सुगाल	85	5
सुमन	143	18	सुषि	37	2	सूणि	128	42
सुमनस्	3	7	सुषिर	31	4	सूणिका	102	67
	55	17		37	1	सूति	48	15

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
साधि	228	7	सायम्	20	3		180	95
साति	188	39		230	20		180	99
	198	64	सर	54	12		200	80
सातिसार	101	59		213	172	सितच्छत्रा	80	152
सातिशक	33	16	सारङ्ग	87	17	सिता	146	43
सादिन्	131	61		192	23	सिताभ	111	130
	204	107	सारथि	131	60	सिताम्भोज	45	41
साधन	205	119	सारमेय	161	22	सिद्ध	4	11
साधरग	164	37	सारव	45	36		181	101
	178	82	सारघ	45	40	सिद्धान्त	25	4
साधित	172	40		88	23	सिद्धार्थ	143	18
साधिष्ठ	182	113	सारसन	108	109	सिद्धे	74	113
साधीयस्	223	236		131	64	सिध्य	100	53
साधु	113	3	सार्थ	90	42	सिध्यल	101	61
	173	52	सार्थवाह	152	78	सिध्यला	233	10
	203	101	साधेम्	228	4	सिध्य	18	23
साधुनाहिन्	129	45	साई	181	106	सिध्नः	232	8
साप्य	4	10	सार्वभौम	15	5	सिनीवाली	21	9
साध्वस	34	21		122	2	सिन्दुक	65	68
साध्वी	92	6	साल	49	3	सिन्दुवार	65	69
सानु	52	5		53	5	सिन्दूर	157	105
सातपन	121	52		61	45		237	31
सान्व	30	18	सालावृक्ष	190	12	सिन्धु	40	1
	125	21	सास्ना	150	63		203	101
सांष्टिक	127	30	साहस	125	21	सिन्धुज	146	42
सान्द्र	175	66	साहस	131	63	सिद्ध	111	128
सान्द्रस्निग्ध	170	30		188	43	सीता	142	14
साम्राज्य	117	27	सिद्ध	84	1	सीर	141	8
सासपदीन	124	12		174	59	सोमन्	51	20
सामन्	28	3	सिंहतल	105	85	सोमन्त	235	19
	125	21	सिद्धान्त	138	108	सोमन्तिनी	91	2
सामाजिक	115	16	सिद्धपुच्छी	70	93	सोमा	51	20
सामान्य	25	31	सिद्धसंहनन	167	12	सौर	142	14
	178	82	सिद्धान्त	155	98	सीरपाणि	6	24
सामि	226	250	सिद्धान्त	127	32	सीरा	102	65
सामिधेनी	116	22	सिद्धान्त	72	104	सीवन	183	5
सामुद्र	146	41	सिद्धी	72	103	सीसक	157	105
सांपरायिक	128	105		74	114	सिंहगुण	72	106
सांप्रतम्	229	12	सिकता	199	73	सु	227	2
	230	24	सिकतामय	41	9		224	5
साव	20	3	सिपतावत्	47	11	सुकन्दक	80	148
	230	20	सिक्थक	157	107	सुकरा	151	70
सावक	189	2	सित	27	13	सुकल	167	8

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
समुद्र	40	1	सरस्	44	28	सब	115	18
समुद्रान्ता	70	92	सरसी	45	40	सबन	120	47
	74	116	सरसीरुह	40	1	सबयस्	124	12
	77	134	सरस्वत्	197	57	सबित्	19	32
समुन्दन	187	29		27	1	सबिध	176	67
समुद्र	181	106	सरस्वती	44	34	सवेस	178	85
समुद्र	203	103		44	29	सव्य	131	61
समुद्रजोषम्	229	11	सरित्	40	1	सव्येष्ट	55	15
समूह	85	9	सरित्पति	38	7	सस्य	61	45
समूह	90	40	सरीसृप	191	22	सस्यसंवर	228	4
समूह	116	20	सर्ग	61	45	सह	59	33
समूह	167	11	सर्ज	61	44	सहकार	66	76
समूह	184	10	सर्जक	38	6	सहचरी	96	34
समूह	147	46	सर्प	38	4	सहज	92	5
संपत्ति	134	83	सर्वराज	148	52	सहधर्मिणी	170	31
संपद्	134	82	सर्पिस्	175	65	सहन	149	55
संपराय	210	150	सर्व	46	3	सहभोजन	22	14
संपुटक	112	139	सर्वसहा	4	13	सहस्	137	103
संप्रति	230	24	सर्वेश	8	33		222	233
संप्रदाय	184	7		229	14	सहसा	228	8
संप्रधारणा	126	26	सर्वतस्	50	10	सहस्य	22	15
संप्रहार	138	106	सर्वतोभद्र	64	62	सहस्रदंष्ट्र	42	18
संकुल	54	7		59	36	सहस्रपल	45	40
संवाच	178	85	सर्वतोभद्रा	40	4	सहस्रवीर्यो	82	159
संवेद	44	35	सर्वतोमुख	230	23	सहस्रवेधि	146	40
संश्रम	36	34	सर्वदा	150	66	सहस्रवेधिन	78	141
	186	26	सर्वधुरावह	9	37	सहस्रानु	19	32
संभव	24	24	सर्वधुरीण	111	127	सहस्राक्ष	10	44
संभाजिनी	51	18	सर्वमङ्गला	136	94	सहस्रिन्	131	63
संमूर्च्छन	183	6	सर्वरस	120	45	सहा	66	74
संम्यञ्च	30	22	सर्वला	114	9	सहायता	74	114
सम्प्राप्ति	122	3	सर्वलिङ्गिन्	136	95	सहायता	183	72
सरक	165	43	सर्ववेदस्	73	108	सहिष्णु	188	41
सरका	88	27	सर्वसंहन	169	22	सहृदय	170	31
सरट	86	13	सर्वानुभूति	136	95	सांवात्रिक	166	3
सरणा	81	153	सर्वभोजिन्	5	15	सांयुगीन	41	12
सरणि	48	15	सर्वानीन	136	95	सावत्सर	133	78
सरमा	161	23	सर्वभिसार	136	95	सांवायिक	124	14
सरल	64	60	सर्वार्थसिद्ध	142	17	साकम्	166	5
	167	8	सर्वोष	40	3	साक्षान्	228	4
सरलद्रव	111	129	सर्वेष	75	124	सागर	224	244
सरला	73	108	सलिल				40	1
			सलकी					

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
सनातन	176	73	ससला	66	73	समा	23	20
सनाभि	96	33		79	143	समांसमीना	151	72
सनि	117	32	ससाविस्	12	56	समाकविन्	26	11
सनीह	176	67	ससाध	19	30	समाशात	138	107
संतत	13	65	ससि	129	45	समाङ्गा	79	142
संतति	113	1	सस्रद्वाचरिन्	114	11	समाज	91	43
संतमस	38	4	सभर्तृका	93	12	समाज्ञा	29	11
संतान	11	50	सभा	49	6	समाधि	25	5
	113	1		115	15		202	98
संताप	12	57	सभाजन	184	7	समान	13	63
संतापित	181	103	सभासद्	115	16		164	37
संदान	151	73	सभास्तार				206	127
संदानित	180	95	सभिक	165	44	समानोदय	96	34
संदाब	139	112	सन्ध	113	3	समालम्भ	186	27
संदित	180	95		115	16	समावृत्त	114	10
संदेशाच्च	30	17	सम	164	37	समासाद्य	180	93
संदेशहर	125	16		175	65	समासायी	29	7
संदेह	25	3	समम	175	66	समाहार	185	16
संदोह	90	40	समङ्गा	69	91	समाहित	182	109
संदाब	139	112	समज	91	43	समाकृति	28	6
संधा	203	102	समज्या	115	15	समाह्वय	165	46
संधान	165	42	समजस	126	25	समित्	138	107
सधि	125	19	समाधिक	177	76	समिति	115	15
	184	11	समन्ततस्	229	14		138	107
संधिनी	151	69	समन्तदुग्धा	72	106		198	70
संध्या	20	3	समन्तभद्र	4	13	समिध्	55	13
समकद्रु	59	35	समन्वितलय	31	3	समीक	138	105
संनद्ध	132	66	समम्	228	4	समीप	176	67
संनय	210	151	समय	20	1	समीर	13	62
संनिकर्षण	186	23		209	149	समीरण	13	62
संनिधि			समया	226	253		67	79
संनिवेश	51	19		228	7	समुच्चय	185	16
सपत्न	124	10	समर	138	106	समुच्छ्रय	210	152
सपदि	227	2	समर्थे	201	87	समुज्जित	181	107
	228	10	समर्थन	126	26	समुत्तिज	138	100
सपर्या	115	14	समर्थुक	167	7	समुदक	179	90
	118	34	समर्याद्	176	67	समुदय	90	41
सपिण्ड	96	33	सममार्तिन्	12	58	समुदाय	90	41
सपीति	149	55	समवाय	90	41		138	107
सप्तकी	108	108	समशिला	81	157	समुद्र	234	17
सप्ततन्तु	115	13	समसन	186	21	समुद्रक	112	139
सप्तपर्ण	57	23	समस्त	175	65	समुद्धन	169	23
सप्तर्षि	19	28	समस्या	29	7	समुदरण	196	55

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
संवीत	179	91	संविध	149	55	संखर	12 57
संवेग	36	34	संकट	178	85	संक्षपन	139 115
संवेष्ट	183	6	संकर	51	18	संज्ञा	193 33
संवेश	37	37	संक्षेपण	6	24	संज्ञु	99 47
संभ्यान	109	118	संकलित	180	93	सृष्टा	107 97
संघसक	137	99	संकल्प	25	2	संहीन	90 38
संघय	25	3	संकसुक	172	43	सत्	113 5
संघयापन्नमानस	166	5	संकाश	164	38		200 83
संश्रव	25	5	संकीर्ण	158	1	सतत	13 65
संश्रुत	182	109		179	86	सती	92 6
संश्लेष	187	30	संकुल	30	19	सतीनक	142 16
संघक्त	176	68		179	86	सतीर्ष्य	114 12
संघट्	115	15	संकोच	110	124	सत्तम	174 58
संसरण	48	18	संकन्दन	10	44	सत्तव	24 29
	196	55	संक्राम	186	25		219 214
संसिद्धि	37	38	संक्षेपण	186	21	सत्पथ	48 16
संस्कारहीन	121	54	संक्षेप	138	105	सत्य	30 22
संस्कृत	200	81	संख्या	25	2		210 154
संस्तर	212	162	संख्यात	175	65	सत्यंकार	153 82
संस्तव	186	23	संख्यावत्	113	5	सत्यवचस्	119 43
संस्ताव	187	34	संख्याय	153	83	सत्याकृति	153 82
संस्त्याव	210	151	सङ्ग	187	29	सत्यामृत	140 3
संस्था	126	27	संगत	30	18	सत्यापन	153 82
संस्थान	206	124	संगम	187	29	सत्त	214 182
संस्थित	139	118		238	34	सत्ता	228 4
संस्पर्शा	81	154	संगर	212	167	सतिन्	124 15
संस्फोट	138	106	संगीर्ण	182	109	सत्वर	13 65
संहत	177	76	संगूढ	180	93	सदन	49 5
संहतजानुक	99	47	संग्रह	28	6	सदस्	115 15
संहति	90	41	संग्राम	138	107	सदस्य	115 16
संहनन	103	70	संग्राह	136	91	सदा	230 23
संहार	39	2		185	14	सदागति	13 61
संहृति	29	8	संघ	90	42	सदातन	176 73
सकल	175	66	संघात	90	40	सदानीरा	44 33
सकृत्	224	243	संविष	218	207	सदक्ष	
सकृत्प्रज	87	21	सजम्बाल	47	10	सदृश्	164 37
सकृत्फल	62	52	सज्ज	132	66	सदृक्ष	
सक्वि	103	73	सज्जन	113	3	सदेश	176 67
सक्षि	124	12		127	34	सद्यन्	49 4
सखी	93	12	सज्जना	128	43	सद्यस्	228 10
सह्य	124	12	संचय	90	40	संप्रपञ्च	171 34
सगर्भ			संचारिका	94	17	सनत्कुमार	11 51
सगोत्रा			संजयन	49	6	सजा	230 18



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
इमशान	140	120	श्रीवास	111	129	असु	230	23
श्याम	27	14	श्रीवेष्ट	110	125	असुन	13	61
	209	143	श्रीसंह	65	70	आविष्	62	53
श्यामल	27	14	श्रीहस्तिनी	199	77	अभिष	85	7
श्यामा	63	55	श्रुति	28	3	अभिष	100	54
	73	109	श्रुति	106	94	अेत	26	12
	73	112		199	73		155	96
	209	143		53	4	अेतगहृ	200	79
श्यामाक	83	166	अेर्णा	159	5	अेतमरिच	88	24
श्याल	96	32	अेयस्	24	24	अेतरफ	158	110
श्याव	27	16		26	6	अेतसुरसा	27	15
श्येत	26	12		174	58	अेदकमेन्	66	71
श्येन	86	15		64	60	अेदपद	113	4
श्येनपाता	232	6	अेयसी	68	85	अेदभिह	89	30
अदा	203	102		71	97	अेदानन	5	14
अदाह	94	21	अेष्ट	174	59	अेदप्रन्य	9	39
	170	27	अेण	99	48	अेदप्रन्या	62	49
अयण	184	12	अेणि	103	74	अेदप्रन्या	72	103
अवण	106	94	अेणिकलक	103	74	अेदप्रन्याका	81	154
अवस्				113	6	अेदज	31	1
अविष्ठा	18	23	अेत्रिय	228	9	अेदज	45	42
अाणा	148	50	अेपद्	175	61	अेद्विच्य	150	62
अाद्	117	31	अेदण	184	11	अेद्विच्य	141	7
अाद्देव	13	59	अेव	101	60	अेद्विच्य	9	40
अाय	184	12	अेधमण	101	62	अेद्विच्य	138	107
अावण	22	16	अेधमन्	101	60	अेद्विच्य	172	42
अावणिक			अेधमल	59	35	अेद्विच्य	185	18
अी	7	27	अेधमातक	189	2	अेद्विच्य	138	106
	138	83	अेधोक	24	25	अेद्विच्य	179	92
अीकण्ड	8	32	अेधेयस	71	99	अेद्विच्य	30	24
अीघन	5	14	अेधेष्टा	161	22	अेद्विच्य	30	16
अीद्	14	69	अेधन्	238	40	अेद्विच्य	229	17
अीपति	6	21	अेधिश	161	20	अेद्विच्य	23	20
अीपर्ण	65	66	अेधिव	37	2	अेद्विच्य	183	4
	196	53	अेध्र	235	22	अेद्विच्य	23	22
अीपर्णिका	60	41	अेध्र	100	52	अेद्विच्य	45	43
अीपर्णी	59	35	अेध्र	140	2	अेद्विच्य	51	19
अीफल	58	32	अेध्र	96	21	अेद्विच्य	186	22
अीफला	70	95	अेध्र	97	37	अेद्विच्य	25	1
अीमत्	60	40	अेध्र	209	146	अेद्विच्य	25	5
	168	14	अेध्र	96	31	अेद्विच्य	201	92
अील	168	14	अेध्र	97	37	अेद्विच्य	187	30
अीवत्सलाञ्छन	6	22	अेध्र					

	PAGE	STANEA		PAGE	STANEA		PAGE	STANEA
शीतल	17	20	शुभ्र	26	12	शेफालिका	66	71
	80	150		216	193		232	7
शीतशिख	72	105	शुभांशु	16	14	शेमुदी.	25	1
	75	123	शुम्भ	162	27	शेज	59	35
	146	42	शुल्क	126	28	शेवधि	14	71
शीधु	165	42	शुस्व	155	97	शेवाक	45	38
	238	34		235	23	शेव	38	4
शीर्ष	106	95	शुभ्रषा	118	35	शेख	114	11
शीर्षक	131	64	शुष्कमांस	102	63	शेखरिक	69	89
शीर्षरक्षेय	172	45	शुष्म	137	103	शेख	51	1
शीर्षम्भ	107	98	शुष्मन्	12	54	शेखलिन	} 160	12
	132	65	शुक	143	23	शेखर		
शील	35	26	शुककीट	86	14	शेलेय	75	123
	217	202	शुकधान्य	143	24	शेवलिनी	44	30
शुक	87	22	शुकशिम्भ	69	87	शेवव	97	40
शुकनास	63	57	शू	158	1	शोक	35	25
शुकनई	77	133	शूदा	} 93	13	शो.वि.रक्षेय	12	54
शुक	200	83	शूदा			शोचिस्	20	35
शुफि	43	23	शून्य	174	56	शोष	27	15
	77	131	शुर	133	78		44	34
शुक	12	56	शूरे	144	26	शोणरत्न	155	92
	18	26	शूल	217	198	शोणित	102	64
	22	16	शूलाकृत	147	45	शोष	100	52
	101	62	शूलिन्	7	30	शोयप्ती	80	149
शुफशिष्य	4	12	शूल्य	147	45	शोधनी	51	18
शुक्ल	26	12	शूद्वल	108	109	शोषित	147	46
शुक्	35	25		128	42		174	56
शुषि	12	56	शूद्वलक	152	75	शोनक	63	58
	22	16	शूह्य	52	4	शोक	100	52
	26	12		79	143	शोभन	173	52
	33	17		192	26	शोभा	17	18
शुम्बी	145	38	शूङ्गवेर	145	37	शोष	99	51
शुम्हा	164	41	शूङ्गाटक	48	17	शोक	91	44
शुतुद्रि	44	33	शूङ्गार	33	17	शोह्लिडेय	39	10
शुदान्त	50	12	शूङ्गिणी	150	66	शोम्भ	169	23
	198	66	शूङ्गी	43	25	शोम्भिक	159	10
शुनक	161	22		71	100	शोम्बी	71	97
शुनी	161	23		74	117	शोम्बोदनि	5	15
शुभ	24	22	शूङ्गीकनक	155	96	शोरि	6	21
	152	76	शूत	180	96	शोय	137	103
	235	23	शूत	112	136	शोयलिक	159	8
शुम्भु	} 173	50	शूखर	104	76	शोष्कल	168	19
शुभान्वित			शूफम्			शूयत	184	10

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
काटक	237	33	शासन	126	26	शिरोम	54	12
कादी	238	38	कास्तु	5	14	शिरोषि	105	88
काज	35	80	काज	214	180	शिरोरत्न	107	102
काज	163	82	काजविद्	167	6	शिरोरुह	106	95
काजी	233	9	शिक्ष	163	30	शिरीस्थि	103	69
काजिस्थ	58	32	शिक्षा	28	4	शिल	140	2
कात	24	25	शिक्षित	166	4	शिला	50	13
कातकोम्भ	155	94		179	90		52	4
कातला	79	144	शिक्षण	89	32	शिलाजतु	156	104
कात्रव	124	11	शिक्षणक	106	96	शिली	43	24
काद	41	9	शिक्षर	52	4	शिलीमुख	191	18
कादहरित				54	12	शिलोषय	51	1
कादुल	47	10	शिक्षरिन्	51	1	शिव	163	35
कान्त	180	98		204	106	शिविन्	159	5
कान्ति	183	3	शिक्षा	12	57	शिशाला	49	7
काम्बरी	159	11		89	32	शिव	7	30
काश	212	167		107	97		24	25
काशद	57	23		191	19	शिवक	151	73
	202	95	शिक्षावत्	12	55	शिवमही	68	82
काशदी	73	111	शिक्षावक	89	31	शिव	9	37
काशिका	232	8	शिक्षाप्रव	156	101		62	52
काशिकल	165	46	शिक्षिन्	89	31		64	60
काशिका	73	112		204	106		76	127
काशिकर	47	11	शिक्षिवाहन	9	40		85	5
काशिकिन्	6	19	शिक्षु	58	31		219	213
काशिकल	84	1		145	34	शिशिर	17	20
काशिकर	215	189	शिक्षुज	158	110		22	18
काशिक	42	19	शिक्षित	30	24	शिशु	90	39
काशिकर्षा	74	116	शिक्षिनी	135	86	शिशुक	42	18
काशिका	49	6	शिक्षुशूक	142	15	शिशुत्व	97	40
	54	11	शिक्षि	200	83	शिशुमार	42	20
काशिक	143	24	शिक्षिकण्ड	8	32	शिवन	104	76
काशिकीन	170	26	शिक्षिसारक	60	39	शिक्षिदान	172	46
काशिक	45	38	शिक्षिविष्ट	193	34	शिक्षिष्ट	126	27
काशिकुर	43	24	शिक्षा	45	43	शिक्ष	114	11
काशिकेय	72	105		54	11	शिकर	16	12
	141	6	शिक्षिका	130	54	शिक्र	13	64
काशिकलि			शिक्षि	130	34	शिक्र	17	20
काशिकलोवेष्ट	61	47	शिक्षा	143	23		58	30
काशिक	90	39	शिक्षस्	106	95		59	35
काशिक	59	33	शिक्ष	132	65		235	22
काशिकत	176	73	शिक्षस्य	107	98	शिकक	161	19
काशिकलिक	188	40	शिक्षिष	64	63	शिक्रभीष्ट	65	70



PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
शतद्व	44	33	शय्या	16	9	शल	85	7
शतपत्र	45	40	शम्भारि	7	26	शलभ	88	29
शतपत्रक	87	17	शम्बल	238	34	शलल	}	85 7
शतपदी	86	14	शम्भाकृत्	141	9	शलली		
शतपर्वन्	82	161	शम्भूक	43	23	शल्लाद	55	15
शतपर्विका	72	103	शम्भली	94	19	शल्ल	190	13
	82	158	शम्भु	7	30	शल्य	62	53
शतपुष्पा	80	152	शम्भ्या	142	14		85	7
शतप्राघ	67	77	शम्भ्याक	57	23		136	94
शतमन्थु	10	42	शय	104	81	शव	140	120
शतमान	238	34	शयन	37	37	शवर	161	31
शतमूली	71	101		112	138	शवरालय	51	20
शतवीर्या	82	159	शयनोद्य	112	1 7	शश	86	11
शतबोधिन्	78	141	शयालु	}	171 33	शशधर	17	15
शतहृदा	16	9	शयित			शशलेमन्	157	107
शताङ्ग	131	52	शयु	38	5	शशादन	86	15
शतावरी	71	101	शय्या	112	137	शशोर्ण	157	107
शत्रु	123	9	शर	82	16	शश्वत्	224	244
	124	11		135	88		227	1
शनेश्वर	18	27	शरजन्मन्	9	39		229	12
शनेस्	230	18	शरण	196	53	शष्य	83	168
शपथ	}	29	शरद्	23	19	शस्त	24	26
शपन				23	20		182	110
शफ	130	50	शरभ	86	11	शष्य	134	83
शफरी	42	18	शश्व	}	135 87		214	180
शशल	27	17	शराभ्यास			शखक	155	98
शबली	150	67	शरारि	88	26	शखमार्ज	159	7
शब्द	26	7	शराह	170	28	शखाजीव	132	68
	28	2	शराव	145	32	शखी	136	93
	30	23	शरावती	44	34	शख्यमजरी	}	143 21
शब्दपह	106	94	शरासन	134	84	शख्यशुक		
शब्दन	171	38	शरीर	103	70	शख	78	136
शम	}	183	शरीरास्थि	103	69		145	34
शमथ			शरीरिन्	24	30	शकट	150	64
शमन	12	58	शरैरा	47	11	शकुनिक	160	14
	117	26		146	43	शक्तीक	132	70
शमनस्वसु	41	32		214	176	शक्यमुनि	5	14
शमल	102	67	शर्करावत्	}	47 11	शक्यसिंह	5	15
शमित	180	98	शर्करिल			शखा	54	11
शमी	62	52	शर्मन्	24	25	शाखानगर	49	2
	143	23	शर्व	7	3	शाखामृग	84	3
शमीधाम्य	143	24	शर्वेश	20	30	शाखिन्	53	5
शमीर	62	52	शर्वाणी	9	37	शाखिक	159	8

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
व्यक्त	197	62	व्याल	38	7	शकलिन	42	17
व्यक्ति	25	31		216	197	शकुन	89	33
व्यम	216	191	व्यालपादिन्	39	11	शकुनि	89	33
व्यजन	112	140	व्यालयुध	76	129	शकुन्त	197	58
व्यञ्जक	33	16	व्यास	186	22		89	33
व्यजन	205	116	व्याहार	27	1	शकुन्ति	42	19
	235	23	व्युत्थान	205	118	शकुल	82	159
व्यरम्बर	62	52	व्युष्टि	194	38	शकुलाक्षक	68	86
व्यत्यज	187	33	व्युद्ध	195	45	शकुलादनी	73	111
व्यत्यास			व्युद्धकङ्कट	132	66		42	17
व्यथा	39	3	व्युति	162	29	शकुलार्भक	102	67
व्यथ	184	8	व्युह	90	40	शकुत्	150	62
व्यव	48	12		134	80	शकुत्करि	171	36
व्यव	185	17		223	239	शकुत्	125	19
व्यालोक	190	12	व्यूहपार्ष्णि	134	80	शक्ति	137	104
व्यवधा	16	13	व्योकार	159	7		198	66
व्यवहार	29	9	व्योमकेश	8	34	शक्तिधर	9	40
व्यवाय	122	57	व्योमन्	15	1	शक्तिहेतिक	132	70
व्यसन	205	120	व्योमयान	11	48	शक	10	42
व्यसनार्ति	172	43	व्योष	158	111		65	67
व्यस्त	176	72	व्रज	90	40	शकधनुस्	16	11
व्याकुल	172	43		193	30	शकपादप	62	53
व्यकोश	54	7	व्रज्या	118	35	शकपुष्पी	78	137
व्याघ्र	84	1		136	96	शंकर	7	30
	174	59	व्रण	100	54	शङ्क	42	20
व्याघ्रनख	76	129	व्रत	118	37		54	8
व्याघ्रपाद	60	38	व्रतति	54	9		136	94
व्याघ्रपुच्छ	62	51		198	67	शंख	14	71
व्याघ्राट	87	16	व्रतिन्	114	7		43	23
व्याघ्री	70	94	व्रथन	163	33		77	131
व्याज	35	30	व्रात	90	40		191	18
	36	33	व्रात्य	121	54	शंखनख	43	23
	194	42	व्रांडा	34	23	शखिनी	76	127
व्य.			व्रांदि	142	15	शची	10	45
व्याधि	76	126		143	21	शचीपाति	10	43
	99	51	व्रांदिभेद	143	20	शरी	81	154
व्याधिघात	57	24	वैदेय	141	6	शठ	172	46
व्याधित	101	58	शंव	11	47	शणपर्णी	80	150
व्यान	13	63	शंवर	40	4	शणपुष्पिका	72	107
व्यापाद	25	4	शंवरी	86	10	शणमूत्र	42	16
व्याप्य	76	126	शकट	69	88	शण्ड	123	9
व्याम	105	87	शकल	130	50	शतकोटि	11	47
				17	16			

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
वृति	184	8	वृषस्यन्ती	92	9	वेषवार	145 85
वृत्त	176	70	वृषा	69	88	वेहत्	151 69
	179	92	वृषाकपायी	211	156	वे	228 5
	199	8	वृषाकपि	207	130	वेकसक	112 136
वृत्तान्त	29	7	वृष्टि	16	11	वेकुण्ड	5 18
	197	63	वृष्णि	152	76	वेजनन	97 39
वृत्ति	140	1	वेग	191	20	वेजयन्त	10 46
	199	73	वेगिन्	133	74	वेजयन्तिक	133 72
वृत्र	212	165	वेणि	107	98	वेजयन्तिका	65 66
वृत्रहन्	10	42	वेणी	65	69	वेजयन्ती	137 101
वृथा	225	248	वेणु	82	161	वेज्ञानिक	166 4
	228	4	वेणुधमा	160	13	वेणव	55 18
वृद्ध	75	123	वेतन	140	1	वेणविक	} 160 13
	98	42		164	38	वेणिक	
	103	100	वेनस	58	29	वेणुक	128 42
वृद्धत्व	97	40	वेनस्वन्	47	9	वेतसिक	160 14
वृद्धदारक	78	137	वेताल	235	21	वेतनिक	160 15
वृद्धनाभि	101	61	वेत्रवती	44	34	वेतरणी	39 2
वृद्धश्रवस्	9	4	वेद	28	3	वेतालिक	137 98
वृद्धसंघ	97	40	वेदना	183	6	वेदेहक	152 78
वृद्धा	93	12	वेदि	115	18		158 3
वृद्धि	184	9	वेदिका	51	16	वेदेही	71 97
वृद्धिजीविका	141	4	वेध	184	8	वेद्य	100 57
वृद्धोक्ष	149	61	वेधनिका	163	34	वेद्यमात्र	72 103
वृद्ध्याजीव	141	5	वेधमुख्यक	77	135	वेधात्र	11 51
वृन्त	55	15	वेघस्	5	17	वेधेय	173 48
वृन्द	90	41		222	229	वेनतेय	7 29
वृन्दारक	4	9	वेधित	180	100	वेनीतक	131 59
	190	16	वेपथु	37	38	वेमात्रय	95 25
वृन्दिरु	182	113	वेमन्	162	28	वेबाघ्र	130 54
वृधिक	86	14	वेला	217	199	वेर	35 25
वृष	24	24	वेळ	72	106	वेरनिर्यातन	} 139 112
	72	104	वेळज	145	35	वेरशुदि	
	74	117	वेळित	176	72	वेरिन्	124 10
	149	59		179	87	वेधधिक	160 15
	221	221	वेद्य	49	2	वेधस्वत	13 59
वृषण	104	76	वेशान्त	44	28	वेशास्त्र	22 16
वृषदंशक	85	6	वेस्मन्	49	4		151 74
वृषध्वज	8	34	वेस्मभू	51	19	वेस्य	140 1
वृषेन्	10	42	वेरया	94	19	वेध्रवण	14 69
वृषभ	74	117	वेरयाजनसमाश्रय	49	2	वेशानर	12 53
	149	59	वेध	107	99	वेसारण	42 17
वृषल	158	1	वेष्टित	179	91	वेष्ट	228 9

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
	145	38	विध्वञ्च	171	34	वीणाबाद	160	13
	175	65	विस	45	42	वीत	129	44
विश्वकद्व	161	23	विमकण्डिका	88	26	वीतंस	162	26
विश्वकर्मन्	204	109	विसप्रसून	45	41	वीतिहोत्र	12	53
विश्वभेषज	145	38	विसर	90	40	वीथी	53	4
विश्वंभर	6	22	विसर्जन	117	29		201	87
विश्वंभरा	46	2	विसर्पण	186	23	वीध	174	55
विश्वसृज्	5	17	विमवाद	37	36	वीनाह	43	57
विस्वस्ता	93	11	विमर	42	17	वीर	33	17
विश्वा	71	100	विमरिन्	170	31		34	18
विश्राम	126	24	विमनो	45	39		133	78
विष्	102	68	विमृत	179	86	वीरण		
विष	38	9	विमृत्तर			वीरतर	83	164
	221	224	विमृमर	170	31	वीरतरु	61	45
विषधर	38	7	विमृत	154	86	वीरपत्नी	94	16
विषमच्छन्द	57	23	विस्तर			वीरपान	137	104
विषय	26	7	विमृत्तर	186	22	वीरभार्या		
	47	8	विस्तृत	179	86	वीरमातृ	94	16
	210	152	विस्फार	133	109	वीरवृक्ष	61	48
विषयिन्	26	8	विस्फोट	100	53	वीरासंसन	137	101
विषयैष	39	11	विस्मय	34	19	वीरसू	94	16
विषा	71	100	विस्मयान्वित	170	26	वीरहन्	121	53
विषाण	156	46	विस्मृत	179	87	वीरधृ	54	9
विषाणी	75	120	विश्रम्भ	126	24	वीर्य	35	29
विपुर				207	135		101	62
विपुवत्	22	14	विस	26	12		210	154
विष्कर	89	34	विससा	98	41	वीवध	202	96
विष्कम्भ	51	17	विहग			वुक	68	82
विष्टप	47	6	विहग	89	33	वुक	85	7
विष्टर	213	170	विहगम			वुकधूप	111	128
विष्टरभक्त	5	18	विहगिका	163	30		111	129
विष्टि	39	3	विहसित	36	35	वृक्ष	181	104
विष्टा	102	68	विहस्त	172	43	वृक्ष	53	5
विष्णु	5	18	विहायस्	15	2	वृक्षभेदिन्	163	34
विष्णुकाम्ना	72	104		89	33	वृक्षरहा	68	82
विष्णुपद	15	2	विहापिन	117	29	वृक्षवाटिका	53	2
विष्णुपदी	44	31	विहार	185	16	वृक्षादन	163	34
विष्णुरथ	7	29	विहल	172	44	वृक्षादनी	68	82
विष्य	172	45	वीकाश	220	216	वृक्षाम्ल	145	35
विध्वञ्च	229	14	वीचि	40	5	वृजिन	23	23
विध्वक्सेन	6	19	वीज	24	28		176	71
विध्वक्सेनप्रिया	80	151	वीणा	31	3		204	109
विध्वक्सेना	63	56	वीणादम्भ	32	7	वृत्	179	92

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
विधुर	186	20	विद्युव	185	14	विलेपन	111	133.
विधुवन	183	4	विबन्ध	100	55		186	27
विधूनन			विबुध	3	7	विलेपी	149	50.
विधेय	169	24	विभव	154	90	विबध	202	96.
विनिश्चयार्हिन			विभाकर	19	29	विबर	37	1
विना	228	3	विभावरी	21	4	विवर्ण	160	16.
विनायक	5	14	विभावसु	12	56	विवश	172	44
	9	38		19	31	विवस्वत	19	30.
विनाश	186	22		221	227		197	57
विनाशोन्मुख	179	92	विभूति	9	36	विवाद	29	9
विनीत	129	45	विभूषण	107	101	विवाह	121	56
विन्दु	170	30	विभ्रम	36	32	विविध	126	23
विन्द्य	52	3	विभ्राज्	107	10		200	82
विम	180	100	विमनस्	167	8	विदिष	180	94.
	181	105	विमर्दन	185	13	विवेक	118	38.
विपक्ष	124	11	विमला	79	144	विधोक	36	32.
विपक्षी	31	3	विमातृज	95	25	विश	113	2
विपण	153	83	विमान	11	48		140	1
विपणि	49	2	वियद	15	2		220	215
	196	52	वियद्रङ्गा	11	49	विशङ्क	175	60.
विपत्ति	134	83	वियम	185	18	विषद	28	12
विपथ	48	16	विघात	169	25	विशर	139	117
विषद्	134	83	विग्राम	185	18	विशल्या	68	83
विषयेय	187	33	विरजस्तमम्	119	44		78	137
विषयोस			विरति	188	38		210	155
विश्वित्	113	5	विरल	175	66	विशसन	139	116
विषद्	44	33	विगज्	122	1	विशास्त्र	9	40.
विपादिका	100	52	विगाव	30	24	विशास्त्रा	18	23
विपाशा	44	33	विरिञ्च	5	17	विशाय	187	82.
विपिन	53	1	विरूपाक्ष	8	32	विशारण	139	114
विपुल	175	61	विरोचन	19	31	विशारद	202	95.
विप्र	113	2		204	108	विशाल	175	60
	113	4	विरोध	35	25	विशालता	109	114
वि	185	15	विरोधन	186	21	विशालत्व	57	23
विप्रकृत	172	41	विरोधोक्ति	30	16	विशाला	81	157
विप्रकृतक	176	69	विलक्ष	170	26	विशिख	135	87
विप्रतीसार	35	25	विलक्षण	183	2	विशिखा	49	8
विप्रयोग	187	28	विलम्बित	32	9	विशेषक	110	123
विप्रलब्ध	172	41	विलम्भ	187	28	विश्राणन	117	29
विप्रलम्भ	187	28	विलाप	30	16	विश्राव	187	28
विप्रलाप	30	16	विलास	36	32	विश्रुत	167	9
विप्रश्रिका	94	20	विलीन	180	100	विश्व	4	10
विशुष्	40	6						

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
147	46	विचलव	172	44	वितुष	80	149	
बासुकि	38	4	विक्षाव	188	37	वितुषक	76	127
बासुदेव	6	20	विगत	180	100		145	37
वासू	33	14	विगतातव	94	21		156	101
बास्तु	51	19	विग्र	99	46	वित्त	154	90
बास्तुक	82	158	विग्रह	103	70		167	9
बास्तोष्पति	10	43		125	19		180	100
बास्त	130	55		138	106	विदर	183	5
बाह	129	45		186	22	विदल	237	32
	154	88	विघस	117	28	विदारक	41	10
बाहद्विषत्	85	4	विघ्न	185	19	विदारी	73	110
बादन	131	59	विघ्नराज	9	38	विदारिगन्धा	74	116
बाहस	38	5	विचक्षण	113	6	विदित	182	108
बाहित्य	128	40	विचयन	187	30		182	109
बाहिनी	134	79	विचचिका	100	53	विदिश	15	6
	134	82	विचारणा	25	2	विदु	128	38
	204	112	विचारित	180	110	विदुर	170	30
बाहिनीपति	131	63	विचिकित्सा	25	3	विदुल	58	30
वि	89	34	विच्छेदक	50	11	विद्व	180	100
विशति	153	83	विच्छाय	236	26	विद्वर्णी	68	85
विकङ्कत	60	38	विजन	126	23	विशधर	4	11
विकच	54	7	विजय	138	111	विद्युत्	16	10
विकर्तन	19	30	विजिल	147	46	विदधि	100	56
विकलाङ्ग	99	46	विज्ञ	166	4	विद्व	139	112
विकसा	69	71	विज्ञात	167	9	विदुत	180	100
विकसित	54	8	विज्ञान	26	6	विद्वम	155	93
विकस्वर	170	30	विट	234	17	विद्वमलना	76	130
विकार	185	15	विटङ्क	51	15	विद्वस्	113	5
विकासिन्	170	30	विटप	55	14		223	235
विकिर	89	34		207	131	विद्वेष	35	25
विकीरण	67	81	विद्यपिन्	53	5	विधवा	93	11
विकुर्वीण	167	7	विद्वस्वदिर	62	50	विधा	164	38
विकृत	34	19	विद्वचर	161	23		203	101
	101	58	विद्वङ्ग	72	107	विधातृ	5	17
विकृति	185	15	विद्वौजम्	9	51	विधि	5	17
विक्रम	137	104	विडाल	85	8		25	28
	208	140	वितम्बा	233	9		119	39
विक्रय	153	83	वितथ	30	21	विधिदर्शिन	115	16
विक्रयिक	152	79	वितरण	117	29	विधु	6	22
विक्रान्त	133	78	वितर्दि	51	16		16	14
विक्रिया	185	15	वितस्ति	105	84		203	99
विकेत्	152	79	वितान	110	120	विधुत	181	107
विक्रय	153	82		204	113	विधुतुद	18	27



PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
बह	150	63	वाणी	27	1	वारण	127	35
बाह	12	53	वात	13	63	वारणमुसा	74	113
	15	4	वातक	80	150	वारबाण	131	64
बहिसिख	157	106	वाताकिन्	101	59	वारमुल्या	}	94 19
बहिसिखक	67	80	वातपोष	58	29	वारली		
बा	226	250	वातप्रमी	}	85	वाराही	80	151
	228	10	वातमृग			वारि	40	3
	229	16	वातरोगिन्	105	59	वारिद	15	7
बाकुची	70	96	वाताबन	50	9	वारिपर्णी	45	38
बाकपति	171	35	वातायु	85	8	वारिप्रवाह	52	5
बाक्य	28	2	वातूल	216	199	वारिवाह	15	7
बागीश	171	35	वात्सक	149	60	वारी	129	44
बागुरा	162	27	वादित्र	}	32	वारणी	196	52
बागुरिक	160	14	वाद्य			वार्त्त	199	66
बाग्निमन्	171	35	वान	55	15	वार्त्ता	29	7
बाह्मुख	29	9	वानप्रस्थ	57	28		140	1
वान्	27	1		113	3	वार्त्ताकी	74	114
वाचंयम	119	42	वानर	84	3	वार्त्तावह	160	15
वाचक	28	2	वानस्पत्य	53	6	वार्त्तक	97	40
वाचस्पति	18	25	वानायुज	129	46	वार्धुषि	}	141 5
वाचाट	}	171	वानीर	58	30	वार्धुषिक		
वाचाल			वानेय	77	132	वार्धिक	80	151
वाचिक	30	17	वान्त	100	57	वाल	75	122
वाचोयुक्तिपट्ट	171	35	वापदण्ड	162	28		106	95
वाज	135	88	वापी	44	28	वालधि	130	51
वाजपेय	237	31	वाम	209	144	वालपाइया	107	103
वाजिदन्तक	72	104	वामदेव	8	32	वालहस्त	130	51
वाजिन्	89	34	वामन	15	5	वालुक	75	122
	129	45		99	46	वालक	108	111
	204	107		176	70	वावदुक	171	35
वाजिशाला	49	7	वामदूर	48	14	वावत्त	179	92
वाञ्छा	35	27	वामलोचना	91	2	वाशिका	72	103
वाटी	239	42	वामा	91	3	वासिता	199	75
वाठ्यालका	72	107	वार्मा	129	47	वास	49	6
वाडव	12	56	वायस	87	21	वासक	72	104
	113	4	वायसाराति	86	15	वासग्रह	50	8
	129	47	वायसी	80	152	वासन्ती	66	72
वाडव्य	188	41	वायसोली	79	144	वासयोग	112	134
वाणा	66	75	वायु	13	61	वासर	20	2
वाणि	162	29	वायुसख	12	55	वासव	10	42
वाणिज	152	78	वार	40	3	वासस्	109	115
वाणिज्य	152	79	वार	90	40	वासित	31	26
वाणिनी	204	112		212	162		112	134

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
वरण	49	3	वर्तनी	48	15	वस्क	54	12
	57	25	वर्त	111	133	वस्कल	129	49
वरण्ड	234	18	वर्तिष्णु	170	29	वस्मिन्	48	14
वरणा	128	43	वर्तुल	176	70	वस्मीक	31	3
	163	31	वर्त्मन्	48	15	वस्मी	174	53
वरण	167	7		205	121	वस्मभ	208	137
वदवर्णिनी	92	4	वर्धक	69	90		55	13
	146	41	वर्धकि	159	9	वस्मरि	54	9
वरा	71	101	वर्धन	170	28	वस्मी	102	63
वराङ्ग	192	26		184	7	वस्मज	82	163
वराङ्गक	77	135	वर्धमान	62	52	वरा	184	8
वराटक	45	43	वर्धमानक	145	32	वराक्रिया	183	4
	238	38	वर्धिष्णु	170	28	वशा	128	37
वराह	92	4	वर्ध	163	31		151	69
वराशि	109	116	वर्धन्	132	65		220	218
वराह	84	2	वर्धित	132	66	वशिक	174	56
वरिवसित	181	102	वर्ध	174	57	वशिर	146	41
वरिवसित			वर्ध	92	7	वस्म	169	25
वरिवस्या	118	35	वर्धणा	88	27	वस्म	228	9
वरिष्ठ	155	97	वर्धर	69	90	वस्मकृत	117	27
	182	112	वर्धरा	78	140	वसति	198	67
वरीयस्	223	236	वर्ध	16	11	वसन	109	115
वरुण	13	61		47	6	वसन्त	22	18
	15	4		221	225	वसा	102	64
	57	25	वर्धवर	123	9	वसिर	71	98
वरुणात्मजा	168	39	वर्ध	23	19	वसु	4	10
वरुण	131	58	वर्धभू	43	24		68	82
वरुणिनी	134	79	वर्धभू				154	90
वरेण्य	174	57	वर्धयस्	98	43		222	229
वर्धर	161	23	वर्धपल	16	12	वसुक	67	81
वर्ध	90	42	वर्धन्	103	70	वसुदेव	6	22
वर्धस्	222	232		206	123	वसुधा	46	3
वर्धस्क	102	68	वलज	193	31	वसुधरा		
वर्ध	113	1	वलजा			वसुमती	152	76
	128	43	वलभी	51	15	वस्त	146	42
	195	48	वलज	103	107	वस्तक	234	13
वर्णक	111	133	वलजित	179	91	वस्तु	109	115
	238	38	वलिन	98	45	वस्त्र	108	110
वर्णित	182	110	वलिन			वस्त्रयोनि	110	120
वर्णिन्	119	42	वलिन	99	49	वस्त्रवेशमन्	152	79
वर्तक	90	36	वलि	50	14	वस्त्र	102	66
	190	11	वलीक	81	3	वस्त्रसा		
वर्तन	170	29	वलीमुख					



PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
लोकालोक	52	2	वचा	72	103	वथ	172	45
लोकेश	5	16	वज्र	11	47	वन	40	3
लोचन	106	93		72	106		53	1
लोचमस्तक	73	112	वज्रनिष्पेष	16	10		206	126
लोप	162	26	वज्रगुण	66	76	वनतिक्तिका	68	85
लोध	59	33	वज्रिन्	10	42	वनप्रिय	87	20
लोपामुद्रा	17	21	वज्रक	85	5	वनमक्षिका	88	28
लोमन्	107	99		173	47	वनमालिन्	6	21
लोमशा	77	134	वञ्चित	172	41	वनमुद्र	142	17
लोल	177	75	वज्रुल	37	27	वनशङ्खगाढ	71	99
	218	206		58	30	वनसमूह	53	4
लोप				65	65	वनस्पति	53	6
लोपभ	169	22	वः	58	32	वनिता	91	2
लोष्ट			वटक	234	17		199	74
लोष्टभेदक	142	12	वटाकर	162	27	वनीयक	173	49
लोह	111	126	वटीगुण	162	27	वनोद्भवा	65	70
	155	98	वडवा	129	47	वनौकस्	84	3
	156	99	वडवानल	12	56	वन्दा	68	82
	235	23	वडु	175	61	वन्दाह	170	28
लोहकारक	159	7	वणिज्	152	78	वन्दिन्	137	98
लोहपृष्ठ	87	16	वणिज्या	152	79	वन्दी	140	120
लोहल	171	37	वण्टक	154	89	वन्ध्या	151	69
लोहाभिसार	136	95	वत्	228	10	वन्ध्या	53	4
लोहित	27	15	वत्स	104	78	वपा	37	2
	102	64		150	62		102	64
लोहितक	155	92		221	227	वपुस्	103	70
लोहितचन्दन	110	124	वत्सक	65	67	वप्र	49	3
लोहिताङ्ग	18	26	वत्सतर	150	62		142	11
वंश	82	161	वत्सनाभ	39	11		157	105
	113	1	वत्सर	22	13	वमथु	100	55
	220	215		23	20		128	38
वंशक	111	126	वत्सल	168	14	वमि	100	55
वंशरोचना	157	109	वत्सादनी	68	83	ववस्	222	231
वकुल	65	65	वद	171	35	वयस्थ	98	42
वस्तव्य	211	160	वदन	105	89	वयस्था	63	58
वक्तु	171	25	वदान्ध	167	6		78	138
वक्त्र	105	89		211	161	वयस्य	124	12
वक	176	72	वदावद	171	35	वयस्या	93	12
वक्षस्	104	78	वध	139	117	वर	110	124
वक्ष्ण	103	73	वधू	77	134		184	8
वङ्ग	157	106		91	2		213	174
वचन	27	1		92	9	वरटा	88	26
वचस्	27	1		203	202		88	28



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
रसाला	147	44	राम	6	23	रुदित	37	36
रसित	16	9		86	11	रुद्ध	179	91
रछोनक	80	149		208	140	रुद्र	4	10
रहस	126	23	रामठ	146	40		8	34
	126	24	रामा	92	4	रुद्राणी	9	37
रहस्य	126	24	राम्भ	120	45	रुधिर	102	64
राका	21	8	राल	111	127		235	22
गक्षस	13	59	राशि	91	43	रुह	86	10
राक्षसी	76	128		220	215	रुग्	35	18
राक्षा	110	125	गष्ट	215	185	रुवती	30	18
राङ्कव	108	111	गष्टिका	70	94	रुहा	82	159
राज्	122	1	राष्ट्रिय	33	14	रुक्ष	221	226
राजक	122	3	गसभ	152	77	रुष	26	7
राजन्	122	1	गस्ना	78	140	रुपाजीव	94	19
राजन्य			राहु	18	27	रुप्य	154	91
राजन्यक	123	4	रिक्नक	174	56		155	96
राजन्यत्	48	13	रिक्थ	154	90		211	161
राजबला	81	153	रिद्गण	37	36	रुप्याध्यक्ष	123	7
राजर्वाजिन्	113	2	रिद्ध	143	23	रुचित	179	89
राजराज	14	68	रिपु	124	10	रुचित	129	49
राजवंश्य	113	2	रिष्ट	193	36	रेणु	137	100
राजवत्	48	13	रिष्टि	133	90	रेणुका	75	121
राजवृक्ष	57	23	रीढा	34	23	रेतस्	101	62
राजसदन	50	10	रीण	180	93	रेफ	174	54
राजमभा	233	9	रीति	155	97	रेवतीरमण	6	23
राजसूय	237	31		198	68	रेवा	44	32
राजहंस	88	25	रीतिपुष्प	156	103	रे	154	90
राजादन	59	35	रुक्प्रतिक्रिया	99	50		212	166
	61	46	रुक्म	155	95	रोक	37	2
राजाहं	111	126	रुक्मकारक	159	8	रोग	99	51
राजि	53	4	रुग्ण	179	91	रोगहारिन्	100	57
राजिका	143	19	रुन्	20	35	रोषन	61	47
राजिल	38	5	रुचक	62	51	रोचनी	73	109
राजीव	42	19		67	79		79	147
	45	41		146	43	रोचिष्णु	107	101
राज्याङ्ग	125	18		157	109	रोचिस्	20	35
रात्रि	21	4	रुचि	20	35	रोदन	106	93
रात्रिचर	13	60	रुचिर	193	29	रोदनी	70	92
रात्रिचर			रुच्य	173	52	रोदम्	222	230
रादान्त	25	4	रुज्		51	रोधस्		
राध	22	16	रुजा	99	रोष	135	88	
राधा	18	23	रुन		31	रोमन्	107	99

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
युग	90	39		110	124	रति	105	86
	192	24		200	80	रथ	58	30
युगकीलक	142	14	रक्तक	66	73		130	52
युगधर	131	58	रक्तचन्दन	111	132	रथकटघा	130	56
युगपत्	230	23		158	111	रथका	158	4
युगपत्रक	56	22	रक्तपा	43	22		159	9
युगपाश्र्वग	150	63	रक्तफला	78	139	रथगुप्ति	131	58
युगल	90	39	रक्तमध्यक	45	36	रथद्रु	57	26
युग्म			रक्तमरोरुह	45	41	रथाङ्ग	130	56
युग्म	131	59	रक्ताङ्ग	79	147		130	57
	150	64	रक्तात्पल	45	42	रथिक	133	77
युद्ध	138	105	रक्षःसभ	236	27	राथिन्		
युध्	138	107	रक्षम्	4	11	रथिर		
युवति	92	8		13	60	रथिन्	131	61
युवन्	98	42	रक्षित	181	106	रथ्य	129	47
युवराज	33	12	रक्षिवर्ग	123	6	रथ्या	49	3
यूथ	90	42	रक्षग	184	8		130	56
यूथनाथ	127	36	रङ्कु	86	10	रद	106	91
यूथप			रङ्ग	157	106	रदन		
यूथका	66	72	रङ्गाजीव	159	7	रदनच्छद	106	90
यूप	60	42	रचना	112	137	रन्ध्र	37	2
यूकटक	115	18	रजक	159	10	रभस	235	21
युपाय	116	19	रजन	155	96	रमणी	92	4
यूव	238	35		200	79	रम्भा	74	113
यौक्त्र	142	13	रजनी	21	4	रय	13	64
योग	191	22	रजनीमुख	21	6	रलक	109	116
योगेष्ट	157	105	रजम्	24	29	रव	30	23
योग्य	74	113		94	20	रवण	171	38
योजन	237	30		137	100	रवि	19	32
योजनवल्ली	69	91		222	232	रशाना	108	108
यौत्र	142	13	रजस्वला	94	20	रदिम	208	137
योधृ	131	62	रज्जु	262	27	रस	26	7
योध			रजन	111	132		26	9
योधसंराष	138	109	रजनी	70	95		33	17
योनि	104	76	रण	137	104		156	99
योषा	91	2		184	8		222	228
योषित्				195	49	रसगर्भ	155	102
यौतक	126	29	रत	122	57	रसज्ञा	106	91
यौवत	95	22	रतिपति	7	26	रसना		
यौवन	97	40	रन्	155	93	रसा	46	2
रंहस्	13	64		206	126	रसातल	37	1
रक्त	27	15	रत्नमानु	11	49	रसाल	59	33
	102	64	रत्नाकर	40	2		83	164

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		
मेदिनी	46	3	यक्षधूप	111	127	यक्ष्य	141	7	
मेदुर	170	30	यक्षराज्	14	68	यक्षःपटह	32	6	
मेधा	25	2	यक्ष्मन्	99	51	यक्षस्	29	11	
मेध्व	174	55	यजमान	114	8	यष्टि	238	38	
मेघ	11	49	यजुस्	58	3	यष्टिमधुक	73	110	
मेलक	186	29	यज्ञ	115	13	यष्टृ	114	8	
मेघ	152	76	यज्ञसूत्र	120	50	याग	115	13	
मेघकम्बल	157	107	यज्ञाङ्ग	56	22	याचक	}	173	49
मह	100	56	यज्ञिय	117	27	याचनक		117	32
महन	104	76	यज्वन्	114	8	याचना	140	3	
मेत्रावरुणि	17	21	यत्	}	228	3	याचित	141	4
मेती	}	238	यतम्		119	43	याचितक	117	32
मैत्र्य		122	यति	228	10	याश्वा	183	6	
मैधुन	206	122	यतिन्	173	48	यजक	115	17	
मंरय	165	42	यथाजात	129	16	यातना	39	3	
मोक्ष	26	7	यथातथम्	229	15	यातयाम	209	145	
	60	40	यथाययम्	229	16	यातु	}	13	60
मोष	178	82	यथार्थम्	124	13	यातुधान		96	30
मोचक	58	31	यथाईवणं	229	15	यातृ	136	96	
मोचा	61	47	यथास्वम्	149	57	यात्रा	214	176	
	74	113	यथोप्सित	229	13	यादःपति	40	2	
मोदक	237	33	यदि	183	2	यादस्	42	20	
मोदट	158	110	यदच्छा	131	60	यादसांपति	13	61	
मोदटा	68	84	यन्तृ	197	59	यान	125	19	
मोषक	162	25		12	58		131	59	
मोह	138	111	यम	120	49	यानमुख	130	56	
मोक्षिक	155	92		185	18	याप्य	174	54	
मोद्गान	141	4		12	58	याप्ययान	130	54	
मोन	118	36	यमराज्	79	145	याम	21	6	
मौरजिक	160	13	यमानिका	44	32	यामिनी	21	4	
मावी	135	86	यमुना	12	58	यामुन	156	100	
मोलि	216	194	यमुनाभ्र तृ	129	46	यायजूक	114	4	
मोष्टा	232	5	ययु	142	15	याव	110	125	
मोहृतं	}	124	यव	141	7	यावक	144	18	
मोहूर्तिक		30	यवक्य	157	108	यावत्	225	247	
म्लिष्ट	47	7	यवक्षार	82	161	यावन	111	128	
म्लेच्छदेश	155	97	यवफल	83	168	याष्टीक	132	71	
म्लेच्छमुख	102	66	यवस	148	50	यास	70	92	
यकुत्	4	11	यवाग्नू	157	108	युक्त	126	25	
यक्ष	14	69	यवाग्रज	70	92	युक्तरसा	78	140	
	14	69	यवाघ	70	92				
यक्षकर्म	111	133	यवीयस्	98	43				

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
	235	22	मूर्च्छित	101	61	मृजा	110	121
मुक्तर	171	36		200	82	मृड	8	31
मुक्तावासन	26	11	मूर्त	101	61	मृडानी	9	37
मुक्त्य	119	40		177	77	मृणाळ	45	42
	174	57	मूर्ति	103	71	मृद	46	4
मुष्ण	99	48		198	66	मृत	139	119
	238	34	मूर्तिमत्	177	77		140	3
मुब्धित	99	48	मूर्धन्	106	95	मृतस्नात	168	19
मुब्धिन्	159	10	मूर्धोभिषिक्त	122	1	मृतालक	77	131
मुद्	24	24		197	61	मृत्तिका	46	4
मुदिर	16	8	मूर्वा	68	84	मृत्तु	139	117
मुद्रपर्णी	74	114	मूल	54	12	मृत्तुञ्जय	8	31
मुद्रर	136	92		217	201	मृत्ता	46	4
मुषा	228	4	मूलक	82	158	मृत्तना	46	4
मुनि	5	14	मूलक्रमेन्	183	4		77	131
	119	42	मूलधन	152	80	मृदङ्ग	32	5
	238	38	मृत्य	152	79	मृदु	177	78
मुनीन्द्र	5	14		164	39		202	94
मुरज	32	5	मृषा	163	33	मृदुत्वच्	61	46
मुरा	75	123		238	38	मृदुल	177	78
मुषित	179	88	मृषिक	86	12	मृद्रीका	73	108
मुष्क	104	76	मृषिकपर्णी	69	88	मृष	138	105
मुष्कक	60	40	मृषित	179	88	मृषा	229	16
मुष्टिबन्ध	185	14	मृषा	85	8	मृषार्थक	30	21
मुसल	144	25		187	30	मृष्ट	174	56
मुसलिन्	6	24	मृगणः	187	30	मृकलकन्यका	44	32
मुसली	75	119	मृगतृष्णा	20	36	मृखला	108	108
	86	13	मृगदंशक	161	22		136	91
मुसल्य	172	45	मृगधूर्तक	85	5	मेघ	15	7
मुस्तक	} 82	160	मृगनाभि	111	12	मेघज्योतिस्	16	10
मुस्ता			मृगवधाजीव	161	21	मेघनादानुलसिन्	89	31
मृदुस्	227	1	मृगबन्धनी	162	27	मेघनामन्	82	160
मृदुभाषा	30	16	मृगमद	111	129	मेघनिघोष	16	9
मृदुते	22	11	मृग्या	161	24	मेघपुष्प	40	5
मृक	168	13	मृगयु	161	21	मेघमाला	16	8
मृड	173	48	मृगरामज	108	111	मेघवाहन	10	44
मृत	180	95	मृगव्य	161	24	मेघक	27	14
मृत्र	102	67	मृगशिरस्	} 18	24		89	32
मृत्रकृच्छ्र	100	56	मृगशीर्ष			मेद्र	104	76
मृषित	180	97	मृगाङ्क	17	15		152	76
मृखं	173	48	मृगादन	84	1	मेधि	142	15
मृच्छ	138	111	मृगित	181	105	मेदक	165	42
मृच्छाल	101	61	मृगेन्द्र	84	1	मेदस्	102	64



PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
	80	148	माधव	5	18	मालिक	159	5
	145	38		22	16	मालुधान	38	6
मा	229	12	माधवक	164	41	मालूर	58	32
मांस	102	63	माधवी	66	72	माल्य	112	135
	235	22	मान	34	22	माल्यवत्	52	3
मांसल	98	44		153	85	माधपर्णा	78	139
मांसिक	160	14	मानव	91	1	मास	22	12
माक्षिक	157	107	मानस	25	31	मासर	148	49
मागध	137	98	मानसोक्तस्	88	24	मासिक	177	31
	158	2	मानिनी	91	3	मास्म	229	12
मागधी	66	71	मानुष	91	1	माहिष्य	158	3
	71	97	मानुष्यक	188	42	माहबी	150	66
माघ	22	15	माया	159	11	मितपच	173	48
माघ्य	66	73	मायाकार	5	15	मित्र	19	31
माठर	19	32	मायादेवीसुत	101	62		123	9
माढि	232	8	मायु	91	44		124	12
माणवक	98	42	मायूर	7	25	मिथस्	213	168
माणव्य	188	41	मार	4	13	मिथुन	227	257
माणिक्य	237	31	मारजित्	139	116	मिथ्या	90	39
माणिबंध	146	42	मारण	33	14	मिथ्यादृष्टि	229	16
मातङ्ग	161	20	मारिष	13	62	मिथ्याभियोग	25	4
	191	21	मारुत	80	152	मिथ्याभिशसन	29	10
मातंगपितृ	97	37	मारुव	22	14	मिथ्यामति	25	4
मातरिश्वन्	13	61	मार्ग	48	15	मिथ्या	72	106
मातलि	10	45		135	88	मिथेया	72	105
मातापितृ	97	37	मार्गण	173	49	मिसि	80	152
मातामह	96	33		187	30	मिहिका	17	19
मातुल	67	78		22	14	मिहिर	19	30
	96	31	मार्गशीर्ष	181	105	मीढ	180	97
मानुलपुत्रक	67	78	मार्गित	59	33	मीन	42	17
मानुलानी	96	30	मार्जन	110	121	मीनकेतन	7	25
	143	20	मार्जना	85	6	मुकुट	107	102
मातुलाहि	38	6	मार्जौर	147	44	मुकुन्द	75	122
मातुली	96	30	मार्जिना	19	30	मुकुर	112	140
मानुलङ्गक	67	79	मार्ण्ड	160	13	मुकुल	55	16
मातृ	8	35	मार्दङ्गिक	164	41	मुक्तकञ्जुक	38	6
	33	14	मार्द्वीक	110	121	मुक्ता	155	93
	96	29	मार्द्रि	64	62	मुक्तावली	108	105
	150	66	मालक	66	73	मुक्तस्फोट	43	23
मात्र	214	179	मालती	112	135	मुक्ति	26	6
मात्रा	175	62	माला	159	5	मुक्ता	51	19
	214	178	मालाकार	83	167		105	89
माद	184	12	मालानृणक					

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
मनोरथ	35	27	मरीचि	19	28	मस्तु	148	54
मनोरम	173	52		20	34	मह	37	39
मनोहत	172	41	मरीचिका	20	36	महत्	175	60
मनोहा	157	105	मह	46	5	महती	198	69
मन्तु	126	27		212	164	महत्स	222	232
मन्त्र	213	168	महत्	13	62	महाकन्द	80	149
मन्त्रव्याख्याकृत्	114	7		15	4	महाकुल	113	3
मन्त्रिन्	123	4		197	59	महाङ्ग	152	75
मन्थ	151	74	महत्बत्	9	41	महाजाली	74	118
मन्थदण्डक	151	74	महन्माला	77	133	महादिव	8	32
मन्थनी			महवक	62	53	महाधन	109	113
मन्थर	133	73	मर्कट	84	3	महासन	144	27
मन्यान	151	74	मर्कटक	86	13	महामात्र	123	5
मन्द	161	19	मर्कटी	62	49	महायज्ञ	115	14
	202	95		69	87	महारजत	155	95
मन्दगामिन्	133	73	मर्त्य	91	1	महारजन	157	106
मन्दाकिनी	11	49	मर्दन	186	22	महारण्य	53	1
मन्दास	34	23	मर्दल	32	8	महाराजिक	4	10
मन्दार	11	50	मर्मन्	237	30	महारौरव	39	1
	57	26	ममर	30	24	महाशय	166	3
	67	81	मर्मस्त्वृ	178	84	महाशूद्री	93	13
मन्दिर	49	5	ममदा	126	27	महाभिता	73	111
मन्दुरा	49	7	मल	102	65	महासहा	66	74
मन्दोष्ण	20	36	मलदूषित	174	55		78	139
मन्त्र	31	2	मलपू	64	62	महामेन	9	39
मन्मथ	7	25	मलयज	111	131	महिला	91	2
	56	21	मालन	174	55	महिलाह्वया	63	55
मन्या	102	65	मलिनी	94	20	महिष	85	4
मन्तु	35	25	मलिमच	162	25	महिषी	92	5
	210	153	मलीमम	174	55	महा	46	3
मन्वन्तर	23	22	मल	235	21	महाक्षिन्	122	1
मय	152	75	मल्लक	238	37	महीध	51	1
मयु	14	71	मल्लिका	65	70	महीरुह	53	5
मयुष्टक	142	17	मल्लिकाक्ष	88	25	महीलता	43	21
मयूख	20	34	मल्लिगन्धि	111	127	महीमुन	18	26
	191	18	मला	233	10	महेच्छ	166	3
मयूर	73	112	ममूर	142	17	महेरणा	75	124
	89	31	ममूरविदला	73	109	महेश्वर	7	30
मयूरक	69	89	मगुण	147	46	महाक्ष	149	61
	156	101	मस्कर	82	161	महात्पल	45	39
मस्कत	155	92	मस्करिन्	119	41	महोत्साह	166	3
मरण	139	118	मस्तक	106	95	महोद्यम		
मरीच	145	36	मस्तिष्क	102	95	महोषध	71	100



PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
भेष	126	24	मण्डकपर्णी	69	91	मधुरक	216	192
मकर	42	20	मण्डूर	155	98	मधुरसा	79	143
मकरपञ्च	7	26	मतंगज	127	35		68	84
मकरन्द	55	17	मतलिका	24	27		73	108
मकुष्ठक	142	17	मति	25	1	मधुरा	80	152
मकुलक	79	144	मत्त	128	37	मधुरिका	72	105
मक्षिका	88	17		169	23	मधुरिपु	6	20
मस	115	13		181	103	मधुरिह	89	30
मगध	137	98	मत्तकाशिनी	92	4	मधुवार	164	41
मधवन्	9	41	मत्सर	213	173	मधुवत	89	30
मधु	227	2	मत्स्य	42	17	मधुशिमु	58	31
मङ्गल	24	25	मत्स्यण्डी	146	43	मधुश्रेणी	68	84
मङ्गल्यक	142	17	मत्स्यपिता	68	86	मधुछील	57	28
मङ्गल्या	111	127	मत्स्यवेधन	42	16	मधुसवा	79	142
मन्त्रिका	24	27	मत्स्याक्षी	78	138	मधुक	57	27
मज्जन्	54	12	मत्स्याधानी	42	16	मधुरिछट्ट	157	107
मम	112	138	मथित	148	53	मधुलक	57	28
मञ्जरी	55	13	मथिन्	151	74	मधुलिका	68	84
मञ्जिष्ठा	69	91	मद	128	38	मध्य	104	79
मञ्जूर	108	109		184	12		212	162
मञ्जु	173	52	मदकल	201	91	मध्यदेश	47	7
मञ्जुल				127	36	मध्यम	31	1
मञ्जूषा	163	30	मदन	7	25		47	7
मठ	50	8	मदिरा	164	40		104	79
मङ्गु	32	8	मदिगमूढ	50	8	मध्यमा	92	8
मणि	155	93	मदोत्कट	127	36		104	82
मणिक	144	31	मद्गु	89	35	मध्याह्न	20	3
मणिचन्ध	104	81	मद्गुर	42	19	मध्वासव	164	41
मण्ड	148	49	मद्य	164	41	मनःशिला	157	108
मण्डन	107	102	मधु	22	15	मनस्	25	31
	170	29		164	41	मनसिज	7	26
				157	107	मनस्कार	25	2
मण्डप	50	9		203	103	मनाक्	228	9
मण्डल	15	6	मधुक	73	110	मनित	182	108
	17	16	मधुकर	89	30	मनीषा	25	1
	19	23	मधुकम	164	41	मनीषिन्	113	5
मण्डलक	100	54	मधुद्रुम	57	27	मनु	238	38
मण्डलाप्र	135	90	मधुप	89	30		91	1
मण्डलेश्वर	122	2	मधुपर्णिका	59	36	मनुष्य		
मण्डहारक	159	10	मधुपर्णी	68	83	मनुष्यधर्मन्	14	68
मण्डित	107	100	मधुमक्षिका	88	27	मनोगुप्ता	157	108
मण्डक	43	24	मधुयष्टिका	73	110	मनोजवस	168	18
मण्डकपर्ण	63	57	मधुर	26	9	मनोह	173	52

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
मिष	119	41	भूतहमन्	203	105	भेक	43	24
मिषि	17	16	भूतावास	64	59	भेकी	125	22
मिषा	49	4	भूति	9	36	भेद	181	101
मिषुर	183	5	भूतिक	198	69	भेदित	32	6
मिन्दपाल	11	47	भूतेश	189	8	भेरी	99	50
मिन्दपाल	136	92	भूतेश	8	31	भेषज	120	46
मिम	178	83	भूदार	84	2	भेष	34	19
	181	101	भूदेव	113	4	भेष	99	50
मिषज्	100	57	भूमिम्ब	79	143	भेषज	192	23
मिस्सटा	148	49	भूप	122	1	भोग	198	70
मिस्सा	147	48	भूपदी	65	70	भोगवती	38	8
मी	34	21	भूपत	197	61	भोगिन	92	5
मीति	8	34	भूमि	46	2	भोगिनी	149	55
मीम	34	20	भूमिजम्बुका	60	38	भोजन	228	7
मीर	91	3	भूमिष्टृश्	74	118	भोस्	18	26
	170	26	भूयस्	140	1	भोम	123	7
मीरक	170	26	भूयष्ठ	175	63	भोदिक	126	24
मीलक	34	20	भूरि	175	63	भ्रंश	33	11
मीषण	34	20		214	183	भ्रकुस	37	37
मीध	44	31	भूरफेना	79	144	भ्रम	25	4
मीधसू	182	111	भूरिमाय	85	5		40	7
भुज	149	56	भूरुण्डा	65	70		184	9
भुजसमुजित	176	72	भूर्ज	61	46	भ्रमर	89	30
भुम	179	91	भूवा	107	101	भ्रमरक	106	96
भुज	104	80	भूवित	107	100	भ्रमि	184	9
भुजग	38	6	भूष्ण	170	29	भ्रष्ट	181	104
भुजंग	89	31	भूस्तृण	83	167	भ्राजिष्णु	107	101
भुजंगभुक्	38	6	भृगु	52	4	भ्रातृ	97	36
भुजंगम	74	115	भृङ्ग	77	135	भ्रातृज	96	30
भुजंगाक्षी	104	78	भृङ्गराज	87	17	भ्रातृजाया	97	36
भुजशिरस्	104	77	भृङ्गार	89	30	भ्रातृभगिनी	209	146
भुजान्तर	160	17	भृङ्गारी	80	152	भ्रातृभ्य	97	36
भुजिष्य	40	3	भृङ्गारी	127	33	भ्रात्रीय	25	4
भुवन	47	6	भृत्क	88	29	भ्रान्त	144	30
भू	46	2	भृति	160	15	भ्राष्ट्र	33	11
भूत	4	11	भृतिभुज	164	38	भृकुस	37	37
	181	105	भृत्य	160	15	भृ	106	92
	199	78	भृत्या	160	17	भृकुस	33	99
भूतेश	158	111	भृग	164	38	भृकुटि	37	37
भूतवेशी	66	71	भृग्यव	14	66	भृण	97	39
				147	47		195	45

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
ब्रह्मयज्ञ	115	14	भद्रमुस्तक	82	160	भाग्य	24	28
ब्रह्मयज्ञैष	118	34	भद्रयज्ञ	65	67		210	155
ब्रह्मसायुज्य	121	52	भद्रश्री	111	131	भाजन	145	33
ब्रह्मसू	7	27	भद्रासन	127	32	भाण्ड	145	33
ब्रह्मजालि	} 119	39	भव	34	21		195	44
ब्रह्मसन			भयंकर	34	20	भाइ	} 22	17
ब्रह्मार्ण	8	35	भयदुत	172	42	भाइपद		
ब्राह्म	23	21	भयानक	33	17	भाइपदा	18	23
	121	51		34	20	भावु	19	31
ब्राह्मण	113	4	भर	14	66		20	34
ब्राह्मणवष्टिका	} 69	90	भरण	} 164	39		203	103
ब्राह्मणी			भरण्य			भाभिनी	92	4
ब्राह्मण्य	188	41	भरत	160	12	भार	155	87
ब्राह्मी	27	1	भरद्वाज	87	16	भारत	47	6
	78	138	भर्ग	8	33	भारती	27	1
भ	18	22	भर्तृ	97	35	भारद्वाजी	74	117
भक्त	147	48		197	59	भारयष्टि	163	30
भक्तक	169	20	भर्तृदारक	33	12	भारवाह	} 160	15
भक्षित	182	111	भर्तृदारिका	33	13	भारिक		
भक्ष्यकार	144	28	भर्त्सेन	29	14	भार्गव	18	26
भग	104	76	भर्मेन्	155	94	भार्गवी	82	159
	192	26		164	39	भार्गी	69	90
भगंदर	100	56	भल्ल	235	21	भार्या	92	6
भगवत्	4	13	भल्लातकी	61	43	भार्यापति	97	38
भगिनी	96	29	भल्लुक	84	3	भालुक	85	4
भङ्ग	40	5	भव	8	34	भाव	33	12
भङ्गा	143	20		218	207		34	21
भङ्गि	232	8	भवन	49	5		219	208
भजमान	126	25	भवानी	9	37	भावबोधक	34	21
भट	131	62	भबिक	24	26	भाबित	112	134
भट्टि	147	45	भवितृ	} 170	29		147	46
भट्टारक	} 33	13	भविष्यु				181	105
भट्टिनी			भव्य	24	26	भावुक	24	26
भट्टाकी	74	114	भषक	161	22	भाषा	27	1
भण्डिल	64	64	भल्ला	163	33	भाषित	27	1
भण्डौ	} 69	91	भस्मगन्धिनी	75	121		182	108
भण्डौरी			भस्मगर्भा	64	63	भाष्य	237	31
भद्र	24	25	भा	20	35	भास्	20	35
	149	59	भाग	154	89	भास्कर	19	29
भद्रकुम्भ	127	33	भागधेय	24	28	भास्वत्	19	30
भद्रदाह	63	54		126	28	भिक्षा	183	6
भद्रपर्णा	59	34	भागिनेय	96	32		221	225
भद्रपला	81	153	भार्गारथी	44	3	भिक्षु	113	3

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
बलभद्रिप्र	80	151		195	45	बीज्य	113	2
बलवत्	98	44	बादर	108	111	बीमत्स	33	17
	227	2	बाबा	39	3		34	19
बलविन्यास	138	80	बान्धकिनेव	95	26	बुद्धा	102	64
बला	72	107	बान्धव	96	34	बुद्ध	4	13
बलप्रका	88	26	बाहृत	56	19		182	108
बलात्कार	138	110	बाल	98	42	बुद्धि	25	1
बलाराति	10	43		218	206	बुद्धिबुद्ध	235	19
बलाहक	15	7	बालगमिणी	151	70	बुद्ध	18	27
बलि	115	14	बालतनय	62	50		113	5
	126	28	बालतृण	83	168		203	107
	216	196	बालमूषिका	86	12	बुधित	182	108
बलिध्वंसिन्	6	21	बाला	33	14	बुधन	54	12
बलिपुष्ट	}	87	बालिश	173	48	बुभुक्षा	148	54
बलिभुज		21	बालेय	152	77	बुभुक्षित	169	20
बलिसप्रान्	37	1	बालेयशाक	69	90	बुभु	143	22
बलीवर्द	149	59	बाहय	97	40	बुस्त	238	34
बल्लव	144	27	बाष्प	207	130	बुवी	120	46
	149	57	बाष्पिका	146	40	बुद्धित	138	109
बलकशिणी	151	71	बाहु	104	80	बुद्धत्	175	60
बलिस्त	103	73	बाहुज	122	1	बुद्धतिका	109	17
बहिर्द्वार	51	16	बाहुदा	44	33	बुद्धी	70	94
बहिर्द्व	182	112	बाहुमूल	104	79		199	75
बहिस	230	16	बाहुयुद्ध	138	108	बुद्धकुक्षि	98	44
बहु	175	63	बाहुल	22	18	बुद्धद्रानु	12	54
बहुकर	168	17	बाहुलेय	9	40	बुद्धस्पति	18	25
बहुगल्यवान्	171	36	बाह्लिक	129	46	बोधकर	137	98
बहुपाद्	58	32		189	9	बोधिदुम	56	20
बहुप्रद	167	6	बाह्लीक	110	124	बोल	156	104
बहुमूल्य	109	113		146	40	ब्रध्न	19	29
बहुका	111	128	बिड	146	42	ब्रह्मचारिन्	113	3
बहुल	175	63	बिन्दु	40	6		119	42
	217	200	बिन्दुजालक	128	40	ब्रह्मण्य	60	42
बहुला	76	125	बिभीतक	63	58	ब्रह्मत्व	121	52
	217	200	बिम्ब	17	16	ब्रह्मदर्शी	79	155
बहुलीकृत	143	23	बिम्बिका	78	139	ब्रह्मदाह	60	42
बहुवारक	59	35	बिल	37	1	ब्रह्मन्	5	16
बहुविध	180	94	विलेश	38	8		205	114
बहुयुता	70	101	वित्त	58	32	ब्रह्मपुत्र	39	10
बहुसूति	121	70	बीज	24	28	ब्रह्मबन्धु	203	104
बह	14	67	बीजकोश	45	43	ब्रह्मविन्दु	119	39
	195	44	बीजपूर	67	79		121	52
बाण	135	87	बीजकृत	141	8	ब्रह्मभूय		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
प्रासङ्ग	131	58		161	20	केनिक	58	31
प्रासङ्ग्य	150	64	प्रवग	84	8		59	37
प्रासाद	50	9		192	24	केरव		
प्रासिक	132	71	प्रवङ्ग	84	8	केर	85	5
प्राङ्ग	20	3	प्रवङ्गम	208	137	केला	149	56
प्रिय	97	35	प्राक्ष	55	18	वक	88	23
	174	53	प्राङ्गन्	102	66	वडिश	42	16
प्रियक	60	42	प्राङ्गशान्	62	41	वत	224	145
	61	44	प्रत	129	49	वदर	59	37
	63	56	प्रु	180	99	वदरा	74	116
	85	9	प्राव	184	9		80	151
प्रियङ्गु	63	56	प्रात	182	111	वदरी	59	37
	143	20	फला	38	9	वधिर	99	48
प्रियता	35	27	फणिज्जक	67	79	वद	172	42
प्रियंवद	171	36	फणिन्	38	7		180	95
प्रीणन	183	4	फल	36	91	बन्धकी	93	10
प्रीत	181	3		217	202	बन्धन	126	27
प्रीति	24	24		235	23		185	14
पुष्ट	180	99	फलक	136	91	बन्धनालम्ब	140	120
प्रेक्षा	25	1	फलकपाणि	133	72	बन्धस्तम्भ	128	42
	221	225	फलान्निक	158	111	बन्धु	96	34
प्रेङ्गला	160	54	फलपूर	67	79	बन्धुजीवक	66	73
प्रेङ्खित	179	87	फलवत्	54	7	बन्धुता	97	35
प्रेत	139	118	फलाभ्यक्ष	61	46	बन्धुर	176	70
प्रेता	39	2	फलिन्			बन्धुल	95	26
प्रेत्य	228	9	फलिन	54	7	बन्धुक	66	73
प्रेमन्	35	27	फलिनी	63	56	बन्धुकपुष्प	61	44
प्रेष्ठ	182	112		78	137	बन्धु	54	7
प्रेष	220	220	फली	63	56	बन्धु	213	171
प्रेष्य	160	17	फलेप्रहि	53	6	बन्धु	89	32
प्रोक्षण			फलेङ्ग	63	55	बन्धु	223	237
प्रोक्षित	117	26	फल्यु	64	62	बन्धु		
प्रोष	130	50	फाणित	174	56	बन्धु	89	31
प्रोष्ठपदा	18	23	फाष्ट	146	43	बन्धु	4	9
प्रोष्ठी	42	18	फाल	180	95	बन्धु	12	54
प्रोष्ठपद	22	17		108	111	बन्धु	75	122
प्रौढ	177	77	फालगुन	142	13	बन्धु	6	24
प्रस	58	32	फाल्गुनिक			बन्धु	134	79
	61	44		22	15	बन्धु	137	103
	41	11	कुल	54	8	बन्धु	216	196
प्रव	43	24	फेन	157	105	बन्धु	235	22
	77	132		235	19	बन्धु		
	89	35				बन्धु	6	23

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	SATPNA
प्रवाल	32	7	प्रसू	96	29	प्राचीना	61	85
	155	93		222	230	प्राचीनावति	120	50
प्रवाह	185	18	प्रसूता	94	16	प्रास्थ	47	7
प्रवासन	139	114	प्रसूति	184	10	प्राजन	142	12
प्रवाहिका	100	55	प्रसूतिका	94	16	प्राजितृ	131	60
प्रविद्याति	187	28	प्रसूतिज	39	3	प्राज्ञ	113	5
प्रविदारण	138	105	प्रसून	55	17	प्राज्ञा	93	12
प्रविच्छेद	186	20		206	123	प्राज्ञी		
प्रवीण	166	4	प्रसूजनयितारौ	97	37	प्राज्ञ्य	175	63
ऽश्रुति	29	7	प्रसूत	179	89	प्राज्ञिवाक	123	5
	185	18	प्रसूता	103	72	प्राज्ञि	13	63
प्रवृद्ध	177	77	प्रसूति	105	85		137	104
	179	89	प्रसेव	144	26		140	121
प्रवेक	174	57	प्रसेवक	32	7		156	104
प्रवेणी	107	98	प्रस्तर	52	4	प्राणिन्	24	30
	128	43	प्रस्ताव	186	24	प्रातर्	230	20
प्रवेष्ट	104	80	प्रस्थ	52	5	प्रातिहारिक	159	11
प्रव्यक्त	178	82		154	89	प्रथमकाव्यिक	114	11
प्रश्र	29	10		201	88	प्रादुस्	227	257
प्रश्रित	169	25	प्रस्थपुष्प	67	79		229	13
प्रष्ठ	133	73	प्रस्थान	136	96	प्रादेश	105	83
प्रष्टांडी	151	70	प्रस्फोटन	144	26	प्रादेशन	117	30
प्रसन्न	42	14	प्रसवण	52	5	प्राध्वम्	228	4
प्रसन्नता	17	17	प्रस्ताव	102	67	प्रान्तर	48	17
प्रसभा	164	40	प्रहर	21	6	प्रस्त	179	87
प्रसभ	138	110	प्रहरण	134	83		181	105
प्रसर	186	23	प्रहस्त	105	84	प्रासपञ्चत्व	139	118
	186	25	प्रहि	43	26	प्रासरूप	207	131
प्रसरण	137	97	प्रहेलिका	28	6	प्रास्त	198	69
प्रसव	184	10	प्रहस	181	103	प्राप्य	180	93
	219	209	प्रांशु	176	70	प्राभृत	126	28
प्रसवबन्धन	55	15	प्राकार	49	3	प्राय	121	53
प्रसव्य	178	84	प्राकृत	160	16		210	153
प्रसह्य	229	11	प्राग्दक्षिण	47	7	प्रायस्	230	18
प्रसाद	17	17	प्राग्बंध	115	16	प्रार्थित	180	98
	201	91	प्राग्रह	174	58	प्रालम्ब	112	136
प्रसाधन	107	99	प्राग्रह			प्रालम्बिका	108	104
प्रसाधनी	112	139	प्राग्रह	184	10	प्रालेय	17	19
प्रसाधित	107	100	प्राचार	229	17	प्रावार	109	117
प्रसारिणी	81	153	प्राज्ञ	230	24	प्रावृत	109	113
प्रसित	167	9	प्राचिका	232	8	प्रावृष	23	19
प्रसिति	185	14	प्राची	15	3	प्रावृषायणी	69	87
प्रसिद्ध	203	104	प्राचीन	49	3	प्रास	136	93



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
प्रतिमा	164	36	प्रत्ययित	124	13	प्रभव	219	211
प्रतिमान	128	40	प्रत्ययिन्	124	11	प्रर्मा	20	35
	164	36	प्रत्ययसित	182	111	प्रभाकर	19	29
प्रतिमुक्त	132	66	प्रत्याहयात	172	40	प्रभात	20	8
प्रतिभरन	204	107	प्रत्याहयान	187	31	प्रभाव	125	19
प्रतियातना	164	36	प्रत्यादिष्ट	172	40		125	20
प्रतिरोधिन्	162	25	प्रत्यादेश	187	31	प्रभिन्न	128	37
प्रतिवाक्य	29	10	प्रत्यालीढ	135	86	प्रभु	167	11
प्रतिविषा	71	100	प्रत्यासार	134	80	प्रभूत	175	63
प्रतिशासन	187	34	प्रत्याहार	185	16	प्रप्रष्टक	112	135
प्रतिन्याय	99	51	प्रत्युत्क्रम	186	26	प्रमथ	8	35
प्रतिश्रय	210	153	प्रत्युपम्	20	2	प्रमथन	139	116
प्रतिश्रव	25	5	प्रत्युष			प्रमथाधिप	8	31
प्रतिश्रुत्	31	26	प्रत्युह	185	19	प्रमद	24	24
प्रतिष्टम्भ	186	27	प्रथम	178	81	प्रमदवन	53	3
प्रतिसर	213	175		209	144	प्रमदा	91	3
प्रतिमारा	110	120	प्रथा	184	9	प्रमनस्	167	7
प्रतिहत	172	41	प्रथित	167	9	प्रमा	184	10
प्रतिहास	67	77	प्रदर	212	165	प्रमाण	196	54
प्रतीक	103	70	प्रदीप	112	138	प्रमाद	35	30
प्रतीकार	139	112	प्रदीपन	39	10	प्रमापण	139	114
प्रतीकाश	164	38	प्रदेशन	126	28	प्रमिति	184	10
प्रतीक्ष्य	166	5	प्रदेशिनी	104	81	प्रमीत	117	26
प्रतीची	15	3	प्रदोष	21	6		139	119
प्रतीत	167	9	प्रद्युम्न	7	25	प्रमोला	37	37
	200	82	प्रदाव	139	112	प्रमुख	174	57
प्रतीपदर्शिनी	91	2	प्रधन	138	105	प्रमुदित	181	103
प्रतीर	40	7	प्रधान	24	29	प्रमोद	24	24
प्रतीहार	51	16		123	5	प्रयत	120	45
	123	6		174	57	प्रयमत	147	45
	213	71		206	122	प्रयाम	186	23
प्रतीहारा	213	71	प्रधि	130	57	प्रयोगार्थ	186	26
प्रतोली	49	3	प्रपद्य	192	28	प्रलम्बघ्न	6	23
प्रन	177	77	प्रपद	103	71	प्रलय	23	22
प्रत्यक्	230	24	प्रपा	49	7		36	34
प्रत्यक्षपर्णी	69	89	प्रपात	52	4	प्रलाप	29	15
प्रत्यक्षप्रेणी	69	88	प्रपात	96	33	प्रवण	196	56
	79	145	प्रपितामह	79	147	प्रवयस्	98	42
प्रत्यक्ष	177	79	प्रपुत्राड	76	128	प्रवहं	174	57
प्रत्यम	177	78	प्रपौण्डरीक	54	7	प्रवह	185	18
प्रत्यन्त	47	7	प्रफुल्ल	28	6	प्रवहण	130	53
प्रत्यन्तपर्वत	52	7	प्रबन्धकल्पना	110	122	प्रवहिका	28	6
प्रत्यय	209	147	प्रबोधन	13	63	प्रवारण	183	3
			प्रभञ्जन					



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
पृष्ठ	129	47	प्रकीर्ण	62	48		210	151
	188	42	प्रकृति	24	29	प्रणव	28	4
पेचक	86	15		37	38	प्रणाव	29	11
	189	6		125	18	प्रणाली	44	35
पेटक	163	30		199	73	प्रणिधि	124	13
पेटी	239	42	प्रकोष्ठ	104	80		203	100
पेलव	175	66	प्रक्रम	186	26	प्रणिहित	179	87
पेशल	161	19	प्रक्रिया	127	32	प्रणीत	116	20
पेशीकोश	90	38	प्रक्षण	31	25		147	45
पेठर	147	45	प्रक्षेप			प्रणुत	182	110
पैतृष्वसेय	95	25	प्रक्षेप	135	88	प्रणय	169	25
पैतृष्वसीव			प्रभण्ड	104	80	प्रतन	177	77
पैत्र	23	21	प्रतजानुक	99	47	प्रतल	105	84
पोगण्ड	99	46	प्रगल्भ	169	25		105	85
पोटगल	82	163	प्रगाह	195	44	प्रताप	125	20
पोरा	93	15	प्रगुण	176	72	प्रतापस	67	81
पोत	90	39	प्रगे	230	20	प्रति	225	46
	197	60	प्रग्रह	140	120	प्रतिकर्मन्	107	99
पोतवणिज्	41	12		223	238	प्रतिकूल	178	84
पोतवाह			प्रमाह	223	238	प्रतिकृति	164	36
पोताधान	42	19	प्रमीव	238	35	प्रतिकृष्ट	174	54
पोत्र	214	181	प्रपण	50	12	प्रतिक्षिप्त	172	42
पोत्रिन्	84	2	प्रपाण			प्रतिग्रह	134	80
पोतव	153	85	प्रवक	137	97	प्रतिग्राह	112	139
पोत्री	96	29	प्रवलायित	170	32	प्रतिधा	35	26
पोर	83	167	प्रचुर	175	63	प्रतिघातन	139	116
पोरस्य	178	81	प्रवेतस्	13	61	प्रतिच्छाया	164	36
पोरुष	105	87	प्रवेदनी	70	94	प्रतिजागर	187	28
पोरोगव	144	27	प्रच्छदपट	109	116	प्रतिज्ञान	182	109
पोणेमास	120	48	प्रच्छन्न	50	14	प्रतिज्ञान	25	5
पोणेमासी	21	7	प्रच्छादिक	100	55	प्रतिदान	153	81
पोलस्य	14	69	प्रजन	186	25	प्रतिस्वान	31	26
पोलि	147	47	प्रजविन्	133	74	प्रतिशिक्षि	164	36
पोष	22	15	प्रजा	193	32	प्रतिपद्	20	1
पोष्यक	156	103	प्रजाता	94	16		25	1
प्याद्	228	8	प्रजापति	5	17	प्रतिपन्न	182	108
प्रकण्ड	24	27	प्रजावती	96	30	प्रतिपादन	117	29
	54	10	प्रज्ञा	25	1	प्रतिवद्	172	41
प्रकाम	149	57		93	12	प्रतिबन्ध	186	27
प्रकार	212	163	प्रज्ञान	206	122	प्रतिबिम्ब	164	36
प्रकाश	20	35	प्रज्ञु	99	47	प्रतिभय	34	20
	220	219	प्रज्ञीन	90	38	प्रतिभाञ्चित	169	25
प्रकाणिक	127	32	प्रणय	186	25	प्रतिभू	165	44

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
पुरंदर	9	41	77	133	पूर्वज	98	43	
पुरंग्नी	92	6	94	21	पूर्वदेश	4	12	
पुरम्	228	8	14	70	पूर्वपर्वत	52	2	
पुरम्कृत	200	84	156	103	पूर्वो	15	3	
पुरस्तात्	225	247	15	5	पूर्वपुस्	230	22	
पुरा	226	254	7	26	पुन	19	30	
पुराण	28	5	56	21	पुक्ति	184	9	
	177	77	55	17	पृच्छा	29	10	
पुरातन	177	77	89	30	पृतना	134	79	
पुरातुत्त	28	4	94	20		134	82	
पुरी	48	1	21	10	पृथक्	228	3	
पुरीतत्	102	67	22	18	पृथक्पणी	70	93	
पुरीष	102	68	18	23	पृथगात्मता	25	31	
पुरु	175	63	130	52		118	38	
पुरुष	24	29	162	29	पृथग्जन	160	16	
	57	25	84	169		203	105	
	91	1	191	20	पृथग्विध	180	94	
	220	219	118	34	पृथिवी	46	3	
पुरुषोत्तम	6	21	180	98	पृथु	145	37	
पुरुहु	175	63	166	5		146	40	
पुरुहुत	9	41	210	150		175	60	
पुरोग			120	45	पृथुक	90	39	
पुरोगम	133	73	143	3		147	47	
पुरोगामिन्			174	55		189	3	
पुरोडाश	235	21	64	59	पृथुरोमन्	42	17	
पुरोधस्	123	5	62	48	पृथुल	175	60	
पुरोभाणिन्	172	46	63	54	पृथ्वी	46	3	
पुरोहित	123	5	26	12		145	37	
पुलाक	189	5	70	96	पृथ्वीका	146	40	
पुलिन	41	9	147	48		76	125	
पुलिन्द	161	21	238	35	पृदाकु	38	6	
पुलोमजा	10	45	235	20	प्राक्ष	20	34	
पुषित	180	97	61	47	पृथिपणी	99	48	
पुष्कर	15	1	180	99	पृषत्	70	93	
	40	4	91	1	पृषत्	40	6	
	45	41	180	99		40	6	
	79	146	227	33	पृषन्क	86	10	
	215	187	21	7		135	87	
पुष्कराह	88	23	117	28	पृषदथ	13	62	
पुष्करिणी	43	27	175	66	पृषदाज्य	116	24	
पुष्कल	174	58	178	81	पृष्ठ	104	78	
पुष्ट	180	97	207	133	पृष्ठवंशाधर	104	76	
पुष्प	55	17			पृष्ठस्थि	103	96	

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
विच्छ	89	32	विपीलिका	232	8	पुंथली	93	10
विच्छा	61	47	विप्पल	56	20	पुंस्	91	1
	233	9	विप्पली	71	97	पुक्कस	161	20
विच्छिल	147	46	विप्पलीमूल	158	110	पुङ्ख	234	17
विच्छिला	61	47	विप्पु	99	49	पुङ्ग व	174	59
	64	63	पियाल	59	35	पुच्छ	130	51
विज	139	117	विह	101	60	पुज	91	43
विजर	156	103	विशङ्ग	27	16	पुटभेद	40	7
विजल	137	100	विशाच	4	11	पुटभेदन	48	1
पिटक	100	53	विशित	102	63	पुटी	239	42
	163	30	विशुन	110	124	पुण्डरीक	15	5
पिटर	144	31		173	47		45	41
	215	189		206	127		190	11
पिण्ड	144	26	विशुना	77	133	पुण्डरीकाक्ष	6	19
	155	98	विष्टक	147	48	पुण्य	76	128
	156	104	विष्टपचन	145	32	पुण्ड	83	164
	234	18	विष्टान	112	139	पुण्डक	66	72
पिण्डक	111	128	पीठ	112	138	पुण्य	24	24
पिण्डिका	130	57	पीडन	138	111		211	161
पिण्डीतक	62	53	पीडा	39	3	पुण्यक	118	37
पिण्याक	189	9		163	30	पुण्यजन	13	60
	237	32	पीत	27	14	पुण्यजनेश्वर	14	69
पितामह	5	16	पीतदाह	63	54	पुण्यभूति	47	8
	96	33	पीतद्र	64	60	पुण्यवत्	166	3
पितृ	96	28		72	102	पुत्तिका	88	28
	97	37	पीतन	57	27	पुत्र	95	27
पितृदान	117	31		110	124		97	37
पितृपति	12	58		156	103	पुत्रिमा	162	29
	15	4	पीतसालक	61	44	पुद्गल	235	20
पितृपितृ	96	33	पीता	146	41	पुनःपुनर	227	1
पितृमस्	20	3	पीताम्बर	6	19	पुनर	226	254
पितृवन	140	120	पीन	175	61		229	16
पितृव्य	96	31	पीनस	99	51	पुनर्नवा	80	149
पितृसंनिभ	168	13	पीनोद्भा	151	71	पुनर्भव	105	83
पित्त	101	62	पीयूष	11	48	पुनर्भू	95	23
पिच्य	121	51		148	54	पुत्राग	57	25
पित्सत्	89	35	पीलु	57	28	पुर	48	1
पिधान	16	13		216	194	पुर	48	1
पिनद्ध	132	66	पीलुपर्णा	68	84		59	34
पिनाक	8	35		78	139		215	184
	190	14	पीवन्	} 175	61	पुरःसर	133	73
पिनाकिन	8	31	पीवर			पुरतस्	228	8
पिपासा	149	55	पदिरस्तना	151	71	पुरद्वार	51	16

PAGE	STANZA	PAGE	STANZA	PAGE	STANZA
पाटल	27 15	पाटुका	163 30	पमरियात्रिक	52 3
	142 15	पादु	163 31	पारिषद	8 35
पाटला	63 55	पादुकुत्	159 7	पारिहार्य	108 107
पाटलि	60 40	पाय	118 33	पारी	233 10
	63 55	पानगोष्ठिका	} 165 43	पादुष्य	29 14
पाठ	115 14	प.नपात्र		पार्थिव	122 1
	187 29	पानभाचन	145 32	पार्वती	9 37
पाठा	68 85	पानमदस्यान	164 41	पार्वतीनन्दन	9 39
पाठिन्	67 80	पानीय	40 4	पार्थ	104 79
पाठीन	42 18	पानीयशालिका	49 7		188 42
पाणि	104 81	पान्य	125 17	पार्थभाग	128 41
पाणिगृहीती	92 5	पाप	23 23	पार्थोत्थि	103 69
पाणिघ	160 13		173 47	पार्थि	103 72
पाणिपडिन	122 57	पापवेली	68 85	पार्थिपाह	124 10
पाणिवाद	160 13	पाप्मन्	23 23	पाळघ्न	83 167
पाण्ड	26 12	पामन्	100 53	पालङ्की	75 122
पाण्डु	27 13	पामन	101 58	पालाश	27 14
पाण्डुकम्पलिन्	130 55	पामर	160 16	पालि	136 94
पाण्डुर	27 13	पामा	100 53		217 198
पातक	237 33	पायस	111 128	पालिन्दी	73 109
पाताल	37 1	पायु	103 73	पालव	232 5
	218 203	पाय्य	153 85	पावक	12 54
पातुक	170 27	पार	41 8	पाश	107 98
पात्र	41 8	पारत	156 99	पाशक	165 45
	116 24	पार्ष्णोपदेश	114 12	पाशिन्	13 61
	145 33	पारशव	219 211	पाशुपत	68 82
	214 180	पारश्वधिक	132 71	पाशुपाल्य	140 2
पात्री	239 42	पारसीक	129 46	पाश्या	188 43
पात्रीव	238 35	पारसैणिक	95 24	पाश्याल्य	178 81
पाथस्	40 4	पारायण	183 2	पाषण्ड	120 45
पाद	52 7	पारावत	86 15	पाषाण	52 4
	103 71	पारावताङ्घ्रि	80 150	पाषाणदारक	163 34
	154 89	पारागर	40 1	पिक	87 20
	201 89		238 35	पिङ्क	27 16
पादकटक	108 110	पाराशरिन्	119 41	पिङ्गल	19 32
पादग्रहण	119 41	पारिकाङ्क्षिन्	119 42		27 16
पादप	53 5	पारिचातक	11 50	पिचण्ड	104 77
पादबन्धन	14 58		57 26		234 18
पादस्फोट	100 52	पारितथ्या	107 103	पिचण्डिल	98 44
पादाम	103 71	पारिद्रव	177 75	पिचु	157 106
पादाङ्गद	108 109	पारिभद्र	57 26	पिचुमर्द	64 63
पादात	132 68	पारिभद्रक	62 53	पिचुल	60 40
पादातिक	132 67	पारिभन्य	76 126	पिचवट	157 105

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
परिपण	152	80	परीसार	186	21	पलाश	55	14
परिपन्थिन्	124	11	परीहास	36	33		58	29
परिपाटी	118	36	पदम्	230	21		81	155
परिपूर्णता	112	137	पदष	30	19	पलाशिन	53	5
परिपेलष	77	132	पदस्	82	162	पालकनी	93	12
परिप्लव	177	75	परेत	139	118	पलित	98	41
परिवर्ह	223	240	परेतराज्	12	58	पन्थङ्क	112	138
परिभव	34	22	परेद्यवि	230	22	पन्थव	55	14
परिभाषण	29	14	परेष्टका	151	70	पन्थल	44	28
परिभूत	181	107	परोधित	160	18	पव	186	24
परिमल	26	10	परोष्णी	88	27	पवन	13	63
	185	13	पकैटी	58	32		186	24
परिरम्भ	187	30	पर्जननी	72	102	पवनाशन	38	8
परिवर्जन	139	115	पर्जन्य	209	146	पवमान	13	63
परिवादिनी	31	3	पर्ण	55	14	पवि	11	47
परिवापित	179	86		58	29	पवित्र	83	166
परिवित्ति	121	56		235	22		120	45
परिवुड	167	11	पर्णशाला	49	6		174	55
परिवेत्तु	121	56	पर्णास	67	80	पवित्रक	42	16
परिवेष	19	33	पर्यङ्क	112	138	पशुगति	7	30
परिव्याध	58	30	पर्यटन	118	35	पशुप्रेक्षण	188	39
	64	61	पर्यन्तभू	48	14	पशुरज्जु	151	73
परित्राज्	119	41	पर्यय	118	37	पथात्	224	244
परिषद्	115	15		187	33	पथत्ताप	35	25
परिष्कार	107	101	पर्यवस्था	186	21	पथिम	178	81
परिष्कृत	107	100	पर्याप्त	149	57	पथिमा	15	3
परिष्वङ्ग	187	30	पर्याप्ति	183	5	पथिमोत्तर	47	7
परिसर	48	14	पर्याय	118	37	पप्रवाह	150	63
परिसर्प	186	20		209	147	पस्य	49	5
परिसर्या	186	21	पर्युद्वहन	140	3	पांशु	137	100
परिस्कन्द	160	18	पर्येषणा	117	32	पांशुला	93	11
परिस्तोम	128	43	पर्वत	51	1	पाक	90	39
परिस्पन्द	112	137	पर्वन्	21	7		184	8
परिस्तुत्	164	39		82	162	पाकल	76	126
परिस्तुता	164	40		205	121	पाकशासन	9	41
परीक्षक	167	7	पर्युक्ता	13	69	पाकशासनि	10	46
परीभाव	34	22	पल	154	86	पाकस्थान	144	27
परीवर्त	152	80		218	203	पाक्य	146	42
परीवाद	29	13	पलगण्ड	159	6	पाब्रजन्य	7	28
परीवाप	206	129	पलंकषा	71	99	पाञ्चालिका	162	29
परीवार	213	170	पलल	102	63	पाट	228	7
परीवाह	41	10	पलाण्डु	80	148	पाटच्चर	162	25
परीष्टि	117	32	पलाल	143	22			

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
पति	97	35	पद्यचारिणी	79	146	पराग	55	17
	167	10	पद्यनाम	6	20		191	21
पतिवरा	92	7	पद्यपत्र	79	146	पराङ्मुख	171	33
पतिवल्नी	93	12	पद्यराग	155	92	पराचित	160	18
पतिम्रता	92	6	पद्या	7	27	पराचीन	171	33
पत्तन	48	1		69	90	पराजय	}	139 113
पति	132	67		79	146	पराजित		
	134	81	पद्याकर	44	28	पराधीन	168	16
	199	72	पद्याट	80	148	पराज	169	20
पतिवृद्धि	132	68	पद्यालया	7	27	पराभूत	139	113
पत्नी	92	5	पद्मिन्	127	36	परारि	230	21
पत्र	55	14	पद्मिनी	45	39	परार्थ	174	58
	90	37	पद्य	237	31	परासन	139	114
	131	59	पद्या	48	15	पगसु	139	118
	214	180	पनस	64	61	परास्कन्दिन	162	25
पत्तपरशु	163	33	पनाथित	}	182 110	परिकर	212	166
पत्तपाश	107	103	पनित			परिकर्मन्	110	121
पत्त्ररथ	89	34	पन्न	181	104	परिकम	185	16
पत्त्रेलखा	110	122	पन्नग	38	8	परिक्रिया	186	20
पत्त्राङ्ग	111	132	पन्नगाशन	7	29	परिक्षित	179	88
	158	111	पयस्	40	3	परिखा	44	29
पत्त्राङ्गुलि	110	122		148	51	परिग्रह	223	238
पद्मिन्	86	15		223	234	परिष	136	92
	89	34	पयस्य	148	51		192	27
	135	88	पयोधर	212	164	परिघातन	136	92
	204	106	पर	124	11	परिचय	189	23
पद्मेर्ण	63	57		216	192	परिचर	131	63
	109	113	परजात	160	18	परिचर्या	178	35
पधिक	125	17	परतन्त्र	168	16	परिचाप्य	116	20
पयिन्	48	15	परविम्बाद	169	20	परिचारक	160	17
पथ्या	64	59	परभृत्	87	21	परिणत	180	97
पद्	103	71	परभृत्	87	20	परिणय	122	57
पद	202	93	परमम्	229	13	परिणाम	185	15
पदग	132	67	परमान्न	116	24	परिणाय	165	46
पदवी	48	15	परमंष्ठिन्	5	16	परिणाह	109	114
पदाजि	}	132	परंपराक	117	26	परितस्	229	14
पदाति			परवत्	168	16	परित्राण	183	5
पदिक	}	132	परशु	}	136	परिदान	152	80
पद्म			परश्वद			परिदेवन	30	16
पदति	48	15	परश्वस्	230	23	परिधान	109	117
पद्य	14	71	परःशत	175	64	परिधि	19	33
	45	39	पराकम	137	104		202	97
पद्यक	128	40		208	138	परिधिस्त्व	131	63



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
नृ	91	1	नृरुच	234	17	पटल	50	14	
नृस्य	32	10	नृरुच	101	61		217	202	
नृप	122	1	नृन	206	128	पटलप्रान्त	50	14	
नृपलक्ष्मन्	127	33	पक्ष	51	20	पटवासक	112	139	
नृपसभ	236	27	पक्ष	179	92	पटह	32	6	
नृपासन	127	32		180	97		138	109	
नृधंस	173	47	पक्ष	22	12	पटु	81	155	
नृसेन	238	40		90	37		161	19	
नृेतु	167	11		107	98		171	35	
नेत्र	106	93		135	88		194	40	
	214	181		221	221	पटुपर्णी	78	138	
नेत्राम्बु	106	93	पक्षक	50	14	पटोल	81	155	
नेदिष्ठ	176	69	पक्षति	20	1	पटोलिका	74	118	
नेपथ्य	107	99		90	37	पट	234	17	
नेभि	43	27	पक्षद्वार	50	14	पटिका	}	60	41
	57	26	पक्षभाग	128	41	पक्षिन्		235	21
	130	57	पक्षमूल	90	37	पटिश		154	88
नैकभेद	178	83	पक्षान्त	21	7	पण		164	39
नैगम	152	78	पक्षिन्	89	33			165	45
	208	140	पक्षिणी	21	5			32	8
नैषिकी	150	67	पक्षमन्	505	121	पणव	}	182	110
नैपाली	157	108	पटुक	23	23	पगायित		153	82
नैमेय	152	80		41	9	पणित		17	39
नैयप्रोध	55	18	पटुकिल	47	10	पणितव्य		113	5
नैर्नैत	13	60	पटुकैरह	45	40	पण्ड		153	82
	15	4	पटुकि	53	4	पण्डित		49	2
नैरिकक	123	7		199	72	पण्य		80	150
नैरिाशिक	132	71	पटुय	99	48	पण्यवीथिका		152	78
नो	229	12	पचपचा	72	102	पण्या		89	34
नी	41	10	पचा	184	8	पण्याजीव		88	29
नोकादण्ड	41	13	पञ्चजन	91	1	पतग		193	20
नौतार्य	41	10	पचना	139	117	पनङ्ग		88	28
न्यक्ष	221	226	पचदशी	21	7	पतङ्गिका		89	34
न्यग्रोध	58	32	पचम	31	1	पतन्		90	37
	202	96	पचलक्षण	28	5	पतत्रिन्		112	139
न्यग्रोधी	69	88	पचशर	7	25	पतद्ग्रह		235	21
न्यङ्कु	86	10	पचशाख	104	81			170	27
न्यन्	176	71	पचाङ्गुल	62	52	पताका		137	101
न्यस्त	179	89	पचास्य	84	1	पताकिन्		133	72
न्याद	149	56	पञ्चर	237	31				
न्याय	126	25	पञ्जिका	232	7				
न्याय्य	126	26	पट	109	116				
न्याय	153	81	पटशर	109	115				



PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
निर्गौर	52	5	निर्गौर	21	6	निस्वन	30	23
निर्णय	25	3	निर्गौरिणी	21	4	निस्वान	139	115
निर्गोजक	159	10	निर्भव	25	3	निहन्न	43	22
निर्दश	126	26	निर्धेन	51	18	निहाका	139	114
निर्धोष	168	13	निर्दग्	135	89	निहिन	160	16
निर्धर	14	66	निर्दुग्	132	70	निहव	30	17
निर्मद	128	37	निषथा	49	2		219	209
निर्मुक्त	38	6	निषद्वर	41	9		164	88
निर्मोक	38	9	निषध	52	3	नीकाश	160	16
निर्गोण	128	39	निषाद	31	1	नीच	230	18
निर्गोतन	205	120		161	20	नीचैस्	90	38
निर्गृह	223	237	निषादिन्	131	60	नीच	89	35
निर्वपण	117	30	निषूदन	139	114	नीचोद्भव	50	14
निर्वर्णन	187	31	निष्क	190	14	नीप	60	42
निर्वहण	33	15	निष्कला	94	21	नीर	40	4
निर्वाण	26	6	निष्कामित	171	39	नील	27	14
	180	96	निष्कृष्ट	53	1	नालकष्ट	89	31
निर्वात	180	96	निष्कृष्टि	76	125		194	39
निर्वाद	29	13	निष्कृष्ट	55	13	नीलाङ्गु	86	14
	201	90	निष्कम	186	25	नीललोहित	8	33
निर्वापण	139	116	निष्ठा	33	15	नीला	88	27
निर्वासन	139	115		194	41	नीलाम्बर	6	24
निर्वृत्त	181	101	निष्ठान	147	44	नीलाम्बुजन्मन्	45	37
निर्वेश	164	39	निष्ठीवन			नीलिम्बा	66	71
	186	20	निष्ठवन	188	38	नीलिनी	70	95
	220	216	निष्ठेव			नीली	186	23
निर्व्ययन	37	2	निष्ठुर	30	19	नीलाक	144	25
निर्हार	185	17		177	76	नीवी	152	80
निर्हारिन्	26	11	निष्ठृत	179	88		229	213
निर्होद	30	23	निष्ठृतति	188	38	नीवृत्	47	8
निलय	49	5	निष्ठात	166	4	नीशार	109	118
निवह	90	40	निष्ठाक	180	96	नीहार	17	19
निद्यान	200	84	निष्ठात्र	181	101	नु	225	249
निवाप	117	31	निष्ठाव	186	24	नुति	29	11
निवीत	109	113	निष्ठाभ	180	100	नुत्त	179	88
	120	50	निष्ठावाणि	109	112	नुत्तन	177	78
निवृत्त	179	88	निसर्ग	37	38	नूतन	226	251
निवेश	127	34	निष्ठ	179	89	नूतम्	229	17
निशा	21	4	निस्तब्ध	176	70		108	109
निशाह्वा	146	41	निस्तर्पण	139	115			
निशान्त	49	5	निस्त्रिंश	135	90			
निशापति	16	14	निस्त्रिंश	148	49			
निशित	179	91	निस्त्रिंश					

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
नारायणी	71	101	निकष	31	25	निबन्धन	32	7
नारी	91	2	निकाष	175	65	निबन्धन	139	114
नारक	42	2	निखिल	128	42	निम	164	38
नात्म	42	2	निगड	184	12	निभूत	169	25
	143	22	निगद	48	1	निमय	152	80
नाभिकर	84	169	निगाद	208	139	निमित्त	199	76
नाविक	41	12	निगम	188	37	निमेष	22	11
नायक	41	10		129	49	निम्न	42	15
नाश	139	118	निगार	185	13	निम्नगा	44	30
नासत्य	11	51	निगल	187	36	निम्न	64	63
नासा	50	13	निग्रह	149	56	निम्नतः	57	26
नासिका	105	89	निघ	168	16	नियति	24	28
नास्तिकता	25	4	निघस	64	61	नियन्तु	131	60
निःकृत	172	41	निघ्न	109	116	नियम	25	5
निःशलाक	126	23	निचुल	193	32		118	37
निःशेष	175	65	निज	103	74	नियातन	120	49
निःशोध	174	56	नितम्ब	91	3	नियामक	186	27
निःश्रेयस	26	6	नितम्बिनी	14	67	नियुत	41	12
निःषमम्	229	15	नितान्त	14	66	नियुत	236	24
निःसरण	51	19	नित्य	23	19	नियोज्य	138	108
निःस्व	173	49	निदाष	36	34	निर	160	17
निकट	176	67	निदान	24	28	निरन्तर	226	254
निकरै	90	40	निदिग्ध	178	89	निरय	175	66
निकर्षण	51	19	निदिग्धका	70	94	निरगल	39	1
निकष	163	32	निदेश	126	26	निरवग्रह	178	84
निकषा	228	7	निद्रा	37	37	निरसन	168	15
	230	20	निद्रालु	171	33	निरस्त	187	31
निकषात्मज	13	60	निधन	139	118		30	20
निकाम	149	57	निधि	206	123	निराकरिष्णु	135	89
निकाय	91	43	निधुवन	14	71	निराकृत	172	40
निकाय्य	49	5	निध्यान	122	57	निराकृति	170	30
निकार	187	36	नितद	187	31		172	40
निकारण	139	114	निनाद	30	23	निरामय	121	54
निकुम्भक	154	88	निन्दा	29	13	निरामय	187	31
निकुञ्ज	53	8	निर	145	32	निरिष	100	57
निकुम्भ	79	145	निपठ	187	29	निरिष	142	13
निकुरम्ब	90	41	निपाठ	43	26	निरिषति	39	2
निकृत	172	46	निपान	166	4	निरिष्य	65	69
निकृति	35	30	निपुण			निरिष्य	66	71
निकृष्ट	174	54				निर्ग्रन्थन	139	115
निन्देता	48	4				निर्घोष	30	23
निकोचक	54	29				निर्जर	3	7
						निर्जितेन्द्रियग्राम	119	43

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
नखर	105	83	नमस्वा	118	34	नागकेसर	65	65
नग	191	19	नमुचिसुदन	10	43	नागजिह्वा	157	108
नगरी	48	1	नख	184	9	नागबन्ध	74	117
नगोक्ष	89	34	नयन	106	93	नागर	105	38
नम	171	39	नर	91	1		215	189
नमह	165	42	नरक	39	1	नागररुग	60	38
नामिका	92	8	नरबाहन	14	69	नागलोक	37	1
नर	63	57	नर्तक	33	11	नागवल्ली	75	120
	160	12	नर्तकी	32	8	नागसंभव	157	105
नटन	32	10	नर्तन	32	10	नागसुगन्धा	74	115
नटी	76	130	नर्भदा	44	32	नागान्तक	7	29
नड	82	163	नर्मन्	86	33	नाय	32	10
	237	33	नलकूवर	14	70	नाडिका	145	34
नडप्राय	47	9	नरद	83	65	नाडिधम	159	8
नडसंहति				42	18	नाडी	102	65
नड्या	83	168	नलमीन				143	22
नडवत्			नलिन	45	39		195	43
नडवल	47	9	नलिनी				100	54
नत	176	71	नली	76	130	नाडीवण	168	16
नतनासिक	98	45	नल्य	48	18	नाडवत्	30	23
नदी	44	23	नव	177	79	नाद	58	30
नदीमातृक	47	12	नवदल	45	43	नादेशी	60	38
नदीसर्ज	61	45	नवनीत	148	52		65	66
नध्री	163	31	नवामालिका	66	73		74	118
ननान्द	96	29	नवमूर्तिका	151	71	नाना	225	248
ननु	225	249	नवान	109	112		228	3
ननुच	229	15	नवाभ्यर	177	78	नानारूप	180	94
नन्दक	7	28	नवाभ्यर	148	52	नान्दीकर		
नन्दन	10	45	नध्य	177	78	नान्दीवादिन	171	38
नन्दवृक्ष	76	128	नष्ट	139	113	नापित	159	10
नन्यावर्त	50	10	नष्टचेष्टता	36	34	नाभि	130	57
नपुंसक	97	39	नष्टाभि	121	53		208	136
नप्री	96	29	नास्तित				233	9
नभस्	15	1	नस्थोत	150	63		226	252
	22	16	नहि	229	12	नाम		
	222	233	नाक	3	6	नामधेय	29	8
नभसंगम	89	35		189	2	नामन्	184	9
नभस्य	22	17	नाकु	48	14	नाय	167	11
नभस्वत्	13	63	नाकुली	74	115	नायक	39	1
नमस्	230	19	नाग	38	4	नारक	11	48
नमसित				127	35	नारद	135	88
नमसित	181	102		157	105	नाराच	163	32
नमस्यित				174	59	नाराची	5	18
नमस्कारी	79	142		191	21	नारायण		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
धनुर्धर	132	70	धान्याम्बल	146	39		173	47
धनुःपट	59	35	धामन्	206	124	धूर्वह	150	65
धनुष्मत्	132	70	धामार्गव	69	89	धूलि	137	100
धनुष	134	24		74	118	धूसर	27	13
धन्य	166	3	धाट्या	116	22	धृति	199	74
धनवन्	46	5	धारणा	126	27	धृष्ट	}	169 25
	134	84	धारा	130	50	धृणु		
धन्वयास	70	92	धाराधर	15	7	धेनु	151	71
धन्विन्	132	70	धारासंपात	16	12	धेनुका	128	37
धमन	82	163	धातैराष्ट्र	88	25		190	15
धमनि	102	65	धार्मपत्तन	145	36	धेनुध्या	151	72
धमनी	76	130	धावनि	70	93	धेनुक	149	60
धम्मिल	107	97	धिक्	224	241	धेवत	31	1
धर	51	1	धिकृत	171	39	धोरण	131	59
धराणि	}	46		180	94	धोरितक	129	49
धरा			2	धिवण	18	25	धीतकौशिक	109
धरित्री			धिवणा	25	1	धेरिब	150	65
धर्तर	67	78	धिष्य	210	155	धाम्य	83	167
धर्म	24	24	धी	25	1	ध्रुव	17	21
	28	3	धीन्द्रिय	26	8		54	8
	208	138	धीमन्	113	6		176	73
धर्मचिन्ता	35	28	धोमती	93	12		219	212
धर्मध्वजिन्	121	54	धीर	113	5	ध्रुवा	74	116
धर्मराज्य	4	13	धीवर	42	15		116	25
	12	58	धीशक्ति	186	25	ध्वज	137	101
	193	31	धीसचिव	123	4	ध्वजिनी	134	79
धर्मसंहिता	28	6	धुनी	44	30	ध्वनि	30	23
धव	97	35	धुर	130	56	ध्वनित	180	95
	218	207	धुरंधर	}	150	ध्वस्त	181	104
धवल	27	13	धुरीण			ध्वाद्क्ष	87	21
धवडा	150	67	धुर्य			ध्वान	30	23
धवित्र	116	23	धूत	181	107	ध्वान्त	37	3
धातु	53	8	धृपायित	}	181	न	229	12
	198	65	धृषित			नकुलेष्टा	74	115
धातुकी	}	76	धूमकेतु	197	58	नक्तक	109	115
धातुपुष्टिका			धूमयानि	16	8	नक्तम्	228	6
धातृ	5	17	धूमल	27	16	नक्तमाल	62	48
धात्री	214	177	धूम्या	188	43	नक्र	43	21
धाना	147	47	धूम्याट	87	17	नक्षत्र	18	22
धानुष्क	132	70	धूम्र	27	16	नक्षत्रमाला	108	106
धान्य	143	21	धूर्जटि	8	33	नक्षत्रेश	17	15
धान्यत्वच्	143	22	धूर्त	67	78	नख	77	131
धान्याक	145	38		165	44		105	83

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
देवताड	65	69	द्युम्न	154	90	दन्द्र	90	39
देवदाह	63	54	द्युत	165	45		219	218
देवदूषन्	171	34	द्युतकारक	165	44	दयातिग	119	44
देवन	165	45	द्युतकृत्			द्वादशाङ्गुल	105	84
	205	117	द्यो	3	6	द्वादशात्मन्	19	29
देववल्ग्वभ	57	25		15	1	द्वापर	25	3
देवभूष	121	52	द्योत	20	35		212	163
देवमातृक	47	12	द्रास	148	51	द्वा	51	16
देवयोनि	4	11	द्रव	36	33	द्वा		
देवर	96	32		139	112	द्वापाल	123	6
देवल	159	11	द्रवन्ती	69	88	द्रास्थ		
देवसभा	11	48	द्रविण	130	103	द्रास्थितदर्शक	141	6
देवाजीविन्	159	11		154	90	द्रिगुणाकृत		
देवी	33	13		196	52	द्रिज	89	33
	68	84		235	22		193	30
	77	133	द्रव्य	154	90	द्रिजराज	17	15
देवु	96	32		210	154	द्रिजा	75	120
देश	47	8	द्राक्	227	2	द्रिजाति	113	4
देशरूप	126	25	द्राक्षा	73	108	द्रिजिह्व	207	133
देह	103	71	द्राविष्ट	182	113	द्रिनीया	92	5
देहली	50	13	द्राविडक	77	135	द्रिप	127	35
देतेय	4	12	द्रु	53	5	द्रिपाय	126	28
देल्य			द्रुकिलिम	63	54	द्रिरद	127	35
देल्यगुह	18	26	द्रुघण	136	92	द्रिरेक	89	30
देल्या	75	123	द्रुण	86	14	द्रिप्	124	11
देल्यारे	6	19	द्रुणी	233	9	द्रिषन्	124	10
देर्द	109	114	द्रुत	13	64	द्रिहायनी	150	68
देव	24	28		179	90	द्रोप	41	8
	121	51		180	100	द्रोपवती	44	30
देवज्ञ	124	14		227	2	द्रोपिन्	84	1
देवज्ञा	94	20	द्रुम	53	5	द्रेषण	124	10
देवत	4	9	द्रुमामय	110	125	द्रव्य	172	45
	23	21	द्रुमन्यल	64	60	द्रेध	125	19
दोका	70	95	द्रुवय	153	85	द्रेप	130	54
	130	54	द्रुहिण	5	17	द्रैमानुर	9	38
दोपज्ञ	113	5	द्राण	154	88	द्रुषट्	155	97
दोपैकरक्	172	46	द्रोणकाक	87	22	धन	154	90
दोस्	104	80	द्रोणक्षीरा	151	72	धनंजय	12	53
दोहद	35	27	द्रोणदुषा			धनद	14	68
दोहदवती	94	21	द्रोणी	41	11	धनहरी	76	129
द्युति	17	18		70	95	धनाधिप	14	68
	20	35	द्रोहचिन्तन	25	4	धनिन्	167	10
द्युर्माण	19	31	द्रोणिक	141	10	धनिष्ठा	18	23

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
दाहद्विदि	72	102	दाधिति	20	34	दुर्विष	173	49
दाहद्विस्तक	184	34	दीन	173	49	दुर्विद्व	124	10
दावाधाय	87	17	दीप	112	138	दुलि	43	24
दाविका	75	120	दीपक	190	11	दुप्यवन	10	44
दावा	72	102	दीप्ति	20	35	दुष्कृत	23	23
दाव	218	207	दीप्य	73	112	दुष्ट	230	20
दाविक	45	36	दीर्घ	176	69	दुष्टपुत्र	76	129
दाश	42	15	दीर्घकोशिका	43	25	दुष्टपुत्रविणी	74	114
दाशपुर	77	132	दीर्घदर्शिन	113	6	दुष्टि	96	28
दास	160	17	दीर्घपुष्ट	38	8	दुष्टि	125	16
दासी	66	75	दीर्घवृन्त	63	57	दुष्टि	94	17
दासीमभ	236	27	दीर्घमूत्र	168	167	दुष्टि	125	16
दासेय	160	17	दीर्घिका	44	28	दुष्टि	181	103
दासेर			दुःख	39	3	दुष्टि	176	69
दिगम्बर	171	39	दुःख	235	23	दुष्टि	113	6
दिग्गज	15	5	दुःखम्	229	15	दुष्टि	82	158
दिग्ध	135	89	दुःखार्थ	70	92	दुष्टिका	102	67
	179	90	दुःखार्थ	70	94	दुष्टि	110	120
दिन	181	104	दुःखार्थ	109	113	दुष्टि	128	43
दितिसुत	4	12	दुःखार्थ	148	51	दुष्टि	14	67
दिषिषू	95	23	दुःखार्थ	71	100	दुष्टि	177	76
दिन	20	2	दुःखार्थ	80	148	दुष्टि	195	45
दिनान्त	20	3	दुःखार्थ	63	57	दुष्टि	177	76
दिव	3	6	दुःखार्थ	32	6	दुष्टि	235	19
	15	1	दुःखार्थ	207	135	दुष्टि	179	86
दिवस	20	2	दुःखार्थ	48	16	दुष्टि	106	93
दिवस्पति	10	42	दुःखार्थ	70	92	दुष्टि	223	218
दिवा	228	6	दुःखार्थ	23	23	दुष्टि	52	4
दिवाकर	19	29	दुःखार्थ	213	172	दुष्टि	121	31
दिवाकीर्ति	159	10	दुःखार्थ	125	18	दुष्टि	92	8
	161	20	दुःखार्थ	173	49	दुष्टि	197	63
दिविषद्	3	8	दुःखार्थ	39	1	दुष्टि	106	93
दिवौकस्	3	7	दुःखार्थ	26	12	दुष्टि	194	33
दिव्योपपादुक	173	50	दुःखार्थ	186	25	दुष्टि	3	1
दिश	15	2	दुःखार्थ	9	37	दुष्टि	33	1
दिश्य	15	3	दुःखार्थ	173	47	दुष्टि	6	2
दिष्ट	20	1	दुःखार्थ	16	12	दुष्टि	110	12
	24	28	दुःखार्थ	100	54	दुष्टि	43	2
दिष्टान्त	193	35	दुःखार्थ	43	25	दुष्टि	52	10
दिष्टया	139	117	दुःखार्थ	98	44	दुष्टि	108	10
दीक्षित	229	11	दुःखार्थ	167	8	दुष्टि	83	10
दीक्षिषु	114	8	दुःखार्थ	171	36	दुष्टि	11	1
	147	48	दुःखार्थ	155	96	दुष्टि	4	1



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
त्वक्षीरी	157	109	दधित्व	56	21	दल	55	14
त्वक्पत्र	77	135	दधिसफल	147	48	दव	218	207
त्वक्सार	82	161	दधिसक्नु	4	12	दविष्ठ	176	69
त्व	178	82	दनुज	106	91	दवीयस्	106	91
त्वञ्	54	12	दन्त	62	50	दशान	106	90
	101	62	दन्तधावन	128	41	दशानवासस्	5	14
त्वच	77	135	दन्तभाग	56	21	दशबल	96	43
त्वचिसार	82	161	दन्तशठ	57	24	दशमिन्	201	87
त्वरा	186	26		78	141	दशमीस्थ	109	114
त्वरित	13	64	दन्तशठा	127	35	दशा	220	217
	133	74	दन्तावल	79	145	दस्यु	124	11
त्वरितोदित	30	20	दन्तिन्	38	8	दस्यु	162	25
त्वष्ट	180	99	दन्तिका	175	61	दस्यु	11	51
त्वष्टृ	159	9	दन्दशूक	125	21	दहन	12	55
	193	35	दध्र	183	3	दाक्षायर्णा	18	22
त्विष्	20	35	दम	183	3	दाक्षप्य	87	22
	221	226		180	98	दाक्षिम	65	65
त्विष्वांपति	19	31	दमघ	12	56	दाडिमपुण्यक	239	42
त्सरू	136	91	दमित	97	36	दाडिमपाता	62	49
दश	88	28	दमुनस्	35	30	दात	232	6
दशान	132	65	दम्पती	11	47	दात	181	104
दशित	132	66	दम्भ	150	62	दात्यूर	87	22
दंशी	88	28	दम्भोलि	34	18	दात्र	142	12
दंष्ट्रिन्	84	2	दम्भ	168	15	दान	117	29
दक्ष	161	19	दया	34	21		125	21
दक्षिण	167	8	दयालु	215	185	दानव	128	38
दक्षिणस्थ	131	61	दर	233	9	दानव	4	12
दक्षिणा	15	3	दरत	173	49	दानवगिरि	4	9
दक्षिणामि	116	19	दरिद्र	52	6	दानशौण्ड	167	6
दक्षिणावस्	161	24	दरी	43	24	दान्त	119	42
दक्षिणार्ह	166	5	ददुर	79	147	दान्ति	180	98
दक्षिणीय	161	24	ददुष्म	101	59	दापित	183	3
दक्षिणैर्मन्	166	5	ददुष्म	7	25	दाम	172	40
दक्षिण्य	180	99	ददुष्म	112	140	दामिनी	151	73
दग्ध	148	49	ददुष्म	83	166	दामोदर	5	18
दग्धिका	19	32	ददुष्म	145	34	दायाद	201	89
दण्डः	125	21	दर्पण	38	8	दार	92	6
	194	42	दर्पण	21	8	दारद	39	11
दण्डधर	13	59	दर्वाकर	120	48	दारित	181	101
दण्डनीति	28	5	दर्श	187	31	दाह	55	13
दण्डविष्कम्भ	151	174	दर्शन			दाहण	34	20
दण्डाहत	148	53						



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
तुम्ही	81	156	तुमि	149	56	त्रास	34	21
तुम			तुम्	35	27	त्रिक	104	76
तुम	129	44		149	55	त्रिकङ्क	52	2
तुमग			तुष्णक	169	22	त्रिकट	158	111
तुमगवदन	14	71	तुंगा	196	51	त्रिका	43	27
तुमय	183	2	तेजन	82	161	त्रिकू	52	2
तुमसाह	10	44	तेजनक	82	162	त्रिकट	239	41
तुमीय	110	123	तेजनी	68	84	त्रिकट्टी		
तुम्भ	111	128	तेजस	101	62	त्रिगुणाकृत	141	9
तुला	154	87		223	235	त्रितस	239	41
तुलाकोटि	108	109	तेजित	179	91	त्रितक्षा		
तुल्य	164	37	तेम	187	29	त्रिदश	3	7
तुल्यपान	149	55	तेमन	147	44	त्रिदशालय	3	6
तुवर	26	9	तेजसावसिनी	163	33	त्रिदिव		
तुवरिका	77	131	तेतिर	91	44	त्रिदिवेश	3	7
तुष	64	59	तेलपणिक	111	131	त्रिपयगा	44	31
	143	22	तेलपाविका	88	27	त्रिपुटा	73	108
तुषार	17	19	तेलीन	141	7		76	126
	17	20	तैष	22	15	त्रिपुरान्तक	8	83
तुषित	4	10	तोक	96	28	त्रिफला	158	111
तुहिन	17	19	ताकम	142	16	त्रिभण्डी	73	109
तुण	135	89	तोटक	237	30	त्रियामा	21	4
तुणी	135	90	तोत्र	128	42	त्रिलोचन	8	32
तुणीर	135	89		142	12	त्रिवर्ग	122	58
तुद	60	42	तोदन	142	12		125	20
तुण	13	65	तोमर	136	94	त्रिविक्रम	6	20
तुल	60	42	तोय	40	4	त्रिविष्टप	3	6
	157	106	तोयविप्लवी	73	111	त्रिवृत्	73	108
तुलिका	193	33	तोरण	51	16	त्रिवृता		
तुवर	212	166	तोर्यत्रिक	32	10	त्रिसंध्य	20	3
तुष्णीशील	171	39	त्यक्त	181	107	त्रिसंख्य	141	9
तुष्णीक			त्याग	117	29	त्रिस्तोत्र	44	31
तुष्णीकाम्	228	10	त्रपा	34	23	त्रिहृत्य	141	9
तुष्णीम्			त्रपु	157	105	त्रिहायणी	150	68
तुण	83	168	त्रयी	28	3	त्रुटि	76	126
तुणदुम	84	170	त्रस	177	74		175	62
तुणधान्य	144	25	त्रसर	186	24		194	37
तुणध्वज	81	161	त्रस्तु	170	26	त्रेता	116	20
तुणराज	84	169	त्राण	181	106		198	69
तुणशस्त्र	65	70		184	8	त्रोदि	90	37
तुभ्या	83	168	त्रात	181	106	त्रयम्बक	8	33
तुतीयामकृति	97	39	त्रायन्ती	80	151	त्रयम्बकसख	14	68
तुप्त	181	103	त्रायमाणा			त्रयण	158	111

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
तद	53	5	ताक्ष्यशैल	156	102		110	123
तद्वन	98	42	ताल	32	9		146	43
तद्वणी	92	8		84	169	तिलकालक	99	49
तद्वर्क	25	3		105	85	तिलपर्णी	111	132
तद्वर्षिषा	28	5		156	103	तिलपिञ्ज	}	143 19
तद्वर्षी	65	66	तालपत्र	107	103	तिलपत्र		
तद्वर्जनी	104	81	तालपर्णी	75	123	तिलिप्त	38	5
तद्वर्णक	149	61	ताम्रमूलेका	75	119	तिक्ष्ण	141	7
तद्वर्ण	115	14	तालवृन्तक	112	140	तित्त्व	59	33
	149	56	तालाङ्क	6	24	तिष्य	18	23
	183	4	ताली	76	127		209	147
तद्वर्धन्	116	19		84	170	तिष्यफल	63	58
तद्वै	35	28	तालु	106	91	तीक्ष्ण	20	36
	149	55	तावत्	225	247		155	98
तल	135	85	तिक्त	26	9		196	53
	218	203	तिक्तक	81	155	तीक्ष्णगन्धक	58	31
तलिन	206	127	तिक्तशाक	57	25	तीर	40	7
तल्प	207	131	तिग्म	20	36	तीर्थ	201	86
तल्लज	24	27	तितउ	144	26	तीव्र	14	67
तल्ल	180	99	तिनिक्ष	35	24	तीव्रवेदना	39	3
तल्लकर	162	25	तिनिधु	170	31	तु	224	243
ताण्डव	32	10	तिनिधिरि	90	36		228	5
	238	34	तिनिधि	20	1	तुङ्ग	57	25
तात	96	28	तिनिश	57	26		176	70
ताण्डिक	124	15	तिन्तिनी	61	44	तुङ्गी	78	140
तापस	119	42	तिन्तिनीक	145	35	तुच्छ	174	56
तापसतरु	61	46	तिन्दुक	50	39	तुणि	76	128
तापिच्छ	65	68	तिन्दुकी	232	8	तुण्ड	105	89
तामरस	45	40	तिमि	42	19	तुण्डिकेरी	74	116
तामलकी	76	127	तिमिगिल	42	20		78	139
तामसी	21	5	तिमित	181	106	तुण्डिभ	}	101 61
ताम्रवल्ली	}	75 120	तिमिर	37	3	तुण्डिल		
ताम्रली			तिरस्	227	257	तुण्डिरसज्जन	156	101
ताम्रक	155	97	तिरस्कृतिणी	110	120	तुण्ड्या	70	95
ताम्रकुट्टक	159	8	तिरस्कृता	34	22		76	126
ताम्रचूड	87	18	तिरीट	59	33	तुण्ड्याज्जन	156	101
तार	31	2		237	30	तुण्डुभ	142	17
तारकजित्	9	40	तिरोधान	16	13	तुण्डिन्	}	98 44
तारका	}	18 22	तिरोहित	139	113	तुण्डिभ		
तारा			तिर्यचु	171	34	तुण्डिल		
तारुण्य	97	40	तिलक	60	40	तुण्ड	76	128
ताक्ष्य	7	29		99	49	तुण्डवान	159	6
	209	145		102	65	तुण्डुल	138	108

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
ज्ञान	26	6	हिम्मा	98	41	तन्त्रिका	68	83
ज्ञानिन्	124	14	डण्डभ	38	5	तन्दू	145	34
उवा	46	2	डका	32	6	तन्त्री	37	37
	135	86	तक	148	53		214	177
उयाघातवारण	135	85	तक्षक	189	4	तप	23	19
उयानि	184	9	तक्षन्	159	9	तपःकेशमह	119	42
उयावस्	98	43	तट	40	7	तपन	19	32
	223	236	तटिनी	44	30		39	1
उयेष्ठ	194	41	तडाग	44	28	तपनीय	155	94
उयेष्ठ	22	16	तद्विन्	16	10	तपस्	22	15
उयोतिरिह्यण	88	29	तद्वित्त	15	7		222	233
उयोतिध्वती	80	150	तष्टक	237	33	तपस्य	22	15
उयोतिसू	222	231	तण्डुल	72	107	तपस्विन्	119	42
उयोत्सना	17	17	तण्डुलीय	78	136	तपस्विनी	77	134
उयोतिषिक	124	14	तत	31	4	तप्त	181	103
उयोत्सनी	21	5		179	86	तम	18	27
	74	118	ततस्	228	3	तमस्	24	29
उयर	100	56	तरकाल	127	30		37	3
उवलन	12	53	तच्च	32	9		222	232
उवाल	12	57	तत्पर	169	9	तमस्विनी	21	4
उगिति	227	2	तथा	228	10	तमाल	65	68
उद्यमला	76	127	तथागत	4	13	तमालपत्र	110	123
सर	52	5	तथ्य	30	22	तमिस्र	37	3
सर्सर	32	8	तद्	228	3	तमिस्रा	21	5
सम्वरी	233	10	तदा	230	23	तमी	21	4
सष	42	17	तदात्त्व	127	30	तमोनुद्	201	89
सषा	74	117	तदानीम्	230	23	तमोपह	223	239
साटल	60	40	तनय	95	27	तरक्षु	84	1
साटलि	238	38	तनु	103	71	तरङ्ग	40	5
सायुक	60	40		175	61	तरङ्गिणी	44	30
सिण्ठी	66	75		175	66	तरणि	19	31
सिखिका	88	29		204	113		41	10
रङ्क	163	34	तनुत्र	132	65		66	74
	237	33	तन्	103	71	तरपण्य	41	11
दिष्टिभ	90	36	तनूकृत	180	99	तरल	107	102
टीका	232	7	तनूतपात्र	12	53		177	75
डमर	185	14	तनूह	90	37	तरला	148	50
डमर	32	8		107	99	तरस्	13	64
डयन	130	58	तन्नु	162	28		137	103
डहु	64	61	तन्त्र	215	186	तरस	102	63
शिष्टिम	32	8	तन्त्रक	109	112	तरस्विन्	134	74
शिम्भ	185	14	तन्त्रवाय	86	13		206	128
हिम्म	90	39		159	6	तरि(री)	41	10

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA					
जबन्ती	}	65	66	जातापत्या	94	16	जीव	18	25		
जया				जाति	25	31		140	121		
जय्य		133	75		66	13	जीवक	61	44		
जरष		145	36		198	68		79	143		
जरत्		98	42	जातीकोष	}	111	132	जीवं शीव	90	36	
जरद्व		149	61	जातीफल				जीवन	40	3	
जरा		98	41	जातु		228	4		140	1	
जरायु		97	38	जातोक्ष		149	61	जीवनी	}	79	142
जरायुज		173	50	जानु		103	72	जीवनीया			
जल		40	3	जामात्		96	32	जीवनोषध		140	121
जलजन्तु		42	20	जामि		208	142	जीवन्तिका		68	82
जलधर		15	7	जाम्बव		56	19			68	83
जलनिधि		40	2	जाम्बूनद		155	95	जीवन्ती	}	79	142
जलनिर्गम		40	7	जायक		110	125	जीवा			
जलनीली		45	38	जाबा		92	6	जीवातु		140	121
जलप्राय		47	10	जायाजीव		160	12	जीवान्तक		160	14
जलमुत्		16	8	जायापती		97	38	जीविका		140	1
जलम्याल		38	5	जायु		99	50	जीवितकार		140	121
जलशुक्ति		43	23	जार		97	35	जुगप्सा		29	13
जलाधार		43	25	जाल		42	16	जुह्वा		78	138
जलाशय		43	25			217	201	जुहू		116	25
		83	165	जालक		55	16	जृति	}	188	39
जलोच्छ्वास		41	10	जालिक		160	14	जृति			
जलौकस्	}	43	22	जाली		74	118	जृम्भ	}	37	36
जलौका				जात्म		160	16	जृम्भण			
जल्पाक		171	36			168	17	जतु		133	75
जल्पित		182	108	जावाल		159	11			133	78
जब		13	64	जिघत्सु		169	20	जमन		149	56
		133	74	जिह्वा		69	91	जब	}	133	75
जवन		129	46	जित्तर		133	78	जैत्र			
		133	74	जिन		4	13	जैवातृक		17	15
		188	39	जिष्णु		10	42			167	6
जवानिका		110	120			133	78			190	11
जहुतनया		44	31	जिह्वा		176	71	जोह्वाक		111	126
जागरा		185	19			208	141	जोषम्		226	252
जागरितृ	}	170	32	जिह्वा		38	8			113	5
जागरूक				जिह्वा		106	91	ज्ञपित	}	180	98
जागर्या		185	19	जीम		98	42	ज्ञप्त			
बाहुगुलिक		39	11	जीमूत		16	8	ज्ञप्ति		25	1
बाहुधिक		133	74			65	69	ज्ञातसिद्धान्त		124	15
जत		25	31	जीरक		145	36	ज्ञाति		96	84
जातरूप		155	95	जीर्ण		98	42	ज्ञातृ		170	80
जातवेदस्		12	53	जीर्णवस्त्र		109	115	ज्ञातेव		97	85

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
कैल	49	7	किरित	180	100	जनक	96	28
केन			किम	181	104	जनंगम	161	20
केनिक	22	15	किमवहा	68	83	जनता	188	43
केनरष	14	70	कुरिका	136	93	जनन	24	30
कोव	77	135	केक	91	44		113	1
	237	30	केदन	184	7	जननी	81	154
कोरपुष्पी	76	127	कगत	47	6		96	29
कोल	109	118		200	80	जनपद	47	8
कोर	162	25	कगती	47	6	जनयित्री	96	29
कोरिका	162	26		198	71	जनधृति	29	7
कोर्य			कगत्माण	13	62	कनादन	6	19
क्युय	181	104	कगर	132	65	कनाश्रय	50	9
क्यलक	152	76	कगल	165	42	कनि	24	30
कगलाणी	78	137	कगध	182	111	कनी	81	154
कगत्र	127	33	कगधि	149	55		92	9
कगता	72	105	कगधन	103	74	कनुम्	24	30
	83	167	कगधनेफला	64	62	कनुयु	56	22
	145	37	कगधन्य	178	81	कनुयुफल	24	30
कगत्राकी	74	115		211	160	कन्यमन्	24	30
कद	55	14	कगधन्यज	98	43	कान्धिमन्	24	30
	90	37		158	1	कन्य	122	58
कदन	55	14	कदगम	177	74		138	105
कदिम्	50	14	कदगमेतर	177	74		211	160
कदम्	35	30	कदधा	103	72	कनुयु	24	30
कद	186	20	कदधाकारिक	133	74	कप	120	47
	201	88	कदधाल	54	11		184	12
कदन्	116	22	कदध	77	134	कपन	184	12
	222	233		107	97	कपा	66	76
कध	126	23		194	38	कपमती	97	38
	180	98		58	32	कपमाल	41	9
कध	138	110	कदिन्	77	134	कपमीर	57	24
कधि	17	18	कदिला	104	77		67	80
	20	35	कदर	216	190	कपु	56	19
कग	152	76	कड	17	20	कपुबुक	85	5
कगी	98	44		171	38		189	3
कगत	181	104	कडुल	99	49	कम्बू	56	19
कग	114	11	कनु	110	125	कम्भ	57	24
कगदित	180	98	कनुक	146	40	कम्भभेदिन्	10	43
कगन्दस	113	6	कनुका	88	27	कम्भल	57	24
कगध	211	158	कनुकन	81	154	कम्भीर	65	67
कगि	181	104	कनुका	104	78	कय	138	111
कगि	37	2	कनु			कयन्	10	46

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
चरणायुष	87	18	चार	124	13	चिरकिय	168	17
चरम	178	81	चारदी	79	146	चिरष्टी	92	9
चरमस्माभृत्	52	2	चारण	160	12	चिरंतन	177	77
चराचर	} 177	74	चारु	173	52	चिरसूता	151	71
चरिष्णु			चार्विक्य	110	122	चिररात्राय	} 227	1
चरु	116	22	चालनी	144	26	चिरस्य		
चर्वरी	233	10	चाष	87	16	चिराव		
चर्वा	25	2	चिकित्सक	100	57	चिरिबिल्व	62	48
	110	122	चिकित्सा	99	50	चिलिचिम	42	18
चर्मकसा	79	144	चिकुर	106	95	चिह्न	87	22
चर्मकार	159	7		172	46		101	60
चर्मन्	120	46	चिकण	147	46	चिन्ह	17	17
	136	91	चिह्नस	238	35	चीन	85	9
चर्मप्रभेदिका	163	35	चिन्हा	61	44	चीर	237	31
चर्मप्रसेविका	163	33	चित्	25	1	चीरी	} 88	29
चर्मन्	61	46		228	3	चौकिका		
	133	72	चिना	} 139	119	चीवर	237	31
चर्मा	118	35	चिति			चुक	78	141
चर्चित	182	111	चित्त	25	31		145	35
चर्वणी	93	10	चित्तविभ्रम	35	26		235	20
चल	177	75	चित्तसमुद्रति	34	22	चुक्रिका	78	141
चलदल	56	20	चिताभाग	25	2	चुह	101	90
चलन	} 177	75	चिल्या	139	119	चुलि	144	29
चलाचल			चित्र	27	17	चुचुक	104	77
चलिन	137	97		34	19	चुडा	89	32
	179	87		214	179	चूडा	89	32
चविका	} 71	98	चितक	62	51		107	97
चव्य				67	80	चूडामणि	107	102
चषक	165	43		110	123	चूडाल	82	160
चपाल	115	18	चितकर	159	7	चूत	59	33
चाक्रिक	137	98	चित्रकृत्	57	27	चूर्ण	112	134
चाङ्गेशी	78	141	चित्रतण्डुला	72	106		137	100
चाटकेर	87	19	चित्रपर्ण	70	93	चूर्णकुन्तल	106	96
चाण्डाल	161	20	चित्रभानु	12	56	चूर्ण	233	9
चाण्डालिका	163	32		19	31	चुलिका	128	39
चातक	87	17		203	105	चेटक	160	17
चानुर्वर्ण	113	2	चित्रशिखाण्डिज	18	25	चेत्	229	13
चान्द्रभागा	44	34	चित्रशिखाण्डिन्	19	28	चेतकी	64	60
चाप	134	84	चित्रा	69	88	चेतन	24	30
चामर	127	32		81	157	चेतना	25	1
चामीकर	155	95	चिन्ता	35	29	चेतस	25	31
चाम्पेय	64	64	चापेटक	147	47	चेर	109	115
	65	65	चिचुक	106	9		218	203



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
बन्ध्यापथ	48	18	प्रात	179	90	चतुर	161	19
बन्ध्यारवा	72	107	ब	224	242	चतुरङ्गुल	57	23
बन	16	8		228	5	चतुरानन	5	16
	31	4	बकोरक	90	36	चतुर्भद्र	122	58
	32	9	बक	88	23	चतुर्भुज	6	20
	136	92		130	57	चतुर्वर्ग	122	58
	175	66		134	79	चतुष्पथ	48	17
	204	111		214	183	चतुर्हायणी	150	68
बनरस	40	5	चक्रकारक	76	129	चत्वर	50	13
बनसार	111	130	चक्रपाणि	6	20		115	18
बनाधन	204	110	चक्रमर्दक	79	147	चन	228	3
बर्म	36	34	चक्रयान	130	52	चन्दन	111	131
बस्मर	169	20	चक्रला	82	160	चन्दना	73	112
बस	20	2	चक्रवर्तिन्	122	2	चन्द्र	16	14
घाटा	105	88	चक्रवर्तिनी	81	154		79	147
घाष्टिक	137	98	चक्रवाक	88	23		214	183
घात	139	117	चक्रवाल	15	6	चन्द्रक	89	32
घातुक	170	28		52	2	चन्द्रमस्	16	14
	173	47	चक्राङ्ग	88	24	चन्द्रवाल	75	125
बास	83	168	चक्राङ्गी	68	86	चन्द्रशेखर	7	30
डुटिका	103	72	चक्रिन्	38	7	चन्द्रसंज्ञ	111	130
डुण	234	18	चक्रीवत्	152	77	चन्द्रहास	135	90
धूर्णित	170	32	चक्षुःश्रवस्	38	7	चन्द्रिका	17	17
धृणा	34	18	चक्षुर्	106	93	चपल	13	65
	187	32	चक्षुष्या	156	102		156	99
	196	51	चक्ष	62	52		172	46
धृणि	20	34	चक्षल	177	75	चपला	16	10
धर्त	148	52	चक्षला	16	10		71	97
	199	76	चञ्चु	90	37	चपेट	105	84
धृष्टि	80	151	चटक	87	19	चमर	86	10
	84	2	चटका	158	110	चमारिक	56	22
चोटक	129	44	चटकाशिरस्	143	18	चमस	238	35
चोणा	105	89	चणक	170	32	चमसी	233	10
चोणिन्	84	2	चण्ड	69	88	चमू	134	79
चोष्टा	59	37	चण्डा	76	129		134	82
	84	169		67	77	चमूह	85	9
चोर	34	20	चण्डात	110	119	चम्यक	64	64
चोष	51	20	चण्डातक	158	4	चब	49	3
चोषक	74	118	चण्डाल	161	20	चर	90	41
चोषणा	29	12	चण्डालवस्त्रकी	163	32		124	13
घ्राण	105	89	चण्डिका	9	37	चरक	177	74
	179	90	चतुःशाल	49	6	चरण	237	33
घ्राणतपन	26	11					103	71



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
गेन्दुक	112	138	गोपुर	51	16	प्रस्थि	82	162
गेह	49	4		77	132	प्रस्थिक	158	110
गेरिक	53	8		214	183	प्रस्थिल	60	38
	190	12	गोप्याक	160	17		67	77
गेरेय	156	104	गोमत	149	58	प्रस्व	30	20
गो	149	60	गोमब	148	50		182	111
	150	66	गोमायु	85	5	ग्रह	21	9
	192	25	गोमिन्	149	58		184	8
गोकण्टक	71	99	गोरस	148	53		223	237
गोकर्ण	86	10	गोदै	102	65	ग्रहणी	100	55
	105	83	गोल	235	20	ग्रहपति	19	31
गोकर्णी	68	84	गोलक	97	36	ग्रहीतृ	170	27
गोकुल	149	58	गोला	157	108	ग्राम	51	19
गोक्षुरक	71	99	गोलिह	60	40		208	140
गोचर	26	8	गोलोमी	72	103	ग्रामणी	195	49
गोजिह्वा	75	120		82	159	ग्रामतक्ष	159	9
गोत्रुम्बा	81	157		158	111	ग्रामता	188	43
गोत्र	51	1	गोवन्दनी	63	56	ग्रामाधीन	859	9
	113	1	गोविन्द	6	19	ग्रामान्त	51	20
	214	181		201	91	ग्रामीणा	70	95
गोत्रभिद्	10	42	गोविषु	148	50	ग्राम्य	30	19
गोत्रा	46	3	गोशाल	238	40	ग्राम्यधर्म	122	57
	149	60	गोशार्थ	111	131	ग्रावन्	51	1
गोदारण	142	14	गोष्ठ	48	13		52	4
गोदुह	149	57	गोष्ठी	115	15		204	106
गोधन	149	58	गोष्यद	202	94	ग्रास	148	54
गोधा	135	85	गोसंह्य	149	57	ग्राह	43	21
गोधावदी	75	119	गोस्तन	108	105		184	8
गोधि	106	92	गोस्तनी	73	108	ग्राहिन्	56	21
गोधिका	43	22	गोस्थानक	48	13	ग्रीवा	105	88
गोधिकात्मज	85	6	गौड	234	18	ग्रीष्म	22	18
गोधूम	143	18	गौतम	5	15	ग्रीव्यक	108	104
गोनर्द	77	132	गोधार			ग्लस्त	182	111
गोनस	38	4	गोधिय			ग्लह	165	45
गोप	123	7	गोधिर			ग्लान		
	149	57	गौर	27	13	ग्लास्तु	101	58
	207	130		27	14	ग्लौ	17	15
गोपति	150	62		216	190	घट	145	32
गोपरस	156	104	गौरी	9	36	घटना		
गोपानधी	51	15		92	8	घटा	138	108
गोपार्यात	181	106	गोष्टीन	48	13	घटीयन्त्र	162	28
गोपाल	149	57	प्रस्थिपर्ण	77	133	घट्ट	234	18
गोपी	73	112	प्रस्थित	179	86	घण्टा	60	40

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
गर्मोपाय	97	38	गारुमत	155	92	गुन्ना	63	56
गर्मिणी	95	22	गार्मिण	95	22		82	160
गर्मोपपातिनी	151	69	गार्हपत्य	116	19	गुप्त	179	89
गर्भुत्	83	166	गालव	59	33		181	106
गर्भ	34	22	गिर	27	1	गुप्ति	199	74
गर्हण	29	13	गिरि	51	1	गुरण	184	11
गर्हा	174	54		184	11	गुरु	18	25
गर्हापादिन्	171	37	गिरिकर्षा	72	104		114	7
गल	105	88	गिरिका	86	12	गुर्विणी	95	22
गलकम्बल	150	63	गिरिज	156	104	गुल्फ	103	72
गलन्तिक	144	31	गिरिजामल	156	100	गुल्म	54	9
गलित	181	104	गिरिमलिका	65	67		102	66
गलोदेश	129	49	गिरिषा	}	8		134	82
गल्या	188	43	गिरीषा				208	142
गवय	86	11	गिलित	182	111	गुल्मिनी	54	9
गवउ	156	100	गीत	31	26	गुल्फक	84	169
गवाक्ष	50	9	गीर्ण	182	110	गुह	9	39
गवासी	81	157	गीर्षि	183	11	गुहा	52	6
गवीश्वर	149	58	गीर्ष-व्य-ति	18	25		70	93
गवेधु	}	144	गीर्वाण	4	9	गुह्य	210	154
गवेधुका			गुगुलु	59	34	गुह्यक	4	11
गवेधुणा	117	32	गुच्छ	143	21	गुह्यकेश्वर	14	68
गवेधित	181	105		108	105	गूढ	179	89
गव्य	148	50	गुच्छक	55	16	गूढपाद्	38	7
गव्या	149	60	गुच्छार्ध	108	105	गूढपुरुष	124	13
गव्युति	48	18	गुष्म	71	98	गूय	102	68
गहन	53	1	गुहं	194	42	गून	180	97
	178	85	गुहपुष्प	57	27	गुञ्जन	80	149
गह्वर	52	6	गुहफल	57	28	गुम्फ	169	22
	215	184	गुडा	72	106	गुम्फ	79	22
गाङ्गेय	155	94	गुह्वी	68	83	गुम्फसी	233	10
	210	155	गुण	24	29	गुह	49	4
गाङ्गेरुकी	74	117		125	19		49	5
गाढ	14	67		135	86	गुहगोधिका	86	13
गाणिक्य	95	22		144	28	गुहपति	124	15
गाण्डीव	135	85		162	27	गुहयाल	170	27
गात्र	103	70		195	47	गुहस्थूण	237	30
	128	41	गुणवृक्षक	41	12	गुहागत	118	34
गात्रातुलेपनी	111	133	गुणित	179	89	गुहाराम	53	1
गान	31	26	गुणित	179	89	गुहावपहर्णा	50	13
गान्धार	31	1	गुद	103	73	गुहिन	113	3
गावत्रो	62	50	गुन्द	82	162	गुणक	91	44
	116	22					168	61

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
कर	20	36	गज्रा	50	8	गन्धर्व	4	11
	152	77	गडक	42	17		11	52
खरणस्	}	99	गड	234	18		86	11
खरणस		46	गडल	99	48		129	45
खपुण्या		78	गण	90	41		207	132
खरमजरी		69		134	82	गन्धर्वहस्तक	62	51
खराभा		73		195	46	गन्धर्वह	}	13
खर्जू		100	गणक	124	14	गन्धर्वहा		62
खर्जूर		84	गणदेवता	4	10	गन्धर्वहा	105	89
		155	गणनीय	175	65	गन्धर्वसार	111	131
खर्जूरी		84	गणरात्र	21	6	गन्धात्मन्	}	156
खर्व		99	गणरूप	67	81	गन्धिक		102
खल		173	गणहासक	76	129	गन्धिनी	75	124
खलपू		168	गणाधिप	9	38	गन्धोत्तमा	164	40
खलिनी		188	गणिका	66	72	गन्धोली	88	28
खलीन		130		94	19	गभस्ति	20	34
खलु		227	गणिकारिका	65	66	गभीर	42	15
खत्या		188	गणित	}	175	गग	}	136
खात		43	गणेश		65	गमन		96
खादित		182	गण्ड	106	90	गम्भारी	59	36
खारी		154		128	38	गम्भीर	42	15
खारीक	}	141	गण्डक	85	4	गम्य	180	93
खारीवाप		10	गण्डकाली	79	142	गरल	38	9
खिल		46	गण्डदोल	52	6	गरागरी	65	69
खुर		77	गण्डाली	82	159	गरिष्ठ	182	113
		130	गण्डीर	81	157	गरुड	7	29
खुरणस्	}	99	गण्डपद	43	22	गरुडध्वज	6	19
खुरणस		47	गण्डपदी	43	24	गरुडापज	19	33
खेट		174	गण्डूषा	233	10	गरुत्	90	37
खेय		44	गतनासिक	99	46	गरुमत	7	29
खेला		36	गद	99	51		89	35
खोद		99	गद्य	237	31		197	58
ख्यात		167	गन्त्री	130	53	गर्गरी	151	74
ख्यातगर्हण		180	गन्ध	26	7	गर्जित	16	9
ख्याति		184	गन्धकृटी	75	123		128	37
गगन		15	गन्धन	205	115	गर्त	37	2
गङ्गा		44	गन्धनाकुली	74	115	गर्दभ	152	77
गङ्गाधर		8	गन्धफली	63	56	गर्दभाण्ड	61	43
गज		127		64	64	गर्धन	169	22
गजता		128	गन्धमादन	52	3	गर्भ	97	39
गजबन्धनी		129	गन्धमूली	81	154	गर्भक	207	135
गजभक्ष्या		75	गन्धरस	156	104	गर्भोगार	112	135
गजानन		9					50	8

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
क्षज	22	11	क्षीर	40	4	क्षेत्र	142	11
	37	39		148	51	क्षोणा	46	2
	195	47		214	183	क्षोद	137	100
क्षजदा	21	4	क्षीरविकृति	147	44	क्षोदिष्ट	182	112
क्षजन	139	115	क्षीरविदारी	73	111	क्षोम	50	12
क्षजप्रभा	16	9	क्षीरगुक्ता	73	110	क्षोम	157	107
क्षतज	102	64	क्षीरावी	71	100	क्षोम	109	113
क्षतव्रत	121	54	क्षीरिका	61	46	क्षुत	179	91
क्षतृ	131	60	क्षीरोद	40	2	क्षमा	46	3
	159	3	क्षीव	169	23	क्षमाभृत	51	1
	197	63	क्षुत्				122	1
क्षत्रिब	122	1	क्षुत	100	52	क्ष्वेड	38	9
क्षत्रिया	93	14	क्षुताभिजनन	143	19	क्ष्वेडा	138	108
क्षत्रियो	93	15	क्षुद्र	173	48		195	43
क्षत्रियाणां	93	14		214	178	क्ष्वेडित	238	34
क्षपा	21	4	क्षुद्रघण्टिका	108	110	क्ष	15	1
क्षपाकर	17	15	क्षुद्रशङ्ख	43	23		191	18
क्षम			क्षुद्रा	70	94		235	22
क्षमा	208	142		214	178	क्षवखट	177	76
क्षमित्र			क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात	42	19	खग	89	33
क्षमिन्	170	61	क्षुध	148	54		135	87
क्षन्तृ			क्षुधित	169	20		191	19
क्षय	23	22	क्षुप	54	8	खगेश्वर	7	29
	99	51	क्षुमा	143	20	खजाका	145	34
	184	7	क्षुर	72	105	खज्ज	99	49
	209	145		235	20	खज्जन		
क्षव	100	52	क्षुरक	60	40	खज्जरीट	87	16
	143	19	क्षुरप्र	235	20	खट	234	17
क्षवधु	100	52	क्षुरिन्	159	10	खट्वा	112	138
क्षान्त	180	97	क्षुरक	160	16	खट्वा	85	4
क्षान्ति	35	24		175	61	खट्वा	135	90
क्षार	156	99	क्षेत्र	190	10	खट्वाग्नि	85	4
क्षारक	55	16		142	11	खण्ड	17	16
क्षारमृत्तिका	46	4	क्षेत्रज्ञ	214	181	खण्डपरशु	8	31
क्षारित	172	43		24	29	खण्डविकार	146	43
क्षिति	46	2	क्षेत्राजीव	193	33	खण्डिक	142	16
	198	70	क्षेपण	141	6	खदिर	62	50
क्षित	179	88	क्षेपणी	184	11	खदिरा	79	142
क्षिप्नु	170	30	क्षेपिष्ट	41	13	खद्योत	88	29
क्षिप्र	13	64	क्षम	182	112	खनि	52	7
क्षया	184	7		24	26	खनित्र	142	12
				76	129	खपुर	84	169
				238	31			

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
कोकिल	87	20	कोक्षेयक	135	90	किमि	86	14
कोकिलाक्ष	72	105	कोटतक्ष	159	9	किवां	28	2
कोटर	55	13	कोटिक	160	14		211	157
कोटवी	94	17	कोपण	13	59	क्रियावत्	168	18
कोटि	135	85	कोतुक	} 34	31	कीडा	36	33
	136	94	कोतुहल			कुम्भ	88	23
	194	38	कोदवीज	141	8	कुम्भ	35	26
कोटिवर्षा	77	134	कोन्तिक	132	171	कुम्भ	87	36
कोटिश	142	12	कोन्ती	75	121	कूर	173	47
कोटार	234	18	कोपीन	206	122		177	76
कोठ	100	54	कोमुदी	17	17		216	192
कोण	32	6	कोमादकी	7	28	केतव्य	} 151	81
	136	94	कोलीटेनेय	} 95	27	केय		
कोदण्ड	134	84	कोलटेय			कोड	84	2
कोद्व	142	16	कोलटेय	} 95	26		104	77
कोप	35	26	कोलटर			कोध	35	26
कोपना	92	4	कोलीन	205	116	कोषन	170	32
कोपिन्	170	32	कोलेयक	161	22	कोषमुष	48	18
कोमल	177	78	कोशिक	59	34	कोष्ट	85	5
कोयष्टि	90	36		190	10	कोष्टविना	70	93
कोरक	55	16	कोशेय	108	111	कोष्टी	73	110
कोरङ्गी	76	125	कोस्तुभ	7	28	कोष	88	23
कोरदूपक	142	16	ककच	163	35	कोषदारण	9	40
कोल	41	11	ककर	67	77	कम	} 185	10
	59	37		87	20	कमप		
	84	2	कनु	115	13	कमप	181	106
कोलक	111	129	कनुव्वांसिन्	8	34	किम	101	60
	145	36	कनुभुन्	4	9	किनाक्ष	180	99
कोलदल	77	130	कथन	139	116	क्रिषित	30	19
कोलम्बक	32	7	कन्दन	138	109	क्रिट	180	99
कोलवल्ली	71	98		206	123		73	110
कोला	71	97	कन्दित	37	36	क्रीतक	70	95
कोलाहल	31	26	कम	119	39	क्रीतिकिका	97	39
कोलि	59	37	कमुक	60	42	क्रीब	219	214
कोविद्	113	5		84	169		187	29
कोविदार	56	22	कमेलक	152	75	केश	102	65
कोराकल	111	130	कयविक्रयिक	152	78	कामन्	143	20
कोराकली	189	8	कयेक	152	79	कङ्कु	31	25
कोप	154	91	कय	153	81	कण	184	8
	221	222	कय	102	63		31	25
कोष्ट	194	40	कय्याद्	} 13	59	कणन	189	96
कोण	20	36	कय्याद्			कथिना	31	25
कोश्टिक	141	17	कययक	152	79	कम		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
कुसुम्भ	157	106	कृताभिषेका	92	5	केकिन्	89	31
	208	136	कृतिन्	113	6	केतकी	84	170
कुसति	35	30		166	4	केतन	137	101
कुस्तुम्बक	145	38	कृत	181	104		205	114
कुहना	121	53	कृति	120	46	केतु	194	60
कुहर	37	1	कृतिवासस्	8	31	केदर	235	20
कुह	21	9	कृत्या	211	159	केदार	142	11
कुरुद	168	14	कृत्रिमधूपक	111	128	केनिपातक	41	13
कृट	52	4	कृत्स्न	175	65	केयूर	108	107
	91	43	कृपण	173	48	काल	36	33
	194	37	कृपा	34	18	केवल	218	204
कृत्यन्त्र	162	27	कृपाण	135	90	केश	106	95
कृतशास्त्रमलि	61	47	कृपाणी	163	34	केशपणी	69	89
कृत्य	177	74	कृपालु	168	15	केशाम्बुनामन्	75	122
कृ	43	26	कृपीटयोनि	12	53	केशपाश्री	107	97
कृ	41	10	कृमिकेशोत्थ	108	111	केशव	5	18
	41	12	कृमिघ्न	72	107		98	45
	103	75	कृमिज	111	126	केशवेष	107	97
कृबर	131	58	कृश	175	61	केशिक	}	98 45
कृबे	106	92	कृशानु	12	54	केशिन्		
कृवशीष	79	143	कृशानुरेतम्	8	33	केशिनी	76	127
कृबिका	147	44	कृशाश्विन्	160	12	केशर	45	43
कृदन	35	33	कृषक	142	13		57	25
कृपर	104	80	कृषि	140	2		65	65
कृपासक	109	118	कृषिक	}	141 6	केशरिन्	84	1
कृम	43	21	कृपीवल			केशभजिन्	6	22
कृल	40	7	कृष्ट	141	8	केडर्य	60	41
कृष्माण्डक	81	156	कृष्टि	113	6	केतव	35	30
कृकण	87	20	कृष्ण	5	18		165	45
कृकलास	86	13		27	14	केदारक	}	142 11
कृकवाकु	87	18		145	36	केदारिक		
कृकाटिका	105	88	कृष्णपादफल	65	68	केदार्य	}	45 37
कृच्छ्र	39	4	कृष्णफला	70	96	केरव		
	121	52	कृष्णभेदा	68	86	केलास	14	70
कृत	199	77	कृष्णला	71	98	केवर्त	42	15
कृतपुद्गल	132	69	कृष्णलोहित	27	16	केवर्तामुस्तक	77	132
कृतमाल	57	24	कृष्णवर्मन्	12	54	केवत्य	26	6
कृतमुख	166	4	कृष्णश्रुन्ता	63	55	केशिक	}	106 96
कृतलक्षण	167	10	कृष्णसार	86	10	केश्य		
कृतप्रापरनका	92	7	कृष्णा	71	97	काक	85	7
कृतहस्त	132	69	कृष्णिका	143	19		88	23
कृतान्त	12	58	केकर	99	49	कोकनद	45	42
	197	64	केका	89	32	कोकनदच्छवि	27	15



PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
कुट	53	5	कुन्द	66	73	कुलक	60	39
	145	32		75	122		81	155
कुटक	142	13		235	19		159	5
कुटज	65	67	कुन्दुरु	75	122	कुलटा	93	10
कुटमट	63	57	कुन्दुरुकी	75	124	कुलथिका	156	103
	77	132	कुप्य	174	54	कुलपालिका	92	7
कुटर	151	74	कुप्य	174	91	कुलश्रेष्ठिन्	149	5
कुटिल	176	72	कुबर	14	18	कुलसंभव	113	2
कुटी	49	6		15	4	कुलसी	92	7
	238	38	कुबरक	76	128	कुलाय	90	38
कुटम्बव्याघृत	167	11	कुबराक्षी	63	55	कुलाल	159	6
कुटुम्बिनी	92	6	कुञ्ज	99	48	कुलाली	156	102
कुटनी	94	19	कुमार	9	40	कुलिश	11	47
कुट्टिम	238	34		33	12	कुली	70	94
कुठार	136	93	कुमारक	57	25	कुलीन	113	3
कुठेरक	67	80	कुमारी	66	74	कुलीर	43	21
कुडव	154	89		92	8	कुल्माष	143	18
कुडङ्गाक	234	17	कुमुद	15	5		235	21
कुड्मल	55	16		45	37	कुल्माषाभिषुत	146	39
कुड्य	49	4	कुमुदबान्धव	16	14	कुल्य	102	68
कुणप	140	120	कुमुदिका	60	41	कुल्या	44	34
कुणि	99	48	कुमुदिनी	45	39	कुवल	59	37
कुण्ड	168	17	कुमुदत्	47	9		239	42
	97	36	कुमुदती	45	38	कुवल्य	45	37
	144	31	कुम्वा	115	18	कुवाद	171	37
कुण्डल	107	103	कुम्भ	59	34	कुविन्द	159	6
कुण्डलिन्	38	7		128	38	कुवेणी	42	16
कुण्डी	120	46		207	134	कुश	83	169
कुणप	117	31	कुम्भकार	159	6		220	217
कुतुक	36	31	कुम्भसंभव	17	21	कुशल	24	26
कुतुप	145	33	कुम्भिका	45	38		166	4
कुन्		31	कुम्भी	60	41		218	205
कुतुहल	36	31	कुम्भीर	43	21	कुशी	156	99
कुत्सा	29	13		85	8	कुशीलव	160	12
कुत्सित	174	54	कुरङ्ग	161	24	कुशेशय	45	40
कुथ	83	166	कुरङ्गाक	66	76	कुष्ठ	76	126
	128	43	कुरण्टक	66	75		100	54
कुट्टाल	56	22	कुरुवक	66	75		238	34
कुनदी	157	108	कुशविन्द	82	160	कुशीद	141	4
कुनाशक	70	92	कुशविस्त	154	86	कुशीदिक	141	5
कुन्त	136	94	कुल	90	42	कुसुम	55	17
कुन्तल	106	95		113	1	कुसुमाञ्जन	156	103
						कुसुमेषु	7	26

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
कालक	99	49	काक्याद्	159	9	किलास	100	53
कालकम्पक	87	22	काग्रा	15	2	किलासिन्	101	61
कालकूट	39	10		22	11	किलिञ्जक	144	26
कालबाण	102	66		194	41	किल्बिष	23	23
कालधर्म	139	117	काद्यम्बुवाहिनी	41	11		221	224
कालपृष्ठ	134	84	काष्टीला	74	114	किशोर	129	47
कालमेधिका	69	91	कासमर्द	235	19	किष्कु	189	7
	73	109	कासर	85	4	किसलय	55	14
कालमेषी	70	96	कासार	44	28	कीकस	102	68
कालशेख	148	53	किशाह	143	21	कीचक	82	162
कालसूत्र	39	2		212	164	कीनाथ	220	216
कालस्कन्ध	60	39	किशुक	58	29	कीर	87	22
	65	68	किर्कीदिवि	87	16	कीर्ति	29	11
काला	63	55	किंकर	160	17	कील	12	57
	70	95	किंकिणी	108	110		217	198
	73	109	किंचित्	228	9	कीलक	151	73
	145	37	किंचुलुक	43	22	कीलाल	40	3
कालाशुह	111	127	किञ्जल्क	45	43		217	201
कालानुसार्य	75	123	किटि	84	2	कीलिन	172	42
	111	126	किट्ट	102	65	कीश	84	3
कालादस	155	98	किण	234	18	कु	46	3
कालिका	190	15	किणिही	69	89		224	241
कालिन्दी	44	32	किण्व	165	42	कुरर	99	48
कालिन्दीभेदन	6	24	किन्व	67	78	कुकुन्दर	103	75
काली	9	36		165	44	कुकूल	218	204
कालीयक	72	102	किन्नर	4	11	कुकुट	87	18
	111	126		14	71	कुकुभ	90	36
काल्य	20	2	किन्नरेश	14	69	कुक्कुर	77	133
काल्यक	77	135	किम्	226	252		161	22
काल्या	151	70		228	5	कुक्षि	104	77
कावचिक	132	67	किमु	228	5	कुक्षिभरि	169	21
कावेरी	44	35	किमुन	227	2	कुङ्कुम	110	123
काव्य	18	26		228	5	कुच	104	77
काश	82	163	किपचान	173	48	कुचन्दन	111	132
	100	52	किपुष	14	71	कुचर	171	37
काश्मरी	}	59	किंवदन्ती	29	7	कुचाप्र	104	77
काश्मर्य			किर	84	2	कुज	18	26
काश्मीर	79	146	किरण	20	34	कुचिन्	176	71
काश्मीरजन्मन्	110	124	किरात	161	21	कुज	53	8
काश्मपि	19	33	किराततिक्त	79	143		193	31
काश्मपी	46	2	किरीट	107	102		56	20
काष्ठ	55	13	किमोर	27	17	कुञ्जराशन		
काष्ठकुहाल	41	13	किल	226	255	कुञ्जल	146	39

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
क शिपु	207	130	काशी	108	108	काम्बल	190	55
क शेर	234	13	काण्ड	195	43	काम्बलिक	159	8
क शेरका	103	69	काण्डपृष्ठ	132	68	काम्बोज	129	46
कर्मल	138	111	काण्डवत्	132	70	काम्बोजी	78	139
कम्ब	129	48	काण्डरी			कामदान	183	3
	164	40	काण्डेशु	72	105	काय	103	71
	172	44	कातर	170	26	काय (तीर्थ)	121	51
कष	163	32	कात्यायनी	9	36	कायस्था	64	59
कषाय	26	9		94	17		79	144
	210	153	कादम्ब	88	24	कारण	24	28
कष्ट	39	4	कादम्बरी	164	40	कारणा	39	3
	194	39	कादम्बिनी	16	8	कारणिक	167	7
कस्तूरी	111	129	काद्वेय	38	4	कारणव	89	35
कझार	45	36	कानन	53	1	कारम्मा	63	56
कह्न	88	23	कानीन	95	24	कारवी	73	112
कास्थताल	31	4	कान्त	173	52		81	153
काक	87	21	कान्तलक	76	128		145	37
काकचित्री	71	98	कान्ता	91	3		146	40
काकतिन्दुक	60	39	कान्तार	48	17	कारवेक्ष	81	155
काकनासिका	75	119		213	173	कारा	140	120
काकपक्ष	106	96	कान्ताक	83	164	कारिका	190	15
काकपीलुक	60	39	कान्ति	17	18	कारित	179	90
काकमावी	80	152	कान्दविक	144	28	कारीय	188	43
काकमुद्रा	74	114	कान्द्रीक	172	42	काह	159	5
काकली	31	2	कापय	48	16	काहणिक	168	15
काकङ्गी	75	119	कापोत	91	44	काहण्य	34	18
काकिणी	233	9		157	109	काहोत्तम्	165	43
काकु	29	12	कापोताञ्जन	156	100	कार्तस्वर	155	95
काकुद	106	91	काम	7	25	कार्त्तितिक	124	14
काकेन्दु	60	39		35	28	कार्तिक	22	17
काकादुम्बरिका	64	62		149	57	कार्तिकिक	22	18
काकादर	38	7		208	138	कार्तिकेय	9	39
काकाल	39	10	कामंगामिन्	133	77	कार्पास	108	111
	87	22	कामन	169	24	कार्म	168	18
काक्षी	77	131	कामपाल	6	23	कार्मेण	183	4
काङ्क्षा	35	27	कामम्	229	14	कार्मुक	134	84
काच	156	99	कामयितृ	169	24	काश्ये	61	45
	163	30	कामिनी	91	3	कार्पापण	154	88
	192	28		204	112	कार्षिक		
काशन	155	95	कामुक	169	23	काल	13	59
काशनाह्वय	67	78	कामुका	92	9		20	1
काशनी	146	41	कामुकी				27	14
काशिक	146	39	काष्मिन्	79	147		216	195

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
करहाटक	62	53	करूर	111	130	कलानिधि	17	15
कराल	218	206	करुर	13	60	कलाप	206	129
करिगर्जित	138	109		27	17	कलाब	142	16
करिणी	128	37	कर्मकर	160	15	कलि	138	106
करिन्	127	35		168	19		216	195
करिपिपली	71	97	कर्मकार	168	19	कलिका	55	16
करिशाबक	127	36	कर्मक्षम	168	18	कलिङ्ग	65	67
करीर	67	77	कर्मठ				87	17
	213	174	कर्मभुज	168	19	कलिद्रुम	64	59
करीष	148	51	कर्मभ्या	164	38	कलिमारक	62	48
करुणा	33	17	कर्मन्दिन्	119	41	कलिल	178	85
	34	18	कर्मशील	168	18	कलुष	23	23
करेडु	87	20	कर्मशूर				42	14
करेणु	196	52	कर्मसावित्र	123	4	कलेवर	103	70
करोटि	103	69	कर्मार	82	161	कलक	190	14
करु	129	47	कर्मैन्द्रिय	36	8	कल्प	23	21
कर्कटक	43	21	कवुर	155	94		23	22
कर्कटी	81	156	कष	154	86		119	40
कर्कन्धु	59	37	कर्षक	141	6		126	25
कर्कन्धू	238	38	कर्षफल	64	59	कल्पना	128	43
कर्करी	144	31	कर्षू	221	223	कल्पवृक्ष	11	50
कर्करेडु	87	20	कल	31	2	कल्पान्त	23	22
कर्कश	79	147	कलकल	31	26	कलमष	23	23
	220	218	कलङ्क	17	17	कलमाष	27	17
कर्काव	81	156		189	4	कल्प	100	57
कर्चुर	81	155	कलत्र	214	179		211	160
कर्चुरक	77	135	कलघैत	199	76	कन्या	30	18
कर्ण	106	94	कलम्ब	135	88	कल्याण	24	25
कर्णजलौकसू	86	14		145	35	कल्लाल	40	6
कर्णधार	41	12	कलभ	127	36	कवच	132	65
कर्णवेष्टन	107	103	कलम	143	24	कवरी	78	140
कर्णिका	107	103	कलम्बी	82	158		107	97
	190	15	कलरव	86	15		146	40
कर्णिकार	64	61	कलल	97	38	कवल	148	54
कर्णारय	130	53	कलविङ्क	87	19	कवाट	51	17
कर्णजप	173	47	कलशि	70	93	कवि	18	26
कर्तरी	163	34	कलस	144	31		113	5
कर्दम	41	9	कलहंस	88	24	कविका	130	50
कर्पट	109	115	कलह	138	106	कविय	238	35
कर्पर	102	68	कला	17	16	कवोष्ण	20	36
कर्परी	156	101		22	11	कव्य	116	24
कर्पास	238	85		217	199	कशा	163	31
कर्पासी	74	116	कलाद	159	8	कशाई	172	44

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
कष्टक	237	32	कन्दली	85	9	कमलोत्तर	157	106
कष्टकारिका	70	94	कन्दु	144	30	कमितृ	169	23
कष्टकेफल	64	61	कन्दुक	112	138	कम्प	37	39
कष्ट	105	88	कन्धरा	105	88	कम्पन	177	75
कष्टभूषा	108	104	कन्यकाजात	95	25	कम्प		
कष्ट	100	53	कन्या	92	8	कम्बल	109	116
कष्टूषा			कपट	35	30		216	195
कष्टूरा	69	87	कपदं	8	35	कम्बलियाद्यक	130	53
कष्टोल	144	26	कपादिन्	8	32	कटि	145	34
कष्टोलवीणा	163	32	कपाल	102	68	कम्पु	43	23
कष्टृण	83	156	कपालभृत्	8	32		207	133
कथा	28	6	कपि	84	3	कम्पुप्रीवा	105	88
कदध्वन्	48	16	कपिकच्छ	69	87	कम्प	169	24
कदम्ब	60	42	कपिस्थ	56	21	कर	20	34
कदम्बक	90	41	कपिल	27	16		126	28
	142	17	कपिला	64	63		212	165
कदर	62	50		75	121	करक	65	65
कदय	173	48	कपिवल्ली	71	98		189	6
कदली	74	111	कपिश	27	16	करका	16	12
	85	9	कपीतन	57	27	करज	62	48
कदाचित्	228	4		61	43		76	129
कदुष्ण	20	36		64	63	करजक	62	48
कदु	27	16	कपोत	86	15	करट	87	21
कदुद	171	37	कपोनपालिका	51	15		193	34
कनक	155	94	कपोताक्षि	76	130	करण	158	2
कनकाच्युत	123	7	कपोल	106	90		196	54
कनकालुका	127	33	कफ	101	62	करण	234	18
कनिष्ठ	98	43	ककिन्	101	67	करतोषा	44	33
	194	41	कफाणि	104	80	करपत्र	163	35
कनिष्ठा	104	82	कयन्ध	40	4	करभ	104	81
कनोनिका	106	92		139	119		152	75
कनीयस्	175	62	कम्	246	251	करभूषण	108	108
	223	236	कमट	43	21	करमदक	65	68
कन्या	233	9	कमठी	43	24	करम्भ	147	48
कन्द	45	43	कमण्डलु	120	46	करध्व	105	83
	81	157	कमन	169	24	करवाल	135	90
	238	35	कमल	40	3	करवालिका	136	92
कन्दर	52	6		45	40	करवीर	67	77
कन्दराल	58	19		216	195	करवाखा	104	82
	61	43	कमला	7	27	करणीकर	128	38
कन्दर्प	7	25	कमलासन	5	17	करहाट	45	43

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
एतर्हि	230	24	ओषधी	78	136	कच्छप	43	21
एष	55	13	ओषधि	53	6	कच्छपी	207	132
एषश्च	184	10	ओषधीश	16	14	कच्छु	100	53
एषा	177	77	ओष्ठ	106	90	कच्छुर	101	58
एषित	23	23	ओक्षक	149	60	कच्छुरा	70	92
एनस्	62	51	औचित्ती	238	39	कच्छुक	38	9
एण्ड	81	156	औचित्य	17	21	कच्छुकिन्	131	64
एषास	76	125	औत्तानपादि	144	28	कट	103	74
एला	78	140	औदनिक	169	21		128	38
एलापणी	75	121	औदरिक	188	40		144	26
एलावालुक	226	251	औपगवक	126	25		193	34
एवम्	228	10	औपयिक	118	38	कटक	52	5
	229	13	औपवस्त्र	152	77		108	107
	229	16	औरध्रक	96	28	कटभी	80	150
	229	17	औरस	117	30	कटभरा	68	86
एषिका	163	33	और्ध्वदैहिक	12	56		81	153
एषणिका	163	32	और्व	215	186	कटाक्ष	106	94
ऐकागारिक	162	25	औशीर	78	136	कटाह	235	21
ऐङ्गुद	55	18	औषध	99	50	कटि	103	74
ऐङ्गुद	14	69	औष्टक	152	77	कटिप्रोथ	103	75
ऐष	85	8	क	189	5	कटिलक	81	155
ऐष	85	8	कंप	145	32	कटी	238	38
ऐतिग्रा	114	12	कंसाराति	6	21	कटु	26	9
ऐन्द्रियक	177	79	ककुद	201	92		68	86
ऐरावण	10	46	ककुयती	103	74	कटुमुम्बी	81	156
ऐरावत	10	46	ककुम्	15	2	कटुरोहिणी	68	86
	15	5	ककुभ	32	7	कटुकल	60	41
	60	38		61	45	कटुवन्न	63	57
ऐरावती	16	9	ककालक	111	130	कटिन्नर	67	80
ऐलेय	75	121	कक्ष	104	79		177	76
ऐश्वर्य	9	36		220	220	कटोर	143	22
ऐषमस्	230	21	कक्ष्या	128	43	कटङ्गर	145	35
ओकस्	223	234	कटुक	87	16	कटङ्ग	27	16
ओष	32	9	कटुकटक	132	65	कटार	175	62
	90	40	कटुकण	108	108	कण	195	46
ओङ्कार	28	4	कटुकतिका	112	139		235	20
ओजस्	223	234	कटुकाल	103	69	कणप	71	97
ओङ्गुष्ण	66	76	कच	106	95	कणा	145	36
ओतु	85	6	करचर	174	55		65	66
ओदन	117	48	करिचत्	229	15	कणिका	232	8
ओम्	229	13	करछ	47	10		143	21
ओष	184	9		76	128	कणिसा		



PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
96	28	ऊरुज	104	1	कृषभ	31	1
133	77	ऊरुपवेन्	103	72		149	59
62	51	ऊर्जे	22	18		174	59
46	4	ऊर्जस्वल	133	76	कृषि	119	43
11	52	ऊर्जस्विन्			123	90	
46	3	ऊर्जनाभ	86	13	कृष्यकेतु	7	27
54	9	ऊर्णा	196	50	कृष्यगन्धिका	73	111
86	15	ऊर्णायु	152	76	कृष्यप्रोक्ता	69	87
144	25		157	107		71	101
42	18	ऊर्वक	32	5	एक	178	82
232	8		200	85		178	83
144	30	ऊर्ध्वजानु	99	47		190	16
100	57	ऊर्ध्वजु			एकके	178	82
110	120	ऊर्मि	40	5	एकगुरु	114	12
40	6	ऊर्मिका	108	107	एकतान	178	80
97	38	ऊर्मिमत्	176	71	एकताल	31	3
178	82	ऊप	46	4	एकदन्त	9	38
18	26	ऊपण	145	36	एकदा	230	23
83	164	ऊपणा	71	97	एकधुर	150	65
12	54	ऊपर	46	5	एकधुरावह		
20	2	ऊपवत्			एकधुरिण	48	15
230	19	ऊध्मक	22	18	एकपदी	14	69
7	27	ऊध्मागम	23	19	एकपिङ्ग	108	106
180	99	ऊह	25	3	एकयष्टिका	178	80
152	75	कृष्य	154	90	एकसर्ग	150	68
23	19	कृक्ष	18	22	एकहायनी	178	82
161	19		63	57	एकाकिन्	178	80
235	22		85	4	एकाम	216	191
19	30	कृन्	28	3	एकाग्रय	178	80
148	50	कृचोक	145	32	एकान्त	14	66
221	221	कृजु	176	72	एकान्दा	150	68
23	19	कृण	140	3	एकायन	178	80
20	34	कृत	30	22	एकायनगत		
150	66		140	2	एकावली	108	106
181	101		94	21	एकाष्टील	68	82
151	73	कृमुमती	228	3	एकाष्टील	99	48
206	128	कृते	115	17	एडक	152	76
230	19	कृत्विज्	74	113	एडगज	79	147
226	255	कृदि	3	8	एडक	49	4
140	1	कृधु	10	44	एण	86	10
226	255	कृधुक्षिन्	86	10	एत	27	17
182	109						
103	73						

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
उन्नत	67	78	उपभृत्	116	25	उपकारण	119	40
	101	60	उपभोग	186	20	उपाकृत	116	25
उन्मदिष्णु	169	23	उपमा	164	36	उपात्य	118	37
उन्मनम्	167	8		164	38		187	33
उन्माथ	139	117	उपमात्	214	177	उपादान	185	16
	162	27	उपमान	164	36	उपाधि	35	28
उन्माद	35	26	उपयम	121	56		167	12
उन्मादवत्	101	60	उपयाम	122	57	उपाध्याय	114	7
उपकण्ठ	176	68	उपरक्त	21	10	उपाध्याया	93	14
उपकारिका	50	10		172	43	उपाध्यायानी	93	15
उपकायो			उपरक्षण	127	34	उपाध्यायी	93	14
उपकुक्षिका	76	126	उपराग	21	9		93	15
	145	37	उपराम	188	38	उपानह	163	31
उपकुल्या	71	97	उपरि	215	184	उपायचतुष्टय	125	21
उपक्रम	115	13	उपल	52	4	उपायन	126	29
	186	26	उपलब्धार्था	28	5	उपालम्भ	29	14
	208	139	उपलब्धि	25	1	उपाहृत	130	51
उपकोश	29	13	उपलम्भ	186	27	उपासङ्ग	135	89
उपगत	182	109	उपल	217	200	उपासन	118	35
उपगृहन	187	30	उपवन	53	2		135	87
उपग्रह	140	120	उपबह	112	137	उपासित	181	102
उपग्राह्य	126	29	उपवर्तेन	47	8	उपाहित	21	10
उपघ्न	185	19	उपवास	118	38		179	92
उपचरित	181	102	उपविषा	71	100	उपेन्द्र	6	20
उपचाप्य	116	20	उपवीत	120	50	उपादका	82	158
उपचित	179	89	उपशाल्य	51	20	उपादात	29	9
उपचित्रा	69	88	उपशाय	187	32	उपकृत	141	8
उपजाप	125	22	उपश्रुत	182	109	उपमदुग्ध	230	22
उपज्ञा	115	13	उपसंह्यान	109	117	उपयेदुग्ध		
उपतप्त	185	14	उपसंयम	117	26	उम्	230	19
उपताप	99	51		147	45	उमा	9	36
उपत्यका	52	7	उपसर	186	25		143	20
उपदा	126	29	उपसर्ग	138	110	उमापति	8	34
उपधा	125	22	उपसर्जन	175	60	उरःसूत्रिका	108	104
	208	139	उपसर्ग	151	70	उरग	38	8
उपधान	112	137	उपसूर्यक	19	33	उरण	152	76
उपधि	35	30	उपस्कर	145	35	उरणाक्ष	80	148
उपनाह	32	7	उपस्थ	103	75	उरत्र	152	76
उपनिधि	153	81	उपसर्ग	118	36	उररी	226	255
उपनिषद्	202	93	उपहार	126	29	उररीकृत	182	109
उपनिष्कार	48	18		216	196	उरच्छद	132	65
उपन्यास	29	9	उपहार	215	184	उरस्	104	78
उपपति	97	35	उपांशु	126	24	उरसिक	133	77

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
उटज	49	6 उत्तजर्न	117	29	उद्गमनीय	109	112
उड	18	22 उत्सव	37	39	उद्गाढ	14	66
उडुग	41	11	219	210	उद्गतृ	115	17
उडुनि	90	38 उत्साहन	110	121	उद्गार	188	37
उत	181	101 उत्साह	35	39	उद्गथ	235	19
	224	244	125	19	उद्गर्ण	179	90
	228	5 उत्साहन	205	115	उद्गमाह	188	37
उताहो	228	5 उत्साहवर्धन	34	18	उद्ग	24	27
उत्क	167	8 उत्सुक	167	9	उद्गन	187	35
उत्कः	77	135 उत्सृष्ट	181	107	उद्गाटन	162	28
	169	23 उत्सेध	54	10	उद्गान	186	26
उत्कण्डा	35	29	202	96	उद्गान	126	27
उत्कर	91	43 उद्कृ	230	24	उद्गाल	59	35
उत्कर्ष	184	11 उद्क	40	4	उद्गिन	180	95
उत्कलिका	35	29	235	22	उद्गन्ध	139	112
उत्कार	187	36 उद्कषा	94	21	उद्गर्ष	37	39
उत्क्रोश	88	24 उद्गम	176	70	उद्गव		
उत्तस	222	228 उद्गज	188	39	उद्गार	141	4
उत्त	181	106 उद्गधि	40	1	उद्गत	179	90
उत्तस	102	63 उद्गन्त	29	7	उद्गमान	144	29
उत्तम	174	57 उद्गन्था	149	55	उद्गवान	24	30
उत्तमर्ण	141	5 उद्गवत्	40	1	उद्गव		
उत्तमा	150	67 उद्गपान	43	26	उद्गभिज्ज	173	51
उत्तमाङ्ग	106	95 उद्गय	52	2	उद्गभिद्		
उत्तर	29	10 उद्गर	104	77	उद्गभिद		
	216	191 उद्गर्क	127	30	उद्गभ्रम	184	12
उतरा	15	3 उद्गगित	49	4	उद्गत	179	90
उत्तरासङ्ग	109	117 उद्गधित्	148	53	उद्गम	184	11
उत्तरीय	109	118 उद्गात्त	28	4	उद्गान	53	3
उत्तान	42	15 उद्गान	13	63		205	117
उत्तानशया	98	41 उद्गार	167	8	उद्गाप	237	33
उत्थान	205	118 उद्गासीन	216	193	उद्ग	42	20
उत्थित	200	85 उद्गाहार	124	10	उद्गर्तन	110	121
उत्थानितृ	170	29 उद्गित	29	9	उद्गान्त	128	37
उत्थानि	24	30 उद्गोच	182	108	उद्गासन	139	116
उत्थानिगु	170	29 उद्गोच	15	3	उद्गाह	122	57
उत्थन	200	85 उद्गोच्य	47	7	उद्गा	84	170
उत्थल	45	37	75	122		184	12
	76	126 उद्ग्वर	56	22	उद्गुह	86	12
उत्थलशारिवा	73	112 उद्ग्वरपर्णी	155	97	उद्गन	176	70
उत्थान	138	110 उद्गुल	79	145	उद्गनान्त	176	70
उत्थुल	44	7 उद्गुल	144	25	उद्गय	184	12
उत्थ	52	5 उद्गुत	180	97	उद्गाय		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
आस्य	105	89	इन्दीवर	45	37	इलित	182	110
आस्या	186	21	इन्दु	16	14	ईली	136	92
आस्यव	187	29	इन्दीवरी	71	101	ईश	7	30
आहत	30	21	इन्द्र	9	41		15	4
	179	89		15	4	ईशान	7	30
आहतलक्षण	167	10	इन्द्रदु	61	45	ईशितृ	167	10
आहव	138	107	इन्द्रयव	65	67	ईश्वर	7	30
आहवनीय	116	19	इन्द्रवारुणी	81	157		167	10
आहार	149	56	इन्द्रसुरस	65	69	ईश्वरा	9	36
आहाव	43	26	इन्द्राणिका			ईषत्	228	9
आहेय	38	9	इन्द्राणी	10	45	इयत्पाण्डु	27	13
आहो	228	5	इन्द्रायुद्ध	16	11	ईषा	142	14
आहोपुरुषिका	137	104	इन्द्रारि	4	12	ईषि	128	39
आह्वय	29	1	इन्द्रावरज	6	20	ईहा	35	27
आह्व	29	8	इन्द्रिय	26	8	ईहामृग	85	7
आह्वान				101	62	उक्त	182	108
इधु	83	164	इन्द्रियार्थ	26	8		237	30
इधुगन्धा	71	99	इन्धन	55	13	उक्ति	27	1
	72	105	इभ	127	36	उक्त्य	237	30
	73	110	इभ्य	167	10	उक्षन्	149	59
	82	163	इरंमद	16	10	उखा	144	31
इधुर	72	105	इरा	164	40	उह्य	147	45
इक्ष्वाकु	81	156		214	177	उप	8	32
इङ्ग	177	74	इला	194	42		34	20
	185	15	इय	228	10		158	2
इङ्गत	185	15	इष	22	17	उपगन्धा	72	103
इङ्गुदी	61	46	इषु	135	88		79	145
इङ्गः	35	27	इषुधि	135	89	उरच	176	70
इच्छावर्ती	92	9	इष्ट	117	28	उरचटा	82	160
इज्याशील	114	8		149	57	उरचण्ड	178	13
इष्टचर	150	62	इष्टकापथ	83	165	उरचार	102	67
इडा	194	42	इष्टगन्ध	26	11	उरचावच	178	83
इतर	160	16	इष्टार्थोयुक्त	167	9	उरचैःश्रवस्	10	45
	178	83	इष्टि	194	39	उरचैर्षुष्ट	29	12
	216	193	इष्ट्यास	134	84	उरचैम्	230	18
इति	225	246	इक्षण	106	93	उरक्ष्य	54	10
इतिह	114	12	इक्षणिका	94	20	उरक्षाथ		
इतिहास	28	4	इडित	182	110	उडित	176	70
इत्तरा	93	10	इति	198	68		200	85
इदानीन्	230	24	इरण	197	57	उज्जासन	139	116
इष्म	55	13	इरित	179	88	उज्ज्वल	33	17
इन	204	111	ईर्म	100	54	उम्भ	140	2
इन्का	18	24	ईर्था	35	24	उज्जुशिल		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
आघ्रातक	57	27	आलान	128	42	आशुग	13	62
आग्नेहित	29	12	आलप	29	15		135	87
आगत	176	69	आलि	48	14		191	19
आयतन	49	7		53	4	आशुशुसणि	12	55
आयति	127	30		93	12	आश्वर्य	34	19
	199	72	आलिङ्गिन्	32	5	आश्रम	113	4
आयत्त	168	16	आलिङ्गय			आश्रम	125	19
आयाम	109	114	आलीढ	135	86	आश्रयाश	12	54
आयुध	134	83	आलु	144	31	आश्रव	25	5
आयुधिक	132	68	आलोक	182	3		169	24
आयुधाय			आलोकन	187	31	अधृत	182	109
आयुष्मत्	167	6	आवपण	115	33	आश्व	129	49
आयुस्	140	121	आवन	40	6	आश्वत्य	55	18
आयाधन	138	105	आवलि	53	4	आश्वयुज	22	17
आरकूट	155	97	आवसित	143	23	आश्विन		
आरग्वध	57	23	आवाप	44	29	आश्विनेष	11	51
आरनालक	146	39	आवापक	108	107	आश्वीन	129	48
आरति	188	38	आवाल	41	29	आषाढ	22	16
आरम्भ	186	26	आविद्ध	176	72		120	45
आरव	30	24		179	88	आसक्त	167	9
आरा	163	35	आविध	187	36	आसन	112	128
आरात्	224	243	आविल	42	14		125	19
आराधन	206	175	आविस्	229	13		128	40
आराम	53	2	आवुक	33	12	आसना	186	21
आरालिक	144	28	आवृत्	118	36	आसन्दी	233	9
आराव	30	24	आवृत्त	179	91	आसन्न	176	67
आरेवत	57	24	आवेगी	78	137	आसव	165	42
आरोग्य	99	50	आवेशन	42	7	आसादिन	181	105
आरोह	223	239	आवेशिक	118	34	आसार	16	12
आरोहण	51	18	आशंसित्	170	27		137	97
आर्तगल	66	75	आशंसु			आसुरी	143	19
आतेष	94	21	आशय	186	20	आसिचनक	174	53
आर्द्र	181	106	आशयाश	12	54	आस्कन्दन	138	105
आर्द्रक	105	37	आशर	13	59	आस्कन्दित	129	49
आर्थ	33	14	आशा	15	2	आस्तरण	128	43
	113	3		220	217	आस्वा	201	88
आर्यावर्त	47	8	आशितगदीन	149	59	आस्तान	115	15
आर्यन्ध	150	62	आशीविश्व	38	7	आस्तानी		
आल	156	103	आशिस	222	229	आस्पद	202	94
आलम्भ	139	117	आशीस्			आस्फोट	67	81
आलय	49	5	आशु	13	56	आस्फोटनी	163	34
आलशक्त	44	29		142	15	आस्फोता	65	70
आलस्य	161	19					72	104

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
आच्छादन	16	13	आदर्श	112	140	आपामैल्यक	141	4
आच्छुरितक	109	115	आदि	178	81	आपान	165	43
आच्छादन	36	35	आधिकारण	24	28	आपीड	112	136
आजक	161	24	आदिनेष	3	8	आपीन	151	73
आजानेय	152	77	आदित्य	3	8	आपूषिक	144	28
आजि	129	45		4	10	आप्त	124	13
	138	107	आदीवन	187	29	आप्य	40	5
	193	32	आहन	200	85	अप्यायन	205	115
आजीव	140	1	आद्य	178	81	आपच्छन	184	7
अ.जू	39	3	आयमाषक	153	85	आप्रपद	} 110	119
आज्ञा	126	27	आयुन	169	21	आप्रपीन		
आउय	148	52	आधार	44	29	आश्रव	110	121
आटि	88	26	आधि	35	28	आश्रु	119	43
आहम्बर	138	109		202	97	आश्रव	110	121
	213	169	आधूत	179	87	आश्रव	142	13
आडक	154	88	आधारण	131	60	आश्रुत	33	12
आडकिक	141	10	आध्यान	35	29	आभरण	107	101
आडकी	77	131	आनक	32	6	आभाषण	29	15
आड्य	167	10		189	3	आभ स्वर	4	10
आट्ट	190	10	आनकदुन्दुभि	6	22	आभीर	149	57
आतखन	205	115	आनत	176	71	आभीरपत्नी	51	20
आततायिन्	172	44	आनद	31	4	आभीरी	93	13
आतप	20	35	आनन	105	89	आभील	39	4
	235	20	आनन्द	} 24	25	आभोग	112	137
आतपत्र	127	33	आनन्दधु			आमगाधिन्	26	12
आतर	41	11	अनन्दन	184	7	आमण्ड	62	52
आतापिन्	87	22	आनते	197	64	आमनस्य	39	3
आति	88	26	आनाब	42	16	आमब	59	51
आतिषय	} 118	33	आनाम्य	116	21	आमयादिन्	101	58
आतिष्य			आनाह	100	55	आमलक	237	33
आतुर	101	58		109	114	आमलकी	63	58
आतोष	32	5	आनुपूर्वा	} 118	36	आमिक्षा	116	23
आतगन्ध	172	40	आनुसृष्ट			आमिष	102	63
आत्मगुप्ता	69	87	आन्धसिक	144	28		221	224
आत्मबोध	87	21	आन्धवीक्षिकी	28	5	आमिषादिन्	168	19
आत्मज	95	27	आपक	147	47	आमिषी	77	134
आत्मन्	24	29	आपगा	44	30	आयुक्त	132	66
	204	109	आपण	49	2	आमोद	24	24
आमभू	5	16	आपन्धिक	152	78		26	10
	7	26	आपत्प्राप्त	172	42	आमादिन्	26	11
आत्मभरि	169	21	आपद्	134	83	आम्याब	28	3
आत्रेयी	94	20	आपन्न	172	42		184	7
आयर्षण	188	43	आपन्नसत्त्वा	95	22	आत्र	59	33



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अममसार	155	98	अस्त	52	2	आकथित	179	87
अभ्रान्त	13	65		179	88	आकर	12	7
अभि	136	94	अस्तम्	230	18	आकर्ष	221	222
अधु	106	93	अस्ति	230	19	आकल्प	107	99
अश्लि	30	19	अस्तु	229	14	अ'कार	185	15
अश्व	129	44	अल	134	83		212	163
अश्वकर्णक	61	45	अस्थि	102	68	अ.कारगुप्ति	36	34
अश्वत्थ	56	21	आस्थिर	172	43	आकारणा	29	8
अश्वयुज्	18	22	अम्फुटवाच्	171	37	आकाश	15	2
अश्ववडव	234	16	अस	102	64	आकीर्ण	179	86
अश्व	129	47		106	93	आकुल	176	72
अश्वभरण	195	44		212	165	आकृति	212	163
अश्वारोह	131	61	असन	13	59	आकेन्द्र	201	90
अभिन्	11	51	अस्र	106	93	आकीड	53	3
अभिनी	18	22	अस्वच्छन्द	168	16	आकोश	29	15
अभिनीयुत	11	51	अरप्र	3	8	आकोशन	183	6
अश्रीय	129	49	अस्वर	171	37	आक्षारणा	29	15
अषडक्षिण	126	23	अस्वाध्याय	121	54	आक्षारित	172	43
अष्टापद	155	95	अहंयु	173	50	अक्षिप	29	13
	165	46	अहंकार	34	22	आखण्ड	10	44
अष्टीवन्	103	72	अहंकारवत्	173	50	आखु	86	12
असदृन्	227	1	अदन्	20	2	अखुभुज्	85	6
असती	93	10	अहमहमिका	137	103	आखेट	161	24
असतायुत	95	26	अहपूर्विका	137	102	आख्या	29	8
असन	61	44	अहमिति	26	7	आख्यात	182	108
असमीक्ष्यकारिन्	168	17	अहमिति	19	31	आख्यायिका	28	5
असार	174	56	अहर्मुख	20	2	भागन्तु	118	34
असि	135	90	अहस्कर	19	29	भागस्	126	27
असिञ्जनी	94	18	अहह	227	258		222	231
असित	27	14	अहार्य	51	1	आगू	25	5
असिधावक	159	7	अहि	38	6	अग्रीध	115	17
असिधेनुका	136	93		223	239	आग्रहायणिक	22	14
असिपुत्री			अति	124	11	आग्रहायणी	18	24
असिहेति	132	71	अहितुष्टिक	39	11	अह	223	240
असु	140	121	अहिभय	127	31	आक्षिप्त	33	16
असुधारण	140	121	अहिभुज्	193	30	आक्षिप्त	18	25
असुर	4	12	अहेह	72	102	आचमन	118	36
असूक्ष्ण	34	23	अहो	228	10	आचाम	148	49
असूया	35	24	अहोरात्र	22	12	आचार्य	114	7
असृग्धरा	101	62	अह्नाय	227	2	आचार्या	93	14
असृज्	102	64	आ	224	241	आचार्यानी	93	15
असौम्यस्वर	171	37	आम		17	आचित	154	87

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अलिङ्क	106	92	अवन	182	4	अवहित्या	36	34
अभिन्	89	30	अवनत	176	71	अवहेलन	34	23
अले(लि)जर	144	31	अपनाट	98	45	अवाकपुष्पी	81	153
अलिन्द	50	12	अवनाथ	186	27	अवाप	176	71
अलीत	190	12	अवनि	46	3	अवाच्	168	13
अह	175	61	अवन्तिसाम	146	39		171	33
अल्पतनु	99	48	अवन्थ	53	6	अवाची	15	3
अल्पमारिष	78	136	अवभृथ	117	27	अवाच्य	30	21
अल्पसरस्	44	28	अवभ्रट	98	45	अवार	41	38
अल्पिप्र	175	62	अवम	174	54	अवासम्	171	39
अल्पीयस्			अवमत	181	107	अनि	219	208
अवकर	51	18	अवमर्द	138	111	अविम	64	68
अवकीर्तिन्	121	54	अवमानना	34	23	अवित	181	106
अवकृष्ट	171	39	अवमानन	181	107	अविद्या	26	7
अवःशिन्	54	7	अवयव	103	70	अविनीत	169	23
अवक्रय	152	79	अवर	128	41	अविरत	13	65
अवगणित	181	107	अवरज	98	43	अविलम्बित		
अवगत	182	108	अवरति	188	38	अविस्पष्ट	30	21
अवगीत	180	93	अवरवर्ण	158	1	अवीचि	39	1
	200	79	अवरीण	180	94	अवीरा	93	11
अवग्रह	16	11	अवरोध	50	12	अवेक्षा	187	28
	128	39	अवरोधन	50	11	अव्यक्त	197	62
अवपाह	16	11	अवरोह	51	11	अव्यक्तराग	27	15
अवचूर्णित	180	94	अवर्ण	29	13	अव्यङ्गा	69	87
अवज्ञा	34	23	अवलक्ष	27	13	अव्यथा	64	59
अवज्ञात	181	107	अवलम्ब	104	79		79	146
अवष्ट	37	2	अवलम्बित	203	104	अध्यय	238	34
अवटीट	98	45		178	83	अध्यवहिन	176	68
अवट्ट	105	88	अवत्युज	70	96	अशनःया	148	54
अवतंस	221	228	अववाद	126	26	अशनायित	169	20
अवनमस	37	3	अवध्यम्	229	17	अशानि	11	47
अवनोक्ता	151	69	अवश्य य	17	19	अशित	182	111
अवदेश	164	40	अवष्टब्ध	203	104	अशिर्वा	93	11
अवदत्त	27	13	अथमर	186	24	अशुभ	235	23
	200	80	अव(प)मर्ष	123	13	अशेष	175	65
अवदान	182	3	अवसान	188	39	अशोक	65	65
अवदारण	140	12	अवधिन	49	4	अशोकरोहिणी	68	86
अवदाह	83	165		180	99	अश्मगर्भ	155	92
अवदाणे	179	90		182	108	अश्मज	156	104
अवद्य	174	54	अवस्कर	102	67	अश्मन्	52	4
अवधारण	214	178		213	168	अश्मत्त	144	29
अवधि	203	99	अवस्था	24	29	अश्मपुष्प	75	123
अवध्वस्त	180	94	अवहार	43	21	अश्मरी	100	56

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
अभय	40	5	अहङ्कर	61	43	अर्धच	137	32
अभल	26	9		216	190	अर्धहार	108	106
अभल्लोणिका	78	141	अहस्	100	54	अर्धोदक	110	119
अभल्लवेतस			अरोह	180	100	अर्धुद	235	19
अभिलका	61	44	अर्क	19	30	अर्धक	90	39
अभलान	66	74		189	4	अर्म	238	34
अय	24	27	अर्कगर्ण	67	81	अर्य	140	1
अयन	22	13	अर्कबन्धु	5	15		209	146
	48	15	अर्काह	67	81	अर्यमन्	19	29
अवस्	155	98	अर्गल	51	17	अर्वा	93	14
अवःप्रतिमा	163	35	अर्ध	192	27	अर्यणी		
अवि	230	91	अर्थ	118	33	अर्या	93	15
अवाम	144	25	अचा	118	34	अर्व	174	54
अयोधन	191	34		164	36	अर्वन्	129	45
अर	13	64	अर्चित	181	102	अर्वाक	41	8
अरघट	234	18		205	85		229	17
अरणि	116	19	अर्विस्	12	57	अर्वास	101	59
अरप्य	235	22		222	231	अर्शस्	100	54
	53	1	अर्जक	67	80	अर्शोघ्न	81	157
अरण्यानी	53	1	अर्जुन	27	13	अर्शोरंगयुत	101	59
अग्लि	105	86		61	45	अर्हणा	118	34
अरर	51	17		83	168	अर्हित	181	102
अरल	63	58	अर्जुनी	150	67	अलम्	226	253
अरविन्द	45	39	अर्णव	40	1		229	12
अराति	124	11	अर्णस्	40	4	अलक	106	96
अराल	176	71	अर्तन	187	32	अलका	14	70
अरि	124	10	अर्ति	198	68	अलकत	110	125
अरित्र	41	13	अर्य	154	90	अलक्ष्मी	39	2
अरिमेद	62	50		201	86	अलगद	38	5
अरिष्ट	50	8	अर्थना	117	32	प्रलेकरिण्यु	107	100
	58	31		182	6		170	29
	64	62	अर्थप्रयोग	141	40	अलंकर्तृ	107	100
	80	149	अर्थशास्त्र	28	5	अलंकर्मीण	168	18
	87	21	अर्थिन्	123	9	अलंकार	107	101
	148	53		173	49	अलंकृत	107	100
	193	36	अर्थ्य	156	104	अलंकिता	107	101
अरिष्टदुष्टवी	172	44		211	161	अलक	67	81
अरुण	19	30	अर्दना	183	6		161	22
	19	33	अर्दित	180	98	अलस्	161	19
	27	15	अर्ध	17	16	अलात	144	30
	195	48	अर्धचन्द्रा	73	109	अलात्	81	156
अरुण	71	100	अर्धनाभ	42	14	अलि	86	14
अर्धगुरु	178	84	अर्धरात्र	21	6		89	30

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अभिधातिन्	124	11	अभीक	169	24	अमर	3	7
अभिचर	133	72	अभीक्ष्ण	227	1	अमरावती	10	45
अभिचार	185	19		229	12	अमर्त्य	3	8
अभिजन	113	1	अभीप्सित	174	53	अमर्ष	35	26
अभिजात	200	82		182	112	अमर्षण	170	32
अभिज्ञ	166	4	अभीष्ट	71	101	अमा	226	251
अभितस्	176	68	अभीष्टवर्त्री			अमांस	98	44
	227	256	अभीष्टङ्ग	183	6	अमात्य	123	4
अभेधान	29	8	अभीष्ट	220	220	अमावस्या	21	8
अभिध्या	35	24	अभीष्ट	174	53	अमावस्या		
अभिनय	33	16	अभ्यप्र	176	68	अमित्र	124	11
अभिनवेन्द्रि	53	4	अभ्यन्तर	15	6	अमृत्	228	9
अभिनियुक्त	121	55	अभ्यसित	101	58	अमृगाल	83	165
अभिनिर्याण	136	96	अभ्यमित्रिण	133	76	अमृत	11	48
अभिनीत	126	25	अभ्यमित्रिणी				26	6
	200	81	अभ्यमित्रिणी				40	3
अभिपन्न	206	128	अभ्यर्ण	176	68		117	28
अभिप्राय	186	20	अभ्यर्हित	200	83		140	3
अभिभूत	172	40	अभ्यवकर्षण	185	17		199	76
अभिगर	210	215	अभ्यवस्वन्दन	138	111	अमृता	63	58
अभिमान	34	22	अभ्यवहृत	182	111		61	59
	204	110	अभ्याख्यान	29	10		68	83
अभिवोग	185	13	अभ्यागम	138	107	अमृतान्धस	3	8
अभिरूप	207	131	अभ्यागमिक	167	12	अमेघा	63	55
अभिलाष	186	24	अभ्यादान	186	26		72	106
अभिलाष	35	28	अभ्यान्त	101	58	अम्बर	15	1
अभिलाषुक	169	22	अभ्यामर्द	138	107		214	182
अभिलाषुक	170	28	अभ्यास	176	67	अम्बुगिप	144	30
अभिलादान	119	41	अभ्यामादन	138	111	अम्ब	138	1
अभिव्यामि	183	6	अभ्युदित	121	55	अम्बुगृ	66	74
अभिशस्त	172	43	अभ्युपगम	25	5		68	85
अभिशाय	29	11	अभ्युपगति	185	13		78	141
अभिशङ्क	192	24	अभ्युप	147	47	अम्बा	33	14
अभिषव	120	47	अन्न	15	1	अम्बिका	9	37
	165	42		15	7	अम्बु	40	4
अभिषास्ति	117	32	अन्नक	156	100	अम्बुकण	16	12
अभिषेणन	136	96	अन्नपुष्ट	58	30	अम्बुज	64	61
अभिष्टव	182	110	अन्नमातङ्ग	10	46	अम्बुधर	15	7
अभिसंयात	138	106	अन्नमुवह			अम्बुवनस	58	30
अभिसर	133	72	अग्नि	41	13	अम्बुसगण	41	11
अभिसारिका	93	10	अग्नि	16	8	अम्बुकुन	30	20
अभिसार	185	17	अग्नेय	126	25	अम्बुस	40	4
अभिहित	182	108	अमत्र	145	33	अम्बोह	45	41

PAGE	STANZA	PAGE	STANZA	PAGE	STANZA
अन्तरिक्ष	15 1	अपकारगी	29 14	अपाङ्ग	106 94
अन्तरिप	41 8	अपक्रम	139 113		191 21
अन्तरीय	109 117	अपघन	103 70	अपान	13 63
अतन्त्रे	229 11	अपचय	185 16		103 63
अन्तरेण	229 11	अपचायित	181 102	अपामार्ग	69 89
	228 3	अपचित		अपावृत	168 15
अन्तर्गत	179 87	अपचिति	118 34	अपासन	139 115
अन्तर्द्वार	50 14		198 67	अपि	226 250
अन्तर्धा	16 13	अपग्रन्तर	176 68	अपिधान	16 13
अन्तर्धि		अपट्ट	101 58	अपिनद्ध	132 66
अन्तर्भनस्	167 8	अपरय	96 28	अपूप	147 48
अन्तर्बानी	95 22	अपत्रपा	34 23	अपाति	13 61
अन्तर्वाणि	167 6	अपत्रापिण्ड	170 28	अपित्त	12 56
अन्तर्बंशिक	123 8	अपथ	48 17	अप्रकाण्ड	54 9
अन्तावसायिन्	159 10	अपथिन्		अप्रगुण	176 72
अन्तिक	176 68	अपदिश	15 6	अप्रत्यक्ष	177 79
अन्तिकतम	176 69	अपदेश	36 33	अनधान	175 60
अन्तिका	144 29		220 217	अप्रहृत	46 5
अन्तैवासिन्	114 11	अपध्वस्त	171 39	अप्राग्रय	175 60
	161 20	अपत्रंश	28 2	अप्सरम्	4 11
अन्त्य	178 81	अपयान	139 113		11 52
अन्त्र	102 66	अपरस्पर	183 1	अफल	54 7
अन्तुक	128 42	अपराजिता	72 104	अबद्ध	30 20
अन्ध	101 61		80 150	अवद्धमुख	171 36
	203 103	अपराद्धपृथक्	132 69	अवन्ध्य	53 6
अन्धकरिपु	8 34	अपराध	126 27	अबला	91 2
अन्धकार	37 3	अपराह	20 3	अवाध	178 84
अन्धतमस		अपणा	9 37	अवज	17 15
अन्धम्	147 48	अपलाप	30 17		193 32
अन्धु	43 26	अपवर्ग	26 7	अवजयोनि	5 17
अग्र	147 48	अपवर्जन	117 30	अव्द	23 20
	182 111	अपवाद	29 13		201 88
अन्य	178 83		201 89	आन्ध	40 1
अन्यतर		अपवारण	16 13	आश्रिकक	157 105
अन्वक्ष	177 79		206 125	अत्रद्वाण्य	33 14
अन्वक्		अपशब्द	28 2	अभय	83 165
अन्वय	113 1	अपष्ट	178 84	अभया	64 59
अन्ववाय		अपश(स)द	160 16	अभाषण	118 36
अन्वाहार्य	117 31	अपसध्य	178 84	अभिक	169 24
अन्विष्ट	181 105	अपरकार	130 56	अभिक्रम	237 97
अन्वेष्ट	117 32	अपरस्नात	168 19	अभिहया	211 156
अन्वेष्टित	181 105	अपहार	185 16	अभिप्रह	195 13
अप् (आपः)	40 3	अपापति	40 2	अभिप्रहण	185 1

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अभिरवका	52	7	अनन्यशक्ति	178	80	अनुताप	35	25
अधिप	167	11	अनय	209	149	अनुत्तम	174	57
अधिभू			अनर्थक	30	20	अनुत्तर	216	191
अधिरोहणी	51	18	अनल	12	54	अनुनय	230	18
अधिवासन	112	134	अनवधानता	35	30	अनुपद	177	79
अधिविज्ञा	92	7	अनवरत	14	66	अनुपदीना	163	31
अधिभ्रदणी	144	29	अनवस्कर	174	56	अनुदव	133	72
अधिष्ठान	206	126	अनवरार्थ	174	57	अनुबन्ध	202	98
अधीन	168	16	अनस्	130	53	अनुबोध	110	122
अधीर	170	26	अनागतार्तवा	92	8	अनुभव	186	7
अधीश्वर	122	2	अनातप	211	158	अनुभाव	34	21
अधुना	230	24	अनादर	34	22		219	210
अधृष्ट	170	26	अनामय	99	50	अनुमति	21	8
अधौशुक	109	117	अनामिका	104	82	अनुयोग	29	10
अधोक्षज	6	21	अनायासकृत	180	95	अनुरोध	124	12
अधोभुवन	37	1	अनारत	13	65	अनुलाप	30	16
अधोमुख	171	33	अनार्यतिक	79	143	अनुलेपन	235	53
अध्यक्ष	123	6	अनाहत	109	112	अनुवर्तन	124	12
	221	226	अनिमिष	220	219	अनुवाक	234	17
अध्यवसाय	35	29	अनिरुद्ध	7	27	अनुशय	209	148
अध्यात्म	209	144	अनिल	4	10	अनुष्ण	161	19
अध्यापक	114	7		13	62	अनुहार	185	17
अध्याहार	25	3	अनिश	13	65	अनूक	190	13
अध्युदा	92	7	अनौक	134	79	अनूचन	114	10
अध्येषणा	117	32		138	106	अनूलक	175	66
अध्वग	125	17	अनात्रस्थ	123	6	अनृत	47	10
अध्वनीन			अनाकिल	134	79	अनूक	19	33
अध्वन्	48	15		134	82	अनृत	172	46
अध्वन्य	125	17	अनृ	225	249	अनृत	30	21
अध्वर	115	13	अनृक	169	23		140	2
अध्वरु	115	17	अनृकम्पा	34	18	अनेकप	127	35
अनक्षर	30	21	अनृकष	131	58	अनेकमूक	171	38
अनङ्ग	7	25	अनृकल्प	119	40	अनेकस्	20	1
अनरुद्ध	42	14	अनृकामीन	133	77	अनोकह	53	5
अनडुह	149	60	अनृकार	185	17	अन्त	139	118
अनन्त	15	1	अनृकम	118	36		178	81
	38	4	अनृकोश	34	18	अन्तःपुर	50	11
	200	81	अनृग	177	79	अन्तक	13	59
अनन्ता	46	2	अनृग्रह	185	13	अन्तर	215	188
	70	92	अनृचर	133	72	अन्तरा	229	21
	78	137	अनृज	98	43	अन्तराभवसत्त्व	207	132
	82	149	अनृजविन्	123	9	अन्तराय	185	19
अनन्यज	7	26	अनृतर्पण	165	43	अन्तराल	15	6



PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
अर्युताम्रजः	6	23	अणिमन्	9	36	अतिसाराकिन्	101	59
अरुण	42	14	अणीयस्	175	62	अतिसौरभ	59	33
अरुचभक्ष	85	4	अणु	143	20	अतीक्ष्ण	202	94
अज	152	76		175	62	अतीत	230	18
	193	30	अण्ड	90	38	अतीतनौक	42	14
अजगन्धिका	78	140	अण्डकोश	104	76	अतीन्द्रिय	177	79
अजगर	38	5	अण्डज	42	17	अतीव	227	2
अजगव	8	35		89	34	अतिका	33	15
अजन्य	138	110		173	51	अत्यध्यक्ष	177	79
अजमेदा	79	145	अतट	52	4	अत्यन्तकोपन	170	32
अजशङ्की	75	120	अतीकृत	228	8	अत्यन्तीन	133	77
अजस्र	14	66	अतलस्पर्श	42	15	अत्यय	139	117
अजहा	69	87	अतसी	143	20		210	150
अजा	152	76	अति	228	5	अत्यर्थ	14	66
अजाजी	145	36		224	242	अयल्य	175	62
अजाजीव	159	11	आतिक्रम	187	33	अत्याहित	199	77
अजित	197	62		210	150	अत्रि	19	28
अजिन	120	46	अतिचरा	79	146	अथ	} 225	248
अजिनपत्रा	88	27	अतिच्छत्र	83	167	अथो		
अजिनयोनि	85	8	अतिच्छत्रा	80	152	अदप्र	175	63
अजिर	50	13	अतिजव	133	74	अदर्शन	186	22
	214	182	अतिथि	118	34	अदितिनन्दन	3	8
अत्रिद्य	176	72	अतिनिर्हारिन्	26	10	अदृश	101	61
अत्रिद्यग	135	87	अतिनु	42	14	अदृष्ट	127	31
अजुका	33	11	अतिपथिन्	48	16	अदृष्ट	37	38
अजसटा	76	127	अतिपात	118	37	अदा	229	13
अज्ञ	171	38		187	33	अद्भुत	33	17
	173	48	अतिप्रसिद्ध	220	219		34	19
अज्ञान	26	7	अतिमात्र	14	66	अद्यर	169	20
अक्षित	180	98	अतिमुक्त	66	72	अद्य	230	21
अज्ञन	15	5	अतिमुक्तक	57	26	अदि	51	1
अज्ञनकेशी	76	130	अतिरिक्त	177	76		212	164
अज्ञलि	105	85	अतिवक्त्र	171	35	अद्वयवादिन्	5	14
अज्ञसा	227	2	अतिवाद	29	14	अधम	174	54
	229	13	अतिवाषा	71	100		209	144
अटनी	135	85	अतिवेल	14	66	अधमण	141	5
अटरुष	72	104	अतिशक्तिता	137	104	अधर	106	90
अटवी	53	1	अतिशय	14	66		216	190
आटाळा	118	35		184	11	अधिकार्द्ध	167	11
अट्ट	50	12	अतिशस्त	194	41	अधिकार्य	131	64
	207	131	अतिशोभन	174	58	अधिकार	127	32
अणक	174	54	अतिसंस्कृत	200	81	अधिकृत	123	6
अणि	130	57	अतिघञैन	187	28	अधिकृत	172	42

## II

### Index of words in Kshirasvâmin's text of Amarakosha.

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अ	229	12	अग	191	19	अघ	23	23
अंश	154	89	अगद	99	50		192	27
अंशुक	109	115	अगदंकार	100	57	अघमर्षण	120	47
अंशुमती	74	116	अगम	53	5	अघ्न्या	150	67
अंशुमत्फल	74	113	अगस्त्य	17	21	अङ्क	17	17
अंस	104	78	अगाध	42	15		189	4
अंसल	98	44	अगार	49	5	अङ्कुर	53	4
अंहति	117	30	अगुरु	111	126	अङ्कुश	128	42
अंहस	23	23	अगुरुशिशवा	64	63	अङ्कोट	58	29
अकरणि	188	39	अमायी	116	21	अङ्कय	32	5
अकृपार	40	1	अमि	12	53	अङ्ग	103	70
अकृष्णकर्मन्	172	46	अमिकण	12	57		228	7
अक्ष	64	59	अमिबिन्	114	12		230	20
	146	43	अमिञ्जाला	76	125	अङ्गद	108	107
	154	86	अमित्रय	116	20	अङ्गन	50	13
	165	45	अमिभू	9	39	अङ्गना	91	3
अक्षत	147	47	अमिमन्थ	65	66	अङ्गविशेष	33	16
अक्षदर्शक	123	5	अमिभुञ्जी	61	43	अङ्गमंस्कार	110	121
अक्षदेविन्	165	44	अमिशिख	110	124	अङ्गहार	33	16
अक्षधूर्त			अमिशिखा	75	119	अङ्गार	114	30
अक्षर	214	183		78	137	अङ्गारक	18	26
अक्षरबन्ध	124	15	अग्न्युन्नात	21	10	अङ्गारधानिका	144	29
अक्षरनुञ्जु				197	98	अङ्गारवल्ली	62	49
अक्षरविन्यास	125	16	अग्र	174	58	अङ्गारवल्ली	69	90
अक्षवर्ता	165	45		215	184	अङ्गारशकटी	144	29
अक्षप्रकीलक	139	57	अग्रज	98	43	अङ्गीकार	25	5
अक्षान्ति	35	24	अग्रजन्मन्	113	4	अङ्गीकृत	182	109
अक्षि	106	93	अग्रतम्	225	247	अङ्गुलिमुद्रा	108	108
	235	22		228	8	अङ्गुली	104	82
अक्षिकूटक	178	39	अग्रतःसर	133	73	अङ्गुलीयक	108	107
अक्षिगत	172	45	अग्रमांस	102	64	अङ्गुष्ठ	104	82
अक्षौव	58	31	अधिष	98	43	अङ्गुष्ठि	103	71
	146	41		174	58	अङ्गुष्ठिपर्णिका	70	93
अक्षोट	58	29	अध्याय	178	58	अचण्डी	151	70
अक्षौहिणी	134	82	अप्रेदिधिषू	95	23	अचल	51	1
अक्षण्ड	175	66	अप्रेसर	133	73	अचला	46	2
अखात	43	27	अप्रब	174	58	अचिकण	221	226
अखिल	175	65				अच्युत	6	19

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
स्तूप	235	19	स्ववासिनी	92	9	हालाहल	86	13	
स्त्येन	162	25	स्वादुरसा	(3) 79	144	हिंसा	138	118	
श्राचिह्न	104	76		104	40	हिक्का	232	8	
स्थण्डिल	115	18	स्वामिन्	9	40	दिगुल	}	235 20	
स्थपति	156	9	इंसपदी	75	119	दिगुल		157	105
स्थपुट	182	113	इंसपाद	157	105	दिगुलक	122	2	
स्थला	46	5	इंसो	228	7	दिगिम्बजित्	130	64	
स्थविर	5	17	इंस	234	18	हिन्दोला	156	105	
स्थानक	135	86	इंसवर्तनी	49	2	हिण्डार	47	6	
स्थाल	144	31	इनुमत्	}	122	2	हिमवत्	52	3
	237	32	इनुमत्		151	73	हिमाचल	230	20
स्थिति	200	85	इम्मा(म्मा)राव	235	19	हुं	152	76	
स्थूल	110	120	हरित्	237	32	हुड	32	8	
स्तसा	102	66	हरिताल	182	111	हुडका	230	20	
स्तनक	114	10	हरिद्राग	55	18	हुं	7	26	
स्तुङ्ग	72	106	हरितकी	14	69	हुच्छ	212	162	
स्नेहाश	112	138	दर्यक्ष	149	52	हुय	30	21	
स्फुलिङ्ग	}	12	दविष्य	}	183	5	हुयगन्धा	146	42
स्फुलिङ्गा		57	हस्तधारण		108	107	हमकूट	47	6
स्मरगृह	104	76	हस्तवारण	131	61	हमपुष्पिका	(3) 66	72	
स्यात्	230	19	हस्तसूत्र	188	43	हममुष्टिक	159	8	
स्याद्वादिक	113	6	हस्त्यारोह	164	40	होला	}	218 207	
स्याल	96	22	हान	73	108	होले		78	138
स्रुच्	116	24	हारहर	173	52	देमवती	(3) 149	52	
स्रुवा	68	84	हारहृग	122	2	देयगवीन	233	10	
स्वज	7	26	हारिन्	218	207	होरा	44	30	
स्वधिति	132	71	हाल	}	38	हदिना	43	25	
स्वदस्	10	47			10	हाद			
	213	169	हालहल						
स्वार्जिकाक्षार	157	109	हालाहल						

## I

Index of additional words given by Kshirasvāmin, as well as those of Amarasimha which are specially remarked upon in the Commentary.

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
सरक	165	43	सारणी	44	34	सुराजीविन्	159	10
सरका	73	108		81	135	सुरहा (3)	66	71
सरणी	81	153	सारसन	110	120	(3)	78	140
सरलि	105	86	सारिष्क	147	45	सुराकरी	151	70
सर्धज	40	2	सालभजिका	162	29	सुखवा	75	124
सरयू	44	35	सादर	43	24	सुन्दरय	166	3
सरस्वती	44	30	सादस	125	21	सूचि	232	8
सर्वज्ञ	5	15	साहसाङ्क	122	2	सूत्रन	24	26
सवेला	136	94	सिद्ध	19	28	सूर्यकान्त	155	93
	198	66	सिद्धतल	105	85	सूर्यमण्डल	19	33
सविमा	231	2	सिद्धद्वार	51	16	सुक्लिन्	} 106	91
सव्य	178	84	सिद्धान	} 155	98	सूकन्		
सव्यसाविन्	122	2	सिधाण			सूगाली	73	110
सद्वर्ती	92	6	सिधाणी	} 105	89	सूकृ	91	35
सहन	35	24	सिधिणी			सूव्य (2)	83	165
सहस्रदोस्	122	2	सिचय	109	115	सैती	44	33
सहस्रवेधिन् (3)	78	141	सिघनी	108	108	सैरन्धी	31	4
सहा (3)	66	74	सित	155	96	सैकण्ड	167	8
(3)	74	114	सितद्	44	33	सैप्रास	30	21
सहृदय	166	3	सिद्धमिन्धु	11	49	सैमपानिन्	114	9
साकेत	49	2	सिद्धन्तिन्	120	50	सैमवन्	114	8
सागरमल	157	105	सिद्धार्थ	5	15	सैमवलक (3)	62	51
सागराम्बरा	46	3	सिधमला	233	10	सैमवल्ली (3)	78	138
साह्य	113	6	सिधमला	232	8	सैमवस्था	114	8
सातवाहन	122	2	सिन्द्र	237	31	सैमसिद्धान्तिन्	120	42
सानि	232	9	सिन्धुर	127	36	सैमभन	30	21
सान्नीन 6	142	16	सोमन्त	235	18	सैमवस्थायिक	137	98
सारवन	6	24	सास	156	99	सैमगत	113	6
	120	50	सोमपन्थ	157	105	सैमगन्धिक (3)	83	167
सारिष्क	119	44	सुकेशी	11	51	सैमिक	160	14
सान्त्वन	121	52	सुकण	} 31	25	सैमिक	138	111
सान्त्वना	188	43	सुकाण			सैमिक	121	51
सांन्यासिक	119	42	सुप्र व	122	2	सैमिक	18	27
सात्तपदीन	124	12	सुग	72	106	सैमिक	155	97
सामत्र	127	36	सुधाभूति	} 17	15	सैमिस्तिक	123	5
सामवायिक	123	4	सुधामूर्ति			सैमिस्तिक	} 124	12
सामि	17	16	सुनिधित	182	111	सैमिस्तिक		
सामुद्रिक	14	14	सुमुख	171	35	सैमिस्तिक	} 127	34
सांपरायिक	130	52	सुम्य	162	27	सैमिस्तिक		
सांप्रत	126	26	सुमयत्र	10	46	स्कान्धिक	149	61
सांन्यासुर	59	25	सुरङ्गा	232	8	स्कान्धिक	} 98	41
सायम्	20	3	सुरत	122	57	स्कान्धिक		
सारघ	157	107	सुरभि	(3) 75	121	स्कान्धिक	143	21

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
शुद्धी	155	96	बटी	(2) 81	154	संतति	96 28
शेषस्	104	76		77	135	संतान	
शेफालिका	232	7		81	155	संदर्भ	188 43
शेवक	59	35	षट्दिक	120	42	सदानित	179 86
शेवल	45	38	षड्गव	152	77	संधि	125 19
शैत्य	212	162	षण्ड			संधिनो	151 69
शेव	120	50	षण्ड	} 97	39	संनाय	128 37
शेवल			षष्टिक	141	7	संनिवेश	51 19
शेवाल	} 45	38		143	24	सभ शूर	115 16
शोणक			षिङ्ग	169	24	सम	
शोवक	} 63	58	षोडन्	149	61	सुन	} 55 17
श्यान	182	113	संस्कृत	14	66	समद्गा	78 142
श्यामक			संस्कार	25	2	समपाद	135 86
श्यामाक	} 143	20	संस्कृत	182	111	समर्थक	
श्रेता			संस्थासु	49	6	समर्थक	} 166 7
श्रेता	} 27	17	संस्था	138	118	समाङ्गा	78 142
श्रन्धन	188	43		201	88	समाज्ञा	29 11
श्रमण	120	50	संस्थान			समाधा 4	25 2
श्रम्य	30	21	संस्थानक	} 48	17	समाहित	
श्रावक	120	50	संस्केट	138	106	समिन्	} 500 85
	137	98	संज्ञ 3	105	85	समीचीन	30 21
श्रीखण्ड	111	131	गंहार	23	22	समुद्रक	234 17
श्रीद	14	69		39	2	समुद्र	153 84
श्रीविष्ट			सवतु	147	47	समुद्रनवनीत	11 48
श्रीवेष्ट	} 111	129	संकथा	30	16		17 15
श्रेणि	125	18	संकम	48	14	सद्गुणता	(3) 74 116
श्रेयसी	(3) 64	60		186	25		(3) 77 134
श्रोत्र	106	94	संक्राम	186	25	समुद्रि ८८	
श्लय	175	66	संख्या			समुद्रिय	
श्लाघा	30	17	संस्थान	} 25	2	समूहनी	51 18
श्लिष्टसंपृक्त	182	113	संगम	237	34	संपरायक	138 105
श्रील	168	14	संघात	39	2	संप्रधारणा	126 26
श्रीपद	100	56	संघातमृत्यु	101	58	संनयेग	122 57
श्रीपच	161	20	सञ्च	228	4	संकेट	138 106
श्रीप्र	37	2	संजवन	49	9	संवाध	203 104
श्रीपद	86	11	सती	9	37	संमुखीन	171 33
श्रीन	47	6	सन्त्रशाला	50	8	समोहन	122 57
श्रीत			सत्यवतीपुत	118	36	संयमित	179 86
श्रीनपट	} 120	50	सत्यक	177	78	संवादक	159 10
श्रीतक	154	88	सप्रीची	93	12	संवीक्षण	187 30
श्रीतवाजि	122	2	सनन्			संवेशन	122 57
श्रीवसीय	24	25	सनात्	} 230	18	सर	
			सनात्कुमार	11	51	सरि	} 108 105

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
शकान्तक	122	2	शासन	116	26	शिफा	207	132
शकार	160	16	शाक	77	136	शिम्व	143	23
शकुल	42	17	शकशाकट	141	8	शिरसिज	106	95
शकर	149	60	शाकशाकिन			शारोष्ट	50	8
शक	171	36	शाकर	149	60	शिल	143	21
शक्ति	125	19	शाङ्कर			शिला	157	108
शक्लनन्दन	122	2	शाङ्क	120	42	शिवंकर	166	2
शक्ल	171	36	शाङ्क	5	15	शिवनाति		
शङ्क	153	84		120	50	शिवा	85	5
शङ्कुकर्ण	152	77	शाटक	237	33	शिबी	9	37
शङ्ख	14	71	शाटी	120	50	शीतलवातक	80	149
शटी	77	135	शाण	233	9	शीतशिव (2)	75	123
	81	154	शाणा			शीधु	237	34
शण्ड	97	36	शातकुम्भ	155	94	शीन	182	113
शण्ड			शादल	47	10		77	133
शण	143	20	शान्त	33	17	शुक		
	142	15	शान्ति	183	3	शुकबई		
शतधृति	5	17	शाप	29	9	शुकमालक	64	63
शतपर्विका (3)	72	103		30	17	शुक्त	146	39
शतमान	238	34	शारिका	88	26	शुक्रपाङ्ग	89	31
शतानन्द	5	17		232	8	शुचि	33	17
शनि	18	27	शाङ्गक	204	106		120	45
शफ	207	132	शार्वर	215	189	शुद्धमार्गिक	120	50
शम	104	81	शालाजिर	144	32	शुद्धान्त	50	12
शमि	143	23	शालि	142	15	शुन्य	174	56
शम्बल	125	17	शालिवाहन	122	2	शुभ्रदन्ती	15	5
	238	34	शालीन	72	105	शुभ्य	162	27
शम्बा	16	9	शालीवर	174	58	शुक्र	191	18
शम्या	31	4	शाश्वतिक	176	73	शुक्ल	155	97
शयनक	130	54	शाष्कल	168	19		162	27
शयानक	86	13	शासन	206	129	शुषिर	31	4
शर	149	51	शान्वित	179	90	शुष्मन्	12	54
शरभान्द्रिका	45	43	शिक्षित				137	103
शरभ्वज	40	2	शिक्षण	195	44	शदक	122	2
शलक	85	7	शिक्षार्न्	90	36	शन्यवादिन्	113	6
शलल			शिक्षा	54	11	शर	19	32
शल्यक	42	17	शिक्षिन्	19	27	शरण	81	157
शल्लिकन्				87	18	शरे	154	88
शल्यारि	122	2	शिङ्घाण	155	98	शषा	45	38
शवर	161	21	शिज्रा	30	24	शृगालिका	73	110
शशोर्ण	157	107	शित	179	91	शृङ्खल	128	42
शङ्कुली	147	47	शितदु	44	33	शृङ्गारयोनि	7	26
	218	207	शिशिल	175	66	शृङ्गीवत्	47	6



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
विमह	125	19	विशाला	81	157	वेणी	44	35
विचार	25	2	विशिखा	49	3		197	57
विच्छन्दक	50	11	विशेषदृश्	120	42	वेतन	140	1
विच्छर्दक			विश्व	145	38	वेताल	235	21
विजय	122	2	विश्वा	118	36	वेत्तिन्	123	6
	233	11	विश्वामित्र	22	14	वेदना	206	129
विजल	147	46	विषुण	51	17	वेदान्तिन्	113	6
विट	169	24	विष्कम्भ	80	151	वेष	222	229
	234	17	विष्कम्भो	186	28	वेष	49	2
वितण्डा	232	9	विष्णुवक्त्रभा	188	43	वेदशागति	107	99
वितर्क	188	43	विस्मय	30	21	वेदिक	169	24
विधुर	13	60	विस्मृत	163	37	वेदिक	159	8
विदग्ध	169	24	विहंगमा	40	5	वेदिक	155	98
विदल	237	32	विहंगिका	40	5	वेदान्त	113	3
विदिशा	49	2	वाचि	40	2	वेदार्थ	155	93
विदेहा	49	2	वाचि	112	138	वेदार्थ	212	162
विनीत	129	45	वाचिमालिन्	182	111	वेदार्थ	39	3
विनीय	190	14	वाटा	5	15	वेरागिक	182	111
विनाद	188	43	वातदम्भ	50	13	वेरोचन	122	2
विपथ	48	16	वातराग	94	16	वेराज	135	86
विपरीत	178	84	वाधि	68	82	वेरोधिक	113	6
विपर्यय	118	37	वाधो	102	64	वेष्णव	120	42
विपुला	46	3	वांरमसू	84	1	वेष्टा	135	86
विप्रतिसार	35	25	वुक	68	82	व्यघ्न	94	16
विभक्त	20	3	वुकन्	102	64	व्यघ्न	147	44
विमर्श	25	2	वुक्ता	84	1	व्यघ्न	162	25
विमान	130	53	वृक	68	85	व्यघ्नक	62	52
विरह	186	28	वृकनिष्ठा	122	2	व्यघ्न	162	25
विरागाह	182	111	वृकी	102	64	व्यघ्न	212	162
विशिधि	5	17	वृकोदर	78	137	व्यघ्न	169	24
विरुद्ध	77	136	वृकान्	68	82	व्यघ्न	205	120
विरुद्धक			वृका	182	113	व्यघ्न	11	47
विलम्ब	104	79	वृक्षगन्धा	87	22	व्यापादन	138	117
विलास	85	6	वृक्षराहा	141	5	व्याप	76	126
विरोनाट्टग	88	23	वृद्ध	163	33	व्याली	216	197
विलोचन	106	93	वृद्धकाक	19	28	व्यास	118	36
विलोम	178	84	वृद्ध	20	34	व्युत्पन्न	182	111
विवध	160	15	वृद्ध	13	64	व्युत्प	20	3
विवेक	118	38	वृद्ध			व्रीह	35	23
विशमन	138	117	वृद्ध			शस्ति	182	111
विशल्या	(3) 68	83	वृद्ध					
विशाख	80	149	वृद्ध					
विशाखिका	118	35	वृद्ध					

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
लुलित	179	87	वयस्या	63	59	वाट	49	3
लेलिहान	38	8	वरण	197	57	वाटी	239	42
लोकयन्त्र	19	32	वरण्ड	235	18	वाडी	149	60
लोकबान्धव	237	32	वर	97	35	वाहवेय	42	18
लोकायत	73	112	वरसितु	88	26	वाढाल	85	4
लोचमर्कट	58	33	वरला	158	111	वाघ्राणस	85	8
लोभ	106	91	वरार	36	33	वानायु	129	46
लोहा	136	95	वर्कर	69	90	वानायुज	100	57
लोहाभिहार	27	17	वर्षेक	128	43	वान्त	141	10
लोहितानी	113	6	वर्णपरिस्तोम	66	74	वाप	162	28
लोकायनिक	88	23	वर्णपुष्प	110	124	वापदण्ड	120	42
वक्र	18	26	वर्षा	90	36	वायदण्ड	73	114
वक्रोट	40	7	वर्तक	155	97	वामस्रोतसिक	131	64
वक्र	104	77	वर्तिक	140	1	वरणयुषा	49	2
वक्षोरुह	188	43	वर्तक	109	114	वारवाण	100	57
वचनीयत्व	155	93	वर्तलोह	51	18	वारवाण	74	114
वज्र	16	10	वर्तन	144	31	वातक	16	12
वज्रज्वाला	(3) 57	27	वर्ति	50	10	वाटल	97	40
वज्रजुल	(3) 64	65	वर्धना	163	31	वाटक	191	18
वटक	234	17	वर्धमान	160	16	वर्द्धपि	141	5
वटाकर	162	27	वर्ध	182	113	वर्द्धिषिन्	188	43
वटी	140	2	वर्हित	51	16	वर्मण	118	36
वटीगुण	99	49	वलज	143	21	वास्माक	21	4
वर्णिज्य	228	10	वलभी	50	15	वामतेयी	49	6
वर्णिज्या	222	228	वलित	179	88	वासना	25	2
वण्ड	221	227	वल्गु	173	52	वासिजा	199	75
वन्	33	17	वल्गुलिका	88	27	वास्तु	233	13
वन्द्य	166	6	वल्गु	143	20	वाहद्वेषत्	85	4
वधूटी	92	9	वंशिका	110	126	वाहिक	129	46
वधूटका	147	49	वसति	49	6	वाह्मीक	110	124
वन	53	2	वसिर (3)	71	98	वाह्मीक	175	61
वनशृङ्गाट	71	99	वसु	146	41	विकट	99	47
वन्दक	120	42	वसु	155	95	विकटघोण	30	17
वन्दनमालिका	51	16	वस्तक	146	42	विकथन	25	2
वन्दनी	63	56	वहल्लिह	150	63	विकल्प	188	43
वन्दी	140	120	वाचिक	33	16	विकल्पन	71	100
वपन	120	50	वाच्य	211	160	विकारिका	122	2
वपु	96	23	वाज	13	64	विकमादित्य	30	19
			वाजपेय	237	31	विगान	188	43

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
बटि	108	105	रस	156	104	रोदसी	48	1
बाहसेनी	122	2	रसगन्ध	156	102	रोदसी	44	30
बादःपति	13	61	रसजात	156	102	रोधोवका	58	33
यान	125	19	रसाद्रय	(3) 68	85	रोध	35	19
यानपात्र	41	14	रसा	16	9	रोमन्ध	36	35
यामल	120	42	रसित	122	57	रोमकिन्धा	89	30
याम्य	174	54	रहस	122	2	रोमहर्षण	170	32
युग	130	54	राघव	49	1	रोम्भ	17	15
युगंधर	238	35	राजधानी	99	51	रोहिणीस	16	11
युगात्यय	23	22	राजकुक्षमन्	128	37	रोहिणीसख	221	227
युगायुग	131	58	राजवाद्या	143	24	रक्ष	88	23
युधिष्ठिर	122	2	राजशालि	233	9	रक्षमण	122	2
यूप	235	19	राजसभा	38	8	रक्षणी	88	26
युष	238	35	राजसर्प	237	31	रक्षुड	235	18
येन	228	3	राजमूढ	(2) 59	35	रक्षुका	232	7
योग	119	39	राजादन	122	2	रक्षुकापति	122	2
योग्य	212	162	राधेय	122	2	रक्षा	126	29
योजन	237	30	राम	122	2	रक्षा	233	10
रक्षधातुक	155	97	राला	111	127	रक्षा	80	150
रक्षुमाल	61	48	रावण	122	2	रक्षा	54	9
रक्षाम्बर	120	42	रावणहस्त	31	4	रक्षा	54	11
रक्षिका	71	98	रावणारि	122	2	रक्षा	108	105
रचना	188	43	रिद्धलण	37	36	रक्षा	169	22
रजक	159	10	रिद्ध	143	23	रक्षा	48	1
रजनी	146	41	रिष्टताति	166	2	रक्षा	81	155
रजनी	72	102	रिष्टय(प्य)	161	21	रक्षा	80	148
रजनी	85	4	रुचक	50	10	रक्षा	40	6
रजस्वल	51	18	रुचि	(4) 67	79	रक्षा	10	42
रजोवारणी	86	15	रुच्य	148	54	रक्षा	233	10
रजक	122	57	रुद्राङ्कुश	138	119	रक्षा	206	129
रति	46	3	रुमा	118	35	रक्षा	141	5
रत्नगर्भा	88	23	रुषत्	48	1	रक्षा	169	22
रत्नवती	88	23	रुषत्	30	18	रक्षा	233	10
रयाङ्गाहव	133	77	रुषत्	73	109	रक्षा	125	16
रयाङ्गनोमन्	161	22	रुषत्	79	147	रक्षा	124	15
रधिर	235	21	रुषत्	228	7	रक्षा	191	18
रध्यायुग	7	27	रुषत्	160	16	रक्षा	85	4
रभस	11	51	रुषत्	207	132	रक्षा		
रमा	234	17	रुषत्	8	35	रक्षा		
रम्भा	151	75	रुषत्	100	57	रक्षा		
रलक			रुषत्	148	54	रक्षा		
रवण			रुषत्	79	147	रक्षा		

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
मन्दर	52	2	महोषधम् (3)	71	100	मुषित	182	113
मन्दार	35	23	मा	7	27	मुष्ट	82	160
मन्दोदरीसुत	122	2	माहि	55	14	मुस्त	106	95
मन्यु	35	25	माढी	232	8	मुस्ता	122	1
ममता	34	22	माणिक्य	237	31	मूर्धज	49	1
मयूरक (3)	73	112	माणिमन्य	146	42	मूर्धावसिष्ठ	161	23
मरक	101	58	मानुमुल	171	38	मूलनगर	129	46
मदत्	77	133	मानुशासित	171	38	मृगव्या	161	20
मरुषक (2)	62	53		173	48	मृगादि	72	106
मर्कटी (3)	62	49	माध्वीक	164	41	मृत	52	5
मर्कटवल्ली (3)	71	98	मारुतात्मज	122	2	मेखलतरु	122	2
मर्मन्	237	30	मारुति	101	58	मेघनाद	15	2
मर्ष	35	24	मारि	51	18	मेघाध्वन्	16	8
मलय	52	3	मारी	168	17	मेधिका	142	15
मलयू	64	62	मार्जनी	19	30	मेधि	11	51
मलक्षिप्र	100	53	मार्तण्ड	33	14	मेध	47	6
मल्लिक	88	25	मार्तण्ड	51	20	मेनका	70	95
मल्लिकाष्ट्र	145	32	मार्ष	161	21	मैत्रावरुण	118	36
मल्लिका	16	14	मालक	77	133	मैत्रावरुणि	58	31
मसू	22	12	मालभट	142	15	मोचक (3)	61	47
मसी	233	10	माला	141	7	मोचनी	237	33
मह	85	4	माष	141	8	मोदक	87	21
महाकाल	233	11	माषीण	4	10	मोदक	149	50
महानट	8	34	माष्य	49	2	म्लान	174	55
महानाद	26	7	मासूरिण	19	28	यकृन्	102	65
महानन्द	21	4	माहाराजिक	19	28		102	66
महानिशा	14	71	मिथिला	113	6	यज्ञोपवीत	120	50
महापद्म	13	63	मीनक	14	71	यति	113	3
महाबल	15	2	मीमांसक	37	39	यथाकामिन्	168	15
महाबल	153	84	मुकुन्द	88	27	यथाजात	160	16
महावज्र	266	3	मुल	6	22	यद्रविध्य	173	48
महामनस्	120	42	मुखविष्टा	237	34	यद्द	171	37
महाभागै	73	111	मुञ्जकेश	195	44	यम	120	49
महाप्रतिन्	64	61	मुण्ड	120	50	यमजौ	11	51
महाश्वेता (3)	74	114	मुण्डक	112	135	यमौ	79	145
महासर्ग	102	66	मुण्डन	150	67	यमानिका	44	31
महासहा	17	19	मुण्डमाला	142	15	यवानिका	80	148
महाभ्यायु	91	2	मुण्डा	86	13	यमी		
मद्रिकै	49	2	मुद्र			यवनेष्ट		
महेन्द्र			मुशली					
महोदया								
महोदय								

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
बुद्ध	235	19	भानुफला	74	113	मकर	19	28
बुध	203	104	भा(म)कटक	147	45	मकुट	107	102
बुस्त	237	34	भास	106	92	मकुर	112	140
बुस्ति	147	47	भालूक	63	57	ममामि	144	29
ब्रह्मण्य	182	111	भावना	25	2	मघवन	9	41
ब्रह्मरीति	155	97	भाष्य	237	31	महस	137	98
ब्रह्मवादिम्	113	6	भिधु	120	42	मङ्गल	56	21
ब्रह्मणी	8	35	भिडिपाल	136	92	मच्छ	42	17
ब्राह्मणबुध	113	97	भिह	161	21	मज्जन	110	121
ब्राह्मणहित	182	111	भिस्सा	147	48	मज्जरी	143	21
ब्राह्मी	8	35	भांत	170	26	मज्जीर	151	74
(2)	60	90	भाम	209	145	मञ्जुषोषा	11	51
	155	97	भामसेन	122	2	मङ्गिकार	159	8
भक्तकार	144	28	भुजंग	169	24	मणित	30	21
भक्ति	200	85	भुजंगभुज	38	8	मणिबन्ध	104	81
भग	19	32	भुजा	104	80	ममिमन्त(न्य)	146	42
भगवत	120	45	भुदभेद	161	21	मण्डक	66	72
भङ्गुर	176	72	भुधुर	71	99		147	48
भङ्गि	232	8	भूतधात्री	46	3	मङ्गु	32	8
भङ्ग्य	141	7	भूतनाशन	146	40	मण्डल	134	80
भङ्गि	147	45	भूमिच्छय	37	3		135	86
भण्डार	} 64	64	भूमिपिशाच	84	169	मण्डलिन्	161	22
भण्डी			भूमिम्	43	21	मतङ्गक	} 50	9
भदन्त	120	42	भूर	46	2	मत्तवारण		
भद्रपदा	18	23	भूरि	} 155	95	मत्ताटम्ब	} 42	16
भद्रा	74	117	भूरिचन्द्र			मत्स्यकरण्डिका		
भद्राकरण	120	50	भूषित	182	113	मत्स्यबन्धनी	} 146	43
भम्भा	32	6	भूस्ति	147	47	मत्स्यण्डी		
भरिमन्	231	2	भूङ्ग	80	152	मत्स्याण्डी	(3) 56	21
भल	235	21	भूङ्गरजस्	80	152	मदन		
भलक	85	4	भूङ्गरिष्टि	9	41	मदिष्टा	161	40
भलुक	} 85	4	भूङ्गिन्	9	41	मयदावनी	75	125
भलूक				233	11	मद्र	31	2
भवतुनाम	229	14	भूत	182	113	मधु	55	17
भवितव्यता	} 24	28	भूट	147	45	मधुपर्णी	(3) 70	95
भविष्यत्			भैरव	8	34	मध्य	153	84
भव्य	212	162	भैरवी	9	37	मध्यशील	57	28
भसल(न)	89	30	भैरविन्	120	42	मध्यमपाण्डव	152	2
भस्मन्	} 12	56	भोग	134	80	मनोगवी	35	27
भस्मित			भ्रम	209	145	मनोहारिन्	30	21
भाग	17	16	भ्रातृव्य	124	11		173	52
भाङ्ग	108	111	भ्रामर	157	107	मन्त्रशक्ति	125	19
भाङ्गीन	141	7	मकर	14	71	मन्द	18	27

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
प्रणव	188	43	प्रवर्णा	109	112	कग	38	9
प्रणाध्य	182	111	प्रवाल	55	14	करक	133	72
प्रणिधान	25	2	प्रविष्ट	182	113	कळ	136	91
प्रणिपात	188	43	प्रशस्त	24	26		142	13
प्रतति	54	9	प्रष्टवाह	150	63	कङ्गु	23	18
प्रतारण	162	25	प्रष्टौही	151	70	काल्युन	122	2
प्रतिकाय	} 164	36	प्रसभ	138	110	केन	235	19
प्रतिच्छन्द			प्रसाधन	107	99	केरण्ड	85	5
प्रतिपत्ति	188	43	प्रसार	137	97	कक	68	82
प्रनिरूप	164	36	प्रमृतित्र	39	3	ककवेरिन्	122	2
प्रनिश्रय	50	8	प्रमृत	105	85	बदरा	(3) 80	151
प्रतिश्रित	182	113	प्रस्तावना	37	39	बद्ध	179	86
प्रतिसर	108	108	प्रहत	182	111	बद्धपुट	32	9
प्रतिमूर्ध	86	13	प्राग्ज्योतिष	49	2	वन्दी	140	120
प्रतोष्ट	182	113	प्राधुणक	} 118	34	बन्धनीया	} 151	69
प्रतोली	51	16	प्राधुणिक			बन्ध्या		
प्रत्यक्षेत्रणी	(2) 79	145	प्राधुणिक			वन्धुर	216	194
प्रत्यनीक	} 124	11	प्राचिका	232	8	बभ्रु	6	22
प्रत्यनौकिन्			प्राचीनचर्हिम्	10	44	बर्हि	77	133
प्रत्यवसान	149	56	प्राचीर	49	3	बर्हिःशुष्मन्	} 12	54
प्रत्यवस्थान्	124	11	प्राचित्स	118	36	बर्हिरुच्य		
प्रत्युत्क्रम	} 186	26	प्रातर	20	3	बर्हिम्		
प्रत्युत्क्रान्ति			प्राथ	219	215	बलि	122	2
प्रत्युत्पन्नमति	169	25	प्राप्त	179	87		126	28
प्रत्युपम्	20	2		181	105	वक्त्रयणी	151	71
प्रदिश	15	6	प्राबन्धिक	131	59	वहल	175	61
प्रद्योतन	19	32	प्रशक	165	45		217	200
प्रपात	200	85	प्रास्थिक	141	10	वहकरी	51	18
प्रफुल्ल	} 54	7	प्रहरिक	131	62		163	17
प्रफुल्ल			प्रियक	(3) 63	56	बहुरूप	180	94
प्रभावशक्ति	} 125	19	प्रियदर्शन	87	22	बहुला	51	18
प्रभुशक्ति				182	111	घाड	229	13
प्रमय	138	118	प्रेङ्खोलित	179	87	वाधना	206	129
प्रमण	153	85	प्रतवन	138	120	वाधा	203	104
प्रमातामह	96	33	प्रेयण	142	12	बालपत्र	(2) 62	50
प्रमालन	138	118	प्रेय	160	17	बालवायज	155	93
प्रमृत	140	2	प्रेत	109	115	बाह्व	237	32
प्रमेह	100	56	प्रेथ	} 103	75	विम्ब	207	134
प्रयुन	153	84	प्रेह			बिल	52	6
प्ररोह	53	4	प्रवन	188	43	बिलाल	85	6
प्रवचन	114	10	प्रेहन्	102	65	बिसकण्टिका	88	26
प्रवयण	142	12	फङ्गा	45	38	बंजक	61	44
प्रवाच्	171	35	फट्	230	20	बीभत्सु	122	2



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
पामर	101	58	विड्य	23	21	पूतना	63	59
पार	238	35	विपाषित	169	22	पूतनासाह	10	44
पारत	156	99	विपीलिका	232	8	पूथगात्मता	118	38
पारशव	155	98	विप्ल	56	20	पूथमूप	180	94
पारापत	86	15	विष्ट	156	104	पृषा	122	2
पारावतपदी	(2) 80	150	वीका	163	30	पृथ्वीका	(3) 76	125
पाराशर्य	118	36	वीतदाह	(3) 63	54	पृथ्वि	}	20
पारिपान्यक	162	25	वीतपादा	88	26	पृथ्वि		34
पारिभद्र	(3) 57	26	पुहस	234	17	पृथक्	135	87
	(3) 63	54	पुटकिनी	45	39	पेटक	191	18
पारिभध्य	76	126	पुटी	239	42	पेटा	}	163
पारियात्र	233	11	पुण्डू	110	123	पेटारिका		30
पारिगक्षि(क्ष)क	119	42	पुण्य	120	45	पेटी	239	42
पार्षथ	}	115	पुष्पा	95	28	पेल	104	76
पारिषथ		16	पुद्गल	235	20	पेशी	}	90
पारी	144	32	पुननेव	105	83	पेशीकोष		38
	233	10	पुन्वज	86	12	पोटगल	(2) 82	163
पार्थ	122	2	पुष्पस	102	65	पोटा	194	40
पाली	157	108	पुरस्तात्	230	23	पोत	41	14
पावकि	8	33	पुराणपुरुष	6	22	पेण्डर्य	76	128
पावन	120	45	पुरुह	}	175	पोण्डू	83	164
पाश	220	219	पुरुहु		63	पोतव	153	85
पाशुपत	120	50	पुरोडाश	235	21	पोत्तिक	157	107
पिङ्गला	15	5	पुलक	36	35	पोरष	105	87
पिङ्गा	155	97		86	14	पोलस्त्य	122	2
पिचण्ड	104	77	पुलोमजित्	10	44	पोलोमी	10	45
	234	18	पुष्करावर्तक	233	11	प्रकट	182	113
पिचण्डिल	98	44	पुष्कस	161	20	प्रकम्पन	13	63
पिचु	157	106	पुष्पकेतु	7	26	प्रकाश	182	113
पिचुमन्द	}	64	पुष्पफल	(2) 56	21	प्रकुम्भ	105	85
पिचुमर्द		63	पुष्परघ	157	107	प्रकुम्भक	154	88
पिचुल	157	106	पुष्पिता	94	21	प्रगल्भ	171	35
पिच्छा	232	9	पुष्परथ	130	52	प्रगल्भता	188	43
पिच्छिला	(3) 64	63	पूजित	181	102	प्रगे	20	3
पिञ्जर	27	15	पूतिखादिर	62	50	प्रधीव	50	9
पिटक	144	26	पूय	238	35		238	35
पिटरी	144	31	पूर	235	20	प्रचण्ड	233	11
पिण्ड	97	39	पूरित	182	113	प्रचक्षित	182	113
	234	18	पूर्ण	175	66	प्रचलाक	89	32
पिण्डी	195	44		182	113	प्रचोदनी	(2) 70	94
पिण्डीशर	182	111	पूर्व	175	66	प्रजविन्	129	46
पिण्याक	237	32	पूर्वरङ्ग	37	39	प्रजा	96	28
पितल	155	97	पूर्वामायेन्	120	42	प्रज्ञ	113	5

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
नीराजन(ना)	136	95	पतद्ग्रह	235	21	पर्यङ्क	110	120	
नील	14	71	पत्नीशाला	115	16		191	18	
	47	6	पत्र	131	59	पर्यङ्किका	110	120	
नीलिका	45	38	पद	103	71	पर्यनुयोग	29	10	
नीलीराग	182	111	पद्य	14	71	पर्यन्त	138	118	
नीवार	83	166		154	84	पर्योहार	160	15	
नीवी	108	109	पद्यवर्ण	79	146	पर्यष्टि	118	35	
	110	120	पद्मिनीकान्त	19	32	पर्वन्	}	21	7
नेत्रविभाग	106	94	पद्य	237	31	पर्वसन्धि			
नेदीयस्	176	69		158	1	पर्वध		132	71
नेपाली	157	108	परभाग	188	43			136	93
नेम	17	16	परःशत	}	175	64	पशु	103	69
नेमि	43	27	परःसहस्र				पथेद्	115	15
नैकपेय	13	60	पराक	121	52	पल		153	88
नैद्यायिक	113	6	पराभव	34	23	पल्लव	(3)	71	99
नैशिन्य	37	39	परार्थ	153	84	पलाश		27	14
न्यकार	34	23	परिकर	110	120	पल्लवनी		151	70
न्यधित	182	113		185	20	पल्लविक		112	138
न्यबुद	153	84	परिकृत	179	88			169	24
न्युद्द	234	17	परिघ	51	17	पल्ली		51	20
न्युग्ज	182	111	परिचारित	179	88	पवनी		51	18
पक्षक	}	50	परिताप	188	43	पवनेष्ट		64	63
पक्षद्वार		14	परिदान	152	80	पवित्रक		83	166
पक्षिणी	230	22		153	81	पश्यतोहर		162	25
पदध	182	111	परिपन्थक	124	11	पटवाद्		150	63
पद्म	18	27	परिपवन	144	26	पाक		191	18
पद्म	158	1	परिभूत	139	113	पाक्य	(3)	146	42
पद्मभद्र	169	24	परिमाण	153	85	पाशरात्रिक		120	50
पद्मलोह	155	97	परिवसर	23	20	पाथार्थिक		120	50
पद्मशिश	84	1	परिवर्त	23	22	पाञ्चाली		122	2
पञ्जर	237	31	परिवाह	41	10	पाटला		56	20
पञ्जिका	232	7	परिवित्ति	}	121	पाण्डुभूम		46	4
पटकुटी	}	110	परिवेत्त		56	पातं		19	32
पटकुण्ड		120	परिवेष्टित	179	88	पातक		237	33
पटी	109	116	परिव्यय	147	45	पात्री		239	42
पट	234	17	परिव्याध	(2)	64	पात्रीव		238	35
पटिश	235	21	परिव्रज्या	118	35	पाथःपति		40	2
पणस	64	61	परिध्वज	188	43	पाथेय		125	17
पणत्री	}	94	परीत	179	88	पादकुत्		159	7
पण्यली		19				पादत्राण		163	31
पतद्ग	111	132	परंत	39	2	पादवल्मीक		100	56
पतन्	}	89	पर्कटी	58	32	पादावत		162	28
पतरित्रन्		34	पर्णिका	115	18	पापदि		161	23

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
देष्य	182	113	नतोन्नत	182	113	निचोल	64	61
द्वैगुणिक	141	5	ननुच	229	15	नितम्ब	207	134
द्वैध	125	19	नन्दक	76	128	निदाघ	192	28
द्वैपायन	118	36	नन्दन	96	28	निदान	206	129
धट	234	17	नन्दिकेश्वर	9	41	नियन्धन	32	7
धत्तुर	67	78	नन्दिन्	9	41	निभ	36	33
धन	149	58		233	11	निभृत	182	113
धनंजय	122	2	नन्दीवर्त	}	42	नियम	120	49
धनाया	188	43	नन्यावर्त			नियमन	57	26
धनिन्	206	129	नन्यावर्त		50	नियाम	41	12
धन्विन्	19	28	नपुंसक		97	नियुत	153	84
धर्तर	}	67	नपु		200	नियोग्य	123	4
धस्तुर			नराधिप		122	निरङ्कुश	168	15
धर्मपुत्र	122	2	नल		82	निरर्थक	182	113
धर्माधिकरणिक	123	5	नस्तित	}	150	निर्गुही	65	69
घाटी	138	111	नस्थोत			निर्यन्ध	120	42
घातकी	232	7	नाग		37	निर्हारिणी	44	33
घानाचूर्ण	147	47			157	निर्धार्थ	168	13
धान्यक	145	38	नादेयी	(3)	58	निर्मर्याद	169	23
धान-निधि	19	32		(3)	65	नियेन्धन	168	15
धामार्गव (2)	69	89	नानाविध		180	निर्वास	41	12
धारा	216	194	नान्दीपट्ट		43	निर्वास	233	13
धार्मपलन	145	36	नाभि		233	निर्वर्ध	168	13
धिपाङ्ग	131	64			235	निर्वृति	37	39
धिष्ण्य	212	162	नायक		191	निर्व्यूढ	183	3
धूमकेतु	21	10	नाला		45	निर्वैशन	185	20
धूममहिषी	}	17	नालि		100	निर्वेद	188	43
धूमिका			नालीक		45	निर्व्लयनी	38	9
धूम	87	17	नाश		220	निवरा	118	35
धूम्रक	151	75	नाहल		161	निविड	}	175 66
धूष्णज्	}	169	निःश्रेयस		24	निविरीश		
धूष्ण			निकृत	}	172	निवृत्त	109	113
धोरण	131	59	निकृष्ट			निवेशन	49	6
ध्यान	119	39	निकर्षण		51	निशा	146	41
ध्याम	209	145	निकर्षोपल		163	निशाट	86	15
ध्रुवा	219	212	निकार		34	निशाटनी	88	27
ध्रुज	137	101	निक्षेप		153	निशात	179	91
ध्वनित	16	9	निस्वर्ध		99	निशुम्भन	138	117
नःक्षुद्र	99	46			153	निषध	47	6
नमहु	}	165	निगदित		179	निषक	114	7
नमहु			निगाल		129	निष्कुट	54	13
नमाट	120	50	निग्राह		188	निष्पाव	143	20
नड	237	33	निचन		182	निष्प्रिष्ट	220	219

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA	
तेजनी	(2)	68	84	दक्षिण	101	59	दुष्मन्	99	49
तेजस्		125	20	दक्षिणीन्			दुष्पुत्र	76	129
तेन		228	3	दर्प	34	22	दुष्पुत्र		
तैल		149	50	दर्वि	38	9	दुःस्थ	173	49
तैलाटा		88	28	दर्वा	207	134	दुषीका	102	67
तैलाव्या		88	27	दर्शक	123	6	द्वप्रसादा	156	102
तोक्क		192	23	दल	17	16	द्विति	235	19
तोटक		237	30		218	207	देवस्नात	52	6
तोत्र		142	12	दवधु	188	43	देवगायन	11	52
त्याग		188	43	दशास्य	122	2	देविका	44	35
त्रयीतनु		19	32	दशेन्धन	112	138	देशिक	191	18
त्रस्त		170	26	दाक्षायणी	9	37	देवपर	173	48
त्रागुष		162	29	दाक्षिण्य	166	5	दे[दे]शिक	125	17
त्रिकभेदिन्		120	50	दाडिम	238	42	दोष	221	227
त्रिकालविद्		5	15	दाडिका	107	99	दोषज्ञ	193	33
त्रिष्टप		3	6	दाधिक	147	45	दोषा	221	227
त्रिपुटा	(2)	76	125	दान्ति	183	3	दोकूल	130	55
त्रिपुटी		73	108	दाय	126	29	दोर्भागेनेय	95	24
त्रिवर्ग		122	58	दायाद	95	27	दौवारिक	123	6
		125	20	दारक	95	27	द्यावापृथिव्यौ		
त्र्यसा		73	108		191	18	द्यावाभूमी	48	1
त्वक्शीर		157	109	दारिका	95	28	द्युः	230	21
त्वरक		143	20	दालिम	64	65	द्युम्न	206	129
त्सर		233	13	दाशरधि	122	2	द्युसद्	3	8
दक		40	5	दाशाह	16	22	द्रग	51	19
दक्ष		221	227	दासंरक	151	75	द्रप्स	149	51
दक्षिणागम		120	42	दिगम्बर	120	50	द्रणी	233	9
दक्षिण्य		166	5	दिण्डीर	156	105	द्रोण	86	14
दग्धकाक		87	22	दिनमणि	19	32		87	22
दण्डकरक				दिवस्पृथिव्यौ	48	1	द्रौपदी	122	2
दण्डकरोटक		151	74	दिवि	87	16	द्राःस्थित		
दण्डिन्		123	6	दिष्टि	105	84	द्राःस्थितदर्शक		
द्विति		128	38	दोषेजड्घ	88	23	द्राःस्थोपस्थित-	123	6
दन्तक		52	7		151	75	दर्शक		
दन्तशठ	(2)	56	21	दांघदण्डक	62	52	द्वारका	49	2
दर		14	67	दाघेनिद्रा	138	118	द्वारवती		
		215	185	दाघीयुस्	79	143	द्विक	82	21
दरद		161	21	दुःसंज्ञा	43	25	द्विनम	99	49
		233	9	दुन्नुक	63	57	द्विलोहक	155	97
दरित		170	26	दुरभिथ्यान			द्विसीत्य		
दरी		215	185	दुषणा	30	17	द्विहृत्य	141	9
दरु		31	4	दुर्ग	49	1	द्वेष	35	25
				दुर्गसंचर	186	25	द्वेषिन्	125	11

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
जलशुक्ल	45	38	डिण्डीर	156	105	तार	155	96
जलहस्तिन्	42	20	डुडुभ	38	5	तारापथ	15	2
जलुका	43	22	डोम्ब	161	20	तालपत्रा (2)	75	119
जादुगल	102	63	डौकन	126	29	तिन्दुकी	232	8
जात	200	85	तटस्थ	124	10	तिमिगिलगिल	42	20
जातीसस्य	111	132	तढाक	43	28	तिरीट	237	30
जातुष	162	20	तण्डक	337	33	तिलोत्तमा	11	51
जात्य	212	162	तत्कालधी	169	25	तक्षिण	196	53
जानुलम्बिन्	178	83	तत्त्व	32	9		220	215
जालकार	86	13	तन्तु	96	28	तक्षिणी	171	38
जालिक	86	13	तन्तुनाग	43	21	तार्थ	114	11
	191	18	तन्तुवाय	86	13	तार्थकृत्	5	15
जाहक	86	13		159	6	तुक्सार	129	46
जिपांसु	124	11	तन्त्रक	109	112	तुण्ड	90	37
जितकारिन्	138	112	तन्त्रवाय	86	13	तुम्बिकेश (2)	74	116
जिताहव				149	6	(2)	78	139
जिन	5	15	तन्दू	145	34	तुम्बिन्	9	41
जिष्णु	122	2	तन्द्रा	37	37	तुम्बिभ	101	61
जीव	120	42		214	16	तुम्बिल		
जीवक			तप	222	233	तन्तुभ	142	17
जीवतौका	94	16	तपस्या	118	35	तुन्दि	104	77
जीवसु			तमा	21	4	तुन्दिक	98	44
जीवनीय	40	5	तमाल	237	33	तुन्दिभ		
जीवन्ती (3)	68	82	तरक्ष	84	1	तुन्दिभ	101	61
जीवा	135	86	तरल	172	46	तुन्दिल		
	140	121	तरलित	179	87	तुभ	152	76
जीवितेश	220	219	तरवालिक्का	136	92	तुमुल	218	207
जुट	107	97	तरसा	227	2	तुम्बुह	11	52
जैमिनीय	113	6	तरिमन्	234	15	तुरायण	183	2
ज्ञ	18	27	तर्क	188	43	तुरीय	182	113
	193	33	तर्क(क)क	173	49	तुर्य		
ज्येष्ठाश्रमिन्	113	3	तर्दे	145	34	तुला	19	28
ज्योतिर्मालिन्	88	29	तर्पण	148	55		188	43
ज्योत्स्ना	21	5	तर्पित	169	22	तुवरी	143	20
ज्वाला	12	57	तल्लजक	24	27	तृणी	70	95
झगिति	227	2	ताड	65	69	तृलि	163	33
झटिति			ताडी	76	127		218	207
झझामरुन्	13	63	ताण्डव	238	34	तृलिका	112	137
झझरी	233	10	ताम्रिक	120	42	तृणीकाम	228	10
टङ्क	191	18	तापि(यि)न्	5	14	तृणशय्य	65	70
	237	33	तामिस्र	39	2	तृणित		
टीका	232	7	ताम्रकर्णी	15	5	तृजिन	169	22
टुण्डक	63	57	ताम्राक्ष	87	20	(2)	82	161

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
बटुला	16	10	बल्लनक	109	119	चूर्णक	106	69
बण्ड	233	11	बपक	145	32	चूर्ण	} 233	9
बण्डा	150	67	बाटकर	86	16	चूर्णा		
बण्डाल	158	4	बाटु	} 30	17	चटा	188	43
बण्डिल	159	10	बाटुक			चेत्य	49	7
बखर	48	17	चन्द्रभागा	} 44	34	चैत्रसख	7	26
	115	18	चान्द्रभागी			चैल	109	115
चतुर्दशिका	163	30	चान्द्रमसायनि	18	24	चोच	84	169
चन्दना	73	112	चान्द्रायण	118	37		237	30
चन्दनाचल	52	3	चापल	172	46	चोदनी	70	92
चन्द्र	155	95	चामुण्डा	9	41	चोथ	30	17
चन्द्रक*	110	120	चाम्पक	64	64	चोरित	182	113
चन्द्रकिन्	89	31	चर्मण	188	43	छग	} 152	76
चन्द्रशाला	50	8	चार्वाक	113	6	छगळ		
चन्द्रोदय	212	162	विकस	258	35	छयान्	36	33
चपला	93	10	चिल्ल	41	9	छन्द	222	233
चपेटा	105	84	चित्रक	} 214	178	छदि	} 100	55
चमस	238	35	चित्रा			छरी		
चमसी	233	10	चित्रकाय	84	1	छल	36	33
चरक	237	33	चित्रकला	81	157		138	110
चरणप	53	5	चित्रवल्ली	42	18	छायापुत्र	18	27
चरणटी	92	9	चित्त	} 35	29	छक	169	24
चरित	} 35	26	चिन्ति			छेद	17	16
चरित्र			चित्रा	(2) 81	157	जगमधुस्	19	32
चरिमाट	234	15	चित्रा	166	3	जगन्मातृ	9	37
चरीन्द्र	38	5	चिदप	98	45	जप्रपूक	171	36
चरु	216	194	चिपिचोण	87	21	जटायु	} 122	2
चर्वन	25	2	चिरजीविन्			जटायुप		
चर्वर	106	96	चिरम्	} 227	1	जनित्री	96	29
चर्वरी	233	10	चिरात्			जनी	81	154
चर्विका	9	41	चिरेण				92	9
चर्विक्य	110	122	चिरिष्ठी	92	9		206	129
चर्मकपा	} 79	144	चिहुर	106	95	जन्य	122	58
चर्मकसा			चिनपिष्ठ	157	105	जमन	} 149	56
चर्मचटका	88	27	चोर	109	115	जवन		
चर्मप्रसेवक	163	33		237	31	जम्बू	56	19
चर्ममुण्डा	9	41	चीवर	237	31	जम्भीर	67	80
चर्मसीवनी	163	35	चुक	235	20	जय	65	66
चर्वर	106	96	चुकक	} 78	141		233	11
चर्वण	164	40	चुकिका			जालिल	143	19
चर्वणी	93	10	चुन्दी	94	19	जलकाक	89	35
चल	172	46	चुलक	86	14	जलरञ्ज	87	17
चालचल	172	46	चूर्ण	137	100		87	22



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
गन्धमन्दन	47	6	गुलुञ्छ	55	16	महकल्लोल	19	27
	52	3	गुल्मक	127	34	मामादिका	92	9
गन्धर्व	207	132	गुहाशय	86	12		147	49
गन्धाली	81	155	गुप्रसी	233	10	प्रमणी	167	11
	88	28	गृष्टि	151	70		174	58
गर	38	9	गृहगोलिका	86	13	प्रामधान	51	19
गर्जा	16	9	गृहमणि	112	138	प्रामीण	} 182	113
गर्ता	37	2	गृहमेधेन्	} 113	3	प्रामेयक		
गर्ताट	86	12	गृहाश्रमिन्			प्राम्य		
गर्ध	188	43	गृहीर्तादिक	138	113	प्रह	42	20
गर्भेन्	200	85	गृहेर्नादिन्	182	111	प्राविन्	151	75
गर्भजापिन्	171	36	गृष्ट	182	111	घटा	194	40
गल्ल	106	90	गृहेश्वर	182	111	घट	126	28
गल्वर्क	165	43	गैरिक	155	95	घण्टिका	106	91
गवेषण	187	30	गो	63	56	घन	32	9
गाङ्गेय	38	40	गोकर्ण	38	7		155	98
गाङ्ग	175	66	गोणी	27	2		175	61
गाण्डादिन्	122	2				घरगोली	86	13
गात्रसंकोचिन्	86	13		154	88	घुघुरक	108	110
गाधेय	118	36	गोत्रा	214	181	घुण	235	18
गान्धारपट्टक	} 157	105	गोदावरी	44	35	घुगुण	110	124
गान्धारपिष्ट			गोनास	38	4	घूक	86	15
गाली	29	15	गोप	156	104	घृतयोनि	149	52
गावी	27	2	गोपुच्छ	108	105	घृताची	11	52
गिन्दुक	112	138	गोपोतलिका	27	2	घृष्टि	194	40
गिरि	216	194	गोमतलिका	150	67	घोष	155	97
गिरिक	112	138	गोमुख	32	8		221	227
गुच्छ	143	21		191	18	घोषवती	31	3
गुण	125	19	गोयुग	152	77	चक्षित	170	26
गुणनिका	37	39	गोराटी	88	26	चक्र	214	183
गुणशालिनी	} 110	120	गोल	235	20	चक्रमण्डलिन्	38	5
गुणलयना			गोलाङ्गुल	84	3	चक्रयान	130	52
गुणोत्कर्ष	188	43	गोलिह	60	40	चक्रवाल	152	77
गुणित	179	89	गोलीढ	60	40	चक्रयूह	134	80
गुणक	55	16	गोपृथ	182	111	चक्राङ्क	88	24
गुणज	} 100	54	गोस	156	104	चक्राख्या	88	29
गुणकालक			गोसर्ग	20	3	चक्रिका	214	183
गुन्द्रा	(3) 63	56	गोड	234	18	चक्षुष्य	182	111
गुम्फ	188	43	गौरव	118	34	चक्ष	62	52
	207	132	घन्य	201	88	चक्षरीक	89	30
गुर्वी	95	22	घन्यन	188	43	चक्षल	172	46
गुलका	112	138	प्रह	116	24	चक्षु	62	52
						चद्र	30	17

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
कृष्णा	122	2	कीडा	188	43	खयोत	19	32
	150	67	कुर	152	77	खनक	86	12
कलसूक्त	153	81	कृतिकिका (2)	70	95	खर्च	14	71
केतु	19	27	क्रोम	102	65		153	81
	65	66	कट्टु	143	20	खर्वट	237	33
केदर	235	20	क्षत्र	122	1	खल	} 142	15
केरव	45	37	क्षपर्णि	120	50	खलवा(धा)नक		
केवर्त	42	15	क्षमा	35	24	खलति		
कवलिन	5	15	क्षार	12	56	खलभञ्जित	147	47
केशध्न	100	56	क्षारण	} 29	15	खलकार	185	15
केशपर्णा	} 69	89	क्षारणा		158		186	27
केशवल्ली			क्षारपत्र	82		खलु	228	5
केशवावास	56	21	क्षिपणा	} 41	13	खलवाली	142	15
ककसय	13	60	क्षिपा			खानि	52	7
काकिल	59	57	क्षीरकाकोली	} 71	100	खेटक	51	19
कोशिर	107	102	क्षीरा				191	18
कोट	49	1	क्षीरशुक्रा (3)	73	111	खेद	188	43
	234	18	क्षुण	182	111	खेला	36	33
कोण	136	94	क्षुद्रनासिक	99	46	गगनमाणिक्य	19	31
कापन	170	82	क्षुद्रा	95	27	गजनिर्मालिका	157	107
कोलिक	59	37	क्षुब्ध	151	74	गजमल	10	46
कोश	90	38	क्षुर	235	20	गजसुरारि	8	34
	125	18	क्षुरम्	235	20	गज्रा	48	1
	154	91	क्षुरिका	136	93		50	8
	220	219	क्षुरक	43	23		52	7
कोशकार	83	164	क्षम	237	34	गड	103	69
कोष	125	18	क्षमकर	166	2		235	18
	154	91	क्षीम	50	12	गणनायिका	9	37
कोष्टक	143	21	क्षीर	120	50	गणिका	191	18
कोष्टागार	143	21	क्षेत्रित	27	34	गण्ड	195	44
कोहनक	76	129	क्षेला	138	108	गण्डप	221	227
कोपीन	120	50	खचित	182	113		233	10
	206	129	खजक	151	74	गण्डवा	233	10
कोपोदकी	7	28		191	18	गति	200	85
कोल	127	42	खट	234	17	गदाप्रज	6	22
कोशालिक	126	29	खट्टर	99	46	गद्य	237	31
कोशिक	118	36	खरकिरा	50	14	गन्ध	203	104
कोसीय	188	43	खण्ड	146	43	गन्धक	156	102
कोनोपन	147	44		195	44	गन्धज्ञा	86	12
कमोद्धूषन	118	37	खण्डल	17	16	गन्धफली	(2) 63	56
किमि	86	14	खण्डशर्करा	146	43		(2) 64	64
क्रिया	188	43	खण्डधना				77	134
	212	162	खण्डिक	142	16	गन्धमांसी		

PAGE STANZA			PAGE STANZA			PAGE STANZA		
कामदान	} 183	3	किञ्चुलक	43	22	कुंदन	36	33
काम्यदान			किञ्चलक	191	18	कुल	218	207
क मरूप	49	2	किण	235	18	कुलक (2)	60	39
कामाङ्कुश	105	83	किष्व	23	23	कुलत्थ	142	15
कारवी	73	112	किरी	163	32	कुलिक	158	5
	80	153	किरीटिन्	122	2	कुलिशतह	72	106
	145	37	किलकिचित	36	32	कुस्माप	142	18
	146	40	किलाटिका	146	44		146	39
कारित	179	90	किलिम	62	54		235	21
काराणम	} 165	43	किक्किन्धाधिप	122	2	कुत्तमाभिपुन	146	39
कारोत्तर			कीकट	173	49	कुत्ता	105	89
कार्तवीर्य	122	2	कीचकाराति	122	2		212	162
काषिक	141	6	कीटमणि	} 88	29	कुवल (2)	59	37
काष्ठी (प्री)रस	74	114	कीटमाणिक्य				239	42
कास	18	27	कीनाश	13	60	कुशाग्राय	171	38
कालकण्ठ	87	22		173	48	कुशी	220	216
कालकण्ठक	} 87	22	कुचिका	} 146	44	कुश	237	34
कालकण्ठक			कुचीका			कुशीद	140	2
कालखज	} 102	66	कुज	53	5		140	4
कालखण्ड			कुत्तक	151	74	कुमल	143	21
कालझ	87	18	कुत्तमरा	77	132	कुमुति	159	11
कालधर्म	138	117	कुत्तहारिणी	94	16	कुहन	121	53
कालमपी (3)	70	96	कुटिम	50	8		182	111
कालस्वन्ध (3)	65	68		237	34	कुहनिहा	121	53
कालिङ्ग	} 65	67	कुहङ्गक	234	17	कुहक	} 159	11
कालिङ्गी			कुणाल	144	26	कुहका		
काल्य	20	2	कुणि	76	128	कुट	149	61
	30	18		99	48	कुमी	43	24
काल्य	} 77	135	कुण्डी	144	31	कुलेकपा	44	30
काल्यक			कुतप	207	132	कुच्छ	118	37
काश	82	162	कुदाल	142	12	कुतकर्मन्	} 166	4
	82	163	कुन्ती	122	2	कुतार्थ		
काशी	49	2	कुन्द	14	71	कुतकल्य	113	6
कादयप	19	33		235	19		166	4
कापाय	212	162	कुराणि	99	48	कूपीट	194	40
कासमर्द	235	19	कुमोदक	7	28	कुमि	86	14
किशाह	233	13	कुम्भ	19	28	कुमिकल	56	22
किकि	} 87	16	कुम्भिन्	127	36	कुशर	} 149	50
कि किरी			कुम्भी	63	55	कुसर		
किकिन्	} 108	110	कुम्भानस	114	31	कुपिक	142	13
किङ्कणी			कुरङ्गक	38	8	कुणगुप्त	46	4
किङ्कणी	} 66	74	कुरल	66	74	कुणमुख	84	3
किङ्कित				106	96			

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
भोष	32	9	कपिञ्जल	90	36	कलान्तर	140	4
	40	6	कपिध्वज	122	2		141	5
भोष्ठ	106	90	कपिला	15	5		152	80
भौदुम्बर	155	97		150	67	कलाप	108	108
भौपयिक	126	25	कपिलोद्	155	97	कल्मष	174	55
भौपवस्त	} 118	38	कपिशिषे	221	227	कलर	20	2
भौवन्न			कपीतन	(3) 57	27		30	18
भोपवाद्य	128	37	कैफेलु	38	9		164	40
भोमीन	141	7	कषरां	146	40		211	160
भोलूक्य	113	6	कमला	216	195	कल्पपाल	159	10
कम्	40	4	करक	212	165	कल्या	211	160
कवखट	177	76	करहूक	102	69	कल्याण	155	95
कक्षा	188	43	करज	(2) 62	48	कलर	146	42
कक्षापटी	120	50	करटा	31	4	कवक	77	136
कक्ष्य	104	79		32	8	कवरी	145	40
कच्छ	47	10	करण्ड	235	18	कवितृ	113	5
कच्छप	14	71	कम्पाल	135	90	कविय	238	35
कजलध्वज	112	138	करवालिका	136	92	कशाहका	103	69
कमुक	109	118	करभ	208	137	कांस्य	155	97
कञ्चुकिन्	38	8	करवीर	138	120	काक	91	44
कञ्चुलिका	109	118	करवाल	135	90	काकजहषा	74	119
कट	51	20	करवालिका	136	92	काकतुण्ड	111	126
कट	191	18	करामल	65	68	काकिणो	} 233	9
कट	55	14	कर्के	129	47	काकिनो		
कटनरा	(2) 68	86	कर्कट	19	28	काकुत्स्थ	122	2
कटोद्	235	21	कर्कटशृङ्गी	75	120	काकाडी	79	144
कटोर	103	74	कर्ण	41	12	काचमन्त्री	80	152
कटुतिक्त	158	111		122	2	काच[व]र	99	49
कटुर	174	54	कर्णमोष्ट	9	41	काचस्थाली	63	55
कणर	235	20	कर्णिका	45	43	काचित	179	90
कणिका	232	8	कर्णिन्	57	24	कायिक	} 146	39
कण्टक	191	18	कर्ण	216	194	कायिक		
	237	32	कर्णाल	57	29	कायिक	233	9
कण्डोलवीणा	} 163	32	कर्णाम	238	35	काण्डपट	110	120
कण्डोलवीणा			कर्वा	146	40	कादम्ब	207	134
कण्ठीरव	84	1	कर्मयाक्षन्	19	32	कादम्ब	37	4
कण्डूरा	102	66	कप	63	59	कान्तुक	144	28
कदम्	138	117	कर्षणा	112	139	कान्तुकुञ्ज	49	2
कदर्क	110	120	कलवक	99	48	कापथ	48	16
कन्या	232	9	कलकण्ठ	87	20	कापालिन्	120	42
कन्द	238	35	कलधीत	155	95	कापिल	113	6
कन्यका	19	28			96	कापिधायन	164	40
कन्यकुञ्ज	49	2	कलशि	151	74	कापेय	84	3

PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
उचित	126	26	उद्धुर	176	70	उमा	141 7
उच्चण्ड	178	83	उद्धृत	182	113		143 20
उच्चय	408	109	उद्धमान	144	29	उम्भ	141 7
	110	120	उद्धट	166	3	उरसिज	104 77
उच्छादन	110	121	उद्यम	35	9	उर्वारक	81 156
उच्छिद्दल	178	84	उद्यमवत्	166	3	उल्का	232 8
उज्जयिनी	49	2	उद्योग	35	29	उल्ब	97 38
उज्ज्वल	33	17		237	33	उल्लमन	37 39
उडुप	41	11	उद्विक्त	178	2	उपणा	71 97
उत्कट	178	82	उद्गुण	144	25	उषा	228 6
उत्तालिका	191	18	उद्गृह	96	25	उषणल	161 19
उत्कोच	126	29	उद्गा(दा)न	144	29	उष्टिका	191 18
उत्तंस	112	136	उद्गाहन	162	28	ऊर्वदम	} 182 111
उत्तमसङ्ग	50	13	उन्दुर	86	12	ऊर्ध्वस्थ	
उत्तः	178	83	उन्नति	54	10	ऊर्ध्वलोक	3 6
उत्तुङ्ग	176	70	उन्मद	169	23	ऊ(ओ)र्ध्वस्रोतसिक	
उत्तान	129	49	उन्मान	153	85		120 50
उत्तर	29	149	उन्मुख	182	111	ऊवण	145 36
उत्पश्य	182	11	उन्मूलित	182	113	ऊवणगन्धा	78 137
उत्प्रेत	182	113	उपकालिका	} 145	37	ऊवीक(ष)	} 144 32
उत्सर्ग	117	30	उपकुञ्जी			ऊनीष	
उत्सादन	58	33	उपक्रम	115	13	ऊन	200 85
उत्सारक	123	6	उपचित्रा	69	88	ऊद	143 23
उत्सादशक्ति	125	19	उपज्ञा	114	13	ऊरर	} 86 10
उदग्भूम	46	4		236	28	ऊध्य	
उदञ्चित	182	113	उपदंश	161	40	ऊध्यगन्धा	(3) 73 111
उदचिस्	12	56	उपदा	126	29	एककुण्डल	6 24
उदरिल	18	44	उपधा	125	22		218 207
उदरभरि	169	21	उपनाह	32	7	एकतान	31 3
उदलावणिक	147	45	उपलुन	169	24	एकदष्टि	87 21
उदान्त	166	3	उपपदान	126	29	एकपद	230 23
उदार	} 166	3	उपबाहु	104	80	एकधुति	28 4
उदाराभिलाष			उपभुक्ति	185	20	एकाम्र	178 80
उदाक्षित	200	85	उपरम	188	38	एकायन	120 50
उदर्शन	166	3	उपलम्भा	25	1	एडमूक	171 38
उदुम्बर	50	13	उपविष्ट	182	111	एण	86 10
उद्गल	143	25	उपसेचन	147	44	एवाह	81 156
उद्गताम्बर	155	97	उपाप्र	175	65	एलावालुक	75 121
उद्घातन	162	28	उपाय	125	21	एषिका	163 33
उद्गोध	235	19	उपालिन्दक	50	12	एकाम्र	178 20
उद्गम	178	84	उपवर्जन	47	8	ऐण	85 8
उद्गत	178	82	उपोदान	186	26	ऐडविड	} 14 69
उद्गण	37	39				ऐलाविल	

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
असित	18	27	आन्वयिक	120	42	आस्फोता	65	70
असूर्तम	34	23	आपमित्यक	141	4	(2)	72	104
असूतम			आप्त	200	85	आर्य	105	89
असृज्	110	124	आप्रच्छन्	184	7	आहार्य	33	16
असेचनक	174	53	आदुर	188	43	आहितग्नि	114	11
अलि	136	94	आमोगिक	32	5	इक्षुगन्धा (3)	71	99
असु	106	93	आम	99	51	(3)	73	110
अहंता	34	22	आमलक	237	33	इतरेषु:	230	21
अदिजत्	200	85	आमलकी			इत्वर	150	62
अहिर्बुध्न	8	34	आमुःश्रावण	113	3	इदानीम्	230	24
अहिहन्	10	41	आम्नाय	212	162	इदाक्तर	23	20
अहीक	120	50	आयःशूलिक	182	111	इद्वत्सर		
आकारण	29	8	आय	18	26	इन	19	32
आकूत	188	40	आय	155	97	इन्दरा	7	27
आक्रोश	30	17	आय	9	37	इन्दिर	89	30
आक्षरशक	123	5	आय	113	9	इन्द्रकेश	50	9
आक्षरशूलिक	167	7	आय	288	43	इन्द्रगोपक	88	29
आक्षराद	113	6	आय	32	5	इन्द्रबाल	159	11
आक्षरप	30	17	आलिङ्गिन्			इन्द्रजित्	122	2
आक्षरत	43	27	आलिङ्गय	86	14	इन्द्रदु	(3)	61
आक्षुरथ	9	38	आलिन्			इन्द्रनील	155	93
आषाट	51	20	आलीन	157	106	इन्द्रलुप्तक	99	48
आचित	182	113	आवमथ	49	6		100	56
आच्छिन्न	182	113	आवाप	41	11	इरमद	16	10
आजगव	8	35	आवष्टक	49	3	इलावृत्त	47	6
आज्ञेय	122	2	आशय	188	43	इल्वला	18	24
आट	87	17		212	162	इषीका	82	162
आढकी	142	15	अशयाश	12	54	इषी	118	35
	232	7	आशावधू	77	134	इषीपथ	118	35
आणयान	141	7	आशु	220	219		121	53
आणी	130	57		227	2	इषीक	81	156
आतापिन्	87	22	आश्रय	212	162	इषी	35	24
आतापिन्			आश्रयाश	12	54	इषीलु	182	111
आतिथ्य	118	33	आस	134	84	इहावृत्त	85	7
आत्तगन्ध	171	40	आसक्त	14	66	इली	136	92
आत्तगर्ब			आसन	125	19	इश्वरी	9	36
आमदर्श	112	140	आसन्दी	233	9	इषिका	163	33
आम्रय	17	15	आसार	137	97	उ	230	19
आदण्ड	62	52		188	43	उ	230	18
आदिकवि	118	36		216	194	उक्त	237	30
आदिम	178	81	आमान	182	111	उक्त	237	30
आदिष्टिन्	114	7	आसेचनक	174	53	उक्षतर	149	61
आन्दोलित	179	7	आस्फोट	67	81	उग्रधन्वन्	10	44



	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अन्ध	40	4	अमला	63	58	अवग्रह	128	39
अन्धतामिस्र	9	2	अमा	230	20	अवग्रहणी	50	13
अन्यत्र	227	3	अमुष्मपुत्र	113	3	अवग्रह	188	39
अन्यतरेयुः	230	21	अमृणाल	(2) 83	165	अवग्रहित	36	35
अन्येयुः			अमृतनिर्गम	17	15	अवदत्	83	165
अन्वित	182	113	अमृष्य	182	113	अवधान	25	2
अन्वीन			अम्बगमणि	19	31	अवनद्ध	31	4
अन्वीक्षण	186	30	अम्बल	(3) 78	141	अवन्ती	49	2
अन्वेषण			अम्बल	26	9	अवपात	200	85
अन्वेष्टृ	182	111	अम्बल			अवरोध	50	12
अपरेयुः	230	21	अम्बलवेतस	145	35	अवलम्बन	178	83
अपवरक	50	8	अम्बोज	5	41	अवलम्बित		
अपविद्ध	172	40	अम्बोजिनी	45	39	अवलेप	34	22
अपशद	160	16	अयि	228	7	अवसन्धिका	110	120
अ-सर्ग	124	13	अयुत	153	84	अवसन्नता	188	43
अपसोपान	51	17	अयोप्या	49	2	अव-र्ष	124	13
अप-व)स्रवन्ती	151	69	अरम्	13	6	अवसित	143	23
अपाची	15	3	अरघट्ट	234	18	अवद्विध	36	34
अपात्रय	50	9	अरणि	65	66	अवहल	34	23
अपुनर्भव	26	7	अरणिक			अवहल		
अप्रतिरथ	122	2	अरति	104	80	अवाकर्ण	99	48
आर्जनी	45	39	अरति	51	17	अवाचीन	171	33
आर्जनीपति	19	32	अर	230	20	अवार	238	35
अर्चिजा	7	27	अर्कजो	11	51	अवारपार	40	2
अर्चिशायिन्	6	22	अर्जुन	122	2	अवि	94	21
अभिहया	29	11		155	95	अविद्वस	152	77
अभिचर	133	72	अर्ति	135	85	अविमर्श		
अभिज्ञान	17	17	अर्थ	26	8	अविसोढ	178	83
अभिभव	34	23	अर्बुद	153	84	अविलम्बन		
अभिभूत	139	113		23	19	अविलम्बित	94	21
अभिभर	196	53		237	33	अवी		
	220	215	अर्मे	230	34	अव्यक्त	24	29
अभिमुख	171	33	अर्हत्	5	15	अव्यय (3)	79	149
अभियोग	30	17	अलंकार	36	32	अव्यय	238	34
अभिपव	114	10	अलि	89	30	अभ्रग	13	59
अभिपुत	146	39	अलिगद्	38	5	अभ्रपद	30	19
अभ्यञ्जन	149	50	अलिज	144	31	अभ्रवार	131	61
अभ्यामित्र	133	76	अलिन्	86	14	अष्टदण्ड	48	18
अभ्यवहार	149	56		89	30	अष्टमूर्ति	8	34
अभ्युत्थान	118	34	अलीक	106	92	असंमत	182	111
अभ्येष	147	47	अल्लुक	145	38	असंबद्ध	30	20
अभ्रपिशाच	19	27	अवकय	152	79	असह्य	124	11
अभ्रमु	15	5		153	81	असिक्नी	151	70

# I.

Index of additional words given by Kshirasvamin, as well as those of Amarasimha which are specially remarked upon in the Commentary.

	PAGE	STANZA		PAGE	STANZA		PAGE	STANZA
अङ्गु	220	219	अङ्घ्रिप	53	3	अधीतिन्	114	10
अङ्गुमालिन्	} 19	32	अचित	182	113	अधीर	216	194
अङ्गुसप्तम			अजकव	8	35	अनङ्गुही	} 150	67
अकल्मष	182	111	अजननि	188	39	अनङ्गुही		
अकाल	57	29		232	4	अनन्त	6	24
अक्षपटलिक	123	5	अजय	124	12	अनन्ता	73	112
अक्षिगत	182	113	अजातशत्रु	122	2	अनाकुल	31	3
अक्षीव (4)	58	31	अजिगीषुता	188	43	अनाहत	181	107
अगच्छ	53	5	अक्षल	110	120	अनियन्त्रण	178	84
अगदंकार	100	57	अजनावती	15	5	अनीक	134	79
गृहगन्ध	146	40	अजलिका	86	13		138	106
मिमणि	155	93	अजलिकारिका	162	29	अनुतर्ष	221	227
मिमित्र	122	2	अटाट्या	} 118		अनुतर्षण	165	43
अमिमुखी (2)	74	119	अटथा		35	अनुताप	188	43
अम्रज	193	32	अटलक	50	12	अनुत्तर	171	37
अम्रणी	167	11	अणव्य	141	7	अनुनय	188	43
	174	58	अतिक्रम	118	37	अनुपादिन्	182	111
अमिम	98	43		188	43	अनुपमा	15	5
	178	81	अतिचण्डिका	9	41	अनुपल	210	151
अप्रीय	} 98	43	अतिच्छलक	83	167	अनुरदसम्	126	24
अप्य			अतिमर्याद	14	67	अनुवत्सर	23	20
अङ्क	217	198	अतिवादिक	39	2	अनुवाक	234	17
अङ्कपाली	188	43	अतिसंधान	162	25	अनुशोचन	29	16
	217	198	अतासारकिन्	101	59	अनेङ्गमूक	171	38
अङ्किन्	} 31	5	अत्याधान	188	43		191	18
अङ्क			अत्युक्त	237	30	अन्त	153	84
अङ्कोट	} 57	29	अत्युप	146	40		178	81
अङ्कोल			अद्रिकाक	87	22	अन्तरा	227	3
अङ्ग	28	4	अद्रिराज	52	3	अन्तर्गडु	182	113
अङ्गना	15	5	अद्वयमार्गिन्	120	42	अन्तर्गल्लुण्डिका	106	91
अङ्गमर्द	159	10	अध	106	90	अन्तावसायिन्	161	20
अङ्गाधिप	122	2	अधेरयुः	230	21	अन्तिम	178	81
अङ्गारधानिका	} 144	29	अधस्तात्	230	23	अन्ती	144	29
अङ्गारधानी			अधिपाङ्ग	131	64	अन्त्यज	161	21

213. घृतान्मांसं तु सारकृत—Compare क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत on p. 224.
217. पालीयं चम्पकादा—A verse in the Ratnāvalī Act III begins with these words.
218. दुषोविभाषा—This Sūtra is not traceable to Pānini's grammar nor to Chandra's grammar.
- „ कालभावयोः सप्तमी—Compare Pānini's Sūtra यस्यचभावेनभावलक्षणं II. 3. 37.
219. ध्रुवा हि नाट्यस्य प्रथमे प्राणाः—This is from Bharata's Nāṭyaśāstra.
- „ नीविरापन्यनं नायं &c.—This line is given in Vāmana's अलंकार-सूत्रवृत्ति as quoted from नाममाला. Hence the name of Kāṭya's *Kośha* may be नाममाला. But the Nāmamālā quoted by Kshira-svāmin is different from this.
221. अक्षः षोडश मासकाः—This is from Manusmṛiti. Compare—ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री on p. 154.
224. स्वस्ति तेस्तु लतया सह वृक्ष—The whole verse quoted in Vāmana's अलंकारसूत्रवृत्ति runs thus—मा भवन्तमनलः पवनो वा वारणो मदकलः परशुर्वा । वाहिनीजलभरः कुलिशं वा स्वस्ति तेस्तु लतया सह वृक्ष ॥
227. आश्रयेहि मम सीधुमाजनात्—The remaining three lines in Vāmana's अलंकारसूत्रवृत्ति are—यावदप्रदशनैर्न दश्यसे । चन्द्र मद्दशनमण्डलाङ्कितः खं न यास्यसि हि रोहिणीभयात् ॥
228. यो वै युवाप्यधीयानः—The whole line (Manusmṛiti II. 156) is—यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्वयिरं विदुः ।
- „ साचि लोचनयुगं नमयन्ती—See Bhāṛavi's Kirātārjunīya IX. 44.
229. सन्धेदमृतेन किं यदि खलास्तत्काल &c.—This quotation is from Rājasekhara's works.
230. शनैः शनैर्व्युपरमेत्—Compare शनैः शनैरुपरमेद् बुया इति गृहीतया in Bhagavad-gītā VI. 25.
231. पञ्चमूलीयतं पयः—This is repeated on p. 236.
233. विष्णोरनुचराः—Compare the verse—विष्णुक्सेनोद्भवाकूराः सनकायाः शुक्रादयः । महाविष्णुप्रसादं च सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः ॥ enumerating the five attendants on Vishnu.
- „ रुद्रानुचराः—Compare the verse—बाणरावणचण्डीशानन्दार्भुद्गरिटादयः । रुद्रा-शिवप्रसादं च सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः ॥ enumerating the five attendants on Śiva.
236. प्राणिन्युपज्ञकालकं &c.—Pānini's grammar is called अकालक, because he does not employ terms indicative of time, such as अद्यतन, &c.

189. स्वालीपुलाकन्यायेन—The maxim of the rice in the cooking-pot.  
This maxim is used when the condition of the whole class is inferred from that of a part.
191. वेगान्न धा[वा]रयेद्वात &c.—This is from चरकसंहिता.
192. शृङ्गप्राहिकया—*Lit.* 'by seizing oxen by their horns' i. e. by way of specification.
196. ऊर्णयमन्तध्रुवोः—This occurs twice in the Nāgānanda Act I and V.  
,, ये द्रव्येद्विद्व्याडं &c.—See comment. on अभिमर p. 220.
198. रसासृष्टमांसमेदोस्थि &c.—This quotation from Vāgbhata is repeated on page 222.
199. भूतमप्यनुपन्यस्तं ह्ययते &c.—This line is met with in Yājñavalkya-Smṛiti II. 19.
201. प्रसादे वर्तस्व—A verse attributed to चन्द्रक in the शार्ङ्गधरपद्धति begins with these words.
202. रसाः स्वादुम्ललवण &c.—The six flavours are enumerated here and the passage is again quoted on p. 222.  
,, भद्रो मन्दो मृगधेति &c.—These are the three kinds of elephants mentioned by writers on elephants. Compare भद्रो मन्दो मृगधेति विज्ञेयास्त्रिविधा गजाः in Mallinātha's commentary on Śiṣupālavadhā V. 49.
203. सप्त वातस्कन्धाः—The seven courses ( स्कन्धाः ) of wind one above the other in the Vāyupurāṇa are :—आवहः प्रवहथैव संवहथोद्गस्तथा । विवहाह्यः परिवहः परावह इति कर्मात् ॥  
,, संज्ञारूपसंवेदनासंस्कार &c.—These are the five forms of mundane consciousness (in Buddhistic philosophy). Compare—रूपवेदना-विज्ञानसंज्ञासंस्काराः पञ्चस्कन्धाः in Mallinātha's commentary on Śiṣupālavadhā II. 28.
204. शार्ङ्गको मन्दपालमुतः—One of the four birds, sons of the sage मन्दपाल, who were allowed by Arjuna and Krishna to escape from the Khândava forest before it was burnt down by fire.
210. सत्त्वान्धार्त्यसंपन्नः—Compare सत्त्वान्धार्त्यसंपन्नः on page 219.
211. स्तम्भे स्थान्निष्क्रियो जन्तुः &c.—This quotation is from a medical work like चरक or सुश्रुत.  
,, परार्थं बद्धकक्ष्याणां स्वादृशां &c.—The whole verse in the Nāgānanda Act IV runs thus :—जायन्ते च त्रियन्ते च मर्दिष्याः शुद्रजन्तवः । परार्थं बद्धकक्ष्याणां स्वादृशामुद्रवः कुतः ॥
212. स गुरुयः क्रियां कृत्वा &c.—This line from a Smṛiti is also quoted on p. 211 before.

117. दिव्यस्वाद्ये भागे &c.—This is from the *सप्तमस्कन्ध*.
118. शीतं च निवरा कन्येतिवत्—See *Kāśikā* on *Pāṇini's Sūtra III. 3. 48* ( नौवृधान्ये ).
119. तत्र प्रत्ययेकतानता ध्यानं &c.—These *Sūtras* are given in *Patanjali's Yoga-philosophy*.
122. जन्याः स्निग्धा वरस्य ये—See *Kshirasvāmin's* comment. on *जन्याः* and the line quoted from *Raghu* ( VI. 30 ). *Mallinātha* reads the line as— गृहीति जन्यामवदत्कुमारी which is evidently wrong according to the context. *Mallinātha* and *Bhattoji Dikshita* take the word *जन्या* as meaning *मातृसखी* on the authority of *Visvakosha* which is in conflict with *Amarakosha*.
129. चोरितं वणिगतं धारा &c.—This quotation must be from an *अश्वतन्त्र* like *S'ālihotra*.
136. पश्चोपि यदाह &c.—See verse 71 p. 132.
137. कमथिनः कुपुथ्यन्तु &c.—Compare this verse with that given hereafter in the Note on *वावदृक्* page 171.
139. कालः संहरति प्रजाः—This is from *Hārta* and the whole runs thus— कालः सृजति भूतानि कालः संहरति प्रजाः । कालः स्वपिति जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥ It is also met with in *Patanjali's Mahābhāṣya* on *Pāṇini's Sūtra III. 4. 167*.
147. भिस्तटा—A diminutive from *भिस्सा* as *वधूदिका* from *वधू* and *ग्रामटिका* from *ग्राम*. See Note on *वधूटी* p. 92.
155. समासे वर्णस्व वा बलोपमाहुः—This rule may fall under *Pāṇini's Sūtra VI. 3. 109* ( *पृषोदगदीनिययोपदिष्टम्* ).
157. गृहस्थपुणवत्कृत्वे—See *गृहस्थपुणम्* on page 237.
- ” गजनिमीलिकयैते—*गजनिमीलिका* or *इमनिमीलिका* means ‘shrewdness or sagacity.’ Compare the stanza— य एव पारायणिकैर्दृष्टेऽपि विवरीवृतः । पन्थास्तेनैव याताः स्मः कृत्वा गजनिमीलिकाम् ॥ in the introduction to the *Kshiratarangini*.
162. त्रणोल्लियामीर्ममहः &c.—See verse 54 page 100.
171. पदकारवाक्यादृक्—Here the *Padakāra* may probably be a *grammarian*, but nothing is known about him. In the *Kshiratarangini* *वावदृक्* is thus derived— यजजपदशांयद्, वदेरपि—इष्यते । यदाह भोजः— यायजूकं ध्रुवं कालदन्दशको न खादति । लोकोक्तिजप्रपूकं च वावदृकं च खादति ॥
174. अवोपसोलोपथ—This *Sūtra* here and again on p. 209 is not traceable to *Pāṇini's* grammar, nor to *Chandra's* grammar.
81. प्राप्तप्रणिहिते समे—See verse 87 ( p. 179 ).

63. नित्यमामलके लक्ष्मीरिति—The आमलकी tree is called तिष्यफला and Kshirasvâmin accounts for it by quoting from the verse—नित्यमामलके लक्ष्मीर्नित्यं हरितगोमये । नित्यं सङ्खे च पयो च नित्यं शुद्धे च वाससि ॥
70. यदाह वृश्निरल्पतनौ—See the verse 48 of the वृवर्ग on p. 99.
71. हरमेखलो निघण्टो दृष्टः—हरमेखलं or हरमेखलतन्त्रम् is an old medical work. Hence हरमेखले निघण्टो दृष्टः ought to be the correct reading here.
74. ऐरावतो नागरङ्गो &c.—Here Kshirasvâmin points out the inaccuracy of Amarasimha by referring the reader to the line on page 60.
75. खलकी खलकी हादा &c.—Bhânui Dikshita attributes this verse and the one on p. 169 to रुद्रकोश.
77. ओषधी फलपाकान्ता जातिः—Compare ओषधिः फलपाकान्ता (p. 53), and the quotations from Dhanvantari on pp. 179 and 217.
81. कस्य चित्संमता वदीति &c.—The verse referred to here is quoted on page 77.
83. लामञ्जकं सुवासं स्यात् &c.—This verse is from सुधृत according to Bhânui Dikshita.
92. वधूटी च प्रामटिकावत्—The word स्वर्गप्रामटिका is met with in a verse in the महानाटक and explained by Kshirasvâmin on page 147.
100. वार्त इति तु युक्तं यद् &c.—See verse 76th on page 199.
102. मांसभक्षयितामुत्र यस्य &c.—The verse in the Manusmṛiti V. 55 runs thus :—मां स भक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाद्ययहम् । एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मर्नतपिणः ॥ Hence the second line of the verse in the bracket here may be—एतन्मांसस्य मांसत्वं निरुक्तं मनुरवकीदिति नेरुक्ताः ।
104. अंसकक्षयोः सन्धिः &c.—Read अंसवत्सयोः सन्धिः etc. The mistake is due to the reading in the Vyākhyāsudhâ of Bhânui Dikshita.
109. गौरिवाकृतनीशारः &c.—This quotation is given in Patanjali's Mahâbhâshya on the Vârttika शुवायुवर्णनिवृत्तेषु ।
- „ अर्धोदकम्—May अर्धोदक be a corruption of अधरोदक met with in Patanjali's Mahâbhâshya on I. 2. 45 and quoted in the Notes (on page 10 before.)
113. ब्रह्म वेदा ब्रह्म तपो &c.—This line is repeated on pp. 114 and 205.
115. चन्द्रोपसङ्गकं &c.—Read चन्द्रोपसङ्गकं etc. Chandra's grammar is called असङ्गक, for he uses the word नामन् instead of the word संज्ञा in Pânini's grammar, e. g. नास्त्रिजन्त्याः = संज्ञायोजन्याः । Also see page 236.
- „ नन्दोपकमानि मानानि—Compare नन्दोपक्रम मानानि on p. 208 and नन्दोपकमानि मानानि on p. 236.



33. मान्मे मावोपि वक्तव्यः &c.—This quotation from Bharata here as well as on page 219 ought to be—मान्मे मावोपि वक्तव्यः किञ्चिद्नस्तु मारिषः ।

33. मावोपि यथा परिषत्पर्वत—*Short* for मारिष is मार्ष, as पर्वत is for परिषत् on p. 115.

34. अनुभावस्त्वभिनयः &c.—This from Bharata's Nāṭyaśāstra is quoted again on page 219.

„ तिरसोगतौ &c.—The Sūtra in Chandra's grammar is तिरसः (not तिरसोगतौ ) corresponding to Pāṇini's Sūtra विभाषाकृतम् ।

36. स्तम्भे विचेतनत्वं &c.—Compare स्तम्भे स्वाभिष्टिक्यो जन्तुः प्रलये गतचेतनः । on page 211.

38. आशीस्तालुगता दंष्ट्रा &c.—This is repeated on page 222.

39. मधु तिष्ठति वाचि &c.—This verse is found in the Saundarānanda of Aśvaghosha. Bhartṛihari's Vairāgyasataka has—मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हलाहलमेव केवलम्.

„ क्षिप्रं भवत्यमृततुल्य &c.—This is quoted in Vāmana's अलंकारसूत्रवृत्ति also.

45. कुवलयदलनीलम् &c.—The line quoted in Vāmana's अलंकारसूत्रवृत्ति runs thus—कुवलयदलनीला कोकिला बालचूते ।

47. शरावत्या अवधेः पश्चिमेन &c.—The river शरावती is probably the modern रावती or राप्ती a tributary of सरयू. A town of the same name was situated on the शरावती. This river forms the geographical boundary dividing the two great schools of Grammarians, the Eastern and the Northern.

48. शावाभूमी च रोदसी—See comment. on रोदसी p. 222. . .

50. इन्द्राक्षयोः समासेव—This Sūtra is not traceable in Pāṇini's nor Chandra's grammar.

51. मुक्तसमः संक्रमो &c.—See comment. on संक्रम page 186.

52. सुगन्धिर्गन्धमादनः &c.—See Kumāra-sambhava VI. 46.

54. पतनान्ताः समुच्छ्रयाः—The complete verse in the Mahābhārata (Sāntiparvan) runs thus :—क्षयान्ता निचयाः सर्वे पतनान्ताः समुच्छ्रयाः । संयोगो विप्रयोगान्तो मरणान्तं च जीवितम् ॥

58. आह च &c.—Many unspecified quotations in the धनोपनिषद् are traceable to Dhanyantari's Nighantū.

61. पिच्छेन पिच्छः &c.—The primary meaning of the word पिच्छ is आचाम. (See page 232). Hence the remark आचामवदगुल्लिख्यगित्वात्. For आचाम see page 148.

rilabhatta. Haradatta gives the correct form (अव्ययिक). Compare comment. on गेरिक pp. 53 and 190.

15. जपादित्वापक्षे वत्वम्—See जपा(वा) on page 66. The जपादिगण is not given in Pāṇini's Gaṇapāṭha nor in Vardhamāna's Gaṇaratnamahodadhi. It occurs frequently in this commentary. See pp. 51, 54, 86, &c.
16. मा भय्य्यते सत्यमामा &c.—As मामा is *short* for सत्यमामा by the rule (पूर्वपदलोपः) given in Patanjali's Mahābhāṣya, so is माः for चन्द्रमाः.
21. पक्षिणीत्याहुः—Compare comment. on उभयेषु: p. 230.
24. तम आवरकं मोहहेतुः—Compare गुरुवरणकमेव तमः on page 222.
25. संविदं लक्ष्येयं यः (not सः)—This line is from Yājñavalkya-Smṛiti (IL 187) and quoted again on page 201.
27. गावीगोणीगोपोतलिकादिः—The reference is to the passage—एकैकस्य शब्दस्य बहुवचनं प्रज्ञाः । दद्यात्—गौरित्यस्य गावीगोणीगोतागोपोतलिकेत्येवमादयोपभ्रंशाः in Patanjali's Mahābhāṣya.
28. भट्टेपि &c.—Here Bhaṭṭa means Kumārilabhaṭṭa and the verse quoted is from his श्लोकवार्तिक.
- „ गुरापि नवं ( भवं ) गुराणं.—There is probably a slip in writing गुरापि न नवं गुराणं of the Nirukta. See pp. 177 and 226.
- „ दामोदरकराघात &c.—This verse is attributed to Bāṇa in the सुभाषितसंग्रह.
29. चिन्तां प्रकृतसिद्ध्यर्थी &c.—See comment. on उद्घात (p. 186) and this very line quoted there.
30. श्रिवृष्टिबोधादीर्घः—The Sūtra from Chandra's grammar is incorrectly quoted here, श्रिविष्योदीर्घश्च on page 183 and श्रिविष्योर्लुटिवा दीर्घः on page 188. The correct Sūtra runs thus—श्रिवृष्टिबोधादीर्घश्च.
- „ असंबद्धं दशदादिमादि वाक्यं—See Patanjali's Mahābhāṣya on I. 2. 45, where words are grouped incoherently thus—दश दादिमानि षड्व्यूपाः कुण्डमजजिनं पल्लपिण्डः—अधरोक्तमेतत्कुमार्याः स्तैयकृतस्य पिता प्रतिशीन इति Also compare—गुणानां दर्शनान्मुक्तो यस्यार्थस्तदपार्थक्यम् । दादिमानि दशेत्यादि न विचारक्षमं वचः ॥ in Vāmana's काव्यालंकारसूत्रवृत्ति.
- „ एष वचन्यामुतो याति &c.—This as well as अन्धोमणिमुपाविध्यत्तमनङ्गुलिरावयत् &c. above are probably *Subhāshitas*.
31. तिर्यग्योनिष पञ्चा भवति—Compare the quotation (on page 173): अष्टविकत्सो देवास्तिर्यग्योनिष पञ्चा भवति । मानुष्य एकविधः स समासाद् भोतिहः सर्गः ॥ Also compare अष्टविकत्वं देवं तिर्यग्योने पञ्चा भवति । मानुष्यं त्वेकविधं समासतो ब्रिथा सर्गः ॥ in the सांख्यकारिका of ईश्वरकृष्ण.



## NOTES.

PAGE.

1. भग्ना अभिधानकृतो &c.—Compare भग्नाः पारायणिकान्ध्याया अपि च यत्र विभ्रान्ताः । तान्धातुन् विवरीतुं गहनमहोप्यवसिताः स्मः u in the Kshiratarangini.
- „ जाता विश्वसृजः क्रमेण &c.—This verse ends the introduction to the Kshiratarangini also. The six works or commentaries ( षड्वृत्तयः ) of Kshirasvâmin are : (1) नामपारायण or अमरकोषोद्भाटन; (2) क्षीरतरङ्गिणी or धातुवृत्ति; (3) निपाताव्ययोपसर्गवृत्ति; (4) अष्टतरङ्गिणी referred to in the Kshiratarangini; (5) निवण्टवृत्ति mentioned by Devarâja in his Niruktanirvachana; and (6) षव्वृत्ति referred to by Vardhamâna in his Ganaratnamahodadhi and containing probably the *Japâdigana* not found elsewhere.
2. समाह्वयान्यतन्त्राणि &c.—The works alluded to here ought to be the large *Koshas* of Kâtya, Muni, Bhâguri, Dhanvantari, etc. who were anterior to Amarasimha. (See Introduction).
4. देववददष्टसंहतेभ्यः &c.—See comment. on दिव्योपपादुक p. 173.
- „ सर्वे गत्यर्थी ज्ञानार्थीः—This remark repeated on page 182 is well-known amongst Grammarians.
- „ ऐश्वर्यस्य समग्रस्य &c.—This verse from Vishnupurâna is repeated on page 192.
5. तापी च—This ought to be तायी च. Buddha is styled तस्मिन् (not तापिन्). The letters प and य, which are similar in form, are often mistaken one for the other. Hence the above error met with in Dictionaries also.
6. बलस्त्वनुविष्पादिन्यायेन—बल is short for बलम् after the manner of an echo by dropping भ, as भीम for भीमसेन.
7. संहितासु स्वेकं ब्रह्म &c.—The *Samhitâ* referred to here is the पञ्चरात्रसंहिता of Nârada. This passage is a quotation from S'ankarâchârya's शारीरभाष्य.
14. विधवसा विप्रहो &c.—The *Nyâya* or principle of the words अवि & अविक occurs in Patanjali's Mahâbhâshya on IV. 1. 88 (Vart. 2) as follows :—तत्र द्वयोः सन्द्वयोः समानार्थयोरेकेन विप्रहोपस्मादुत्पत्तिर्नविष्यत्-विरविकन्यायेन । तद्यथा- अवेर्मासमिति विग्रह- अविकन्यादुत्पत्तिर्निति- आविकमिति । The inaccurate compound (अविरविक) is attacked by Kumâ-

## Page

- प्रार्थं कुरुष्व मुखाः  
 मुग्धे मुखा ताम्भसि  
 उताहोस्त्रिद्वेद्राजा नलः परपुरंजयः  
 एकमेव वरं पुंसामुत राज्यमुताश्रमः  
 आख्यामि तु तत्त्वं ते  
 न हि न हि माहिमानं प्राप्य तुष्यन्ति भूपाः  
 भीमः पार्थस्तथैव च  
 इति ह स्माहुरात्रः  
 नासीरधूलिधवलाः पुरतः प्रयान्ति  
 अमृतो धावति धीः  
 किञ्चित्कृषितमूर्धजाः  
 अन्यो घनं म्रेत्य गतस्य भुङ्क्ते  
 अमुत्र भविता यत्ते तच्चिन्तय शुभाशुभम्  
 शारदाभ्रनिव पेल्लवमायुः  
 सद्यः पतति मांसेन  
 229 प्रसह्य वित्तानि हरन्ति चौराः  
 यतो भवन्तमन्तरेणान्यथा भूपतिर्प्रादितः  
 न हि प्रेम प्रयोजनपेक्षम्  
 नैकः सुतेषु जाययात्

## Page

- अजसा बकि साधुः  
 परितः प्रपतन्ति दुष्कृता [ तो ] विपद्ः  
 सर्वतः संपदः सताम्  
 कश्चिज्जीवति मे मारा  
 ययातर्ष बकि सभासु विद्वान्  
 आत्मा सर्वं तु पश्यति  
 गुरुवां बकि भोष्यो वा  
 उच्चैश्चरितुं चिरम्  
 सन्तः प्रायो विवेकारः  
 शनैर्याति पिपीलिका  
 230 उ सैवास्मि तव प्रिया  
 नरो लोक्य दुर्लभः ( बलः )  
 शुश्रूक्षो योतते कथम्  
 तं हन्तास्मि परेष्वपि  
 235 कियती पञ्चसहस्री कियती लक्षाय कोटिरपि  
 कियती । औदार्योन्नतमनसा रत्नवती वसु-  
 मती कियती ॥  
 237 सुदिनासु सभासु कार्यमेतत्

*Vide Notes for the verification of some unverified passages in the Commentary.*

## Page

- दुष्करं पुष्करं गन्तुम्  
पर्वतान्तरिताः श्रियः  
अन्तरशो भव सदा धनस्य च जनस्य च  
अबमभ्य ( त्य )न्तरो मम  
दृष्टान्तरे ज्योतिरुपाराम्  
216 प्रश्नक्षोद्यधिया पृच्छा तस्य भजनमुत्तरम्  
217 सितपटच्छन्नपार्ली कपालीम्  
धीलधनः साधुः  
218 बह्युपमकरतलस्तालो वितस्तिः बाङ्कुरान-  
नम्  
न केवलं भुवो भर्ता  
वात्वर्यः केवलः शुद्धो भाव इत्यभिधीयते  
माबालसा विलासिन्यः  
स्वं भावं भावयेद्योगी  
भावाधितजबा भवन्ति भवता भाव्यन्त  
एते यथा  
219 उस्मकानीव भान्ति स्वाः  
हृदि स्वमवलोकयन्  
प्रभूताः स्वा न दीयन्ते  
वस्तूपलक्षणं यत्र सर्वनाम प्रयुज्यते ।  
द्रव्यमित्युच्यते सोऽर्थो भेद्यत्वेन व्यवस्थितः ।  
उत्क्रान्तसत्त्वो मृगः  
220 त्वक्तापदेशो यतिः  
अप्रतो बाहुपाशेन केशपाशेन पृष्ठतः ।  
पार्श्वयोः कर्णपाशेन सर्वतो बन्धनं प्रिया [ ये ] ॥  
त्व [ म ] दन्ताङ्कितपालिकक्षरधिराङ्गनाप्रपु-  
ङ्खं धारम्  
221 चतस्रः कर्षूः पितृभ्यः कुर्यात्  
222 रसस्यातिरसः सार्विः  
रोदोरन्ध्रमजिह्वदत् [ न ]  
उपष्टम्भकं बलं च राजः  
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत  
224 सर्वान्गुणानेष गुणोतिभाति  
सङ्कयुवानो गीर्वाणाः  
अराचछत्रोः सदा वसेत्  
समीतान्स्यापयेदारात्

## Page

- अहो बत महत्कष्टम्  
बत वितरत तोयं तोयबाहा हिमान्तं [ निता-  
न्तं ]  
225 वृद्धिरित्येव वा वृद्धिः  
नाना नारीनिष्फला स्नेहयात्रा  
ननु चण्डि प्रसीद मे  
आशांविषो वा संकुदः सूर्यो बाभ्रविनिर्गतः ।  
भीमोन्तको वा समरे गदापागिरद्वयत ॥  
226 सामिसंमालिताक्षी  
नूनं हन्तास्मि रावणम्  
जोषमास्ते जितेन्द्रवः  
को नामायां सविनुद्वयः  
दृष्टेचरे रोदिति नाम तन्वी  
स्वर्गतस्व ह्यपुत्रस्व  
गोत्रस्थलितं किलाधुतं कृत्वा  
227 आपतन्तमभितोरिमपश्यत्  
भिक्षित्वापि सुभक्षिता बदहहा  
अहह प्रज्ञाप्रकर्षो राज्ञः  
चिराय निर्धनो भूत्वा भवत्यद्वा ( द्य ) महापनः  
कान्तं [ न्तां ] सुहृद्यावति  
पुनः पुनर्वीरि पिबेदभूरि  
अम्भद्विफि कुशिक्षितः  
अभीक्ष्णमास्फालयतीभकुम्भम्  
स्नाक्सरत्यभिसारिका  
सपदि प्रदह्युपोक्षितोभिः  
द्राग्विद्रुतं कातैरः  
तरसोदिता सह जलेषु  
किमुत ब्रह्मविभिभिः  
सुक्षिप्तं आम्रः फलति  
विना वातं विना वर्षम्  
त्वामन्तरा तामरसायताक्षि  
228 वितर गिरमुदारां येन मूकाः पिकाः स्युः  
पद्मयां याति कुतश्चन  
कदाचिच्छूरां याति मरणे कृतनिधवः  
सत्रा कलत्तैर्गर्हस्थम्  
सह्यो द्विजिह्वैः सखः



## Page

- 98 अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरोत्सर्गिकः स्मृतः ।  
नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिध्यति माणवः ॥
- 103 पद्भ्यामेव यथातथेति
- 119 अभिवाचोपसंघातः
- 162 निष्पवाणिर्नवः पटः
- 167 येनान्तर्जलचारिभिर्जलचरैरप्युत्कृष्टमुत्कृजितम्
- 175 सूर्यः समेषां समः
- 178 कुष्ठस्यान्तः प्रभु क्षियः
- 180 प्रिय[या]दर्शनमेवास्तु किमन्यैर्दर्शनान्तरेः ।  
निर्वाणमाप्यते येन सरागेणापि चेतसा ॥
- 186 संवाहनं स्पर्शसुखम्
- 188 अकरणिरिह भूयादप्रशस्तस्य धातुः
- 189 पुलका इव धान्येषु  
पुलाककारी विपुलाघयः स्यात्
- 190 तपो न कल्कोध्ययनं न कल्कः
- 192 विचरेद्युगमातृदृक्
- 193 वर्जयेत्कटधूमं तु
- 195 प्रकीर्णभाण्डामनवेक्ष्यकारिणाम्  
क्षणे रक्ष्याः कुलक्षियः  
क्षणपरपुरजिहृतशूलमहारान्
- 199 वृत्तदेहः स्तायुसारः
- 201 यदध्यासितमर्हद्विस्ताद्वि तीर्थम्  
तीर्थं तदव्यकव्ययोः  
एकमेवेदं संविद्रुपम्  
प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च संविदं स्थापयेद्गणे  
धर्मस्योपनिषत्परा
- 202 जीवेच्च शरदां शतम्  
पदमापदि माधवः  
सूर्याशवः शशानि लब्धपदा यथैव  
नवनखपदलेखालाञ्छितं बाहुमूलम्  
बाहुप्रमाणं परिधिरच्छिन्नाप्रोतिपन्नलः  
आधि प्राप्तो यो न मुयेत्स धीरः  
अनुबन्धमवस्थां च ज्ञात्वा दण्डं निपातयेत्
- 203 सिन्धोः परमपूरुषम्
- 205 पर्ववर्जं व्रजेचैनाम्
- 206 व्याप्तं व्योमनि वर्ष्मणा

## Page

- 207-क्षरत्येनः कृतं पूर्वम्  
गर्भस्येन समः सदा  
रम्भागर्भमृदुः  
भर्तृगर्भदुर्हां चैव  
दुन्दुभ्या किल तत्कृतं पतितया यद्  
द्रौपदी हारिता
- 208 जामयो यानि गेहानि शपन्त्यमतिपूजिताः
- 209 दर्भाः कृष्णाजिनं मन्त्रा ब्राह्मणा हविरग्नयः ।  
अयातयामान्येतानि नियोज्यानि पुनः पुनः ॥  
न शत्रोः प्रत्ययं गच्छेत्  
समयाञ्चाववेच्छिष्यम्
- 210 गुणिनां नात्यर्थं कुर्यात्  
बाक्पाकृष्येत्ययः शतम्  
सर्वस्येव हि दानस्य प्रदीता गुरुच्यते ।  
कन्यायाथैव विद्यायाः प्रदाता पूज्यते गुहः ॥  
प्रायेणाकृतकृत्यत्वान्मृत्योरुद्विजते जनः
- 211 वृषाकपायीमभ्येति सवपः किं न गोत्रमिदं  
सर्वोः क्रिया मन्त्रमूला नृपाणाम्  
महापातकिनां पुत्रा भवेत्प्राणान्तिका क्रिया  
गुरुदेवक्रियारतः  
क्रियां विना को हि जानाति कृत्यम्  
अतो न रोदितव्यं हि क्रियाः कार्याः प्रयत्नतः  
विच्छायाः पुरुषो भवेत्  
संक्रान्तच्छाया आदर्शः  
सप्त कक्ष्या अतिक्रम्य  
परिधानाद्द्विहिः कक्ष्या निबद्धा ह्यासुरीभवेत्  
तानि कृत्याहतानीव
- 212 वारं वारमुदारसंगरमुखे  
संगरो विक्रियाकरः  
अन्योन्यं वृत्तसंगरी  
संगरे शरणं मुह्यत्
- 213 आडम्बरानि पूजयन्ते स्त्रीषु राजकुलेषु च  
जये धरित्र्याः पुरमेव सारम्  
वरं कृपशताद्वापी
- 214 मात्राशी सर्वकाळं स्यात्
- 215 चतुःपाठमदं तन्त्रम्  
साधारणं भवेत्तन्त्रम्



62, 64, 70, 72, 73, 85, 86, 89, 93, 101, 102, 103, 105, 111, 118, 121, 123, 126, 136, 137, 149, 151, &c.

शिशुपालवचम्—A poem by Māgha, 12, 15, 29, 137, 188, 222, 225, 226-227, 228, etc.

श्रीहर्षः—A lexicographer (probably author of *द्विस्वकोश*), 101.

संहिता—Some unspecified literary works, (see Notes), 5, 7, etc.

सांख्यम्—One of the six systems of philosophy (by Kapila), 24, 25, etc.

सांख्यकारिका—A work by *Īśvarakṛishṇa*, 199, 217.

सुभाषितानि—Sanskrit anthologies, (see Notes), 31, 201,

सुश्रुतः—A well-known medical writer, 80, 83.

सूदशास्त्रम्—A work on cookery, 146.

सौन्दरानन्दम्—A poem by *Asvaghosha*, (see Notes), 39.

सौरतन्त्रम्—A treatise (about the solar deity), 19.

सौश्रुताः—Followers of the *Suśruta* school, 64.

स्मार्तम्—The *Smṛiti*-literature, 92, 153, 159, 230.

स्मार्ताः—A sect of ritualists so called, 51, 158.

हरमेखलम्—An old medical work, (see Notes), 71.

हर्षचरितम्—A biographical work by *Bāṇabhaṭṭa*, 28.

हारीतः—A *Smṛiti*-writer, (see Notes), 139.

NOTE—References to *श्रुति*, *स्मृति*, *पुराण*, *निरुक्त*, *भागम*, etc., are not included in this list.

### List of Unverified Quotations, &c.

Page	Page
11 गन्धर्वो च हाहा हृहः	सेयं दुःखा च दुरुपपादा च
18 जमदग्निं पञ्चममवदानमवायत्	दुःखः सुतो निर्गुणः
20 ब्रह्मणो घोषा पितृप्रसवित्री तनुः	सर्वे दुःखं विवेकिनः
22 अहोरात्राविमौ पुण्यौ	40 भुगममेव हि मध्यमपापतेः
23 जीव्यात्सहस्रं समाः	47 न हि कोटरसंस्थेऽग्नौ तस्मैवतिशाद्वलः
25 सत्संविन्करणातीता	राजन्वान्-लोक उच्यते
30 न तां वदेदुषतीं (गां) पापलोक्याम्	67, 161 अ मा नो नाः प्रतिषेधे
35 व्रीह्यावनम्रवक्त्रेभ्यः	82 दर्शनां स्थाने शरैः प्रस्तरितभ्यम्
व्रीह्यादयं देवमुदीक्ष्य	धान्तो धान्तः काश्चनस्येव राशिः
य ईर्ष्यः परवित्तु	88 सिल्लिकार्ति(मां)कृतनिाम्
39 काममपायि मयेन्द्रियकुण्ठैर्यद्यपि दुष्कृत-	91 अजयद् द्विषतः प्राप्तनयः परमहेलया ।
हालहोवः	स्वनेपि मनासं स्पृष्टो न यः परमहेलया ॥
	96 या जनित्री त्रिलोक्याः

- माला-A lexicon, (see Introduction), 13, 15, 20, 21, 23, 24, 39, 40, 41, 44, 47, 48, 50, 63, 66, 74, 81, 82, 85, 86, 94, 118, 132, 144, 146, 148, 149, 151, 152, 154, &c.
- मालाकार:- Author of the lexicon *Mālā*, 20, 35, 148, &c.
- मुद्राराक्षसम्-A drama by Visākhaḍatta, 199, 224.
- मुनि:- An old lexicographer, (see Introduction), 44, 94, 97, 98, 103, 105, 109, 117, 118, 131, 132, 136, 141, 145, 147, &c.
- मेघदूतम्-A poem by Kālidāsa, 96, 184, 205, 228.
- महावल्क्य:- A well-known Smṛiti-writer, 39, 95, 121, 153, 158, 199, 201, &c.
- योगशास्त्रम्-A work on Yoga-philosophy, 13, 119, 191, &c.
- रघुवंशम्-A well-known poem by Kālidāsa, 11, 38, 97, 110, 121, 122, 127, 129, 191, 192, 195, 202, 209, 211, 230, &c.
- रत्नावली-A drama by Śrīharsha, 217, 227.
- राजशेखर:- Author of *Bālarāmāyana*, *Viddhasālābhanjikā*, &c. 215.
- रुद्र:- A lexicographer, (see Notes), 72, 75, 169.
- वाजसनेयोसंहिता-The *Samhitā* of the *Sūkla Yajurveda*, 224, 226.
- वात्स्यायन:- A writer on erotics, 66, 217.
- वामन:- Author of *Kāvya-lankārasūtravṛtti*, (see Notes), 38, 45, 219, 224, 227, &c.
- वामन:- One of the joint authors of *Kāśikā*, 48.
- वायुपुराणम्-One of the 18 *Purāṇas*, (see Notes), 203.
- वाह( रभ )ट:- A well-known medical writer, 146, 200, 198, &c.
- विक्रमोर्वशीयम्-A drama by Kālidāsa, 11, 230.
- विदग्धमुखमण्डनम्-A work by Dharmadāsa, 21.
- विद्वत्सालभञ्जिका-A drama by Rājasekhara, 18, 38, 227.
- विष्णुपुराणम्-One of the 18 *Purāṇas*, (see Notes), 4, 28, 191, 192.
- वृद्धचानक्य:- A work on *Niti*, 192.
- वेणीसंहारम्-A drama by Bhaṭṭa Nārāyaṇa, 202, 207.
- वैद्यकम्-A medical work probably of Vāgbhaṭa, 200.
- वेद्या:- Medical writers, 42, 59, 71, 72, 74, 75, 102, 146, 147, &c.
- वैशेषिकम्-A system of philosophy founded by Kaṇāda, 25, 210.
- व्यास:- An ancient sage to whom *Mahābhārata* and many other works are ascribed, 207.
- शातातप:- Author of a *Smṛiti*, (see Notes), 117.
- शारीरभाष्यम्-A well-known work by Śāṅkarācārya. (see Notes), 7.
- शाश्वत:- An old lexicon, ( see Introduction ), 5, 8, 13, 18, 20, 21, 23, 27, 32, 35, 37, 39, 40, 41, 45, 46, 47, 49, 51, 52, 54, 56, 58,

पद्यतन्त्रम्—A well-known work containing moral stories and fables, 41, 126, 193, 195, &c.

पदकारः—A grammarian (?), 171.

पाणिनिः—The great Sanskrit grammarian, 225, 236, &c.

पातञ्जलम्—Patanjali's system of Yogaphilosophy, 4.

पालकाप्यः—A very old writer on elephants, 128, 203, 209.

पाश्चात्याः (पश्चीच्याः)—The Western school of Śābdikas or grammarians, 8, 185.

प्राच्याः—The Eastern school of grammarians, 3, 5, 8, 11, 16, 21, 94, 114, 149, etc.

बाणः—Author of Kādambari, Harshacharita, etc. (see Notes), 28.

बालरामायणम्—A drama by Rājasekhara, 10, 12, 94, 215, 224, 226, etc.

बौद्धः (आगमः)—Buddhistic philosophy or doctrines, 4, 203.

बौद्धाः—The followers of Buddhistic doctrines, 4, 25.

भगवद्गीता—A celebrated sacred work being an extract from Mahābhārata, 193, 195, 203, 209, 218, 219, 224, 226, 230, etc.

भट्टः—The same as Kumārilabhatta q. v. 28.

भट्टिः—A poet of the 6th century or his work, 132, 179, etc.

भरतः—Author of Nāṭyaśāstra (a work on dramaturgy, etc.), 31, 33, 34, 36, 92, 108, 125, 135, 138, 160, 219, 223, etc.

भर्तृहरिः—Author of the well-known Satakas, 28, 39, 207, 229, etc.

भागुरिः—A very old lexicographer, (see Introduction), 4, 7, 8, 11, 14, 15, 16, 23, 26, 29, 39, 46, 70, 83, 95, 106, 118, 148, 151, etc.

भारतम् (महाभारतम्)—The well-known Indian Epic, 54, 112, 134, etc.

भाष्यम्—Patanjali's Mahābhāṣya, 20, 97, 147, 153, 180, 182, 226, 231, etc.

भोजः (श्रीभोजः)—A lexicographer, grammarian and commentator, 2, 11, 18, 27, 43, 45, 49, 101, 131, 137, 149, 152, 159, 163, 173, 175, 198, 230, &c.

भृगुः—A celebrated Smṛiti-writer, 23, 24, 47, 92, 95, 114, 115, 118, 120, 140, 141, 168, &c.

महाकाशिकम्—A work by Dāmodarāmīśra (also called Hanumānnāṭaka), (see Notes), 147, 148, &c.

महाविचरतम्—A drama by Bhavabhūti, 195.

रत्नाम्नेयम्—A drama by Bhavabhūti, 209.

- गौडाः—The Gauda school of Sābdikas, 63, 74, 76, 90, 199, &c.
- गौतमः—The reputed author of the Dharmasāstra named after him, 28, 114.
- घटस्य ( क ) णरः—Author of the Yamaka-Kāvyā, 218.
- चन्द्रः—Author of a medical Nighantu, 58, 59, 62, 64, &c.
- चन्द्रः ( चन्द्रगोमी )—The well-known Buddhist grammarian, 115, 236, ( see Introduction ).
- चन्द्रकः—A poet to whom certain Subhāshitas are attributed in शाङ्गधरपदनि, 261.
- चन्द्रनन्दनः—Author of the medical Nighantu called गणनिघण्टु, 64, 65, 66, 71, 72, 76, &c.
- चरकसंहिता—A well-known medical work, 194, 211, 217, etc.
- चाणक्यः—The same as Kauṭilya q. v., 48, 163, &c.
- चाणक्यशतकम्—A work on Niti, 41, 191, 193, 206.
- चान्द्रम्—The grammar of Chandragomin, 30, 34, 40, 161, 171, 188, 211, &c.
- जनाः—The followers of Jaina doctrines, 187.
- जैमिनिः—The Author of the Pūrva-Mimāṃsā, 28.
- ज्योतिषम् ( ज्योतिषम् )—A work on astronomy, 23, 86.
- टीका—A commentary, 17.
- तान्त्रिकाः—Followers of Tantra doctrines, 144.
- दन्तिलः—An old writer on the science of music, 31, 32.
- दुर्गः—A lexicographer, 7, 12, 11, 27, 29, 31, 41, 55, 64, 84, 86, 99, 106, 131, 136, 142, 148, &c.
- द्रवि ( मि ) षाः—The Dravidian school of Sābdikas, 45, 92, 147, 163.
- धनुर्वेदः—A work on archery, 135.
- धन्वन्तरिः—Author of a well-known medical Nighantu named after him, ( see Introduction ), 56, 59, 62, 67, 74, 77, 80, 81, 82, 110, 111, 148, 156, 157, 179, &c.
- धातुविदः—Metallurgists, 156.
- नागानन्दम्—A drama by Sriharsha, 36, 196, 211, 227.
- नाममाला—A lexicon, 13, 99, 104, &c.
- नारदः—Author of a Smṛiti, 158.
- नारायणः—A commentator, 34.
- निघण्टुः—The medical Nighantu by Dhanyantari, 61, 63, 66, 68, 69, 71, &c.
- निघण्टु—Vedic vocabulary explained by Yāska, 46, 97.
- निमिः—A medical writer, 63, 88, 157.

## APPENDIX I.

An alphabetical list of authors and works quoted by Kāshirāma in his commentary on Amarakosha.

(The figures refer to pages).

- अनेकार्थः ( अनेकार्थकोशः )—A lexicon, 67.
- अभिधानकारः—Author of Abhidhānakosha, 32.
- अभिधानशेषः—A supplement to Abhidhānakosha, 235.
- अमरमाला—A lexicon, 12, 15, 29.
- अश्वतन्त्रम्—A work on horses (by some writer like Sālihotra ?) (see Notes ), 129.
- आचार्यः—A commentator ( कोशः ? ), 50.
- इन्द्रः—Author of a medical Nighantu, 56, 57, 58, 59, 61, 63, 65, 67, 68, 69, 71, 75, 76, 77, 79, 80, 81, &c.
- उत्तररामचरितम्—A drama by Bhavabhūti, 85, 140, 175, 227, 229.
- उदीच्याः—The Northern school of grammarians, 185.
- उद्भट—A writer on Rhetoric (of Kāsmere), 224.
- उपाध्यायः—A commentator on Amarakosha, 2, 41, 54, 99, 140, 141, 164.
- कालः—A very ancient lexicographer, (see Introduction), 8, 10, 15, 16, 21, 23, 24, 27, 29, 30, 35, 36, 37, 39, 41, 47, 48, 50, 52, 54, 55, 89, 94, 104, 115, 118, 122, 125, 131, 144, 148, 151, &c.
- कादम्बरी—A prose work by Bānabhaṭṭa, 28.
- कालिदासः—Author of Raghuvamśa, Kumārasambhava, &c., 52, 90.
- कल्याणदर्पः—A work on Rhetoric by Daṇḍin, 191.
- काशिका—A complete commentary on Pāṇini, 35, 47, 118, 215, &c.
- काशीराः—The Kāsmere recension of Amarakosha, 132.
- किरातार्जुनीयम्—A poem by Bhāravi, 179, 210, 228, 236, &c.
- कुमारसंभवम्—A poem by Kālidāsa, 9, 52, 90, 109, 176, 196, 202, 224, 225, 226, 227, &c.
- कुमारिलमठः—Author of the Mīmāṃsā-Vārttikas, 28, 166, 207.
- कोटिल्यः—Author of a work on Arthasāstra, 34, 42, 49, 50, 51, 125, 137, 162, 185, 186, 193, 196, 210, 211, &c.
- गोशः—A commentator on Amarakosha, 2, 3, 40, 41, 50, 59, 60, 77, 86, 106, 130, 131, 153, 192, 193, &c.

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ।

अणाद्यन्तास्तेनरक्ताद्यर्थे नानार्थमेवकाः ॥ ४५ ॥

षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङ्गव्ययम् ।

परं विरोधे शेषं तु क्षेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गसंग्रहवर्गः । १ ।

कार्तिकमहः । इन्द्रो देवताभ्या ऐन्द्रो ( ऋक् ), ऐन्द्रो मन्त्रः, ऐन्द्रं हविः । असंज्ञायामित्येव- भ्रवण  
पौर्णमासी, अश्वत्या पौर्णमासी, संज्ञायां भ्रवणाश्वत्याभ्याम् ( सू० ) इत्यणो लृत् । नानाविचार्यविशेषा  
येषां ते वाच्यलिङ्गाः- को ब्रह्मा, कं शिरः, नभः खं, नभाः धावणः । नानार्थी विशेषणानि वेत्येके-  
मूर्खा, मूर्खः, मूर्खे, विदुषी, विद्वान्, विद्वत् ॥ ४५ ॥ णान्ताषट् ( सू० ) इति षट्संज्ञकाः, तथा  
युष्मदस्मच्छन्दो, आह्वयतान्यव्ययानि च त्रिलिङ्ग्यां समानि लिङ्गकृतविशेषपरहितानीत्यर्थः । षट्  
त्रियः, षट्साः, षट् कुलानि, षट् त्रियः, षट् शराः, षट्न्द्रियाणि, त्वं स्त्री, त्वं पुमान्, त्वं कुलं, अहं  
स्त्री, अहं पुमान्, अहं कुलं, मूने स्त्री, मूने पुमान्, मूने कुलं, नानात्रियः, नानादेशाः, नानाकुलानि,  
उचैः स्त्री, उचैस्तृणः, उचैर्वनं, तत्र परि, तत्र देशे, तत्र वने, एवं कति त्रियः, कति जनाः, कति  
स्त्रानि । लिङ्गविशेषविधौ पूर्वोपगविरोधे परं लिङ्गं भवति । अगुरपर्यायाः पुंस्त्व इत्यस्य विषये-  
नेर्द्धतः, राक्षसः । द्वयचक्रमसिमुसन्नन्तमिति नृतीय इत्यस्य विषये- इदं तेजः, ययः । इहोभयं  
प्राप्नोति- इदं रक्षः, पश्चात्कृत्वे । इह यत्रोक्तं तल्लभ्यते द्रष्टव्यं, यथा- गोधा पुंश्चजापि स्त्री, तथा  
पोटा नपुंसकमपि स्त्री । तथाव्यक्ते गुणसंदेहे नपुंसकलिङ्गं प्रयुज्यते- किं तस्या जातं स्त्री पुमान्ना,  
शक्यं स्वमांसादिभिरपि क्षुत्प्रतिहन्तुम् । तथा तयप्प्रत्ययान्तं धर्मवृत्तिं स्त्रीनपुंसकयोः- वर्णानां चतुष्टयी,  
वर्णानां चतुष्टयम्, वेदानां त्रयी, वेदत्रयम् । धर्मवृत्तिं तु वाच्यलिङ्गा- त्रयः स्थितयः, त्रये लोकाः,  
त्रयाणि जगन्ति । तथा छान्दसोऽण् स्वार्थे कृत्वे- गायत्र्येव गायत्रं, अनुष्टुबेवानुष्टुभम् । तथा इङ्-  
स्तिबन्तः पुंसि- अयं वृद्धिः, अयं पवतिः । तथा द्रट् हल्लेकञ्च त्रियां- इयं दरद्वयः, गृह्यकण्डिका,  
छरित्रका, दण्डिका, नालिका, नासिका । तथा प्रमाणाया अजहलिङ्गवचनाः- वेदाः प्रमाणं, स्मृतयः  
प्रमाणं, भूतमियं ब्राह्मणी, विमाशिपो भद्रम् ॥ ४६ ॥ इति लिङ्गसंग्रहवर्गः । ५ । [ इत्यमरसिंहकृतौ  
नामलिङ्गानुशासने । सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ]

इति श्रीभट्टक्षीरस्वाम्युपेक्षितेऽमरकोशोद्घाटने सामान्यकाण्डस्तृतीयः समाप्तः ।



आवन्नन्तोत्तरपक्षो द्विगुष्मापुंसि नमः लुप ।

त्रिखट्वं त्रिखट्ठी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पंटी कुवलवाडिमौ ।

परलिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेपि तत् ॥ ४२ ॥

अर्थान्ताः प्राचलंप्राप्तापक्षपूर्वाः परोपगाः ।

तद्धितार्थं द्विगुः संख्यासर्वनामतवन्तकाः ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहिरविमांस्नामुक्षेया तदुदाहृतिः ।

गुणव्यक्रियायोगोपाधयः परगामिनः ॥ ४४ ॥

प्रयाणां तक्षणां समाहारत्रितक्षं त्रितक्षी ॥ ४१ ॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः । एते त्रिलिङ्गाः— पात्रो भाजनं, पुट आच्छादनं, वाटो वृत्तिः, पेटः संदतिः परिच्छदश्च, कुवलं कोलिकलं, दाडिमं विदम् । इति त्रिलिङ्गशेषः । स्वप्रधान इतरेतरयोगद्वन्द्वे तत्पुरुषे चोत्तरपदस्य यलिङ्गं तद्वति— कुकुटमयूर-विने, मयूरीकुकुटाविमौ, कुलविगेयं, विरकुलमिदं, अर्थे पिप्पल्या अर्थेपिप्पलीयं, चन्द्रार्धोयं, परबलिङ्ग-द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ( सू० ) ॥ ४२ ॥ अर्थशब्दान्ताः प्राचलमदिपूर्वपदाश्च परोपगाः वाच्यलिङ्गा इत्यर्थः । ब्राह्मणायेवं ब्राह्मणायां शिखरीणि, ब्राह्मणार्थे ओदनः, ब्राह्मणार्थे पयः, अर्थेननिससमायः सर्वलिङ्गताश्च ( वक्तव्या ) ( वा० ), प्रगत आचार्योऽस्याः प्राचार्या, प्राचार्यः, प्राचार्य, प्रादयोगताद्यर्थेप्रथमया ( वा० ), प्रादिभ्याधातुनस्यवाच्योवा ( वा० ) इत्युत्तरपदलोपः । अतिक्रान्ता खट्वामतिसत्त्वा, अति-खट्वः, अतिखट्वं, अत्वादयः कान्ताद्यर्थेद्वितीयया ( वा० ) । अवकृष्टा कोकिलया चूतकलिकावको-किला, अवकोकिलः, अवकोकिलं, अवादयः कृष्टाद्यर्थेतृतीया ( वा० ) । परिगलानाप्ययनाय पर्य-ध्ययना, पर्यध्ययनः, पर्यध्ययनं, पर्यादयोगलानाद्यर्थेचतुर्थ्या ( वा० ) । निष्क्रान्ता मर्यादाया निर्मर्यादा, निर्मर्यादः, निर्मर्यादं, निरादयः कान्ताद्यर्थेपञ्चम्या ( वा० ) । अलं जीविकायै— अलंजीविका, अलं-जीविकः, अलंजीविकम् । प्राप्ता जीविकी प्राप्तजीविका, प्राप्तजीविकः, प्राप्तजीविकम् । आपन्ना जीविकामापन्नजीविका, आपन्नजीविकः, आपन्नजीविकं, प्राप्तापन्नेच द्वितीया ( सू० ) । वाच्यलिङ्ग इत्यर्थः । पञ्चषु कपालेषु संस्कृता पञ्चकपालापूर्विका, पञ्चकपालः पुरोडाशः, पञ्चकपालं हविः । संख्या सर्वनाम च तदन्ताश्च वाच्यलिङ्गाः— एका, एकः, एक, तिस्रः, त्रयः, त्रीणि, सर्वो, सर्वः, सर्वम् । संख्यान्ताः— ऊनास्तिस्रो यःसां ता ऊनतिस्रः, ऊनत्रयः, ऊनत्रीणि । सर्वनामान्ताः— द्वाभ्यामन्या द्वयन्या, द्वयन्यः, द्वयन्यत् ॥ ४३ ॥ बहुव्रीहिर्वाच्यलिङ्गः— चित्ता गावोस्याधित्रगुः स्त्री, चित्रगुर्नो, चित्रगु कुलम् । अदिमांस्नामिति किं— दक्षिणस्याः पूर्वस्यश्च दिशोयंदन्तरालं सा दक्षिणपूर्वा, एवं पूर्वो-त्तरा सा विदिक् । गुणादिभिर्योग उपार्थिः प्रवृत्तिनिमित्तं येषां ते परगामिनो वाच्यलिङ्गाः । गुणोपाधिः— शुक्ला शाटी, शुक्लः पटः, शुक्लं वस्त्रम् । द्रव्योपाधिः— दण्डिनी स्त्री, दण्डी पुमान्, दण्डि कुलम् । क्रियोपाधिः— पाचिका, पाचकः, पाचकम् ॥ ४४ ॥ कर्तर्यर्थे संज्ञावाजिताः कृदन्ता वाच्यलिङ्गाः— कर्त्री, कर्ता, कर्तुं, कुम्भकारी, कुम्भकारः, कुम्भकारम् । असंज्ञायामिति किं— ग्रहः, व्याघ्रः । कर्तृकर्मायै कृत्या वाच्यलिङ्गाः— वास्तव्या, वास्तव्यः, वास्तव्यं, वसेस्तव्यकर्तरिणिश्च ( वा० ), कर्तव्या, कर्तव्यः, कर्तव्यम् । कर्तरि कर्मणिाति किं— स्थातव्यं स्वया, द्रव्यभूयं, हत्या । असंज्ञायामित्येव— सूर्यः, भियोष्णोन्ने ( सू० ) । तेन रक्ममित्यादावर्थेऽण्णादितद्विद्वान्ता वाच्यलिङ्गाः— हरिदया रक्ता हारिदी, हारिदः, हारिदं, कालाभि-युं ( भार ) का लाक्षिकी, लाक्षिकः, लाक्षिकं, कालाभिर्युक्ता कार्तिकी पोणेमात्री, कार्तिके दिवसः,

कुप्यं मुण्डं शीघ्रं बुद्धं श्वेदितं क्षेमकुट्टिमम् ।  
 संगमं शतमानामंशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥  
 कवियं कन्दकर्पासं पारावारं युगंधरम् ।  
 पूयं ( यूयं ) प्रमीवपार्त्रीवि यूयं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥  
 अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।  
 तन्नोक्तमिह लोकेपि तच्चंदस्त्यस्तु शेषयत् ॥ ३६ ॥  
 स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरणाः ।  
 जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥  
 मुनिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको ज्ञाटलिर्मनुः ।  
 मूपा सृपाटी कर्कन्धूर्याष्टिः शाटी कुटी कटी ॥ ३८ ॥  
 स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ् ।  
 औचित्यमाचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥  
 पञ्चयन्तप्राक्पदाः सेनाच्छायाशालासुरानिशाः ।  
 स्याद्वा वृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च विक् ॥ ४० ॥

नचादिमेलः । शतमानं रूपपले, यत्स्मृतिः— त्रे कृष्णले रूपमापो धरणं षोडशैव ते । शतमानं तु दश-  
 भिर्धरणैः पलमेव च ॥ अमोक्षिहृक् । शम्बलः पथिव्ययः ( पथेयं ) । अव्ययमलिङ्गमसंख्यम् ।  
 ताण्डवं नृत्यम् ॥ ३४ ॥ कवियमशमुखबन्धनम् । कन्दं मूलविशेषः । कर्पासं बादरम् । पार नचाः परं  
 पार्श्वम् । अवारमर्षाङ्गार्थम् । युगंधरं रयकाष्ठम् । पूयं क्षिप्रानृक् । प्रमीवं वातायनम् । पार्त्रीवं यज्ञो-  
 पकरणम् । यूयं मुद्रादिनिर्यासः । चमसं यज्ञेष्वुपणयनम् । विहृतं यज्ञपिष्टम् ॥ ३५ ॥ अर्धर्चादिगणे  
 पूर्वघृतादीनां पुंस्त्वं यदुक्तं तन्निश्चितं छन्दसम् । अत इह लौकिके नोक्तम् । अयं प्रमादालोके दृश्यते  
 यदि तल्लिङ्गशेषवत् स्त्री ] इङ्गीकार्यम् ॥ ३५ ॥ इति पुंनपुंसकशेषः । स्त्रीपुंसयोः शेषो वक्ष्यत इति  
 शेषः । अपत्यमपत्यान्ताः स्त्रीपुंसयोः— वासिष्टः— वासिष्ठी, गार्ग्यः— गार्गी । द्विपदादयो जातिविशेषाः  
 स्त्रीपुंसयोः— पुरुषः— पुरुषी, कठः— कठी, कुकुटः— कुकुटी, मृगः— मृगी, अयं गौः— इयं गौः, अयं  
 कविः— इयं कविः, भ्रमरः— भ्रमरी, वरटः— वरटी, उरगः— उरगी, अयमहिः— इयमहिः । एते मल्ल-  
 कादयः शब्दाः स्त्रीयोगैः सह पुमाख्याः स्त्रीनरलिङ्गा इति ज्ञेयाः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इति पुंस्त्रीलिङ्ग-  
 शेषः । सिंहावलोकितेन ( न ) पुंस्त्रीत्येव द्वयोः । भावे कर्मणि च ष्यञ्चनः स्त्रीनपुंसकलिङ्गः— यथा—  
 उचितस्य भावः कर्म वा, ( गुणवचनं ) ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ( मू० ) इति ष्यञ्, एवं वैदग्ध्यं—  
 वैदग्धी, सामप्रथं— सामग्री । चोरस्य भावः कर्म वा चौरिका— चौरिकम् । क्वचिदुपहृणात्रेह— शोक्त्यं,  
 ब्राह्मण्यं, मानोद्दकं, रामणायकं, साहायकं, शैष्यपाश्यायिका, गार्गीका, काठिका ॥ ३९ ॥ षट्पञ्चपूर्वं  
 पदाः सेनादयः स्त्रीनपुंसकयोः— नृणां सेना वृसेनं वृषेना, युतां निता श्वनिशं श्वनिशा, भूतनिशं  
 भूतानिशा, गवां शाला गोशालं गोशाला । एवमितरे छयसुरं उदाहृत्यं, यथा— वृक्षस्य वृक्षयोर्वा छाया  
 वृक्षच्छायं वृक्षच्छाया, यवसुरं यवमुग ॥ ४० ॥ आद्यन्तोत्तरपदा द्विगुरवन्तोत्तरपदा द्विगुधापुंसि स्त्रीन-  
 पुंसकयोः, नस्य च लुभयतीति प्रसङ्गाद्वक्ष्यणानुवादः— त्रिगुणां खट्वानां साह्यारन्निखट्वं त्रिखट्वी,

भावे नणकचिद्भ्योन्ये समूहे भावकर्मणोः ।

अवन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेप्युक्ततोदके ।

चोचमुक्तं गृहस्थूणं तिरीटं मर्मयोजने ॥ ३० ॥

राजसूर्यं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।

माणिक्यभाष्यसिन्धुरचीरचीवरपञ्चरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालबाह्व( ह्रिक )म् ।

पुनपुंसकयोः शेषार्धचर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

मांदकस्तण्डकष्टकः शाटकः खर्वटोर्बुदः ।

पातकोद्योगचरकतमालामलकां नडः ॥ ३३ ॥

स्विति किं- चैत्रकन्या, संज्ञायांकन्योशीनरेषु ( सू० ) इति नपुंसकम् ॥ २८ ॥ नणकेभ्यश्चकारानुबन्धे-  
भ्यश्च येन्ये भावार्थे कृतस्तथा समूहार्थे भावकर्मणोश्च ये तद्विज्ञास्ते ते प्रत्यया येषां ते शब्दास्तृतीये-  
समन्ताद्भावः साराविणं वर्तते, सांस्कृतिनं वर्तते, अभिविधौभावइत्यु ( सू० ), अणिनुणः ( सू० ) इति  
स्वार्थेऽप्यु । ब्रह्मणो भवनं ब्रह्मभूयं गतः, भुयोभावे ( सू० ) इति क्यप् । नणकचिद्भ्योन्य इति किं-  
( न )- प्रश्नः, यत्नः, ( ण )- न्यदनं न्यादः, नैणचेति ( सू० ), ( क )- आख्यानामुत्थानमाख्यत्वः,  
गुपिस्थः ( सू० ) इति योगविभागात्कः, ( चित् )- श्रयनं श्रयधुः, द्वितीधुत् ( सू० ), आसनमासना,  
भावना, ण्यासभ्रन्योयुत् ( सू० ) । समूहादौ तद्विज्ञाः खल्वपि- भिक्षाणां समूहो भैक्षं, यौवतं, राजकं,  
भौक्षकं, गोर्मावो गोत्वं, शुक्रस्य भावः कर्म वा शौक्यं, मार्दवं, मानोज्ञकं, स्तेयम् । पुण्यसुदिनाभ्यां  
परः कृतसमासांतोहःशब्दस्तृतीये- पुण्यं च तदहथ पुण्याहं, सुदिनश्चोदोत्र शोभनवाची, यथा- सुदिनाष्ट  
समाष्टु कार्यमेतत्, पुण्यसुदिनाभ्यामद्वौवक्तव्यात् ( वा० ) नपुंसकत्वम् ॥ २९ ॥ क्रियाविशेषकान्यस्य-  
विशेषणानि च तृतीये- एकवचनान्तामि च भदन्ति- मृदु पचति, शोभनं पचति, पूर्वस्यां विशिष्टे  
काले वा पुरस्ताद्भ्यं, श्वः शोभनम् । एते शब्दास्तृतीये- उक्तं सामविशेषः, तोटकं वृत्तमेदो इत्यस्य-  
कमेदश्च, चोचं भुक्तोच्छिष्टा फेला, नारिकेरफलस्य फलत्वात्सिद्धं, उक्तमेकाक्षरं छन्दः, अस्तुक्तं च  
द्वयक्षरम् । गृहस्य स्थणा गृहस्थणम् । तिरीटं शिरोवेष्टनम् । मर्मं संधिस्थानम् । भोजनं चतुःश्लोकी  
॥ ३० ॥ राजसूर्यवाजपेये यज्ञविशेषो । कविकर्मण्येते द्वे तृतीये- गद्यं दण्डकबन्धः, पद्यं श्लोकबन्धः ।  
कृतौ कवेरिति किं- गद्या स्त्री, पद्या शर्करा । माणिक्येव माणिक्यम् । भाष्यं वर्णः । सिन्धूरं वीनपि-  
ष्टम् । चीरं वार्क्षी त्वक् । चीवरं मुनिवासः । पञ्चरं पञ्चादिबन्धनगृहम् ॥ ३१ ॥ लोकायतं नाम तर्कः ।  
हरितालं घातुभेदः । विदलं दाडिमकणः, फल[ ले ]स्य सिद्धम् । स्थालं भोजनपात्रम् । बाह्वं देशः ।  
इति नपुंसकलिङ्गशेषः । अयमिदं वार्धमृचार्धवः । पिण्याकं खलः । कण्टकं लतारोम ॥ ३२ ॥ मांदकं  
मक्ष्यविशेषः । तण्डकं परिष्कारः, दण्डको वायम् । टङ्कोऽभ्रदारणः । शाटकं पटः । खर्वटश्चतुःशत-  
प्रामाणां संप्रहस्यानम् । अर्बुदोक्षिगोः संह्याविशेषश्च, पर्वते तु पुलिङ्गः । पातको गोहत्यादिः । उद्योग  
उत्साहः । चरकं शास्त्रविशेषः । तमालं वृक्षभेदः । आमलको धात्रीफलं, वृक्षे त्वामलकी । नबोन्तः-  
शुषिरं तृणम् ॥ ३३ ॥ कुष्ठं त्वप्रोगः, द्रव्यं च । मुण्डं शिरः, मुण्डितं तु वाच्यलिङ्गम् । शीधुर्मषम् ।  
बुस्तं मांसशङ्कुली । क्षेडितं मुखध्वनिभेदः । क्षेमं कुशलम् । कुट्टनं निर्वृत्तः कुट्टिमो मणिभूः । संगमो

कोट्याः शताविः संख्यान्या वा लक्षा नियुतं च तत् ।  
 द्यच्चमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥  
 भ्रान्तं सनो( लो ) पथं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्यायान्वितम् ।  
 पात्राद्यवन्तैरेकार्थो द्विगुलक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥  
 द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।  
 पञ्चाशत्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥  
 शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादिराजकात् ।  
 दासीसमं वृषसमं रक्षःसभमिमा दिशः ॥ २७ ॥  
 उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशनं ।  
 कोपक्षकोपक्रमादि कन्थांशीनरनामसु ॥ २८ ॥

मदनः । कथमास्थानमास्थानी, करणं करणी, प्रमाणं प्रमाणी, अधिकरणमधिकरणी, राजधानं राजधानी  
 स्युदष्टित्वात्, किं च, कृत्यव्युद्योबहुलम् ( सू० ) इत्यनान्तानां त्रिलिङ्गत्वं स्मृ[ स्व ]रान्ति- राजभोजनी  
 क्षैरेयी, राजभोजनः शालिः, राजभोजनं भक्तम्, इष्टमन्त्रनी शस्त्रो, इष्टमन्त्रनः पशुः, इष्टमन्त्रनं शस्त्रम्,  
 पलाशशातनी, पलाशशातनः, पलाशशातनम्, पूरणी, पूरणः, पूरणम्, गोदोहनी घटी, गोदोहनी घटः,  
 गोदोहनं भाण्डम् ॥ २४ ॥ केवलं भ्रान्तं, सकारनकारोपधं प्रशब्दान्तं च, शिष्टं प्रागुक्तादन्यच्छब्दरूपं  
 तृतीये- पात्रं, भमत्रं, दात्रं, कलत्रं, शस्त्रं, वस्त्रं, शस्त्रं, अन्त्रं, तन्त्रं, यन्त्रम् । शिशमिति किं- पुत्रः,  
 औपवस्त्रः, मन्त्रः । संख्यापूर्वं रात्रान्तं तृतीये, रात्रः द्वाहाः पुंसीति ( सू० ) पुंस्त्वं प्राप्तम्- तिसृणां  
 रात्रीणां समाहारविरात्रम्, एवं पञ्चरात्रं, षड्रात्रम् । संख्येयति किं- वर्पारातः । पात्रादिभिरकारान्तै-  
 रुत्तरपरैः समाहारे लक्ष्यानुसारेण यो द्विगुः स तृतीये- पञ्चात्रं, त्रिभुवनं, त्रिपुरदाहमुमापतिसेविनः  
 ( किराताजुं ), चतुर्युगम् । पात्रादीति किं- त्रिलोको, त्रिवेदी । एकार्थं इति किं- पञ्चकपालः पुरो-  
 काराः । लक्ष्यानुसारत इति किं- त्रिपुरी, पञ्चमूलोऽर्हतं पयः ॥ २५ ॥ द्वन्द्वस्य यदेकत्वं समाहारोव्ययी-  
 भावश्च समासस्तृतीये- इदं पाणिपादं, मादङ्गिकपाणविकं, स्त्रीषु कथा वर्तत इदमधिभि, इदं तिष्ठद्गु  
 कालः, इदमुन्मत्तगङ्गां देशः । संख्याव्ययाभ्यां परः कृतसमासान्तैः पथिशब्दस्तृतीये- प्रयाणां पथां  
 समाहारविषयं, विरुद्धः पन्था विषयं, कुत्सितः पन्थाः कापथम् । संख्याव्ययादिति किं- धर्मपथः ।  
 षष्ठ्यन्तात्परा कृतसमासान्ता छाया तृतीये बहूनां चेत्- गृध्राणां छाया गृध्रच्छायं, वीनां छाया विच्छायं,  
 शलभच्छायं, छायायाहुस्ये ( सू० ) इति नपुंसकम् । बहूनामिति किं- वृक्षस्य छाया वृक्षच्छाया ।  
 षष्ठ्याः परा समासे समूहार्थं सभा तृतीये- दासीनां सभा दासीसमं दासीसमूह इत्यर्थः, ब्राह्मणसमं,  
 अशालाच ( सू० ) इति नपुंसकम् । संहताविति किं- दास्याः सभा गृहं दासीसभा ॥ २६ ॥ राजार्थे-  
 भ्योऽमनुष्यार्थेभ्यश्च षष्ठ्यन्तेभ्यः परा समूहार्थं शालार्थापि सभा तृतीये, राजशब्दपरा चेत् स्यात्-  
 नृपस्य सभा गृहं वृषाणां समूहो वा नृपसमं, ईश्वरसमं, रक्षःसमं, पिशाचसमम् । अराजकादिति किं-  
 राजसभा, सभाराजामनुष्यपूर्वा ( सू० ) इति नपुंसकम् । इमा दिश इमान्युदाहरणानीत्यर्थः ॥ २७ ॥  
 उपज्ञायत इत्युपज्ञा, उपक्रम्यत इत्युपक्रमः, तदन्तः शब्दः पञ्चसमासे तदादिकथने द्योत्ये तृतीये- यथा  
 कस्योपज्ञा कोपज्ञं सर्गः, चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं व्याकरणं, पाणिः युपज्ञमकालं ( लकं ) व्याकरणं, कस्योप-  
 क्रमः कोपक्रमं सृष्टिः, नन्दोपक्रमाणि मानानि । तदादित्व इति किं- द्वितीयोपज्ञो रथः, चैत्रोपक्रमो घटः,  
 उपज्ञोपक्रमंतदाद्यधिक्यसायाम् ( सू० ) इति नपुंसकम् । उशीनरदेशे या कन्या षष्ठ्याः परा सा  
 संज्ञायां गम्यमानायां तृतीये- सौशमीनां कन्या सौशमिकन्यम् । उशीनरेति किं- दाक्षिकन्या । नाम-



वृत्तिसीमन्तहरितां रोमन्धोद्रीयबुद्बुदाः ।  
 कासमर्दोर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपी स्यू ( पू ) पकौ ॥ १९ ॥  
 आतपः क्षत्रिये नाभिः कणपक्षुरकेवराः ।  
 पूरक्षुरप्रसुकाश्च गोलहिद्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥  
 घेतालमलमलाश्च पुरोडाशापि पट्टिषाः ।  
 कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥  
 द्विहीनेन्यश्च ( च ) सारण्यपर्णश्वभ्रहिमोवकम् ।  
 शीतोष्णमांसघृतिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥  
 फलहमशुल्यलौहं सुखदुःखशुभाशुभम् ।  
 जलपुष्पाणि लवणव्यन्नान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

गङ्गाण्डः ( कपोलः ) । करणः समुद्रः । लगुडो बटिः । वण्डः समूहः । किणो मांसप्रस्थिः । पुणो दाहकृमिः ॥ १८ ॥ इति मन्त्रः । सीमन्तः केशस्रोतः, शकन्वादिवासररूपम् ( वा० ) । हरिणीको वर्गः, दिशयायस्तु अलिङ्गः प्राग्वचनात् । रोमन्धोद्रीयार्थो चर्चितवर्णम् । उद्रीय ओकारः । बुद्बुदो-  
 म्मुस्फोटः । कासमर्दो वेसशरभेदः । अर्जुनमृद्विर्भाषिः संह्याभेदश्च । कुन्दा माष्यं पुष्पम् । फेनो विष्मर ।  
 स्तूपो मृदादिकृष्टः । यूयो यङ्गं पशुबन्धनकाष्ठम् ॥ १९ ॥ आतपकोद्दोषतः । क्षत्रियपर्याया नाभिः, नेह-  
 इति नाभित्पुण्ड्रिः । कणाः प्राप्तवेद्येवः । धुरा नापिनमाण्डम् । कंदरो हाकम् । पूरस्तोभेदः ।  
 धूपः काण्डभेदः । कुल्मस्त्यज्रनम् । गोलो वज्रकः पिण्डः, यथा भूगोलः । हिङ्गुदुः- रागः ।  
 अकारान्तोयमित्येके । पुद्गलो जीवः ॥ २० ॥ वेतालो भूतविटः शवः । मधः काण्डभेदः । पुरोडा-  
 शो यज्ञे पिष्टपूषः । पट्टिषो नामायुधम् । कुल्माषोऽस्त्रत्रा माषादिः । रभसः पौर्वापर्यविचारः । बटाहो  
 द्रव्यबन्धमाण्डम् । पतद्ग्रहः- अनेकधारः ॥ २१ ॥ इति पुलिङ्गशेषः । द्विहीने तृतीये नपुंसके,  
 उक्तद्वयः शेषो वक्ष्यत इत्यर्थः । स्वादि सप्तर्षिविशेषो नृताये । सामन्त्रियमाह्वयं चोच्यते- सामन्त्रि-  
 ह्यधिकं करणं, खं गगनमन्तरिक्षम् । अरण्यं विपिनं कान्तारम् । पर्णं पलाशं दलम् । श्वत्रं विवरं सुपुष्टम् ।  
 हिमं प्रालयं तुहिनम् । उदकं पानीयं तोयम् । शीतं शिशिरम् । उष्णं घर्मम् । मांसं तरुं फलम् । शक्तिं  
 रक्तमसृक् । मुखं तुण्डमास्थम् । आक्षि नयनं लोचनम् । द्रविणं धनं स्वापनेयम् । बलं सैन्यमनीकम् ॥ २२ ॥  
 कत्रिषोषः- आनं पनसं कतिथम् । हेम मुवर्णं कर्तस्वरम् । शुन्धं ताप्रमीदुम्बरम् । लोहमदमसारम् ।  
 सुखमुपशोषं शान्तम् । दुःखमाभीलं कृच्छ्रम् । शुभं पुण्यं सुकृतम् । अशुभं पापं दुष्कृतम् । जङ्गुणभेदाः-  
 अम्बुजं कुमुदमिन्दीवरं कटारम् । लवणभेदाः- सैन्धवमीदृभिर्दं विडं हवकम् । व्यवजनभेदाः- व्यवजन-  
 मुपसवनं दधि दुग्धमुदभिन्मस्तु । अनुलेपनभेदाः- [ अनुलिप्यते ] अनुलेपनं कुङ्कुमममिश्रितं काश्मीरं  
 चन्दनं श्रीखण्डम् ॥ २३ ॥ भयान्तां मृ ] तशकृद्भक्षत्र ( स्तु ) चापभरणलाङ्गलम् । दावीषधमृषापत्यहर-  
 योदरकाकुदम् ॥ पलनाजिरशूङ्गाप्रद्वारबहोदुमानसम् । ध्वान्तं चाव्यक्तलिङ्गं च मणितो यत्प्रयुज्यते ॥  
 कोटिरन्या शतादिका संह्या तृतीये- शतं सत्समयुतं, नेह- इयं कोटिलेशशतम् । शतादिरेति किं-  
 इयं त्रिंशत्, इयं नवतिः । लक्षशब्दस्तृतीये वा, पक्षे त्रिंशत् निर्देशात्, यथा- कियती पञ्चसहस्री  
 कियती लक्षाश्च कोटिरपि कियती । औदायौन्नतमनसां रत्नवती बहुपती कियती ॥ इदं लक्षं तदेव प्रयु-  
 ताह्यमित्यभिधानशेषोपि । असन्तभिसन्तमुपसन्तमन्तं च यद् द्विस्वरं तत्तृतीये- इदं वक्ष्यतेऽत्रः  
 पयः सर्पिर्बर्हिर्यजुर्वज्रः, इदं नाम रोम नर्म पर्व । अकर्तारि यदनप्रत्ययान्तं तत्तृतीये- साध्य-  
 तेनेनेति साधनं, अधिक्रियतेस्मिन्नधिकरणं, पाकः पचनम् । कर्तारि तु मधुसूदनः, रमणः,

श्रीवेष्ठाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।  
 कशेरुजनुवस्तुनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥  
 कषणभमरोपान्ता यद्यन्ता अमी अथ ।  
 पथनयसदोपान्ता गोत्राह्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥  
 नाम्न्यकर्तारि भावे च घञजबन्ङ्गघाथुचः ।  
 ह्युः कर्तरीमनिजभावे को घां किः प्रावितांन्यतः ॥ १५ ॥  
 वृन्द्वैश्ववडवाम्श्ववडवानसमाह्वते ।  
 कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वायःपूर्वकापि च ॥ १६ ॥  
 वटकश्चानुशाकश्च रत्नकश्च कुडङ्गकः ।  
 पुङ्खो न्युङ्खः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटः ॥ १७ ॥  
 कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगौडः (गोण्ड) पिचण्डवत् ।  
 गडुः करण्डा लघुडां घरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

वस्तु पदार्थः ॥ १३ ॥ ककरादिद्वादशाक्षरैर्गोपधा अकारान्ताः पुंसि । क- शल्कः, वृक्षः, श्वेतकः, वराटकः ।  
 व- वृक्षः, कक्षः, निकषः । ग- गणः, शणः, बाणः, कगः । भ- कुम्भः, शलभः । म- आचामः,  
 धूमः, प्रायः । र- अङ्कुरः, करः, दरः, समीरः । प- सर्गः, सूरः, कलापः, बाष्पः । य- सायः,  
 शायकः, नाथः । न- केनः, हायनः, स्तनः, जनः । त- तनयः, व्ययः, तन्नुवायः । स- रसः, दासः,  
 कुक्षः, वसः । ट- सरटः, पटः, कटः । अत्रत्यप्रत्ययान्ताः शाखाध्यायिनश्च पुंसि- गार्ग्यः, वासिष्ठः,  
 दाक्षिः, कडः, यङ्गवृचः, छन्दोगः ॥ १४ ॥ अकर्तारि च कारके संज्ञायां भावे चार्थे घञन्तादयः पुंसि ।  
 घञ्- प्र (प्रा) सीदन्त्यदिप्रत्ययनमनासीति प्र (प्रा) सादः, प्रक्रियते प्रकारः, पाकः, त्यागः, अकर्तारि च-  
 कारकसंज्ञायां (सू०) घञ् । अच्- पचः चयः, नयः, पचायच् (नन्दिप्रदीति), एरच् (सू०) ।  
 अर्- करः, भरः, स्तवः, लवः, डवः, ऋशेरर् (सू०) । नङ्- यज्ञः, यन्तः, प्रध्नः, यज्ञशचवत्-  
 विच्छेति (सू०) नङ् । उपलघुणत्वात्- स्तपानन् (सू०) । णः- न्यदन् न्यादः, नोणवेति (सू०)  
 णः । षः- महरः, निगमः, गोचरः, पुंसिसंज्ञायां घः प्रायेण (सू०) । अधुच्- आनन्दधुः, श्वधुः,  
 वेपधुः, द्वितोयुच् (सू०) । कर्तारि ह्युः पुंसि- नन्दयति नन्दनः, रमयति रमणः, नन्दिप्रदीपचेति  
 (सू०) ह्युः । इमनिजन्ताः पुंसि- पृथोर्भावेः प्रथिमा, लथिमा, पृथ्वादिभ्यश्चानिज्वा (सू०) । भाव  
 इति किं- तारिमा पृथ्वी, र्व [ व ] रिमा तपस्वी, औणादिक इमनिच् । भावे कप्रत्ययान्तः पुंसि- आहू-  
 नाम्पुथानमाह्वयो वर्तते, मुपिस्थः (सू०) इति योगविभागात्कः । चमर्थेकविधानं (वा०)- प्रस्वः,  
 मज्जः । प्रादित उपसर्गोद्वयतः सुवन्ताश्च पराद् घुसंज्ञकात्परो यः कप्रत्ययस्तदन्तः पुंसि- निधिः, प्रधिः,  
 आधिः, आदिः, उपसर्गैर्घोः किं (सू०), अङ्घ्रिः, इधुधिः, कर्मण्यधिकरणवत् (सू०) इति किं ॥ १५ ॥  
 समाहारादन्यत्र वृन्द्वैश्ववडवो- अश्ववडवाः पुंसि, द्विवचनद्वयव्येकदाह्वाम् । नेह- अश्ववडवं, विभाषा-  
 वृत्तपुगेति (सू०) समाहाराविकलाः । सूर्यादिपूर्वः कान्तशब्दः पुंसि- सूर्यकान्तः, भास्वकान्तः, इन्दु-  
 कान्तः, चन्द्रकान्तः, अयस्कान्तः ॥ १६ ॥ वटको भक्षयविशेषः । अनुवाक ऋग्यजुःसमूहः । रत्नकः  
 पद्मकम्बलः । कुडङ्गको वृक्षलतागहनम् । पुङ्खः काण्डमूलम् । न्युङ्ख औकाराः बांशः । समुद्रः  
 करण्डकः । विटः कामुकानुवरः । पट उष्णीषादिः । धटो दाहनुला । खटस्तृणम् ॥ १७ ॥ कोट्टो दुर्यः ।  
 अरषटो महाकूरः । हट आरणः । पिण्डो प्रासः । गौडो गुडको देशविशेषो वा । पिचण्ड उदरम् ।



पिच्छावितण्डाकाकिण्यधूर्णिः शाणी मुष्णी वरद् ।

सातिः कन्या तथासन्दी नामी राजसभापि च ॥ ९ ॥

झलरी चर्चरी पारी होरा लद्वा च सिध्मला ।

लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वर्गयागाद्रिमेघाच्छिद्रुकालासिशराख्यः ॥ ११ ॥

करगण्डीप्रदेर्दन्तकण्ठकेशनसस्तनाः ।

अद्वाहान्ताः श्वेदभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

काकिणी नाम मापकचतुर्थभागः, पणचतुर्थभाग इत्येके । काकिनीति सभ्याः । चूर्णिर्भाष्यम् । शाणी निरुपः, शाण इत्येके, काणीपाठे संकोचोर्थः । दूणी कर्णजलौका । दरद् म्लेच्छजातिः । सातिः मावार-विशेषः । कन्या खण्डः स्यूतं वासः । आसन्दी पीठिका । नामी नुन्दिः । राज्ञः सभा राजसभा, सभराजामनुप्यपूर्वेति ( सू० ) राजनिवेशात्स्वीत्वम् ॥ ९ ॥ झलरी वायविशेषः । चर्चरी हर्षकीडा । पारी पानमाण्डम् । होरा लग्नं जतकं च । लद्वा-अलका भ्रमरकाष्ठ । सिध्मला पामा मलः शिर्षं च । लाक्षा जतुः । लिक्षा यूक गर्भः । गण्डूषा-आर्यचुतुकं, गण्डूरोपि । गृध्रसी-ऊरुसंघो वातकृ । चमसी ममूरादिपिष्टे स्तब्धचमउश्च । मसी रजनी । इति खौलिङ्गशेषः ॥ १० ॥ सुरा असुरास्तद्विशेषा-स्तदनुचराश्च पर्यायैः सह पुंसि । सुरा दिगौकसः, सुरविशेषाः-इन्द्रो विद्विजाः शक्रः, आदित्यः सूर्यो रविः, ब्रह्मा स्वर्गभूः, विष्णुः शौरिः, रुद्रः शंभुः । विष्णोरनुचराः-वण्डः प्रवण्डः, जयो विजयः, विध्वक्सेनः । रुद्रानुचराः-नन्दी महाकालो भृङ्गी, गणाः प्रयमाः । एवं सर्वत्र । अमुगः पूर्वदेवा देव्या दानवाः, तद्विशेषाः-विरोधुनो बलिर्भमुचिः प्रहादः । प्राङ् ननुनकापिहारार्जुलिङ्गापिहारः । एते सभेदाः सपर्यायाः पुंसि । स्वर्गो नाकत्रिदिनः । यागः कतुः सप्ततनुः, तद्विशेषाः-अग्निष्टोम उक्थो-तिरात्रः-असोर्यामः । अद्रिः पर्वतः शैलः, तद्विशेषाः-मेरुर्हेमवानुर्हेमवान् सश्रो विन्ध्यः पारियात्रः । मेघस्तद्वित्वान् घनः, तद्विशेषः पुष्करावर्तकः । अद्विः समुद्र उदन्वान्, तद्विशेषः क्षीरोदः । हुस्तवः पादपः, तद्विशेषाः-आम्रस्तालयम्पकः । कालः समयः, तद्विशेषाः-क्षणो लग्नः, मुहूर्तः, मासवैत्रः, संवत्सरः । असिः कर्वालः, तद्विशेषाः-नन्दकश्चन्द्रहासः । शरः सायकः पृथक्कः धुरपः । अरिर्हिं-मित्रः ॥ ११ ॥ करः पाणिर्दन्तः । गण्डः कपोलः । ओष्ठो दन्तच्छदोपरः । दोर्बाहुः । दन्तो रदनः । कण्ठो गलः । केशो बालश्चिह्नः । नखः करहः । स्तनः पयोधरः । कृतसमाप्तान्ताहःशब्दोत्तरपदाः पुंसि, रात्राद्वाहाःपुंसि ( सू० ) इति-पूर्वाह्नः, मध्याह्नः, सायाह्नः । द्वपदः, त्र्यहः, उत्तमाहः, परमाहः, रात्राहःसखिभ्यश्च ( सू० ), अद्वाहएतेभ्यः ( सू० ) इत्यद्वादेशः । विषविशेषाः पुंसि-क्षेत्रो गरलः कालकूटो हलाहलः । पुंसि क्षेत्रे च प्राणुकन्तापुंसि प्रचुरप्रयोगार्थं त्रिभिः । एवं सर्वत्र । विषं तु क्षेत्रे । असंख्यपूर्वाः कृतसमाप्तान्ता रात्रान्ताः पुंसि-अहोरात्रः, दीर्घरात्रः, वर्षारात्रः, अहःसर्वैकदेशसंख्यात-पुष्पाचरात्रैः ( सू० ) इत्यच्, नेह-त्रिरात्रं, षड्रात्रम् ॥ १२ ॥ श्रीवैष्टः सर्जरसः कर्चुरः । निर्गोषो वृक्षप्रवः । असन्ता अत्रन्ताश्चावाधिता अनरोदि [ हि ] ताः पुंसि-पुरोधाः, उशना, मज्जा, सीहा । अवाधिता इति किं-इदं यादो जलचरः, इदं लोम, इदं साम । चक्रमगिमुत्तन्नतभियरात्रादो वरगते । कशेरुदीनि वर्जयित्वा तन्वता रुश्वदान्ताश्च पुंसि-अयं वास्तुष्टुदाधारः, मस्तुः, मस्तुः, य तु । शायो न्ययस्तः, तस्यः सङ्गादिमुष्टिः, मरुर्नशा, ऊरुः सखि । नेह-इदं कशेरु जलजः कन्दः, य तु लाक्षा,

तत्त्वन्वे येनिकत्पत्रा वैरमैथुनिकाविबुन् । -

स्त्रीभावादावनिक्तिण्णुलणच्णुवृक्चव्युजिज्रु( इनि )शाः ॥५॥

उणाविषु निरुदीश्च ड-यावृडन्तं चलं स्थिरम् ।

तत्कीडायां प्रहरणं चन्मौष्टा पाह्वा णविक्र ॥ ५ ॥

घञां जः सा क्रियास्यां चंद् दाण्डपाता हि फाल्गुनी ।

इयैनपाता च मृगया तैलपाता स्वधेति विक्र ॥ ६ ॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्याकिर्विवक्षापचये यदि ।

लङ्का शफालिका टीका धातकी पात्रिकाटकी ॥ ७ ॥

सिधका श( सा )रिका हिक्का प्राचिकालका पिपीलिका ।

तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमादयः ॥ ८ ॥

द्वित्रितिकां ददति । उपलक्षणत्वाद् वृषन्तोपि, द्वन्द्वमनोव्यादिभ्यश्च ( मू० ) इति वृष्- शौषोपाध्या-  
यिका । गोत्रवरणाच्छुपादोबुन् ( मू० )- गार्ग्यस्य भावः कर्म चेति गार्गिकया श्लाघते, काठिकया  
श्लाघते । त्रियामिन्धुभिरुभ्य भावे वा कर्तरि च कारके- अन्गदिप्रत्ययान्ताः त्रियाम्, आकौशेनञ्चनेः  
( मू० )- अत्रानस्ते वृषल भूयान्, अकरगिः । त्रियांक्तिन् ( मू० )- कृतिः, भक्तिः । रोगाह्वयार्थ-  
पुर्व्वहुन्म् ( मू० )- प्रवाहिका, विषादिहा । धात्वर्थनिर्देशेणुवृक्चन्तः ( वा० )- कारिका, जीवि-  
का । कर्मव्याप्तहारेणचत्रियाम् ( मू० )- अन्येभ्य व्यावक्रान्तेन व्यावक्राशी वर्तते, व्यावभाषी[ हासी ],  
णचःत्रियाम् ( मू० ) स्वार्थे । पर्यायाहणेः पतिपुत्रुन् ( मू० )- भवतः शायिका, इशुभाक्षिकेत्यत्र ।  
व्रजययोर्भावेक्यप् ( मू० )- व्रज्या, इज्या । संज्ञायांसमञ्जति ( मू० ) कान्- समञ्या, निषया । हनस्तच  
( मू० ) इति क्यप्- ब्रह्महत्या । ण्यासधन्थोयुच् ( मू० )- मण्डना, आसना । प्रश्नाह्वयानयोरिच  
( चान्द्रमू० )- कां कारिमद्योः, इमां कारिमहाषन् । पिद्भिदादिभ्योह् ( मू० )- घटा, मृजा, भिदा ।  
अप्रत्ययात् ( मू० )- चिकोर्षा, पुत्र्या । कृजःत्तच ( मू० )- क्रिया, इच्छा ॥ ४ ॥ उणादौ न्यन्त  
ऊदन्त ईदन्तश्च त्रिया- अरगिः, धमानिः, हानिः, ज्यानिः, रलानिः, अलावूः, जम्बूः, लक्ष्मीः, तन्त्रीः ।  
हयन्तमावन्तमूदन्तं चाभिधेयलिङ्गं रुदलिङ्गं च त्रिया- पुंस् इयं पौष्ठां बुद्धिः, हिमानी, अजा, बलाका,  
श्वधूः, ब्रह्मघ्नधूः । मुष्टिः प्रहरणं यस्यां किडायां मौष्टा, पल्लवाः प्रहरणमस्यां पाह्वा, तदस्यां प्रहरण-  
मितिकीडायाणः ( मू० ), णदिक्र- णल्लयोदाहरणमित्यर्थः ॥ ५ ॥ दण्डपातोस्यां फाल्गुन्यां वर्तते । श्येनपा-  
तोस्यां मृगयायां वर्तते, तिरुपातोस्यां स्वधायां वर्तते, घनःसास्यांक्रियेति ( मू० ) घः, श्येनतिल्लोः  
पातेये ( मू० ) इति मुक्, स्वधास्त्वस्यां स्वधा धादम् ॥ ६ ॥ अपचयेपचयस्यानलक्षणाणि हि स्त्रीपुंनपुंसकानि । आदिच-  
न्दाग्रणाली, तटी, मटी, लत्रिका, गृधकाण्डो । काचिदिति बत्र लोके पुंनपुंसकयोः स्त्रीत्वं दृश्यते, न  
सुज्ञादौ । लङ्का राक्षसपुरी । शफालिका पुष्पविशेषः । टीका वृत्तिः । धातकी नामौषधिः । पात्रिका  
न्यासः । आडकी मंहिभेदः, स्वत्याडकं च ॥ ७ ॥ सिधकाशारिकं वृद्धभेदौ । हिक्का- ऊर्ध्वं वातप्रवृत्तौ  
शस्त्रः । प्राचिका पाक्षिविशेषः । उल्का ज्वाला । पिपीलिका बल्लोक्तकृमिः । योत्राप्रसिद्धः प्रागनुक्तो वा  
स प्रातिपद्येभ्यते, अतः शनैर्यातं पिपीलिक इति पुंस्त्वमनिर्वाद्यम् । एवं सर्वत्र । तिन्दुकी नाम वृक्षः  
फलं च । कणिका- अल्पकणः- गोधूमपिष्टं च । भङ्गिर्गोच्छिन्तः । सुरङ्गा तियंभूखातः । सूचिः  
सीबनी । माडिनीम देशः कवनं च ॥ ८ ॥ पिच्छा-आचामः । पितृगडा स्वाक्षरमापन्( नो ) होनो जल्पः ।

सलिङ्गशास्त्रैः सञ्चादिकृतद्वितसमासजैः ।

अनुक्तैः संमहे लिङ्गं संकीर्णवदिदोषयेत् ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

स्त्रियामीकृष्टिरामैकाश्च सयोनिप्राणिनाम् च ॥ २ ॥

नाम विद्युत्तिशावल्लीवीणादिगमूनकीकृत्याम् ।

अवन्तीद्विगुरेकार्यो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

इह लिङ्गसंग्रहणं बह्यमाणलिङ्गानुशासनसाहितेः सुब्धातुवृत्तादिजातेः ( सन्धेः ) प्रागनुक्तै-  
लिङ्गमुपदेहेत । लक्षणं तत्त्वतो ज्ञानार्थं समाध्यादानम् । लिङ्गशास्त्रेण यथा- स्त्रियामीकृष्टिरामै-  
कान् । सुब्धातुवृत्तिजैर्बन्धा- अप्रभात् ( सू० ) । पञ्चसन्ध्यायुक् ( सू० ) । कृद्भूतिजैर्बन्धा- स्त्रियांकिन्  
( सू० ) । पुंसिस्तम्बाबाधःप्रयोगे ( सू० ) । नपुंसकेमावेकः ( सू० ) । गोबलीवर्द्धन्यायेनात्र सुब्धातुवृ-  
त्तिजैर्कृद्भूतिरुदाहाया । तद्वितवृत्तिजैर्बन्धा- तत्कोदायां ग्रहणं चेन्मोशादि । समासवृत्तिजैर्बन्धा-  
अवन्तीद्विगुरेकार्य इत्यादि । कथमुपदेष्टव्याह- प्रागुक्तसंकीर्णवर्गवत्, बचनमात्रेणेत्यर्थः । उक्तं च पाह-  
यकृतिप्रत्ययबाधैः संकीर्णे लिङ्गमुपयेत् ( पू० १८१ ) । प्रकृत्या यथा- अर्धचाःपुंसिच ( सू० ) ।  
प्रत्ययेन यथा- स्त्रियांकिन् ( सू० ) । अर्धद्वारेण च यथा- मानृस्वसादीनाम् । आद्यसन्ध्यादिस्त्रियाविशे-  
षणानां कर्मत्वं नपुंसकलिङ्गता च वक्तव्यंति । तथा- अर्धस्य निरयसमासवचनं सर्वलिङ्गता चेत्यादि  
॥ १ ॥ अयं लिङ्गानां प्रागुक्तानां शेषविधिसंज्ञो वर्ग उस्सर्गत्वाद् व्यापको भवत्यस्मादेर्यद्यबाधितः  
स्यत् । यथा- असमन्ता अबाधिताः पुंसि, तथा त्रान्तं सलोपं शिष्टमिंत, यथा- चन्द्रमाः, पुस्तकाः,  
सविमा प्रसवः, मरिमा कल्पः । अत्रागवादः- ह्यस्कमसिषुसमन्तं तृतीये- इदं वचः, तेजः, नाम,  
धाम । ईदन्तमूदन्तं चैकस्वरं खलिङ्गं भवति- इयं स्त्री, धीः, धीः, स्त्री, धूः, भूः, सू, इः, खः ।  
पुंसिङ्गात्पाह् स्त्रियामित्यधिकारोक्तम् । स्त्रीष्वन्युक्तानां प्राणिनां संज्ञा च स्त्रियाम्, यथा- इयं माता,  
स्वसा, प्रसूः, योषित्, इयं गौः सुरभिः, इयं कपिर्धानरी, इयमर्धुर्गङ्गा, इयं करेणुर्हेस्तिनी । दारादौ  
तु स्त्रीष्वं पुंमूभिः दाराः ( पू० १२ ) इत्याद्यपवादःह्याच्यते । एवं सर्वत्रोपेयम् ॥ २ ॥ एषां नामपर्यायाः  
स्त्रियाम्- इयं विद्युत्तद्विदग्निः, इयं निष्ठा रात्रिः, इयं बह्वी वीरुत्, इयं वीणा परिवादनी, इयं दिह  
कङ्कः, इयं भूः कुः, इयं नदी सरित्, इयं ह्रीर्लेज्जा । अकारान्तेः शब्दैः सदैकार्यः समाहारो यो द्विगुः  
स स्त्रियां, यद्यिष्टिः- अकारान्तोत्तरपदोद्विगुःस्त्रियांमाध्यते, ( यथा ) प्रजाणां कोकानां समाहारोहि-  
कोकी, पयमूलीशृतं पयः । स द्विगुः पात्रायुत्तरपदेरदन्तेर्न स्त्रियां, पात्रादिभ्यः प्रतिषेध इति ( पात्रा-  
यन्तस्यन ), अतः स नपुंसकमिति स्त्रीये- पञ्चपत्रं, चतुर्गुणं, त्रिभुवनं, त्रिपुरं, भाष्ये तु त्रिपुरी ॥३॥  
तत्प्रत्ययान्ताः स्त्रियां, तद्विद्यावस्त्वतलो ( सू० )- गोमोवो गोता, अभता । प्रामजनबन्धुसहःवेध-  
स्तत् ( सू० )- प्रामाणां समूहो प्रामता, जनना । देवास्तत् ( सू० )- देव एव देवता । समूहे नादि-  
प्रत्ययान्ताः स्त्रियां, पाशादेर्यत् ( वः ) ( पाशादिभ्योवः )- पाशानां समूहः पश्चा । सलमोर्षात् ( सू० )  
यत् ( वः ), इनिप्रकृत्यच ( सू० )- अकारयत् ( वः )- खलिनी, गोत्रा, रथकृत्या । वैरम्यर्धे  
बुधन्तः स्त्रियां ( इन्द्रादुन्वैरमैधुनिकयोः )- अश्वमहिषयोर्वैरमधमहिषिका, काकोल्केष । अतिभरद्वा-  
जयोर्मैधुनप्रयोजने विवाहे वैरमप्रिभरद्वाजिका, बसिष्ठकशिका । आदिशब्दात् पादशतस्यसंख्यादेर्षास्वावां  
सुन्नेपथ ( सू० ), दण्डयवसर्गयोष ( सू० )- द्वौ द्वौ पादौ द्विपदिर्न ददाति, द्वे द्वे शते दण्डयो

अल्पे नीचैर्महत्पुद्गैः प्रायो भूम्न्यमुते शनैः ।  
 सना नित्ये बहिर्षांश्च स्मातीतिस्तमवर्शने ॥ १८ ॥  
 अस्ति सत्त्वे रुषोक्तायुं ( बु ) ऊं प्रभ्रेनुनये त्वयि ।  
 तर्के स्यात् ( हुं तर्के ) स्यादुपा रात्रेरवसाने नमो नतो ॥ १९ ॥  
 पुनरर्थेन निन्वाया इषु सुषु प्रशंसन ।  
 सायं साये प्रो प्रातः प्रभाते निरुषान्तिके ॥ २० ॥  
 परुत्परार्थेषमोञ्चे पूर्वे पूर्वतरं यति ।  
 अद्यावद्वाच्यं पूर्वोत्तीत्यादी पूर्वोत्तरापरात् ॥ २१ ॥  
 तथाधराभ्यामन्यतरैतरात्पूर्वोत्तरावयः ।  
 उभययुद्धोभयेषु परे त्वद्धि परंघवि ॥ २२ ॥  
 ह्यो गतेनागतेहि श्वः परःश्वस्तु परेहानि ।  
 तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २३ ॥  
 एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ।  
 विवेकशकाले पूर्वादी प्रागुक्त्वाप्रत्यगावयः ॥ २४ ॥

इत्यन्यवर्गः । ४ ।

शनैः शनैर्भुपरमेत् । सनातनः । सनत्सनाच्च- सनत्कुमारः, सनात्कुमारश्च । बहिर्भूतः । बहिः श्व  
 व्यासः, अर्धोचदित्यर्थः । अस्तं गतः ॥ १८ ॥ अस्तिहीरा ह्री, अस्ति परलोके मतिरस्यास्तिकः ।  
 कोपनोक्तो- उं सेवास्मि तव प्रिया । रुषेत्वेव- ऊं न जानासि स्वार्थम् । अप्ययि साहसकारिणि । स्याद्वादिने  
 जैनाः । उषातनो वायुः । नमो देवेभ्यः ॥ १९ ॥ अमानुगुण्ये स्मरणे हुं फट् विघ्ननिराकृतौ । अङ्गी-  
 कृतौ स्यादर्थे हुं ह्रीर्नर्तनोपशने त्वरे ॥ मूर्खोऽपि नावमन्तम्यः विमर्श विद्वान् । दुष्टवादी कृतः । सुषुप्तिम् ।  
 सीयते ह्यस्तं सायो निशामुखं, घम्- सायंतनो वायुः, सायम.सानः संच्या बन्देत । प्रगेतनो वायुः ।  
 प्रातः संच्यामुपासीत । मित्रं निरुषास्ते ॥ २० ॥ पूर्वे वषे परतः । पूर्वतरे वषे परारि । वति गच्छति  
 वतमाने वषे- ऐषमः, सद्यःपरुत्परार्थेषमहति ( सू० ) साधवः । एवमप्रियाः । अस्मिन्महत्त्वेषु, क्त-  
 मानताम्नाप्रेष्याहुः- बगे लोकेषु दुर्लभः ( बलः ), तदद्यत्वेन तथा । पूर्वेहि पूर्वेषुः । आदिष्वन्वापुस्तेषुः  
 अपरेषुः, अपरेषुः, अन्येषुः, अन्यतरेषुः, इतरेषुः । शुद्धिनमिति श्रीभोजः, यथा- सुषुप्तौ कंठे  
 कथम् ॥ २१ ॥ उभयोरङ्गो- उभयेषुः, उभययुः, युद्धोभयाद्वक्तव्यः ( वा० ) । स्मार्ते पक्षिभ्यं  
 रात्रिरुदितः । तं हन्तास्मि परेषुभिः ॥ २२ ॥ अतीतेहि श्वः- शोकोत्तः । आनागतोहि श्वः- श्वो यन्ता ।  
 श्वोदिनात्परमहः परःश्वः, पारस्करादित्वात् ( सू० ) परःसहस्रादिवत्सुदः । तस्मिन्काले तदा, तदोदाचोति  
 ( सू० ) तदा, तदानीं च । एतौ तुल्यकालार्थौ । युगपत्प्राप्ताः । एकस्मिन्काले- एकदा भिन्नन्ति ।  
 एकपदे च- अयमेकपदे तदा वियोगः ( विक्रमोर्वशी० ) । सर्वस्मिन्कालेभ्यः सर्वैकान्वर्द्धितपदःकावेद्य  
 ( सू० ), सर्वस्यसोऽन्यतरस्यादि ( सू० ) ॥ २३ ॥ अस्मिन्कालेभ्यः, इदानींहिल् ( सू० ), एतेतोरयोः  
 ( सू० ) इत्येतादृशः, ( एतर्हि )- अवन्तमेतर्हि मनश्चिदाहते विषयमानं नरद्वन्द्वमेतन् ( रघु० )  
 अधुना, इदानीं च । संप्रत्येव सांप्रतं, स्वार्थेऽङ्ग । प्राच्या दिशि प्राचि देशे काले वा- प्रागवसति । प्राच्या  
 दिशः प्राचो देशात्कालाद्वा- प्रागागतः । प्राची दिक् प्राक् देशः कालो वा- प्रागव्यम् । दिक्शब्देभ्यः  
 वसमोपशमीप्रथमाभ्योदिदेशकालेभ्यस्ततिः ( सू० ), अवेलेहं ( सू० ) । आदिष्वन्वापुस्तेषाम् ।  
 एवं पूर्वोदिश्वः पुरस्तादपस्तादादि ॥ २४ ॥ इत्यन्यवर्गः । ४ ।



दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्धेयान्तरेन्तरा ।  
 अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु ह्यार्थकम् ॥ ११ ॥  
 युक्ते द्वे सांप्रतं स्थानेभीक्ष्णं शश्वद्वनारते ।  
 अभावे नश्य नो नापि मास्म मालं च वारण्ये ॥ १२ ॥  
 पक्षान्तरे चेद्यदि च तत्त्वं त्वद्वात्रसा द्वयम् ।  
 प्रकाशे प्रादुराविः स्याद्वामेवं परमं मते ॥ १३ ॥  
 समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।  
 अकामानुमतौ काममसूयः पगमेस्तु च ॥ १४ ॥  
 ननुच स्याद्विरोधात्तौ कश्चित्कामभवेदने ।  
 निष्पमं दुष्पमं गह्यं यथाःस्वं तु यथायथम् ॥ १५ ॥  
 मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ।  
 स्युरेवं तु पुनर्वैवेत्यश्वधारणवाचकाः ॥ १६ ॥  
 प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निधये द्वयम् ।  
 संवद्वर्षेऽत्रे त्वर्गागामेवं स्वशमात्मना ॥ १७ ॥

दिष्ट्या पुत्रो जातः । समुपजोषं वर्तते । आवशोरन्तरे जाताः पर्वताः सरितो दुमाः ( महानाट० ) ।  
 अन्तरा त्वां च मां च कम्पण्डलः । यतो भवन्तमन्तरेणान्यथा भूमिर्प्राद्वितः, भवन्मध्यमेत्यर्थः । प्रसह्य  
 विसानि हरन्ति शीराः ॥ ११ ॥ न सांप्रतं यतः स्त्री नेत्रां । हन्त स्याने प्रभ्रः । अभीक्ष्णं बक्ति । शश्व-  
 याति, आवेरतमित्यर्थः । नहि प्रेम प्रयोजनापेक्षम् । अविप्र इव भाषसे, विप्रवन्न मूष इत्यर्थः । नो  
 जानामः । नेकः सुनेषु जाययात् । मास्म करोः । मा कार्षाः । अलं बाले रोदनेन ॥ १२ ॥ सन्तवेद-  
 मृतेन किम् । यदि खलास्तत्कालकृतं मृषा । अरे अद्वा पुरुषः । अजसा वक्ति साधुः । प्रादुरासीत् ।  
 आविर्भूतः । मतमभ्युपगमः— ओं कुह, एवं कुह, परमं तत्रावसम् । एवं बाडमित्यादि च ॥ १३ ॥  
 एते सर्वतोदिक्षार्थे— समन्ततो धावति, परितः प्रपतन्ति दुष्कृतां ( तो ) विपदः, सर्वतः संपदः सताम् ।  
 विष्वगवाति विष्वद्यङ् । इतिशब्दात्समन्तादित्यादि— समन्ताद्भवः सामन्तः । आदावानिच्छावां पश्चाद-  
 ङ्गीकारे— कामं करोमि । अस्तुशब्दोऽसूयापूर्वेऽङ्गीकारे— अस्तुकारः, एवमस्तु को दोषः । चशब्दाद्भवतु  
 नाम ॥ १४ ॥ ननुच कः शब्दः । कामप्रवेदनमिष्टपरिग्रहः— कश्चिज्जीवति मे माता । निष्कान्ताः  
 समा दुष्टाः समा वसरा अत्रेति, तिष्ठद्गुप्रभृतीनिच ( सू० ) इत्यव्ययीभावादव्ययत्वम्, गह्यमात्रे  
 त्वचारात्, समेन समासो वा— निःशमं बक्ति मूर्खः, कालानुचितमित्यर्थः । एवं दुःशमं वर्तते । सर्वेषां  
 तु यथायथम्, यथास्वी [ त्वी ] यमित्यर्थः, यथास्वेवयावयमिति ( सू० ) साधुः ॥ १५ ॥ मृषोषम्  
 ( उ० रा० ) । मिथ्यावादी । तथेति सत्यमनतिक्रम्य— यथातथं वक्ति सभाषु विद्वान् । एवमेतत् ।  
 आत्मा सर्वं तु पश्यति । विप्रः पुनः पूज्यः । गुरुर्वा बक्ति भीष्मो वा । त्वमेव देव सर्वं जानासि ॥ १६ ॥  
 प्राक् कृतम् । नूनं हन्तास्मि रावणम् । अवश्यं वातारधिरतरमुपित्वापि विषयाः ( भर्तृहरि० ) । संवत्सराः,  
 संवत्तृतीये । अवरः पारादव्यः— वर्षापोऽवशादवाक्, अवाक्कालीनः । अङ्गीकारार्थे— आं कुर्मः, एवं  
 कुर्मः । स्वयंभूः, आत्मनेति तृतीयान्तार्थे ॥ १७ ॥ नोचैमेकद्व्यति । उच्येमेकद्व्यतिं विरम् । सन्तः  
 प्रायो विवेक्तारः, भूम्नि बाहुल्यार्थे । अशीघ्रार्थे— शानेयाति पिशिलिका । क्रमेपि ( शानेः ) अनुतापान्वायात्—

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने ।  
 यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्यं तु चिञ्चन ॥ ३ ॥  
 कदाचिज्जातु सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।  
 आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥  
 आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमुत च ।  
 तु हि च स्म ह वै पावपूरणे पूजने स्वाति ॥ ५ ॥  
 विवाहीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ॥ ६ ॥  
 तिर्यगर्थे साचि तिरोप्यथ संवाधनार्थकाः ।  
 स्युः प्याद् पाडङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ॥ ७ ॥  
 अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ८ ॥  
 स्वाहा देवहविर्दानि श्रौषद् वौषद् वषद् स्वधा ।  
 किञ्चिदीपन्मनागल्पं प्रत्यामुत्र भवान्तरं ॥ ९ ॥  
 वद्वा ( वा ) यथा तथैवं साम्यहो हीति विस्मये ।  
 मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ १० ॥

गिरमुदारां येन मूकाः पिकाः स्युः, नदी तेन गतः, गमने नदी हेतुः । द्वितीयो लक्षणे- येन दाता  
 [ बोधा ] तेन श्लाघ्यः । ( उने ) किञ्चिद् मूते । पद्भ्यां याति कुतश्चन । प्रयः किञ्चित्तात्पर्यं, कचित्-  
 कुत्रचित्- कथंचित् ॥ ३ ॥ अन्योन्यपर्यायावेतौ- कदाचिच्छ्रुतां याति मरणे कृतनिश्चयः, न जातु कामः  
 कामानामुपभोगेन घाम्यति ( मनुः ) । सार्धं धनमहान् । पुत्रेण साकं याति । रुत्रा कलत्रैर्गोहैस्त्वम् ।  
 आत्रा समं युज्यते । पुत्रैः सहास्ते । सङ्गो द्वित्रिद्वेः सज्जति सज्जगतिप्रतिरूपको निपातः । प्राध्वं  
 कुण्डलं मुधाः, प्राध्वं बन्धने ( सू० ) इति गतिसंज्ञा- प्राध्वंकृत्य । श्वा दुग्धोनङ्वान् । मुग्धे मुग्धः  
 ताम्यसि ॥ ४ ॥ विकल्पः पक्षान्तरं- स्यात्प्राहो पुरुषः, उताहोस्त्रिद् भवेद्वाजा नलः परपुरंजयः,  
 किमुत रज्जुः किमुत सर्पः [ किं रज्जुः किं सर्पः ], किमु खदयेति कुमु मानयेत्, एकमेव वरं पुंसांमुत  
 राज्यमुताश्रमः । आहयामि तु तस्मै ते । न हि न हि मदिमानं प्राप्य तुष्यन्ति भूयाः । भीमः पार्थस्तथैव  
 च । इति ह स्मादुराचार्याः । यो वै युवाप्यधीयानः । खल्लादयेति- अहो न ( तु ) खलु भोः । पूजने-  
 द्युस्तुतं, अतिस्तुतम् ॥ ५ ॥ दिवातनं, इतिशब्देन सतस्यन्ते दिनार्थेयमिति योत्यते । अभेप्येवम् । दोषा-  
 मन्यमहः । नक्तं वरः । तथा- उषापि- उषातनो वायुः ॥ ६ ॥ साचि लोचनयुगं नमयन्ती । तिरः  
 काष्ठं कुह । प्याद् पाठकाः । पाट् पान्याः । अङ्गानङ्ग, इष्टादाने चेतत् । हे चैत्र । हे वातूल । भो  
 आर्गव । हंहो, अररे, अयि- हंहो काम, रे चोर, अरं चेट, अयि प्रिये । एते सर्वपार्थेन्यान्यं पर्यायाः-  
 समया ग्रामं, लङ्कां निकषा हनिष्यति ( शिशु० ) । सभ्यान् हिरुक् ॥ ७ ॥ सहसा विदधीत न किशाम्  
 ( किरातार्जु० ) । अपरायौ एते- पुरःसरः । नासीरधूलिश्चत्रलाः पुरतः प्रयान्ति । अप्रतो धावति श्रीः ॥ ८ ॥  
 सोमाय स्वाहा । अस्तु श्रौषद् । मीही वौषद् । वषाड्वाय । पितृभ्यः स्वधा । किञ्चेत्कुञ्चनमूर्ध्वजाः । ईशस्तेभ्यः ।  
 मूतं मनाक्समार्दवम् । अन्यो धनं प्रेत्य गतस्य भुङ्क्ते । अमुत्र भविता यते तत्त्वचिन्तयं शुनाशुभम् ॥ ९ ॥  
 पचतीति [ खवन्ती ] ॥ १० ॥ पयि गो [ नी ] वान्यरूपां [ पा ] ( मेघ० ) । यथा चैत्रस्तथा मेघः । शारदा-  
 भ्रमिव पलवमायुः । यथाकं एवं कणः । अहो आश्चर्यम् । हतविधिलि ( सि ) तानां ही विवित्रो  
 विपाठः ( शिशु० ) । मुनिस्तूष्णीमास्ते । अकृत्पङ्कणे तूष्णीमः काश्चकथ्यः ( वा० ) इत्यज्ञाताद्यर्थे  
 विशिष्टे मौने तूष्णीकां, मौनमात्रे तूष्णीम् । सद्यः पतात माधेन । सपदि प्रदहत्युपेक्षितामिः ॥ १० ॥



निवेधवाक्यालंकारजिह्वासानुनये सलुः ।  
 समीपोमयतःशीघ्रसाकल्याभिमुखेभितः ॥ २५६ ॥  
 नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोन्योन्यं रहस्यपि ।  
 तिरोन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्त्सिषु ॥ २५७ ॥  
 अहहेत्यश्रुते खेदे हि हेताववधारणे ॥ २५८ ॥

इति नानार्थवर्गः । ३ ।

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याधिरार्थकाः ।  
 मुषुः पुनः पुनः शम्भुमीक्षणमसकृत्समाः ॥ १ ॥  
 स्वाग्निगित्यत्रसाहाय सपदि द्राक् मद्भु, च [दुते ।  
 बल्यस्तुषु किमुत स्वत्यतीव च निर्मरे ॥ २ ॥

अन्वाहः । जिह्वासायां- स खल्वशीते केदम् । अनुनये- न खलु न खलु मुषे साहसं कार्यमेतत्  
 ( नामानन्द० ) । अभितो प्र मे वसति, समीप उभयत्र वेत्यर्थः । शीघ्रे- गच्छाभितः । साकल्ये-  
 व्यापनाल्यभिन्ने रजः, समन्तरि यर्थः । आभुः- आपन्नमभितोरिमपश्यत् ॥ २५६ ॥ नाभि-  
 विष्णोर्दंश प्रादुर्भावाः, मत्स्यकूर्मादीनि दश नामानीत्यर्थः । प्रकाश्ये- प्रादुरासीत् । न्योन्यार्थे- मिथः  
 प्रहरतः । रहसि- मिथो मन्त्रयते । अन्तर्धौ- तिरोहितः । परिभूतेन्तर्धुपचारत्- तिरस्कृतोरिः ।  
 तिर्यगर्थे- तिरः काष्ठं कुह । विषादे- हा रम्मीनां [ यो ] गतः कालः । खेदे- हा श्रिये बलकराजपुत्रि  
 ( उ० रा० ) । अस्तौ- हा हतोऽस्मि । निन्दयां च- हा भ्रात्रियान् ॥ २५७ ॥ अश्रुमुते- अहह प्रहा-  
 प्रकथं राहः । खेदे- अहह इता विरहिणी बाला । दीर्घान्तोपि- भिक्षित्वापि कुमुदिता अपहृष्टा । हेतो-  
 आभिरत्र भूतो हि दृश्यते । अवधारणे- का हि हस्तगतं पादगतं कुर्यात् ॥ २५८ ॥ इत्यन्वयेष्वेकैक-  
 र्थ्यः । इति नानार्थवर्गः । ३ ।

चिराय निर्धनो भूत्वा भवत्यहः ( दा ) महाधनः । चिररात्राय जायते [ यजते ] । चिरस्य भूतके  
 चावति । आयसन्वाधेरेण चिराचिरमपि- चिरजंवी, चिरंतनः । कानं [ न्ता ] मुमुष्यावति । पुनः  
 पुनर्वारि पिबेद्भुषि । राश्वद्रुक् कुशिक्षितः । अर्भक्षमास्कात्पत्नीभङ्गम् । असकृद्रुक् ॥ १ ॥  
 साकसरल्यमिसारिका । शगिति कुचतटादेनमो मन्मथाय ( विदसाद्य० ) । यन्त्राजसा जयति मन्त्रलोके ॥  
 अह्वाय सा निबमर्चं ह्रममुत्सवर्चं ( कु० सं० ) । सपदि प्रदहशुगेक्षिनोमिः । श्रितिकुतं कतरेः ।  
 मद्भुदपाति परितः पटलेरलीनाम् ( सिधु० ) । मन्त्रिणां तरसादि च- सटिति चटयति विधिरभिमत-  
 मभिमुखीभूतः ( रत्नावली० ), आश्रयेहि मम सीपुभात्रनात्, तरसोदिता सह जलेषु । तर्गं दुतं क्षिप्रं  
 शीघ्रं सपदि किवाविशेषणम् । बलवात्प्रासितांस्मि । मुषु खल्विदमुच्यते । किमुत मयाविधिभिः ।  
 मुसिक आमः फलति, अतिसिक्च । अतीव क्षु र्मगावि ( सार्दि ) तः ॥ २ ॥ ह्रगदेवदत्तादर्थं [ स्वतः  
 वृषह नास्ति वन्दुः ] । विना प्रार्थं वृषे देवः [ विना वातं विज्ज वर्यम् ] । अन्तरेण पुरुषकारं न  
 किञ्चित्स्थितिः । ऋते कृत्तानोर्दे हि मन्त्रपूतम् ( कु० सं० ) । दिक् कर्मणं [ यो ] मोक्षः, कर्मखर्चे [ यो ]  
 मोक्ष इत्यर्थः । नाना नारीर्निष्कल्य ओकृतात् । अन्तरान्यत्रापि- स्वामन्तरा तामरसावताहि, अ( आ )-  
 रोगिभावः दन्वत् । बलभाषु प्रगल्भये तत्पुण्योसि । यतो विद्वांस्ततो मान्यः । येन तेनादि च- पितर

गर्हासमुद्यमप्रमशङ्कासंभावनास्वपि ।

उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्थे जुगुप्सिते ॥ २५० ॥

अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्ध्नि च ।

इत्थमर्थयोरैवं नूनं तर्क्यनिश्चये ॥ २५१ ॥

तूष्णीमर्थे सुखे जायं किं पृच्छायां जुगुप्सते ।

नाम प्राकाश्यसंभाष्यक्रोधापगमकुत्सने ॥ २५२ ॥

अलं मूषणपर्याप्तिशक्तिवारणयाचकम् ।

हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥

पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ।

स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटगामिके पुरा ॥ २५४ ॥

ऊर्यूरी चोररी च विस्तारङ्गीकृतौ त्रयम् ।

स्वर्गे परे च लोके स्वर्वातासंभाष्ययोः किल ॥ २५५ ॥

बहो वा । अर्थे- सामि संमीकितः । जुगुप्सिते- सामि कृतमकृतं स्यात् ॥ २५० ॥ सहार्थे- पुत्रे-  
न्यामा भुङ्क्ते । समीपे- अमा मयोमात्स्यः । अले- कंठं पथम् । मूर्ध्नि- कंठाः केशाः । निन्दासुखयोश्च-  
कंठ्यः, कंठ्युः । इत्थे- अमिरेवं विप्रः । इत्थमर्थे- एवंवादिनि देवर्षौ ( कु० सं० ) । उपदेशाश्च-  
एवं पठ । निर्देशे- एवं तावत् । निश्चये- एवंमेव । अङ्गीकारे- एवं कुर्मः । तर्के- नूनं शरत्कुल हि  
काष्ठाः । अर्थनिश्चये- नूनं इत्यादि रावणम् ॥ २५१ ॥ तूष्णीमर्थे- जोषमास्त्र । सुखे- जोषमास्ते  
मित्तिवः । वस्त्रे- किं गतोसि । जुगुप्सने- किंराज । यो न रक्षति, किमिदमे ( सू० ) इति समासान्ता-  
भावः । प्राकाश्ये- दिवाद्यस्य नाम नगाधिपतिः ( कु० सं० ) । संभाष्ये- कथं नाम द्योतयति । स्मृतिः-  
संभाष्ये- स नामासं वन्धुः । क्रोधे- मयापि नाम इवान्तस्य परेः परिमथः । उपगमः- सासुबोङ्गी-  
कारः- एवमुक्तु नाम । कुत्सने- को नामार्थं सार्धमुद्वहः । अलीकवित्तमययोश्च- दृष्टेऽपरे रोदिति नाम  
तन्वी, तन्वी नाम र्दितमयोदिति ॥ २५२ ॥ मूषणे- अलंकारः । पर्याप्तौ- अलमस्तस्य धनं, बहि-  
स्यर्थः । सप्तौ- अलं मत्तो मत्ताव । वारणे- अलमिति प्रवृत्त्येन । अलं तन्वीः प्रतिषेधयोः ( सू० ) इति  
निषेधेपि- आत्म्यात्मिदं बभ्रुर्वस्य शपणपाहरत् ( शिशु० ), न वक्ष्यमेतदित्यर्थः । वितर्के- चैत्रो हुं  
मैत्रो हुं । परिप्रश्ने- हुं स त्वं सुहृत् । मयादौ च- हुं राक्षसायम् । मर्त्सने- हुं निर्दिष्टः । अनिष्टाद्यं  
हुं हुं मुख । त्वां समयास्ते, त्वत्समीप इत्यर्थः । प्रायं समयास्ते, प्राममथ इत्यर्थः ॥ २५३ ॥ अपवधे-  
-कुलकम् । ( भेदे ) निषेधे- किं पुनर्मांशनाः पुष्पा मच्छा राजर्षयस्तथा ( भगवद्गीता ) । निश्चये-  
निष्पन्नः । निषेधे- निर्मोहः । प्रबन्धे- उपाध्यायेन स्म पुराणीयते, अधिरतमपाठीत्यर्थः । विपरीते  
-पुराणि न नवं पुराणम् । निकटगामिके- भविष्यदासने- गच्छ पुरा देशे वर्षति, यावत्पुराणिपाठबोध्यं  
( सू० ), समनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः ॥ २५४ ॥ उररीकृत्य पठं, विस्तीर्णित्यर्थः । आङ्गपुराणीकृत्य वाति,  
अङ्गीकृत्येत्यर्थः । स्वर्गे- एहि जावे स्वरातोहाव ( वाजसनेयीसंहिता ) । परलोके- स्वर्गस्तस्य अप्रमत्तः ।  
वार्तायां- जपान कंठं किल बाहुदेवः ( भाष्य० ) । संभाष्ये- अर्जुनः किल विज्ञेयते कुन्तः ।  
हेत्वादौ च- स किल कावेरेवमुक्तवान् ( बा० रा० ) । अलीके- गोदत्तवर्धनं किञ्चिद्भुतं इत्यर्थः ।  
अरन्वी- त्वं किल गोत्सवः ॥ २५५ ॥ निषेधे- सत्तु इत्यादि, निषिद्धं करणमित्यर्थः । वाक्याचकारे- अथो

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।

इति हेतुप्रकरणप्रकर्षादिसमाप्तिषु ॥ २४६ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे परार्थेयत इत्यपि ।

यावत्तावच्च साकल्येवधौ मानेवधारणे ॥ २४७ ॥

मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्येष्वथो अथ ।

वृथा निरर्थकाविध्योर्नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४८ ॥

नु पृच्छायां विकल्पे च पश्चात्सावृत्त्ययोरनु ।

प्रश्नावधारणानुष्ठानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४९ ॥

मन्पुरजुनतः [ नं ] प्रति । वीप्सायां- वृक्षं वृक्षं प्रति सिद्धति । लक्षणे- वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत् । आदि-  
शब्दादिः र्भूताख्यानादे- साधुयैत्रो मातरं प्रति । भागे- यद्वत् मां प्रति स्यात्सोशो दीयताम् । प्रति-  
दाने- मायायस्ते तिलेभ्यः प्रति प्रयच्छन्ति । हेतौ- हन्तीति पलायते । प्रकरणं प्रकारः- गौरभो  
हन्तीति जातिः ( भाष्य० ) । प्रकटै- इति पाणिनिः, पाणिनिशब्दः प्रकर्षोत्प्रेषिद इत्यर्थः । अत एव  
प्रकारा ( शा ) दीति पेटुः । आदिशब्दादेवमर्थे- कमादमुं नारद इत्यनेन सः ( शिशु० ) । मने-  
इत्यापिशक्तिः । विवक्षाभिधमे- तदस्यास्त्यस्मिन्निति मनुष्य ( पाणिनिमुत्रं ) । स्वरूपे- वृद्धिरित्येव वा  
वृद्धिः । समाप्तौ यथा- अ अ इति । प्रत्यक्षे सांनेधावधारणे च ॥ २४६ ॥ प्राच्यां- पुरस्तात्पूर्वं  
उदेति । प्रथमे- पुरस्ताद् भुङ्क्ते । पुरार्थेतीते- पुरस्ताद्गमोभूत् । अमर्तोर्थे- पुरस्तात्सेनानीयौषि ।  
अपिशब्दात्पूर्वदेक्षे काले च- पुरस्ताद् द्वारम्, पुरस्तात्कृतम् । साकल्ये यथा- यावत्साव तावत्कृतम्,  
साकल्यं कुर्वित्यर्थः । अवधौ- यावद् गन्ता तावतिष्ठ । माने- यावत्स तावद् मुष्म । अवधारणे-  
यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व ॥ २४७ ॥ मङ्गले- अथ परस्मैपदानि । अनन्तरे- स्नातोच भुङ्क्ते ।  
आरम्भे- अथ शब्दानुशासनम् । प्रश्ने- अथ शक्तोसि भोक्तुम् । कात्स्न्ये- अथ कर्तुं भूमः । अपि-  
कारेपि- अथ स्नानविधिः । प्रतिज्ञायां- गौडोभवानयेति भूमः । अन्वादेशेपि- अथो इमं वेदमभ्यास्य,  
अथो एनं छन्दोपि । समुच्चये द्वौ- अथो खल्वाहुः, भीमोयाजुनः । निरर्थके- वृथा दुग्धोन्द्धान् ।  
अविधौ- प्रातिमाभ्यं वृथा दानमाक्षिकं सौरिकं च यत् ( मनुः ) । अनेकार्थे- नानाविधा जनाः । उप-  
यार्थे- नानापक्षधर्मैः संशयः । विनार्येपि- नाना नारोर्निष्फला लोकयात्रा ॥ २४८ ॥ प्रदने- को नु  
धावति । विकल्पेपि- भीमो नु फासुनो नु योद्धा । वितर्के- अहिर्नु रज्जुर्नु । पथादर्थे- तमनु धावति ।  
सादृश्ये अनुकारः । लक्षणादौ च- वृक्षमनु योतते । तत्त्वख्याने- साधुयैत्रो मातरमनु । भागे- यद्वत्  
मामनु स्यात्ताद् दीयताम् । वीप्सायां- वृक्षं वृक्षमनु सिद्धति । दैर्घ्ये- अनुगह्यं वारणसी । प्रश्ने-  
नन्वधेयस्ये । अवधारणे- नन्वय गच्छामः । अनुज्ञायां- नन्वादिष । अनुनयामन्त्रणे- ननु वरिष्ठ  
प्रसौद मे । वाक्यारम्भादौ च- नन्वयोहः प्रस्तु ( सू ) प्रते । आक्षेपे- ननु किमयं मानतोषि । प्रत्युक्तौ-  
अकार्षीः कटं चैत्र, ननु करोमि भोः ॥ २४९ ॥ गह्रायां- अपि सिद्धेत्पलाण्डम् । समुच्चये- भीमोर्जु-  
नोपि । प्रदने- अपि यासि । इष्टप्रदनेपि- अपि कियार्थं सुलभं समिष्टकुम्भम् ( कु० सं० ) । शङ्कायां-  
अपि प्रसीदेत् । संभावनायां- पर्वतमपि शिरसा भिन्यात् । अपेक्षादौ च- अपि गृहीयां चे ( वे ) दम् ।  
पदार्थे- सर्पिषोपि स्यात्, मात्रा स्तोत्रं वा । उपमायां आशाविधौ वा संकुदः सूर्यो वात्र-  
विनिर्गतः । भीमोन्तको वा समरे गदापाणिर्दृश्यत ॥ विकल्पे- यदैर्वादिभिर्वा यजेत् । द्वे द्वे समुच्चयेत  
एव- सा वा शम्भोस्तदीया वा मूर्तेर्जलमयी मम ( कु० सं० ), न तृतीयेत्यर्थः, वायुर्वाय मेरुर्वाय

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ।  
 पापकुत्सेष्वर्थे कु भिद् निर्मलतामिन्द्रयोः ॥ २४१ ॥  
 चान्वाचयसमाहारेतरतस्समुच्चये ।  
 स्वस्त्याशीःक्षेमपुण्यादी प्रकर्षे सङ्घननेष्यति ॥ २४२ ॥  
 स्वित्रभे च वितर्के च तु स्याद्वेवधारणे ।  
 सकृत्सहेकवारं चापशराद् दूःसमीपयोः ॥ २४३ ॥  
 प्रतीच्यां चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः ।  
 पुनः सहाय्ययोः शब्दस्तादात्म्यक्षतुल्ययोः ॥ २४४ ॥  
 सेवानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे बत ।  
 हन्त हर्षेनुकम्पाया वाक्यारम्भविषादयोः ॥ २४५ ॥

किञ्चित् । वाक्यपूरणे पूर्वोक्तस्यान्यथासंस्थे, यथा- आ एवं तु मन्यसे, पूर्वं नैवममस्याः- अथ  
 तु मन्यस इत्यर्थः । निगातएकाजनाद् ( सू० ) इति प्रगृह्यत्वात्, प्लुःप्रगृह्याअचीति ( सू० ) प्रकृति-  
 भावः, यदाहुः- ईषदर्थे क्रियायोगे मर्कशाभिविधौ च वः । एवमर्तं किं विद्याद्वक्त्रयस्मरणयोरहित्  
 ( का० ) । समुच्चयेपिशब्दात्- देवेभ्यश्च पितृभ्य आ ( निरुक्त० ) । कोपे- आः रक्षस्तिष्ठी ।  
 पीडायां- विद्यामानरमः प्रदर्श्य नृपशत्रु मिसामहे निरुपाः ( उद्भट० ) । पापे यथा- पापो ब्रह्म  
 कुत्रापः । कुत्सायां- कुपुषः । ईषन्मधुरं कामधुरम् । निर्मलत्वे- भिद् ताकिंछन् । निन्दयां- भिद्  
 इतोयम् ॥ २४१ ॥ अन्वययो मुख्यसिद्धावप्रयत्ननिष्ठासिः, यथा- मिश्रामट गां चानव । समाहारे  
 संहतिप्राधान्ये, यथा- पाणी च पादौ च पाणिपादम् । इतरंतरयोगे संहन्यमानप्राधान्ये, यथा-  
 [ प्रज्ञा च न्यबोधय ] प्रज्ञयपोषी । समुच्चय एकत्रानेकप्रवयः, यथा- गायत्री वात्सव्यागतौ, पवति च  
 पठति च चैत्रः । विनियोगानुन्ययोगिताहेतुषु च । विनियोगे- अहं च त्वं च दृष्टवन् संयुज्याव सनिभ्य  
 आ ( निरुक्त० ) । तुल्ययोगितायां- ध्यानयोगस्थितयः । हेतो- प्रामथ्य गन्तव्यः क्षीतं च, क्षीतत्कर्ष  
 गम्यत इत्यर्थः । शस्तीत्यविनाशनम[ य ]- स्वस्ति तेस्तु लतया सह दृष्ट । क्षेमे- स्वस्ति प्रज्ञाभ्यः ।  
 पुष्पे- काममिदं ते स्वस्ति । आदिशब्द न्महामादौ- स्वस्ति श्रीकुसुमुत्पात् ( मुद्राराक्षस० ) । प्रकर्षे-  
 अतिवृद्धः । सङ्घननमतिक्रमणं यथा- सर्वान् गुणानेष गुणोति भाति, अतिक्रम्य आनीत्यर्थः ॥ २४२ ॥  
 प्रभे- कः शिवदेहाकी चरति । वितर्के नानापञ्चावतरीः- अथः शिवासीदुगारे शिवासीत् ( बाजसने-  
 बीसंहिता ) । भेदो विशेषः, यथा- क्षीरान्नांसं तु पुष्टिकृत् । अवधारणे- भीमस्तु पाण्डवानां रोहः ।  
 हेतुव्यवृत्तौ त्वनयोर्भेदो- गृहीयां चे[ वे ]दं दुर्जनं त्वं तु किं करिष्यसि । सहाय्ये- सकृद्वान्ति । एकवारे-  
 सकृदंशां निगतति ( मनुः ) । अपिशब्दात्सदर्थे- सकृद्युवानो गीर्वाणाः ॥ दूर- आराध्योः सदा  
 बसेत् । समीपे- संप्रीतान् स्यापयेदरात् ॥ २४३ ॥ प्रतीच्यां- पश्चादस्तादिः । चरमे- पश्चाद्याति ।  
 अप्यर्थः समुच्चयप्रश्नः । समुच्चये- उत भम उतार्जुनः । प्रभे- उत दण्डः पतिष्यति । विकल्पे- उत  
 पर्वते भिन्या- उत पुष्पेद्रुजः । वितर्केऽपि- स्याणुहत् पुरुषः । पुनरर्थे पौनःपुन्ये- कथयति ।  
 सहाय्ये- शश्वद् भुञ्जते । नित्येपि- शश्वत् वैरम् । प्रत्यक्षे- साक्षाद् दृष्टा साक्षी । तुल्ये- इव साक्ष-  
 न्द्रस्यीः ॥ २४४ ॥ सेदे- अहो बत महत्कष्टम् । अनुकम्पायां- बत निःश्वेसि । संतपे- बत प्राप्ता  
 क्षीता । विस्मये- अहो बतसि स्पृहणीयवीर्यः ( कु० सं० ) । आमन्त्रणे- बत वितरत तोयं तोष-  
 माहा हिमान्तं [ नितान्तं ] । हर्षे- हन्त जीविताः स्मः । अनुकम्पायां- पुत्रक हन्त मे बाळछाः  
 [ ते धानाकाः ] । वाक्यारम्भे- हन्त ते कथयिष्यामि ( भगवद्गीता ) । विषादे- हन्त हताः पक्षि-  
 गेहिन्यः । दाणे निधये च- हन्तकारः ( बा० रा० ), हन्त गच्छामः ॥ २४५ ॥ प्रतिनिधौ- अभि-



ओकः सद्भाष्यधोकाः पयः क्षीरं पयोम्यु च ।  
 ओजो वीक्षो बले स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३४ ॥  
 तेजः प्रभावे वीक्षो च बले शुकेप्यतस्त्रिषु ।  
 विद्वान् विद्वंश्च वीभर्तो हिंस्रोऽप्यतिशये रश्मी ॥ २३५ ॥  
 वृद्धप्रशस्ययोज्यायान् कनीयास्तु युवावपयोः ।  
 वरीयास्तुरुवरयोः सार्धायान्साधुबाढयोः ॥ २३६ ॥  
 वलंपि बर्ह निर्वन्धोपरागाकर्कष्यो महाः ।  
 द्रार्यापीडे क्वाथरसे निर्यूहो नागदन्तके ॥ २३७ ॥  
 तुलासूत्रेष्वादिरेष्मौ प्रमाहः प्रमहोपि च ।  
 पर्त्नापरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३८ ॥  
 वारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ।  
 व्यूहं वृन्वप्यहिवृत्रप्यस्त्रीन्द्रकास्तमोपहाः ॥ २३९ ॥  
 परिच्छेदे वृषार्हेर्धे परिषर्होऽव्ययाः परे ।  
 आङ्गीषवर्धेभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २४० ॥

तु ( भरत० ) । स्रवति स्रोतः, इन्द्रियमिन्द्रियद्वारम् । रयः प्रवाहो लक्षणवा ( स्रोतः ) ॥ २३४ ॥  
 तिज निशाने ( तेजः ) । अपिशब्दादसद्वन्तरे यद्भरतः— अधिद्वारावमानादेः प्रयुक्तस्य परेण यत् ।  
 प्राणालयेप्यसद्वन्तरे सत्तेजः समुदाहृतम् ॥ सान्ता यावद्वाच्यलिङ्गाः । विदेःशतुर्वसुः ( सू० ) । चक्षुष्मा-  
 त्पण्डितात्मनो ( विद्वान् ) । मान्वधेति ( सू० ) समन्थाःसदीर्वध, ततो अप्रत्ययात् ( सू० ), वीभ-  
 र्तास्यास्तीति वीभर्तः । चक्षुष्याजुगुप्थितोर्जुनश्च । वस्वमाणाध्वर इयसुप्रज्ञाः ॥ २३५ ॥ प्रशस्य-  
 स्यधः ( सू० ), वृद्धस्यच ( सू० ), उयच ( सू० ) इति उयादेशः । युवावपयोःकृन्मन्तरस्याम् ( सू० ) ।  
 अतिशयेनोद्वर्धय वरीयान्, प्रियस्त्रिरस्त्रिस्तोर्वीति ( सू० ) उरोर्वरादेशः । अतिशयेन साधु बाढं च  
 सार्धावः, अन्तिरुषाढयोर्नैदसाधौ ( सू० ) ॥ २३६ ॥ इतो हान्ताः । दसं पर्णं, परिवारश्च ( बर्हम् ) ।  
 अपिशब्दान्मयुगपिच्छे ( बर्ह ), वृद्ध इदो, बर्हं प्राधान्ये च । उपरागो राहुप्रह्वं, भावे प्रह्वदुनिधिगम-  
 धेति ( सू० ) अप्, कर्तरि विभाषाप्रहः ( सू० ) इत्यच् । भूतोपि ( प्रहः ) । आपोऽहो बहिर्निःसृक्तं  
 दाह, निर्यान्त्यनेन निर्याति निर्वाति च निर्यूहः, यूहिल्लोकिको धातुर्वा । नागदन्तको भित्तित्वाः कालकः  
 ( निर्यूहः ) ॥ २३७ ॥ प्रवृत्ततेनेन, प्रवर्णजाम् ( सू० ), रश्मीच ( सू० ) इति वा षम् । परिग्रहते  
 परिग्रहं च परिग्रहः, प्रह्वदुनिधिगमश्च ( सू० ) इत्यप्, परिगृह्णातीति— अच् । शापः क्षपवः ( परि-  
 ग्रहः ) ॥ २३८ ॥ वारेषु तात्स्थ्यात् । चक्षुष्याद्विस्मानि, गृह्णन्ति गृहाः, नित्यं बहुस्वे, गेहेकः ( सू० ) ।  
 श्रोण्या यथा— वरारोहा । अपिशब्दाच्छेलादारोहणश्चारे च ( आरोहः ), आधिकरणे भावे च षम्,  
 कर्तयञ् । व्युष्टते रच्यते व्युहः, अपिशब्दाद्वेन्यविन्यासे यथा— चक्षुष्युः । दंष्ट्रादिः, अपिशब्दाद्वरसर्वं  
 वंश्च । अपहन्तेर्हः ( अपेक्ष्यतमसोः ) ॥ २३९ ॥ नृषाहं छत्रत्रचामरादौ, अयं वस्तुनि षने वा  
 ( परिवर्हः ) । इति नानार्थवर्गः । अत ऊर्ध्वमव्ययवर्गो वक्ष्यते, ततः प्रस्तावाप्रानार्थाभ्ययवर्गस्तावत् ।  
 ईषत्पिङ्गलः— आपिङ्गलः । अभिव्याप्तिरभिधेभिः— आकुमारं यशः पाणिनेः । सीमार्थो मर्यादा,  
 यथा— आ— उदकान्तादिभ्यं प्रोषितमनुव्रजेत् । धातुयोगजे धात्वर्थेन क्रियया योगजे संबन्धोत्पत्त्ये योत-  
 क्त्ये, यथा— आरोहति । उपसर्गोपि सूरनखन्यायेनात्रोक्तः ॥ २४० ॥ स्मृतिः सूचनं, यथा— आ एवं

शुद्धगारावी विषे धीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।  
 पुंस्तुलसावतंसौ द्वी कर्णपूरेपि शेखरे ॥ २१८ ॥  
 देवभेदेनले रस्मौ वसु रत्ने धने वसु ।  
 विष्णी च वेधाः स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिर्वृद्धयोः ॥ २२१ ॥  
 लालले प्रार्थनौत्सुक्ये हिंसा र्चायाविकर्म च ।  
 प्रसूरन्वापि भूयाद्यौ रोक्स्थौ रोक्सी च ते ॥ २३० ॥  
 ज्वालाभासौ नपुंस्यचिज्योतिर्मघोतदुष्टिषु ।  
 पापापराधयोरगः खगबाल्यादिनां वर्यः ॥ २३१ ॥  
 तेजःपुरीषयोर्वर्चो महद्योत्सवतंजलोः ।  
 रजो गुणे च स्त्रीपुण्ये राहौ ध्रान्ते गुणे तमः ॥ २३२ ॥  
 छन्दः पद्येभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।  
 सहो बलं सहा मार्गो नभः संध्रावणो नभाः ॥ २३३ ॥

तीक्ष्णरसान् मिथुकांश्च रिणौ युज्जीत । वीर्ये यथा- रसस्यातिरसः सर्पिः । गुणे यथा- रसः स्वादुमूल-  
 वणतिक्तोषणकषायकाः । रागे यथा- रसिकः पुरुषादिः । द्रवे यथा- हरीतकीरसः । आसवेदेहपातो च  
 यथा- रसासृग्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः । पारदे च यथा- रस्वादी । रसा तु भूः । तंसिः  
 सौतो भूषणार्थः, बतंसोपि ॥ २२८ ॥ देवभेदे यथा- अशे वषवः । अनलोभिः, रस्मिन्तेजः, वसति  
 सर्वत्रोप्यते वा । तेजश्च वसु, आहुश्च- वसु रत्नं वसु धनं वसु तेजो निगद्यते । चञ्चलः द्वेष्टाश्रो-  
 विषति विषते वा वेधाः । वेधश्च हिंसाः माहुः । आशास्ममाशीः, आशं ( श ) सति हिनस्ति च, बदाहुः-  
 आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तथा विद्धो न जीवति । आशीविषः, पृथोदरादित्वात् ( सू० ) सलोपः ॥ २२९ ॥  
 क्लृप्त ईप्सायामित्यस्मात्सतेर्भन्ताद्वा लालसा । चञ्चलाद्बुधः ( हिंसा ) । बहवाह्या प्रसूः । अपिशब्दा-  
 न्माता ( प्रसूः ) । गोतोनिदित्यत्रोतोनिदिति पाठाद् योश्चन्द्रस्व सर्वनामस्यानेन श्रुतिः । आस ईदन्तो  
 भुवि दिशि च वर्तते, अन्योऽसन्तः क्लीबे द्वयमाह, यथा- रोदोरन्ध्रमजिह्वदत् [ नृ ] । क्लृदि सर्व  
 रोदः । रोदलीत्यम्बयमप्यस्ति, यथा- शावापृथिव्यौ रोदस्यो रोदसी रोदसीति च ॥ २३० ॥ ईदमिकं  
 वा, अर्च्यतेर्चिः । ज्योतते ज्योतिः, भं तारका, योतः प्रकाशः, दृष्टिः कनीनिकामप्यम्, यन्मनुः- तारा  
 नेत्रत्रिं [ वि ] भागः स्याज्ज्योतिस्तत्पञ्चमांशकम् । आगच्छत्यागः । वयते याति [ वाति वा ] वयः,  
 अयुन्, नुमा क्लीबे ॥ २३१ ॥ रूपे ( वर्चः ) । उतमवे ( महः ), अकारान्तोपि, मह पूजयाम् ।  
 गुणे सत्स्वातरे यथा- उपष्टम्भकं बलं च रजः । चञ्चलाद्बुधो ( रजः ) । स्त्रीपुण्ये यथा- रजस्वला ।  
 गुणे यथा- गुरुवरणकमेव तमः, ताम्बन्त्यनेन तमः ॥ २३२ ॥ छन्दति छन्दः, पद्ये गान्ध्यादौ ।  
 अभिलाषे- अकारान्तोपि यथा- छन्दानुवर्ती । चकाराद्देवे यथा- युक्त्यच्छन्दांस्यधीर्योत । आदिच्छन्दा-  
 न्नात्रायणादि ( तपः ) । चञ्चलात्तरा माघः, अदन्तोपि प्रीध्मार्थः, यथा- तपेन वर्षा शरदा हिमागमः  
 ( शिशु० ) । सहते सहः । मार्गो मार्गशीर्षः, द्विः पाठो लिङ्गभेदार्थः । एवं नभसोः- ओक्सोः, पयसो-  
 स्त्वेकं लिङ्गं क्षीराम्भसोः क्लीबत्वात् । न नभस्ति नभाः, एकं शून्यत्वादन्त्यो मेषच्छत्रत्वात्, नभ हिंसाया  
 वा ॥ २३३ ॥ उच समवाये, ओक्उचके ( सू० ) इति- अदन्तोपि । पीह पाने, पय गतो च ( पयः ) । उज्जे-  
 रस्मि सार्धं ( ओजः ) । विषमसंख्यावाची त्वोजोदन्तः, ओजेनौजः समः पादो युग्मजावर्धं [ भे ] समस्य



पक्षः सहायेप्युष्णीषः-(च) शिरोवेष्टिकीरिटयोः ।  
 शुक्ले मूषिकं श्रेष्ठे सुकृते वृषभं वृषः ॥ २२१ ॥  
 कोषोष्ठी कुङ्कुमले स्वप्नपिधानेयीषाविम्वयोः ।  
 घृतेक्षे शारिकलकेप्याकर्षोपाक्षमिन्द्रिये ॥ २२२ ॥  
 ना घृताङ्गे कर्षचक्रं व्ययहारे कलिबुधे ।  
 कर्ष्यार्सा करीषाभिः कर्षुः कुल्यामिभायिनी ॥ २२३ ॥  
 पुंभावे तत्कियाया च पौरुषं विषमप्लु च ।  
 उपादानं प्यामिषं स्यादपराधेपि किलिबषम् ॥ २२४ ॥  
 स्याद् वृष्टौ लोकाभात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ।  
 प्रेक्षा नृत्तक्षणं प्रज्ञा भिक्षा संवार्थना भृतिः ॥ २२५ ॥  
 त्विदं शांभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्यनिक्कुट्याः ।  
 प्रत्यक्षेधिकृतेष्यक्षो कक्षस्तमेम्ययचिह्नये ॥ २२६ ॥  
 रविष्वेतच्छवी हंसी सूर्यवल्ली विभावसू ।  
 वत्सी तर्णकवर्षी ह्रीं सारङ्गाश्च विवीकसः ॥ २२७ ॥

विरोधयोः । बले काले पतत्ये च हनौ पार्श्वे विकल्पिते ॥ उच्यते उष्णीषः । शुक्ले यथा- वृष्याः  
 प्रयोगाः । मूषिके यथा- वृषवर्षः । श्रेष्ठे यथा- पुरुषवृषः । सुकृते यथा- वृषो हि भगवान्धर्मः  
 ( नारदः ), वर्षति वर्षयते च वृषः ॥ २२१ ॥ कुङ्कुमले कुङ्कुमाति च कोषः, कुङ्कुमले कश्चिन्नमधे,  
 अयोषो भाण्डागारं, दिव्यं धावः । योऽन्यां पात्रविशेषेण यथा- मूत्रकोषः, नेत्रकोषः । कोष्ठे ताक्ष्मः  
 सान्तोद्यम् । अविशब्दात्कर्षणे, आकर्षणमाकृष्यते- आकर्षलास्मिन्वाकर्षः । अङ्गोत्पलं चक्षुरादि  
 ॥ २२२ ॥ घृताङ्गे यथा- शिबेक्षा मृगया पानम् । कर्षे यथा- अक्षः बोद्धव्यं माषकाः । चक्रं रव-  
 काष्ठोपलक्षणम् ( अष्टः ) । व्ययहार आत्यययादिन्यायः, यथा- अक्षपटलम् । कलिबुधो विमर्तकः  
 ( अक्षः ) । भोतोमूलेपि ( अक्षः ) । कर्षणं कर्षति कृष्यते वा कर्षुः, वार्ता कृषिः, करीषं शुष्कगोम-  
 दम् । कुल्या यथा- वतलः कर्षः पितृभ्यः कुर्यात् ॥ २२३ ॥ पुरुषवृष मावः कर्म वेति, भावे ( प्राण-  
 भृज्जाति ) प्रयोक्तव्येति ( सू० ) अम् । विष्टुल व्याप्तौ । चक्षुष्याद्वरले ( विषम् ) । उपादानमुत्प्रेषः  
 ( आमिषम् ) । अविशब्दात्प्राप्तौ, आमिष्यत अ मिषम् । अविशब्दात्प्राप्ते किलिबषं, किलि छेपे ॥ २२४ ॥  
 लोके धत्ते लोकाभाप्युत्प्रेक्ष्योपस्तस्यांशो भूतज्ञो नवनेलापृतादिः, वर्षणं वर्ष, अविशब्देभ्यादीनामुपसे-  
 द्वानम् ( वा० ) । अम्यस वर्षयत्याप्यायतीति वर्षः, दुर्गस्तु- वर्षादया लोकपातुष्व वष्यन्तसरवृष्टयः ।  
 वृष्टौ वर्षवरः । वृत्तादिप्रेक्षणकं, प्रेक्षयत इति प्रेक्षा । प्रेक्षतेनयेति प्रेक्षा धीः, प्रेक्षणे च । अतो नृते-  
 क्षणप्रज्ञायेति युक्तः पाठः ॥ २२५ ॥ अविगतोक्षेरप्यज्ञो घटादिः । अक्षेभ्यामक्षानेष्वचिह्नतोष्वक्षः,  
 अधिकांशमक्षीप्यस्व, अम्यस्योति वाप्यस्यो नियुक्तः । रक्ष पाक्ष्ये, अविज्ञो निःस्नेहे ॥ २२६ ॥ तेषां-  
 भ्राजसंक्षयः क्षरम्येषु सख्यं पोषो रवत्रज्ञौ । कपिशिर्षे भित्तिगृह्णेनृत्तवर्षवकः सुरा ॥ दोषो वातादिके दोषा  
 रात्रौ दक्षोपि कुक्षुटे । छण्डाप्रभागे गण्डो दोषो द्रव्येष्व मूखपुरेण ॥ इतः सान्ताः । इन्ति गच्छतीति ईसः,  
 आद्यदेहहानादुत्तरदेहसंप्रतिग्रहः च ईस आत्मा प्राणो वातविशेषश्च । विभा त्विदं वक्षु यस्य विभावसुः ।  
 वसति वसत्यस्मिन्वसः । वत्सं तु वक्षः । सरन्ति सारङ्गाः, सहाङ्गोऽप्य गत्या वर्णेन च वर्तन्ते वा ।  
 वषट्कारान्तरात्पातका [ इति नो ] भगवत् ॥ २२७ ॥ आदिशब्दात्कण्ठादी ( रसः ) । विषे यथा-

द्वी विशी वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशी ।  
 द्वी राशी पुत्रमेपाची द्वौ वंशी कुलमस्करी ॥ २१५ ॥  
 रहःप्रकाशी वीकाशी निर्वेशो भृतिभोगयोः ।  
 कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१६ ॥  
 पदे लक्ष्ये निमित्तेपदेशः स्यात्कुशमप्सु च ।  
 वशावस्थानेकविधाप्याशा तुष्णापि चायता ॥ २१७ ॥  
 वशा स्त्री करिणी च स्याद्व वृहत्ताने ज्ञातरि त्रिषु ।  
 स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१८ ॥  
 प्रकाशातिप्रसिद्धेपि शिशावक्षे च बालिशः ।  
 सुरमत्स्यायनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१९ ॥  
 काकमत्स्यात्स्वगी व्वाङ्क्षी कक्षी च तृणवीरधी ।  
 अभीषुः प्रमहे रश्मौ प्रेषः प्रपणमर्वने ॥ २२० ॥

पतिर्विष्टरमात्रमात्रात् ( रघु० ) । विद् गृये, वन्त इत्येके । अभिप्रियतेभिमरः प्राणानिरपेक्षस्तीक्ष्णास्त्रः,  
 यो द्रव्यहेतोर्भ्यां ईदृशितं वा बोधयति । रणेभिमर इत्येके, स्पश बाधनस्पर्शनयोः । बन्धे तु वम्,  
 यथा- सेवमुभयतःस्पाशा रज्जुः । राति राशयति वा राशिः । पुत्रे वथा- धान्यराशिः । भेषवृषाणां  
 द्वन्द्वस्य राशयः । वन्तुते वंशः, मस्त्रो वेणुः । ( वंशः ) समूहस्तूपचारः ॥ २१५ ॥ शिवाद्यनं वीकाशः,  
 उपवर्गस्त्वपचीति ( सू० ) दीर्घः, विर्विगतार्थे विशेषार्थे च । निर्विशयते भुजयते निर्वेशः । भृते  
 वथा- प्रतिग्रहजप[ य ]विक्रय[ म ]निर्वेशाभिगतिरर्थैः । भोगे यथा- स्वयम्भवनं निर्वेशः । कुत्सितं  
 नाशयतीति कीनाशः । कीशकीकटकीचकाद्यर्थैः की निपात इति धीभोजः । मर्कटेपि ( कीनाशः )  
 ॥ २१६ ॥ अपविश्यतेपदेशः, पदं स्यात् यथा- त्यक्तापदेशो यतिः । लक्ष्ये यथा- सापदेशः । निमित्ते  
 यथा- केनाप्यपदेशेनागतः । प्रसिद्धौ च यथा- रज्ज्वप्यपदेशः । की शंते कुशयति च कुशम् । चशब्दा-  
 दर्थे ( कुशः ) । काले तु कुशी, जानपदकुण्डेति ( सू० ) अयोविकारे डीप् । दशति दश्यते च दशः ।  
 आपिचय्याद्वर्तिः, पयान्ते तु दशाः पुं बहुत्वे । आशासनमाशा महन्गर्भः । अपिचय्यादिकृ ( आशा )  
 ॥ २१७ ॥ चशब्दाद्वन्प्यगवो सुता वश्या च ( वशाः ) । वश स्वायत्तः, इच्छा यन्तणा प्रभुत्वं च ।  
 भावे कर्तरि करणे च क्तिप् ( दृष्ट ), दर्शनेक्षिण च । कृणांति कर्कशः, अमसृणः परुषः ॥ २१८ ॥  
 प्रकाशते प्रकाशनं च प्रकाशः । अपिशब्दप्रकृते- उद्घोषे च ( प्रकाशः ) । बालते बालिशः, बाहू आ-  
 श्रये । बुरगस्तु- कोशोष्ठी कुडमले सङ्गपिधानेयैर्विद्युद्योः । नाशः क्षये तिरोधाने जीवितेशः प्रिये  
 वमे । वृशंसखङ्गी निक्षिशावशुः सूर्येशवः कराः । आश्रय्या शालिश्च प्राप्ये पाशो बन्धनशस्त्रयोः ॥  
 स्पर्शं च- आप्रतो बाहुपाशेन केशपाशेन पृष्ठतः । पार्श्वयोः कर्णपाशेन सर्वतो बन्धनं मिया [ ये ] ॥  
 अथ शान्ताः । न निमिषत्यनिमिषः । पुरि पुरि शयनात्पूरणत्पालनाच्च पुरुषः ॥ २१९ ॥ मत्स्यानिति  
 मत्स्याद्वृक्षः, व्वाक्षि कार्क्षायाम् । कषति कक्षः, वीरलता । चशब्दात्पापे पार्श्वे भित्तौ च ( कक्षः )  
 पापे यथा- कक्षाय कृतते कक्षायते, सत्रकक्षकटकुच्छगदनेभ्यः ( कषाचिकीर्षायामिति ) ( वा० ) पापे  
 कर्मणे कषट् । पार्श्वेभ्यविशेषे यथा- त्व[ म ]दन्ताद्विक्रितपाणि-कक्षदधिरक्षिप्राम्पृच्छं शम् । भित्तौ  
 यथा- सप्तकक्षान्तरा राजधानी । ईष उच्छे, प्रमहो वत्सादिः, रश्मिर्मरीचिः । ( प्रेषः ) मादूहोडोववे-  
 पेष्पेभ्येति ( वा० ) वृद्धिः ॥ २२० ॥ पक्ष परिमहे । अपिशब्दात्- केशे पक्षः समूहार्थः पक्षः साध-

अययः शैलमेषार्का आशाहानाध्वरा हवाः ।

भावः सत्तास्यभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०८ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो मर्ममोचने ।

अधिष्ठासेपल्लवेपि निकृतावपि निहवः ॥ २०९ ॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः ।

अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिधये ॥ २१० ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ।

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥ २११ ॥

ध्रुवो मर्मदे क्लीबे तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।

स्वां ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीयं स्वोच्छ्रियां धने ॥ २१२ ॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेपि नीवी ( विः ) परिपणेपि च ।

शिवा गीरीफेरवयोर्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥ २१३ ॥

द्रव्यासुव्यवसायेपि सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।

क्लीबं नपुंसकं पण्डे वाचशलिङ्गमविक्रमे ॥ २१४ ॥

सात्विकः । न्यभिचारी च पथेते भावमेदा व्यवस्थिताः ॥ पुण्ये च यथा- मान्यो भवेति वक्तव्यः  
किञ्चिदुनस्तु माविः ( मरतः ) ॥ २०८ ॥ प्रसवनं प्रसूयते च प्रसवः । अपत्ये च ( प्रसवः ) ॥ २०९ ॥  
उत्सेक उद्रेकः, इच्छायाः प्रसव उत्पत्तिः ( उत्सवः ) । मह इति सप्तमी, पु प्रसवेत्यर्थोः, पू प्रेरणे च ।  
प्रभावे यथा- महानुभावः । चण्डाद् भावसूचके, यदाहुः- अनुभावस्तन्मिनयः पञ्चादर्यमकारानात्  
॥ २१० ॥ जन्महेतुः पित्रादिः, प्रभवस्तस्मात्प्रभवः । प्रथममुपलब्ध्यर्थो देशश्च प्रभवः, यथा- हिमवान्  
गङ्गयाः ॥ २११ ॥ भविष्ये यथा- औतानपादिः ( ध्रुवः ) । निश्चिते क्लीबे ( यथा )- ध्रुवं मूर्खो-  
यम् । शाश्वते यथा- जातस्य च ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ( भगवद्गीता ) । क्लीबे निधत्ते च  
( ध्रुवः ) । कचिन् ध्रुवा गाने च, यदाहु- ध्रुवा हि नाट्यस्य प्रथमे प्राणाः । आत्मात्मीयज्ञातिजनवच-  
नो हि स्वशब्दः, स्यति सीयते वा स्वः । ज्ञातो यथा- उत्पुक्तानीव भान्ति ह्यः । आत्मनि यथा-  
हृदि स्वमवलोकनम् । आत्मीये यथा- स्वदःरनिरतः । धने यथा- प्रभूताः स्वा न दीयन्ते ॥ २१२ ॥  
त्रिषुः कटीवस्त्रस्य बन्धनं, यत्कादयः- नीविराप्रन्यनं नार्या जघनस्यस्य दाससः । परिपणो शबपुत्रा-  
दिबन्धकः ( नीविः ) । अपिशब्दाशयव्ययविशुद्धं धनं कारा च ( नीविः ) । शिनोति शिक्ष, फेरवा  
शृगली । हरीतकी, आमलकी च ( शिवा ) । शिस्तु द्वयः, शिवं भद्रम् । द्वौ द्वौ द्वन्द्वं, द्वन्द्वद्वन्द्वमयी-  
दावचनव्युत्क्रमणयज्ञरात्रप्रयोगाभिव्यक्तिः ( सू० ), इति साधुः । मिथुने च ( द्वन्द्वम् ) ॥ २१३ ॥  
द्रव्यं पारिभाषिकं विशेष्याहयं, यदाहुः- वस्तुलक्षणं यत्र सर्वेनाम् प्रयुज्यते । द्रव्यमित्युच्यते सेषो  
मेयत्वेन व्यवस्थितः ॥ यथा- रुचरे निवेशनेपेति ( का० ) । असुषु यथा- उत्क्रान्तसत्त्वो मृगः । व्यवसायो-  
तिशयवद्दीर्यं यथा- सत्त्ववाञ्छलितं वनः । जन्तो यथा- सत्त्वहितः । अपिशब्दाद् गुणे वने स्वभावे  
पिशाचे, आत्मलामे सत्तायां सारे च ( सत्त्वम् ), यत्कौटिल्यः- सत्त्ववन्तो मृदभागः । क्ली-  
बध. छये, षण्डे- उभयव्यजने नपुंसकलिङ्गम् ॥ २१४ ॥ कापि च- अत्यधगातिप्रणतो प्राप्नो माध्वं  
च बन्धने । अथ शान्ताः । ( वैश्वे ) यथा- विप्रक्षत्रियविश्वश्राः ( पृ० ११३ ) । मनुजे यथा- विशां-

अथःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्यादामिषे पलम् ।  
 और्वाणलेपि पातालं चेलं वक्षेधमे त्रिषु ॥ २०३ ॥  
 कुङ्कुलं शङ्कुभिः कीर्णं चक्षे ना तु तुषाबले ।  
 निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०४ ॥  
 पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।  
 प्रवालमङ्कुरेप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेपि च ॥ २०५ ॥  
 करालो वन्तरे तुङ्गं चारौ वक्षे च पेशलः ।  
 मूर्खैर्मकपि बालः स्याल्लोलधलसनुष्णयोः ॥ २०६ ॥  
 ववदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरी भवौ ।  
 मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशःखिनरा धवाः ॥ २०७ ॥

दरी । पृष्ठेपि यथा- भूतलम् । चोष्ठेपि यथा- तलप्रहारः । वितस्ती तलः, यथा- षड्युग्मकस्तल-  
 स्ताले वितस्तिः शङ्कुलाननम् । तलं च प्रकोष्ठे ज्याघातरक्षार्थं चर्म । चशब्दात्कर्षचतुश्च ( पलं ),  
 आमिषे मांसे, पलं रक्षमे । अपिशब्दाद्रसातले ( पातालं ), पतति [ पिबति ] पातमाःलाति च । बिड  
 वसने, अक्षमे वेल्कृ पचादिः ( चेलछेटकटुकेति ), यथा- ब्राह्मणिचेली ॥ २०३ ॥ कोः कूलं कृत्स्नं  
 वा कूलं कुङ्कुलम् । इतिचाय्देन मान्तमव्ययमिति ध्वानितं, यथा- साधुधैतः केवलं मूर्खः, केवृ सेचने ।  
 एकोत्रासहायः ( केवलः ) । कृत्स्ने यथा- न केवलं भुवो भर्ता ॥ २०४ ॥ पर्वाप्तिः सामर्थ्यं यथा-  
 कुशलं कटकरणे । क्षेमे यथा- कुशलं ते भूयात् । पुण्ये यथा- कुशलकृत् जकः, कुशान्-स्मार्तातिः । ( कुशलः )  
 शिक्षितत्वेन नैपुण्यं लक्ष्यते । प्रवते प्रवालं, वातेर्वलेत्रेवा रूपम् । अङ्कुरोत्र किंसलः ( प्रवालम् ) ।  
 अपिशब्दाद् विद्रुमे वीणादण्डे च ( प्रवालः ) । स्थूल परिबृंहणे, जडः स्थूलोतीक्ष्णप्रवृत्तात् । अपि-  
 शब्दात्पीबरे ( स्थूलः ) ॥ २०५ ॥ करोति कृणोति च करालः । चशब्दान्मृदौ ( पेशलः ), पीह पांनं  
 पिबे अवयवे वा । अपिशब्दात्केशो हावरे बालघौ च ( बालः ), बाहू आङ्गवे बल संवरणे च । लुब्ध  
 विलोडने, सतृष्णा लौल्यात् ॥ २०६ ॥ कुलं गृहेपि तायाहके कुबरे चैककुण्डलः । स्त्रीमायावह्नयोर्हला  
 हलिः सूत्रे रणे हलिः ॥ हालः स्यान्नृपतौ मये शकलच्छदयोदलम् । तूलिधित्रोपकरणशलाकातूलश-  
 ययोः ॥ तुमुलं व्याकुले शब्दे शङ्कुली कर्णपात्यपि ॥ अथ वान्ताः । द्रुयन्तेनेनेति, दुजोविभाषा ( सू० )  
 इति घञ्, यत्कात्यः- दवो वनगतौ बह्निर्दावथ वनमुच्यते । हरो रुद्रः ( भवः ), भाषेपादाने च- अप् ।  
 प्रामिसंसारसत्ताकस्याण्वपि ( भवः ) । मन्त्रा बुद्धिसचिवः, सह- अयते सहायः कर्मसचिवः, सचति  
 समर्थेति सचिवः । पतिभर्ता, शास्त्री वृक्षविशेषः, धवति धूयते वा धवः ॥ २०७ ॥ अवत्यविः । हवनं  
 हवः, भाषेनुपसर्गस्येति ( सू० ) ह्वः संसारणं, अप् च । हूयतेस्मिन्होष्वरः । बहृषु ( अर्थेषु ) कर्तारि  
 भावे चार्थानुष्ण्यात् ( घञ् ) । सत्तायां यथा- कालभावयोः सममी- गौ तुष्टमानासु गतः । स्वभावे  
 यथा- भावानुरक्तनिताशुरतेः शपेयम् ( घटक्षपैरः ) । अभिप्राये यथा- भावानुवर्ती मृत्युः । तात्पर्येत्  
 एव ( यथा )- अयमल भावार्थः । चेष्टा क्रिया यथा- धात्वर्थः केवलः शुद्धो भाव इत्यभिधीयते ।  
 लोलापि चैत्रेव ( यथा )- भावालसा विलासिन्यः । आत्मनि यथा- ह्रीं भावं भावयेद्योगी । जन्मनि  
 यथा- नासतो विद्यते भावः ( भगवद्गीता ) । वस्तुनि च यथा- भावस्थितजया भवन्ति भवता भाष्यन्त  
 एते यथा । रतिवेगे च यथा- प्रमाणकालभावेभ्यो रतावस्थापनम् । प्रवृत्तिनिमित्ते च, भवतोस्मादभि-  
 भानप्रत्ययाविति भावः । विभूतियोनित्वप्रसिद्धे स्पष्ट्यादौ च, वदाहुः- विभावः स्थायिसंहृद्य सानुभावोऽव



मलोन्मी पापविदकिन्नान्यन्मी शूलं वगायुबन्धम् ।

शङ्कायापि द्वयोः कीलः पालिः स्वयम्पदपङ्क्तिषु ॥ १९८ ॥

कला शिल्पे कालमेवे चाली सख्याबली अपि ।

अव्यम्बुविह्वली वेला कालमर्यादयोरपि ॥ १९९ ॥

बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोन्मी शितौ त्रिषु ।

लीला विलासक्रियारूपला शर्करापि च ॥ २०० ॥

शोणितेभ्यसि कीलालं मूलमाघे शिफामयोः ।

जालं समूह आनायो मवाक्षक्षारकावपि ॥ २०१ ॥

शीलं स्वभावे सद्बुद्धे सत्ये हेतुकृते फलम् ।

छादिनैत्ररजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ॥ २०२ ॥

यलयति मलते वा देहं च मलः, विद् गुरुं, किं कलङ्कः । स्मृतौ तु- वत्ता शुक्रमसृक् मग्ना मूर्ध्नि  
विद् कर्मविमलताः । श्रेयसाश्रु दूषिका स्वेदो द्वादशैते मत्वा नृणाम् ॥ शून्य रज्यायां, स्वगतदोषः, वदाहुः-  
शूलं वर्ततेनिलात् । शङ्कौ कीलके ( कीलः ), अपिशब्दाज्ज्वालायां, कील बन्धे । श्रुतौ प्रहस्त्वविशेषे  
कीला, बलात्स्यायवः- कील उरसि कर्तरी शिरसि विदा कपोलयोः । पास्तेनया पाकिः क्लीडि-  
ङ्गा, अधिर्घारा । अङ्के यथा- कपोलपाटी, कपोल्लेखङ्गा इत्यर्थः । अङ्कपाटील्लङ्गाङ्को वङ्गा,  
यच्छाश्वतः- मुखाङ्कनाभिमेवूष्मातात्मनेति । पङ्क्तौ यथा- पाटीयै बन्धकनाम् । प्राप्ते यथा-  
कपोलपाटी, तथा शितपटच्छत्रगाली कपालीम् । लोकाः कस्वितयोजनेप्याहुः ॥ १९८ ॥ किमे वीतान्ते,  
कालविशेषे, यदवोचत्- अष्टादश निमेषास्तु क्वाहा त्रिंशत् त्राः कल ( ५० २२ ) । चन्द्रावर्धे यथा-  
चन्द्रकला, निष्कलः । निवृत्त्या स्या बाधाघट्टत्रिराकलाः । तालेषु गुरुः कल । आ- अस्ति मूल-  
स्याली, आलाति च । अपिशब्दादालिर्नर्थः । अलधिलजलविकारे वेला, लट्पुपचारत्, वेल् बन्धे ।  
कालोवसरः, मर्यादायां यथा- उद्वेलः ॥ १९९ ॥ बहुलाः कृत्तिका नाम नक्षत्रं, बहुलं तारकाणां बहु-  
त्वात्, शितौ कृष्णवर्णे, वहन्ति बहुलाः, बहु लाति च । वहति इयं बहुलाभ्योभिः । बहुलं प्रभूतं  
प्राथिकं च । बहुलशब्देऽप्यस्ति घनतायौ बहुत्वार्थश्च । स्मिद् श्रेयसे, विलासवेष्टालंकारोपलक्षणम्,  
इष्टजनस्यानुकृतिर्लालेति भरतोक्तो भेदो नात्र विवक्षितः । शिफा कायिकः परिस्पन्दः ( कीलम् ) ।  
उपलपति- उप्यते वा- उपला शर्करा- अदमरूपा मृत्, अदमराण्डिका वा । अपिशब्दादिशुद्धिकारः,  
यथा- सिकृतोपलम् । उपलस्त्वस्या ॥ २०० ॥ कील्यते बध्यते कील्यलम् । मूल प्रतिष्ठायां, मूह  
बन्धने, आघे यथा- मूलप्रकृतिरिहकृतिः ( साध्यकारिका ), मूलं घनम् । शिफा इष्टवटा, भे नक्ष-  
त्रविशेषः ( मूलम् ) । अन्तिकेपि यथा- कृष्णमूलम् । जल पान्ये, आनाजो रज्जुवितानः ( बाळम् ) ।  
गवाक्षे यथा- जालान्तरगतवे भानौ ( मनुः ) । क्षारको मुकुलवृन्दम् । अपिशब्दाद् इत्ये, इन्द्रजाते च  
( जालम् ) ॥ २०१ ॥ कील समायो, स्वभावे यथा- हरणक्षीलः । शोभने बुते ( यथा )- कीलचनः  
साधुः । सत्ये ( फलं ) यथा- ओषध्यः फलपाकान्ताः ( चन्द्रतारिः ) । हेतुना कृते यथा- अधिभ्रव-  
णादेः पाकः फलम् । आयुधाम्रे लभे फलके, आम्नादी धान्यादिकणे च ( फलम् ), मुखावौ रूपव्यात् ।  
छादिर्हृच्छादनं, नेत्ररजि यथा- तिमिरं काचतां याति पटलं तदुपेक्षया ( चरकम् ) । समूहे यथा-  
पञ्चोदपटली, पटं विस्तरं लाति पटलम् ॥ २०२ ॥ अघो यथा- पादतलम् । स्वरूपे यथा- तनुतल्ये-

गोरोरुणे सिते पीते व्रणकार्यप्यरुष्करः ।  
 जठरः कठिनेपि स्यादधस्तादपि चाधरः ॥ १९० ॥  
 अनाकुलेपि चैकाग्र्यां व्यग्र्यां व्यासक्त आकुले ।  
 उपर्युदीच्यभ्रंघ्रंष्वप्युत्तरः स्यादनुत्तरः ॥ १९१ ॥  
 एषां विपर्यये भ्रंघ्रं वरानात्मांस्तमाः पराः ।  
 स्वादुप्रियौ च मधुगौ क्रूरा कठिननिर्वयौ ॥ १९२ ॥  
 उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ।  
 मन्स्वच्छन्द्याः स्वरः शुभ्रमुद्गीतशुक्लयोः ॥ १९३ ॥  
 चूडा किरीटं केशाश्च संयता भीलयस्त्रयः ।  
 द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९४ ॥  
 कृतान्तानंहसाः कालश्चतुर्थेपि युगे कलिः ।  
 स्यात्कुरङ्गोपि कमलः प्रावरोपि च कम्बलः ॥ १९५ ॥  
 करोपहारयोः पुंसि ब(व)लिः प्राण्यङ्गजं स्त्रियाम् ।  
 स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९६ ॥  
 वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।  
 भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९७ ॥

जठरं, अपिशब्दात्कुक्षो । अपिशब्दादोष्ठे हाने दुर्धरे च ( अधरः ) ॥ १९० ॥ अपिशब्दादवाहिते, एकमग्रं चिन्तनीयमस्यैकाग्रः । विविधमग्रमस्य व्यग्रः, विशेषागाति वा । उपरि यथा— इत उत्तरम् । उदीच्ये यथा— उत्तरं कुरवः । भ्रंघ्रे यथा— लोकोत्तरम् । अपिशब्दाद्वाक्ये यथा— निरुत्तरीकृतः । प्रतिवाक्ये यथा— प्रत्यथोवाधिया वृच्छा तस्य भजनमुत्तरम् । अतिशयेनोद्गतमुत्तरम् । नास्त्युत्तरमत्रा-  
 नुत्तरम् ॥ १९१ ॥ एषामुपर्यादीनां विपर्यये बुद्धे दक्षिणेऽधमे वचनाभावे च ( अनुत्तरः ) । अनात्मा-  
 त्मनोन्यः ( परः ) । उत्तमोत्रोत्तरतः, पूर्वोदन्यः शत्रुश्च ( परः ), पिभतीति परः । मधु माधुर्यमस्यास्ति  
 मधुरः, ऊषश्चुषीतिरः, ( सू० ) । कृणाति कृन्तति वा क्रूः ॥ १९२ ॥ उच्चैरारात्युदारः, अनाकुलेपि ।  
 इतं राति— एति वा— इतरः । स्वेनेतं स्वस्य— ईरो वा स्वरः, स्वादीरेरिणोः ( वा० ) इति वृत्त्येका-  
 देशो । शोभते शुभ्रम् ॥ १९३ ॥ आसारो वेगवद्वयं सैन्यप्रसरणं तथा । चाराम्बुगाते चोत्कर्षेणै कटाहे  
 तु कर्परः । बन्धुरं सुन्दरे नम्रं गिरिगन्दुकशेखरोः । चरुः स्थाल्यां हविःपक्तावधीरः कातरे चले ॥  
 अथ ज्ञान्ताः । संयता बद्धाः केशा मौलिः, मूल प्रतिष्ठायां, मूत्रं बन्धने वा । द्रुमविशेषः पीलुः । मात-  
 ङ्गोश्च हस्ती । पील गतो ॥ १९४ ॥ अनेहा कालः क्षणत्रयादिः, कलबति भूतानि कलबत्यायुर्वा  
 कालः । महाकाले मृत्यो कृष्णवर्णं च ( कालः ) । अपिशब्दात्कलहे, निरर्थके रणे तुपचारात् ( कलिः ),  
 कल क्षेपे । अपिशब्दात्सामर्थ्यसैन्ययोः कमलम् । कमला तु श्रीः । कमलते कुसितमलति च ( कमलम् ) ।  
 अपिशब्दात्सास्त्रायां नागविशेषे च, काम्बते कुसितं बलति च कम्बलः ॥ १९५ ॥ करो राजप्रह्वः,  
 पूजोपकरणमुपहारः, प्राभ्यगजस्त्वक्चक्रोचः ( बलिः ) । आद्य ओष्ठपादिरन्त्यो दन्त्योष्ठपादिरिति विशेषे  
 न गणितः । बल प्राणने, बल संवरणे, दैत्येपि बलिः । स्थौल्यादी रुगात्कीर्णे ( बलं ), काकहलधरो-  
 स्तु ना पुलिङ्गः ( बलः ) ॥ १९६ ॥ वातात्समूहेच ( वा० ), तं न सहत इति— ऊलः । उन्मत्तेप्याहुः, वातुल-  
 वातलो च दुर्दयेते । विश्वमालमनर्थोऽस्माद्व्यालः । अह उद्यमे, व्यालोपि । स्त्रियां तु व्याली ॥ १९७ ॥



गुहावम्भी गह्वरे वे रहोन्तिकमुपह्वरे ।  
 पुरोधिकमुपर्यधाण्यगारं नगरे पुरम् ॥ १८४ ॥  
 मन्दिरं चाथ राष्ट्रास्त्री विषये स्यादुपह्वरे ।  
 द्रोस्त्रियां भये श्वभ्रे वज्रोस्त्री हीरके पथौ ॥ १८५ ॥  
 तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छेद ।  
 औशीरं चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ॥ १८६ ॥  
 पुष्करं करिहस्ताये वाद्यमाण्डमुखे जले ।  
 व्योम्नि खड्गफलं पत्रे तीर्थौषधिविशेषयोः ॥ १८७ ॥  
 अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तास्त्रिभेदावर्च्ये ।  
 छिद्रात्तमीयविनाषहिरवसरमध्येन्तरात्मनि च ॥ १८८ ॥  
 मुस्तेपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ।  
 शार्वरं त्वन्धतमसे घातुर्मे वृ( -घ )लिङ्गकम् ॥ १८९ ॥

गुह्यते गुहा, भिदादिः ( विद्भिदादीति ) । गाहनं गाहते वा गह्वरं, निक्षेपेति । रहो निर्जनं, उपह्व-  
 रन्तरेष्वह्वरम् । पुरो यथा- अभेसरः । अधिकं यथा- सामं शतम् । उपरि यथा- वृक्षप्रम्, अगल-  
 प्रम् । भिक्षाभेदेपि ( अन्नं ), यत्स्मृतिः- प्रासप्रमाणं भिक्षा स्वादप्रं प्रासचतुष्टयम् । अमं चतुर्गुणं प्राहु-  
 र्हेतुकारं द्विजोत्तमाः ॥ मुख्ये तृपचारात्, यथा- अप्रहारः । वशब्दः पुरापङ्कः, सर्वतोभद्रादियामे  
 देहेपि पुरम्, पिपतिं पूर्वते च, मन्दतेत्र मन्दिरम् ॥ १८४ ॥ राजने राष्ट्रं, विषयो अनपदः । उपह्वरे  
 यथा- परगष्टमयम् । दृ भये, दृ विदारणे, श्वभ्रे दर्यपि । द्रोति- ईषदर्थेव्यर्थं देवं पदं वा, यथा- द्रव-  
 क्तिहरिद्रापिञ्जराभ्यङ्गकानि ( राजशेखरः ) । वज्रत्येव न प्राप्तहन्त्यते वज्रं, हीरको मणिग्यवर्क रत्नम् ।  
 वज्रोच्चानिच ॥ १८५ ॥ तन्वते तन्वयते वा तन्त्रम् । प्रधाने यथा- द्विस्त्वमतन्त्रम् । सिद्धान्ते यथा-  
 चतुःशीठमिदं तन्त्रम् । सूत्रवाये यथा- तन्त्रवायः । परिच्छेदे यथा- तन्त्रपतिः । अत एव स्वमण्डल-  
 चिन्ता तन्त्रम् । आंयत्तेपि यथा- स्वतन्त्रः । शास्त्रप्रक्रियाशब्दव्युत्पासिधौपधादि च, यथा- साधारणं  
 भवेत्तन्त्रं यथा श्वेतो धावति ( भाष्य० ) । उच्यते काम्यतं इत्यङ्गमात्, दण्डो यष्टिः । शयनासनयोः समु-  
 दितयोः संक्षेपम् ( औशीरं ) । अपिशब्दादुशीरस्येदं ( औशीरम् ) ॥ १८६ ॥ वाद्यमाण्डे मुरजस्व  
 मुखे, तीर्थौषधौषे यथा- पुष्करं दुष्करं गन्तुम् । औषधविशेषे यथा- पुष्करमूलानि ॥ १८७ ॥ अर्न्तं  
 राल्यन्तरम् । अवकाशे यथा- अन्तरं देहि ( वा० रा० ) । अवधौ यथा- मासान्तरे देयम् । परिचाये  
 यथा- अन्तरे शाटका अन्तःपरिधानाया इत्यर्थः ( काशिका० ) । अन्तर्धौ यथा- पर्वतान्तरिताः  
 श्रियः । भेदो विशेषः, यथा- अन्तरहो भव सदा धनस्व च जनस्व च । तादर्थ्ये यथा- आन्तान्तर-  
 स्तण्डुलः । छिद्रे यथा- अन्तरं लङ्घ्यारोः प्रहरेत् । आत्मीये यथा- अकमभ्य[ त्र ]न्तरो मम ।  
 विनार्थे यथा- अन्तरेण पुरुषकारं न किञ्चित्स्थितिः । बहिरर्थे यथा- अन्तरे चाण्डालगृहा बाह्या इत्यर्थः ।  
 अवसरं यथा- अन्तरतः संवत्सरः । मध्ये यथा- आवयोरन्तरे जाताः पर्वताः सारितो दुमाः ( महा-  
 नाट० ) । अन्तरात्मानि यथा- अन्तरात्मा, तथा च, दृष्टान्तरं ज्योतिरुपराराम । वशब्दादन्यार्थे यथा-  
 वस्त्वन्तरम् ॥ १८८ ॥ अपिशब्दात्स्यात्यां ( पिठरं ), पिठं अवयवे । राजकशेरुर्लज्जकन्दविशेषः  
 ( नागरम् ) । अपिशब्दाच्छुण्ठी, नगरभवं च ( नागरम् ) । शर्वर्था भवं शृणाति वा शार्वरं, घातुक्यासा-  
 विभो हस्ती च ॥ १८९ ॥ गौर एव गौरः । अपिशब्दाद् भल्लतकः ( अदृक्करः ) । जठते ( जायते )

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहाशुवाजिषु ।  
 शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ॥  
 शर्करा कर्परांशेपि यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७६ ॥  
 इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्तन्त्री निद्राप्रमीलयोः ।  
 धात्री स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि ॥ १७७ ॥  
 धुम्ना द्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।  
 त्रिषु कूरेऽधनेत्येपि धुम्नं मात्रा परिच्छेदे ॥ १७८ ॥  
 अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कात्स्न्येवधारणे ।  
 आलङ्क्याश्चर्ययोश्चित्रं कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७९ ॥  
 योग्यभाजनयोः पात्रं पत्रं वाहनपक्षयोः ।  
 निवेशमन्ययोः शाखं शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १८० ॥  
 स्याज्जटाशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।  
 मुलाग्रे क्रोडहलयाः पात्रं गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८१ ॥  
 सत्यमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेपि च ।  
 अजिरं विषये कायेप्यम्बरं व्याम्नि वाससि ॥ १८२ ॥  
 चक्रं राष्ट्रेप्यक्षरं तु संक्षेपि क्षीरमप्सु च ।  
 स्वर्णेपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेपि गोपुरम् ॥ १८३ ॥

भूवाक्सुराभापः । तननं शाल्यस्यां तन्त्री, तन्दापि । प्रमीला- इन्द्रियग्लानता । धन्यन्तेनां धत्ते च धात्री,  
 उपमाता क्षीरदात्री ॥ १७६ ॥ धुणति ध्रुयते च धुद्रम् । द्यङ्गा हीनाङ्गी, वेश्या शीलहीनोपलक्षणं,  
 सरघा मधुमक्षिका ( धुद्रा ) । अधनो निःस्वः ( धुद्रः ) । अपिशब्दात्कृपणः ( सुद्रः ) ॥ १७७ ॥  
 परिच्छेदे यथा- महामात्रः । अल्पे यथा- मात्रया विलेपनं ताम्बूलं चोपयुज्य । परिमाणे यथा- मात्रायां  
 सर्वकालं स्यात् । धने कर्णभूषणेऽक्षनिमेषकले तालाङ्गे च ( मात्रा ) । कात्स्न्यं यथा- हस्तमात्रम-  
 मिच्छन् ॥ अश्वधारणे यथा- न स्तनमात्रगमनोत्पन्नभूषणानाम् ( शिशुः ) । स्वार्थेपि यथा- तावन्मा-  
 त्रम् । धीयते चिन्त्यते वा चित्रम् । नानावर्णे च ( चित्रम् ) । चित्रकं तु तिलकम् । चित्रा सुभद्रानक्षत्रयोः ।  
 कलं दुर्बलं प्रायते कलत्रं कलयति वा ॥ १७८ ॥ पाति पीयतेनेन च पात्रम् । नदीकूलान्तरे यज्ञभाण्डे  
 नाप्यानुकूलैरि ( पात्रम् ) । पतन्ति यान्त्यनेन पत्रम्, पर्णेपि । निदेश आत्मा, शासनं शास्यतेनेन  
 शास्त्रम् । शस्यतेनेन शस्त्रम् ॥ १७९ ॥ जटा वृक्षमूलं, अंशु कं पटोत्र, नयति नीयतेनेन नेत्रम् । मन्था-  
 नरञ्चो बस्तिनाप्यामक्षिणं च ( नेत्रम् ) । क्षिणोति क्षीयते वा क्षेत्रम् । केदारे सिद्धस्याने गणितव्यद्वारे  
 च ( क्षेत्रम् ) । क्रोडः सूकरः, तस्य मुखः प्रोणा, पुनस्त्यनेन पोत्रं, हस्तसूकरयोः पुत्रः ( सूः ) दूत ।  
 गूयते शब्दपतेनेन गां लायते च गोत्रं, चशब्दात्कुले शैले च । गोत्रा तु भूः, गोसमूहश्च ॥ १८१ ॥  
 क्षीरन्त्यत्र सत्त्वं, दम्भे साधने चशब्दात् । अजन्त्यत्राजिरं, विषये रूपादौ । अपिशब्दात्प्राङ्गणे ( अजि-  
 रम् ) । अम्बतेम्यते वाम्बरम् । सुगन्धद्रव्यभेदेपि ( अम्बरम् ) ॥ १८२ ॥ करोतेषकतेष रूपं ( चक्रम् ) ।  
 आपिशब्दादायुधे रथाङ्गे सैन्ये राष्ट्रे तैलिककुलालायुगकरणे च ( चक्रम् ) । चक्रस्तु चक्रवाके । दुरुयोगपु-  
 नावर्तबोधाक्षिका । न क्षरत्यक्षम् । अपिशब्दाद् ब्रह्मपरब्रह्मणोः ( अक्षरं ) । पश्यते क्षीरम्, चशब्दाद्  
 दुग्धे । अपिशब्दात्प्रभूतेन्द्रोः ( भूरिचन्द्रौ ), भवति भूरि । अपिशब्दात्पुद्गारे, गोप्यते गोपुरम् ॥ १८३ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवावापि ।  
 मत्वेयुपखण्डेपि स्वरुग्नेप्यवस्करः ॥ १६८ ॥  
 आढम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ।  
 ( अभिहारोभिरांगे च चौर्ये संनहनेपि च ॥ १६९ ॥ )  
 स्याज्जङ्गमे परीवारः स्वङ्गकोशे परिच्छदे ।  
 विष्टरो विटपी वर्ममुष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १७० ॥  
 द्वारि द्वाःस्थं प्रतीहाः प्रतीहार्यप्यनन्तरं ।  
 विपुले नकुले विष्णी बभ्रुः स्यात्पिङ्गलं त्रिषु ॥ १७१ ॥  
 सारो बले स्थिरांशे च न्याये ( व्यं ) क्लीबं वरे त्रिषु ।  
 दुरोदरां घृतकारं पणं घृते दुरोदरम् ॥ १७२ ॥  
 महारण्ये दुर्गपथं कान्तारः पुनपुंसकम् ।  
 मत्सरोन्यशु मद्गेषे तद्वत्कृपणयास्त्रिषु ॥ १७३ ॥  
 देवाद् घृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक् प्रियं ।  
 घंशाङ्कुरं करीरास्त्री तरुभेदे घटे च ना ॥ १७४ ॥  
 ना चमूजघने हस्तसूत्रं प्रतिसरोत्स्रयाम् ॥ १७५ ॥

व्यावधारणं ( मन्त्रः ), मायावीजादिश्च । मेयाति स्निहति मित्रः । अपिशब्दान्मित्रं मुह्यन् । मसादिषु  
 बहुवचनेषु ( स्वरः ) । अपिशब्दाद्वज्रे, स्वरति स्वरः । अन्ये तु सान्तमाहुः, शोभनान्यस्मिन् यस्येति,  
 ऋणस्थाने ऋग्ं पेटुः । अपिशब्दाद्वचस्के, अवकीर्यत इति, वचस्केवस्करइति ( सू० ) साधुः ॥ १६८ ॥  
 आढम्बरं [ डम्बर ] न्ते भीरवानेनेत्याडम्बरः । संरम्भेपि, यथा— आडम्बराणि पूजयन्ते स्त्रांषु राजकुलेषु  
 च ॥ १६९ ॥ परिवार्यतेनेनेति, परिवाराणेपि । परिच्छदः परिजनादिः ( परीवारः ) । विस्तीर्यते विष्टरः,  
 वृषासनयोर्विष्टरः ( सू० ) साधुः । दर्भमुष्टिर्ग्रीवामः [ परिमाणः ] तस्य विष्टरत्वं आदादौ ब्राह्मणासनत्वे-  
 नान्मानात् । पीठाद्यमासनाविशेषणम् ॥ १७० ॥ प्रति ह्ययं निवार्यते प्रवेशोनेनात्र च प्रतीहारः । अन-  
 न्तरे द्वाःस्थं द्विषां प्रतीहारी, अपिशब्दो द्वः स्यापेक्षः । विभर्ति बभ्रुः ॥ १७१ ॥ सस्थिरेति ( सू० )  
 कर्तरि षम् ( सारः ) । बले यथा— सुसारः, घृतान्मांसं तु सारकृत् । स्थिरांशे यथा— चन्दनसारः,  
 मन्मासारः । न्याये यथा— नैतस्सारम् । वरे यथा— जये धरिः यथा— पुरमेव सारम् । दुष्टमासमन्तादुदरमस्व  
 दुरोदरम् ॥ १७२ ॥ कस्याम्भसंज्ञं नाशमुच्छति कान्तारः, कान्ता आरा धारा अत्र (स्य) वा । मायाति  
 परकुच्छे मदात्सरति वा मत्सरः, तद्वान् मत्सरवान् ॥ १७३ ॥ देवादिभ्यो घृते याचिते, रूपास्तुंषि,  
 वदद्गुः— तपोभिरिष्यते वस्तु देवेभ्यः स वरो मतः ( कात्यः ) । श्रेष्ठे यथा— वरं कृपयताद्विपी, अय-  
 यमित्येके । विवाहोपि वरः । करोति करिणमीरयात् किम् [ कीर्ष ] ते च करीरः । चशब्दाद्विशेषेष्वपि  
 ॥ १७४ ॥ चमूजघनं सेनापथाद्भागः, हस्तमूत्रं विवाहादौ कैतुकं मङ्गलार्थमूर्णाम्बं मणिबन्धसूत्रं  
 ( प्रतिसरः ), यागादौ तूपचारात् । नियोज्येपि ( प्रतिसरः ) ॥ १७५ ॥ कपिले पीतवर्णे पुमान्, तद्वति  
 त्रिषु, हरति हरिः । धीर्यते शर्करा, कर्परांशो मृत्कपालखण्डः । अपिशब्दादिषु विकारे शर्करादेव  
 ( शर्करा ) । बाप्यतेनया [ बात्रा ], यापने भोजनादिवर्तनं यथा— प्राणयात्रा । गतिर्यत्र यथा—  
 विषययामा । देवोत्सवेपि, यान्त्यत्रेति ( यात्रा ) ॥ १७५ ॥ इय इत्येव रूपं, इयमलमन्नसद्यः, दुर्गमं— इय

न्याप्येपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमवैवते ।  
 निवहावसरीं वारौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरी ॥ १६२ ॥  
 गुरु गीष्पतिपित्राघौ द्वापरौ युगसंशयौ ।  
 प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविङ्गिताकृती ॥ १६३ ॥  
 किंशारु धान्यशूकं पू मरुं धन्वधराधरी ।  
 अद्रयो द्रुमशैलाकाः स्त्रीस्तनाब्दी पयोधरी ॥ १६४ ॥  
 ध्वान्ताखिलानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः कराः ।  
 प्रवरा मङ्गनारीरुगवाणा अस्त्राः कचा अपि ॥ १६५ ॥  
 अजातशृङ्गो गीः कालं प्यश्मश्रुर्ना च त्वरी ।  
 स्वर्णेपि राः परिकरः पर्यङ्कपरिवारभाः ॥ १६६ ॥  
 मुक्ताशुद्धी च तारः स्याच्छारां वायौ स तु त्रिषु ।  
 कर्पूरथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ॥ १६७ ॥

दन्तरे युक्ते प्रमाणेवलमे च, मन्वते मध्यः । सोमो देवतस्येति सौम्यं, सोमाध्वण् ( सू० ), सुन्दरे  
 तृपचारात् । चन्द्रजे च ( सौम्यः ) । बर्गस्तु- सर्वज्ञानिपजो वैद्यावात्मा कामश्च हृच्छयो । फलकस्या-  
 नयोभेदं योमयं सांप्रतिके त्रिषु ॥ क्रियाचारातिक्रमोपि जलाधारेपि चाशयः । दैत्याचार्योपि पिप्प्यो ना  
 कापायः सुरभाषि ॥ चन्द्रोदयो वितानेपि स्यादात्मनोऽन्ये धृतौ । शीताशिते शिते दैत्यं जलं कुल-  
 जकान्तयोः ॥ व्यषादो व्यवधौ च स्यात्कुल्या कुलवधुः सरित् ॥ अथ शान्ताः । निवहो यथा- प्राम-  
 वारः । अवसरो यथा- वारंवारमुदारसंगरमुक्ते । सेवाक्रमेपि यथा- वारस्त्री । वारः सूर्यादिवसः ।  
 संस्तीर्यते संस्तरः शय्या । संस्तीर्यन्ते दमां अत्र संस्तरौ यज्ञः ॥ १६२ ॥ शृणाति गुरुः । गीष्पति-  
 र्भावः ( गुरुः ) । आशब्दात्स गुरुः क्रियां कृत्वा वेदमस्मे प्रयच्छति । तथा गुरु दुर्वहं, अलघु च ।  
 ह्यभ्यां कृतत्रेताभ्यां परं द्वापरं युगम् । संशयं द्रौ परां मुह्यन्तत्रत्युभयकोटिस्फुक्त्वात् । पृषोदरादित्वात्  
 ( सू० ) आत्मम् । भेदो विशेषः, यथा- पलाण्डुप्रकारा गृज्जनादयः । सादृश्ये यथा- विषप्रकारः  
 पिपुनः । इह गीतं भावसूचकं चेष्टितम्, आकृतिवैवर्ण्यादिः सोमवेशश्च ( आकारः ) । १६३ ॥ किञ्चि-  
 त्कृत्स्नितं वा शृणाति किंशारुः, इषुः शरः । त्रिपन्तेस्त्रिन्दुर्गमत्वान्मरुः, धन्वा निर्जलो देशः ।  
 अद्यतेति वारिः । अन्दो मेघः ( पयोधरः ) ॥ १६४ ॥ शृणोति वृत्रः । कीर्यते करोति वा करः,  
 बलिः- राजप्रणयम् । मेघोपलस्तु करकः । हस्तिशुष्कापि करः, उपचागात् । प्रदीर्यतनेनेति प्रदरः,  
 नारीरुगतिरजःसावः । अस्थन्ते- अस्त्राः । अपिशब्दाद्वाष्णोष्कृ चासम् ॥ १६५ ॥ कालेपीति गवि  
 नरि च काकाक्षिवयोग्यम् । तनोति तू- लक्षणं, प्रदेयदूः ( उ० ) बाहुलकात्, तं शृणोति छादयति  
 त्वरः । शतैः ( उ० ), अपिशब्दाद्विज्ञे मेघे च । परिक्रियते परिकीर्यते च परिकरः । समूहाभ्ययोः  
 प्रगाढमात्रिकावन्धे च ( परिकरः ) ॥ १६६ ॥ मुक्तानां शुद्धिस्तारो नाम गुणः, लक्षणया शुद्धमौक्तिकं ।  
 चशब्दस्फुरनीनिकातारकबोधे तारावत् । अत्युच्चस्वरे रूप्ये च ( तारः ) । श्वायुवर्णनिवृत्तेषु ( वा० )  
 इति कर्तारि चम् । कर्पूरो नानावर्णः ( शारः ) । प्रतिज्ञायां यथा- सत्यसंगरः । आज्ञो यथा- संगरो  
 विक्रियाकरः । संविदि यथा- अन्योन्यं वृत्तसंगरो । आपदि यथा- संगरे शरणं सुदृढं, संगरर्णं संगिर-  
 न्तेत्र च संगरः । शमीफले तु संगरम् ॥ १६७ ॥ मन्त्रत्राङ्गनात्मको हि वेदः । गुप्तवादो रहसि कर्त-



वृषाकपायी धीगौर्यैरभिह्वया नामशोभयोः ॥ १५६ ॥

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ।

उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥ १५७ ॥

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५८ ॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्या मध्येभवन्धने ।

कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेदे भनादिभिः ॥ १५९ ॥

जन्यः स्याज्जनवादेपि जघन्योन्त्यं ( न्ते ) धमोपि च ।

गर्हाधीनौ च वक्तव्यौ कक्ष्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १६० ॥

आत्मवाननपतोर्यादर्थ्या पुण्यं तु चार्धपि ।

रूप्यं प्रशस्तरूपेपि वदान्यो वल्लुवागपि ॥ १६१ ॥

यथा- वृषाकपायैर्मन्थेति सत्रपः किं न गोत्रभिद् । अभिह्वयायतेनयाभिह्वया संज्ञा, यथा- भेता-  
भिह्व । शोभाया यथा- काण्डभिह्वया तयाराजत् ( १५० ) । कीर्तिं च ( अभिह्वया ) ॥ १५६ ॥  
मन्वादी कृष्यःशच ( सू० ), आरम्भे यथा- सर्वाः क्रिया मन्त्रमूलः नृपाणाम् । निष्कृतिर्यथा- महा-  
पानाकेना पुंसो भवेत्प्राणान्तिका क्रिया । शिक्षा यथा- क्रिया द्विद्रव्यं विनयति नाद्रव्यम् ( कोटिल्यः ) । पूजनं  
यथा- गुरुदेवक्रियारतः । संप्रधारणं विचारः, यथा- क्रियां विना को हि जानाति कृत्यम् । उपायो यथा-  
छायादिः क्रिया । कर्म यथा- पाकक्रिया । चेष्टा यथा- स्तम्भे स्यान्निक्रियो जन्तुः प्रलये गतच-  
तनः । चिकित्सा यथा- पुनर्जरे समुत्पन्ने क्रिया पूर्णवराणुषा ( चरकसं० ) । चात्वर्येपि, यथा- क्रिया-  
मात्रं धाम् । आख्यातं तुष्टचारत्, यथा- क्रिया वा कारकान्विता ( पृ० २८ ) । गर्भाधानादिसंस्का-  
रोपि यथा- स गुरुयः क्रिया कृत्या वेदमस्मै प्रयच्छति । और्ध्वदेहेकं यथा- अतो न रोदितव्यं हि  
क्रियाः कार्यः प्रयत्नतः ॥ १५७ ॥ छयाति सतापं छाया, छो छन्दे । छायाख्यार्कभयो । कान्तां यथा-  
विच्छायः पुरुषो भवेत् । प्रतिबिम्बे यथा- संक्रान्तच्छाय आदर्शः । आतपाभावे यथा- नष्टच्छ यो  
मप्याद्वा ॥ १५८ ॥ राजगृहादेः प्रारम्भकृष्टके यथा- सप्त कक्ष्याः अतिक्रम्य । कक्ष्यावन्धनशोभं यथा-  
परिधानाद्वाहिः कक्ष्या निवद्धा ह्यासुरी भवेत् । मध्ये- इमस्य बन्धने यथा- हेमकक्ष्या गजाः । उपोदे  
कक्ष्या यथा- परार्थं वद्धकक्ष्याणां त्वादृतामुद्रवः वृतः । क्रियायां करणे कृत्या यथा- कां कृत्याम-  
कषीः, प्रध्राह्वानयोरिव ( चान्द्रसू० ) इति क्यप्- वा । देवता मारी नाम, यथा- तानि कृत्याह-  
वलीव । भनादिना यः शत्रोर्भयते स कृत्यः, यस्कोटिल्यः- कुदलुधभीतावमानिताः परेषां कृत्याः ।  
धर्मं च कृत्यम् ॥ १०९ ॥ जनस्य जल्यो जन्यः, मतजनहलात्करणजन्यकरणेषु ( सू० ) । अपिशब्दा-  
दुत्पत्तः संप्रमोपि ( जन्यः ) । जननीयः पितरौ च, तथा संज्ञायांजन्माः ( सू० ) जनो वहन्तीति ।  
अपिशब्दाजघनभवे, शरांरावयवयत् ( सू० ) । चतुर्दशद्वयः, वायव्यशब्देपि गद्यार्थे शशी । कल्लु  
छापुः कल्पः, सज्जेनुगुणः । दक्षेति ( कल्पः ) । कल्लं ह्यस्तनं श्वस्तनं-बाहूः, प्रमातं च । कल्प्या  
कादमिनी ॥ १६० ॥ आत्मवानर्थनीयोऽर्थे साधुर्वा, अन्नज्ञानेति पाठे धर्ममोर्ध्वः । ( अर्थः ) धर्म-  
पण्येति ( सू० ) यत् । पुणाति पुण्यं, अप्यादिः ( उ० ) । अपिशब्दात्सुकृतं धर्मश्च ( पुण्यम् ) ।  
अपिशब्दादाहृतं हेमरूप्ये, रूपादाहृतप्रशंसयोः ( सू० ) इति यप् । वदति वदान्यः, वदेरान्यः ( उ० ) ।  
अपिशब्दाहाता, वदन्यश्च- एकदेशविकृतः ॥ १६१ ॥ ( न्याये ) यथा- मध्यस्थः । अपिशब्दा

अत्ययोतिक्रमे कुच्छ्रे वीषे दण्डेऽप्यथापदि ।

युद्धायत्याः संपरायः पूज्यस्तु भवशुरेपि च ॥ १५० ॥

पञ्चावस्थायां बलं समवायश्च संनयः ।

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्यमी ॥ १५१ ॥

विस्त्र ( अ ) भ्रमयाच्छाप्रमाणो विरोधेपि समुच्छ्रयः ।

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दाविकेष्ट्यपि ॥ १५२ ॥

निर्यासेपि कषायांस्त्री स्यात्सभायां प्रतिश्रयः ।

प्रायो भूम्यन्तगमने मनुर्द्विन्य कर्तो क्रुधि ॥ १५३ ॥

रहस्यापस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतर्धयोः ।

वीर्यं बलं प्रभावश्च द्रव्यं भव्यं गुणाश्रयं ॥ १५४ ॥

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भर्ता भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ।

कसे ( शे ) रुहम्नां गार्ङ्ग्यं विशत्या दन्तिकापि च ॥ १५५ ॥

अन्योन्यसमयः । संकेतोवसरो नियमश्चोपचारात्, यथा- न समयपरिष्कर्णं क्षमं ते ( किरानाजुं ) ।  
 विरुद्धो नयो व्यसनं ( अनयः ), बाहुगुप्यस्यायथावत्प्रयोगात् । न श्रेयः ( अयः ) अनुकूलं देवमनसः ।  
 विरुद्धं नयनं विषदु ( अनयः ) ॥ १४९ ॥ अतिक्रम उल्लङ्घनं यथा- धर्मस्यात्ययः । रुच्छ्रे यथा-  
 प्राणात्ययः । दोषे यथा- गुणिनां नात्ययं कुर्यात् । दण्डे यथा- वाकपादपेक्षयः शतम् । सम्पत्परा-  
 गमनं यत्रेति ( संपरायः ), यथा- सारप्राधिकं दुर्गं कुर्यात् । भ्रशुरः पूज्य इति स्पष्टेः, सर्वस्थेव हि  
 हानस्य प्रहीता गुरुह्यते । कन्यायाश्चैव विद्यायाः प्रदाता पूज्यते गुरुः ॥ अपिशब्दान्मान्यः ( पूज्यः )  
 ॥ १५० ॥ पञ्चावस्थायां बलमनुबलाह्वयं, समवायो मेलः, संनयति संनयनं च संनयः । सत्ये संघाते,  
 चक्षुष्याद् गृहे, यथा- विश्रम्य लौकिकान् संस्त्यायान् प्रविशेयुः । परिचबोपि ( प्रणयः ) ॥ १५१ ॥  
 विरोधो वैरं, अपिशब्दादुपगतो ( समुच्छ्रयः ), समुल्लङ्घ्य श्रयणं- ऊर्ध्वश्रयणं च । उद्विधवतीति ( सू० )  
 धम् बाहुलकादत्र नास्ति । विषिणांति बध्नाति विषयः, यस्य मत्स्यादयो जलादिज्ञातः प्रसिद्धस्तत्र  
 वर्तते । शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाधेति विषयाः । अपिशब्दाद् प्रागमसमूहे गोचरे देशे च ( विषयः ) ॥ १५२ ॥  
 निर्वासः क्षायरसः, यथा- त्रिफलाक्षयः । अपिशब्दात्कषायस्तुवराहयो रसः । रागविशेषेपि, यथा-  
 परिपक्वकषायो मुनिः । रक्षणीतवर्णयोगेपि, यथा- कषायवस्त्रः । आस्पदे च ( प्रतिश्रयः ) । भूमि  
 बाहुल्ये यथा- प्रायेणाकृतकृत्यत्वात्प्राप्त्योऽद्विजते जनः । अन्तगमनेऽनशने यथा- प्रायोपवेशनमतिवृत्ति-  
 र्बभूव ( रघु० ) । तुल्यं च यथा- मूलप्रायः, अत्रापि वा मूलैः प्रायेणेति व्युत्पत्तिः । मन्यते मन्युः,  
 कर्तो यथा- शतमन्युरिन्द्रः ॥ १५३ ॥ रहस्यं गोप्यं, उपस्थो योन्यादः, गृहनीयं गुप्तं, शांसेतुहिगुहि-  
 भ्योवाक्यपू- बक्ष्यः ( वा० ) । सति साधु सत्यं, शपथे यथा- सत्येन शापवेद्विप्रम् ( मनुः ) । तथे यथा-  
 सत्यवादी । बलं प्राणसामर्थ्यं यथा- सत्त्ववान् वीर्यसंपन्नः । प्रभात्रो द्रव्यशक्तियथा- रसवीर्यविषाकाः ( शु०  
 ५६ ) । चक्षुष्याद्रेतो वीरकर्म च ( वीर्यम् ) । भव्ये योग्ये, द्रव्यचम्बले ( सू० ) साधुः, यथा- क्रिया हि द्रव्यं  
 विनयति नाद्रव्यम् ( कौटिल्यः ) । गुणाश्रये यथा- क्रियावद्गुणवत्समवायि कारणं द्रव्यं शृङ्गयथादि ( वैशेषि-  
 कसू० ) । धर्ममौषधं च द्रव्यम् ॥ १५४ ॥ धिष शब्दे, भं नक्षत्रं ( धिष्ण्यं ) । आग्निविशेषं पुमान् ( धिष्ण्यः ) ।  
 भागायत् ( सू० ) । शुभमशुभं शुभाशुभं पुरा कृतं कर्म ( भाग्यम् ) । राजकंसंरुजंलजः कन्दोत्र न  
 पार्श्वस्थि ( गाङ्गयम् ) । दन्तिका नामौषधी, अपिशब्दाद्वाङ्मली विगतशल्या च ( विशल्या )  
 ॥ १५५ ॥ वृषाकपः स्त्री वृषाकपायी, वृषाकप्यमीति ( सू० ) डीप् णत्वम् । स्वाहा च, शचीमप्याहुः,



त्रिषु श्यामी हरितकृष्णी श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।  
 ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥  
 सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्यं प्रधानं प्रथमस्त्रिषु ।  
 वामी वल्युप्रतीपी द्वावधमी न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥  
 जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं त्रयम् ।  
 तुरंगगरुडौ ताक्ष्यौ निलयापचयी क्षयौ ॥ १४५ ॥  
 श्वशुर्यौ देवरश्याली भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ।  
 पर्जन्यौ रसवद्वेन्दौ स्यादर्यः स्वामिवेश्याः ॥ १४६ ॥  
 तिष्यः पुष्ये कलियुगे पर्यायोवसरे क्रमे ।  
 प्रत्ययाधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १४७ ॥  
 रन्ध्रे शब्देयानुशयो दीर्घद्विषानुतापयोः ।  
 स्थूलोच्चरस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥  
 समयः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ।  
 व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

श्रीलो वर्णः । शारिवा नामोषधिः ( श्यामा ), गन्धप्रियङ्गुश्च । ललति लालयति लल्यते च ललामं,  
 पुण्ड्रोभमुखेत्यवर्णं चिह्नम् । अश्वभूषा ललामाख्या । प्रधानं प्रथमं प्रथमं ।  
 केतो वया- कपिललामार्जुनः । प्रभाते शूद्रो च ( ललामम् ) । नान्तोप्यास्ति वया- कृष्णललाम  
 कमनीवमजस्य लिप्तोः ( रघु० ) ॥ १४३ ॥ सुप्र- उच्यते सूक्ष्मं, आत्मनि-अधि- अश्वत्थम् ।  
 अपिशब्दादप्येव त्रिषु ( सूक्ष्मम् ) । प्रथतेस्मात्प्रथते च प्रथमः । वमेवोतेवा रूपं, ( वामो वल्युः ),  
 वया- वामलोचना । ( वामः प्रतीपः ) यथा- विधौ वामारम्भे ( मालतीभा० ) । चशब्दाद्वामं दक्षिणे-  
 लत् । वामा स्त्री, अश्वा तु जामी । अधोभशोधमः, अधोभसोलोपथ ( सू० ) इति मः सलोपश्च ।  
 तुच्छेपि ( अधमः ) ॥ १४४ ॥ जीर्णं यथा- यातयामं गतरतं पृति पर्युषितं च वत् ( भगवद्गीता ) ।  
 परिभुक्तं यथा- दर्भाः कृष्णाजिनं मन्त्रा ब्राह्मणा हविरप्रयः । अयातयामान्येतानि निबोडयानि पुनः  
 पुनः ॥ वाता यामाः क्षपाशा अर्येति । दुर्गन्धः- भ्रमो मूर्च्छा तक्षमाण्डमजिराम्बुविनिर्गमः । श्यामी  
 भूषास्फुटो भीमा रुद्रभीषणपाण्डवाः ॥ इतो यान्ताः । तृक्षस्यापत्यं ताक्ष्यः । छि निवासे, छिम् हिंसा-  
 यम्, यक्ष्मा कृष्णान्तश्च ( क्षयः ) ॥ १४५ ॥ भशुरस्त्रापत्यं श्वशुर्यः, कर्माहम्पत्योः । भ्रातुरभ्यर्ष्य भ्रातृव्यः,  
 भ्रातृव्यश्च ( सू० ) । व्यन्सपत्ने ( सू० ), योगविभागाद् भ्रातृजे । पिपतिं जनं पर्जन्यः, पराश्वः-पूरे  
 कन्यतेनेन वा । रसवद्वो गर्जन्मेघः, अगर्जत्यपि योग्यत्वात् ( पर्जन्यः ) । अरणीभोर्यः ॥ १४६ ॥  
 तेष्विति तिष्यः, त्विष दीप्तौ, अश्वत्थः ( उ० ) । ( पर्यायः ) परावनुपाल्यवह्णः ( सू० ) इति वन् ।  
 ( प्रत्ययः ) यथायथं कर्तृभावकारणेष्वन् । अधीन आयत्तः, यथा- राजप्रत्ययाः प्रजाः । विशासे वया-  
 न शत्रो प्रत्ययं गरुडत् । हेतो वया- स्त्रीप्रत्ययः कलहः । रन्ध्रे यथा- रिपोः प्रत्ययमासाध प्रहरेत् ।  
 कण्डोत्र छतःक्षितादिः, प्रथितत्वे च ( प्रत्ययः ) ॥ १४७ ॥ देशविद्येपि ( अनुशयः ) । स्थूलस्व  
 मुखस्थोच्चयनमन्यस्यासंप्रदात्, स्थूलाबलोकनेनेत्यर्थः । इस्तिनां मध्यमगतौ, यत्पालकाप्यः-  
 नीचैर्गतं स्थूलोच्चयो वीचिमां इति तिलो गतयः ॥ १४८ ॥ शपथे वया- कृतसमयः । आचारे यथा-  
 वमवाजप्रावयेच्छिष्यम् । काले यथा- संध्यासमयः । सिद्धान्ते यथा- बौद्धसमयः । संविदि वया-

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ।  
 क्षत्रियेपि च नाभिर्ना सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥ १३६ ॥  
 सभा संसादे सभ्ये च त्रिष्वध्यक्षेपि बहुभः ।  
 किरणप्रमहौ रश्मी कपिभेकौ वृङ्गमौ ॥ १३७ ॥  
 इच्छामनामवौ कामौ शक्त्युद्योगौ पराक्रमौ ।  
 धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभाचारसोमपाः ॥ १३८ ॥  
 उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ।  
 वणिक्पथः पुरं वेदा निगमा नागरो वणिक् ॥ १३९ ॥  
 नैगमौ द्वौ बलं रामो नीलचारुसिते त्रिषु ।  
 शब्दादिपूर्वो वृन्देपि ग्रामः कान्तौ च विक्रमः ॥ १४० ॥  
 स्तोमः स्तोत्रेध्वजः वृन्दे जिह्वस्तु कुटिलेलसे ।  
 उष्णेपि धर्मश्चष्टालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ॥ १४१ ॥  
 गुल्मा रुक्स्तम्बसंनाश्र जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।  
 क्षितिक्षान्त्याः क्षमा युक्ते क्षमं शक्तं हितं त्रिषु ॥ १४२ ॥

कुसुम्भं, सुम्भ ( शुम्भ ) भासने हितायां च । अपिशब्दाद्विजिगौ राक्षि ( नाभिः ), ना पुमान्  
 चक्रम्ये तुन्दौ च स्त्री, नभते नभ्यते वा नाभिः । सुपु रभते सुरभिः, चशब्दाद्वसन्ते पुमान्, सुगन्धौ  
 च त्रिषु । मनोश्चेत्पचारत् ( सुरभिः ) ॥ १३६ ॥ सह भान्यस्यां सभा, सम्भास्तु तात्स्थ्यात् । समूहे  
 शालायां घृते च ( सभा ) । अध्यक्षोत्र गो[त्रा]यक्षः ( वल्लभः ) । अपिशब्दात् मिये ( वल्लभः ) ।  
 करभो करपाशौश्री । इतो मान्ताः । ( रसेमः ) प्रमहो वल्गादिः, राशेः सौत्रः । हवेन गच्छतीति,  
 गमय ( सू० ) इति खञ् ॥ १३७ ॥ काम्येपि ( कामः ) । कामं तु बाढार्ये । शक्तिरत्र प्रभुमन्त्रोत्सा-  
 हलक्षणा, उद्योगोरीन् प्रति यलोत्साहः ( पराक्रमः ) । धरते धर्मः, पुण्यं यागादि- आहृसा च । यमो  
 धर्मराजः, धर्मस्तु भीमवत् । न्याये यथा- धर्माधिकरणम् । स्वभावे यथा- कूरधर्मा । आचारे यथा-  
 धर्मशास्त्रम् । सोमये यथा- एष धर्मः सनातनः ( मनुः ) । युधिष्ठिरपिता च ( धर्मः ) । वेदे च  
 ( धर्मः ) । धर्मसाधने यागादौ क्लीबे, यच्छ्रुतिः- तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ १३८ ॥ उपधा-  
 मात्यपरीक्षा ( उपक्रमः ) । अपिशब्दात्तदायाचिह्यासा यथा- नन्दोपक्रमं मानानि । ( उपक्रमः )  
 चिह्नित्वा- उपायपूर्वोत्पत्त्यात् । निगम्यते निगमः, गोचरसंचरेति ( सू० ) साधुः । निगमे भगो  
 नेगमः, द्वाविति ब्राह्मणस्य नेगमत्वे निषेधः ॥ १३९ ॥ यले हलधरे, रमते रामः, णः । मार्गवे काङ्-  
 त्त्ये च ( रामः ) । वृन्दे यथा- शब्दग्रामः, गुणग्रामः । अपिशब्दाद्विषयेकदेशे षड्जग्रामादो व,  
 यदाहुः- सप्त स्वरात्रयो ग्रामा मूर्च्छेनास्त्वेकविंशतिः । गिरन्ति गुणान्ति च यं स ग्रामः । क्खन्ती पादा-  
 दिभिराक्रमण ( विक्रमः ), चशब्दाच्छेये कचित् ॥ १४० ॥ वृष्ट् स्तुतौ, अर्तिस्तुष्टु ( उ० ) इति मन् ।  
 जहाति सतां वृत्तिं जिह्वः । धर्मः, घृणु दातो ॥ १४१ ॥ गुड रक्षणे, गुम्फतेनेन गुम्भः, रुक्- उदये  
 व्याधिः । स्तम्भोत्र लतामताननृणादिसमूहः, सेनाक्षौहिण्यङ्गं ( गुल्मः ) । चशब्दाद् दुर्गादी रक्षास्थानं  
 ( गुल्मः ), बलानौ सज्जनं विटपसंघातोपि । जमति विरुद्धं जामिः, यथा- जामयो यानि गेहानि शप-  
 न्यमतिपुजिताः । क्षमते क्षमणं क्षम्यते च ( क्षमा, क्षमं ) ॥ १४२ ॥ ( श्यामः ) श्येङ् गतौ, हि-

गोधुग्गोष्ठपती गोपी हरो विष्णुर्धृषाकपिः ।  
 बाष्पमूष्माशु कशिपु त्वसमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥  
 तत्स्यं शय्याट्टवारुस्तम्बेपि विटपोस्त्रियाम् ।  
 प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोहायोः ॥ १३१ ॥  
 मेघालिङ्गा अमी कुर्मी वीणामेवञ्च कच्छपी ।  
 अन्तराभवसत्त्वं गन्धर्वो विद्यमायने ॥ १३२ ॥  
 कग्बुर्ना वलये शंखे द्विजिह्वी सर्पसूचकी ।  
 पूर्वोन्न्यलिङ्गाः प्रागाह पुंषुत्वपि पूर्वजान् ॥ १३३ ॥  
 कुम्भी घटेभमूर्धांशी डिम्भी तु शिशुबालिशी ।  
 स्तम्भी स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्मत्रिलांछनी ॥ १३४ ॥  
 कुक्षिमृणार्मका गर्मा विश्रम्भः प्रणयेपि च ।  
 स्याद् भर्या इन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे इन्दुभिः स्त्रियाम् ॥ १३५ ॥

अभिध । वायति शोषयति स्रवति च वाणः । कशति क्लेशं कशिपु, द्वयं युगपत्पृथङ् नेव । कशिपु  
 हस्तपाठः ॥ १३० ॥ तल प्रतिष्ठायां, अष्टो दुर्गप्राकारः, रणमण्डप इत्येके, यथा- विशीर्णतल्पा-  
 ( इयना ) पृः ( एषु० ) । शय्या यथा- तत्स्यं भूः स्तरणं तृणानि ( भर्तृहरि० ) । दारा यथा- गुह-  
 त्त्यगः ( मनुः ) । स्तम्भो गुम्भः ( विटपः ) । अपिशान्दात्कन्धादूर्ध्वं तरोः शाखा विटपः ( कात्यः ) ।  
 कच्छे विस्तारे तृपचारात्, विट आकेशे । बुधे लक्षणया ( प्राप्तरूप १० ) ॥ १३१ ॥ कुर्मी कमठी,  
 वीणाविशेषः सारस्वताख्यः, कच्छेन पिबति कच्छं पति वा कच्छपी । कुतपो मृगरोमेत्यपटे चाद्वो-  
 ष्येयके । इतः फान्ताः । रवर्णे पुंसि रेफः स्यात् कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः । शिषा शिक्षायां स्रिति  
 मांशिकायां च मातरि ॥ शर्फं मूत्रे तरुणां स्याद्गवादीनां खुरेपि च । गुम्भः स्याद् गुम्फने बाहोऽलक्षरे  
 च कौर्तितः । अय भान्ताः [ भान्ताश्च ] । ( गन्धर्वः ) अन्तरा मरणजन्मनोर्मध्यं भवं सत्त्वं यातना-  
 क्षीरम् । यदाहुः- अन्तराभवदेहो हि नेष्यते विन्ध्यवासिना ( कुमारिलमट० ), तत्र, लक्ष्यविरोधान् ।  
 तस्मादन्तरिक्षवासिनो गन्धर्वाख्या भूताः, यद् दयासः- अस्माभिर्यदनुष्ठेयं गन्धर्वैस्तदनुष्ठितम् ।  
 गन्ध्यते गन्धर्वः, पशुभेदेपि ॥ १३२ ॥ काम्यते कम्बुः, शम्बुकेपि । ( द्विजिह्वः ) जिह्वाय-वचनमुपचा-  
 रत् । पूर्वो वाच्यलिङ्गः । प्राप्तिदिशं देशं कालं चाह, तत्स्थं च वस्तु ( पूर्वम् ) । पूर्वजा आदि-  
 पुरावाः । आद्यर्थे तु ह्रीवे यथा- क्षरत्येनः कृतं पूर्वम् ॥ १३३ ॥ चित्तपुङ्खेपि कादम्बो नितम्बोदितटे  
 कटौ । दुर्वा फणापि विम्बोह्वी मण्डले चाकृतौ फले ॥ अय भान्ताः । इभस्य मूर्धाशः शिरोभागः  
 ( कुम्भः ) । ड्यते डिभ्यते वा डिम्भः, बालिशो मुखः । श्मि प्रतिबन्धे, स्तम्भुः स्रोतो वा, स्तम्भानि  
 गृहं वेष्टितं च स्तम्भः । ( शंभुः ) अर्हन्नपि ॥ १३४ ॥ भूण उदरस्यो जन्तुः ( गर्भः ) । कुक्षौ  
 यथा- गर्भस्थेन समस्तदा । अन्तर्भवे तुपचाधत्, यथा- रम्भागर्भमुदुः । भूणे यथा- मर्तुगर्भमुदा-  
 र्थेव । अर्भके यथा- गर्भरूपः, गीर्यते गृणाति च गर्भः । प्रणयः शृङ्गारणार्थना ( विश्रम्भः ) । अपि-  
 शान्दाद्विस्तारे विश्वासे च ( विश्रम्भः ) । इन्दु भाषते इन्दुभिः, दुनोति मांस्त्विति नैरुक्ताः । भर्या  
 यथा- इन्दुभिस्ताडितोयम् ( वेणीसंहार० ) । अक्षोत्र पाशकः, यथा- इन्दुभ्या किल तत्कृतं पतितया  
 यद शीपरी हारिता ॥ १३५ ॥ महारजनं पद्मकम् । करकः कमण्डलुः, कुक्षयति कुसुममिति मृद्वानति

अकार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते ।  
 प्रधानं परमात्माधीः प्रधानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥  
 प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाशयोः ।  
 कन्दने रोदनाद्धानं वर्ष्म वेहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥  
 गृहवेहत्विदप्रभावा धामान्यथ चतुष्पये ।  
 संनिवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥  
 आच्छादने संविधानमपवारणमित्युभे ।  
 आराधनं साधनं स्याक्वाप्ती तापणोपि च ॥ १२५ ॥  
 अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ।  
 रत्नं स्वजातिभ्रष्टेषु यने सलिलकानने ॥ १२६ ॥  
 तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं तथात्तरे ।  
 समानाः सत्समैकं स्युः पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥  
 हीनन्यूनादानगर्हो वणिग्नुरौ तरास्थिनौ ।  
 अभिषेधोपराद्धो भिषस्तद्वशापद्रुताद्यपि ॥ १२७ ॥  
 कलापो भूषणे षहं तूणीरे संहतेपि च ।  
 परिच्छदं परीवापः पर्युप्तिं सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

रूपं प्रवेष्टुमर्हति— इति कौपीनं, शालीनकौपीनेप्रभृताकार्ययोः ( सू० ) इति साधुः । कन्दनाशमिह  
 तदाच्छादनं च ( कौपीनं ) । मैथुनं युग्मं छांपुंसौ च तन्वेदं मैथुनम् । प्रधानतोस्मिन्प्रवर्तते च प्रधानम्,  
 अजहमिहृगम् । प्रकृतिमहामातो मुख्यश्च ( प्रधानं ) । ( प्रधानं ) भावे करने च स्युद् ॥ १२२ ॥  
 प्रसूयते प्रसूनम् । नियतं धनं यत्र, निवृत्तश्च धनस्य निधनम् । अन्तेपि ( निधनम् ) । ( कन्दनं )  
 भावे स्युद् । वर्पति वृष्यते वर्ष्म । प्रमाणमतोप्रतिः, यथा— व्याप्तं व्योमनि वर्ष्मणा ॥ १२३ ॥ विद्  
 तेजः, धीयतेत्र धत्ते च धाम, जन्मपि । संनिवेशो रचाना ( संस्थानं ), आकृतौ मृत्यौ च । लक्ष्यते-  
 नेन लक्ष्म, लक्ष्मे च । आच्छादने द्वे, संविधानमिति सभ्यः पाठः । अपवारणं स्यगनं, वलं तृपचारात्  
 ( आच्छादनम् ) । ( आराधनं ) करने भाव च स्युद् ॥ १२५ ॥ ( अधिष्ठानं ) अधिकरणे भावे च  
 स्युद् । चक्रं रथाङ्गं, अपिशब्दादारोपणे व्यवस्थापने च ( अधिष्ठानं ) । ( रत्नं ) यदाहुः— जातो  
 जातो वदुक्कृष्टं तद्वदनमभिधीयते ( चाणक्यश० ) । अपिशब्दान्मणी, रमन्तेस्मिन् रत्नम् । वने द्वे, वतु  
 याचने ॥ १२६ ॥ तलमस्यास्ति तलिनं, अधस्तनेपि । पान्तेभ्यः प्राक् त्रिलिङ्गाः । सह मानेन वर्तते  
 समान मानं चास्य समानः । अपिश्यति तक्ष्णोति पिशुनः, पिश अवयवे वा ॥ १२७ ॥ हीयते हीनः,  
 ऊन परिहाणे । ऊनोत्पः, गर्हस्तृपचारात् । तरो जवो बलं वास्त्यस्य तरस्त्री । अपराधत्यपराद्धः, अभि-  
 हुतोपि ( अभिषेधः ) ॥ १२८ ॥ दुर्गन्धह— स्मृदं भूम्यादिदानार्थं यातनाज्ञा च शासनम् । निदानमभ-  
 सानेपि सायं बाधुषिके धनी ॥ कक्षापटेपि कौपीनं न ना [ ज्ञाने ] खेदेपि बाधना [ वेदना ] । युज्यं  
 बलं भायैपि जनी दोषेपि लज्जाम् ॥ अथ पान्ताः । कला आप्नंति कल्पते च कलापः, भूषणे  
 कासपादौ । संहते यथा— केशकलापः । तूणं रूपे ऽपि ( कलापः ) । परिच्छदः परिकारः, पर्युप्तिः परितो  
 बाजत्यागः ( परीवापः ), स्थितिश्चलद्वं, सलिलस्थितिर्जलधार इत्येके ॥ १२९ ॥ गोष्ठपतिर्गोष्ठपत्यश्च,  
 केशकुलस्वामी च, गाः पाति गोपायति च गोपः । शृपेण दान्तेन धर्मेण वा कृपाति याति वृषाकपिः,





मन्वेथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११५ ॥

उत्साहने च हिंसार्थसूचने चापि गन्धनम् ।

आतश्चनं प्रतीवापजं वनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥

व्यञ्जनं लाञ्छनस्मध्निष्ठानावयवेष्वपि ।

स्यात्कौलीनं लोकवाक् युद्धं पञ्चहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभवे प्रयोजने ।

अवकाशं स्थितौ स्थानं क्रीडावापि देवनम् ॥ ११७ ॥

उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्भवे च ।

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेषु च ॥ ११८ ॥

मारणे मृतमंस्कारे गतौ द्रव्यैर्धृदापने ।

निर्वर्तनं पकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥

निर्यातनं धैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेषु च ।

व्यसनं विपादि भ्रंशे वीर्ये कामजकापजे ॥ १२० ॥

पद्माक्षिलाग्निं किञ्चले तन्त्याद्यंशोप्यणीयसि ।

तिथिभेदे क्षणे पर्व वत्सं नेत्रच्छदध्वनि ॥ १२१ ॥

केत्यतेनेन केतनं, कित ज्ञाने । कृत्येवश्यं कार्ये यथा- कार्यकेतनम् । केतौ ध्वजे यथा- मीनकेतनः ।  
उपनिमन्त्रणे यथा- ब्राह्मणे निकेतनं नातिक्रामेत् । तत्त्वं ज्ञानं, ब्रह्म वेदा ब्रह्म तपो ब्रह्म ज्ञानं च  
शाश्वतम् । बृहद्ब्रह्म, विप्रे यथा- ब्रह्महत्या । त्रिष्वर्थेषु क्रीडे द्वयोः पुंसि ॥ ११५ ॥ हिंसार्थं यत्सूचनं  
मतदर्शनं, यदाहुः- गन्धनं हिंसाप्रयुक्तं सूचनं, हिंसायामिलेके पेटुः । अपिशब्दात्मकाशने ( गन्ध-  
नम् ) । तञ्चु गतौ, प्रतीवापः स्वर्णादेर्द्रतस्थ द्रव्यान्तरेणावचूर्णनं विपरीतावपनम् ( आतषनम् ) ॥ ११५ ॥  
म्यज्यतेनेन व्यञ्जनं निष्ठानं भक्त्यानुपसचनं दद्यादि, अवयवः स्युः दिचिह्नम् । अपिशब्दात्कृद्धारदि  
( व्यञ्जनम् ) । कुलीने भवं कौलीनं, कुलस्थेयं वा । लोकवादोऽपवादः, यथा- मा कौलीनादासितनवने  
म्यविश्वासिनी भूः ( मेघ- ) ॥ ११६ ॥ ( उद्यानं ) भावेधिकरणे च स्युट् । वनभेदे उपवनं  
( उद्यानं ) । अधिकरणे भावे च स्युट् ( स्थानं ) । आदिशब्दाद्विजिगीषादौ ( देवनं ) । अपिशब्दात्प-  
रिदेने स्यूते च ( देवनं ) ॥ ११७ ॥ पौरुषमुद्योगः, तन्त्रं सैन्यं स्वमण्डलचिन्ता च ( उत्थानम् ) ।  
समिधिशोभनं उपविष्टस्योर्वाभावः । अपिशब्दान्मलोत्सर्गं चैत्यगृहे वास्तवन्तरे च ( उत्थानं ) । प्रति-  
रोधे, विगतमुत्थानमत्रेति । अपिशब्दात्समाधिनिवृत्तौ ( व्युत्थानम् ) ॥ ११८ ॥ यथाक्रमं भावादी  
स्युट् ( साधनम् ) । चषाद्याद्विद्भ्यो ऋके ऐन्ये- उपह्वरणे- उपाये सिद्धौ मेघे च ( साधनम् )  
॥ ११९ ॥ न्यासार्पणं निक्षेपप्रतिदानं ( निर्यातनम् ), अपिशब्दादृणादिसंशुद्धौ । व्यस्यति श्रेयोमा-  
गाद् व्यसनं, व्यस्तित्वं । कामजो दोषो मृगयाक्षपानत्रियः, कोधजो बाक्राशयदण्डपाशव्यापदुषणानि ।  
अशुभं पापे दैवानिष्टफले, अशक्तौ चोपचारात् ( व्यसनम् ) ॥ १२० ॥ पक्ष परिग्रहे, तन्तुतृष्मदीनां  
आगेत्यतरे ( पक्षम् ) । गुरुति च ( पक्षम् ) । तिथिविशेषः षष्ठ्यष्टमी- अमावास्यादिः, यथा- पर्वपर्व  
वजेचैनाम् । प्रतिपत्पञ्चदशयोः संधिश्च ( पर्व ) । क्षणः प्रस्ताव उत्सवश्च ( पर्व ) । प्रयौ चरिते च  
( पर्व ), यथा- आदिपर्व । वर्तते वर्त्म, वर्तन्ते यान्त्यनेन च । नेत्रच्छदोक्षिपुटः ( वर्त्म ) ॥ १२१ ॥

प्रायाणी शीलपायाणी पत्त्रिणी शरपक्षिणी ।  
 तरुशीलौ शिखरिणी शिखिनी वल्लिवर्हिणी ॥ १०६ ॥  
 प्रतियत्तायुभौ लिप्सोपग्रहावथ साविनी ।  
 द्वौ सारथिहयारोहौ याजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥  
 कुलप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः ।  
 वर्षाचिर्ब्रह्मिभेवाश्च चन्द्राग्न्यर्का विराचनाः ॥ १०८ ॥  
 कंशपि वृजिनो विश्वकर्माकंसुराशिल्पिनः ।  
 आत्मा यत्नो घृतिवृद्धिः स्वभावां ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥  
 शक्रो घातुकमत्तंभौ वर्षुकाब्दो घनाघनः ।  
 अभिमानार्थाविवर्षे ज्ञाने प्रणयहिंसयाः ॥ ११० ॥  
 घनो मेघ मूर्तिगुणं त्रिषु मूर्ते निरन्तरं ।  
 इनः सूर्य प्रभो राजा मृगाङ्कं क्षत्रियं वृषे ॥ १११ ॥  
 वाणिन्यौ नर्तकीवृत्तौ सवन्त्यामपि वाहिनी ।  
 हाविन्यौ वज्रताडितौ वन्वायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥  
 त्वग्वहयोरपि तनुः सूनाधांजलिः कापि च ।  
 कृतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छकं ॥ ११३ ॥

वा प्रावा । पत्राणि पक्षाः सन्त्यस्य पत्नी । श्येनोपि ( पत्नी ) । वृषकुट्टौ च ( शिखिनी ), दुर्गध-  
 शिख्याख्या वल्लिवर्हिदुद्विजकुक्कुटशार्ङ्गकाः, शार्ङ्गको मन्दपालमुनः पक्षी च ॥ १०६ ॥ उपग्रहो बन्दि-  
 प्रहणादिः ( प्रतियत्नः ) । सतो गुणान्तराधानं संस्कारश्च ( प्रतियत्नः ) । सीदत्यवर्यं सादयति वा  
 सादी । वांजाः पक्षाः सन्त्यस्य वाजी । अश्वः पूर्वं सपक्षा अभवन्, इषुः शरः ( वाजी ) ॥ १०७ ॥  
 अभिजायतेस्मादभिजनः, जनिवप्योथ ( सू० ) इति हस्वः । वर्षेचिपि च क्लृप्ते ( हायनं ) आहुः ।  
 मीदिविशेषः ( हायनः ) षट्काख्यः । जहाति जलं हायनः, इत्यत्राहिकालयोः ( सू० ) ण्युर् । विरो-  
 चते दिशेचनः, अनुदात्तेतश्च ( सू० ) इति युच् ॥ १०८ ॥ अपिशब्दाच्चर्मपापयोः क्लृप्ते, वर्ज्यते इति  
 वृजिनम् । विश्वस्य कर्माश्माद्विश्वं च कर्मास्य विश्वकर्मो । यत्ने यथ — महान्मा । स्वभावे यथा-  
 दुष्टात्मा । ब्रह्मणि यथा — आत्मेवेदं सर्वमिदं नेह नानास्ति किंचन ( कटोपानय० ) । वर्ष्म शरीरं यथा-  
 कृपात्मा । चशब्दात्क्षेत्रज्ञः ( आत्मा ) ॥ १०९ ॥ इति तच्छीलां घातुकः, स चासौ मत्तंभश्च  
 ( घनाघनः ) । वर्षति तच्छीलो वर्षुकोब्दो मेघः, इन्तीति घनाघनः, चरिचभिपतिवदीनां वद्विहवमच्या-  
 कृचाभ्यासस्य ( वा० ), इन्तेर्घत्वंच ( वा० ) इति सिद्धिः । प्रणयः प्रार्थना, मानेर्मन्यतेश्च भावे  
 रूपम् । हिंसायां तु मीनातिर्त्युत्थाहुः, मीनातिमिनोतिर्दंष्ट्रामिति ( सू० ) आत्म् ॥ ११० ॥ इत्यन्तेनेन  
 इन्ति वा घनः, मूर्तोघनः ( सू० ) इति साधुः । मूर्तिगुणः काटिन्यं, असवैगतद्रव्यपरिमाणं मूर्तिः  
 सैव गुणो वा, दर्शनं च स्पर्शनं च मूर्तिः । निरन्तरं निविडं ( घनं ) । मुस्ते कोहमुदरे बाहुत्ये च  
 ( घनः ) । घनं तु कांस्यवायम् । एतीति — इनः, प्रभुः स्वामी । सोमो राजा द्विजातीनामिति श्रुतिः  
 ॥ १११ ॥ वजुते तच्छीला वाणिनी, वणेः शब्दार्थाद्वाणिनीति सभ्यः । विदग्धापि ( वाणिनी ),  
 सवन्त्यां नयां ( वाहिनी ) । अपिशब्दात्सेनायां, वहति वाहते वा तच्छीला वाहिनी, बाह्व प्रयन्ते ।  
 वन्दा वृक्षरहा, अपिशब्दात्स्त्रीविशेषे ( कामिनी ) ॥ ११२ ॥ अपिशब्दात्कुशात्पविरलेषु, तन्यते तनुः ।  
 ( सूना ) [ वृ प्रेरणे ], अपिशब्दाद् भक्ष्यप्राणिवधस्थानम् । पञ्च सूना गृहस्थस्येति तूपचारात् । पुष्पं  
 तु सूनम् । वितन्यते वितानं, विगतं तननं वात्र । अन्ये कदर्कं [ यं ] के च ( वितानम् ) ॥ ११३ ॥



मुख्यानुयायिनि शिषौ प्रकृतस्यानुवर्तने ।  
 विधुर्विष्णी चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेखिः ॥ ९९ ॥  
 विधिर्विधानं वैवोपि प्रणिधिः प्रार्थने चर ।  
 बुधवृद्धौ पण्डितं पि स्कन्धः समुदयेपि च ॥ १०० ॥  
 वंशं नदं विशेषेणो सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।  
 विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥  
 यधूर्जाया स्तुषा स्त्री च सुधा लेपोमृतं स्तुही ।  
 संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥  
 मधु मद्यं पुष्परसं क्षीमेप्यन्धं तमस्यपि ।  
 अतस्त्रिषु समुच्चरौ पण्डितं मन्यगविति ॥ १०३ ॥  
 ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपं निर्देश्यावलम्बितः ।  
 अविदूराप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातमूषिती ॥ १०४ ॥  
 सूर्यवती चित्रमान् भान् रस्मिदिवाकरी ।  
 भूतात्मानौ भानुवही सूर्यानीषी पृथग्गनी ॥ १०५ ॥

मुख्यानुयायी यथा- अनुबन्धी ( न्यः ) शिषुः स्नेहेनानुबध्नातीति । प्रकृतानुवर्तने यथा- वैष्णवः ।  
 विधते विदधति विधते वा विधुः, विध विधाने, विधीयते धुरेः पीयते वा, धेदू पाने । पर्यन्तेऽधीयते-  
 बधिः । उपचाराद्वधाने कालेपि ( अवधिः ) ॥ ९९ ॥ ( विधिः ) भावकरणादौ किः ( उपसर्गो-  
 किः ) । अपिशब्दात्कालं धातौ कल्पे प्रकारे विधायके च वाक्ये ( विधिः ) । ( प्रणिधिः ) मन्त्रे कर्मणि  
 च किः । अवधानेपि ( प्रणिधिः ) । अपिशब्दाज्जने स्थिरे च ( बुधवृद्धौ ) । स्कन्धयति ( ! ) स्कन्धः ।  
 समुदये यथा- सप्त वातस्कन्धाः । अपिशब्दात्सैन्यभागे यथा- स्कन्धवारः । अंसं राशिं समूहे वृक्षज-  
 ष्ठाः च ( स्कन्धः ) । वीर्यं च यथा- संज्ञारूपसंवेदनासंस्कारसमुदायाख्याः [ विज्ञानलक्षणाः ] पञ्च  
 स्कन्धाः ॥ १०० ॥ देशे यथा- सिन्धुदेशः, स्यन्दते सिन्धुः, सरित्त्वामान्ये, विशेषे च यथा- सिन्धोः  
 परमपुरुषम् । विधौ विधाने ( विधा ) । प्रकारे यथा- द्विविधाः । चशब्दादस्यभादिभोजने वेतने च  
 ( विधा ) । साधनोति साधुः । अपिशब्दात्सञ्चने ( साधुः ) । युक्ते रम्यत्वात्, यथा- साधु दृष्टं बद्धं  
 इत्यम् ॥ १०१ ॥ उद्यते बध्नाति वा बधूः, ह्रीति ह्रीमात्रम् । सुधु वीर्यते धयन्ति वेतं सुधा ।  
 लिप्यतेनेनेति लेपो मङ्गोलादिः, स्तुही वज्रकन्दा यथा- सुषाह्वीरम् । मूषीपि ( सुधा ) । ( प्रतिज्ञा )  
 यथा- सत्यव्रतः । संधारणं च ( संधा ) । संप्रत्ययो भक्त्यतिशयो यथा- भद्रया परयोरेताः ( भय-  
 वद्गीता ) । स्पृहा यथा- भोजने श्रद्धालुः ॥ १०२ ॥ माद्यन्त्यनेन मन्त्रते च मधु । धुप्रभिः कूर्तं  
 शीघ्रं, धुप्रभ्रमरवदरेति ( सू० ) अम् । अपिशब्दादरे चैत्रे मधुके वधन्ते च पुंनिष्ठाः ( मधुः ) ।  
 अपिशब्दादवक्षुषि जले च ( अन्धम् ) । इत्ये धान्ता वाच्यलिङ्गाः । ऊर्ध्ववदोपि ( समुद्रदः )  
 ॥ १०३ ॥ ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य बन्धुः, परमनुष्ठानाभ्यावाज्जतिब्राह्मणः । एवं कृत्रबन्धुः । निर्देशे यथा-  
 मयस्थिताख्याने ब्रह्मणो बन्धुर्ह्यतिरिति । अवलम्बितो बलादौ रुदः ( अवष्टब्धः ) । अविदूरे यथा-  
 अवष्टब्धे सेन, अवत्पालम्बनाविदूः ( सू० ) इति पत्वम् । अपिशब्दाद्वदोपि ( अवष्टब्धः ) ।  
 प्रतिधायति प्रसाध्यते च प्रसिद्धः । लेखेपि गन्धः संवाधो गुणसंकुलयोरपि । बाधा निषेधे दुःखे च स्मृत-  
 चादिद्विधा-युधाः ॥ १०४ ॥ अथ नान्ताः । चित्रा भानवो रश्मियोनयोः । भति भानुः । भूतानामा-  
 त्मा भूतान्येवात्मास्य वा भूतत्मा । पृथक्कार्यो जनः- अवस्थत्वात्पृथग्जनः ॥ १०५ ॥ गिरिति गृणाति

धर्मे रहस्युपनिषत्स्यावृत्तौ वत्सरे शरद् ।  
 पदं व्यवसितप्राणस्थानलक्ष्माद्ग्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥  
 गोष्पदं सेविते मानं प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।  
 त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चातीक्ष्णकोमली ॥ ९४ ॥  
 मृदाल्यापदुनिर्भाग्या मन्दाः स्युर्द्वौ तु शारदौ ।  
 प्रत्यमाप्रतिभी विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥  
 व्यामो वटश्च न्यमोधावुत्सेधः काय उन्नतिः ।  
 पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥  
 परिधिर्यक्षियतरोः शास्त्रायामुपसूर्यके ।  
 बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥  
 स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।  
 दोषोत्पादेनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

कुरुराभ्युज्ज्वलार्चिको ( शरद् ) । वत्सरं यथा—जंवेच शरदां शतम् । क्षीर्यन्तेस्वामोषधयः शरत्, स्त्री ।  
 ( पदं ) कालेभ्यः पदं इति वक्ष्यमात् ( वा० ) जः । प्राणं शरणं यथा—पदमापदि माधवः । स्थानं यथा—  
 सुयोग्यः कश्चिन्मि कल्पपदा बधैव । लक्ष्म यथा—नवनक्षत्रपक्षेस्तालाङ्कितं बाहुमूलम् । अद्ग्रिवस्था-  
 पाशमे प्रपदम् ( ४० १०३ ) । वस्तु यथा—पदार्थः । पादन्त्येव पादमुहायौ सुपतिङ्न्ते च, यथा—  
 कुरु षनोऽ पदानि शनैः शनैः ( वेणिसंहार० ), पदं तुषारस्तुतिर्धौतरकम् ( कु० सं० ), पदसमूहो  
 बाण्यम् ( न्यायम. व्य० ) ॥ ९३ ॥ गोभिः सेवितं गोष्पदं, गोष्पदं सेवेतां संवितप्रमाणेषु ( सू० ) इति सः पुः ।  
 माने गोचुराश्रे, यथा—गोष्पदं प्रविष्टो देवः । आपदं प्रतिष्ठायाम् ( सू० ) संधुः, कृत्य उपचारात् ।  
 इहो मृष्टः, मधुरो रसः, यथा—रसाः स्वादूम्ललवणतिक्षोषणकषायकाः, स्वदते स्वादु । मृयते मृदुः,  
 अर्ताद्योसाहिंसः ॥ ९४ ॥ मूढो यथा—मन्दः कवियशः प्रार्थी ( रघु० ) । अल्पे यथा—मन्दोदरी ।  
 अपटुः सरद्, यथा—मन्दं विचिकित्सति भिषक् । निर्भाग्ये यथा—मन्दभाग्यः । स्वैरेष्यत्पत्वायथा—  
 [ मन्द ] मन्दपदगमी [ चारी ], भद्रो मन्दो मृगधेति । हस्तिविशेषः सौरिश्च ( मन्दः ) । शरदि भवः  
 शारदः, कञ्जुणयाभिनवः, अधृशेप्रतिभः । शुद्धो वर्षे च ( शारदः ) । विगतो शारदो प्रतिमन्वदोषोऽस्य  
 विशारदः ॥ ९५ ॥ अथ धान्ताः । व्यामस्तिर्बहुतबाहून्तरम्, न्यमुणाद्भि न्यमोघः न्यमोहति च, न्यउकादिः  
 ( सू० ) । ऊर्ध्वं सिध्यत्यनेनोत्सेधः, ऊर्ध्वं सेव( ध ) नं च । परित आहरणं ब्राह्मिणः पयोऽहो  
 माराध्यः ( विवधः ) । विशिष्टो वधो गमनमत्रेति विवधः, बाहुलकाद्वा दीर्घः ( उपसर्गस्येति ) ॥ ९६ ॥  
 परितोमेधातुर्द्विषं ( चतुर्दिशं ) धीयते बाह्विस्तरणवत् परिधिः, वदाहुः—बाहुप्रमाणं परिधिरष्टिष्ठा-  
 प्रोतिपन्नलः । उपसूर्यकं सूर्यमण्डलं प्रति सूर्योऽस्यम् । चक्रप्रान्तेपि ( परिधिः ) । बन्धकं ददुत्तमणां  
 भूम्यायाधीयते, यथा—आधिर्विनस्येद् द्विगुणे षने यदि न मोक्ष्यते ( मनुः ) । व्यसनं यथा—आधि  
 प्राप्नो यो न मुञ्चेत्स पीरः । आध्यानमाधिर्मानसी पीडा । आधीयतेस्मिन्नाधिराधारः ॥ ९७ ॥ समर्थने  
 चोद्यपरिहारः, यथा—अत्रायं समाधिः । नीवाको वचनाभावः समाधिरिव । चशब्दाधिसैकाग्र्ये समा-  
 धानं ( च ), समाधीयते मनोस्मिन्समाधिः । दोषोत्पादे यथा—अनुबन्धमवस्थां च ज्ञात्वा दण्डं निपा-  
 तयेत् । प्रकृतिप्रत्ययगमादेशानां यः कार्ययमासजते विनश्वर उच्चरितप्रवृत्तौ सेतुबन्धः ॥ ९८ ॥

अर्थोभिधेयैरेवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।  
 निशानागमप्रोक्तीर्यमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥  
 समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबन्धार्थे हितेपि च ।  
 दशमीस्थी क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥  
 आस्थानीयत्नयोरस्था प्रत्योक्षी सानुमानयोः ।  
 अभिप्रायवशौ छन्दावद्धौ जीमूतवत्सरो ॥ ८८ ॥  
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायार्थे सुतबान्धवौ ।  
 पादा रसम्यद्घ्नितुर्याशा अमीन्धूकोस्तमीनुदः ॥ ८९ ॥  
 निर्वार्दो जनवादेपि शादो जम्यालशष्पयोः ।  
 सारावे रुदिते त्रातर्थाकन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥  
 स्यात्प्रसादोनुरोधेपि सूदः साद्व्यञ्जनपि च ।  
 गोप्राध्वक्षपि गोविन्दो हर्षेप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥  
 प्राधान्ये राजलिङ्गं च वृषाङ्गं ककुदोच्चियाम् ।  
 स्त्री संविज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥

( अर्थः ) । वस्तुनि पदार्थे । निवृत्तौ यथा— मशकायोंयं धूमः । इन्द्रियविषये कारणे च ( अर्थः ) ।  
 निशानं जलाशयः, आगमः शास्त्रं ( तीर्थम् ) । ऋषिजुष्टं प्रभासपुष्करादि, यदप्यासितमहर्दम्भितदि तीर्थ-  
 मिति । गुरौ यथा— तीर्थो ( दा ) सविद्यः । जलावतरणमार्गे सत्रिष्यचरे पुण्यक्षेत्रे पात्रेपि यथा—  
 तीर्थं तद्व्यकल्पयोः, तरत्यनेन तीर्थम् ॥ ८६ ॥ समर्थयते समर्थते संगतयोस्त्विति ( वा ) समर्थः  
 दशम्यां कामावस्थायौ वयोवस्थायौ च तिष्ठति दशमीस्थः, क्षीणो रगेण क्षीणरागः, मरणावस्थां प्राप्ते  
 नखीजो वा । वेतेर्विथेय वीथी, पदवी मार्गः । अपिशब्दाद् गृहप्रान्तः पङ्क्तिश्च ( वीथी ) ॥ ८७ ॥  
 आतिष्ठन्त्यस्यामास्थानी । आलम्बनं चास्या । प्रतिष्ठन्तेस्मिन् प्रत्यो गिरेः समा भूः । मानमाढकचतुर्भा-  
 गोत्र ( प्रस्थः ) । शःछद्रविणयोर्मन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ । अथ दान्ताः । ( अभिप्रायवशौ )  
 यथा— छन्दानुवर्ती, स्वच्छन्दः, छदेः— रूपम् । अपो ददात्यन्दः, आप्रोति च ॥ ८८ ॥ आज्ञामपवाद,  
 माहुः । दायं रिक्थमादत्ते दायार्थः, बान्धवः सपिण्डः । ( पादः ) कर्तारि पदरजति ( सू० ) वम्-  
 कर्मकरणादौ च । तुर्योशो रूपकादेश्चतुर्भागः, कुलद्वेः प्रत्यन्तपर्वतोपि पादः ॥ ८९ ॥ अपिशब्दादा-  
 मांषा निश्चितवादश्च ( निर्वादः ) । शीयन्तेवर्षादन्यनेन शादः पङ्कः । शाय ( त्य ) ते छियते शादस्तु-  
 गम् । आकन्दनमाकन्दयते— आकन्दन्त्यस्मिन्थाकन्दः । प्राता पाणिप्राहाकान्तस्य विजिगीषो रक्षिता,  
 आहुश्च— पाणिप्राहास्तथाकन्दः ( मनुः ) ॥ ९० ॥ ( अनुरोधे ) यथा— प्रसादे वर्तस्व ( शाङ्गधरप० ) ।  
 अपिशब्दाद्वर्मात्ये प्रीतिदाने च ( प्रसादः ), काव्यगुणे तूपवारात् । सूयते पच्यते सूदयति च सूदः,  
 व्यञ्जन सूपोत्र । अपिशब्दात्सूपकारे ( सूदः ) । अपिशब्दाद्विष्णोः, गो विन्दति गोविन्दः, अनुपसर्गाभि-  
 म्यविन्देति ( सू० ) शः । अपिशब्दाद् गन्धेप्यामोदः । गर्वे क्षेप्ये गजदाने च मदः, मदेनुरागं ( सू० )  
 इत्यपि ॥ ९१ ॥ प्रधानमेव प्राधान्यं, राजलिङ्गं छत्रादि, कङ्कते कं कौति वा ककुदम् । शैलशृङ्गे  
 ककुच्छब्दोप्यस्ति, यथा— ककुद्यात् । संवेदनं संवेद्यतेस्यां संवेदन्ति ( ते ) अनया च संविद् । ज्ञाने  
 यथा— एकमेवेदं संविद्ग्राम् । संभाषा संकेतो यथा— प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च संविदं स्यापद्येने । क्रियाकारो  
 व्यवस्थापनं यथा— संविदं लङ्घयेच्च यः ( याज्ञवल्क्य० ) । आजियुद्धं, नाम संज्ञा । तोषणाचारप्रतिज्ञास्वप्याहुः  
 ( संविद् ) ॥ ९२ ॥ उपनिषादन्यस्यामुपनिषद्, वेदान्तोपि रहस्यत्वात् । तत्त्वेपि यथा— धर्मस्योपनिषत्परा ।

महर्षाज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्ग्रहिते त्रिषु ।  
 श्वेतं रूप्येपि रजतं हेमि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥  
 त्रिष्वितो जगद्विद्गोपि रक्तं नील्याविरागि च ।  
 अवदातः सिते पीते शुद्धे षड्भार्जुनो सितो ॥ ८० ॥  
 युक्तिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोय संस्कृतम् ।  
 कुत्रिमं लक्षणोपेतप्यनन्तोनवभावपि ॥ ८१ ॥  
 रुधाते हृष्टे प्रतीतोभिजातस्तु कुलजे बुधे ।  
 विविको पूतविजनो मूर्च्छितो मूढसोच्छ्रयो ॥ ८२ ॥  
 द्यौ चाम्बलपरुषो शुको शिती धवलमेचकौ ।  
 सत्ये साधो विद्यमाने प्रशस्तंम्यहितं च सत् ॥ ८३ ॥  
 पुरस्कृतः पूजितेरात्यभियुक्तप्रतः कृते ।  
 निवातावाभयावाती शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥  
 जातोर्ध्वक ( उच्छ्रितः ) प्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थितास्त्वमी ।  
 वृद्धिमत्प्राप्यतोत्पन्ना आवृत्तौ सादराचिंतौ ॥ ८५ ॥

( वृत्तम् ) ॥ ७८ ॥ महति मप्रते च महत् । चशब्दाद् बृहद् बुद्धितत्त्वं च ( महत् ) । विरुद्धं गीते-  
 बगीतम् । जननीयो जन्यः, जनस्य जन्तो वा, मतजनद्वयात्करणजलक्षणेषु ( सू० ) इति यत् ।  
 सुहृद्द्वेषि ( अबर्गीतम् ) । श्वेतं श्वेतं, अपिशब्दाच्छुद्धं । रज्यते रजतम् । हेमि महारजताख्यम् ॥ ७९ ॥  
 इतस्तान्ता वाच्यलिङ्गाः । गच्छति जगत्, इहं जङ्गमे । अपिशब्दाद् भुवने ( जगत् ) । रज्यते  
 रक्तं, नील्यादिरागोऽस्य च । चशब्दादसृक् ( रक्तम् ), कुङ्कुमं ताम्रमनुरक्तं च । ( अवदातः ) देप  
 शोधने । ( सितः ) अर्जुनः शुक्रः, पित्र बन्धने ॥ ८० ॥ ( अभिनीतः ) मर्षिण्यक्रोशे । संस्कृतं ( सू० )  
 अनित्ये साधु, संलक्षणेन प्रकृत्यादिविभागेन सिद्धं शब्दे, संपर्युपेभ्यः ( सू० ) इति सुट् । अपिशब्दात्सो  
 गुणाधाने पके च । अपिशब्दात्प्रागराजे ( अनन्तः ), विष्णो व्योम्नि च । अनन्ता च भूः ॥ ८१ ॥  
 प्रतीयते प्रयेति वा ( प्रतीतः ), ज्ञानेपि । सुकुमारे न्याय्ये चोपचारात् ( अभिजातः ) । विचित्रिरेवने,  
 विजिह्वं पृथग्भावं, असंयुक्तो [ पृथगे ] पि ( विविकः ) । मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः ॥ ८२ ॥ अम्वं  
 चुक्रं, यदाहुः- बन्मूलादि शुबो भाण्डे सक्षीदृष्टकाञ्जिकं । धान्यराशौ त्रिरात्रस्यं चुक्रं शुक्रं तदुच्यते  
 ( वेद्यकम् ) ॥ परेषु शुक्र उपचारात्, यथा- शुक्रां वाचं ( न ) वदेत् । चशब्दात्पूतिगन्धे, ईशुचि  
 पूतीभावे ( शुक्रः ) । शिश्न निशाने, मेघकः रुष्णः ( शितिः ) । अस्तेः शत्रुप्रत्ययः, सत्त्वे च सत् ॥ ८३ ॥  
 ( पुरस्कृतः ) पुरोव्ययमिति ( सू० ) गतिवात्सत्वम् । अरातिनाभियुक्तोऽभेधितः, अभिषिक्तोपि  
 ( पुरस्कृतः ) । निवायते गम्यते निवातः, निवृत्तो वातोत्र । शस्त्राभेद्यं च वर्म, यथा- निवतकवचाः ॥ ८४ ॥  
 ऊर्ध्वक उच्चकः ( उच्छ्रितः ) । प्रोयतः सोऽन्नमः ( उद्विगतः ) । कर्तृकर्मणोः कः ( आदृतः ) ॥ दुर्ग-  
 व्याह- कर्मविपाकेपि गतिगर्मुद् हेम्युत्त्वणे तृणे । ऋतमुज्ज्वलशेले सत्ये शोभनेपि विवासितम् ॥ उदास्थितं  
 प्रतीहारे चरभेदे समाहितः । ध्यानस्थं चाप्यनीकस्थो गजलक्षणवेदिनि ॥ श्रद्धारचनयोगैर्भक्तिगोष्ठां वृत्तौ  
 च सेवने । आसौ लब्धप्रत्ययितौ नत्ता पुत्रश्च पुत्रयोः ॥ भ्रातृपुत्रौस्त्वसृद्विदुर्म्या ( सू० ) इत्येकशेषोत्र ।  
 समूहोत्पन्नयोर्जातमहिजिह्वपतीन्द्रयोः । सौप्तिकेपि प्रपातोऽथावपातावतयवटौ ॥ समित्सह्ये रणेपि  
 ह्यो व्यवस्थागामपि स्थितिः ॥ ८५ ॥ इतस्तान्ताः । अयंतोऽयंतं वार्थः । अभिषेयः शब्दार्थः । रा चनं



पक्षिच्छन्दोपि वशम् स्यात्प्रभावेपि चायतिः ।  
 पक्षिर्गतीं च मूले तु पक्षतिः पक्षमेकयोः ॥ ७२ ॥  
 प्रकृतियोनिलिङ्गं च कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।  
 सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे भ्रवसि च भ्रुतिः ॥ ७३ ॥  
 वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषितिः ।  
 गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेपि धृतिधारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥  
 वृहती शुद्रवार्ताकी छन्दाभेदे महत्यपि ।  
 वाशि( सि )ता स्त्रीकरिण्योश्च वातां वृत्तौ जनश्रुती ॥ ७५ ॥  
 वार्त्तं फल्गुन्यरागे च त्रिष्वप्सु च घृतामृतं ।  
 करुधौतं रूप्यहंमनोनिमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥  
 भ्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगार्थाभयोः कृतम् ।  
 अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥  
 युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यसीते समे त्रिषु ।  
 वृत्तं पद्यं चरित्रं त्रिष्वतीते वृद्धनिस्तल ॥ ७८ ॥

पद्यौ वगौ पक्षिः, पक्षिविशतिलिङ्गादिति ( सू० ) साधुः, पश्यते च । अपिशब्दादागामिनि काल  
 देशे च, आयतन्तेदायतिः, आयमनं च । पदनं पद्यते च पतिः । चशब्दात्तेनांशे पदातो च ( पतिः ) ।  
 पक्षविशेषबोर्मूलं प्रतिपदादिः पक्षांशश्च पक्षतिः, पक्षात्तिः ( सू० ) ॥ ७२ ॥ योनिरुपादानकारणं यथा-  
 युगप्रकृतिरविकृतिः ( सांख्यकारिका ) । लिङ्गं जीवुनपुंसकं यथा- तृतीयाप्रकृतिः शण्डः ( पृ० ९७ ) ।  
 चशब्दात्स्वप्नमात्यादिः ( प्रकृतिः ) । प्रत्ययात्पूर्वः स्वभावश्च ( प्रकृतिः ) । कैशिकीभारतीसास्त्रार-  
 मयोः ( वृत्तयः ) । चशब्दाद् प्राप्त्या परवेषनागरिका ( वृत्तिः ), कृ यादंजीवेकावृत्तिश्च, वर्तनं वृत्तिः,  
 वर्तनेनवा च । सिध्यन्ते सिकताः, नित्यं बहुल्वेयम् । अपिशब्दात्सिकतिले देशे, देशेच्छुबिलचौच ( सू० )  
 इत्यने छप् । श्रवः श्रोत्रम् । चशब्दाद्वैकवदन्त्यां षड्जायारम्भिकायामाकर्षणे च, श्रूयते शृणोत्यत्र च  
 धवर्षं भ्रुतिः ॥ ७३ ॥ वतु यावने । चशब्दात्स्त्रीमात्रे ( वनिता ) । गोप्यते गोपनं गुप्तिः,  
 क्षितिष्युदासो भूमतः । अपिशब्दात्कारायां रक्षायां च ( गुप्तिः ), यच्छाश्वतः- गुप्तिः कारा च  
 रक्षा च जीर्णं च विवरं भुवः । ( धृतिः ) भावे करणे च किन्, सौख्येयुपचारात् ॥ ७४ ॥ शुद्रवार्ताकी  
 छन्दकारिका, छन्दोविशेषो नवाक्षरपादः ( वृहती ) । वाश्यते काम्यते वंशे स्थाप्यते वाश्यते वा वाशिता ।  
 वृत्तिरेति गौडाः पेटुः, कृतवासेति च व्याख्यन् । वर्ततेनया वर्तते वा, वृत्तिर्जीविका वास्त्यस्या  
 वार्त्ता । वृत्तिः कृष्णपाशुपाल्यवणिज्याख्यात्ताभेदोपचारात् । जनश्रुतिर्वृत्तान्तः ( वार्त्ता ) । वर्त-  
 नं [ च ] वार्त्ता ॥ ७५ ॥ फल्गु तुच्छं यथा- वार्त्तमेतन् । चशब्दात्सर्पिण्ये घृतं, पीयूषे हुतशेषेऽप्याप्तिरे  
 भैरवे मोक्षे चामृतम् । कलः कालिका धौतास्येति । निमेयति निमित्तं, हेतुः कारणं, लक्ष्म चक्षुःस्पन्द-  
 नादि ॥ ७६ ॥ श्रूयते श्रवणं भ्रुतं, अवशृतमाकर्णितम् । युगं कालभेदः ( कृतम् ) । पर्याप्तं यथा-  
 कृतमतिविस्तरेण । क्रियाशब्दस्तु कृतखिलिङ्गः । अतीवाहितमाहितं वालाहितं, जीवानपेक्षि कर्म साह-  
 साख्यम् ॥ ७७ ॥ युक्ते यथा- यथाभूतवादी प्रामाणिकः स्यात् । क्षमादौ यथा- महाभूतानि । कृतं  
 सत्यं यथा- भूतमप्यनुपन्यस्तं हीयते व्यवहारतः । प्राणिनि यथा- भूतप्रायः । अतीते यथा- भूते छद् ।  
 समस्तुल्यो यथा- सुहृद्भूतोयम् । प्रहेषि यथा- भूतमियं ब्राह्मणी । प्राप्ते यथा- इत्यभूतं, भवति स्म  
 भावयते स्मेति, भू प्राप्ती । ( वृत्तं ) पद्यं पादबन्धः श्लोकादिः । चरित्रं शीलं ( वृत्तम् ) । अतीते यथा-  
 वृत्तोत्सवं पुरम् ( मुद्राराक्ष० ) । दृढे यथा- दृत्तदेहः दायुसारः । निस्तलं वर्तुलं, अधीतेपि

श्लेष्माविरास्थि ( स ) रक्ताविर्महाभूतानि तद्गुणाः ।  
 इन्द्रियाण्यस्मद्विकृतिः शब्दयानिश्च धातवः ॥ ६५ ॥  
 कक्षान्तरपि शुद्धान्तो वृषस्यासर्वगोचरे ।  
 कासूसामर्थ्ययोः शक्तिर्भूतिः काटिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥  
 विस्तारवल्ल्यां व्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।  
 क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥  
 अस्तिः पीडाधनुष्कांठ्योर्जातिः सामान्यजन्मनोः ।  
 प्रचारः स्यन्दयोरीतिरीतिर्द्विभ्रप्रवासयोः ॥ ६८ ॥  
 उदयेधिगमे प्राप्तिस्त्रेतामित्रितये युगे ।  
 वीणामेवपि महती भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥  
 नवीनगयोर्नागानां भोगवत्यथ संगरे ।  
 सङ्गे सभायां समितिः क्षयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥  
 रवंरात्रिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।  
 जगती जगति च्छन्दोविशेषपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

बलेपि ( आनर्तम् ) । कृतोन्तोनेन कृतान्तः, कृतः सिद्धोन्नो निष्ठा यस्य, कृतस्यान्तश्च । शास्त्रेषु प-  
 पचारात्कृतान्तः ॥ ६४ ॥ श्लेष्मा वतः पित्तं च, धारणात् धातवः । अस्तिरक्तादीनि, व ( र ) सासृ-  
 मांसमैवोत्पि मन्त्राशुकाणि धातवः ( वाग्मट० ) । महाभूतानि पृथिव्यादीनि, तद्गुणाः शब्दादवः, अस्म-  
 द्भूतिर्हरितालादिः, शब्दयोनिर्भादिः ( धातवः ) । वशब्दाद् गैरिकं मनःशिलर्दिर्हमादिश्च ( धातुः )  
 ॥ ६५ ॥ कक्षान्तरे राजधानीस्थानविशेषे वासगृहाह्वये ( शुद्धान्तः ) । अपिशब्दाद्वाजदारेषु, अशोच-  
 प्रत्यये च, शुद्धो रक्षितोन्तोस्य शुद्धान्तः । कासूर्नामायुधं सर्वलक्ष्यं, शक्यतेनया जेतुं शक्तिः । शकन  
 उत्पन्नादौ च ( शक्तिः ) । मूर्च्छनं मूर्च्छति च मूर्तिः ॥ ६६ ॥ व्रजन्ती तनिरस्यां व्रततिः, व्रतव्रातव्रत-  
 त्यादिसिध्यर्थं प्रतिधातुद्वये इति श्रीभोजः । वसत्यस्यां वसतिः, स्थितं च । चिमश्च यनेश्च, ( चायतेः ) फिनि  
 नित्यं विभावः ( वा० ) अपचितश्च ( सू० ) इत्यत्र वक्तव्यम् । विकृतौ व्यत्यये च ( निष्कृतौ व्यये च )  
 ( अपचितिः ) । सनोतेः किनि जनसनेति ( सू० ) आत्मम्, स्यतेः- ऊतियूनिर्जृति ( सू० )  
 साधुः ॥ ६७ ॥ अर्दनमर्त्तिः, अर्द्यतेनया च, अर्दं गती याचने च । जायतेनया, भिष्वभिप्राभिधान-  
 प्रत्ययो जातिः, जननं च । छन्दालंकारविशेषयोः ( जातिः ), मालतीमोत्रयोश्च । प्रचारः शैली ( रीतिः ),  
 री गती रीहृ स्वने । आरकूटे मयांदायां वैदर्भ्यादौ ( रीतिः ) । ईहृ गती, द्विभ्र उपद्रवः, यदाहुः-  
 अतिवृष्टिरनावृष्टिर्भूषिकाः शलभाः शुक्राः । अत्यासप्राथ राजानः पडेना ईतयः स्मृताः ॥ ६८ ॥ उदयो  
 कामः, अधिगम आसादनं ( प्राप्तिः ) । त्रेता, पृषोदरादिः ( सू० ) । शततन्त्री वीणा महती । अपि-  
 शब्दाद् वृहत्यां ( महती ) । भवति भूयतेनया च भूतिः, भवनं च ॥ ६९ ॥ भोग उपभोगः सर्पकाय-  
 व्यास्यस्याः ( भोगवती ) । समयनं सयन्ति संगच्छन्त्यस्यां वा समितिः । वामो निवासः ( क्षितिः ) ।  
 आपिशब्दाद् भुः, क्षि क्षये, क्षि निवासगत्योः ॥ ७० ॥ शस्त्रमायुधं, हिनोनि हेतिः, ऊतियूनि ( सू० )  
 साधुः । गच्छति जगती, छन्दो द्वादशक्षरपादम् ॥ ७१ ॥ उक्तात्युक्ता मथ्या प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा गाय-  
 त्र्युष्णिगनुष्टुप्महती पङ्क्तिश्चतुर्बिती दशमं दशक्षरपादं वा । अपिशब्दाच्चेणिर्दशसंख्या च ( पङ्क्तिः ),



संकीर्णो निचिताशुद्धावीर ( रि ) णं गूण्यसूपरम् ।  
 वेवसूर्यो विवस्वन्ती सरस्वन्ती नवार्णवी ॥ ५७ ॥  
 पक्षिताक्ष्यो गरुत्मन्ती शकुन्ती भासपक्षिणी ।  
 अग्न्युत्पाते धूमकेतु जीमूती मेघपर्वती ॥ ५८ ॥  
 हस्ती तु पाणिनक्षत्रे मरुती पवनामयी ।  
 यन्ता हस्तिपके सृते भर्ता धातरि पंगुरि ॥ ५९ ॥  
 यानपात्रे शिखी पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरं मृते ।  
 ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥  
 स्थपतिः कारुभेदपि भूभृद् भूमिधरे नृपे ।  
 सूर्धाभिपिको भूपेपि क्रतुः स्त्रीकुटुम्बे च ॥ ६१ ॥  
 विष्णावप्यजिताव्यक्ती सृतस्त्वष्टरि सारथौ ।  
 व्यक्तः प्राज्ञेपि दृष्टान्तावुभे शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥  
 क्षत्ता स्यात्सारथ्यौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ।  
 वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणं प्रकारं कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥  
 आनर्तः समरे वृत्त्यस्याननीवृद्धिशेषयोः ।  
 कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

इर गती । शून्यं निराश्रयो देशः, ऊषः क्षारमृत्तिकाग्यास्ति-इत्यूरः, ऊषसृषति ( सू० ) रः ( इर-  
 णम् ) । सेतो च वरणो वेणी नदीवाहे कचोच्चये । अथ तान्ताः । विवस्ते छादयति विवस्तेजोस्यास्तीति  
 विवस्तान् । सरस्वाग्राम नदः ॥ ५७ ॥ गरुतः पक्षाः सन्त्यस्य गह्वरान् । भासः पक्षिविशेष । कीटोपि,  
 शक्नोति शकुन्तः । धूमः केतुर्लङ्गमस्य धूमकेतुर्लङ्घिः । धूमप्रथमश्च केतुस्त्यातग्रहः । जीवनस्याम्भसो  
 मृतः पुटबन्धः ( जीमूतः ) ॥ ५८ ॥ जहाति हस्तः पाणिः । हसति व्याम्नि हस्तो नक्षत्रम् । प्रशंसा-  
 र्थं ( यथा )- केशहस्तः । श्रियतेनेन मरुत् । यमयतीत्यन्तर्भावितण्यर्थो यमिः, सूतः सारथिः । यहस्व  
 [ यज्ञस्य ] भर्ता, श्रिया भर्ता ॥ ५९ ॥ पवते पुनानि च पोतः । प्रैति स्म प्रेतः, प्राण्यन्तरं नारकम् ।  
 ग्रहभेदो नवमः ( केतुः ), कित ज्ञाने । शु प्रसन्नैर्धर्मयोः ( सुतः ) ॥ ६० ॥ स्थपतिः, स्थवाप्तौ  
 पतिश्च वा, तिष्ठन्त्यदिमप्रायत्ताः स्थः, घञर्थकः ( वा० ) । कारुविशेषो मुख्यतया ( स्थपतिः ) ।  
 अपिशब्दात् स ( यज्वा ) गीष्पतीश्च स्थपतिः ( पु० ११४ ), कथ्यते च । ( भूभृत् ) धारणाद्योषणाश्च ।  
 ( सूर्धाभिः पिकः ) अपिशब्दः द्विप्राक्क्षत्रियायां जाते, मुख्येपि । ऋच्छत्यायाति ऋजुः स्त्रीणामातं वं रजः ।  
 अपिशब्दाद्दसनताशे ( ऋजुः ) ॥ ६१ ॥ अपिशब्दादजितोऽग्निरभूतो बुद्धयः । अव्यक्तोऽप्रफुटः । मुख्यं  
 ( अव्यक्तः ) । प्रकृतस्त्वव्यक्तम् । पू प्रेरणे, त्वणा रथकारः, तथा ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतः । प्रजाते  
 पारदे च ( सूतः ) । व्यनक्ति ध्ययते च ( व्यक्तः ) । अपिशब्दान् पुरोवुव्या[ दि ] निश्चितः, यथा-  
 र्थं मूर्खोयम् । दृष्टोन्तो निश्चक्षोस्य दृष्टान्तः, निदर्शनमुदाहरणं यथा- अमिरत्र धूमान्महानसवत्  
 ॥ ६२ ॥ क्षदति क्षत्ता, द्वास्थः प्रवृद्धागः । क्षत्रियायां शूद्राज्जातः क्षत्ता, क्षत्रिया मागर्धं वेद्याच्छूद्रा-  
 लक्षारमेव च ( पु० १५८ ) । स्मृती क्षत्रशब्दाग्यास्ति । दृष्टोन्तोऽस्य दृष्टान्तः, वृत्तस्यान्तश्च । तथा  
 प्रकारो विशेषः । वार्ता जनश्रुतिराह्वयिका च ॥ ६३ ॥ आनृत्यत्रानर्तः । नीवृद्धिशेषो जनपदः,

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा सुवौ ।  
 हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥  
 त्रिषु पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेपि वेश्मनः ।  
 तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥  
 वणिक्पथेपि विपणिः सुरा प्रत्यक्च वारुणी ।  
 करेणुरिभ्यां स्त्री नेमे द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥  
 शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेपि च ।  
 विषामिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीवे खरं त्रिषु ॥ ५३ ॥  
 प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमानृषु ।  
 करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियंष्वपि ॥ ५४ ॥  
 प्राण्युत्पादे संसरणमसंसाधचमृगती ।  
 घण्टापथेय वान्ताज्ञे समुद्धरणमुल्लये ॥ ५५ ॥  
 स्वतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुगृह्णेभदन्तयोः ।  
 प्रवणं कमनिम्नोर्त्या प्रह्वं ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

इन्द्रं च ॥ ५९ ॥ ऊर्णेत्यूर्णा । आवर्तश्चक्रवर्तिविह्वं यथा- ऊर्णयमन्तर्भुवोः, अन्तरा भ्रूवाकिति- अन्त-  
 रान्तरेणयुक्ते ( सू० ) द्वितीया । हरति हरिणी मृगी हेम्नो वा प्रतिमा । हरि पीतं वर्णं नयतीति, हरित  
 नीला, वर्णादनुदात्तातोपधातोः ( सू० ) इति वा डीप् । युयुक्ता पाण्डुरा च ( हरिणी ) ॥ ५० ॥  
 वृणन्दान्मृगे ( हरिणः ) । तिष्ठति स्थूणा । अपिशब्दाहोह्रातमाध्याधिशेषयोश्च ( स्थूणा ) । तक्ष्मं  
 तृष्णा, स्पृहा निरुद्धलक्षणत्वात् । एवं तृप्तपावपि स्पृहापिपासायै । जिघर्षति क्षरति मनोनया घृणा,  
 घृणु दीप्तौ वा ॥ ५१ ॥ वणिक्पथो दृष्टः ( विपणिः ) । अपिशब्दात्पण्यव्याधौ, विपण्यतेस्यां विपणिः ।  
 सुरा वरुणादन्धेर्जाता । प्रत्यक् प्रतीची दिक्, वरुणस्यैयमिति । के मूर्ध्नि रेणुरस्य करेणुः । इभ्यां  
 इतिन्यां स्त्री, इमे तु ना पुमान् । द्रवत्यनेन द्रवति वा द्रविणम् ॥ ५२ ॥ शीयते क्षुणाति च परं शरणं,  
 भ्रयन्ति तदिति नैरुक्ताः । श्रीः पर्णेष्वास्य श्रियं पितृति च श्रीपर्णम् । अपिशब्दादभिमान्ये ( श्रीप-  
 णम् ) । अभिमरो मरकं युद्धं च ( तीक्ष्णं ), लोहं शस्त्रम् । ये द्रव्यहेतोर्व्याडं इस्तिनं वा योधययुस्ते  
 तीक्ष्णा इति दौष्टिल्यः । तेज्यते तीक्ष्णं, अतिक्षणातीति नैरुक्ताः ॥ ५३ ॥ यय योगं करणादौ  
 त्युद्, हेतुसिन्निमित्तं यथाग्न्यादेर्धूमादि ( प्रमाणं ) । मर्यादावधिः, यथा- कोटिल्यः- राजानं मां  
 च प्रमाणं कृत्वा ययस्याः कुशलं पश्यतीति । इयत्ता परिच्छेदः, यथा- क्रियप्रमाणमुदकम् । प्रमाता  
 यथा- भ्रात्रायै प्रभुः प्रमाणम् । ( करणं ) गात्रे यथा- उपमानमभूद्विज्ञासिनां करणं यत्तव कान्तम-  
 त्तया ( कु० सं० ) । ( करणं ) अपिशब्दाकारणिकानां क्रयस्याप्यक्षणादीनां समूहे कृतैः क्रियाभेदे कामशास्त्रनाट्य-  
 शास्त्रेके च ॥ ५४ ॥ प्राण्युत्पाद आजीवजीविभावः संसारादयः । असवाधेन [ असंकटेन ] सेनागमने  
 ( संसरणम् ) । घण्टापथः पुरः सदीपे विधामभूतनिष्काराख्या ( संसरणम् ) । ( समुद्धरणं ) कर्मणि  
 भावे च त्युद्, उग्रय ऊर्ध्वनयनं कूर्गादिभ्यो जलादः ॥ ५५ ॥ स्वतो न तु वाच्यलिङ्गतया । वेधेष्टि  
 विषाणम् । प्रवणति प्रवणः [ अनुकूले ], वण शब्दार्थः । त्रिष्विदयेव संकीर्णे यावत् । कमेण निम्नायां  
 भुवि यथा- भ्रादे दक्षिणप्रवणा भूः । प्रह्वं यथा- भक्तिप्रवणः । अनुकूले तूपचारात् । चतुष्पथे, प्रवन्ते-  
 नेन प्रवणः ॥ ५६ ॥ निचितं संकीर्णं व्याप्तम् । अशुद्धं संकीर्णं यतो मिश्रोभवतीति । ईरति- ईरणं,

श्वेडा वंशशालाकापि नाडी कालेपि षट्सप्ते ।  
 काण्डोत्पी दण्डबाणार्धवर्गाषसरवारिषु ॥ ४३ ॥  
 स्याद् भाण्डमन्धामरणेमन्त्रे मूलवणिग्धने ।  
 भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥  
 शक्तस्थूली त्रिषु दृढो व्यूढो विन्यस्तसंहती ।  
 भृणांभकं ह्येणगर्भं बाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥  
 कणोतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः ।  
 पणो घृताविपृत्सुष्टे भृतौ सत्ये धनेपि च ॥ ४६ ॥  
 मौढ्या द्रव्याभिते सत्त्वशौर्यसंघ्यादिके गुणः ।  
 निर्व्यासारस्थितौ कालविशेषात्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥  
 वर्णां त्रिजार्वा शुक्रादी स्तुतौ वर्णं तु चाक्षरे ।  
 अरुणां भास्करपि स्याद्वर्णभेदेपि स त्रिषु ॥ ४८ ॥  
 स्थाणुः शर्वेऽप्यथ द्रोणः काकेऽप्यथ रवे रणेः ।  
 यमणीनापिते पुंसि श्रेष्ठे यामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

४ । दण्डो नालं यथा— उद्गं त्का ण्डेः पुण्डरीकेः । अर्वां कुत्सितः, यथा— काण्डपुष्टः ( महावीर० ) ।  
 वर्णं यथा— बालकाण्डं, आढकं का ण्डिका । काण्डस्यावसरस्वभावोऽकाण्डम् । लतावृक्षकन्धयोश्च  
 ( काण्डः ) । प्रकाण्डं तु वृक्षादिस्कन्धः, प्रसंसार्य च यथा— पुरुषप्रकाण्डम् ॥ ४३ ॥ अथस्यामरण-  
 मायानं पर्याणादि. यथा— भाण्डप्रासा ह्यः । अमन्त्रे यथा— प्रकीर्णभाण्डमनवेक्ष्यकारिणीम् । मूलं कर्तुं  
 बणिजां धनं वा, यथा— भाण्डपतिः । संघातप्रासयोः पिण्डी द्वयोः पुंसि कलेबरे । गण्डो कपोलविस्फोटौ  
 मुण्डक त्रिषु मुण्डते ॥ इक्षुभेदेपि सण्डोत्पी सिखण्डो बह्वृचयोः । अथ दान्ताः । बाहेः के ( बाह्ये )  
 शुब्दस्यान्तधान्तेति ( सू० ) साधुः । ( बाह्यं ) प्रतिज्ञानेद्गीकारेऽप्ययम् । ( प्रगाढं ) दृढेपि, यथाहुः—  
 प्रगाढं कृच्छ्रमिच्छन्ति प्रगाढं बलवद् दृढम् ॥ ४४ ॥ दृढि दृढो क दृढः, दृढःस्थूलबलयोः ( सू० )  
 इति साधुः । अत्यर्थं च यथा— दृढं शान्तोऽस्मि । त्रिखित्येव । विन्यस्तं रचितं यथा— व्यूढो दुपदपुत्रेण  
 तत्र शिष्येण ( भगवद्गीता ) । संहतो घनो यथा— व्यूहोऽरकः ( रघु० ) । अथ गान्ताः । श्रियते  
 भृणः । बलिसुतो बाणामुरः । दासीकुलपुत्रेपि बाणशब्दार्थः ॥ ४५ ॥ अतिसूक्ष्मे मुष्कादिगुल्फे ( कणः ) ।  
 धान्यस्यांशः कणिका यथा— कणादौ मुनिः । गण्यते गणः, संख्यायां सेन्यांशेपि । नित्यं पणः परिमाणे  
 ( सू० ) इति साधुः । घृतादायुस्मृष्टं जप्यत्वे स्थापितं ( पणः ) । आदिशब्दात्समाह्वयणादौ । भृति-  
 र्धेनम् । आपशब्दात्कं त्का णिकं स्ताभिकः पणः, यच्छाण्डतः— गले माने श्वेतकानां मूल्ये  
 कापांशे धने । घृतादौ कल्पिते चैव बद्धमुष्टौ भृतौ पणः ॥ ४६ ॥ द्रव्याभिते पटदेः शुक्रादिगुणः,  
 आत्मनो बुद्धिमन्त्रादिः, रूपादिचतुर्विंशतेर्गुणत्वान् । सत्त्वे निविशनेर्पतीति च ( गुणः ) ( का० ) । सत्त्वादीनि  
 सत्तरजस्तमांस, शौर्यादायोर्द्वयोः गुणाः । संश्लेषप्रह्वानासनद्वैतीभावसंश्रयाः षड् गुणाः । तेजोबलशौर्य-  
 शर्ववैराग्यशक्तबल बट् पराश्रितत्वात्, तेन गुणोऽगन्धानमित्यपि च वाच्यम् । शौर्यादयस्तत्कर्षाद गुणाः ।  
 रज्ज्वप्रधानसूदेन्द्रियभोगेष्वरि ( गुणः ) । निर्व्यापारत्वेन यथा— क्षणो नास्ति रश्मो नास्ति ( पंचतन्त्र० ) ।  
 कालविशेषो नाहिकप्राशः ( क्षणः ) । उत्सवे यथा— क्षणे रक्षणाः कुलश्रियः । नृते तत्सवत्वाद्यथा—  
 क्षणपरपूरजिह्वस्तूलप्रहारान्, क्षणाति क्षणः ॥ ४७ ॥ घृणाति त्रियते वा, कथ्यते वर्णनं वा वर्णः ।  
 षड्ज्वादिगतौ तालविशेषे गुणयशोविलेपनप्रत्ययेऽपि ( वर्णः ) ॥ ४८ ॥ ( प्रामाण्यः ) प्रामः खट्को

अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।  
 सूक्ष्मेलायां झुटिः स्त्री स्यात्कालेऽपि संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥  
 अर्च्युत्कर्षाभ्रयः कोट्यो मूले लम्बकचं जटा ।  
 व्युष्टिः फले समृद्धौ च द्रष्टृर्हानिर्दिष्टे दर्शने ॥ ३८ ॥  
 इष्टिर्यागेच्छयोः सुष्टुं ( ष्टिः ) निश्चितं बहुनि त्रिषु ।  
 कष्टं तु कृष्णगहनं वक्षामन्दागवेषु तु ।  
 पदुर्द्धौ वाच्यलिङ्गी च नीलकण्ठः शिंशपि च ॥ ३९ ॥  
 पुंसि कोष्ठान्तर्जठरं कुशूलान्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥  
 निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ विशि ।  
 त्रिषु ज्येष्ठोतिशस्तेऽपि कनिष्ठोतिगुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥  
 वृण्वोस्त्री लगुडेऽपि स्याद् गुडो गोलेशुपाकयोः ।  
 सर्पमांसात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्वडा इलाः ॥ ४२ ॥

( पंचतं० ) । केतवं व्याजः ( कूटं ) । राशिर्धान्यादिपुत्रः ( कूटः ) ॥ ३६ ॥ अयोमयो धनः, आधा-  
 तार्यमयःसारं भाण्डं कूटं नाराचो वा, कूटः शाल्मलिरित्येके । सीराङ्गं फालाचारः कूटाह्वयः, यद्बुर्गः-  
 कूटं घटहलाह्वयोः । झुटिः झुटिः, कालेऽपि क्षणद्वयाह्वये । संशयः यथा- झुटिः प्राप्नोती रोगी ॥ ३७ ॥  
 अर्चिष्ठापकोटिरनिर्यथा- धनुःकोट्या नुदति । उत्कर्षे यथा- परां कोटिमाह्वयः । अभ्रिर्धारा कोनो वा  
 यथा- घटकोटिर्वज्रः । संख्यापि कोटिः, यद् भागुरिः- अर्च्युत्कर्षाभ्रयः कोट्यः, स्त्रीत्वार्थं ईप् । वृक्षा-  
 दिमूलं जटा । लम्बाः श्लिष्टाश्च कचा जटाः, जट संघाते । व्युष्टं व्युष्टिः, उच्छी विवासे, फलं प्रयो-  
 जनम् । वक्षान्दास्तुतौ ( व्युष्टिः ) । ( दृष्टिः ) भावे करणे च किन् ॥ ३८ ॥ यजेरिवेश किन्  
 ( इष्टिः ) । मुक्तनिर्मितयोश्च ( सुष्टम् ) । कविधृत्यति कष्टं, यथा- कष्टं प्राप्तः क्लेशमित्यर्थः । कष्टानि  
 सामानि गहनानीत्यर्थः, कृच्छ्रगहनयोः कषः ( सूष्टं ) इत्यनिट् । ( पदुः ) दक्षेनलसः, अमन्दो धृष्टः,  
 अगदो नीरक् । चशब्दात्प्रवणो रसः पदुः ॥ ३९ ॥ द्वौ कृष्टपटू । पोटा दासी द्विलिङ्गा च घृष्टी वर्षण-  
 सूकरो । घटा गोष्ठ्यां हस्तिपङ्क्तौ कृपीटमुदरे जले । इतग्रान्ताः । अपिशब्दान्मयूरः ( नीलकण्ठः ) ।  
 कुप्यते कोष्ठो जठराभ्यन्तरं, यथा- मृदुकोष्ठः । कुशूलो धान्याधारः ( कोष्ठः ) । कोष्ठगारं गृहस्याभ्य-  
 न्तरमपवरकाख्यम् ॥ ४० ॥ निर्व्यूढं निर्वृतं नियतं च स्थानं निष्ठा । क्लेशतपोवाच्यानिर्वहं ( वेह ) ष-  
 परमगतयोऽपि ( निष्ठाः ) । काशनं काशते वा काष्ठा, स्थितिर्मयोदा । कालविशेषेऽपि अष्टादश निमेषास्तु  
 काष्ठेति । काष्ठं दाह च । इष्टनि प्रशस्यत्यर्थः ( सू० ), उच्यते ( सू० ) । अपिशब्दादप्रजे वृद्धेऽपि  
 ( ज्येष्ठः ) । युवाण्योः कर्णयतरस्याम् ( सू० ), अतियुवात्यल्पश्च ॥ ४१ ॥ अथ दान्ताः । दन्त्यतेनेन  
 दण्डः, अपिशब्दाच्चतुरङ्गं वलं चतुर्गोपायो दमो मन्थश्च । गोलो वृत्तो मृदादिगुडकः, यथा- भक्षिता  
 वाप्यथोगुडाः ( चरक० ) । लत्वेन गुलिका स्नुही गुलिका निशा । सन्नाहश्च गुडः । मांसमन्तीति मांसात्  
 सिंहादिः । व्यडति हन्तुं व्याडः, व्यड उद्यमे, विविधमाल ( ड ) मस्मद्वा व्याडः । इल क्षेपणे, बुधभा-  
 र्यापि- इडा यस्या अपत्यमैडः पुरुरवाः ॥ ४२ ॥ क्ष्वेडिः शच्छार्थं उभयः, अपिशब्दात्सिंहनादो दन्तो-  
 छवाद्यम् ( क्ष्वेडा ) । क्ष्वेडस्तु विषं धनिश्च । षड्भिः क्षणैश्च षट्क्षण इति नाडीव नालिकात्र, अपि-  
 शब्दात्सुषिरं वृक्षादि धमनिध । नाडो नालश्च जलनिर्गमः । डलयेरियत्पणालो नालः कण्ठः पद्मादिशृङ्गं



मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।  
 अभिष्यङ्गे सृहायां च गमस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥  
 कंकिताक्ष्यावाहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।  
 अजा विष्णुहरच्छागा गोप्राध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥  
 धर्मराजौ जिनयमौ कुत्रो दन्तेपि न स्त्रियाम् ।  
 वलजे क्षेत्रपूर्वारे वलजा वल्युवर्शना ॥ ३१ ॥  
 समे क्षमांशे रणेप्याजिः प्रजा स्यात्संततौ जने ।  
 अव्जौ शैखशाशाङ्कौ च स्वकं नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥  
 पुंस्यात्मनि प्रधानं ( वीणे ) च क्षेत्रज्ञो याच्यलिङ्गकः ।  
 संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताध्यायसूचना ॥ ३३ ॥  
 काकभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटी ।  
 शिपिविष्टुस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥  
 देवाशाल्पिन्यपि त्वष्टा दिष्टं वैवेपि न द्वयोः ।  
 रसे कटुः कटुकार्थे त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥  
 रिष्टं क्षमाशुभाभावेप्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।  
 मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥

गुरुश्च शुचिश्च प्रेमिकावतू । उपधा धर्मार्थकामभयमुखेन सचिवपरीक्षा, तामतिस्नान्तोत्पुषः, यत्कौ-  
 टिल्यः- उपधाभिः शोचाशौचपरिहानममात्यानाम् । ( रुचिः ), अभिष्यङ्गो रागः, गमस्तिर्दासिः  
 ॥ २९ ॥ अय जान्ताः । नयूरगदौ ( अहिभुजौ ) । विप्रः क्षत्रियवैश्योपलक्षणम्, यत्स्मृतिः-  
 विप्रक्षत्रियविद्वद्वा वर्षोत्सवाद्यस्त्रयो द्विजाः । अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः । न जायते अजति वा- अजाः ।  
 गोवस्तिष्ठन्त्यस्मिन् गोष्ठम् । व्रजन्त्यस्मिन् व्रजोऽध्वा, गोचरसंचरेति ( सू० ) साधुः । निवहः समूहः,  
 यथा- द्विजव्रजः ॥ ३० ॥ ( धर्मराजौ ) समवर्तित्वात् । दन्ते हस्तिदन्ते, यथा- कुञ्जरः । अपिशब्दा-  
 द्वादिपिहितोदरे ( कुञ्जः ) । वलन्तेनेन वले जायते वा वलजं क्षेत्रं पुरद्वारं च । वल्युवर्शने भद्रः कृतौ  
 त्रिलिङ्गम् ॥ ३१ ॥ आनिष्टे प्रतो भूभागो रणध्याजिः, अजयतेत्राजिः । अपिशब्दात्क्षणेपि, यद्दुर्गः- युद्ध-  
 मागलणप्याजिः । संततो यथा- शौच्यं मिथुनमप्रजम् ( चाणक्यश० ) । जनो लोको यथा- प्रजापतिः ।  
 चकारात्पद्मम् ( अंजम् ) । नियतं जायते निजम् । अप्रजौ विप्रपूजौ- इति दुर्गः ॥ ३२ ॥ अथ  
 मन्ताः । क्षेत्रं शरीरं पात्रं जानाते क्षेत्रज्ञः, आत्मा मुख्यश्च । संज्ञानं संज्ञा संज्ञायतेनया च । आद्य-  
 शब्दादक्षिनिकोचनायोः, अर्थः प्रयोजनम् । दोषज्ञौ वेद्यविद्वांसौ ज्ञो विद्वान् सोमज्ञोपि च ॥ ३३ ॥  
 इत्यन्ताः । केति रटति कगे ( चिर ) ति मदं च करटः । कटति वर्षति मदं कटः । इमशानं कलिजोपि,  
 कटलावृणोतीति, यथा- वर्जयेत्कटपूतं तु, कटः- आस्ते । शिपिधर्मं विष्टं दोषव्याप्तमस्येति, दुश्चर्मो वण्डः,  
 आहुध- शिपिविष्टः शिवः शौरिदुश्चर्मो खलतिस्तथा ॥ ३४ ॥ देवशिल्पी विश्वकर्मा । अपिशब्दात्सू-  
 तक्षिणं च त्वष्टा, त्वक्षति त्वस्यते वा । समगन्तेजः शातनात्त्वष्टा । दिशति शुभाशुभं फलं दिष्टं, देवं  
 पुराकृतं कर्म । अपिशब्दात्काले ( दिष्टः ) । कट्यावृणोति कटुः, दुग्धे चाप्येव चोपचारात् ॥ ३५ ॥  
 रिष हिंसायां, नास्ति रिष्टमशुभं क्षेमं वा- अरिष्टं, आहुध- तके मरणवेत्ते चारिष्टं वृक्षं च फेनिले ।  
 घुरायां च शुभेपि स्यात्काके निम्बे च पुंस्यम् ॥ माया- इन्द्रजालं, निथले यथा- कूरस्थोक्षर उच्यते  
 ( भगवद्गीता ), निथलं व्योमेति गौडः । यन्त्रं गृह्यदिग्दर्श उलं यथा- छिन्वा पाशमास्य कूरचनाम्

भोगः सुखे स्तथाविभृतावहेश्च फणकाययोः ।

चातके हरिणे पुंसि सारंगः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥

कपी च प्लवगः शापे त्वभिषङ्गः परामवे ।

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

स्वर्गेषुपशुवागवज्रविङ्गनप्रघृणिभृजले ।

लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौलिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वांश्च वराङ्गं मूर्धगुहयोः ।

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्ना र्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

परिघः परिघातेस्त्र्योघो घृन्नेभ्रमसां रये ।

मूल्ये पूजाविधावर्षोऽहोद्वेखः यत्नेष्वघम् ॥ २७ ॥

त्रिष्विदुपि ( ल्य ) लघुः काचाः शिक्यमृरभेददृमुजः ।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः ॥ २८ ॥

( भोगः ) । आदिशब्दा कर्मकृद्वतनं, यच्छाश्वतः- पालनेभ्यवहारे च निर्वेशे च पणे श्रियाः । भोगः सुखे भुजंगानां शरीरफणयोरपि ॥ चातकस्तोः फणकायः पक्षी, सति सारं गच्छति सहारङ्गेण वा वर्तते सारङ्गः । गौहः स( श )बलः सारङ्ग इति व्याहृतः ॥ २३ ॥ चशब्दाद्रेके पक्षिभेदे च ( प्लवगः ) । शापो भिभ्याभिशंसनमनिष्टावधारणं च, आदुथ- अभिषङ्गाख्याः शापाक्रीडापरामवाः । ( अभिषङ्गः ) कर्मणि भोवे च घञ् । बानं रथशकटादि । आदिशब्दाद्वलम् । तत्ताङ्गं दान्तादियोजनकाष्ठं, पुंसि यथा- अनोयुगः शकटयुगः । आदिशब्दात्वेतादि । हस्तचतुर्ः च यथा- विचरेषुगमात्रदृक् ॥ २४ ॥ इषुर्बाणः । वागादौ व्रीलिङ्गो गोः स्वर्गादौ पुंलिङ्गः पशो तृभयं, यथा- इयं गौर्धेनुः, अथ गौर्दान्तः । इत्वं जलाक्ष्णोः क्रीडे- इत्येके । लीनं गमयति लिङ्गति वित्रीकरोति वा लिङ्गम् । चिह्नं धूमादिः शेफः साधनम् ॥ २५ ॥ शीर्यते शृणाति च शृङ्गम् । प्रधानमेव प्राधान्यं, यथा- शृङ्गग्राहिकया । सानुरक्त गिरिशिखरं, कात्यस्तु- शृङ्गं शिखरं सान्वरीत्याह । चशब्दाद्विषाणं कीडाम्बुपात्रं च ( शृङ्गम् ) । गुह्यं योनिः । भज्यते सेव्यते मर्धा ह्यति च भगं, खलोभगः पदं वेति ( वा० ) वक्तव्याद् घः । कामोक्त योनिः । सूर्यविशेषो भगः पुंसि भित्तवत् । धर्मो मेक्षश्च भगः, यदाहुः- ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्त्वयशसः श्रियः । वैराग्यस्याय मोक्षस्य वर्णां भग इति स्मृतः ॥ २६ ॥ अथ चान्ताः । परिहर्ननं परिहृत्यतेनेन वा परिघः, परोघः ( सू० ) इत्यपप्रत्यये हन्तेर्घात्, करणेऽयोविदुषु ( सू० ) इत्यतः करणा-नुबुद्ध्या भावादेशे नेच्छान्ति । अस्यतेष्वमायुधविशेषः । अपिशब्दादगंलेपि ( परिघः ) । उल्लते बहति वा- ओषः, न्यह्कादौ ( सू० ) साधुः । मूर्त्यं पणः, यथा- अनर्घा गुणाः, अर्घिघातवन्तरं, पूजार्थं स्वर्हं न्यह्कादित्वात् ( सू० ) कृत्वम् ॥ २७ ॥ ( लघुः ) इष्टे यथा- दर्शनेन लघुना यथा तयोः प्रीति-मापुरुभयोस्तपस्विनः ( रघु० ) । अपिशब्दात्क्षिप्राल्यागुर्गुनिःसारेषु ( लघुः ) । निदाघस्त्वातपे स्वेदे प्रीप्ते चैव ( प्रकीर्तितः ) । अथ चान्ताः । कमश्चति कचति वा काचः । शिक्यं रज्जुयन्त्रम् । मृद्भेदो धातुविशेषः, यथा- काचः काचो मणिर्गणिः ( वृद्धचाणक्यः ) । दृमोगः काचाख्यः । विपर्यासो माया । विपर्यासे च विस्तारे- इति पाठो युक्तः, प्रभवेनावशब्दे ( सू० ) इत्ययो निषेधात् । शुचिः शोधकोमिविशेषः, यच्छ्रुतिः- अमये शुचये च द्वितीयायाम् ॥ २८ ॥ मासोत्रापाहः, यच्छ्रुतिः-





महेन्द्रगुग्गुलूकव्याघ्रमाहिष कौशिकः ।

रुक्तापशङ्कास्वातृकः स्वल्पेपि भुङ्क्तेऽपि ॥ १० ॥

जैवातृकः शशाङ्केपि सुरेप्यम्बस्य वर्तकः ।

व्याघ्रेपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

सा ( शा ) लावृकाः कपिकोमुष्मानः स्वर्णेपि गैरिकम् ।

पीडार्थेपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेवृते ॥ १२ ॥

शीलान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवल्कले ।

साष्टे शते सुवर्णानां हेम्युरोभूषणे पठे ॥ १३ ॥

वीनारेपि च निष्कांस्त्री कल्कोस्त्री शमलैनसोः ।

वम्बेप्यथ पिनाकोस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेणवां च मेघजाले च कालिका ।

कारिकायातनाकृत्योः कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥

करिहस्ताङ्गुली पद्मबीजकोश्यां त्रिवृत्तरे ।

वृन्दारकौ कपिमुस्त्यावेके मुस्त्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥

रुक्ः ) तकि कृच्छ्रजीवने । स्वल्पः खलः । अपिशब्दाद्विद्वे कनिष्ठेपि, क्षोदः क्षुत्- क्षुदं क्षुधं च साति क्षुद्रकः ॥ १० ॥ जीवेरातृकन्वद्विष ( उ० ) । अपिशब्दादायुष्मति ( जैवातृकः ) । अपिशब्दात्पक्षि- विषेपे ( वर्तकः ) । ( पुण्डरीकः ) पुणेः पुण्ड्रेष्य रूपम् । अपिशब्दादिगजे, सिताम्बुजसितच्छत्रबोस्तु नर्पुसकं ( पुण्डरीकम् ) । यवान्बजमोदा । अपिशब्दादीपेलंकारे जीरेकेपि ( दीपकः ) ॥ ११ ॥ स्यन्ति साला आवृन्ति ( सालावृकाः ) । शातुविशेषपिशब्दात् ( गैरिकं ), गिरी भवं गैरिकं, गिरिणा मित्रहो गिरिकारप्रत्ययोऽन्यधिकन्यायेन । अपिशब्दादप्रियाक.याविलक्षविपर्ययेषु ( व्यलीकं ) । कामजेपराधेपि, विद्येपेनालीकं, व्यलीकमपि च व्यङ्गमिति च माला । अत्यते वायंतेलीकं न ढीयते वा, अलीकम- हितं विदुरिति कात्यः । ( अलीकं ) ललाटेप्याहुः ॥ १२ ॥ अनूच्यति समवेत्यनूकं, उच समवाये, न्यङ्गादिः ( सू० ) । द्वे इत्येव, शलति प्रथमवति शल्कं खण्डः । वल्कलं वाष्पं त्वक् । सहास्रभि- र्वर्तते साष्टं, बहुमीहोसंख्येयेदजबहुगणात् ( सू० ) । सुवर्णं पोडश मापकाः । पलं सुवर्णाधत्वारः । दीनै- रयंते दीनारं रूपम् । निःशेषेण काम्यते निष्कः, आकषोपि ॥ १३ ॥ कल्पते कल्कं इवाधधूर्णं विनीयाक्यं, शमलं विष्टेत्येके । एनः पापं, यथा- तपो न कल्कोध्ययनं न कल्कः । अपिनष्टते पिनाकं त्रिशूलं शांकरमेवात् ॥ १४ ॥ चकारात्रभूमृतायां यवादौ ( धेनुका ), हस्तिन्यां तु नामैतत् । कृपापीचेनुसमामवानीषु च ( धेनुका ) । चात्सुवर्णादेर्देव सुरायां च, काला वर्णः समयथास्त्यस्याः कालिका, हन्ता इति िष्ट । कृम् हिंसायां, कारिका नारकी भयम् । करणं कृतिष्व कारिका, पर्या- यार्हणोत्पत्तिषुच ( सू० ) इति ष्वच् । कारिका यातनावृत्त्योरित्येके, वृत्तिः श्लोकैर्विवरणं, कारिके वृत्ति- यातने इति दुर्गः । कर्णस्यालंकारः कर्णिका, कर्णललाटात्कनलंकारे ( सू० ), द्वयोस्त्विवार्ये ( इवेपति- हृतौ, संज्ञायां ) ॥ १५ ॥ खान्तेभ्यः प्राग्वाच्यलिङ्गाः । वृन्दमस्त्यस्येति ( वृन्दारकः ), शृङ्गवृन्दा- भ्यामारकन् ( वा० ) । रूपमस्त्यस्य रूपी । देवोप्युपचारात् ( वृन्दारकः ) । संख्यायां च, यत्कात्यः- प्रधानान्यासहायेषु संख्यायां चैक इष्यते ॥ १६ ॥ दम्भः प्रयोजनमस्त्यस्य दाम्भिकः । यतः कुक्षु

नानार्थाः केपि कान्तादिवर्गेऽप्येव नानार्थाः कीर्तिताः ।  
 भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥  
 आकाशं त्रिविधं नाको लोकास्तु भुवने जने ।  
 पद्ये यशसि च श्लांशः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥  
 जम्बुकी कोष्ठुवक्रणौ पृथुको चिपिटार्मकौ ।  
 आलोकौ दशन( नोद् )घातौ भेरी पटहमाण( न )कौ ॥ ३ ॥  
 उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः कलङ्कोङ्कापवादयोः ।  
 तक्ष मां नागवर्धयार्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥  
 मारुतं वधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिराम्बुनोः ।  
 स्यात्पलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥  
 उल्के करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पंचकः ।  
 कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥  
 किङ्कुर्हस्ते वितस्ती च शूककीटे च वृश्चिकः ।  
 प्रतिकूलं प्रतीकस्त्रिज्वरदेशं तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥  
 स्याद्भूतिकं तु भूमिम्बे कदफलं भूस्तृणेषु च ।  
 ज्यांस्त्रिंशकायां च घांसे च कांशातक्यथ कदफले ॥ ८ ॥  
 सिते च खडिरे सोमवल्कः स्यादथ सिद्धके ।  
 तिलकल्के च पिण्याको वाहिकं रामट्रेपि च ॥ ९ ॥

इह तावत्कान्तान्तादिवर्गेष्वेव नानार्थाः कीर्तिताः । तन्मध्याच्च ये केपि येष्वर्थेषु भूरिप्रयोगाः  
 प्रचुरव्यवहारास्ते तत्पर्यायेष्वपि कथिता इति पौनरुक्त्यादिदोषो नोद्भावनीयः । कान्ता इतो वक्ष्यन्ते ।  
 एवं सान्तगान्तादौ द्रष्टव्यम् ॥ १ ॥ व्योम्नि स्वर्गे च नाको वर्तते, नास्त्र्यक्रमप्रेयोप्रेति । लोकवते  
 लोकः, यथा— ब्रह्मलोकः, गतानुगतिको लोकः । पद्ये पदवदे वृत्ते, श्लांशयते श्लोकः, श्लोकं संघाते ।  
 स्पति— अन्तं करोति सायकः ॥ २ ॥ ( जम्बुकः ) जम्बु अदने । पर्थते वर्धते पृथुकः । चिपिट आर्ध-  
 सस्याभ्योषः । ( आलोकः ) भावे करणे च घञ्, अवलोकनप्रकाशार्थो । अन्तस्तन्त्रीका उक्ता भेरी ।  
 पटहो दुन्दुभिः, समन्तादपत्याणकः ॥ ३ ॥ अमन्त्रस्मिन्वालादय इत्यङ्कः, अङ्कवतेनेन च, अङ्कि,  
 लक्षणे, यथा मृगाङ्कः । कल्पते क्षियते कलङ्कः, अङ्कोत्र चिह्नम् । नागो नागविशेषः । वर्धक-  
 स्तथा । अर्थ्यतेर्कः, वृक्षेपि ॥ ४ ॥ आत्मन्यपि कः । कं मुखेपि च, कायति काम्यते कचति ( ते )  
 वा । पुलं विस्तारमकति पुलाकः, यथा— पुलाका इव धान्येषु । संक्षेपे क्षिपे, यथा— पुलाकक्षरी  
 विपुलाशयः स्यात् । सिक्थे, यथा— स्थालीपुलाकन्यायेन ॥ ५ ॥ ( पञ्चकः ) पित्ति गतो पचिर्वा ।  
 ( करकः ) चशब्दाद्वर्षोपले दाडिमे च, कृ विक्षेपे । ( विनायकः ) चशब्दाद् गणपतौ धर्मराजे च  
 विनैतृशात् ॥ ६ ॥ कायते ज्ञायतेनेन किङ्कुः, चतुर्विंशत्यङ्गुलं द्वादशाङ्गुलं च मानम् । वृश्चतीति  
 ( वृश्चिकः ) शूकशान्कीटः कण्टकी च कृमिः । च दशौ मदन्तिकायां च ( वृश्चिकः ) । प्रतीपमेति  
 प्रतीकः । एकदेशोऽंशः, यथा सप्रतीकः श्लोकः । द्वीपेपि ( प्रतीकः ) ॥ ७ ॥ एते बभौषधिवर्गे स्या-  
 द्यताः । तथा भूमिम्बः किराततिक्तकः । कदफलः श्रीपर्णी । भूस्तृणं छत्रा । यकान्यां च ( भूतिकः ) ।  
 ज्योत्स्निका पटोत्सिका । घोषोपामार्गः ॥ ८ ॥ पीड्यते पिण्याकः । बाह्यकभित्तयेके । अपिचशब्दाद्वह्नीक-  
 देशोत्पन्नेभादौ हिङ्गो कुङ्कुमे च ॥ ९ ॥ कुक्षिकस्यापत्यं, कोशो वा प्रयोजनमस्य कौशिकः । ( आत-

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामेथास्त्रिंशो नु निष्ठेवः ।

निष्ठूतिर्निष्ठेवनं निष्ठूवनमित्यभिज्ञानि ॥ ३८ ॥

जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूतिः ।

उदजस्तु पशुभरणमकराणिरित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ।

आपूपिकं शाकुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥

माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ।

हल्या हल्यानां ब्राह्मण्यवाढ्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥

द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठमनुकसात् ।

खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यं च वृणाम् ॥ ४२ ॥

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक् पृथक् ।

अपि साहस्रकारीषवा( चा )र्मगाथदेणादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्गः । २ ।

राशीकरणं वा ॥ ३६ ॥ ( निगार इ० ) निगारमुद्गारणं च, उद्गोम्रः ( सू० ) इति घञ् । निष्कावः

कार्णे[ से ], बौधुध्रुवः ( सू० ) इति घञ् । ( उद्ग्राहः ) उद्गमद्गं, उदिग्रहः ( सू० ) इति घञ् ॥ ३७ ॥

( उपरामः ) निवृत्त्यर्थं, नोदात्तोपदेशस्यमान्यस्यानाचमः ( सू० ) इति वृद्धिनेयस्य नास्ति - अनु-

दात्तोपदेशत्वात्, यमउपरमे ( ग० ) इति निपातनात्तुपरमः । ( निष्ठूवन ) त्रिंशेतिशोर्लुपिवादीषः

( चान्द्रसू० ) ॥ ३८ ॥ ( जूतिः ) ऊतियूतज्जतिसातिहेतीति ( सू० ) सधुः, जवनमित्येके ।

( सातिः ) शोन्तकर्मणि । ( जूतिः ) ज्वरत्वरसिध्यतीति ( सू० ) ऊवम् । ( उदजः ) समुद्वारजः

पशुषु ( सू० ) इत्यर्, अघ्नयोः ( सू० ) इति वी नास्ति । न करणं ( अहगणः ), यथा- अकराणि-

रिह भूयादप्रशस्तस्व घातुः, तस्याजननिरेवास्तु ( शिशु० ), आकं शेनजगनिः ( सू० ) । तथा- आक-

शेज्जन्मोर्महः ( सू० ), निग्राहस्ते वृषल भूयात्, अवग्राहः ॥ ३९ ॥ औपगवानां समूहः ( औपगव-

कम् ) । आदिशब्दाद् गार्भकं, दासकं, गोत्रोक्षोष्ट्रेति ( सू० ) वुत् । तस्य वृन्दमित्येव- आ वर्गसमाप्तेः ।

अपूपानां समूह आपूपिकम्, आचितहस्तिधेनोष्ट्रक ( सू० ) । आदिशब्दाद्ग्राहदेहादिः [ वृद्धादिः ] ॥ ४० ॥

( माणव्यं ) ब्राह्मणमाणववाढ्याद्यत् ( सू० ) । ( सहायता ) ग्रामजान्मुद्रादेभ्यस्तत् ( सू० ) ।

( हल्या ) पाश्यादिभ्योयः ( सू० ) ॥ ४१ ॥ पशूनां समूहः पार्श्वं, पार्श्वमनुकसात् ( वा० ) ।

( पृष्ठं ) पृष्ठदुगसंख्यानात् ( वा० ) यत्, यत्त्रिविधेऽदः स्मरति । ( खलिनी, इ० ) खलगौरथात्

( सू० ), इतिप्रकृत्यचञ्च ( सू० ) इति- इतिप्रकृत्यचञ्च । मनुष्याणां समूहः ( मानुष्यं ), गोत्रोक्षोष्ट्रेति

( सू० ) वुत्, प्रकृत्यादेराजन्त्यमनुष्ययुवानः ( वा० ) इति यलोपाभावः ॥ ४२ ॥ ग्रामादिसमूह एते

वर्तन्ते, ग्रामजनेति ( सू० ) तत् । पाश्यादिभ्योयः ( सू० ) यः, भिक्षादिभ्योऽङ् ( सू० ) । पृथक्पृथ-

गिति परस्परं पर्यायत्वाभावः । बर्मिणां समूहो वर्मगम् । आदिशब्दाद्गर्भगाद्यारादि । वाच्यं चात्र-

परभागो गुणोत्कर्षः प्रतिपत्तिः प्रगल्भता । ग्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः संदर्भो रचना न ना ॥ ग्रणिपातस्त्व-

नूनयः प्रणयः सान्त्वना न ना । दवधुः परितापः स्यादनुतापो विसृतिरितम् ॥ क्रीडा विनोदः खेदस्तु

निर्वेदश्चावसप्रता । आप्लवः श्रवणं गर्धो धनायाकृतमाशयः ॥ अहकपाली परिघट्टग आसारं त्वासरद्वलम् ।

विगानं वचनीयत्वमत्याधानमतिक्रमः ॥ हानं त्यागस्तुला कक्षा क्रिया चेष्टा विकल्पनम् । वितर्कस्तर्क

आसृज्यं कौशेयमजिगीगुता ॥ ४३ ॥ इति संकीर्णवर्गः । २ ।



विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्बस्त्वतिसर्जनम् ।  
 विध्वावस्तु प्रविख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥  
 निपाठनिपटी पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने ।  
 आदीनवास्त्रवी क्लेशे मेलके सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥  
 संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।  
 परिग्मः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगृहणम् ॥ ३० ॥  
 निर्वर्णनं तु निभ्यानं वरिनालोकनेक्षणम् ।  
 प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥  
 उपशायो विशावश्च पर्यायशयनार्थकौ ।  
 अर्तनं च झतीया च हृणीया च घृणार्थके ॥ ३२ ॥  
 स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।  
 पर्ययोतिक्रमस्तस्मिन्नातिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥  
 प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।  
 स संस्तावः कृतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥  
 निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उव्घनः ।  
 स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निह्नयते ॥ ३५ ॥  
 आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्कसमे निधः ।  
 उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्यांक्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

इति घम्, प्रसिध्यते । ( अवेक्षा ) अवधानार्थे ॥ २८ ॥ ( निपाठ ६० ) नौगदनदेति ( सू० ) वा  
 घम् । ( तेम ६० ) इति छिम छिम आर्द्रभावे । ( समुन्दनं ) उन्दी क्लेशे । ( आदीनवः ) दीहृ  
 क्षये । आस्रवन्तीन्द्रियाभ्यनेन, स्रवः, यज्जैनाः— जीवाजीवास्त्रवसंवरनिर्जरबन्धमुक्तयः सप्त पदार्थाः ।  
 मेलनं मेलः, मिलिलौकिकः । सङ्गनं सङ्गः, घम् । संगतिः संगमः, प्रहवृद्धनिश्चिगमश्च ( सू० )  
 इत्यु ॥ २९ ॥ अन्वीक्षणमन्वेष्टणमित्येके पेटुः । ( मार्गणं ) मार्गं अन्वेष्टणे, ल्युट् । ( मृगणा ) मृग  
 अन्वेष्टणे, युच्, अदन्तत्वाद् गुणाभावः । मृगः, एगच् ( सू० ), एरज्ज्यन्तानाम् ( झा० ) इत्यस्य  
 प्रादिभ्यात् । गवेष्टणं च । ( परिग्मः ) रभेष्टाश्लितोः ( सू० ) इत्यवि नुम्, आलिङ्गनार्थे ॥ ३० ॥  
 ( प्रत्याख्यानं, ६० ) निराकरणार्थे ॥ ३१ ॥ ( उपशायः ) व्युपयोःशेतेः पर्याये ( सू० ) इति घम् ।  
 पर्यायः क्रमः, ( यथा )— तत्राशराजोपशायः । ऋतिः सौम्रो घृणार्थः, ऋनेरीयङ् ( सू० ) । हृणीहृ  
 क्वादिः, यङ्, अप्रत्ययात् ( सू० ) ॥ ३२ ॥ व्यतिक्रम्यासनं व्यत्यासः । शिरीतासनं विपर्यासः, अस्वते-  
 र्घम् । विपरीतायनमितौघोऽपि विपर्ययः, परावनुगाययङ्गः ( सू० ) इत्यपि शिरययः । परित्यज्ज-  
 यनं पर्ययः, परावनुगाययङ्गः ( सू० ) इति— उपात्यये क्रमोद्धरणे घम् नास्ति । अतिक्रम्य पतनं  
 यथा— कालातिपातः । उपपन्नस्यात्ययोतिक्रमगनुपात्ययः ॥ ३३ ॥ आकृष्टे कृत्वा यद् भृत्यानां कार्येषु  
 विसर्जनं तत्प्रतिशासनम् । समं स्तूयतेस्मिन्छन्दोगेः संस्तावः, यष्टेसमिस्तुवः ( सू० ) इति घम् ॥ ३४ ॥  
 उदयतोस्मिन्मुदघनः, उदघनोत्पाधानम् ( सू० ) इति साधुः । ( स्तम्बघ्नः ) स्तम्बेकच ( सू० )  
 इति कः, स्तम्बस्तृणं विद्वच । ( स्तम्बघनः ) अच् च ॥ ३५ ॥ ( आविधः ) व्यधेः, घमयेकविधा-  
 नम् ( बा० ) । समन्तात्समः, समस्तुल्यागेद्वारिणाहः । नियतं हन्यते निधः, निर्वोन्नितम् ( सू० )  
 इति साधुः । ( उत्कारः ) कृभान्यं ( सू० ) इति घम्, उर्योरित्यनुवृत्तेः ( उन्मोर्मः ) । ऊर्ध्वं क्षेपो

निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परिक्रिया ।  
 विधुरं तु प्रविश्लेषेभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥  
 संक्षेपणं समसनं पर्यवस्या विरोधनम् ।  
 परिसर्या परीसारः स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥  
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ।  
 संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याद्वदशनम् ॥ २२ ॥  
 संस्तवः स्यात्परिधयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ।  
 नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥  
 लवोभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ।  
 प्रस्तावः स्याद्वसरस्त्रसरः सूत्रवण्डनम् ॥ २४ ॥  
 प्रजनः स्यादुपसरः प्रसरः प्रणयः ( प्रश्रयप्रणयौ ) समौ ।  
 धीशक्तिर्निष्कमोस्त्री तु संकामो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥  
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगा( युद्धा )र्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।  
 स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥  
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठमभावनायस्तु निया( पा )तनम् ।  
 उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भा विलेपनम् ॥ २७ ॥

छन्दयति- आह्लादयते छन्दः, अच् । आशेरतोस्मिन् भावा इत्याशयः ॥ २० ॥ संश्रुतो [ वि ]क्षेपो  
 विप्रकीर्णता संक्षेपणम् । एवं समसनम् । पर्यवस्यानं ( पर्यवस्या ) । पर्यन्ते समन्ताद्वा सरणं परिसर्या,  
 पारिचर्यापरिसर्यामृगबाटाद्यानामुपसंख्यानात् ( वा० ) क्यप् । ( आस्या ) वासरूपत्वात् ( वासरूपो-  
 ज्ञियाम् ) ष्यत् । ( आसना ) ण्यासश्रन्येति ( सू० ) युच् ॥ २१ ॥ ( विस्तरः ) प्रयनेवावशब्दे  
 ( सू० ) इति घञ् । विस्तीर्णं प्रहणं विग्रहः । विविधमसनं व्यासः । ( विस्तरः ) घञः शब्दे निषे-  
 षाद् ( घप् ) । संवाहनं स्पर्शसुखमिति तु लक्ष्यम् ॥ २२ ॥ संगतं स्तवनं संस्तवः, धातोरनेकार्थत्वं  
 षोडशर्गेणषोषो द्योत्यते । समन्ताच्चयनं परिचयः । प्रकषेण निकटे सरणं प्रसरः, बाहुलकादप् । नियत  
 बन्धनं नीवाकः, तुलाकृतं न्यूनाधिक्यं क्रयादरो वा । संनिर्घोषं धाम् नैकव्याप्ये ॥ २३ ॥ ( अभिलावः )  
 निरम्भोःपूर्वोः ( सू० ) इति घञ् । ( निष्पावः ) धान्यादानंविमुक्तिकरणम् । प्रसङ्गेन स्तवनं प्रस्तावः,  
 प्रमुखाद्वयः ( सू० ) इति घञ् । प्रस्यति चलति प्रसरः, सूत्रं वेष्टयते यत्र वानाशम् ॥ २४ ॥ प्रजा  
 क्तोस्मिन् प्रजनः पशूनां गर्भप्रहणकालः, जनिवध्याश्च ( सू० ) इति वृध्यभावः । ( उपसरः ) प्रजने  
 शर्तैः ( सू० ) इत्यप् । ( प्रसरः ) प्रांत्या प्रायनम् । धीशक्तिः प्रज्ञासामर्थ्यमष्ट्या । संक्रामन्त्यनेन-  
 संक्रमः, संक्रम इत्येकं, सेत्यादिः, यत्कौटिल्यः- मुखसमः संक्रमः । दुर्गं संचरन्त्यनेन, गोरसंच-  
 रे ( सू० ) साधुः, धवि तु संचारः ॥ २५ ॥ प्रयुक्तिः कर्मारम्भे प्रयोगः, प्रकृष्टो युद्धार्थो (योगः) (प्रत्यु-  
 त्क्रमः), [ प्रकृष्टार्थं प्रत्युदो प्राप्यो ], प्रत्युत्क्रान्तिर्वा । ( प्रक्रम इ० ) मोषौ- आरम्भार्थे । आमिमु-  
 ख्येनादानमभ्यादानम् । उद्धनमुद्धातः, उपोद्धातोपि, यदाहुः- चिन्तां प्रकृतसिद्ध्यर्थमुपोद्धात  
 प्रचक्षते । ( त्वरा ) त्वरघेनादित्वात् षित्त्वादह् ( विद्विदादांति ) ॥ २६ ॥ प्रतिष्ठमनं रोचः, प्रदे-  
 स्तन्मेः ( सू० ) इति वत्वम् । अवनयनमवनायः खलाकारः, अवोदोर्नयः ( सू० ) इति घञ् । निवा-  
 तनं, यत निवारोपस्कारयोः । उपलब्धिरुपलम्भः, उपसर्गात्स्वल्लघयोः ( सू० ) इति नुम् । समाह्वयो  
 रभियचार्थे ॥ २७ ॥ विग्रहो विसर्वादो वा । ( विलम्भः ) दानार्थे । ( विश्रावः ) वीक्षुभुवः ( सू० )



त्रिमूर्तेः परिमलोभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।

निग्रहस्तु विरोधः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

मुष्टिबन्धस्तु संग्रहो द्विभ्ये ढमरविष्टवौ ।

बन्धने प्रसितिः स्वारः ( तिष्ठारः ) स्पर्शः स्पृशोपतसरि ॥ १४ ॥

विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्रिद्वय इद्वितम् ।

परिणामां विकार द्वे समे विकृतिविक्रिषे ॥ १५ ॥

अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ।

प्रत्याहार उग्रादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

अभिहारोभिग्रहणं निर्हारोभ्यवर्णनम् ।

अनुहारोनुहारः स्यादर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं बहिः ।

वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जागरा द्वयोः ।

विघ्नान्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नान्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

परवादिर्दानादिभिः स्वीकारे वर्तते । ( अनुग्रहः ) प्रहेः- प्रहृष्ट- ( सू० ) इत्यप् । नियमनाय प्रहणं निग्रहः, निरोध इति पाठ्यम्, विग्रहो विरोध इति वा । आभिमुख्येनोद्यमः ( अभियोगः ) ॥ १३ ॥  
संमिश्रौ ( सू० ) इति घञ्, समग्रो मन्त्रस्य । डयने विद्वो डिम्बः, डीङ् गतौ, अञ्चलकलहः, लुब्ध्यादिरित्येकं । डयने ढमरः । ( प्रसितिः ) पिञ् बन्धने । स्त्र् शब्दोपतापयोः, स्वरति स्वारः । ( स्पर्शः ) पदद्वय- ( सू० ) इत्यत्र स्पृशोपतापएव ( वा० ) इति कर्त्तरि घञ् । ( स्पृश ) वाऽपक-  
पातुन् ( वासरूपोन्नियाम् ) ॥ १४ ॥ निरुष्टं करणं निहारः खलीकारः । ( इष्टः, इद्वितं ) आवे  
घञ्चौ । इङ्गिताकाराभ्यां भावज्ञानमित्यादौ गोबलीवर्द्धनशयेन- इङ्गितं चेष्टितम् । आकृतिग्रहणमाकारो  
मुसरागादिरिति कौटिल्यो व्याख्यातः, अयं त्वनयोराशयज्ञापकत्वादेक्यं मन्यते । विकारेषु त्रयो  
वर्तन्ते, द्वयोस्तु साम्यं स्वीत्वात् ॥ १५ ॥ ( अपहारः ) हानिश्चित्यर्थः । उपसर्गवैचित्र्यादर्शभेदः ।  
( समाहारः ) अनेकस्यैकप्राध्यायापः । ( प्रत्याहारः ) एकत्र ढौकनं- अत्रादिकविषयेभ्य इन्द्रियाणा-  
माकर्षणं च । ( विहारः ) क्रीडासंचारः ॥ १६ ॥ ( अभिहारः ) आभिमुख्येन हरणम् । ( निर्हारः )  
युक्त्या निःसागकर्षणम् । अनु सादृश्ये । ( व्ययः ) व्यय वित्तसमुत्सर्गं ॥ १७ ॥ प्रारम्भो बहन्स्य  
प्रवाहः कार्यारम्भः, आविष्टिप्रा जलदेः प्रवृत्तिर्वा । ( प्रवहः ) गोचरसंचरति ( सू० ) साधुः, बाहु-  
बद्धादग्या । द्वौ द्वौ भिन्नार्थौ, विविधं यमनं वियामः, उपरतिमात्रं यमः, संयमनं संयमः, यमःसमुपनि-  
विषुचेति ( सू० ) वा घञ् ॥ १८ ॥ अभिभक्तिं चरणं मारणोच्चाटनादिकृत्यासाधनम् । ( जागर्या )  
इच्छा ( सू० ) इत्यत्र जागर्तैरकारोवावक्तव्यः ( वा० ) पक्षे क्यप्, जाग्रोविचिण्लुडित्सु ( सू० ) इति  
गुणः, पवि तु जागरः । विहन्त्यस्मिन् विभ्यः घञर्थेकविधानम् ( वा० ), विहन्यते कार्यमनेन वा ।  
बन्तरायने कार्यव्यवधानमन्तरायः । प्रतीपमूहने प्रत्यूहः । उप समीपे हन्यते गम्यतेस्मिन्नुपघ्नः, उप-  
आश्रये ( सू० ) इति साधुः ॥ १९ ॥ निःपूर्वो विशिष्टभोगार्थे । सर्वत्रात्र प्रत्यये तन्त्रम्, अतो निर्वे-  
धनमुपभुक्तिः, उपसर्पणं, परिकर इत्यानुश्रयेम् । समन्तात्सर्पणं परिसर्पणं । विघटि [ टि ] ता धूः कार्य-  
भारोत्त विधुरमिति प्रतीच्याः, विहृदं धानं ! मित्युदीच्याः । ( अभिमायः ) प्रीह कान्तौ ।

वर्धनं छेदनेयं द्वे आमन्त्र्यमसमाजने ।

आप्रच्छन्नमथाज्ञायः संप्रदायः ह्यये क्षिया ॥ ७ ॥

महे माहो वशः कान्तौ रक्ष्यस्वाणे रणः कृजे ।

व्यधो वेधे पत्ता पाके हवो वृत्तौ वरो वृत्तौ ॥ ८ ॥

ओषः प्रोषे नयोनाये ज्यानिर्जीर्णो भ्रमो भ्रमौ ।

स्फातिर्वृद्धौ गथा ह्याती स्फुटिः वृक्षतौ स्नयः स्नवे ॥ ९ ॥

एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमिती प्रमा ।

प्रसूतिः प्रसवे शोते प्राधारः क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥

उत्कर्षोतिशरः संधिः श्लेषे विषय आभ्र( श ) ये ।

क्षिपायां क्षेपणं गीर्णमिरौ गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उक्षाय उक्षये भ्रायः भ्रयणे जप( य ) ने जपः( यः ) ।

निगादो निगादे मादो मद उद्वेग उद्वेगमे ॥ १२ ॥

समाज प्रीतिदर्शने । ( आप्रच्छन्नं ) आप्रपूर्वः प्रच्छिन्नलिङ्गनादिनानन्दनार्थः, यथा- आप्रच्छस्व पिब-  
सखममुम् ( मेघ० ) । वृद्धपारंपर्यानामानमात्रायः । ( स्नयः ) क्षि स्नवे, एरन् ( सू० ) । ( क्षिया )  
क्षीप् हिंसायां, अह् ॥ ७ ॥ ( महेः ) प्रहृष्टिदि ( सू० ) अप् । ( माहः ) बाहुलकाद् घम्  
( भावे ) । ( वशः ) वशिर्गण्योरुपसंख्यानः दप् ( वा० ) । ( रक्षः ) वज्रयाचेति ( सू० )  
भावे नङ् । रक्ष इत्यपपाठः, गुरोश्चहलः ( सू० ) इत्यकारः स्यात् । रणनं रणः, अप् ।  
( कृजे ) कृणोर्वीणार्याच्च ( सू० ) । व्यधनं व्यधः, व्यधजपोरनुपसर्गे ( सू० ) इत्यप् । वेधनं  
वेधः, विष विधाने । पचनं पच, पित्वादह् ( विद्भिदादिभ्योह् ) । पक्षिर्बाहुल-  
कात् । ( हवोः ) ह्वःसंसारणंच ( सू० ) इत्यप् । वरणं वरः, त्रियते वा, यत्कात्य-  
तपोभिरिष्यते यन्मु देवेभ्यः स वरो मतः, वृश् वरणे, वृश् संभक्तौ च ॥ ८ ॥ ( ओषः )  
उष दाहे । ( नायः ) त्रिणीभुनोनुसर्गे ( सू० ) इति घञ् । ( ज्यानिः ) ग्लाम्नाज्यादाभ्योनिः ( वा० ) ।  
जरणं जीर्णः, जृत्वादिभ्यः क्तिभिरावत् ( वा० ) । ( भ्रमः ) घञ् । भ्रमणं भ्रमिः, इकृष्णादिभ्यः ( वा० ) ।  
( स्फातिः ) स्फायी वृद्धौ । प्रथनं प्रया, घ्रादयः पितः ( ग० ) इत्यह् । वृक्तिः, वृत्तौ संपर्के ।  
( स्नयः ) ण्यु प्रसवणे ॥ ९ ॥ विशा समृद्धावित्येके पेटुः । एधनमेधा, विद्भिदादिभ्योह् ( सू० ) । स्फुरणं  
स्फुरणा, स्फुर चलने कृटादिः । ( प्रमितीः ) माह् माने, फिन्, यतित्यतीति ( सू० ) इत्यम् ।  
( प्रमा ) आतथोपसर्गे ( सू० ) इत्यह् । ( प्रसूतिः, इ० ) वृद्ध प्राणिगर्भविमोचने, वृ प्रसवे वा ।  
( श्योतः ) वयुतिर् क्षरणे । ( प्राधारः ) घृ क्षरणशीत्योः । ( क्लमथः ) औणादिकोप्यधञ्, क्लमथुरि-  
त्यपपाठः ॥ १० ॥ ऊर्वै करणं ( उरुर्ध्वः ) । ( संधिः ) उपसर्गोऽङ्कः ( सू० ) । विधीयतेत्र  
विषयः, विधिपोति वा, आश्रयस्थानम् । ( क्षिया ) भिदादिवाह् ( विद्भिदादीति ) । गिरणं गिरिः,  
इकृष्णादिभ्यः ( सू० ) । कृटादिवाह् गुरणमाहुः, चुरादेर्गौरणमपि । अद्ययमे ( ग० ) इति निपा-  
तनादुद्यमे ॥ ११ ॥ ऊर्वै नयनमनुसरणं बोधायः, अवोदोर्नयः ( सू० ) इति घञ् । ( उद्यमे )  
बाहुलकाद्- एरन् ( सू० ) ( भ्रायः ) त्रिणीभुनोनुसर्गे ( सू० ) इति घञ् । ( जपः ) व्यधजपो-  
रनुपसर्गे ( सू० ) इत्यप् । ( निगादः ) स्फुट्ययने, नोगदनदेति ( सू० ) वा घञ् । ( मदः )  
मदोनुसर्गे ( सू० ) इत्यप् । ( मादः ) सधमादस्थयोश्छन्दासि ( सू० ) इति निपातनाद् घम् ।  
( उद्वेगः ) ओविजी भयचलनबोः, घञ् ॥ १२ ॥ ( परिमलः ) संज्ञापूर्वकराद् वृक्षभावः । अभ्यु-

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णैः लिङ्गमुच्येत ।  
 कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्वराः ॥ १ ॥  
 साकल्यासंगवचने पारायणतुरायणे ।  
 यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्या ( स्या ) विलक्षणम् ॥ २ ॥  
 शमयस्तु शमः शान्तित्तान्तिस्तु शमयो शमः ।  
 अवदानं कर्म वृत्तं कामदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥  
 वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ।  
 विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥  
 पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधा ( वा ) रणमित्यपि ।  
 सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥  
 आक्रोशनमभीषद्गः संवेदो वेदना न ना ।  
 संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्ञा भिक्षार्थनार्चना ॥ ६ ॥

प्रहरणायैः प्रकीर्णकेत्र लिङ्गमुच्येते । प्रकृत्या ( यया )-अपरस्वराः सार्था यान्ति, अपरस्वराणि  
 कृतानि वदन्ति [ अक्षराणि वदन्ति ] । प्रत्ययेन ( यया )-फिन्, शान्तिः, नपुंसकेभावेषः ( सू० )  
 स्युर-आसितं, तर्पणम् । अवनेन तु ( यया )-कर्मैव कार्मणम् । आ. ए. व्दा. द्वुपभेदः आह. च. दिना  
 ( स्या )-यदृच्छा स्वैरिता, शमयस्तु शमः । ( कर्म, क्रिया ) भावकर्माणैर्मन्त्रे ( सर्वधातुभ्योमन्त्रिन् ),  
 इमः शम ( सू० ) । क्रियासंततत्वे गम्यमाने, अपरे च परे च-अपरस्वराः सार्था यान्ति, अपरे च परे  
 च इत् तदपरस्वरं कृत्वा वा, अपरस्वराः क्रियासातत्ये ( सू० ) इति साधुः ॥ १ ॥ पारमयन्ते वेन  
 वदन्ते म्यानुवन्ति पारायणम् । त्वरणं तुरणं वा तुः, तथा हेतुभूतया-अन्यते येनासक्तं गच्छन्ति तपु-  
 रणम् । वा या-इच्छा यदृच्छा, यदृच्छाशक्तिजानुकापेति ( माध्यव० ) वाक्यलिङ्गात्साधुः ।  
 सेन-इतं तच्छीघ्रः स्वैरी, भावे तत् ( तस्यभावस्वतलो ), स्वैरस्य भावो वा । आसनमास्या,  
 व्यासन्नयेति ( सू० ) युधि प्राप्ते, वाऽसरूपेण ( वासरूपोऽस्त्रियां ) ऋलंघ्यन् ( सू० ), अस्त्रियामिति  
 निषेधो द्वयोरेवोत्सर्गापवादयोर्न त्वेकस्य । विगतं लक्षणमालोचनं यत्रेति विलक्षणमप्रतिशक्तिरित्यर्थः ॥ २ ॥  
 ( एवम्, इ० ) द्यौणादिकोऽप्यच्, चापि तु नोदात्तोपदेशस्येति ( सू० ) श्रुत्यभावः । कामक्रोधाद्यभावः  
 कल्पिस्तपःश्रद्धादिष्णुता दान्तिः । अवदीयतेनेन-अवदानं सोत्कर्षचरितं, वृत्तं परिशुद्धं, निर्व्यूढमित्येके ।  
 ( कामदानं ) कामनापूर्वं दानं स्वेच्छात्याग इत्यर्थः । कामदानमिति तु युक्तः पाठः ॥ ३ ॥ ( वशक्रिया )  
 शशीकरणम् । वनुचनोच्यते ( ग० ) इत्यनेकार्थत्वात्संवननं, वनु याचने वा । मूलैराषधिभिर्गृहीतकरणं  
 तद्, कर्मैव कार्मणं, तपुष्कात्कर्मणोऽण् ( सू० ) । ( विधूननं ) धून् णिच्, धून्वीमोर्नुक् ( बा० ),  
 स्युः । विधुवनमिति धू विधूनने, कुटादिस्वादाहेत् ( गाहृकुटादिभ्योऽङिण्डित् ) । ( अवनं ) अव  
 नीतो ॥ ४ ॥ महर्षियुयत्तस्य हस्तधारणं रोषः, रक्षस्य घृष्टे हस्तस्थापनं वा । ( छीवनं ) छिविसिञ्जोर्दी-  
 र्घ्य ( बान्धसू० ) इति वा दीर्घः । सेवनं स्यूतिः, छुःश्रुति ( सू० ) ऊट् । ( विदरः ) दृ विदारणे,  
 शरीर ( सू० ) । ( स्फुटनं ) स्फुटः कुटादिः । भेदनं भिदा, पिष्टमिदादिभ्योऽङ् ( सू० ) ॥ ५ ॥  
 अभिषजनं पराभिमुख्येन वाच्ययोजनमभीषद्गः, उपसर्गस्वर्णमिति ( सू० ) दीर्घः । वेदना, विद वेतने,  
 णिच्, व्यासन्नयेति ( सू० ) युच्, वेतेर्वा, षष्टिवन्दिदविभ्योपसंज्ञानात् ( बा० ) । स्यूडि तु वेदनम् ।  
 ( संमूर्च्छनं ) मुच्छा मोहसमुच्छ्राययोः । अभिव्यापनं सर्वतो वृद्धिः । याचनं याच्या, यञयाचेति ( सू० )  
 नङ् । ( अर्चना ) अर्द याचनेस्मात् स्वार्थेणिच्, युच् ॥ ६ ॥ ( वर्धनं ) वर्ध छेदनपूरणयोः । ( सभाजनं )

उक्तं भाषितगुणितं जल्पितमाख्यातमभिहितं छपिते ।  
 दुर्लभं गुणितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमयसितावगते ॥ १०८ ॥  
 ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाधुतं प्रतिज्ञातम् ।  
 संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ॥ १०९ ॥  
 ईलितशस्तपणायितपणायितप्रणुतपणितपनितानि ।  
 अपि गीर्णवर्णिताभिद्युतेष्टितानि स्तुतार्यानि ॥ ११० ॥  
 भक्षितचर्वितलितप्रत्यवसितगिलितस्वादितप्सातम् ।  
 अभ्यवहृताज्जग्धप्रस्तगलस्ताशितं भुक्ते ॥ १११ ॥  
 क्षपिप्रक्षोविप्रुप्रवृरिप्रुस्थविप्रुबंहिप्राः ।  
 क्षिप्रधुव्राभीप्सितप्रुधुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः ॥ ११२ ॥  
 साधिप्रुव्राधिप्रुस्फेप्रुगरिप्रुवृक्षिप्रुवृन्विप्राः ।  
 बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्वारकातिशये ॥ ११३ ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः । १ ।

निषेधस्यानित्यत्वज्ञापनात् । मतं तु मन्यते । बेतेस्तु विदितं, निष्ठा । प्रतिपन्नं, पद गतो, सर्वे गत्यर्थं  
 ज्ञानार्थं इति ॥ १०८ ॥ ऊरीकृतं तु विस्तारेङ्गीकारे च गतिसंज्ञाः ( ऊर्वादिविज्ञाचक्ष ), तेन  
 ऊरीकृतमपि । ( संगीर्णं ) समःप्रतिज्ञाने ( सू० ) इति संगीरङ्गीकारार्थः, गृ षण्डे ॥ १०९ ॥ ईलितं,  
 ईडं तुल्यो, बलयोरेकत्वम् । ( शस्तं ) संश्रुतं । ( पणायितं, इ० ) पण व्यवहारे स्तुतो च, पन च,  
 आयादयवार्धधातुकेवा ( सू० ) । अपि स्वार्थे, उपसर्ग इत्यंके । गीर्णं, गृ षण्डे ॥ ११० ॥ लितस्याने  
 कोटं पेढुः । ( प्रत्यवसितं ) प्रत्यवपूर्वः स्यतिर्भोजने वर्तते । ( गिलितं ) गृ निगरणे, अविधिभाषा  
 ( सू० ) इति लत्वम् । ( प्सातं ) प्सा भक्षणे । ( अभ्यवहृतं ) अभ्यववपूर्वो हम् भोजने । अपदे  
 स्मार्धं, अदोन्नमे ( सू० ) इति निपातनात्साधुः । ( जग्धं ) अवाधकान्यपि निपातनानि भवन्तीति  
 पक्षे जगिधः । बाध्यं चात्र-प्रदाष्यो ब्राह्मणहितो शीतदम्भस्त्वकृन्मयः । असंमतः प्रणाप्यः स्यादधुष्य  
 प्रियदर्शनः ॥ बेरागिको विरागाहः संसितस्तु सुनिश्चितः । ईश्वरः कुहनो गोष्ठश्रोत्र्यदृष्ट्य स्वगेहम् ॥  
 [ गोष्ठश्च, अचतुरिति ( सू० ) साधुः ] । तीक्ष्णोपायेन यान्त्रिच्छस्त्र आयःशूलिको जनः । गेहेष्टरो गृहे-  
 नदी पिण्डैश्चरोप संस्कृतः ॥ न्युत्पन्नप्रहृतधुग्गा अन्वेष्टानुपदी समौ ॥ नीलारागः स्थिररंभो हरिद्राग-  
 कोन्यया ॥ आसीन उपविष्टः स्वादूर्ध्वस्थोर्ध्वमो रियते । उन्मदय उन्मुक्ते गृधः पक्षे ( ह्ये ) न्युन्मस्त्वधो-  
 मुखे ॥ १११ ॥ अतिशयेन क्षिप्रः क्षोपिष्ठः । एवं धुदः क्षोदिष्टः । अतिशयेन प्रियः प्रष्ठः । एवमु-  
 र्बेगिष्ठः, प्रियस्थिररिफरोर्विति ( सू० ) प्रत्यस्कवर्बहादेशाः । स्थूलः स्वविष्टः, स्थूलद्वयुक्तेति ( सू० )  
 बन्नादिल्लप्यते पूर्वस्य च गुणः । बहुलो बंहिष्टः ॥ ११२ ॥ अतिशयेन बाढं साधिष्ठं, अन्तिकबाढबोर्ध-  
 साधो ( सू० ) । एवं दीर्घो द्राधिष्टः । स्फिरः ( बहुः ) स्फेष्टः । गुरुर्गोरष्ठः । ह्रस्वो हासिष्ठः । वृन्दारको  
 वृन्दिष्टः, प्रियस्थिरिति ( सू० ) आदेशः । बाध्यं चात्र-प्राभ्यं प्राभेयकप्राभाणावाध्विष्ठो बलादूते ।  
 चोारते मुषितं मुष्टं स्पष्टं तु नतोन्नतम् ॥ उत्पाटितोन्मुलितार्थमुद्गं वर्द्धते वृष्टम् । अर्चितं निश्चितं पूर्वं  
 परितं निभृते भृतम् ॥ प्रतिश्रितं प्रविष्टं स्यादन्तर्गुड निरपंके । न्यायित स्यादधः क्षितं भित्तमूर्ध्वमुद-  
 धितम् ॥ स्पष्टेर्वचितं चतुर्थे तु तुरीये तुर्यमास्थिते । आकारे भिन्नसंस्कृतः स्वादने शुभरेत (?) भूषितो ॥  
 प्रचारितं प्रतीष्टं द्वेषामृष्याक्षिगताः समाः । श्यानं शीमेन्बितेन्मीतं प्रक्षयनकटो स्फुटे ॥ ११३ ॥  
 इति विशेष्यनिघ्नवर्गः । १ ।







प्राप्य गम्यं समासाद्य स्थलं रीणं स्तुतं स्तुतम् ।  
 संगृहः स्यात्संकलितोवगीतः ख्यातगर्हणः ॥ ९३ ॥  
 विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ।  
 अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवध्वंस्तोवचूर्णितः ॥ ९४ ॥  
 अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्यनितं समे ।  
 बद्धे संवानितं सूतमुद्धितं संदितं सितम् ॥ ९५ ॥  
 निष्पक्के कथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ।  
 निर्वाणो मुनिवह्मचादौ निर्वातस्तु गतेनिले ॥ ९६ ॥  
 पक्वं परिणते गूढं हृत्तं मीढं तु मूत्रिते ।  
 पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्धान्तमुद्धते ॥ ९७ ॥  
 शान्तस्तु क्षमिते शान्तः क्षमिते प्रार्थितेर्वितः ।  
 शान्तस्तु क्षमिते छान्तश्चादिते पूजितेऽश्रितः ॥ ९८ ॥  
 पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिष्टितेवसिते सितः ।  
 मुष्टप्लुष्टोषिता वग्धे तष्टत्वष्टी तनूकृते ॥ ९९ ॥  
 वेधितच्छिद्रितौ विद्धं विक्षवितौ विचारिते ।  
 निष्पन्ने विगतारोको विलिनि विदुतकुतो ॥ १०० ॥

रणे । विरुद्धमक्रीयतेवगीतः ॥ ९३ ॥ विविधा विधा प्रकारोऽस्य विविधः । बहुरूपः पृथग्विधो नाना-  
 विधश्च । ( अवरीणः ) अवेति विरुद्धार्थः । चूर्णनावध्वस्तोवचूर्णितः, सत्यापपाशेति ( सू० ) निषि-  
 क्तः ॥ ९४ ॥ धुब्धस्वान्तध्वान्तलम्लिष्टविरिग्धफाण्टबाढानीति ( सू० ) फण्टः फाण्टं साधुः, त्रिकला-  
 कषायादिसारम् । ( स्वनितं, ध्वनितं ) मनस्तमसोरन्यत्रेद् । ( संदानितं ) दान अवलण्डने । ( मूतं )  
 मूत्रं बन्धने । यतिस्यतीति ( सू० ) इत्ये- उद्धितं संदितं च । पित्र बन्धने, सितः ॥ ९५ ॥ निःशेषेण  
 पक्वं निष्पक्म् । शान्तेः श्रपेथ शृतपाके ( सू० ) इति साधुः । निर्वाणि स्म निर्वाणः, वतादन्यत्र  
 शान्त्यर्थे साधुः ( निर्वाणोऽश्रिते ) । आदिशब्दः निर्वाणं मुक्तिर्नवृत्तिश्च, यथा- प्रिय[ या ] दर्शनमेवास्तु  
 किमन्येर्दर्शनान्तरे । निर्वाणमाप्यते येन सरागेणापि चेतसा ॥ निर्वाति निर्वातः, गतो वात इत्यर्थः ॥ ९६ ॥  
 परिणमतेवस्थान्तरं प्राप्नोति स्म, यथा- परिपक्वः । ( गूढं ) गू पुराणोत्सर्गं, दुग्धोदीर्घश्च ( वा० ) ,  
 ( मीढं ) मिह सेचने, इलोणपूर्वस्यदीर्घोः ( सू० ) । पुष्यति स्म पुष्टम् । पोषति स्म पुषितम् । सङ्घते  
 स्म सोढं, सङ्घिबहोरोदवर्णस्य ( सू० ) । ( उद्धान्तः ) दुग्धम उद्दिशे ॥ ९७ ॥ ( शान्तः ) क्षान्त-  
 शान्तपूर्णदस्तस्यष्टत्रयस्यः ( सू० ) इति प्यन्तात्कृते वा साधुः । एवं शान्तादयः । अर्द्धं गतो  
 याचने च, अर्द्धितः । मारणादन्यत्र भित्तेषु क्षप्तः सामान्येन निपातनान्, यथा- आक्षिप्तः, आक्षतः ।  
 ( अक्षितः ) अक्षः पूजायाम् ( सू० ) इतीद् नलोगभावश्च ॥ ९८ ॥ ( क्लिष्टः ) क्लिष्टः क्लृप्तानिष्ठयोः  
 ( सू० ) इति वेद् । ( सितः ) शान्तकर्मणि, यतिस्यति मास्येति ( सू० ) इत्यम् । ( पुष्ट इ० ) पुष्ट प्लुष्ट उष-  
 दाहे । ( तष्ट इ० ) तक्ष्त्वक्ष् तनूकरणे ॥ ९९ ॥ ( वेधितः ) विध विधानेनेकार्थः । छिद्यते स्म छिद्रितः,  
 छिद्रं संजातं वास्य । व्यधेः क्तः, विदः । विद विचारणे, नुदविदोन्देति ( सू० ) नर्त्त, यदाह- वेत्तर्विज-  
 यविजय ( मध्यव० ) । नास्ति रोको रोचनमस्यारोकोः । ( विलिनि ) लीक इतीकरणे ॥ १०० ॥



एकतानोनन्यवृत्तिरे( १ )कामैकायनावपि ।  
 अप्येकसर्ग एकः शेष्यैकायनगतोपि सः ॥ ८० ॥  
 पुंस्याविः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम् ।  
 अन्तो जघन्यं चरममन्यपाश्चात्यपश्चिमम् ॥ ८१ ॥  
 मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुत्त्वणम् ।  
 साधारणं तु सामान्यमंकाकी त्वंक एककः ॥ ८२ ॥  
 भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोन्येतरावपि ।  
 उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमवलम्बितम् ॥ ८३ ॥  
 अरुतुवं तु मर्मसृगषाधं तु निरर्गलम् ।  
 प्रसव्यं प्रतिह्वलं स्यादपसव्यमपधु च ॥ ८४ ॥  
 वामं शरीरे सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् ।  
 संकटं ना तु संबाधः कलिलं गहनं समे ॥ ८५ ॥

विचित्रो विस्तारोऽनेकतानः । अनन्यैकरूपा वृत्तिर्योपरोऽन्योन्यवृत्तिः । एकमपं पुरोगतं हेमस्त्यैकाम्रः, स्वार्यैऽण्वा । एकमवनं गतिरस्यैकायनः । एकः सर्गो निधयोऽस्यैकसर्गः । एवमयनं गतः ( एकायन-गतः ) ॥ ८० ॥ आदीयते प्रथममित्यादिः, चमिंश्रुत्तित्वेप्यजद्विह्वलं, यथा- आदीर्गकुलम् । चर्म-वृत्तिस्त्वे भवे बर्, आयो वाच्यलिङ्गः- अन्यत् । पूर्वति पूर्वः । पुरो भवः पौरस्त्यः, दक्षिण.पश्चात्पुर-सस्त्यक् ( सू० ) । प्रपते प्रथमः । आदिमोपिमथ । अमत्वनतः, धर्म( मिं )वृत्तित्वेप्यर्जलिङ्गः, यथा- कुलस्यान्तः प्रभु स्त्रिवः । जघने भवो जघन्यः, दिगादिभ्योयत् ( सू० ) । चरति चरमः । पश्चाद्भवः पाश्चात्यः- पश्चिमः, दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ( सू० ), अप्रादिपश्चाद्विमच् ( सू० ) । अन्तिमोपि ॥ ८१ ॥ मुह्यन्त्यास्मिन्बोहः, स्वस्वादिवात् ( सू० ) कुत्वम् । ( स्पष्टं ) स्पष्ट बाधनस्पर्शनयोः । स्फुटति बहिः प्रकाशते स्फुटम् । प्रकृष्टं व्यज्यते स्म प्रव्यक्तम् । उद्वणत्युत्त्वणं, पृषोदादिवात् ( सू० ) पक्षे सः । एतौ पूर्वत्र संवर्णति । उद्वतमुद्वयुषिणं च । समानमाधारणमस्य साधारणम् । समानं मान-मस्य सामान्यं, मावे( स्वार्यै ) प्यम् । ( एकाकी, ६० ) एकादाकिनिषासहाये ( सू० ), वाक्कन्-लुको च ॥ ८२ ॥ भिन्न इत्यर्थः । त्रोन्यार्थः सर्वनाम, यथा- उत त्वः पश्यन् ददर्श वार्ब( र्य ) ( निरर्थकं ) । एत्येकः, यथा- इत्येके मन्यन्ते, यत्कान्त्यः- प्रपानान्बासहायेषु संख्यायां वैक इत्येते । अनित्यन्तः, अप्य्यादिः ( उ० ) । ( अन्यतरः ) तरप्स्वार्यै- अल्पाचरवत् ( सू० ) । एति- इतरः । उदक्वावाक्चोषावचं, उग्रतं चावनतं च वा, मयूरभ्यंसकादिः ( सू० ) । नैकशब्दः सुप्युगति ( सू० ) समासात्, नानाप्रकारमित्यर्थः । उच्चण्डते- उच्चण्डम् । अवलम्बतेवलम्बितं म्वन [म्] । अत एव उच्चण्डं जानुलम्बि चेति पेटुः । केचित्त्विलम्बितमित्याशुकार्यमाहुः, उच्चण्डमुत्तालमिति हि सभ्याः ॥ ८३ ॥ अरुपि तुदयर्गुदं, विध्वंसोस्तुदः ( सू० ) इति ख्व । ( मर्मसृक् ) सृष्ट उप-तापे, मर्मव्ययकमित्यर्थः । निष्पन्नतमर्गलाया निरर्गलमानयन्त्रणम् । उहाममुच्छृङ्खलं च । ( प्रसव्यं, अपसव्यं ) प्रगतं- अपगतं सभ्याद्वामादित्यर्थः, सम्बन्धो हि- आराच्छन्दवद्वामदक्षिणार्थः । प्रतीपं कूला-त्यतिकूलं, लक्षणया विरुद्धार्थे प्रतिलोमवत् । अपतिष्ठलपधु, कूः, सुषामादिवात् ( सू० ) पत्वम् । विपरीतं विलोमं च ॥ ८४ ॥ वर्यते वामम् । सूर्यते सव्यं, पु प्रसवे । शरीर इत्येव । अपकान्तं सभ्या-दपसव्यम् । दक्षिणं, दक्ष इदौ । संकटस्याङ्गाति संकटं, संमोदथकटज्वा ( सू० ), विशेष्यलिङ्गम् । पुंलिङ्गात्पु संवद्वाम्भ्यन्तेस्मिन् संबाधः । कश्यते क्षिप्यतेत्रान्यत्कलिलम् । गाह्यते व्याप्यत्वाद्गहनम् ॥ ८५ ॥

कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ।  
 चरिष्णुजङ्गमचरं त्रसमिह्मं घराचरम् ॥ ७४ ॥  
 चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम् ।  
 चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ॥ ७५ ॥  
 अतिरिक्तः समधिको दृढसन्धिस्तु संहतः ।  
 स्वस्वतं कठिनं कूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ॥ ७६ ॥  
 जरठं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृक्षं प्रौढमेधितम् ।  
 पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ॥ ७७ ॥  
 प्रत्यमोभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।  
 नूतनश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ॥ ७८ ॥  
 अन्वगन्वक्षमनुगनुपर्वं ह्रीवमव्ययम् ।  
 प्रत्यक्षं स्याद्वैन्द्रियकमत्यध्यः प्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ॥ ७९ ॥

गान्धोति स्थिरत्वात् ( कालव्यापी ) । कूटेनाचलत्वेन तिष्ठति कूटस्थः, आत्माकाशादिः । तिष्ठति  
 तच्छीलः स्थावरः शैलादिः, स्थेयभांसति ( सू० ) वरच् । जङ्गमात्त्र गिनोन्यः ( जङ्गमेतरः ) ।  
 ( चरिष्णुः ) चरेस्ताच्छील्ये- इष्णुच् । भृशं गच्छति जङ्गमः, अकैटिल्येप्यभिधानायाह ( शा० ) । ( चरं )  
 चरेच्च चरिचलिपतीति ( वा० ) वा द्विर्भाव आगागमश्च । प्रत्यति चल्सरात्रसम् । इङ्गतीङ्गु,  
 इगि गत्यर्थः ॥ ७४ ॥ चलति तच्छीलचलनं, चलनशब्दार्थायुच् ( सू० ) । ( कम्पनः ) कम्पते  
 तच्छीलः, युच् । ( कम्पः ) नभिकम्पीति ( सू० ) रथ । लुङ् विलोढनेस्माञ्छोल्म् । ( चलचलं )  
 चरिचलीति ( वा० ) द्वित्वमागागमश्च ॥ ७५ ॥ अतिरिच्यतेतिरिक्तः । सम्यगप्युपरिभवः समधिकः ।  
 संहन्यते स्म संहतोऽच्छिद्रः । सक्ख हसने, कक्खअभित्येके । ( कठिनं, कठोरं ) कठ कृच्छ्रजीवनेऽस्मा-  
 दिनच्- ओरंश्चोणादिकौ । कृणाति कूरम् । नियतं तिष्ठति निष्ठुरम् । ( दृढं ) दृढं दृढो, के, दृढो बल-  
 वति साधुः ( दृढःस्पूलबल्योः ) ॥ ७६ ॥ जीर्यति जरठम् । मूर्च्छति मूर्तम् । नवीकार्यो इत्येके । प्रोद्यते  
 स्म प्रौढम्, प्रादूहोढोऽङ्घ्रिचि ( वा० ) इन्द्रिः । ( एधितं ) एध इदो । पुराणि नवं ( मरं ) पुरा-  
 णम्, नवपुराणे ( वा० ) । ( प्रतनं, इ० ) पुरात्- लतनौ प्रादेशश्च भवार्थे ( नवपुराणेप्रात् ) । पुरा-  
 मवं चिरंमवं, सायंचिरमिति ( सू० ) द्युस्तुच्, निर्देशान्मान्तत्वम् ॥ ७७ ॥ प्रतिनवमप्रत्यय प्रत्ययः ।  
 अभीनूयतेभिनवं, णु स्तुतौ । नव एव नव्यः । ( नवीन इ० ) नवस्वनूभावे लघूतनप्राचाप्रत्ययाः  
 ( वा० ), यच्च । सयस्कथं । सुप् कुत्सितं म्रियते म्लायति वा सुकुमारं, कुमार क्रीडायामित्यस्माद्वा ।  
 मृदते मृदु । ( मृदुलं ) गुणमात्रश्रुतित्वे लच् ॥ ७८ ॥ अन्वगन्वक्ष- कान्तोव्ययत्वात्प्रागादिवत्  
 अक्षस्य पश्चादन्वक्षम्, अक्षेण रथो लक्ष्यते । पदस्य क्रमस्य पश्चादनुपदं, पश्चादर्थेव्ययीभावः । अनु-  
 गच्छत्यनुगं, वः । तत्रैतत्प्रत्ययं ( अन्वक्, अन्वक्षं, अनुपदं च ) अव्ययं वर्तते, ह्रीवत्वं तु द्वयोः  
 ( अन्वक्षं, अनुपदं च ) । अक्षिणी प्रतिगतं प्रत्यक्षं । अत्यादयःकान्ताद्यर्थेद्वितीयया ( वा० ) इति  
 समासः । इन्द्रियेषु भवमेन्द्रियकम् । अक्षेष्वाधिकृतमप्यक्षं, तदतिकान्तमत्यध्यक्षम् ॥ ७९ ॥ एकं तननम-



समीपे निकटसप्तसंनिकृष्टसनीडवत् ।  
 सर्वशाम्यास( श )सविधसमर्थादसवेशवत् ॥ ६७ ॥  
 उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यघा अप्यभितादव्ययम् ।  
 संसक्तं त्यज्यवहितमपटान्तरमित्यपि ॥ ६८ ॥  
 नेदिष्टमन्तिकतमं स्याद् कूरं विप्रकृष्टकम् ।  
 ववीयश्च वधिष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम् ॥ ६९ ॥  
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तुल्यतामयम् ।  
 उच्चप्रांशूजतोद्विष्टास्तुङ्गोय धामने ॥ ७० ॥  
 न्यरुनीचस्वर्गहस्ताः स्युरवाभवनतानुतम् ।  
 अरालं वृजिनं जिह्वामूर्ध्वमत्कुञ्चितं नतम् ॥ ७१ ॥  
 आविष्टं कुटिलं भुजं वेष्टितं वक्रमित्यपि ।  
 ऋजावजिह्वप्रगुणी व्यस्तं त्यप्रगुणाकुली ॥ ७२ ॥  
 शाश्वतस्तु ध्रुवं नित्यसदातनसनातनाः ।  
 स्यास्तुः स्थिरतरः स्थयानंकरूपतया तु यः ॥ ७३ ॥

सौम्योपहृतं ( सू० ) । निबन्धोति निकटं, संप्रदंष्ट्रातं ( सू० ) कटव् । आसीदति स्मासप्तः । संनि-  
 कृष्ट्यते स्म संनिकृष्टः । समानं नीडमस्य सनीडं, सविधसर्गः सनयः सदेशशसदेशोपुसामीप्ये ( सू० )  
 इति सामीप्यं लक्षणयात्र । समानो देशोऽस्य सदेशः । अभ्यस्यते वाप्यतेभ्यःसः । ( सविध ६० ) समाना  
 विधा मर्बादा वेशाश्चास्य ॥ ६७ ॥ कण्ठस्य समीपमपकण्ठम् । अन्तोऽस्यास्तीत्यन्तिकः । अभ्यर्णते-  
 भ्यर्णः, अभेद्यादिद्वये ( सू० ) इति उभावः । अभिमुखनमनस्याभ्यप्रम् । अभित इति निपातः, अभे-  
 स्तसिद्धौ । नास्ति पदेन तिरस्करीष्यान्तरं व्यस्य प्रापयान्तरम् ॥ ६८ ॥ अतिशयेनान्तिकं नेदिष्टं, नेदी-  
 योपि, अन्तिकरूपद्वयानेदसाधौ ( सू० ) । दूरात्र दूम् । अतिशयेन दूरं दूरैः, स्पृन्दुरेति ( सू० )  
 यणादि परं लुब्धे पूर्णस्य च गुणः । दृणाति दीर्घम् । अयम्यत आयतं, आयतते वा ॥ ६९ ॥ वर्तते  
 भ्रमति वर्तुलम् । निर्गतं तलं प्रतिश्रय निस्तलं, भूगो नाप्ते तत्र वा रजो न निष्ठति । ब्रज्जाति गतिं  
 बन्धुरम् । ( उग्रतानत् ) उपरतं सद्गाधियशादीषन्, यथा- कण्ठस्य तस्याः स्तनगन्धुरस्य ( क० सं० ) ।  
 उर्णयित उच्चम्, ङः, उदधो वा, आचपगचादिवत्- मयूरव्यंसकादिर्वा ( सू० ) । प्राप्नुने प्रांशु ।  
 उन्नमति स्मोन्नतम् । ऊर्ध्वमप्रमस्योदप्रम् । ऊर्ध्वं श्रयति स्मोच्छ्रितम् । तुल्यतादत्ते तुल्यम् । उत्तुल्य-  
 मुदुरं च । वमति वामोऽस्यस्य वा वामनः ॥ ७० ॥ नियतमर्थात् न्यक्तं । निघ्नं चीयते नीचं, नीचे-  
 र्धिद्यतेत्य वा । सर्वेति सर्वैः । हपति हस्तः । अवनतमप्रमस्यावाप्तं, अधोमुखमित्यर्थः । अवनमति  
 स्मावननम् । आनमति स्मःननम् । इयति- अराः सन्ति वास्य- अरालम् । वर्णते वृजिनम् ।  
 जी( ही )यते जहाति वा जिह्वम् । ( ऊर्मिमन् ) ऊर्मयो भङ्गाः सन्त्यस्य । ( कुञ्चिनं ) कुञ्च गति-  
 वैकल्यं । नमति स्म नतम् ॥ ७१ ॥ आविध्यत आविद्धम् । भुजो कौटिल्ये, भुप्रम् । वेष्टितं वेष्टितम् ।  
 वधति वक्तुं, रक् । भङ्गुरं च । इयति ऋज्यते वा ऋजुः । प्रलुष्टो गुणोऽस्य सदृशो गुणेन मौढ्यां वा  
 प्रगुणः । व्यस्यते विपर्यस्यते स्म व्यस्तम् । आकोल्येकीभयति- आकुलम् ॥ ७२ ॥ शाश्वतः शाश्वतः,  
 अव्ययानाभमः प्रेरिलोः ( वा० ), आराच्छभतेर्नेष्यते ( इ० ) । शाश्वतिकोपि । ध्रुवः, ध्रुव स्वर्गः ।  
 नियतं भवं नियं, ल्यङ्नेष्ट्रि ( वा० ) इति ल्य । ( सदातन इ० ) सदाभवः सनाभुवश्चेति, सार्यं  
 विरमिति ( सू० ) द्यस्तुद् च । तिष्ठति तच्छीलः स्यास्तुः, ग्लान्तिस्थयगन्तुः ( सू० ) । अतिशयेन  
 स्थिरः स्थयान्, प्रियस्थिरेति ( सू० ) स्यादेशः ॥ ७३ ॥ एकरूपो निर्दिष्टारः । निरवधि कालं



अप्राप्त्यं वृयहीने वे अप्रधानोपसर्जने ।  
 विशङ्कटं पृथु वृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥  
 वङ्गारविपुलं पीनरीक्नी तु स्थूलपीवरं ।  
 स्तोकास्पक्षुलकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं वध्नं कृशं तनु ॥ ६१ ॥  
 खिया मात्राघुटी पुंसि लघुलेशकणाजवः ।  
 अत्यल्पेलिपिप्रमल्पीयः कनीयांणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥  
 प्रमूतं प्रचुरं प्राज्यमवध्नं बहुलं बहु ।  
 पुरुहु ( हं ) पुरु भूयिष्ठं स्फिरं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥  
 परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शताविकात् ॥ ६४ ॥  
 मण्णीये तु गणेर्यं संख्याते गणितमथ समं सर्वम् ।  
 विन्ध्यमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाब्जिलानि निःशेषम् ॥ ६५ ॥  
 समप्रसकलाखण्डपूर्वादि स्यादनुनके ।  
 घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु ॥ ६६ ॥

कृशं, यथा— उपसर्जनं भार्या । अप्राप्त्यस्तु वाच्यलिङ्गः । उपायं च । विशी ( स्तो ) यति विशङ्कटः, वेःशालञ्-  
 शङ्कटञ्चो ( सू० ) । प्रयते पृथुः । गुणमात्रवृत्तः ( पृथुः ) । वृहते ( बृहति ) बृहत् । महति  
 महत् । वर्तमानिष्टपद्वृद्धन्महति ( उ० ) निपत्यते ॥ ६० ॥ वलते वङ्गम् । अवते— उरु, उङ्ग शब्दः । विणे-  
 मति विपुलं, पुल महत्त्वे, कः । विङ्कटं च । प्यायते पीनः, कः, प्यायःपी ( सू० ), ओदितश्च ( सू० )  
 इति निष्ठा नत्वम् । ( पीवन्, पीवरं ) कनीकरणञ् । ( श्लक्ष्णं ) स्थूल परिवृद्धे । घनो बहन्श्च ।  
 स्तौति श्लोकम् । अत्यते— अल्पम् । धुयते धुवः । मुष्टं— उच्यते आयाप्यते सूक्ष्मम् । श्लक्ष्णं  
 वध्नम् । ( कृशं ) कृश तनुकरणे । तन्यते तनु ॥ ६१ ॥ मीयतेत्यत्रान्मात्रा । घुटति घुटिः । ल्युयते लवः ।  
 म्नि अर्थाभावे, लिङ्यते लशः । कणति निर्मूलति कणः । अणल्यणुः । अतिशयेनातं ( अलीय इ० ),  
 शृणीयमुनी । ( कनीयः ) युयाल्ययोः कन्प्रत्ययस्यम् ( सू० ) । अतिशयेनाणु— अणीयः, तुरिष्टेमे-  
 यस्तु ( सू० ), ऐः ( सू० ) इति टेलोपः ॥ ६२ ॥ प्रभाति प्रभूतम् । प्रचीयते प्रचोयते वा प्रचुरम् ।  
 प्राज्यते प्राज्यं, प्रकृषणाञ्चो ( वी ) येन वा । न दध्नमदध्नम् । बहने बहु । ( बहुलं ) प्रागन्मस्त्वर्थायो  
 नः । पूर्वते पुरु । पुर्वति दृश्यते पुरुहु । अतिशयेन बहु भूयिष्ठं, बहुलोपोभूचबहोः ( सू० ), इष्टव-  
 यिद्वच ( सू० ) इति भूरादेशो यिङ्गमश्च । स्फायते स्फिरम् । अवति भूरि ॥ ६३ ॥ शतात्परं परः-  
 शते ( परःशता अपि ), यत्— दध्नस्यो यद्गहिताय तद्वा परःसदृशाः शतदस्तपानि ( उ० रा० ),  
 पारस्करादित्वात्पुट् । श्रीभोजस्तु परःशब्दं निपातं मन्यते, यथा परोवरः, परोक्षम् ॥ ६४ ॥ ( गणेर्यं )  
 उणादौ गणेर्यः । ( गणितं ) कर्मणि कः । समति समं सर्वार्थं सर्वनाम, यथा— सूर्यः सपेधा समः ।  
 सर्वति सरति वा सर्वम् । वेवेति विश्रम् । नास्ति शेषमस्याशेषम् । कृती वेद्यं, कृष्यते व्याप्यतेनेन  
 कृत्स्नम् । समस्त्यते— एकिक्रियते समस्तम् । निवृत्तं खिलाच्छून्याग्रिखिलम् । नास्ति खिलमस्याखिलम् ।  
 निष्कान्तं शेषाशेषम् ॥ ६५ ॥ संगतमप्रमस्य समप्रं, समं प्रमते वा । सह कलाभिर्मागैर्वर्तते सङ्-  
 क्कम् । न खण्डं भिन्नमखण्डम् । विपातं पूर्णति वा पूर्वम् । पूर्णमित्येके । आदिशब्दादभिधादि । नास्त्यु-  
 नमस्यानूनम् । ( घनं ) मूर्तोघनः ( सू० ) इति साधुः । निर्गन्तमन्तरं व्यवधानमस्य निरन्तरम् । सद्वा-  
 न्यते बध्यते सान्द्रम् । निविडं निविरीशं ( सं ) गाढं [ निरन्तरे ] च । पेल्यते क्षिप्यते पेल्यम् । विरा-  
 सन्तरे विरलम् । तन्यते तनु । शिथिलं श्यञ् च ॥ ६६ ॥ संभूता आपात्रेत्युपचारात्समीपं, द्रव्यन्तरेष-

तदा ( व ) सेचनकं तृतेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।  
 अभीष्टिभीप्सितं ह्यं दयितं बल्लमं प्रियम् ॥ ५३ ॥  
 निकृष्टप्रतिकृष्टावरेफयाप्यावमाधमाः ।  
 कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्वाणकाः समाः ॥ ५४ ॥  
 मलीमसं तु मलिनं कश्चरं मलवृषितम् ।  
 पूतं पवित्रं मध्यं च वीध तु विमलार्थं ( त्म ) कम् ॥ ५५ ॥  
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।  
 असारं फल्गु शुन्यं तु वाशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥  
 ह्लीबि प्रधानं प्रमुलप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।  
 मुख्यवर्यवरण्याश्च प्रवर्हानवरार्थवत् ॥ ५७ ॥  
 परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राः श्यामीयमग्रियम् ।  
 भ्रैयान्ध्रेष्ट्रः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥  
 स्यु रुत्तरपक्षे ध्याग्रपुंगवर्षभकुन्त्राः ।  
 सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि भ्रैयार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

आप्यादयते दृग्नेन- आसेचनकं, यस्य दर्शनाद् दृग् तृप्यति । आभिमुख्येनेध्वतेभीष्टम् । अभ्याप्तुमिष्टम-  
 भीप्सितम् । हृदयस्य प्रियं ह्यं, हृदयस्यप्रियइति ( सू० ) यत्, हृदयस्यहृद्वेद्येति ( सू० ) इत् । दयते  
 वित्तमास्ते दयितम् । ( वधभं ) वधति सौत्रः प्रीत्यर्थः । प्राणाति प्रियं, कः ॥ ५३ ॥ निकृष्यते  
 निकृष्टः । एतं प्रतिकृष्टः । अर्यल्यर्वा । रिफति हिनस्ति रेफः । यापिता गुणा अस्माद्याप्यः, जपादिस्त्रादौ  
 ( ग० ) याव्यापि । अग्रोभशोभमः । अधोभशोभमः, अशोभसोत्तमपि ( सू० ) इति मः सलोप्य । कुत्सितं पूवते  
 कुपूषः । नोद्यतेवयः, अवयवपण्यवयवार्थोति ( सू० ) साधुः । खेटति प्रस्यतीति खेटः, खिट उत्प्रासने ।  
 अणति रटलीलणकः, अन् कुत्सायां कन् ( कुत्सिते ) । कट्वरोपि ॥ ५४ ॥ ( मलिनं, मलीमसं )  
 मलोस्त्यस्येति, ज्योत्स्नातामिषेति ( सू० ) साधुः । कुत्सितं चरति कश्चरम् । म्लानं कस्मर्षं च । पुनाति  
 पूतम् । पूयतेनेनेति पवित्रम् । मेघनीयं मेघं, मेघायां साधु वा । विशेषेणन्दे वाधं, रद् ॥ ५५ ॥ ( निर्णिक्तं )  
 गिजिर् घोषे । ( मृष्टं ) मृज् ( पृ ) शुद्धौ । निष्क्रान्तं शोष्याभिःशोष्यम् । अवियमानोवस्क्रो बवै-  
 स्क्रोस्त्यानवस्करम् । फलति विशीयते फल्गु, पिफला विशरणे । शुने हितं शुन्यं शुन्यं च, उगवादि-  
 भ्योयत् ( सू० ) इत्यत्र शुनःसंप्रसारणान्नदीयत्वम् ( ग० ) । उश्यते काम्यतेनातृत्वाद्वाधिकम् ।  
 तुषते रम तुच्छम् । रिच्यते रिक्तं, रिच विभोजने ॥ ५६ ॥ प्रधीयते प्रधानम् । प्रकृष्टं मुलमस्य प्रमुलः ।  
 प्रकृष्टे वेकः पृथक्त्वमस्य प्रवेकः । नास्त्युत्तमोत्तमादनुत्तमः । अतिशयेनोद्गत उत्तमः । मुलमिष मुखयः,  
 शास्त्रादिभ्योयः ( सू० ) । वरणीयो वयः । त्रियते वरेण्यः, वृषण्यः ( उ० ) । प्रकृष्टे बहः परिच्छेदस्य  
 ( प्रवहः ), बृह वृद्धौ वर्ध प्राधान्ये वा, प्रवृहल्युद्यच्छते वा प्रवहः, बृह उद्यमे । अनवरार्थे मुख्ये भागे  
 अंशोऽनवरार्थः ॥ ५७ ॥ परार्थे भवः परार्थ्यः, परावराधमोत्तमपूरांशंति ( सू० ) यत् । अगति न गच्छति क-अग्रं  
 [ प्रः ] । प्रकृष्टमग्रं हरति प्राग्रहरः । प्राप्ते भवः प्राग्रपः । ( अग्रयः, इ० ) अमायत् ( सू० ), चच्छेच  
 ( सू० ) । अग्रणीग्रामणीः शालीवरश्च । ( भ्रैयान्, इ० ) अतिशयेन प्रशस्यः, इष्टप्रीयसुनौ,  
 मद्यस्यस्यप्रः ( सू० ) । पुष्यति पुष्कलः । अतिशयेन सन् सत्तनः ॥ ५८ ॥ पुरुषो व्याग्र  
 इव शूरः पुरुषव्याग्रः, गोनागः । आधशब्दान्मुखवन्द्रपादपद्यायाः, उपमिः श्याग्रादिभिः ( सू० ) इति  
 कृमासः । भ्रेष्टस्यार्थो गोचरो विषय एषाम् ॥ ५९ ॥ उपसृज्यते नियुज्यते उपसर्जनं, आविष्टलिङ्गवत्-

कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो वृजनः खलः ।  
 नृशंसो घातुकः क्रूरः पापं धूर्तस्तु वृञ्चकः ॥ ४७ ॥  
 अहो मृदययाजातमूर्खवैधयशालिशः ।  
 कव्यं कृपणक्षुद्रकिंपचानमितपंचाः ॥ ४८ ॥  
 निःस्वस्तु दुर्विधा वीनो वग्निरो वृणेतोपि सः ।  
 वनीयको याचनको मार्गेणो याचकार्यिनौ ॥ ४९ ॥  
 अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।  
 विव्योपपादुका ववा वृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥  
 स्वदजाः कृमिवंशाद्याः पक्षिस्तर्पाव्योण्डजाः ।  
 उज्ज्वलस्तर्गुल्माद्या उज्ज्वलज्जिह्वमुज्ज्वल ॥ ५१ ॥  
 सुन्दरं रुचिरं चारु सुपमं साधु शोभनम् ।  
 कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोहां मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

बभोः (सू०) इत्यच् । पेशयत्येकदेशेन सूचयति पिशुनः, पिसा अवयवे, अपिदयति खण्डयतीति श्रीभोजः ।  
 नृशंस जनः, दुष्ट जनयति वा दुर्जनः । सं शृण्वं लाति खलः, खलति चलति वा । नृशंसति नृशंसः ।  
 इति तच्छीलो घातुकः, लघपतपदेति (सू०) उक्तम् । क्रूर गतिक्रोडित्ये (अस्मात्) क्रूरः, क्रूणाति  
 वा । पिबति धर्मं पापः, पापं वास्त्यस्य । धूर्ते (धुर्ति स्म) धूर्तः ॥ ४७ ॥ मुद्यति मृदः । यथैव जातस्त-  
 वै स्थितोऽसंस्कृतवाययाजातः । मुद्यति मूर्खः, मुहःसामूर्च (उ०) । विधाया भोजनस्यापत्याभिव  
 द्येयः, विधेयात्स्वायेऽण् वा । बाल्यते बालिशः, बाहु आह्वये, बहिषागच्छेऽण् वा । मातृशसितथ ।  
 यद्रूपयो देवपरः । कुत्सितोयः स्वामी कदर्यः । कल्पते कृपणः । क्षुपतेत्यत्वाःक्षुपः । किंचित्यचति  
 किंपचानः, औणादिक भानच् । मितं पचति मितपचः, मितनखेच (सू०) इति पचः खच् । वीना-  
 शोपि ॥ ४८ ॥ वृष्टा विधा प्रकारो भोजनं वास्य दुर्विधः । दीयते दीनः, दीहृ क्षये, स्वाद्यभोदितः  
 (प०) । दुःस्वः कीकटय । (वनीयकः) वनु याचने । याचते याचनः, युञ्ज कृन् । मार्गति मार्गणः ।  
 अर्थयते तच्छीलेऽर्था, अर्थावाप्तनिर्वाहति (सू०) इतिर्वी । तर्जुं कर्त्तुं इत्य ॥ ४९ ॥ अहमिति  
 विभक्तिप्रतिरूपको निपातः, अहमस्त्यस्य- अहंयुः, अहंशुभमोर्युस् (सू०), निपातनान्मान्तत्वं । विधि  
 भवा दिव्या उपग्रा[प] यन्ते दिव्योपग्रादुक्ताः, युनागपागिति (सू०) यत्, लघपतपदेत्युक्तम् (सू०) ।  
 अदृष्टसंहतेभ्यः परमाणुन्यो जायन्ते सद्य इत्यर्थः । अयोनिजत्वाय पुनरिहोक्ताः । नरो गोमहिष्वाद्याश्च  
 जरायुजाः, जरायुर्गर्भशय्या ॥ ५० ॥ अयशब्दान्मशक्यकायाः । आदिशब्दः प्रकारं व्यवस्थायां वा  
 पिरीक्षित्यर्थः । आयशब्दात्पुण्याः । उद्भिनन्ति भुवमुद्भित्-उद्भिदं च, किप्, कश्च । उद्भेदन्मुद्भिततो  
 वायत इत्युद्भिज्जं, इः । इत्यमयोनिजजरायुजस्वेदजाण्डजोद्भिज्जत्वेन पञ्चधा भूतसर्गः । एषामेवा (वा-)  
 स्तरभेदाच्चतुर्दशविधत्वं, यदाहुः- अष्टविक्तपो देवस्तिर्यग्योनिय पञ्चधा भवति । मानुष्य एकाविधः स  
 क्षमासाद् भौतिकः सगे ॥ पेशाचो राक्षसो बाक्षो गान्धर्वः शाक एव च । सौम्यश्च प्राजापत्यश्च ब्राह्मणो  
 देवयोनयः ॥ ५१ ॥ सुन्दरं सुपु नन्दयतीति निरुक्ताः । रोचते रुचिरं, रुचिं राति वा । चरति मनो-  
 र्मिथश्च । सुपु समं शोभना समात्रेति वा सुपमं, लक्षणया चारु । साम्रोति साधु । शोभते शोभनं,  
 पुद् । काम्यते कान्तम् । रोचते रुच्यं, राजसूयनूयंशुयोयरुच्येति (सू०) कर्तरि साधुः । जानातीति  
 ई, इत्युपगतेति (सू०) कः, मन एव सं यत्र तन्मनोहम् । सर्वैर्नन्यते मञ्जु, धर्म । (मञ्जुलं) धर्म-  
 भागवत्या तु मत्पर्यायो लः श्यामलपिङ्गलादिवत् । हारि वल्य मनोहारि च ॥ ५२ ॥ आसिच्यत्

आत्तगन्धो( वों )भिभूतः स्याद्वापितः साधितः समौ ।  
 प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥  
 निः( नि )कृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।  
 मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥  
 अभिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धं कीलितसंयतौ ।  
 आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कान्दिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥  
 आक्षारितः क्षारितोभिशस्ते संकसुकोस्थिरे ।  
 व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥  
 विक्रवो विह्वलः स्यात्तु विवशोरिष्टनुष्टयीः ।  
 कश्यः कशाहं सन्नद्धं त्याततार्यो वधोद्यते ॥ ४४ ॥  
 द्वेष्यं त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।  
 विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥  
 शिञ्चिद्वानोकृष्णकर्माचपलश्चिकुरः समौ ।  
 दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शटः ॥ ४६ ॥

चत्वार एकार्षी इत्येके । ( समौ ) दण्डितार्थे । प्रत्यादिश्यते स्म प्रत्यादिष्टः, अनङ्गीकृत इत्यर्थः । अप-  
 विदोपि ॥ ४० ॥ निःक्रियते खलीक्रियते स्म निःकृतः । मनसि हतो मनोहतः । प्रतिबन्धः प्रवृत्ति-  
 निवारणार्थः ॥ ४१ ॥ प्रतिक्षिप्यते न्यक्क्रियते स्म प्रतिक्षिप्तः । ( कीलितः ) कील बन्धने । प्राप्त आपदं  
 आपत्प्राप्तः, प्राप्तपन्नेचद्धितायोजते ( सू० ) समासः । ( कान्दिशीकः ) कां दिशं व्रजामीति व्याकुलः,  
 पृषोदरादिः ( सू० ) । भयाद् हतः पलायितः ॥ ४२ ॥ आक्षार्यते स्वरूपाच्चात्यते- आक्षारितः, अली-  
 कोत्पन्नपातकव्यपदेशः । अभिशस्तेभिदूषितः, मैथुनं प्रतीत्येके । ( संकसुकः ) समिकस-  
 उक्तं ( उ० ), आनिधित इत्येके । समावित्येव । व्यस्यति श्रेयोमार्गाद्व्यभनं तेन ऋतो व्यस-  
 नार्तः, ऋतेचतृतीयासमासे ( सू० ) इति वृद्धिः । उपरज्यते स्तोपरक्तः । विगतो हस्तो  
 यस्य स विहस्तः, किकृतव्यतामूढत्वात् ॥ ४३ ॥ विक्रवतं कातरांभशते विक्रवः, कृ-  
 र्धातुगणापरिसमासेलौकिकः । विह्वलं हलति विह्वलः । विह्वलं वष्टि कामयते विवशः । अरिष्टेन  
 मरणचिह्नेन श्लासादिना दुष्टा धीर्यस्य । कशा चमयश्छिस्तद्वातोपुपचारात्, तामर्हति कशः-अश्वादिः,  
 दण्डादित्वाद्यः ( सू० ) । सप्रदः सन् यो वधार्थमुद्यतः स आततः सांयोगः सन्नेति वधाद्यर्थं धावति  
 अवश्यं, आतं पलायमानं तायते वा- आततार्यो । वध उपलक्षणं यत्स्मृतिः- अग्निदेो गरदधैव शस्त्राणि-  
 र्धनापहः । क्षेप्रदारहरधैव षडंते त्याततार्यिनः ॥ ४४ ॥ अक्षिगतो यथा किंशाककादिः खेदकृत् । वधं  
 शीर्षच्छेदं वार्हति । ( विष्यः ) नौवयोधमेति ( सू० ) यत् । ( मुसल्यः ) मुसलेन वध्य इत्यर्थः ॥ ४५ ॥  
 ( शिञ्चिदानः ) शिदि शैले, लिटःकानज्वा ( सू० ) । अकृष्णं निष्पापत्वाच्चकुरं कर्मस्याकृष्णकर्मा । चप्यते  
 चपनः, चप सान्त्वने । चिनोति चिकुरः, चकवां रूपं, लक्ष्यं च- तां वीक्ष्य लीलाचिकुरामनङ्गः स्वचप-  
 सोन्दर्यमदं मुनेव ( कु० सं० ) । चलाचले स्यात्तरलथापलथसलथलः । दोष एकस्मिन्नेव दृष्टानमस्य,  
 यत्कात्यः- दोषैकप्रादिदृश्यः पुरोभागीति कथ्यते । पुरोमे भजते पूर्वं सूर्यं वरपुरोभागी । निकृणाति  
 दिनस्ति स्म निकृतः । ( शटः ) शट कैतेव ॥ ४६ ॥ कर्णे जपति सूचयति कर्णेजपः, स्तम्भकर्णयोद्यमि



स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ समौ ।  
 पराङ्मुखः पराचीनः स्यादवाङ्मयधोमुखः ॥ ३३ ॥  
 देवानश्चति देवशङ् विष्वशङ् विष्वगश्चति ।  
 यः सहाश्चति सधचङ् स स तिर्यङ् यस्तिरोश्चति ॥ ३४ ॥  
 वदो वदायदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।  
 वाचायुक्तिपदुर्वाग्मी वावदूकातिवक्तरि ॥ ३५ ॥  
 स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।  
 दुर्मुखं मुखराबद्धमुखौ शक्तः ( कृः ) प्रियंवदे ॥ ३६ ॥  
 लाहलः शवस्फुटवाग्गर्हवादी नु कद्वः ।  
 समौ कुवावकुचरी स्यादौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥  
 रवणः शब्दनां नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।  
 जडोद्धेज्जं ( जडोद् ए ) डमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥  
 तूष्णीर्शिलस्तु तूष्णीको नम्रोऽवासा दिग्म्बरः ।  
 निष्कासितोवकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥

॥ ३३ ॥ ( स्वप्नक् ) स्वपितुषोर्नजिङ् ( सू० ) । ( शयालुः ) शीढ्येतिवक्ष्यादात्तुः ( शीढे-  
 बाध्यः ) । ( निद्रालुः ) निद्राति तच्छलः, निद्रातन्द्रेयात्तुः ( स्तुहिगृहपतिदयोति ) । निद्राति स्य  
 निद्राणः, संयोगादेरातोधातो ( सू० ) इति निष्ठा नरत्वम् । पराङ्मयीति पराङ् ( पराचीनः ), विभाषा-  
 धेरादेकस्त्रियाम् ( सू० ) इति स्वये श्चः । संमुखोऽनस्त्वभिमुखः । अवाङ्मयवाङ्, अवाचीनोपि ॥ ३३ ॥  
 ( देवशङ्, ६० ) विष्वग्देवयोश्चरेत्यत्रावायनचये ( सू० ), विष्वक्मवंतोर्ध्वव्ययम् । ( सधचङ् ) सहस-  
 रध्रिः ( सू० ) इत्यत्रो परं सधघादेशः । ( तिर्यङ् ) तिरस्तस्तिर्ध्वोपे ( सू० ) ॥ ३४ ॥ वदति  
 ( वदः ) वदःवदः, चरिचलिपतिवदिभ्योर्द्वित्वमभ्यासस्याहंवा ( वा० ) । वाचो युषो पदः, वाङ्मय-  
 पदभ्योऽयुक्तिपदहरेषु ( वा० ) इति पठ्या अलुङ् । प्रस्ता वागस्त्यस्य वाग्मी, वाचोभिनिः ( सू० ) ।  
 वाक्पते तच्छालो वावदूकः, यजजप- ( सू० ) इत्यत्र वदेर्नु प णिदाः कार्य इति पदकारवाक्यादूकः ।  
 वक्तरिति, तृन् ( सू० ) । प्रवाक् प्रगन्मः सुमुतथ ॥ ३५ ॥ ( जल्पाकः ) जल्पभिद्येति ( सू० ) ताच्छीहरे  
 वाक्त् । ( वाचाल ६० ) आलजाटचोबहुभःपिणि ( सू० ) । गर्हाजारी जघपूकः । मुखेन शम्भुवक्ते,  
 निन्दितं मुखमस्त्यस्य मुखरः, ( रप्रकरणे ) खमुखकृष्णभ्योरोवक्यः ( वा० ) । अवदमनियमिन्नतं  
 मुखमस्त्यस्वावदमुखः । शक्नोति वक्तुं शक्तः । ( प्रियंवदः ) प्रियवशेवदःखञ् ( सू० ) ॥ ३६ ॥  
 ( लाहलः ) लुङ् कथनादौ । कुत्सितं वदतीति कद्वदः, रघवदयोध ( सू० ) इति कोः कत् । अनुसरो  
 वददथ । कुत्सितो वादेत्य कुवादः । कुरीतं चरति कुचरः, पचायञ् ( नन्दिमहीति ) । विपरीतः  
 स्यात्स्य- अस्त्रः, नम् तद्विहृदन्धनम् ॥ ३७ ॥ ( रवणः, ६० ) ऐति शब्दायतीति, चञ-  
 नशब्दायात् ( सू० ) इति युञ् । नान्दो मङ्गलशब्दं करोति नान्दीकरः, दिवाविभेति ( सू० ) टः ।  
 ( जडः ) जल घान्ये ( चान्द्रोधातुः ), ढलथोरकत्वम् । अज्ञोऽनीक्षणोः । मातृमुखो मातृशासि-  
 तथ । तांक्षणीस्तु कुशाग्रियः । न- एडापि ( अ ) वक्त्रोपि मूकः- एमूकसदृशो वा- अनेडमूकः,  
 नमिषयुक्तमन्यसदृशाधिकरणेतयाह्यः ( भाष्यव० ), एडो हि वधिरः ॥ ३८ ॥ ( तूष्णीकः ) तूष्णीमः  
 शीलकोमलोपध्वकध्यः ( वा० ) । ओणजी व्रीडे, नजते स्य नमः । अवियमानं वासोत्स- अवासाः ।  
 अवकृष्यते दूरीक्रियते स्मावकृष्टः, निःसारित इत्यर्थः ॥ ३९ ॥ आसो गृहीतो गन्धोभिमानोऽस्त्यतगन्धः ।



स्यावधुष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।  
 अर्धरे कातरस्त्रस्तो भीरुमीरुमीलुकाः ॥ २६ ॥  
 आशंसुराशंसितरि गृह्यालुर्गृहीतरि ।  
 अद्यालुः अद्या युक्तं पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥  
 लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुर्वन्वारुमिवाङ्कः ।  
 शरावर्यातुको हिंस्रः स्याद्वधिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥  
 उत्पतिष्णुस्तुत्पतितालंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।  
 भूष्णुर्मधिष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तनः समी ॥ २९ ॥  
 निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।  
 क्षाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥  
 विसृत्वरो विसृप्तरः प्रसारी च विसारिणि ।  
 सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिधुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥  
 क्रोधनोऽमर्षणः कोपी घण्टस्त्वत्यन्तकोपमः ।  
 जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

कोपीनहति ( म० ) साधुः । विरुद्धं लक्षयते विरुद्धं लक्षमस्य वा विरुद्धः, निष्प्रतिगतिरित्यर्थः । ईष-  
 सरति कातरः, कतरस्यायं वा, अप्र कातरा खति न स्थान् । इति निद्रत्वनाराष्ट्रछीत्ये । प्रत्यति  
 प्रस्तुः, प्रसिगृहीति ( म० ) वतुः । ( भोक्तः, ६० ) बिभेति तच्छीलः, भियःकुकुनौ ( म० ), कुक-  
 नृक्कव्याच ( वा० ) । दरितो भीतस्त्रयथकितथ ॥ २६ ॥ ( अर्धरेषुः ) सनाशंसमिन्नः ( म० ) ।  
 गृहयते गृह्यालुः, स्पृहिगृहीति ( म० ) आलुच् । अद्रवयति तच्छीलः अद्रवतुः । आयः पतिष्वोरादि-  
 कोऽन्तः, पतयति पतयालुः, स्पृहिगृहीति ( म० ) आलुच् । पतति तच्छीलः पातुके, लपयतदेत्यु-  
 कम् ( म० ) ॥ २७ ॥ ( अपत्रपिष्णुः ) अपत्रयते तच्छीलः, अत्रयलंकृमितिक्कव्यात् ( वा० )  
 इष्णुच् । वन्दते तच्छीलः ( वन्दारः ), शृङ्ग्योरारुः ( म० ) । ( शाराकः, ६० ) शृणाति इति दिनस्ति  
 च तच्छीलः, शृङ्ग्योरारुः ( म० ), लपयतदेत्युक्त् ( म० ), नमिक्कमीति ( म० ) रथ । ( वर्तिष्णुः,  
 ६० ) अलंकृयति ( म० ) इष्णुच्, अनुशतेनान्ने ( म० ) युच् । भवति तच्छीलः ( भूष्णुः ), ग्लानि-  
 स्पृष्टस्तुः । ( भविष्णुः, ६० ) भुञ्ज्येति ( म० ) इष्णुच्, तृन् ( म० ) । ( वर्तिष्णुः, ६० ) इष्णुच्,  
 युच् ॥ २९ ॥ क्षिपति तच्छीलः । क्षानुः, त्रिमिगृहीति ( म० ) वतुः । [ सान्द्राशंसोत्यन्तार्थो भवति ]  
 सान्द्रः पीनः स्निग्धश्च ( सान्द्रस्निग्धः ) । मेयानि मेदुरः, भज्जमासमिदेषुत् ( म० ) । वेति तच्छीलो  
 विदुरः, विदिभिदिच्छिदेःकुरच् ( म० ) । वेति विन्दुः, विन्दुःरिक्तुः ( म० ) इति साधुः । ( विकासी )  
 विकसति तच्छीलः, वौकस ( व ) लसेतिधिनृन् ( म० ) । ( विकस्वरः ) स्थंताभासपित्रकसोवरच् ( म० )  
 ॥ ३० ॥ ( विसृत्वरः ) विसरति तच्छीलः, इन्शृजीति ( म० ) कर्त् । ( विघ्नरः ) घृषस्यदःकप-  
 रच् ( म० ) । ( प्रसारी ) प्रेषयमृदुमयेति ( म० ) चिनृन् । ( सहिष्णुः, ६० ) सहैरिष्णुच्, युच् ।  
 ( क्षन्ता ) क्षमेस्तृन्, ऊदराद्वेत् । ( तितिधुः ) त्रिजेःक्षमायाम् ( वा० ), शुपित्रीति ( म० ) सन्,  
 सनाशंसि ( म० ) उः । ( क्षमी ) क्षमित्यष्टाभ्योचिनृन् ( म० ) ॥ ३१ ॥ ( क्रोधनः ) कुपमण्डार्य-  
 भ्यवेति ( म० ) युच् । कोपनो रोपणश्च । ( चण्डः ) चडे कोपे । ( जागरूकः ) जागरूकश्च ( म० )  
 इति- ऊकम्, ( जागरिता ) चकारातृन् । प्रचल इवाचरन् प्रचलायितः, च उपविष्टो निद्रा घूर्णितः

बुभुक्षितः स्यात्बुभुक्षितो जिघत्सुरशनायितः ।  
 पराश्रमः परपिण्डादौ भक्षको घस्मरोद्यरः ॥ २० ॥  
 आशूनः स्याद्वीवरिको विजिगीषाविवर्जितः ।  
 उभावात्मभरिः कुक्षिभरिः स्वोदरपूरकः ॥ २१ ॥  
 सर्वाङ्गीनस्तु सर्वाङ्गभोजी गृध्रस्तु गर्धनः ।  
 लुब्धाभिलाषुकस्तृष्णक् समो लोलुपलोलुमी ॥ २२ ॥  
 सान्माव् ( उन्मव् ) स्तून्मविष्णुः स्याद्विनीतः समुद्धतः ।  
 मत्ते शीण्डोत्कटक्षीवाः कामुकं कमितानुकः ॥ २३ ॥  
 कम्पः कामयिताभीकः कमनः कामनोभिकः ।  
 विधयो विनयग्राही वचनं स्थित आग्रवः ॥ २४ ॥  
 वश्यः प्रणयो निभृतविनीतप्रभिताः समाः ।  
 धृष्टे धृष्णुर्वि ( धृष्णाग्वि ) यातश्च प्रगल्भः प्रतिमान्विते ॥ २५ ॥

स्निः ) । क्षुप्यति स्म क्षुधितः । अतुमिच्छति जिघत्सुः । अशनमिच्छति, सुप्रभात्मनः क्यच् ( सू० ),  
 अशनायोदन्वति ( सू० ) साधुः, ततः के, इट् । परादन्नमस्य पराश्रमः । आसि तच्छी-  
 ष्यारः, सुषस्यरः कमग्व् ( सू० ), निर्देशतश्चे घस्मादेशः, घस्त् अदने वा ॥ २० ॥  
 आ- ईषहोव्यति स्म- आयूनः, दियोर्विजागीरायो ( सू० ) इति नत्वम् । उदरेण भृतः ( उदरे  
 प्रसितः ) आंदरिकः, उदराद्रगायने ( सू० ) । आःमानं विभर्त्तात्मभरिः, आत्मोदरयोर्भुजः ( सू० )  
 इति स्निः । उदरंभरिरपि । ( कुक्षिभरिः ) कुक्षौचेतिवक्तव्यात् ( वा० ) क्षि ( च ) । स्वोदरयोः  
 क्मादात्मोदरयोः पूरकः ॥ २१ ॥ सर्वाङ्गानि भक्षयति सर्वाङ्गीनः, अनुपदसर्वाभायानयमिति ( सू० )  
 खः । ( गृध्रः ) त्रसिगृध्नाति ( सू० ) वज्रः । ( गर्धनः ) जुचइकम्येति ( सू० ) युच् । अभिलषति  
 तच्छीनोभिलाषुकः, लषपतपदेत्युक्त् ( सू० ) । तृप्यति तच्छीलस्तृष्णक्, स्वपितृयोर्नजिङ् ( सू० ),  
 तृष्णाग्रान्तः, लुब्धे- उपचारः । तृपितस्नर्पितः पिपासितश्च । भृशं लुप्यति भृशं लुभ्यति ( लोलुप इ० ),  
 यल्लुगन्तादच् । केचित्तुर्वैः संवधनन्ति । लालसो लम्पटश्च ॥ २२ ॥ उन्मायति तच्छील उन्मादिष्णुः-  
 भूतायाविटः, अलंकृन्निराकृयति ( सू० ) इणुच् । ( अविनीतः ) निर्मयोदोपि । मयेन मायति स्म  
 मतः । शुण्डायां भवः शौण्डः शुण्डास्यस्य वा, अणुप्रकरणे ज्योत्स्नादिभ्युपसंख्यानान् ( वा० ) ।  
 उत्क्रान्तः कटीछादनादुत्कटः, उद्रेक्तो वा, संप्रोदश्च कटच् ( सू० ) । क्षीवते स्म क्षीवः, क्षीव मदे, अनु-  
 पसर्गात्फुक्क्षीवो ( सू० ) साधुः । कामयते तच्छीलः ( कमुक इ० ), लषपतपदेत्युक्त् ( सू० ),  
 तृन् ( सू० ) ॥ २३ ॥ ( कम्पः ) नमिष्मर्पाति ( सू० ) रः । ( कमनः ) अनुदात्तेत्येति ( सू० )  
 युच्, औणादिकस्वरः । कामनः कमनोभिक इति तु युक्तः पाठः, आयादयवार्धभातुकेवा ( सु० )  
 इति पक्षे कमोर्णिङ् । अनुकाभिकाभीकः कमितेति ( सू० ) अन्वभिभ्यां के ( कनि ) साधवः ।  
 [ छको विदग्धे व्यसनिपन्नमश्रुगच्छने । वेश्यायतिभुङ्गः स्यात्पिङ्गः पल्लविको विटः ॥ ] विधातव्यो  
 विधेयो यथेष्टं विनियोगः । विनयः शास्त्रजः संस्कार इन्द्रियजयो वा । आशुणोति वाक्यमाश्रवः ॥ २४ ॥  
 ( वश्यः ) वसंगतः ( सू० ) इति यत् । प्रणेतव्य आश्रयः ( प्रणयः ) । प्रणयान्ताः घडेकार्या इत्येके ।  
 निभृतोऽचपलः । प्रथयति प्रथितः । धृष्णोति स्म धृष्टः, धृषिषीवैयाले ( सू० ) इतीउभावः । धृष्णोति  
 तच्छीलो धृष्णुः, त्रसिगृध्नाति ( सू० ) वज्रः । धृष्टेतिवक्तव्यात् ( वा० ) नजिङि धृष्णक् । विरुद्धं  
 याति स्म विद्यातः । प्रगल्भते प्रगल्भः । प्रज्ञा नवनवोन्नेषशालिनी प्रतिभा मता ( रुद्रः ), प्रतिभा-  
 त्यसाभिनि ( प्रतिभा ) । प्रत्युत्पन्नानतिस्तरकालधीय ॥ २५ ॥ शालां प्रवेष्टुमर्हति शालीना, शालीन-

निर्धार्थः कार्यकर्ता यः संपन्नः ( तन् ) सस्वसंपदा ।  
 अवापि मूकोप मनोजवसः ( वः स ) पितृसंनिभः ॥ १३ ॥  
 सत्कुत्यालङ्घितां कन्यां यो वधाति स कूटुम्भः ।  
 लक्ष्मीवाहस्येक्षणः श्रीलः श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥  
 स्याद्वायुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।  
 स्वतन्त्रोपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥  
 परतन्त्रः पराधीनः परवाचाथवानपि ।  
 अधीनो निघ्न आयत्तोस्त्रच्छन्दो गृहकोप्यसौ ॥ १६ ॥  
 खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रधिरक्रियः ।  
 जालमोसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥  
 कर्मक्षमोलंकर्मीणः क्रियावान्कर्मसूयतः ।  
 स कर्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥  
 कर्म ( भर ) ण्यथुर्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।  
 अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी तु शौष्कलः ॥ १९ ॥

निर्धार्थः समुदायाद् गुणैः पृथग्व्यपेक्ष्यः । सत्संपादितार्थः, तथा संपत्तु ( प्रः ) संपद्यमानः ।  
 नास्ति वागस्य- अवाक् । मूयते बध्यते वागस्य मूकः, मूड् बन्धने । मनो जवते-मनः पितृयमिति  
 धावति मनोजवसः, औणदिकोऽसः- चमसादिवत्, मनोजभिलाषे वसति वा । पितृवः सम्यक् निभाति  
 पितृसंनिभः ॥ १३ ॥ कोकत आदत्ते धर्म कूटुम्भः, कूटु शब्द इत्यस्य वा रूपमाकृतवत्, ब्राह्म विवाहे  
 दाता, यन्मनुः- आच्छाद्य चार्हयित्वा च धृतशीलवते स्वयम् । आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः  
 प्रकीर्तितः ॥ लक्ष्मीरस्यस्य लक्ष्मणः, पामादिवान् ( लोमादिगामादीति ) लक्ष्म्याअच्छतिगः ( वा० ) ।  
 श्रियं छाति श्रीलः, सिध्मादिन्वाहृज्वा ( सू० ) । रत्नयोरैकवस्मणान्- श्रीलः । वन्मे स्यास्तीनि वत्सलः,  
 वत्सांसाभ्यां कामवले ( सू० ) इति लृच् ॥ १४ ॥ ( दयालुः, इ० ) दया कृपा चस्यस्य । कृष्णप्रये जन-  
 तस्य कारुणिकः । सुपु रमते सूरतः, सूरौक इव तपति वा, डः । स्व आत्मा मन्दं मुख्येस्य  
 तन्त्रः । अपगतमावरणं नियन्तास्येत्यपाधृतः । स्वेन- ईने तच्छीलः स्वैरी, स्वर्दरेरिणोः ( वा० )  
 इति वृद्धिः । स्वच्छन्दोभिर्वायस्य स्वच्छन्दः । निष्कान्तोऽग्रहाश्रित्यन्त्रणातो निर प्रः । निर्यन्त्रणो  
 निरङ्कुशो यथाकामी च ॥ १५ ॥ परोध्युपरस्य पराधीनः, अवड्धाशितेति ( सू० ) स्वः । परो नियन्ता-  
 स्यस्य परवान् । अवि- उपरीनोऽपराधीनः । निह्नयते निघ्नः, घञर्थेकविधानम् ( वा० ) । आयत्तने  
 नियुज्यते- आयत्तः । गृह्यते गृह्यकः, पदास्तेरिव ह्यति ( सू० ) क्यप् ॥ १६ ॥ खलं पुनाति खलपूः ।  
 बहु करोति बहुकरः, दिवाविभेति ( सू० ) टः, अत एत बहुकरी मात्रेणी, बहुधान्यानेक इत्येके ।  
 दीर्घं चोरेण पुनति सूत्रयते वा दीर्घसूत्रः । जडति जलमः । ( कुण्ठः ) कुठि आलस्ये । मन्दोलसः  
 ॥ १७ ॥ अलं कर्मणलंकर्मीणः, पर्यादयोगान्तर्येवनुर्थ्वेति ( वा० ) संसासः, अवड्धाशितेति ( सू० )  
 खः । ( क्रियावान् ) नित्ययोगेव ( म ) नृप् ( का० ) । ( कर्मः ) । कर्मनाच्छील्ये ( सू० ) इति माधुः ।  
 कर्मणि घटते कर्मठः, कर्मणघटोऽथ सू० ॥ १८ ॥ कर्मण साधु कर्मणं वेतनं मुह्यते कर्मण्यभक् ।  
 कर्म करोति कर्मकरः, कर्मणिभूतो ( सू० ) इति टः । ( कर्मकारः ) कर्मण्यण् ( सू० ), विना भूति  
 कर्मसंपादकः । ( अपस्नातः ) अपेत विश्लेषः । ( मृतस्नातः ) मृतमस्कारार्थं स्नापितः । शौष्कली  
 भांसःपल्लवः, तामसि शौष्कलः [ शाष्कलः ], शेषे ( सू० ) इत्यण् ॥ १९ ॥ पुमुक्ता संजातास्य ( पुमु-

स्वायाम्यस्य उच्छ्रितस्य (स्व) पानशीण्डा बहुमदे ।  
 जीवातृकः स्वापापुष्पामन्तर्वापितु शास्त्रविद् ॥ ९ ॥  
 परीक्षकः कारमिको वरपस्तु समर्पु(र्ष)कः ।  
 हर्षमाणो विदुर्वापः प्रमना हृष्टमातसा ॥ ७ ॥  
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्वापुत्क उन्मनाः ।  
 दक्षिणे सरलोदारी सुकलो दातृमोकरि ॥ ८ ॥  
 तत्परे प्रसितासकाविद्यार्थोपक उत्सुकः ।  
 प्रतीते प्रथितरूपातदित्तविज्ञातविमुताः ॥ ९ ॥  
 गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहतलक्षणी ।  
 इम्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥  
 अधिभूर्नायको मेता प्रभुः परिवृद्धोधिपः ।  
 अधिकर्षिः समुद्रः स्वात्कुदुम्यध्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥  
 स्वापभ्यागारिकस्तस्मिन् उपाधिषु पुमानयम् ।  
 वराहकूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

बापो यत् ( तत्र साधुः ) । ( स्थूलकणः ) स्थूलं कण्डयत्सालोचयति ददातीति वाच्यम् । इमे शीघ्रः  
 शब्द उपचारात्, छुण्डा हि पानमदस्वानं तत्र भवः शीघ्रः । जीवति जीवातृकः, धनिरपुष्पकनृदिष्व  
 ( उ० ) । ( अन्तर्वापिः ) अन्तर्वाप्यस्य ॥ ९ ॥ करणं प्रयोजनमस्य कारमिकः, कठोदौ दानार्थं  
 प्राप्तापरीक्षिता । आढ्यपट्टिकोपि । करणेनाधिकारि(रि)यौनं चरतीति वा । समुच्चोति संवर्धयति  
 समर्पुः । इष्यति हर्षमाणः, तात्काल्यवयवचनशापिपुषानम् ( सू० ) । शर्वादिकारं वाति विदुर्वापः ।  
 प्रहृष्टं मनोस्य प्रमनाः ॥ ७ ॥ अन्तर्धीनं मनोस्यान्तर्मनाः । उद्धतं मनोस्योत्कं, येनान्तर्धत्वादिभि-  
 र्बलपरैरपुष्कमुत्प्रेषितमिति धर्ममात्रेण, बलकृन्मनाइति ( सू० ) साधुः । शेरकण्ठम् । ( रुद्रिण ६० )  
 दक्षते, सरति, उदितति च । शोभना कलास्य सुकलः, दाता मोक्षा च यः ॥ ८ ॥ तत्परे ईश्वरं स  
 तत्परस्तमिष्ठः । प्रथिनोति स्य प्रथितः, पिन् बन्धने । आश्रयति स्माश्रयः । प्रियमर्थं प्रेम्णुः,  
 ब्रह्म उचोगार्थः पुष्यः शोभनार्थः, उत्कादिबलम् ( शा० ) । प्रवेष्टमेति प्रतीतः । प्रवते  
 प्रथितः । ह्यायते ह्यातः । विपते प्रतीयते विपतः, विपत्तौमोगप्रत्यययोः ( सू० ) इति  
 साधुः ॥ ९ ॥ कृताः प्रसिद्धा लक्षणरूपा गुणा वस्यासौ कृतलक्षणः । आह्वानमुद्घोषि-  
 तानि कक्षणानि यस्यासावाहतलक्षणः । इममईति- इम्यः, इण्डादिस्वापत् ( सू० ) । आप्याचन्ति  
 यमाहवः, कः, पुषोदरादिः ( सू० ) । स्वमत्स्यस्य स्वामी, स्वामिनेश्वरं ( सू० ) इति  
 साधुः । इति तत्काल ईश्वरः, स्वेश्वरमायेति ( सू० ) वरत् । पतीति पतिः ॥ १० ॥ अपुष्परि भवत्स-  
 विभुः । क्वति निपुष्टये नायकः । प्रभवति प्रभुः, विप्रर्षभ्यइति ( सू० ) इः । परिवृद्धिं परिहृष्टः,  
 प्रमोक्षरिहृइति ( सू० ) साधुः । प्रामाणीरमन्नीय ॥ ११ ॥ कुटुम्बे कन्यादौ स्वापुतः, तत्तौक्योपुक्तः,  
 आदितोपरे भयोभ्यागारिकः । उपाधीयत उपाधिः । सिंहस्यैव संहननं देहोस्य सिंहसंहननः ॥ १२ ॥



## तृतीयं काण्डम् ।

विशेष्यनिम्नः संकीर्णैर्नानाधैरव्ययैरपि ।

छिद्ग्रादिसंघर्षैर्गताः सामान्ये वर्गसंघयाः ॥ १ ॥

स्त्रीवाराधैर्यद्विशेष्यं यावृशं प्रस्तुतं पदैः ।

गुणप्रव्यक्त्याशाब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान्धन्यो महेश्चस्तु महाशयः ।

हृदयालुः स(सु)हृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

प्रवीणमिपुष्पाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।

वैज्ञानिकाः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

दक्षिणी(नि)यो दक्षिणार्धस्तत्र द(दा)क्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

भोगनेष्टाय नमः । विशेष्यनिम्नो विशेषणम् । विशेषणादिभिर्हेतुभूतैर्वै पञ्च वर्गास्ते काण्डद्वयोक्त-  
साधारण्यात्सामान्यकाण्डोक्तिस्तृतीयेवान्तरवर्गान् संश्रयन्ति, यथा नानाधैर् कान्तादिवर्गैः, अन्धयवर्गेनेका-  
दैकार्यवर्गैः, छिद्ग्रादिवर्गैः स्त्रीलिङ्गादिवर्गैः । वर्गसंग्रह इत्येके पेटुः, सामान्यकाण्डे वे पञ्च वर्गाः स  
वर्गसंग्रह इति योजना । आदिच्छः प्रकारे ॥ १ ॥ कयादिभिः पदैर्वापुस्तिस्रैर्यादव्ययनैश्च विशेष्यै-  
र्यद्विशेष्यं भेद्यं प्रस्तुतं तस्य गुणादिष्वभास्तथा तादृग्लिङ्गास्तादृग्वचनाश्च भेदका विशेषणानि भवन्ति ।  
गुणव्यक्ता यथा प्रवीणा स्त्री, प्रवीणा दाराः, प्रवीणं कलत्रम् । हृदयव्यक्ता यथा दण्डिनी स्त्री, दण्डि-  
नो दाराः, दण्डि कलत्रम् । क्रियाव्यक्ता यथा पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कलत्रम् । दारात्वमिति  
पाठो दुष्टः । स्त्रीनराधैरित्येकं, स्त्रीपुंनपुंसकैरित्यर्थः । क्षेमकरोरिष्टतातिः क्षिबतातिः चिदंजर इति बन्ध-  
व्यम् ॥ २ ॥ धने साधुर्धन्यः । महानाशयोस्य महाशय उदारामिनावः । उदीर्णं उद्गरोदाराधुदात्तच  
महामनाः । प्रवृत्तं हृदयमस्यस्य हृदयालुः, हृदयादेरा(वा)लुन्यतरस्याम् (वा०) । स एव हि हृदयेन  
सह वर्तते, अन्धे मांसकाण्डे क्षयप्याहृदयाः, वन्मनैव- हृदयं तद्विविहृते यद्वावमन्यवर्धं पतम् ।  
स्त्रीधियाः सधुर्दवा गण्यन्ते कथमन्यथा ॥ चिद्रूपोपि । (महोत्साहः) उद्यमवानित्यर्थः ॥ ३ ॥  
प्रवृत्ता बीणास्येति प्रवीणः, मुख्यार्थं परित्यज्य निपुणे रुढः, वदाहुः (कुमारिउभ०)-  
निरुद्धा कलनाः काचित्सामर्थ्यादभिवानकत् । क्रियन्तेषांतेनैः काचित्काश्चिन्नैव स्वकथित  
इति । एवं निष्णातकुशलम् । निपुणति निपुणः, क्षोभनकर्मरक्षात् । अभितो जानाच्छिक्षितः ।  
विजानाति विज्ञः, इगुपधेयैरुक्तः (सू०) । निष्णा(स्ना)ति निष्णातः, निनदीभ्यांस्नातेः कौडले  
(सू०) इति वक्ष्यम् । शिक्षा संज्ञातास्येति शिक्षितः । शिक्षानं प्रयोजनमस्येति वैज्ञानिकः । कृतं  
संस्तुतं मुखमस्येति कृतमुखः । प्रवृत्तं कृतं कर्मास्येति कृती । कुशान्- कालि कुशलः, ते हि श्रुत्यै-  
रावृत्तं वक्ष्याः । कृतकर्मा कृतकृत्यः कृतार्थश्च ॥ ४ ॥ प्रतीक्षणीयो मुख्यत्वात् (प्रतीक्ष्यः) । (सां-  
शयिकः) संशयमापन्नइति (सू०) ठक् । (दक्षिणीय इ०) दक्षिणामर्हति, कदम्बरदक्षिणपथेति  
(सू०) ऊवती । तत्र दक्षिणार्धं ॥ ५ ॥ वदति दीयतामिनि वदान्यः, वदेरान्वः (उ०) । वदन्त्योपि,



मेरेयमासवः शीघुर्मेवको जगलः समो ।  
 संधानं स्वावभिषवः किण्वं पुंसि तु नम्रहः ॥ ४२ ॥  
 कारोत्तमः (रः) सुरामण्ड आपानं पानगोष्टिका ।  
 चषकोस्त्री पानपात्रं सरकोप्यनुतर्षणम् ॥ ४३ ॥  
 धूर्तोक्षवेवी कितवोक्षधूर्तो घृतकृत्समाः ।  
 स्थूलमहाः प्रतिभुवः समिका घृतकारकाः ॥ ४४ ॥  
 घृतोस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ।  
 पणोक्षेषु ग्लहोक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥ ४५ ॥  
 परिणायस्तु शारीणां समन्तालयनेऽस्त्रियाम् ।  
 अष्टापदं शारिकलं प्राणिघ्नं समाह्वयः ॥ ४६ ॥  
 उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्यत्र यौमिकाः ।  
 तादृम्यावन्यतो वृत्तावृत्ता लिङ्गान्तरपि ते ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः । १० ।

सुराया विशेषो मेरेयः । शेरतेनेन शीघुः, शीघोभृक्- ( उ० ) । शीघोरित्येकं पठित्वा शीघुप्रति-  
 कृतक इति व्याख्यन् । यदाहुः- मध्वःसवःतु मेरेयः, तत्र-यन्माला- मेरेया गदितः शीघुः, ( इक्षोः )  
 [अ]पक्वसोपि । मेयति स्निह्यत्वेन मेदकः । भृशं गलति जगलः स्वच्छः सुरामंधानदध्यपदः ।  
 संधीयते संधानं, बंधकुरफलादीन् बहुकालं सधाय क्रियते । अभिपूयते चिरं क्रियतेऽभिषवः । भाव-  
 साधनो वा द्वौ सुरासंधौ वर्तते । किं (क)णति कीयते वा सुरानेन किण्वं मापदलन्या (ला दि सुप-  
 णीजाह्वयम् । नमेनाह्वयते स्पर्धते सुराच्छादनाभावात्प्रमदः, नमहुर्मांलायाम् ॥ ४२ ॥ कारणे क्रिया-  
 बशान्मुह्यः कारोत्तमः । सुरोध्वं स्वच्छो भगः ( सुरामण्डः ) । अपायनेस्मिन्पानम् । पानाय गोष्ठी-  
 आसनचन्धः पानगोष्ठी, गावो नानाविधा बाधास्तिष्ठन्त्यस्तेति । चषक्यनेन चषकम् । गल्यकोपे, फाटिके  
 पात्रेयं रुढः, विवक्षातो विध्यनुवादी । स (रि सरकः । अनुवृथ्पन्त्येनानुतर्षणं सुरापरिषेपणम् । चरक-  
 पर्यायावेतावित्येके, यन्मुनिः- चषकस्थानुतर्षथ सरकश्चेति ॥ ४३ ॥ धूर्ति हिनाति धूर्तः ।  
 अक्षेदीव्यति विजिगीषते तच्छीलोलक्षदेवी । किं तवास्तीति पणोक्षिकाः । लगति पणकः । प्रतिनिधि-  
 र्भवति प्रतिभूः । सभा घृतसालास्यस्य समिकः । घृतं कारयति घृतकारकः । द्वौ द्वौ निप्राथो, अद्ययोः  
 सर्वसामान्यात् ॥ ४४ ॥ दीव्यतेस्मिन् घृतम् । कितवस्य कर्म कैतवम् । पणनं पणः । दुरोदरं नानार्थं ।  
 पण्यते पणो बन्धकः । गृह्यते ग्लहः, अक्षपुग्लहः ( सू ) इत्यपि । अक्षोलक्षः । दीव्यत्यनेन देवनः ।  
 पादयते बध्यतेनेन पाशकः, प्राशक इत्येक ॥ ४५ ॥ वामदक्षिणयोः शारीणां परिणयनं परिणायः,  
 परिन्यानीणे, घृताश्लेषयोः । सू० ) इति चत्र । शृणातीति शारी खेलती । अष्टैपदान्यस्य अष्टपदम् ।  
 शारयः फलन्यत्र शारिकलं खेलनाधारः, चतुर्दशफलकादि । आकर्षो नानार्थः । प्राणिनिर्भेषकुट्टदिभि-  
 घृतं प्राणघृतम् । संधर्षेणाह्वयन्तेत्र सभाह्वयः ॥ ४६ ॥ येत्र संबन्धिष्यन्ता लक्षणाहुत्यादेकस्मिन्-  
 लिङ्गे- उक्तास्ते तद्गुणयोगादन्यत्र वर्तमाना लिङ्गान्तरप्युपेक्ष्याः, यथा कर्मण्या भूतिः, कर्मण्यं वेतनं,  
 हलिमिया सुरा, हलिप्रियं मधं, अक्ष-ती मभा, अक्षद्वयम् । एवं मालाकारी स्त्री, अक्षदेविनी स्त्री ।  
 तथानुपदानं पदत्राणम् ॥ ४७ ॥ इति शूद्रवर्गः । १० । इति श्रीक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितमहाकोशोद्धारणे भूम्या-  
 दिकाणो द्वितीयः समाप्तः ।

प्रतिमार्गं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।  
 प्रतिपुतिरर्षा पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमानं स्यात् ॥ ३६ ॥  
 वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृशः सदृशः सदृक् ।  
 साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥  
 निमसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।  
 कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म येतनम् ॥ ३८ ॥  
 भरणं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ।  
 सुरा हलीप्रिया हाला परिसुद्वरुणात्मजा ॥ ३९ ॥  
 गन्धोत्तमा प्रसन्नोरा कादम्बर्या परिश्रुता ।  
 मदिरा कश्यपमद्ये चाप्यवदंशस्तु मक्षणम् ॥ ४० ॥  
 शुण्डा पानमदस्थानं मधुवारा मधुक्रमाः ।  
 मध्वासवो माधवको मधुमार्द्वीकमद्ययाः ॥ ४१ ॥

ते प्रतिविम्बं, बिम्बसदृशं वा । प्रतियात्यतेनया प्रतियातना, येत निवारोपस्कारयोः । अर्थयतेऽर्थाः ।  
 प्रतिनिधीयते प्रतिनिधिमुख्यसदृशः । प्रतिरूपं [प्रतिच्छन्दः] प्रतिकार्यश्च । उपमितिरुपमा । केचिदेतत्पूर्वः,  
 सवन्ति ॥ ३६ ॥ समति समः । तुल्या संमितस्तुल्यः, नौवबोधमेति ( सू० ) यत् । ( सदृश ६० )  
 समान इव दृश्यते, सदादिषुदृशोरनालोचनेकञ्च ( सू० ) इत्यत्र समानान्ययोयेतिवक्तव्यात् ( वा० )  
 कसः कन् विक्त्वा च, दृग्दृशवतुःषिति ( सू० ) समानस्य सः । समानमाधारणं मानं चास्य साधारणः  
 समानश्च ॥ ३७ ॥ वाच्यलिङ्गास्तुल्यार्थाद्येते, यथा चन्द्रानि मुखं, पद्मसंकाशम् । नियतं भाति निभम् ।  
 समं काशते संकाशः । आदिशब्दः चन्द्रप्रतिमः, पितृरूपः, आयासभूत इत्यादि । चन्द्रेण निभ इत्यादौ  
 न भवति समास एवोत्तरपदत्वस्य कृतेः । कर्मणि साधु कर्मण्या, भर्मण्या वा । विधीयतेनया विधा, लक्ष्ये  
 भोजनपिण्डे कृता । ( भ्रूया, ६० ) भ्रियतेनयेति, संज्ञायांसनजेति ( सू० ) क्यप्, स्त्रियां कितन्,  
 मनिन्, स्युट् । वीयतेनयेति वेतनं, वी गत्यादौ ॥ ३८ ॥ भर्णे साधु भरणम् । मूलनानाम्यं मूल्यं,  
 नौवबोधमेतियत् ( सू० ) । निर्विश्यते भुज्यते निर्वेशः । पण्यते- आभाष्यते पणः, निर्यपणः-  
 परिमाण इति ( सू० ) साधुः । सूयते परिवास्यते सुरा । हलीनो बलस्य प्रिया । जहाति लज्जामनयेति  
 हाला, हलति विलिखत्यङ्गं वा, उबलादिःवाणः ( उबलितिकसन्तेभ्योणः ) । परिस्रवति परिस्रुत्,  
 परिस्रुता च । बहणात्मजा बाहणी समुद्रोत्पत्त्यात् ॥ ३९ ॥ गन्धोत्तमा । प्रसन्नोरा प्रसन्ना, अच्छसुरा ।  
 एति भ्राम्यत्यनया- इरा । कुट्टि साम्बरस्य नीलवासस इयं कादम्बरी । दृष्टार्थं तृतीया । माद्यन्त्यनया  
 मदिरा । कशादेशे भवं कश्यम् । मदे साधु मद्यं, माद्यन्त्यनेन वा, कृत्स्नपुटोबहुलं ( सू० ) इति करणे  
 गदमदचरति ( सू० ) यत् । स्वादुरता मदिष्टा कृत्यं हाङ्गूरं कापिशायनं च । अवदश्यते पानरुचिजननार्थ-  
 मवदंशः, खरविशदमभ्यवहार्यम् । चर्वणमुपदंशश्च ॥ ४० ॥ शुण्य(न्य)ने शुण्डा, शुण(न) गर्ता । पान-  
 मदयोराल्पदं कृत्यपालगृहेकदेशः । शाश्वतस्तु- कुञ्जरणां करः शुण्डा शुण्डा कादम्बरी मता ।  
 ( मधुवारा ६० ) क्रमेण मधुपानावसराः । गौरी पैठी च माष्वी च फलोत्था च सुरा स्मृतेति सुराय  
 भेदानाह । माक्षिकमित्र आसूयते माक्षवः । मधुनो विकारां मधुना कृतो वा माधवकः, कुसालादिवा-  
 द्भुम् ( सू० ) । मन्यते मधु, माद्यन्त्यनेन वा । मृद्वीकाया विकारो मार्द्वीकं, माष्वीकमित्युपाध्यायः ।  
 मयस्याक्तवद्- अद्वयोरिल्लके पेटुः, तप्त- सामान्बविशेषरूपत्वात् ॥ ४१ ॥ मिरायां देशे भवो गोम्बाः

पिटकः पेटकः पीडा मञ्जूषाय विद्वन्निष्ठा ।  
 भारयष्टिस्तथास्मिन् शिष्ये कापीय पाशुका ॥ १० ॥  
 पाशुकपामत्सी घैषानुपरीणा पशायका ।  
 नधी वर्धी वरत्रा स्यादप्यावेस्तादनी कशा ॥ ११ ॥  
 चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्ली ।  
 भारापी स्यादेपणिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ १२ ॥  
 व्र ( वृ ) धनः पत्रपरशुरेविका तृष्टिका समे ।  
 तैजसायर्तनी मूपा भक्षा चर्मप्रमेयिका ॥ १३ ॥  
 आस्कोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ।  
 वृक्षावनो वृक्षमेवी टङ्कः पाषाणदारकः ( जः ) ॥ १४ ॥  
 ककचः करपत्रं स्यादारा चर्मप्रमेयिका ।  
 सूमी स्थूणायःप्रतिमा शिल्पं कर्म कलाधिकम् ॥ १५ ॥

संपाते, कः । प्लुते पेटकः । पीडा गहने ( अवगाहने ), अस्मात्पीडा, पीडा पानेस्मात्पेटेति धीमोजः ।  
 मञ्जु मनोज्ञं कृत्वा वक्ष्यायैक्यतेत्र मञ्जूषा । आद्या पेटारिकायां वरी मह्यम् । विद्वंगपतिवृत्तिधर्मा-  
 दिमयी, या भिरयाद्यै कम्पमाना स्याप्यते प्रयाणके च संचार्यते ( विद्वंगिका ) । भारोद्ग्रहणार्थं यष्टिः,  
 चतुर्दण्डकोति सन्धाः, शिष्याचारस्कन्धप्रायो मगुड इति द्वयि मि ऽष्टाः, विद्वंगमेत्येके । तदात्मनो  
 पाराधनः, तस्या आत्मन्यते वा । शकनोति कर्तुं शिष्यं, अप्यादिः ( उ० ) । कथ्यतेनेति कचः,  
 कच बन्धने, बल रज्जुपट्टे बन्धन्यमास्ते ॥ १० ॥ पयनेनया पाशुः, धित्कषिपयतेरित्युः ( उ० ) ।  
 ( पशुका ) स्वार्थे कन्, कण्डइति ( सू० ) ह्रस्वः । उपनद्धति पादमुपान्तं, नहिद्विषीति ( सू० )  
 दीर्घः । पादत्राणं च । अनुपदं पादायामेन । ब्रह्मानुपदीना, अनुपदसर्वोमेति ( सू० ) सः । नद्धति  
 बन्धाति नधी । वर्धने दीर्घाभवति चर्मरज्जुत्वाद्दर्शी । त्रियतेनया वरत्रा, वरत्रा वैतसेवसीति तु  
 चापप्यः सुनाप्यते (?) उपचारादाहयत् । कशाति कशा चर्मयष्टिः ॥ ११ ॥ चण्डालस्येयं चाण्डा-  
 लिका । कथ्य ( क्य ) ते तन्त्रीभिराम्रियते ष्ट्यो ( षो ) लवीणा, किमयाह्वया । नरमयति नराह, तत्सेवं,  
 नाराजी । अन्विष्यते वर्धनयेत्येपणिका, स्वर्णतुलेतीह युक्तम् । स्यति तनुकरोति शाणः । निकष्यतेत्र  
 निकषः, गोबरसंचरेति ( सू० ) चकारात्पाशुः, पुंसिस्तंतायांघो वा ( सू० ) । एवं कषः, निकषोपल  
 कलेके, पचापच ( नन्दिप्रणीति ), मणिकारादिमाण्डमाहुः, यन्मुनिः- चाणस्तु निकषोपलः ॥ १३ ॥  
 ययति क्लिप्तं ब्रधनः । पत्राकारः पत्ताणां वा परशुः ( पत्रपरशुः ) । एषःपेयिका, ईष उच्छेदः ।  
 चण्डोलोहमयी चालका तृष्टिका, तुल निवृद्धे । ईषिकेलेके, शलाकेषिकयोस्त्विरिति दुर्गो भेदेनाह ।  
 वैतसेव हेमादि- आसवर्त्यते इवीक्ष्यतेस्वाम् । मूयते मूश, मूह बन्धने । वमस्ति भक्षयतीह स्वास्यं  
 चक्ष । चर्ममयी, प्रक्षीय्यते प्रसेयिका, प्रसेवकोपि ॥ १३ ॥ आस्कोट्यते विष्यते चानया मौषि-  
 कादि ( आस्कोटनी, इ० ) । कथ्यते धियतेनया कृपाणी । कथ्यतेनया कर्तरी ।  
 क्लोयते क्लयतेनेन शक्येण वृक्षावनः । टङ्कयतेनेन टङ्कः, टकि बन्धने, हन्वमानः-  
 टङ्कयं कायति वा ॥ १४ ॥ कशाद्योच्चारणेन कचति ककचः । करसंचार्यं शाणपत्रं कर-  
 पत्रं, करशब्दोच्चारणेन पतति वा । इत्यनयेत्सारा, भिदादी- आराशस्त्रां ( ग० ) साधुः । चर्मसी-  
 चनी च । सुवति सूमी, शोभनोभिरिलेके । तिष्ठति स्थूणा, वच्छात्तः- स्थूणा स्तम्भ-  
 सूम्या च । अयोमयी प्रतिवृत्तिः ( अयःप्रतिमा ), यत्स्त्वृत्तिः- सूमी उपरन्तीमाभिरुन्मूल्यते  
 गुह्यतस्मगः । शिनोति शिल्पं, शिम् निष्ठाने, शिल उच्छेदमादा । कला गीतायाचतुःशष्टिः ।  
 आदिशब्दः प्रकारे ॥ १५ ॥ प्रतिमीयतेनेनेति प्रतिमानं, प्रतिमा च । प्रतिविम्ब-

चौरिकामारिकस्तेनवस्तुतस्करमोचकाः ।

प्रतितोषिषरास्फन्निपाटघरमछिम्बुषा ॥ २५ ॥

चौरिका स्तेन्यचौर्यं च स्तेयं छोप्यं तु तद्वनम् ।

वीतसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ॥ २६ ॥

उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगबन्धनी ।

शुभ्यं वटाकरः ( वराटकः ) स्त्री तु रज्जुखिपु वटी गुणः ॥ २७ ॥

उद्घाटनं घटीदन्त्रं सलिलोद्वाहनं ग्रहेः ।

पुंसि वेमा बापदण्डः सूत्राणि नरि तन्तवः ॥ २८ ॥

बाणिर्ब्रूतिः स्त्रियी तुल्ये पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।

पा प आलिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रवन्ताविभिः कृता ॥ २९ ॥

मीर्ममरिस्त्युक्तम् ॥ २४ ॥ चरयति चोरः, स्वार्येण ( चौरः ), चुराशीलो वा, छत्रादिस्वाण्यः ( सू० ) ।  
एकस्मिन्सहायेऽगारे भव ऐकागारिकः, ऐकागारिकश्चौर ( सू० ) । स्तेनयति स्तेनः, स्तेन चौर्ये,  
स्यात्स ह्यविविध इति ( उ० ) इति सत्येनः स्यात् । दस्युगच्छिणाति दस्युः । तस्करोति तस्करः,  
तद्वृत्ततोः करपत्योर्दत्तवचनयोः सुहृत्कोपध्वं ( ग० ) । मुष्णाति मोचकः । प्रतिरुणद्धि प्रतिरोधी । पराना-  
स्कन्दति परास्कन्दी । पाटयन्धरति पाटयन्धरः, पटयन्धरे जीर्णवस्त्रे भवो वा । मल्लिनेम्लोचयति मल्लिम्बुचः,  
म्बुच स्तेयकरणं । पारिष्विहः पश्यतोहरण, वारिद्वहृदयद्व्योयुक्तिद्वहरोष्णिगति ( सू० ) पठषा  
अनुहृ । व्यलीकं वातिसंधानं व्यञ्जनं च प्रचारणम् ॥ २५ ॥ चोरस्य भावार्थचौरिका, मनोद्वादिस्वात्  
( द्वन्द्वमनोद्वादिभ्यश्च ) वुर् । मद्वागदित्वात्स्यमि ( गुणवचनंवाद्वागदिभ्यः कर्मत्वञ्च ) चौर्यम् । स्तेनस्य  
भावः कर्म वा स्तेन्यं, स्तेनादितिबोधविभागात्स्यम् ( इ० ) । स्तेनाप्रलोपध्वं ( सू० ) इति स्तेयम् । लुप्यते  
छोप्यं चौर्यघनम् । मृगादवन्धनानेमिषं जानवागुरादिसाधनं, वितन्यत इति वीतसः, वितन्यते बध्यते-  
नेन वा, तसिः सीतः ॥ २६ ॥ ऊर्ध्वपातान्मध्यतेनेनोन्माथः । छलेन यम्बतेनेन कूटयन्त्रं, पाशाबन्ध-  
मिलोढे । ( मृगबन्धनी ) रज्जुरेणि क्षेत्रः । अत्रागुरयति मृगान् वागुरा जालकृतिः । शुं वुं पुत्रा-  
र्येभ्यः, पूयित मीयते शुं वुं म्ये, शुभं वा । बध्यते वेष्टयते वटाकरः, वटी च । सूज्यते रज्जुः ।  
सूज्यतेभ्यस्त्यते गुनः । वटो गुन इति पृथगाहुः । येवैष्टनेर्द्विगुणा सिगुणा वा रज्जुवैष्टयते वटीगुण इत्येक  
॥ २७ ॥ उद्घाटयते प्रकाशयन्मोनेनोद्घाटनं, ऊर्ध्वं हन्य [ चाल्य ] तेनेत्युद्घाटनमिति कीटिल्यः ।  
प्रदेरपठदेर्बलमुपै बाणतेननोद्वाहनम् । पाशवर्तोपि । वयन्यनेन वेमा । उप्यते पीय्यते यन्त्रे सूत्रं  
येनेति बापस्तदर्थं दण्डो बापदण्डः, बाबदण्ड इति तु युक्तम् । सूत्रते सूत्र्यते वा पठोनेन सूत्रम् । तन्म-  
तेनेन तन्मुः । नरि पुंसि ॥ २८ ॥ ब ( वा ) न्नं बाणिः, वयनं वा, अत एव निष्प्रवाधिर्नवः पटः ।  
विवचनं व्यूतिः, कतिव्यूति ( सू० ) साधुः । तुल्या च तुल्या च तुल्ये । पुस्त्यतेभिर्मर्यते मृदल पुस्तं,  
पुस्त आदरे वा । पश्चालदंष्ट्रे भवा पाश्चालिकश्च बया बालाः खेलाति । ( पुत्रिका ) पुत्रादङ्गप्रमइति  
( ग० ) कन् ( बाबादिभ्यः कन् ) । आदिशब्दः कर्मलोपायैः, स्यात्सालभाञ्जिका स्तम्भे लेप्येनाञ्जिका-  
रिका । जतुत्रपुत्रिकारे तु जानुर्न त्रापुषं त्रिषु ॥ तनुजनुनोः पुहृ ( सू० ) ॥ २९ ॥ वेष्टति विटः, विट



मन्वस्तुन्दपरिवृज आलस्यः शीतकोलसोनुष्णः ।  
 वसे तु चतुरपेशठपटवः सृत्पान उष्णः ॥ १९ ॥  
 चण्डालपृथमास्तनपिवाकीर्तिजननमाः ।  
 निषादपचायन्तेवासिचण्डालपुत्रसाः ॥ २० ॥  
 भेषाः किरातशयरपुलिन्वा म्लेच्छजातयः ।  
 व्याधो मृगवधाजीयो मृगयुर्लुब्धकोपि सः ॥ २१ ॥  
 कौलेयकः सारमेयः कुकुरो मृगवशकः ।  
 शुनको भयकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः ॥ २२ ॥  
 श्वा विश्वकमुर्मृगयाकुशलः मरदा शुनी ।  
 विदधरः स्र ( स्र ) करो माम्यो वर्करन्तरुणः पशुः ॥ २३ ॥  
 आच्छोदनं मृगव्यं स्यादास्तेटो मृगया स्त्रियाम् ।  
 दक्षिणार्कलुब्धयोगादक्षिणेर्मा कुक्ष्यकः ॥ २४ ॥

स्वपितीव मन्दः, अत एव यदि ज्ञास्य इति चान्द्रा भातुः । तुन्द परिमार्ष्टि तुन्दपरिवृजः, तुन्द-  
 शोकयोःपरिमृजानुदोः ( सू० ) इति सूत्रे- आलस्यमुल्लारणयोरिति वक्तव्यात् ( बा० ) कः । आलस्य-  
 मस्त्यस्यालस्यः, अर्शमादित्वात् ( सू० ) अन् । ( शीतकः ) शीतादलसे, शीतोष्णाभ्यां करिणीति  
 ( सू० ) कर्त्तुं । न हसिष्येहसः । दक्षते दक्षः । चतते कर्म चतुरः । पिशति पियति वा पेशलः, पिश  
 अवयवे, सि पि गतौ । पटति पाटयति वा पटुः । सुसृत्पानमुशोगास्य सृत्पानः । उषति दहतोवोष्णः ।  
 उष्णलोपि ॥ १९ ॥ चण्डते चण्डालः । व्रवते व्रवः । मा निषिद्धं तद्गति मातङ्गः, अमानोनाः  
 प्रातिषेधे, मतङ्गम्यापयमिति पौराणिकाः । दिवा कौल्यं दिवाकीर्तिः, रात्रौ भयदत्वात् ।  
 वनं गच्छति जनंगमः, गमश्च ( सू० ) इति खच् । निषण्णमस्मिन्मातृकमिति निषादः, निषीदति वा,  
 ज्वलादित्वाणः ( ज्वलितिकसन्तेभ्योणः ) । श्वानं पचति श्वपचः, पचादित्वादणोपवादोच् ( नन्दिप्रहोति ) ।  
 प्रामान्ते वसति- अन्तेवासी, अन्तावसायी च । ( चण्डालः ) कुलालवदह ( कर्मार ) निषादचण्डालमिषाभिधे  
 भ्याश्चन्दस्युपसंख्यानत् ( बा० ) स्वर्षेण पुट्टसितं कसति पुक्षतः, पुक्षस इत्येके । अवान्तरभेदोल  
 नादृतः, वतः श्वपचो [ श्वपो ] डोम्बः [ मः ] पुक्षसो मृतपः ॥ २० ॥ किरातायास्तथा म्लेच्छजातीयाः- इरद-  
 मुष्टमेदादयश्चाण्डालभेदाः । किरात शरान् चिरातः । शवत्यरण्यं शवरः । पोलति भ्रमति पुलिन्दः । एते-  
 रण्यचरा देशभेदाद् भिन्नाः । म्लेच्छलुब्धकं वक्ति म्लेच्छः । रिष्टया मालभटा भिन्ना नाहलाधान्त्यजाः  
 वृषक् । विश्वयति व्याधः, श्याद्वपधेति ( सू० ) णः । मृगान् वाति मृगयते वा मृगयुः । लुभ्यते ( स्म )  
 वृष्यति मांसं लुब्धकः ॥ २१ ॥ कुले गृहे भवः कौलेयकः, कुलकुलोति ( सू० ) वक्त्र् । सरमाया  
 अपत्यं सारमेयः । कोकते कृह, चारप्राः कृहाव्यं वा कुरति ( कुरुरः ), कुर शब्दे । मृगान्दशति  
 मृगदशकः । शुनति शुनकः, शुन गतौ । भयति कुत्सितं वाशते भयकः । शवति श्वयति वा श्वा ।  
 मण्डली च । रथामृगो देवशाम् । स श्वा संज्जातगरण्ये गोन्यते अर्थते दशनभयादलर्क उन्मत्तः श्वा  
 ॥ २२ ॥ विश्वं कन्दल्याह्वयते विश्वकद्रः, विगतं श्वकदामस्येयेक, विश्वकं द्रवति वा । सरति सरमा  
 देवशुनी, विशेषदृष्टिरपि सामान्येभिधानत् । विषं गुणं चरति ( अति ) विदधरः । मृगते बहून् सूकरः ।  
 वर्कतेवान् वर्करः, वृक आशाने ॥ २३ ॥ आचोद्यन्ते प्राक्ष्यन्ते प्राणिनोऽप्येत्याच्छोदनं, पुष्टश्छत्रम् ।  
 मृगान्भयति मृगव्यं, मृगव्येति मुनिः, वंश्च संवरणं । आखेयन्ते प्राणिनोऽप्येच्छेदः, क्षिप्र उन्नासने ।  
 मृग्यन्ते प्राणिनोऽप्यं मृगया, मृगयाटाट्येत्यङ् ( पारचर्यापारस्येति ) । पापदिश्व ! लुब्ध [ क ] वृषवन्धा-  
 दक्षिणे पार्श्वे दर्शनमस्य दक्षिणार्कः ( दक्षिणेर्मा ), दक्षिणेर्मा लुब्धयोगादिति ( सू० ) साधुः, मृगोऽपि वा-



शैलादिमस्तु शैलवा जायाजीवाः कुशाश्विनः ।  
 भरता इत्यपि मटाधारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥  
 मार्दङ्गिका मीरजिकाः पाणिवावास्तु पाणिषाः ।  
 वेणुष्माः स्युर्ध्वजिका वीणावावास्तु वैजिकाः ॥ १३ ॥  
 जीवान्तकः शाकुनिको द्वौ वायुरिकजालिकौ ।  
 धैतसिकः कीटिकश्च मांसिकश्च समं प्रथम् ॥ १४ ॥  
 भूतको भूतभुजर्मकरो धैतनिकोऽपि सः ।  
 वार्त्तावहो धैवधिको भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥  
 विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।  
 निहीनोपशसधो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥  
 भृत्ये वासेरवासेयवासगोप्यकचेटकाः ।  
 नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥  
 पराचितपरास्कन्दपरजातपरैधिताः ॥ १८ ॥

च प्रोक्तं नटसूत्रमधीते शैलाली कुशाश्वी च, पाराशर्यशैलालिभ्याम् ( सू० ) इति निनिः, कर्मन्दकुशाश्वान्  
 ( सू० ) इतिः । शिल्पस्यैरपत्यं शैल्यः । भरतस्यापत्यं, विद्यायां बहुल्ये लुक् ( यमजोष ) । नटति  
 नटः । चरणस्य भ्रमणस्यायं चरणः, यतो देशान्तरभ्रमणं जीवति । कुस्मितं शंसं वाति कुशील्यः  
 ॥ १२ ॥ मृदङ्गमुरजवादनं शिल्पमेयां ( मार्दङ्गिका मीरजिकाः ) । पाणी हन्ति पाणिषः, पाणिषत-  
 र्वचौशिल्विनीति ( सू० ) साधुः । वेणुं धमति वेणुष्मां वांशिकः । वीणावादनं शिल्पमस्य वैजिकः  
 ॥ १३ ॥ शकुनान् हन्ति शाकुनिकः, पक्षिमत्स्यमृगान् उन्तति ( सू० ) ठक् । एकार्याविति शेषः ।  
 वायुराश मृगबन्धनरज्ज्वा चरति वायुरिकः । विटन्यते वीर्यमः प्राणिबन्धोपकरणं, कूटः कूटयन्त्रं, ताभ्यां  
 जीवति चरति वेति ठक् ( चरतीति ) । मांसं पण्यमस्य मांसिकः । सोनिकार्यो इत्येके ॥ १४ ॥ त्रियते  
 भूतकः, स्वार्थे कन् । भूतिं वेतनं भुङ्क्तं भूतिभुक् । कर्मकरः, कर्मणिभूतो ( सू० ) इति टः । वेतनेन  
 जीवति वेतनिकः, वेतनादिभ्यो जीवति ( सू० ) इति ठक् । वृत्तिर्जिविकास्त्यहो वार्त्ता- अन्नायं,  
 प्रलाभश्चायैति ( सू० ) णः, वार्त्ताया वहो वार्त्तावहः । विवर्ण्यते विवधो भारः पर्याहारो वा, वध  
 संयमने, पुंस्त्रिवङ्गायां चः प्रायेण ( सू० ), तं वहति धैवधिकः, दिभावाविवधनीवधात् ( सू० ) इति ठन् ।  
 भारोस्त्यस्य भारिकः ॥ १५ ॥ विहृदो वर्णस्य वि. णः, वर्णान्तराजःवात् । पामाः सन्त्यस्याधमत्वात्  
 पामरः, पामा(नं) राति वा । निम्नमवतीति नीचः । प्रकृतौ भवः प्राकृतो गुणासंस्कृतः । पृथग्जनेभ्यः  
 पृथग्जनः । नियतं हीयते निहीनः । अपशीबतेपशदः । जलति जाल्मः, जल घातने । क्षुब्धं स्मृति  
 क्षुब्धस्तुच्छवात् । इतं रात्येति वा-इतरः । वर्धरोपि [यथाजातोपि] । भारतादौ रेफशकारौ ॥ १६ ॥  
 भरणीयो भूयः, भूमोऽऽहारायां ( सू० ) इति क्यप् । दासस्यापत्यं दासेरो दासेयश्च, ध्रुवाभ्योवा ( सू० )  
 इति ङङ्-कृको । दीयते दासः, दस्यते(ति) वा, दसु उपक्षये । गोपनीयो गोप्यः । चेत्ति चेत्, चित् प्रेप्ये ।  
 ( नियोज्यः ) प्रयोज्यनियोज्योऽप्यर्थसाधू ( सू० ) । किं करोमीत्याह्नाप्रतीक्षकः किंकरः, दिवाविभा-  
 नितेति ( सू० ) टः । प्रेषणीवः प्रेष्यः, प्राद्वहोऽद्योऽप्येष्यति ( वा० ) वृद्धिः, ईव उज्जे- इत्यस्मात्  
 प्रेष्यः । भृत्ये स्त्राम्युष्टिष्ठं भुजिष्य ॥ १७ ॥ परैराचीवते बर्ण्यते पराचितः । परिस्कन्यते- आकम्ब  
 निगुज्यते परिस्कन्दः, परिस्कन्दः प्राप्यभरतेषु ( सू० ) । परैरेष्यते बर्ण्यते परैधितः ॥ १८ ॥ मन्वते

काकः शिल्पी संवृत्तैस्तैर्द्रव्योः श्रेयः सजातिभिः ।  
 कुलकः स्यात्कुलधेयी माताकारस्तु मातृकः ॥ ५ ॥  
 कुम्भकारः कुठाळः स्यात्पुण्ड्रगण्डस्तु लेपकः ।  
 तन्त्र(न्तु)पायः कुबिन्दः स्यात्सुषुपायस्तु सौषिकः ॥ ६ ॥  
 रङ्गाजीवचित्रकरः शखमाजोसिधावकः ।  
 पावकृष्णमकारः स्याद् ध्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥  
 नाडिधमः स्वर्णकारः कलादी रुक्मकारके ।  
 स्याच्छाङ्खिकः काम्यविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥  
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतद् ।  
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोनधीनकः ॥ ९ ॥  
 धुरिमुण्डिदिव्याकीर्तिनापितान्तावसायिनः ।  
 निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥  
 आवालः स्यादवाजीवो देवाजीवी तु देवलः ।  
 स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रातिहारिकः ॥ ११ ॥

उज् । शिल्पं कलास्तस्य शिल्पी । समानजातीयकारुषधः, श्रीयत इति श्रेणिर्द्विलिङ्गः । कुलं कायति  
 कुलकः, कुलिक इत्यन्ये. श्रेण्यादौ श्रेष्ठार्थः । कुने वाणिगृन्दे श्रेष्ठः वमस्तस्य कुलश्रेष्ठी । ( मालिकः )  
 तदस्यपण्यमिति ( सू० ) ठक् ॥ ५ ॥ कुलानि गृहाण्यलति कुलालः, कुं मृदं लाडयति मृदनाति वा ।  
 पलनं मांसेनेव मृदादिना गण्डति संद्वन्ति पलगण्डेः लेप्यकृत् । तन्त्रं तन्त्रातानं वयति तन्त्रवायः, द्वावाम-  
 धेल्यण् ( सू० ) । कु बिन्दति कुबिन्दः । तुन्नं विद्ध वयति तुन्नवायः । सूचिवान् शिस्मस्य सौषिकः  
 ॥ ६ ॥ रङ्गान् रङ्गपातान्याजीवति रङ्गाजीवः । चित्रं करोति चित्रकरः, दिवाविभेत्त्यादिना ( सू० )  
 टः । शखं माण्डं तेजयति शखमाजः । असिन्धावति शोधयति-असिधावकः । पादः पादत्राणानि करोति  
 पादकृत्, पादकृदित्येके । विशेषणौकं समवायमियति व्याकारः, व्यैरित्ययःपर्यय इति श्रीमोजः ॥ ७ ॥  
 नाडी धमति नाडिधमः, नाडीमुष्टयोश्च ( सू० ) इति खश् । कला आदत्ते कलादः, कलं सुवर्णकालिका-  
 माद्यत्याखण्ड[य]ति वा, अत एव कलं धौतं यन्त्रति कलधौतं रुक्मम् । हेममुष्टिकां पि । कम्पुषटनं शिल्पमस्य  
 काम्यविकः शङ्खवलयदिहृत्, लक्ष्यादस्य क देशाभावः । शुल्बघटनं शिल्पमस्य शौल्विकः । मणिकारो  
 वैकटिकः ॥ ८ ॥ तक्षन्ति तक्षा । वर्धयति वर्धकिः, वर्धं छेदने । त्वक्षाति तनूकरोति दार त्वष्टा ।  
 काष्ठं तक्ष्णोति काष्ठतद् । स्थपतिश्च । ग्रामस्थापतस्तक्षः ग्रामतक्षः, ग्रामकौटभ्यां च तक्षः ( सू० ) इति  
 टक् । कुट्यां भवः कौटः स्वतन्त्रः । नास्वध्युपाये-इनः स्वाभ्यस्यानधीनः ॥ ९ ॥ धुरोत्यास्ति धुरी ।  
 मुञ्चयति मुण्डी । दिवा कीर्त्यते दिवाकीर्तिः, रात्रौ धुरकर्मनिषेधात् । नाप्यते नापितः, नम् प्रख्या  
 बन्तमवस्यत्वन्तावसायी । चण्डिलोपि । संवाहकोद्गमदः स्यात् । निर्णेजकि क्षालयति निर्णेजकः ।  
 रजयति रजकः, शिल्पिनि कपुन् ( कपुन् शिल्पिसंज्ञयोरिति ), रजकरजनरःसूपसंज्ञानात् ( बा० )  
 नद्योः । काचित्तु य एव धावकः स एव रजकः, स्मार्ते तु भिन्नावेतौ । शुण्डा पानमदस्यानं सुरा वा  
 पण्यमस्य शौण्डिकः । मण्डमच्छसुरा इरति मण्डहारकः । सुराजीवी कल्पपाकस्यः ॥ १० ॥ जवमरुति  
 क्वालमृच्छागस्तस्यायं जावमरु, अज्जपालापन्नतो वा । देवान्-स्मृति देवलः । मात्यस्यां किं मादा ।  
 शाम्बराख्यस्यासुरस्तेषां शाम्बरी, वां इमेति शब्दगे व्याज इति तु युक्तम् । इन्द्रजाल तु कुचयति कुचकं  
 कुरिका च । प्रतिहरणं व्याजः प्रयोजनमस्य प्रातिहारिक ऐन्द्रजालिकः ॥ ११ ॥ शिल्पिनि क्वालमृच्छेन

शिङ्गुं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैश्वरम् ।  
 ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥  
 गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।  
 त्रिकटु त्र्युषणं ध्योवं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः । ९ ।

शुद्धाश्वावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।  
 आषाण्डालान्तु संकीर्णा अम्बप्रकरणादयः ॥ १ ॥  
 शुद्धाविशोस्तु करणोम्बप्रो वैश्याद्विजन्मनोः ।  
 शुद्धाक्षत्रिययोरुयो मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥  
 माहिष्योर्याक्षत्रिययोः क्षत्तार्याश्वयोः सुतः ।  
 ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥  
 रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ।  
 स्याद्याण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

अजनवीजम् । मुरति मोरटं, मुर संवेष्टने । ग्रन्थिप्रतिकृतिर्ग्रन्थिकम् । चटकाशिररूपत्वाच्चटकाशिरः ॥ ११० ॥ गोरात्र लोमान्यस्या गोलोमी । भूताः केशा अस्य भूतकेशः, भूतस्यैव केशा अस्य वा । ना पुमान् । फलप्यङ्गुलं (गे) पत्राङ्गम् । तीणि कट्वन्त्यू,णानि च शुष्ठीपिप्पलं, मरीचानि समाह्वानि ( त्रिकटु, त्र्युषणम् ) । विशेषणं धति दहति व्याधम् । कटुतिक्तं च । त्रयाणां फलानां हरीतक्यामलक- विभीतकानां समाहारत्रिफला, अजायतशप् ( गू० ) । वरा च ॥ १११ ॥ इति वैश्यवर्गः । ९ ।

शु पूजितं कृत्वोन्दन्ति सूरिन् कृदयन्ति शुद्धाः, शीयन्ति वा । वृषान्- लुनन्ति वृषलाः, नारवस्तु-  
 -इषो हि भगवान्धर्मस्तस्य वः कुरुत लवम् । इत्यलं तं विजानीयत्- । जघन्याउज्जाता जघन्यजाः ।  
 यच्छ्रुतिः- पद्भ्यां शुद्धा अजायत । पदाः पञ्जाश्च । चाण्डालो ब्राह्मण्यां शुद्धाउजातोत्र । संकीर्णा  
 प्रतिलोमानुलोमजत्वान्निष्ठाः, यस्मृतिः ( याज्ञव० )- विप्रःसूर्यावासेकतस्तु क्षत्रियायां विशः क्षियाम् ।  
 जातोम्बस्तु शुद्धायां निषादः पार्श्वोपि वा ॥ माहिष्योमी प्रजायेते विट्शुद्धाङ्गनयोर्गृणात् । शुद्धायां  
 करणो वैश्याद्विप्रास्तेषु विधिः स्मृतः ॥ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूनो वैश्याद्वेदेहकः स्मृतः । शुद्धाउजातस्तु  
 चाण्डालः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ क्षत्रिया मागध वैश्याश्चूडाक्षत्तार्यामव च । शुद्धादायांगवं वैश्या जनयामास  
 वै सुतम् ॥ माहिष्येण कण्ण्यां तु रथकारः प्रजायत । असत्सन्तस्तु विप्रैः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ १ ॥  
 सिंहावलोकितन्यायेन सुत इत्येव । शुद्धायां वैश्याउजातः, करोति प्रेष्यकर्मोनीति करणः, स्तुद् । एवं  
 सर्वत्राप्याह्वानुषङ्गादि । अम्बायां तिष्ठत्यम्बष्ठः, अम्बास्वगाभूम्यानि ( सू० ) बन्धम्, हस्तो निर्देशात् ।  
 द्विजन्मात्र विप्रः । वैश्येति, यमध ( सू० ) इति की०- नाम्त लक्षणात् । शुद्धाचामहस्पृशेति ( ग० )  
 अजादित्वाद्यपि । उच्यत्युग्रः, उच समवाये । मगध्वति स्तने मागधः ॥ २ ॥ माहिष्यां साधुमोहिष्यः,  
 स हि- अन्तःपुराक्षिणेति स्मार्त्ताः । अयं वैश्या । क्षत्रिणे द्वैःस्थ-नात्त्वता. तृन्तृचोऽसिद्धाविष्यः  
 ( उ० ) इत्यनिद् तुब्, सदस्रवीणादिको धातुः क्षदादिपठः । सुतनि परस्त्वन् मृतः । ब्राह्मण्य  
 वैश्याउजातो [ वैदेहको ] बाणधर्मा ॥ ३ ॥ माहिष्यवैश्याश्चक्षेत्रजास्तु करण्यां शुद्धावैश्याउजातां सूतो  
 रथकारस्तस्य । चण्डमुप कर्मोतति पर्याप्तोति चण्डालः ॥ ४ ॥ करा ने कारः, कृतापाजति ( उ० )

बि(हि)ण्डीरोष्णिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् ।

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रप पिचटम् ॥ १०५ ॥

रङ्गवद् अथ पिपुस्तुलोथ कमलोत्तरम् ।

स्यान्कुसुम्भं वह्निशि ऽं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

मेघकम्बल ऊर्णायुः शशोर्ध्वं शशलोमनि ।

मधु श्लोमं माक्षिकावि मधूच्छिष्टं तु सिक्वकम् ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।

नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाकयोथ स्वर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

सौवर्चलं स्यान्नुचकं त्वक्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

विक्रयेन बहिःप्रसागदम्बिकफः सागरमलान्नः, नयादौ तूपचारात् । स्फायते फेनः । सिनोनि बध्नाति  
 वेतः स्वन्दते वा सिन्दूरम् । नागात्सीसारसंभवोऽस्य नागसंभवम् । चीनपिष्टं गान्धारपिष्टो[पङ्को]पि ।  
 धन्वन्तरिस्तु- सिन्दूरं रक्तेणुष्य रागरक्तं च नागजम् । शृङ्गारभूषणं श्रीमद्दसन्तोत्सवमण्डनम् ॥  
 हंसपादो-दिङ्गुलके- । न न गच्छति चलत्वाग्रागम् । सिनोति बध्नाति पारतं सीसं सीसपत्रं च । हेम्नो  
 वर्णोत्कर्षार्थं योगे श्लेषे- इष्टं ( योगेष्टम् ) । उप्यते वप्रे वर्णोत्कर्षे बाजत्वात् । त्रपत इवाभेराणु इवते(सि)  
 त्रपु । पिचयते कुप्यते पिचयते वा, पिचि गतः । तस्यते फलःतूलः, तूल निष्कर्षे, निर्वाजः कार्पा-  
 सोवम् । रङ्गवद् रङ्गेय पिचुल इति प्रगल्भासंज्ञादिस्मृतेः पाठः । कमलभ्य उत्तरं वर्णाधिकयाक्रमलोत्तरम् ।  
 कुप्यति कुसुम्भं, कुस श्लेषणे, को सुप्यत निःकुप्यत वा, सुभिः सौत्रः । वक्षेरिव शिलास्य वह्निश्चिह्नम् ।  
 महश्च तद्रजनं च, रज्यतेनेनेति रजनं, रजकजनरजःसुपसंख्यानात् ( वा० ) नलोपः ॥ १०९ ॥ काम्यते  
 शीतार्तः कम्बलः, कम्बलः कमनीयो भवतीति निरुक्तम् । ऊर्णास्यास्ति- ऊर्णायुः । शशोर्ध्वं  
 शशोर्ध्वं, गृहस्थपदक्षेत्रे । मन्यतेभिलष्यते मधु पुष्परसाह-म् । क्षुराभिर्मक्षिकाभिश्च कृतं ( क्लृप्तं  
 माक्षिकं च ), क्षुर भ्रमरोति ( सू० ) धम् । सारधं च । अदिशब्दात्पौतिकप्रामादि । अगभितावान्तर-  
 मेवा गजनिर्मालिकयैते, यक्षिणिः- मानिकं तेलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् । श्लेषेण भ्रामरं श्लेषं  
 श्लेषं तु कपिलं मतम् । मधुनोच्छिष्यते त्यज्यते मधूच्छिष्टम् । सिक्वति सिक्वकम् ॥ १०७ ॥ मनो-  
 वायया शिला मनःशिला । मनःशब्देन ह्ययं मनाह्रा । नागजिह्वावतिष्ठतिर्नागजिह्विका । शिला च ।  
 वपाठदेशे मवा मनःशिला नैपाली द्विष्टा, अभेदाप्रपाळी पाली वा । को नटति कुनटी । गो कति  
 गोक्ष, गुभति वा । सप्तैकार्पा इत्येके । दग्धायवाङ्मुद्राज्जन्यते यवक्षारः ॥ १०८ ॥ पचनीयः पाकवः ।  
 सार्धैश्च दग्ध्या क्षार्यते स्वर्जिकाक्षारः । कापोतः कपोतवर्णः, कपोतस्वामिति वा, ईवत्स्यते वा ।  
 ( सुखवर्चकः ) वर्च दीप्तौ । सुवर्चसाख्याकरश्चेदं सौवर्चलम् । हय्यते दीप्यते जाठराग्निरेव इवकं,  
 क्षुरप्रसक्त्यात्पुनरुक्तम् । एवं प्रन्थिकपत्ताह्णादि । त्वयो वंसाक्षीरमस्यात्सवक्षीरी, त्वक्षीरं च ।  
 वंशोत्सा रोचना वंशरोचना, आह च ( शाब्धतः )- स्वाक्षीरोचना वापी तुकाक्षीरी तुका तुका ।  
 त्वक्षीरी वंशजा तुक्षा वंशक्षीरी तु द्वैतवी ॥ १०९ ॥ सिनोति तैक्ष्याच्छिद्रुः, ( तस्माज्जातं ) शीत-



सर्वं च दीप्तं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी ।  
 शापः कापोथ्य चपलो रसः सुतय पारते ( वे ) ॥ ९९ ॥  
 नवलं माह्वं शुङ्गमध्वं गिरिजामले ।  
 सोतोन्नं तु सीपीरं कापोतान्नयामुने ॥ १०० ॥  
 तुत्थान्नं शिखिमीवं पितृचकमयूरकं ।  
 कर्परी शार्ङ्गिकाकाथोन्नं तुत्थरसान्नम् ॥ १०१ ॥  
 रसगर्भं ताक्ष्यशीलं गन्धास्मनि तु मन्धिकः ।  
 लीगन्धिकश्च बहुप्याकुलाख्यी तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥  
 रीतिपुष्पं पुष्पके तु पीष्पकं कुसुमान्नम् ।  
 पित्रं पीतनं तालमालं च हरितालकं ॥ १०३ ॥  
 शैरेयमर्थ्यं गिरिजमस्मजं च शिलाजतु ।  
 बालगन्धरसप्राणपिण्डगोपासारसाः समाः ॥ १०४ ॥

शुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कांस्यं तथा त्रयु । सीधं च बीमरं ( कलावसं ) चैव लघु लोहानि वसते ॥  
 शर्षं तु विशेषः लोहम् । कुत्सितं रंति कृती फालः, वदुःश्रुतः— कुशा दर्मः कुशी फालः, जानप-  
 दकुण्डेति ( सू० ) अयोविहारे कुशाद् ईप् । सति गलति क्षारः । कवाते ( ते ) काचः । चक्रेडस्वे-  
 योव । रस्यते रसायनार्थिमी रसः । सूते हेम युशी सूतः, शिवाध्रमुते वा । पिपाति परतः, पारं तनोति  
 वा ॥ ९९ ॥ गा अलति वारबलनेन गवलं, गवते वा । अभ्रप्रतिहृतिरभ्रकम् । गिरिजं च तदमलं च  
 गिरिजामलं, गोर्वा मलमिति धातुविश्वः । अग्यतेनेनाक्षि— अन्नं, यमुनाद्योतसो जातम् । सुपीरदेखे भवं  
 सीपीरम् । कपोतवर्णं कापोतान्नम् । धन्वन्तरिस्तु— अन्नं मेवकं कृष्णं सीपीरं स्वास्तुपीरम् । कापोतं  
 यायुर्न तच्च सोतोन्नमुदाहृतम् ॥ १०० ॥ तुदत्यक्षिरेणं तुत्थम् । शिखिमीवं मयूरमीवामम् । विदुदति  
 रोगान् विदुन्नकम् । मयूरप्रतिकृतिर्मयूरकम् । कल्पते रोगात्रेतुं कर्परी । दाहहिंश्रितापोत्वं, तुत्वं  
 च तद्रसाज्जनं च तुत्थरसाज्जनम् ॥ १०१ ॥ दाहीरसस्य गर्भो रसगर्भम् । ताक्ष्यशीले कुलतायां  
 भवं ( ताक्ष्यशीले ) । रसजातं रसाध्यं च । गन्धोस्वःस्तीति गन्धिको गन्धपावानः, रसप्रन्वे गन्धकोषम् ।  
 चतुष्वे हिता बहुप्या इवप्रसादाख्या । कुलमलति कुल ली । कुले तिष्ठति कुलत्वा, कुलचप्रतिकृतिर्वा,  
 कोलोषी ताक्ष्यशीलं काख्या, आह च— कुलली लोचनहिता दृक्प्रसादा कुलत्थिका ॥ १०२ ॥  
 रीतेर्प्रायमानस्य पुष्पमं मलं रीतिपुष्पम् । पुष्पप्रतिकृतिः पुष्पकं, पक्षे स्वायेंडम् । पित्रि हिंसादौ,  
 पित्र्यते पित्रम् । पीतते पीतनं, पीतं र्भवं नवति वा । आलति शोभःमालं, अलति भूषयति वा ।  
 हरेः पीतवर्णस्य तालः प्रतिहारिमन् हरितालं, हरितमलति भूषयति वा । तालं च भीमवद्,  
 भयान्त्वन्तरिः— हरितालं च गोदन्तं पीतकं नटमण्डनम् । आलं च तालं गौरं च पित्रं विदगन्धि-  
 कम् ॥ १०३ ॥ गिरिरेवं शैरेयम् । अर्थ्यते रसायनार्थिभिरर्थ्यम् । शिलातः सवयत्वाकृति शिलाजतु ।  
 वोत्स्यते बोलः, बल निमज्जने । गन्धप्रधानो रसोस्व गन्धरसः, [ रसगन्धोपि ] । प्राणित्वेन प्राणः ।  
 पिण्ड्यते द्रव्यान्तरेः पिण्डः, पिण्डसहस्रात् । पिष्ट इत्येके । गो पाति रसोस्व गोपरसः, गोपो रसोपि  
 भीमवद् ॥ १०४ ॥ विण्डीति शब्दमीरयति विण्डीरः, दाहिर्वा वि ( दि ) विण्डीमवत् । अन्वेः कश्च इव-



गाढत्वं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।  
 शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोय मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥  
 मुक्ताय विभुसः पुंसि प्रवालं पुनपुंसकम् ।  
 रत्नं मणिर्ह्योरस्मजाती मुक्तादिकेपि च ॥ ९३ ॥  
 स्वर्णं सुवर्णं कणकं हिरण्यं हेमं हाटकम् ।  
 तपनीयं शातकौम्भं गाङ्गेयं भर्मं कर्पूरम् ॥ ९४ ॥  
 चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।  
 रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनमष्टापदीखियाम् ॥ ९५ ॥  
 अलंकारसुवर्णं यच्छुङ्गीकनकमित्युच्यते ।  
 दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥  
 रीतिः खियामारकटो न खियामथ तावकम् ।  
 शुत्वं म्लेच्छमुखं द्रव्यवृष्टिद्वन्द्वराणि च ॥ ९७ ॥  
 लोहोष्ठी शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।  
 अस्मसारोय मण्डूरं संहानं शिषाणं अपि तन्मले ॥ ९८ ॥

हरित्रीलवणो मणिः । शोणं च तद्रत्नं च । लोहित एव लोहितकः, लोहितान्मणो ( सू० ) इति क्व ।  
 मुष्यते शुक्तिभिर्मुष्का । ( मौक्तिकं ) विनयादिवात् ( सू० ) स्वार्थे ठक् ॥ ९२ ॥ विशिष्टो दुमो विदुमः,  
 विद्वत्स्वर्णो वा । प्रबलेते प्र ( म ) भते वा- अन्धेरुर्ध्वं प्रवालम् । मूर्ध्वकान्तस्त्वमिमाणिवैह ( दू ) र्ध्वं बाल-  
 नायजम् । रमन्तेस्मिन् रत्नम् । मण्यते शक्यते मणिः पुंस्त्रीलिङ्गः । अस्मजातीयं मरकतेन्द्रनीलादि ।  
 आदिशब्दादिद्रुमादि, वज्रपद्मरागादि वा पानांयभाण्डत्वात् ॥ ९३ ॥ शोमनो वर्णोऽस्य स्वर्णं, समासे  
 रत्नस्य वा बलोपमादुः- यथा पद्मार्णो मन्त्रः । कनति कनकं, कनो दीप्तिकान्तिगतिषु । हिनोति हेम ।  
 इयति हाटकं, इट् दासौ । तपति तपनीयम् । शनकुम्भे गिरी भवं शातकौम्भं, अनुशतिकृतिवात्  
 ( सू० ) उभयपदबुद्धिः, शातकुम्भमित्येके । गङ्गाया अश्वयं गाङ्गेयम् । भ्रियते धार्यते भर्म । कर्बति  
 लोहमप्ये दृष्यति कर्पूरं, नानारूपं वा ॥ ९४ ॥ चमीकरकृतस्वरावाकरो, तत्रभवति ( सू० ) अण् ।  
 जातरूपमकृतकस्य, भोटदेशजम् । महत्त्वं तद्वज्रतं रजकं ( महारजतं ) । कश्चित् ( ते ) काचने, कश्चि  
 रीतो । रोचते रुक्मम् । जम्बूद्वीपे जम्बूफलसोत्पन्नं जातं जाम्बूनदम् । अश्वसु लोहेषु पदं प्रतिष्ठा-  
 स्थाप्यपदं, अष्टनःसंज्ञायां ( सू० ) इति दीर्घः । कल्याणमजुनं कलघौतं गैरिकं [ भूरि ] चूर्नं बहु च  
 ॥ ९५ ॥ शृङ्ग्यलंकारमकरिका, तदर्थं कनकम् । दुर्वर्णं स्वर्णापेक्षया । रज्यते हेत्रा रजतम् । रूप्यति  
 रूप्यं ( रूप्यं ), रूप लुप विमोहने । खर्जति खर्जूरं, कर्जं खर्जं व्यथने । इति शब्दात्स्वितादि । अपि-  
 च्छात्तारं कलघौतं च ॥ ९६ ॥ रीयते खर्जति रीतिः, इयति- आरस्तस्य कूटं पित्तलाह्वयम् । आरोपि,  
 कर्जति च । प्राची पिरुणा प्रपरीतिः कांस्यं घोषो द्विलोहकम् । ताप्यति तावम् । शवति इवति शु-  
 त्तम् । म्लेच्छदेवो मुक्तमुत्पत्तिरस्य । द्वे हेमरूपे अश्रुते द्वयष्टम् । अतिशयेन वरं वरिष्ठम् । कालिका-  
 न्तूते स्वर्णं हि तत्, अत एवोदुम्बरं, उद्रताम्बामिति नैरुक्ताः । औदुम्बरमित्येके । रक्तधानुकं च ।  
 सौराष्ट्रकं पयलोहे वर्तलोहे तु वर्तकम् ॥ ९७ ॥ लुनाति लोहम्, लुह कल्पनादौ वा । स्रस्यतेनेन स्रजं,  
 बहु हिंसायाम् । तेज्यते तेजयति वा तीक्ष्णं, शस्त्रान्तरच्छेदकत्वाद्वैकृतकाल्यं तत्, तिज निघ्नाने ।  
 पिण्यते पिण्डम् । कालं च तदवश्यं काल्यवसम्, अनोश्यायःसरसामिति ( सू० ) टच् । अयते मेघ-  
 वयः । अस्मनः सारोश्मसारः, यत्स्वातिः- अस्मभ्यो लोहमुत्पत्तिम् । पारशवं घनं च । मण्यते मण्ड-  
 यम् ! हिनस्ति विह्वलं ध्यावमानस्यायसो मलः ॥ ९८ ॥ तेजसो विकारस्त्वैजसं हेममपि लोहं, यदुक्तः-

ते बोधशास्त्रः कर्षोष्ठी पलं कर्षवतुष्टयम् ।  
 सुवर्षविस्ती हेराक्षे कुवविस्तस्तु तत्पळे ॥ ८६ ॥  
 वृषा धियां पञ्चशतं भारः स्याद्विज्ञातिस्तुलाः ।  
 आचितो वश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥  
 कार्वापणः कार्षिकः स्यात्कार्षिके तान्निके पणः ।  
 अश्वियामाढकद्रोणी सारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥  
 कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।  
 अंशस्तुरीयः पादः स्यादंशभागौ च घण्टकः ॥ ८९ ॥  
 द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।  
 हिरण्यं द्रविणं शुभ्रमर्थैर्विमवा अपि ॥ ९० ॥  
 स्यात्कोशः च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।  
 ताम्र्यां यद्व्यस्तत्कूप्यं रूप्यं तद् द्रव्यमाहतम् ॥ ९१ ॥

इत् (सू०) । विस्त्यते विस्तः, विस् उत्सर्गः । अले बोधशास्त्रे माने द्वौ वर्तते: यत्स्मृतिः— पञ्च-  
 कुण्डलको माषस्ते सुवर्णस्तु बोधः । कुवदेष्टे प्रसिद्धो विस्तो हेमपलम्, वन्माहा— पलेन हि सुवर्णस्य  
 कुवविस्तः ॥ ८६ ॥ तोल्यते तुल्यं, विन्तिपूजति (सू०) चकाराद्ङ्, हिरण्यसामर्थ्याद् गुणमावः ।  
 ध्रियते भारः, पुषा हि द्वे पञ्चहस्ते बौदुं शक्यते । आचीयत आचितः स च शकटेन बोधुं शक्यः ।  
 अन्ये तु विद्वन्तिः पलसहस्राभ्यापितमाहुः । शाकटभारस्तुनोतिरिक्तो वाप्याचित एव । अत एव शाक-  
 टाहमोप्याचित इति पुनराचितशब्देन पोष्यते ॥ ८७ ॥ कर्षसंबन्धिना पण्यते व्यवहितेनेन रूप्यरूप-  
 केन कार्वापणः । कर्षः प्रमाणमस्य कार्षिकः । तान्नमयं कर्षप्रमाणं तु रूप्यं पणः । तन्मूल्यं चोपचाराद-  
 स्तीति श्वेतकाः । पृथगित्येवामपर्यायत्वम् । परिमाणविधेया एते, यदाहुः— पलं प्रकुञ्चकं मुष्टिः कुडव-  
 स्तत्पञ्चतुष्टयम् । क्ववारः कुडवाः प्रस्थस्तुः प्रस्थमथाढकम् ॥ अष्टाढको भवेद् शोणो द्विशोणः शूर्यं उच्यते ।  
 सार्धपञ्चो भवेत्सारी द्विपूर्णा गोष्पुदाहता ॥ तामेव भारं जानीयाद्वाहो भारचतुष्टयम् । शुष्कमेवे त्विदं  
 मानं द्विगुणं तद् द्वयेषु तु ॥ तत्र देशभेदात्संख्यानव्याप्तं, तथा कश्चिच्चतुराढको भवेद् शोणः, बोधश-  
 शोणो सारी, विद्वन्तिशोणः कुम्भः, दशकुम्भो वाहः ॥ ८८ ॥ रूपकारेणतुषोषः पादः, पदरुजति  
 (सू०) कर्तैरि षम् । अंशयतेषः । भज्यते भागः । वण्यते विभज्यते वण्टः ॥ ८९ ॥ (द्रव्यं)  
 द्रव्यवमम् इति (सू०) छाधुः । विन्द(प)ते तद्वित्तं, वित्तोभोगप्रत्यययोरिति (सू०) छाधुः । स्वपत्नी  
 छाधु स्वापतेयं, पथ्यतिपिबसतिस्वपतेरङ्गम् (सू०) । ऋध्यते स्तूयते ऋक्ष्यम् । रिच वियोजनेस्माहा-  
 (६), रिच्यते विभज्यते रिच्यम् । दधन्ति धनम् । दस्ते छादयति वसु, वसतीश्वरगृहे वा वसु ।  
 ह्रियते हिरण्यम् । दवति द्रविणम् । शुषते शुष्कं, शु अभिगमने । अम्यतेतयः । राह्येन राः, श्रौत्येन ।  
 विमवति विमवः ॥ ९० ॥ कृवते संध्यते केशः, कृष्यत आकृष्यत आगच्छानिभ्यः कौष इत्येके ।  
 हेम कृताकृतं षट्ठापाटितं, रूप्यं वैवम् । हेमरूप्याभ्यामन्वतैज्रं कूप्यं, राजसूयसूयंशुषोयइत्यङ्कुनेति  
 (सू०) छाधुः । आह्नयत कृतम् । रूप्यं, स्यादाहनप्रसंगस्यैवम् (सू०) । तद् द्रव्यं कृत्यकूप्यम्  
 ॥ ९१ ॥ तस्मत् इदं आर्तं विव हन्तुं गच्छतम् । मरुं तरन्यमेन मरकतम् । अन्त्यमर्गोऽन्योनः ।

पुमानुपनिधिर्न्यासः प्रतिदानं तद्वर्षम् ।

कथं प्रसारितं कथं केयं केतव्यमाश्रये ॥ ८१ ॥

विद्येयं पमितव्यं च पण्यं कथ्यादयमिषु ।

हृषि सत्यापनं सत्यकारः सत्याकृतिः क्षियाम् ॥ ८२ ॥

विषयो विषयः संख्याः संख्येये साक्ष्यमिषु ।

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥

संख्यार्ये द्विषत्तुल्ये स्तस्तासु चानवतेः क्षिपः ।

पक्ष्तेः शतसहस्राणि क्रमादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

पौ (पौ) त्वं वृष्यं पाप्यमिति मानार्थं त्रयम् ।

मानं तुष्टादशुक्तिमस्थैर्युग्माः पञ्चाष्टमाश्रयः ॥ ८५ ॥

समीपे निषेधाः । न्यस्तते निक्षिप्यते न्यासः । निक्षेपोपि । स्मार्ते ( याज्ञवल्क्ये ) श्रेया भेदोस्ति- वासनस्व-  
कनाद्याय हस्तेन्यस्य बद्वितम् । इत्यमुपनिधिर्न्यासः प्रकाश्य स्थापितं तु यत् ॥ निक्षेपः क्षिप्यहस्ते  
तु माणः संकर्तुमर्पितम् ॥ तस्य न्यासस्य निक्षेपे प्रतीपं दानं प्रतिदानं, परिदानमित्येके । प्रत्यक्षादानं  
स्वीकारोपक्रमः [ वक्तव्यः ] कृतं च तत् । कथनिमित्तमापने न्यस्ते ( कथ्यं ), कथ्यस्तदर्थं इति ( सू० )  
साधुः । ( केयं ) कथा केयो गौरीर्नते न च कथ्योस्ति ॥ ८१ ॥ ( पण्यं ) अवयवपण्यवर्धेति ( सू० )  
साधुः । ( मिषु ) काण्ड्यः दुग्धा इत्यर्थः । अवश्यं म्येतद्विक्रयमिति सत्यस्य करणं सत्यापनं, सत्यापना-  
दपेति ( सू० ) निष् । अर्धवेदसत्यानामापुह ( वक्तव्यः ) ( वा० ) । ( सत्यकारः ) कारेकत्वागद-  
स्येति ( सू० ) सुम् । ( सत्याकृतिः ) सत्यादवपच इति ( सू० ) वाच ॥ ८२ ॥ विपन्नं विपन्नः,  
पुण्यवन्तादश्च ( नन्दप्रदीपित ), अन्वतो विराणः स्यात् । एकाद्या दशान्ताः संख्याः संख्येयेषु वर्तमानांकादि-  
ह्याः, एका सात्री, एकः पटः, एकं कुण्डं, दश क्षिपः, दश पटाः, दश कुण्डानि । आदशोत्पद्यदशान्ताः ।  
विंशत्याद्याः सर्वा एव संख्याः संख्येये संख्यायां च नित्यमेकवचनान्ता एव वर्तन्ते, यद् आद्यस्य-  
मादशम्भः संख्या संख्येये वर्तते, ऊर्ध्वं संख्याने संख्येये च, विंशतिः पटाः, विंशतिः पटानां, ऊर्ध्वं माषः,  
ऊर्ध्वं मवायम् । [ अत्र विंशतिसंख्येयैकमविंशतिसंख्येयैः ] ॥ ८३ ॥ संख्यामात्रार्थं वर्तमानाया विंश-  
त्यादेः संख्याया द्विवचनपदुवचने अपि स्तः [ मयतः ] एकसोषात्, द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः, गवां  
विंशती, गवां विंशतयः । विंशत्याद्या नवत्यन्ताः क्षौद्रिह्याः । द्वे ( द्वे ) पक्ष्ते पक्ष्दिर्दशाद्या, पक्ष्दि-  
र्दिशति, विंशतिः ( सू० ) साधुः । दश पक्ष्दयः सतम् । दश पक्ष्ते सदसम् । दश सदसम्पुतम् ।  
एवं परार्थान्ताभ्याश्च गणितस्थानानि, यदाहुः- एकदशशतसहस्राण्ययुतं प्रयुताभ्यामष्टमय निपुतम् ।  
यद्देवोष्टिन्वर्गुपचं खरं निखर्दमिति दशभिः ॥ गुणनान्महाकर्मसहस्रं समुद्रमभ्यान्तमय परार्थं च ।  
सर्वत परार्थमयितं तत्सर्वत पर्यंते संख्येति । प्रयुतसंख्यं स्यामपुर्दशं कोटिरित्यर्थः ॥ ८४ ॥ पुनाति  
पेदा- मानमाश्रयेः पौतवाप्यक्षः, तस्येदं पौतवम् । द्वेविंशतो वृष्यं, शेष ( सू० ), मानेवका  
( सू० ) । माति पाप्यं, पाप्यवाच्येति ( सू० ) साधुः । मीयतेनेनेति मानम् । पौतवं तुल्यमि-  
ह्यं प्रत्यादि, पाप्यं हस्त्रादीति गौडो प्रत्यतः । नितिर्यने मीयतेनेन च । तत्र तुल्यपुमानं, अष्टु-  
स्यादि प्रमाणं, प्रत्यादि परिमाणं, यदाहुः- ऊर्ध्वं मानं किञ्चोमानं परिमाणं तु सर्वतः । अक्षयस्य  
अक्षयं स्वास्तव्यमिमा तु सर्वतः ॥ गुणा रक्षिणः । आयो मुद्यः । धाम्यकथा दश माषकाः । तत्र  
द्वे ह्यन्ते कथ्यमाष इत्यपि दर्शनात् । अक्षिण्येने- अय- ह्येके, यदाहुः- माषकं सत कुण्डलाः  
॥ ८५ ॥ अक्ष्येत्पदाः । ऊर्ध्वं कर्षः । ( पक्ष् ) पत रक्षायाम् । वृष्यमस्तस्य वृष्यः, अर्धमादित्यः

उभे कमेकमपमहाह्माः करमः शिशुः ।

करमाः स्युः शुद्धसलका वार्यः पादपन्थनैः ॥ ७५ ॥

अजा छागी शुभः स्तम्भः छागवस्तच्छगलका अजे ।

मेहोरघोरणोर्जायुमेपवृष्णय एवके ॥ ७६ ॥

उद्गोरघ्राजपुन्ने स्यादीदृशोरघ्रकाजकम् ।

चक्रीवन्तस्तु बाछेया रासमा गर्भमाः सराः ॥ ७७ ॥

वैदेहकः सार्धवाहो भैगमो वाणिजो वणिक् ।

पण्याजीवो ह्यापणिकः कयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रायकः कथिकः समी ।

वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्तोप्यवकयः ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं लाभोधिकं फलम् ।

परिवानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥

स्मस्यबन्धनंकरभरति ( मू० ) कन् । विकारे नियवृद्धादिभ्यः ( मू० ) इति मभटा वारमभेति  
भवितुं युक्तम् ॥ ७५ ॥ अत्रति गच्छति व्ययमर्शलत्वदजा, अजायाद्यप् ( मू० ) । छपति रोषं  
छागी, जातेरक्षीविषयादयोपघात् ( मू० ) इति ङीष् । स्त्रीविषयप्रत्ययार्थं पृथक्पाठः । शोभते शुभः,  
शु ( तु ) भो निषण्णु । वस्ते वन्तः । छयति रोगांछागः, छालश्च । छ-गोपि । मेह इति मेहः । उर  
भाम्यति- उरग्नः, उभे रभते वा, उः स्वरप्रतिरूपको निपातः । एवमुभे रणोऽस्येत्यु-णः, उरप्यति देवताः  
प्रीणातीति श्रीभोजः कण्डवादिपाठत् । ऊर्णस्यस्योर्णयुः, ऊर्णाय युष् ( मू० ) । मेवति वाद्यते मेवः,  
पचायच् ( नन्दिप्रदीति ) । वर्षति वृष्णः । आ-ईष्यन्ते देवा अनेन एवकः । हुडुध । भविनां नार्थे  
॥ ७६ ॥ ( औष्ट्रक, इ० ) गोतोक्षेष्टेरभेतिवुत् ( मू० ) । चकमस्यस्य तैलिकादिचक्रमणाय,  
आसन्दीवदृष्टीवक्ष्योवदिति ( मू० ) सधुः । चकवालस्तु बालेय इति माला । बालेभ्यो हितो  
बालेयः, बाले वा च ] क्ने भवो वा । रासते रासभः, रास शब्दे । गर्दति गर्दभः, गर्द शब्दे । खं शब्दं  
राति खरः, खमस्यस्य वा, ( रप्रकरणे ) समुखकुञ्जभ्योरः ( वा० ) । क्रूरोपि, शार्ङ्गकूर्णोपि । बह-  
द्विरवयोः पशुभ्यः बहुवचमय गोयुगं च परं, यथा मेवषद्वगवं गोगोयु म्, पशुनामभ्योद्विस्वगोयुगम्  
( वा० ) । बहुवचद्वगवच् ( वा० ) । अविशोढमविमरीसं तथाविदुसं पयो मेघ्याः, अवेदुग्मे-  
सोढदुसमरीसचोवकव्याः ( वा० ) ॥ ७७ ॥ विदेहे- उपचये भवो वैदेहकः । साधोन्धनान्तरतो वा  
गन्धान्वदति सार्धवाहः । निगमे- आपणे भवो नेगमः । पणते वणिक् । वणिगेव वाणिजः, प्रवृत्ति-  
स्त्वार्येऽण् ( मू० ) । आपणः प्रबोजनमस्तस्यापणिकः । कयविक्रमाभ्यां जीवति कयविक्रयिकः, वस्तक-  
यविकयाद्रन् ( मू० ) इति संघातविग्रहीताद्रन् ॥ ७८ ॥ विक्रीणीते भ-ग्वेन मूल्यं गृह्णाति विक्रेता ।  
क्षीणाति मूल्येन भाषं कावकः । कयेण जीवति कथिकः । वणिजो भावो वाणिज्यं, ब्राह्मणादिस्वात्म्यम्  
( गुणवचनं ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणिच् ) । ( वणिज्या ) दूतवणिज्याच्चेतिवकम्याश्च ( वा० ) । मूले-  
नानार्थं मूल्यं, नीवयोधमैति ( मू० ) यत् । वस्त्यास्मिन्पणं वस्तनः । अवक्रीयतेनेनावकयः ॥ ७९ ॥  
नीवीव परहस्तेर्यमाणत्वात् । परिपण्यते वृद्धयं ऽयुज्यते परिपणः । मूलं लाभकारणम् । मूलधनादधिकं  
निष्पन्नं स लाभः फलं च । कृणान्तरादि । परिवर्तानं परिवानम् । निमेये परिवर्तनीये भवो नैमेयः ।  
निमानं निमयः, मेह प्रणिदाने ॥ ८० ॥ उपसृत्य समीप मिथीवते गुप्तं स्थाप्यते- उपनिधिः, उप



वशा बन्धावतोका नु सवप्रभाय सन्धिनी ।  
 आकांता वृषमेजाय वेदप्रज्ञोपपातिनी ॥ ६९ ॥  
 कात्स्योपचर्या प्रजने प्रज्ञोही बालगर्भिणी ।  
 स्यावचण्णी तु सुकरा बहुसूतिः परेदुका ॥ ७० ॥  
 चिरसुता बष्कविणी धेनुः स्यावचसूतिका ।  
 सुप्रता सुससंघोता पीनोष्णी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥  
 श्रौणक्षीरा श्रौणक्षुषा धेनुष्या बन्धके स्थिता ।  
 समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥  
 ऊधस्तु ह्रीयमापीनं समी शिवककीलकी ।  
 न पुंसि वाम संघानं पशुरज्जुस्तु वामनी ॥ ७३ ॥  
 वैशाः समन्यमन्यानमन्यान्तो मन्यदण्डके ।  
 कुट ( ठ ) रो दण्डविष्कम्भो मन्यनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

प्रसूति बन्धा बन्धनीया वा । अवसुनं तोद्धमपत्यमस्या अवतोका, अय(व)सवन्ती च, मृतवत्सा सवद्वर्मेति  
 माहा । संघानं संघा गर्भप्रहणमस्त्यस्याः संधिनी, अदुग्धा दोहकाले तु संधिनीति कात्स्यः, संधिन्-  
 कालदुग्धा गोईवाकांता च संधिर्निति शाश्वतः । विद्वन्ति गर्भं वेदत, वेद प्रवत्नेस्व ह्या, वेदद्वयोपप-  
 तेति मागुरिः ॥ ६९ ॥ प्रजने गर्भप्रहणे ( कात्स्या ) प्राप्तकाला, वृषेणोपसरणीयोपचर्या, उपसर्गोकात्सा-  
 यजने ( सू० ) इति साधुः । प्रष्ठं वदति प्रष्टोही, वद्व ( सू० ) इति शिवः, बाह्विति ( सू० ) कीन्,  
 बाह्वर्ज ( सू० ), एत्येधत्यूठसु ( सू० ) इति वृद्धः । प्रज्ञोही गर्भिणीति सर्वे, असिक्नी बालगर्भिणीति  
 मागुरिः, पलिकनी बालगर्भिर्निति माहा । अचण्डा- अकंपनेः ययः, बाह्वादिवात् ( सू० ) वा  
 जीव । सुतेन क्रियते सुकरा, सुकराकीत्यागमः । परमिच्छति हरेष्टुका । सद्धप्रसूता गृष्टिः ॥ ७० ॥  
 बष्कतेति क्रमति बष्कयधिरकालः, ओणादकृत्वात् ( अयन् ), सोस्त्यस्याः ( बष्कविणी ), बष्कयणीति  
 चाम्याः । धयत्येनं धेनुः । ( सुप्रता ) सुशीलेत्यर्थः । पीनमूषेयाः पीनोष्णी, ऊधसोन ( सू० ),  
 बहुमीदृक्पसोद्विष ( सू० ) । पीवरस्तनी, स्वाङ्गापोपसर्जनादिति ( सू० ) ईष ॥ ७१ ॥ श्रौणं शोधि  
 श्रौणक्षुषा, दुग्धकन्ध ( सू० ) । धेनुष्या ) संज्ञायामधेनुष्येति ( सू० ) साधुः, आ ऋणश्रुदेवो बन्धके  
 स्थापिता पीतदुग्धाद्या । ( समांसमीना ) समांसमोविजायते ( सू० ) इति खः ॥ ७२ ॥ उत्तमूषः ।  
 आप्यायत आपीनं, प्यायःपी ( सू० ), संपसर्गान्न ( वा० ), आह्वय ( आह्वयत्स्या ) ऋषसोईकम्भात्  
 ( वा० ), ओदित्वात् ( ओदितवन्ति ) निष्ठानत्वम् । इम्भा ( म्भा ) रावो गवां भ्वनिः । शिवककृन्,  
 ऋनोति वा शिवकः । कीत्यते बन्धतेस्मिन्कालः । शीयते रक्षतेनेनेति संघानं बन्धनरज्जुः । ( वामनी )  
 नित्यसंज्ञाछन्दसोः ( सू० ) इति ईष ॥ ७३ ॥ विशाखासु जातो वैशाखः, विशाखाबाह्विष्यन्वदण्डयोः  
 ( सू० ), विशासस्यायं वा । मन्धतेनेन मन्यः, पुंसिसंज्ञायां धः प्रायेण ( सू० ) । मन्धाति मन्यानः,  
 मानव । ( मन्याः ) मयिन्- शब्दस्य- इतोऽसर्वनामस्थाने ( सू० ), योन्यः ( सू० ) । मन्धानापी  
 दण्डो मन्धनदण्डः । अजकः धुत्तोप । कुटति कुटः, कुटको वा दण्डकटके वर्तते । दण्डं विष्ट-  
 म्नाति दण्डविष्कम्भः, यस्मिन्बद्धा दण्ड आह्वयते । मञ्जीरोपि, दण्डकटोदकमित्येके । गन्ध-  
 त्तेस्यां मन्यनी । गिरिति दाधिगर्गरी । कल, घञ ॥ ७४ ॥ उष्यते दण्डते मरी- उष्टः ।  
 कमानेनयति क्मेलकः । मन्तव्येऽन्यः, मयते गच्छते वा, मर्यत इत्येके । दशेरको दीर्-  
 जह्यो प्रीवी रयधूमको । कं शिरो रभत उत्तमभयति कर्मो बालोष्टः । ( धृस्वलः ) धृस्व-



शास्त्रपरितु वत्तः स्यादभ्यवस्ततरी सती ।  
 आर्षेयाः वण्णतापोम्यः वण्णो गोपतिरिदधरा ॥ ६२ ॥  
 स्कन्धमदेकस्तु वरा सास्ना तु गलकम्बलः ।  
 स्वाधस्तितस्तु नस्तीतः पं. प्र. ठपाद् युगपार्थमः ॥ ६३ ॥  
 युगादीनां तु वीरानो गुरदमासङ्गवशाकटाः ।  
 सनन्ति तेन सद्वापान्त्रेव हाडिकसीरिकी ॥ ६४ ॥  
 धूर्वह धूर्वकीरेवपुटीयाः सपुंषराः ।  
 उपाधिकपुटीमिकपुराधिकपुगवदे ॥ ६५ ॥  
 स तु सार्धपुटीयो यो मयेत्सर्धपुराबहः ।  
 माहेयी सीरयेयी गीरेया माता च मृद्गिणी ॥ ६६ ॥  
 अर्जुन्यन्त्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोपु मैत्रिकी ।  
 वर्णादिमेवास्त्राः स्युः शपलीधवडावयः ॥ ६७ ॥  
 द्विहायनी द्विर्वा गीरिकाया त्वेकहायनी ।  
 चतुरया चतुर्हावण्येव इयया द्विहायनी ॥ ६८ ॥

होम्यः ( सू० ) । सन्यत उत्सृज्यते वणः । एषमिदं, इवा चरति-इत्थरः स्वेच्छवारी, इत्थर  
 स्वेच्छपेडः ॥ ६२ ॥ वदस्तेनेति वदः, गोचरसंवेति ( सू० ) साधुः । स स्त स्वपिनीव व्याभिवमा-  
 न्त्वात् क्षीयते वा सास्ना, वस हस्ते, वेस्तकर्मणि । नामाया नस्तः, नस्तसिद्धायावतः सुन्दर्यति  
 ( वा० ) नम् । नस्तः क्रियते स्म नस्तितः, प्रातिपदिकान्तर्य इति ( ग० ) मिज्जन्.मिष्टा, नामायां  
 कृतपिष्टो गौरिस्वर्थः । नासिद्धायां मने नस्ते नासःकुरे रन्ध्रे रज्ज्मादिना-उत उत्तम्भनो नस्तेतः ।  
 वन्धनं वधं वा वर्षं वहति पठशाद् युवा गौः, वदय ( सू० ) इति त्विः । युगम्ब स्कन्धकाष्ठरव पार्थ-  
 मण्डति युगपार्थगो हस्तशेदस्यः । दमनाव शोत्रित इत्येवं कर्तुमविषयत्वेनापि प्रत्यङ्गता बर्द्धलिहाया  
 नोष्ठाः ॥ ६३ ॥ ( युग्य इ० ) युगं प्रासङ्ग्यं सकटं च वहति, तद्गहनिरययुगप्रासङ्ग्यं- ( सू० ) इति  
 बद्, शकटाद् ( सू० ) । ( हासिक इ० ) हस्तेन खनति, तेनर्द्धयति खनतीति ( सू० ) ठक् । हलं व-  
 हति हस्तयेर्द वेति, हस्तोःशब्दः ( सू० ) ॥ ६४ ॥ ( धूर्व इ० ) धुरं गति, धुरोगश्चकौ ( सू० ), खःसर्वधुरा-  
 दिति ( सू० ) योगविम.माःखः । धुरं धारयति धुरंधरः, कयविः वंशारारखत्र ( संज्ञाशंभुनृणीति ), धूर्वरोम्ब-  
 वा स्यात् । ( एकपुटीय इ० ) एकपुटीकृत्व ( सू० ) इति लो लुक्, लुक्लो, ऋतृत्पूरिति ( सू० )  
 वाः समासान्तः ॥ ६५ ॥ ( सर्वपुटीयः ) खःसर्वधुरात् ( सू० ) । मद्यने पूज्यते महा, तस्मा अपत्यं  
 माहेयी । वदति क्षीरमस्वामुष्ठा । मृद्गिण्यादयः सामान्यान्यपि विशेषे वर्तन्ते ॥ ६६ ॥ अर्जुनीति  
 ह्युक्तमी । न हन्यन्त्या, अन्त्यादयश्च ( उ० ) इति साधुः । रोहिनी शबला । अनडवाही गौरनडही,  
 वरास्ता गोमतादिभिः । सुभिर्नानाभिः । न चैवराति मैत्रिकी, ठक्, अम्बवानांममात्रेष्टिषोपेवकम्बः ( वा० ) ।  
 इतो गवाधिकारः प्रागुद् । शबलीनि, अन्यत्रेष्टी ( सू० ) । चरल, अन्नोदात्तहस्यनुदात्तत्वाभावाद्  
 क्षीव नास्ति । आयादिशब्दांश्चकणामुदायाः, द्वितीयाःकृपाकृतिशब्दाः ॥ ६७ ॥ द्वौ हायनी वयः-  
 प्रमाणमस्तं इयांहीयस्य ठक्- अयत्रेष्टीयादिना ( सू० ) लुक्, दामहयनन्त्यास्व ( सू० ) इत्यत्र  
 हाननाद् वयमिष्यमे ( सू० ) इति क्त् । द्वे वर्गे प्रमणाःश द्विर्वा ( गोः ), वर्षापुद्गल ( सू० ),  
 विमर्शनिमित्तम् ( सू० ), च गीरिकायाश्चकित्ति ( सू० ) ईत्- नस्ति, कालसंहया च न परिमाण-  
 मिति । त्रिचतुर्थाहायन्ययःशब्दः ( वा० ) वयने ॥ ६८ ॥ वृत्ते क मयते परं वया । वयनति

सपीतिः स्त्री तुल्यपामं सन्धिः स्त्री सहभोजनम् ।

उपन्या तु पिपासा युद्धं तर्पणं अग्निस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥

भोजनं छेद आहारो निषत्तो न्याय इत्यपि ।

स्त्रीदित्यं तर्पणं तृप्तिः केला मुक्तसमुत्थितम् ॥ ५६ ॥

कामं प्रकामं पयसां मिश्रामेहं वयेषितम् ।

गोपे गोपाळ गोसंख्यगोपुनामीरवत्तवाः ॥ ५७ ॥

गोमहिष्यादिकं पादपन्थवं द्वौ गवीन्धरौ ।

मोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्यान्नृपां व्रजे ॥ ५८ ॥

त्रिष्याशितगवीनं तद् गावो यत्राशिताः पुरा ।

उक्षा भद्रो वलीवर्षं वृषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥

अनृष्यान्तौरभयो गौरुक्ष्मां संहतिरीक्षकम् ।

गव्या गोत्रा गवां वत्सधेनोर्वात्सकधेनुके ॥ ६० ॥

वृषो( उक्षा )मदान्महोक्षः स्याद् वृक्षोक्षस्तु जरङ्गवः ।

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सघोजातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥

गिन्धत्तिः किति ( सू० ) ॥ ५५ ॥ जमेर्जमनाहुः, जमनं जवनं वा, यद् दुर्गः- जवनं भोजनं  
किति । न्यदनं निषत्तः, नौणच ( सू० ) इत्यप्, घमगोच ( सू० ) इति वत्तः देशः । मे ( नौणच )  
न्यादः । प्रत्यक्षानर्भयवहारश्च । सुहितम् भावः संहितम् । कलति विशीर्यते केन, कल्य बलने-  
मिहा ॥ ५६ ॥ काम्यते कामम् । पर्याप्तिः पर्याप्तम् । इष्यत इष्टम् । ईषितमनातिक्रम्य वयेषितम् । प्रावः  
धियादिष्वपान्तेतानि अत एवाव्ययः- एतेषां धीमोऽजो भ्रान्तः, यच्छ्रान्तः- कामे निक्षमे कामा-  
ह्या । गाः पाति गोपः । गाः संख्याति गोसंख्यः । गा दोगिष गोपुक् । आ-अभित ईरयति-आमीरः ।  
ईरयति गा बहवः, बलिः सौतो वा ॥ ५७ ॥ पादे बन्धनमस्य पादबन्धनम् । आदिशब्दास्त्रादि ।  
वदवं धनमित्येके पेदुः । गावः सन्त्यस्य गोमी, उभेत्तनातमिषेति ( सू० ) साधुः । वज्रन्यासिमन्त्रजः-  
गोसंघन्धी समूहः, गोचरसंचरेति ( सू० ) साधुः । धनं च ॥ ५८ ॥ अ-अधिता भोजिता गावो यत्राशित-  
गवीनं, अषट्पाशितग्विति ( सू० ) स्वार्थे खः । आशितगवीनमिति प्राचयानां भ्रमः यथाह्वन्-  
गावो यत्रोविताः पुगेति । उक्षाति-उक्षा । मन्दते भद्रः । वलीन्द्रते वलीवर्षः । वृषति गच्छति  
वृषभः ॥ ५९ ॥ अनेवावहत्वनङ्वान्, अनसिबहेः किबनसोक्ष्य ( उ० ) । सुरभेरपरं सौरभेयः ।  
गच्छति गोः । भवान्तरभेयोस्य नविबक्षितः । शङ्करादौ वाऽवेयः शाङ्करश्च । ( औक्षकं ) गोत्रेच्छेते  
( सू० ) युक् । संहतिरित्येव । ( गव्या, गोत्रा ) खलगेऽप्यशिति ( सू० ) यः, इति कञ्च वयेति ( सू० ) त्रः-  
वत्सनां समूहो वारसकं, गोत्रोच्छेदेति ( सू० ) युक् । धेनूनां सेतुशे धेनुम्, अशितवृत्तिधेनोर्ह  
( सू० ) ॥ ६० ॥ मदांवाद्याधुना च नशेयः, अबतुरविततुरेति ( सू० ) साधुः । एवं वृक्षोक्षजातोक्षी । माक्षा  
च- महोक्षः स्यादुक्षतरे रक्षाभिषः स्वन्धवाहकः । वांछन् वृद्धदधानो वत्सः कृत्वा भग्नविषाणकः ॥ जरांवासी  
गोव जरङ्गवः, गोरतद्विरहक ( सू० ) इति टच् । तृभोत्यासि केवर्तं तर्णकः ॥ ६१ ॥ शङ्करतोषि  
कृष्टनरिः, स्तम्भकृतोरेन ( सू० ), श्रीदिवत्सयोऽपसंख्यानात् ( वा० ) । वसति वत्सः । दमाहो  
वत्सः । वत्सत्वं तनुवत्सवत्सतरः, वत्सोऽर्धभेदवत्स ( सू० ) इति टच्, तनुत्वं द्वितीयवत्स-  
प्राप्तिः । ( आर्धवत्सः ) अर्धवत्सोऽर्धवत्सः, वत्सतेत्येके, अत एव वृषभस्य प्रतिवृत्तिर्वात्सवः, वृषभोऽप्य-

भिस्त्वदा इण्डिका सर्वरसाद्ये मण्डमस्त्रियाम् ।  
 मासराचामेनिसावा मण्डे भक्तसमुद्रमे ॥ ४९ ॥  
 यवागुरुष्णिका घ्राणा विलेपी तरला च सा ।  
 मय्यं धिपु गवां सर्वं गोविद् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥  
 तनु शुष्कं करीषोटी दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।  
 पयस्यमाज्यवध्यावि द्रुप्तं वधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥  
 घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्भूतम् ।  
 तनु द्वियं गवीनं यद् द्योगोवोद्भूतं घृतम् ॥ ५२ ॥  
 वण्डाहतं कालशेयमस्त्रियामपि गौरसः ।  
 तर्कं सुवन्धिनमथितं पादाम्बुधर्मास्तु निर्जलम् ॥ ५३ ॥  
 मण्डं वधिभवं मस्तु पीयूषोभिवनं पयः ।  
 अशनाया बुभुक्षा क्षुद् भासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥

निःसावः ॥ ४९ ॥ यूयते पिष्टादिना यवागुः, सुयुक्ताभ्यस्त्यागुः ( उ० ) । संज्ञितोष्ण - उष्णिका,  
 ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् ( सू० ) । प्रायने प्राणा, आ पके । विस्त्रियति विलेपी । तरला लेखत्वा-  
 पला । मण्डक्षणाभ्यजने तलं कृत्वा [ स ] स्तु निलोदनः । गोरिदं गवे भवमित्यादिष्वर्थेषु गम्यं क्षीरादि,  
 सर्वत्रगोरजादिप्रसंगेयत् ( वा० ) । गोविष्टः गोविद् गोमयं च, गोक्षपुरीषे ( सू० ) मयद् ॥ ५० ॥  
 करोत्यामि करीषं शुष्कगोमयम् । दुग्धेन दुग्धम् । पयस्यते ( अयते ) क्षीरम्, पयःकिञ्च ( उ० ) इतीरन्,  
 गमहनजनेति ( सू० ) उपाधालोपः, स्त्रीरत्न ( सू० ) इति चत्वंम्, शासितसिपसानां च ( सू० ) पत्नम् ।  
 पीयते प्रयते वा रसत्वारयः, अयुन् । सममिति पयसो नपुंसकत्वात् । पयसो विकारः पयस्यं, गोपय-  
 संयत् ( सू० ) । आदिशब्दाश्रयनीताद । दृष्ट्यादि ( अनेन ) द्रव्यम् । घनादन्यदघनमित्यर्थः, यन्माला  
 द्रव्यं दध्यधनं तथा । एतच्च द्रव्यं शरामात भागुरिमांस सरमिति बुद्ध्या मालाकारो भ्रान्तः ।  
 केचिन्मृष्टेस्तु नाशिता इत्ययमपि मालाशब्देन विप्रलब्धः, यदाह दुर्गः - बाणद्रव्यो शराविति । इत्थं तु  
 समर्थं, तरत् - उपरि प्रवमानं घनं दधि द्रव्यम् ॥ ५१ ॥ जिवर्ति घृतम् । आ - अञ्जनीयमाज्यं, आह-  
 पूर्वांशः संज्ञायाम् ( वा० ) । हृयते हविः, हविष्यं च । सर्पिर्नवनीतः, इत्यन्ती । दध्नो मथिताश्रवं  
 तत्कालं नीतमुद्धृतं नवनीतं घृतवानेन । द्योगोवोद्भूतं द्विगोवोद्भूतं, द्वियुग्मवीनं संज्ञायाम् ( सू० )  
 इति साधुः । कात्यायनो नवनीतमित्याह ॥ ५२ ॥ मन्वश्यन्तेनाहनं दण्डाहतम् । कलशशो गर्गयो भवं  
 कालशेयम् । न रिध्यति हिनास्त्र - अस्त्रं, गर्वरोगजित्वात् । तद्विनेषनाह । तस्मान्नि द्रुतं गच्छति तर्कं  
 चतुर्भागांस्तु । उदकेन श्रवणं - उदग्निदधानं । दध्नो मथनमात्रमात्रं मथितं निर्जलम् । द्विगुणाम्बु  
 श्वेतरसमधोदकमुदधितम् । तर्कं त्रिभागमित्यम्बु केवलं मथितं स्तुतमिति धन्वन्तरिः ॥ ५३ ॥ दध्नो  
 मांसं दध्नो भागः, मस्यति परिणमते मस्तु । पीयते पीयूषः, नवयमूनगवांक्षीरं कथितं सत् । अशनेच्छा -  
 अशनाया, अशनायोदयेति ( सू० ) साधुः । भोक्तुमिच्छा बुभुक्षा । धुन्, क्षुध बुभुक्षायाम् । रोचकोक्षी  
 रुचिश्च । प्रस्यते प्रासः । के ताडुनि वलते कवलः ॥ ५४ ॥ सहपानं सर्पातिः । सहादनं सग्धिः, फिन्,  
 बहुलच्छन्दसि ( सू० ) इति द्रष्टु, घसिमसाहलिच ( सू० ) इत्युपधालोपः, सलोसालि ( सू० ) इति  
 सलोपः, सपस्त्वधोऽन्धः ( सू० ), सलोत्रश्रुति ( सू० ) । उदकेच्छा उदन्या, अशनायोदयेति  
 ( सू० ) साधुः । तर्पणं तृप्तं तर्पथ, प्रितृष पिपासायाम् । तृष्णा नानार्थः । अदनं जग्धिः अदोज-

कृषिका क्षीरविह्वलिः स्याद्रसाला तु मारिजा ।  
 स्यात्समनं तु मिष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥  
 शूलाकृतं मटिग्रं च शूल्यमुल्यं तु पैठरम् ।  
 प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥  
 स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं संमृष्टं शोषितं समे ।  
 चिह्नणं मसृणं स्निग्धं तुल्यं भावितवासितं ॥ ४६ ॥  
 आपकं पीलिरभ्यूषो लाजाः पुंभूमि वाक्षताः ।  
 पृथुकः स्याद्विपिटको धाना मृष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥  
 पूगपूपः पिष्टकः स्यात्करम्भो वधिसक्तवः ।  
 भिस्ता स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोवनोऽस्त्री स वीविधिः ॥ ४८ ॥

षकं मुचि[ दृढ ]पर्युषितस्य दध्नः खण्डस्य षोडश पत्नानि शशिप्रमस्य । सर्पिण्यं मधुरं मरिचि-  
 कर्पं शुण्ठ्यः पञ्चमपि वा[ वा ]वैपलं वतुणाम् । श्लेष्म पटे ललनया मृदुपु, णेवृश कर्पूरधूलसुरमी-  
 कृतभ ७३सस्था । एषा वृकादरकृता सु[ स ]रसा रसाला या स्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥ तिम्यत्वा-  
 द्भिर्भक्ष्यप्रपनेन तेमनमुपसचनं कर्त्तव्यमाह्वयम् । नितिष्ठत्यन्नमेन निष्ठानम् । व्यञ्जनं च सूगपुष्पा-  
 रत् ॥ ४४ ॥ इतः प्रवृत्तिं वासितान् । वाच्यलिङ्गाः । ( शूलाकृतं ) शूलात्पाके ( सू० ) इति द्रष्टुं ।  
 मट्यन्तन भाटत्र, मट भूतो । शूले संस्कृतं शूल्यं, शूलाखाद्यत् ( सू० ) । भारुकं भृष्टं च । संस्कृतं  
 सर्पिषः, दध्ना सर्पिषकं दाधिकं क्रमात् । उदलावणिकं तत्तत्वायसिद्ध लवणम्भसा ॥ उखायां स्वात्मां  
 संस्कृत- उह्वयम् । पिठरे संस्कृतं पैठरं, संस्कृतंभसः ( सू० ) इत्यण् । रूपरसादिनिष्पन्नमन्नं, जीवते  
 स्म प्रणीतम् । परिध्ययपाका देना प्रयत्ननिष्पन्नं प्रयस्तम् । संस्कृतम् (सू०) अनिले साधुः ॥ ४५ ॥ (पिच्छिलं)  
 पिच्छदित्वादिलच् ( लोमादिपामादीनि ) । विजते चलति विजिलं, विज्यमानंति दैर्घ्याः । बालमक्षि-  
 कादिरहितं संमृष्ट, मृज् शुद्धौ । विगित्यव्यक्त कणाति चिह्नणम् । मसृति मसृम् । भाव्यते मिश्राकृतं स्म  
 भावितं, भुवोऽवकल्केन ( धा० सू० ) णिच् । वास्यते द्रव्यान्तरेण मेल्यते, धूपपुष्पादिना बाधिरास्यते  
 वासितं, यन्मुनिः-धापेनं वासितं विदुः ॥ ४६ ॥ ईषद्भृष्टं कलायादि- आपकं सज्जमात्रताह्वयम् । पू(पो)-  
 रुति वर्षते पीलिः, पुल महत्त्व । ऊरेरुजायादभ्यूषः, उषर्दीहायादभ्यूष इत्येके । लज्यन्ते लजाः,  
 लज मर्जने । न क्षप्यन्तेक्षताः, चाद्रिप्रक्रमतेपि पुंश्च बहुन्वे च । अक्ष-॥ यवा इति पुराणं तन्मते  
 पुंनहुत्वाथो विधिः । आर्द्रं भृष्टं सस्यं तादृपाकात्पृथुभवति विपिठीभवति च. नीजधान्यं वा मृष्टमुल्लङ्घ-  
 क्षोदाविपिठीभूततण्डुलम् । धीयन्ते धानाः । भृष्टयव इति जायाह्वयामेकत्वम् । धानं पूर्णं  
 सक्तवः स्युर्गुप्तिः स्यान्मांसशक्कुलं, भूस्तिरिति द्रवि[ मि ]डः ॥ ४७ ॥ पुनानि पूगः ।  
 न पूय[ प्य ]तपूपः पिष्टातकमयो मण्डकाह्वयः, पूयी विचारः, अद्रिह्वयत इति नैऋताः ।  
 ( पिष्टकः ) पिष्टाच्चसंज्ञायां ( सू० ) कन् । मुनिस्तु- अपूपः पिष्टपूषः स्वात्पूष भगवाः  
 प्रकीर्तिताः । केन रभ्यते मीत्यते कीर्यते वा करम्भः । दध्युपसिक्ताः सक्तवः ( वधिसक्तः ) ।  
 मस्यते भक्ष्यते भिस्ता, भ्यसेः संप्रसारणं वा, ब्राह्मणभिस्सेति भाष्यम् । मज्यते भक्षम् । अनयाना-  
 न्यः सान्तम् । अयतेऽन्नम् । उनति क्लियत्योदनम् । भृष्टं दीव्यत्यनेन दीरिभिः, स इति विशेषणानुसं ॥ ४८ ॥  
 कुंक्षिता भिस्ता भिस्तस्ये, यगेदनाभिस्तस्य, लक्ष्यानुराधाः- यथा स्वर्गप्राप्तये, वधुटिका । न इव-  
 द्रव्याणामन्नं मुह्यं, मण्डयति मण्डः । मस्यति परिणमते मासरः । आचम्यत आचामः । न स भ्यते



आरनालकसीवीरकुल्माषाभिपुतानि तु ।  
 अवन्तिसोमधान्याम्बुलकुलामि च काष्ठिच ( त्रि ) के ॥३९॥  
 सहस्रवेधि जतुकं बाष्ठीकं हिङ्गु रामठम् ।  
 तत्पत्नी कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥  
 निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।  
 सामुद्रं यनु लवणमक्षीवं वशिः सि ) रं च तत् ॥ ४१ ॥  
 सैन्धवोस्त्री शीतल्लिवं माणिवन्धं प्र सिन्धुजे ।  
 रौमकं वस्तु सु ) कं पाक्यं बिडं च कृतकं द्वयम् ॥ ४२ ॥  
 सौवर्चलक्षरुचक तिलकं तत्र मेचके ।  
 मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारं शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

अवं सीवीरम् । ( अभिपुत्रं ) पुत्रं अभिषेजे, अस्माद्वा पूयङ् कुम्बपाण्या नास्ति, चेद् भीमवत् स्यात् ।  
 कुम्भापेयं तदिभिरर्धस्विन्नरभिषूयत परिवारस्थने स्म कुम्बपाषाभिपुत्रम् । अवन्निषु सूयते- अवन्तिसोमम् ।  
 कुञ्जं लानि कुम्बिन जलमस्य वा कुञ्जम् । कुञ्ज ( ख ) यति दीपयन्मिं बन्धानि दोषान्वा काष्ठिकं,  
 काञ्चन्या पूरं भवे वा । आह च ( धन्वन्तरिः )- काष्ठिकं काञ्चिकं वीरं कुल्माषाभिपुत्रं तथा ।  
 अवन्तिसोमं धन्वन्तरिनारनालं महागम् ॥ सीवीरकं सुवीरम्बुलं तथा शुक्रं तुषेदकम् ॥३९॥ सहस्रं  
 बहु विषयां सङ्ग्रहि । जायते जनुकम् । बल्लोकरामठबुद्गदशौ । हिनोति हिङ्गु । अन्युद्रं भूतना-  
 क्षनमगृह्य च । तस्य हिङ्गेः फन्ना, कारोरियं कारवी संस्कृत्य । बाष्पं स्रवति बाष्पिका । कबर्या-  
 कृतिः कबरी, कर्बरांति च पाठभेदः ॥ ४० ॥ निशाख्या रात्रिपर्याया नानार्थं रजनीत्वात् । काञ्चनवर्णा  
 काञ्चनी । हरि पीतं वर्णं द्रवति ( गच्छति ) हरिद्रा । वरं वर्णोऽस्यस्या वरवर्णिनी । आह च- हरिद्रा  
 पीतेका पि डा र ( रं ) रजनी रजनी [ काञ्चनी ] निशा । गौरिवर्णिनी पीता हृदिता वरवर्णिनी । लुनाति  
 आभ्य लवणं, नन्यादित्वाक्षयः ( मू- ), पत्वं च । अक्ष्णोति व्याप्नोति- अक्षीवम् । उश्यते वशिरं, वश कान्ती  
 ॥ ४१ ॥ सिन्धुनद्युलाक्षने देशे भवे मेघवम् । शीतं शिनोति शीतलिवं, उष्णार्थं-वात् । मणिवन्ध-  
 गितो भवं माणिवन्धम् । मणिमन्तं ( न्धं ) माणिमन्थं बाहुः । आह च- सैन्धव सधु सिन्धुत्यं नदीया-  
 ( यं ) सिन्धुज शिवं । शुद्धं शीतांशवं चान्यन्माणिवन्धं शिञ्जानकम् ॥ रुमायामाकरे भव रामकम् ।  
 वस्तुगान्ध वस्तकं नाम लवणं, रौमके वस्तकं व श्वेति माला । पाके साधु पक्यं पक्तव्यं वा कलरा-  
 ह्यम् । विलति भिनत्ति मलं बिडम् । कृतकस्य लवणस्य द्वे नामनी । पाक्यबिडं लवणयोर्भेदेपि कृतकत्वा-  
 देक्यम् । व्यर्थे पाक्यं बिडलवणं यवसारः काचश्चेति ॥ ४२ ॥ सुवर्चलाकरे भव सौवर्चलं, सुवर्चस्ये-  
 दमग्निदीपनं लाति वा, वर्चं दीप्तौ, अच । अक्ष्णोति व्याप्नोत्यक्षम् । रोचतेनेन रुचकम् । द्वयगन्धं च ।  
 तिलति स्निहति तिलकम् । तत्र तस्मिन्मेचके कृष्णे लवणे वर्तते, पूर्वं तु मधु ( र ) लवणम् । अगन्धं  
 कृष्णलवणं तिलकमित्येके, यद्वैद्याः- कृष्णे सौवर्चलगुणा लवणे गन्धवर्जित । मरुं स्यन्दने मत्स्यण्डी  
 सामान्यशर्करा, मत्स्यगणमति रुजति मत्स्य ( तस्या ) षीति वैद्याः, यत्स्यन्तरिः- शर्कराणां तु  
 मीनाण्डी श्वेता मत्स्यण्डिका सिता । मत्स्यण्डिकाखण्डसिताः क्रमेण गुणवत्तरा इति तु बाह ( गम ) टः ।  
 फाण्यते द्रवत्वाफाणितं खण्डश्वेता । क्षौद्रकं स्विक्षुरसविकारः खण्डवत् । शीर्यत शर्करा । सायते  
 सिता खण्डशर्कराख्या ॥४३॥ कूर्चस्तत् ( क ) मस्तु तदस्यस्याः कूर्चका, कुचति कुचिका । कुचीकेत्येके किला-  
 टिकाख्या । रसमलति रसाला । माज्यते माज्जिता दधिसिनामरीचदिकृतं लेप्य, यत्सूदशशास्त्रम्- अर्ध-



षटः कुटुनिपावली शराबो वर्षमावका ।  
 मन्त्रीकं पिष्टपचनं दसोली पानमाजनम् ॥ ३२ ॥  
 कुतः कुत्तेः संहपात्रं सैवात्पा कुतुपः पुमाव ।  
 सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामन्नं च भाजनम् ॥ ३३ ॥  
 दर्विः कम्बिः सजाका च स्थासन्ना दूर्वादिहस्तकः ।  
 भस्त्री शाकं हरितकं शिपुस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥  
 कटम्बश्च कलम्बश्च वेषवार उपस्करः ।  
 तित्तिडीकं च चुकं च वृक्षाम्लमथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥  
 मरीचं कोलकं कृष्णसूषणं धर्मपत्तनम् ।  
 जीरकां जरणोजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥  
 सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुक्षिका ।  
 आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छत्रा वितुषकम् ॥ ३७ ॥  
 कुस्तुम्बरश्च धान्याकमथ शुण्ठी महीषघ्नम् ।  
 खीनपुंसकयोर्विन्धं नागरं विश्वमेषजम् ॥ ३८ ॥

चषको मल्लिका पारी च ॥ ३२ ॥ कुत्तितं तन्वते कुतः । कृतेष्वर्धमणः ( स्नेहपात्रम् ) । हस्ता-  
 कुतः कुतुपः, कुत्वाडपञ्च ( सू० ) । आ- उच्यते- आधेयमस्मिन्नावपनम् । भण्ड[ य ]स्याधेयं  
 भाण्डम्, भडि परिभाषणे । पात्याधेयं पीयतेऽभाद्रा पात्रम् । अमत्याधेयमन्नामन्नम् । भण्ड-  
 तेस्मिन्नाधेयं भाजनम् । भाण्डावपने पयगाहुः, यन्मुनिः- उष्टिकादि तु यद्भाण्डं सर्वमावपनं विदुः ॥ ३३ ॥  
 दृणाति पात्रं दर्विः । काम्यते काम्बिः । सजति मन्नाति सजाका । ततं दुनोति खण्डयति तन्दूः, तनोति वा ।  
 दाहमयो हस्तप्रतिरुद्धिर्दाहहस्तकः, दर्वभिर्दोषम् । इति देहं शफ्यतेनेन याभेजुं शाकम् । हरितकं नील-  
 त्वात् । शिनोति शिमुः, दूषयै शिमुः शोभाजनं हरितकविशेषश्च ॥ ३४ ॥ अस्य शाकस्य नाडी, कडति  
 के लम्बते वा कटम्बः ( कलम्बः ), शाकविशेष इत्येके, प्राकृते दस्य(थ) लङ्कटम्ब इत्याहुः । कटंबो वा । वे-  
 ष्यासि वृणीते वेषवारः । कासमर्दकसुरसादिष्वेक मांसान्युपश्लिष्यन्तेसावुपस्करः, तमवायेच ( सू० ) इति सुट् ।  
 तद्वेदानाह । तित्तिडीशैलजं तित्तिडीकम् । चुकं, चुकं व्यथने । वृक्षस्याम्लमम्लवेतसमाहुः । वेले वेलातटे  
 आयते वेल्लजं, वेलाहयः शाखीत्येके ॥ ३५ ॥ म्रियते जिह्वानेन मरीचम् । सौक्ष्मात्कोलकं, कुट् बाह्ये ।  
 कृष्णं वर्णेन कर्षति तेक्ष्णाद्वा । ऊपति रुजति- ऊपणम् । धर्मपत्तने भवं धर्मपत्तनम् । आह च- मरीचं  
 बलितं श्यामं वेल्लकं ( जं ) कृष्णमूषणम् । यवनेष्टं सितवृत्तं कोलकं धर्मपत्तनम् ॥ जीर्यतेनेनाभं जीरकः ।  
 जरयतीति जरण इति सभ्याः । अजं स्वाभाविकं मन्दाभित्वमजति- अजाजी, खी । कणाः सन्त्यस्याः  
 कणा, अर्शादिभ्योच ( सू० ) । कणा कृष्णा तु पिप्पलीत्येके पेदुः ॥ ३६ ॥ सुषु सुवति प्रेरयति  
 दोषान् सुषवी । कारोरियं कारवी । पृथ्वी वृहत्कणा । काला वर्णेन । उपकुक्षयत्यलीकरोति दोषानुप-  
 कुक्षिका । ओह च- उपकुक्षिकोपकुक्षी च कालिका चोपकालिका । सुषवी कुक्षिका कुक्षी पृथ्वीका कृष्ण-  
 जीरके ॥ ( आर्द्रकं ) आर्द्रासंज्ञायाकन् ( सू० ) । शृङ्गोपलक्षितं वेरं देहोस्य शृङ्गवेरम् । आह च-  
 महोषधं शृङ्गवेरं कटुभद्रं तथाद्रिकम् । छत्रातपत्रा, छादयति दोषान्वा छत्रा । वितुदति मन्दाभित्वं  
 वितुषकम् ॥ ३७ ॥ कुत्तितं तुम्बति कुस्तुम्बर, लुबि तुयि अर्दने, पारस्करादिस्तासुट् ( सू० ) । धान्य-  
 मकति धान्याकं, अलुका धान्याकं च । शुण्ठति शुण्ठयति शुण्ठी । नागरस्थे देशे भवं नागरम् । विश्वमेष-  
 जमनेकदोषजित् । विश्वं विश्वा च भूमिवत् ॥ ३८ ॥ आरनालो भर्कं तज्जमारनालम् । सुवीरेषु प्रायो

तृणधान्यानि मीवाराः स्त्री गवेषुर्गवेषुका ।  
 अयोधं गुस्त्रलोष्ठी स्यादुद्वलमुत्सृज्य ॥ २५ ॥  
 प्रस्फोटनं शूर्पमक्षी चालनी तितउः पुमान् ।  
 स्यूतप्रसेद्यौ कण्डोलपिण्डी कटफिलिन्नकी ॥ २६ ॥  
 समानी रसवत्यां तु पाकस्थानमहावसे ।  
 पीरोगवस्तवध्यस्तः सूपकारास्तु वल्लवाः ॥ २७ ॥  
 माराहिका आन्धसिकाः सूया औदनिका गुणाः ।  
 आपूपिकः कान्धविको मस्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥  
 अस्मन्तमुष्ठा ( या ) नमधिभ्रयणी पुष्टिरन्तिका ।  
 अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥  
 हसन्त्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोलातमुत्सृज्यम् ।  
 ह्रीवेम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी छियाम् ॥ ३० ॥  
 अलं ( लि ) जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।  
 पिठरः स्यात्पुसा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

उद्गोत्सवत् पृषोदरादित्वात् ( सू० ) उभयम् ॥ २५ ॥ प्रस्फोटनेऽसारं बहिः कियतेनेन प्रस्फोटनम् । शीयते शीयते कानेन शूर्पं, शूर्पं माने वा । चात्यतेनेनेति चालनं, कात्यः— क्षुद्रश्चित्रसमोपेतं चालनं तितउः स्मृतः । तनोति सारं तितउः, तनोतेऽउः सन्धः ( उ० ) । परिपवनं च । समानाबिलेव । शीयते स्म स्यूतः, बल्लायावपनं च । प्रसीव्यते प्रसेवकः । कण्ड्यते कण्डोलः । पिण्ड्यते पिण्डः, बन्धादलादिभ्यं माण्डम् । पिठकोपि । कटस्यावृणोति कटः । किन्यते क्षिप्यतेस्मिन् किलेजः, वीरणतृणादिभ्यं कुणालाद्यम् ॥ २६ ॥ रस आस्तादोस्त्यस्यां रसवती । महदोस्य महानसं, अनसापकरणं लक्ष्यते, अनोश्मावः सरसामिति ( सू० ) ममान्तशब्दः । पुरो गौर्मांसं जलं वास्याः पुरोगुस्तस्या रसवत्या अयं पौरोगवः । सूयं कुर्वन्तीत्युपलक्षणं मांसाकादेः । ( वल्लवः ) वल्लिः सौत्रः प्रीत्यर्थः ॥ २७ ॥ ( माराहिकाः, १० ) माराहमन्ध ओदनं च पण्यमेषाम् । मूदयन्ति तण्डुलान्मूदाः । गुणयन्ति गुणाः । भक्षकाराश्च । अपूराः कन्दुश्च पण्यमस्य, हसुमुक्तान्तात् ( सू० ) के, कान्दुक इति न्यायम् । सरविशदमभ्यवहार्यं मक्षम् । पीरोगवाया वाच्यलिङ्गाः ॥ २८ ॥ अश्रुतेऽस्मन्तम् । उद्ग(द)नते( ति) उद्गा (घ)नम् । अधिश्रीयतेऽनवाधिभ्रयणी, श्रीम् पाके । चुञ्च भावकरणेस्माच्चुदेर्वा चुलिः । अन्तोस्त्यस्यामन्तिका, अन्यविभ्रयणी भवेदिति माला । अङ्गारा चीयन्तेत्यामङ्गारधानी ममाग्निः । हसन्त्यङ्गारैर्हंसनी ॥ २९ ॥ अङ्गालङ्गारः, लिङ्गार्थं विधिः । अलन्ति वारयन्त्येतदवाते न लान्ति वा ( अलानम् ) । उस्कां सुबस्युत्सुक्रमर्षदग्धं काष्ठं, उलति वा, उलिः सौत्रः । अम्यतेभ्यतेम्बरीषम् । भृज्यतेत्र भ्राष्ट्रम् । बेल्लेव विहस्येन कन्दुरां पुमान्, पसे स्त्री, कन्दल्यानां कन्दुः । स्वेदयति स्वेदनी ॥ ३० ॥ अलं जीर्यत्यलंजरो महाकुम्भः । मणलजसा भ्रियमाणो मणिकः । किरत्यम्बु कर्करी । आलात्यालः, अल उग्रमेस्मादाद्युक्तं । गलत्यम्बोस्या गलन्तिकश्च, वर्धनीत्यर्थः । पि( पे )ठति पिठरः पिठरी च, पिठ अवयवे । तिष्ठस्यस्यां स्थाली । स्थालं कुम्भी च । ओक्षत्युक्ता । कुण्डयते पचयतेऽसिन्कुण्डं कुण्डी च । कं लाति कलमति वा कलशः ॥ ३१ ॥ षटते षटः । कुटति कौत्यम्भसा वा कुटः । निपिबन्त्यस्मात्त्रिषु । शीर्यमाणमवति सरावः । वर्धते मृत्पिण्डाद्वर्धते छियते वा चक्राद्वर्धमानकः । आलजिरोपि । अर्थ्यते पाकोत्कर्षाद्वीर्यं, ऋज्जीवमिति तान्त्रिकाः, ऋज्जीवी मर्जने । पिष्टकृतं भक्ष्यं पच्यतेऽसिन् पिष्टपचनम् । कात्यतेस्मात्कंसः ।

सिद्धार्यस्त्वेव धपछो मोधूमः सुमनः समी ।  
 स्याद्यावकस्तु कुत्सापञ्चनको हरिमन्यकः ॥ १८ ॥  
 प्रौ तिष्ठे तिष्ठपेजस्य तिष्ठपिञ्चस्य निष्कले ।  
 शवः धुताभिजनमो राजिका कृष्णिकासुरी ॥ १९ ॥  
 खियौ कङ्कुमियङ्गु द्वे अतस्ती स्यादुमा धुमा ।  
 मानुलानी तु मङ्गायां प्रीष्टिमेवस्त्वेषु पुमाव ॥ २० ॥  
 किंशारः शस्यपुष्पं स्यात्कणिशं शस्यमञ्जरी ।  
 धाम्यं प्रीष्टिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तुषाविनः ॥ २१ ॥  
 नाटी माळं च काण्डोस्य पलाछोस्ती स निष्कलः ।  
 कडङ्गरो पुंसं ह्रीषे धाम्यस्यापि पुमास्तुषः ॥ २२ ॥  
 शूकोस्ती श्लक्ष्मतीक्ष्णामे शमी शिम्बा शिबूत्तरे ।  
 रिद्धमावसितं धाम्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥  
 माषादयः शमीधाम्ये शूलधान्ये यवावयः ।  
 शालयः कलमाषाश्च पट्टिकाषाश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥

धन्यते हरिमन्यः ॥ १८ ॥ तिलाभिष्कजातिपेजैवकम्यो ( वा० ) । अर्तिलः स्याद्भनतिलः । क्षौत्य-  
 केन शवः । धुतमभिजनवति धुताभिजननः । कृष्णतर्पणाय राजसंघपाह्यः । राजते राजिका । कृष्णा  
 रमेन, कर्पति बिलिखति वा । अस्यते-आसुरी, असुरर्द्धि वा ॥ १९ ॥ कृषितं कृषाङ्गयते कङ्कु-  
 मङ्गुः कङ्कुमेल्यके । प्रीणाति मियङ्गुः । न तस्यते-अतस्ती । अवते-उमा, ऊङ्गु धन्ये । क्षौत्यनवा  
 भुक्ता धुमा । न तोत्वते मानुलानी । भज्यते मङ्गा । शणैः पि । अणुरत्यङ्गत्वात्, अणति परैत्य-  
 नेनेति वा । तुवरी स्वरके बले निष्पावे श्यामाकः श्यामके च ॥ २० ॥ कृषितं कृणाति किंशारः । स्याति  
 शङ्कुम् । कणाः सन्त्यस्य कणिशम् । धान्यववादिशिलः, शिलं च । धन्यते धन्यं धान्यम् । स्तम्बं करोति स्त-  
 म्बकरिः, स्तम्बकृतेरिन् ( सू० ) । शी[ सी ]लं च । कुसूलो बलजः कोष्ठगारं धान्यादिकोष्ठकः ।  
 तृणादेर्यः स्तम्बो नालं, स गुप्यतेनेनेति गुच्छः । यं प्रति स्तम्बोऽप्रसिद्धस्तं प्रत्यनयाविभ्यनुवादी  
 कायौ । एवं सर्वत्रोक्तम् ॥ २१ ॥ अस्य गुच्छस्य वः काण्डः- कण्ड ( व ) ल्यनेन- सा नाटी, नव-  
 ( ती ) ति । ( नाळं ) पल गन्धे । स काण्डः पलालः, पलताति । कटस्याङ्गोति, कट् ( द् ) अङ्गं रूप-  
 मस्य कडङ्गरः । मुस्यते-उत्सृज्यते पुंसं तृणादिक्षेदः । तुष्यत्यनेनामिस्तुषः ॥ २२ ॥ स्याति शङ्कुम्,  
 श्लक्ष्णं च तीक्ष्णार्थं च तत् । सस्वादोरन्यत्र वृषिकादिकष्टकोपि शूक इति किंशारोरन्यत्र निर्दिष्टः, शङ्कु-  
 धान्यशमीधान्यमेवार्थं वा पुनरुक्तः । धाम्यस्यस्यो सस्यं शमी । शिनोति शिम्बा । धामः शिम्बिरित्यपि । रिद्धा-  
 शावत्वारो वाच्यछिद्वाः । रिद्धं संसिद्धं राषेः, ऋद्धं संपन्नमित्येके ऋषेः । आवसितं रक्षासंभाच्छादितं,  
 यव आच्छादने, धा- अवसितं निष्पन्नमित्येके । पूयते स्म पूतं निवृत्तीकृतम् । बहु लाति बहुलं सारं,  
 ततश्चिह्नं, माञ्जरीशोभितमित्येके ॥ २३ ॥ बर्तन्त इति शेषः । ( माषादयः ) आदिशब्दान्मुद्गमसूरा-  
 दयः । ( यवावयः ) आदिशब्दाद् गोधूमशालयः । शालयते शालिः । कृत्यते कलमः । आषाशब्दाद्गज-  
 शास्याया जलजाः । वटिकाः वटिरातेन पच्यन्ते । आषाशब्दात्कङ्गोलायाः स्पलजाः । अमी इति पुंलि-  
 ङ्गनिर्देशान्माषायाः शाल्यन्ताः पुंसि ॥ २४ ॥ नियतेर्बन्ते नीवाराः, मुन्यन्तस्मात्, नीवृधान्य इति  
 ( सू० ) चम् । बहुवचनश्च यामाकादयोपि । मरे ( वि ) अम्मसि निधीयते मरेषुनामि मुन्यन्म् । अवो-  
 मस्व- अवोधं, अवोनिरित्येके पेटुः । मुस्यते खण्यतेनेन मुसलम् । ऊर्ध्वं लं लाति ( उद्बलमुद्बलं )

पुनपुंसकयोर्वयः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।  
 केदारकं स्वात्कीर्णं क्षेत्रं केदारिकं गजे ॥ ११ ॥  
 कोट्यानि छेदयः पुंसि कोटिशो छोटनेवचः ।  
 प्राजनं तोषनं तोत्वं सनिकमपकारणम् ॥ १२ ॥  
 दामं छविग्रमाचन्धो योत्रं योष्यमयो हलम् ।  
 निरीषं कुटकं फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥  
 गोदारणं च सीरोथ शम्पा स्त्री पुनकीलकः ।  
 ईषा लाङ्गलछण्डः स्वात्कीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥  
 पुंसि मेयिः (भिः) सलेपाव न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।  
 आशुर्ग्रीहिः पाटलः स्वाच्छित्तशूकयवी समौ ॥ १५ ॥  
 तोष्मत्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः ।  
 हरेणुसण्डिकौ चारिमन्तोरुपस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥  
 मङ्गल्यको मसूरोथ मकुष्ठ (ह) कमयुष्टकौ ।  
 वनमुष्टे सर्वपे तु द्वौ तुन्मुमकदम्बकौ ॥ १७ ॥

हृष्यतेत, फलेहीय (हिस्व) ते वा खलं, क्षि निवासे, क्षिणु हिंसायां वा । अस्य क्षेत्रस्य समूहेयं— एते  
 स्युः । (कैदार्य, इ०) केदारायवेति (सू०) यञ्बुज. (कैदारिकं) ठञ्कवचिनयेति (सू०) ठञ् । (क्षेत्रं) क्षेत्रात्-  
 आधित्तहस्तीति (सू०) ठकि प्राप्ते भिक्षादित्वात् (सू०) अण् ॥ ११ ॥ लुप्यते लुपति वा कोष्टम् ।  
 छेदय मृदकाः । कोटिभिः कोणैः स्यति मिनात् कोटिशः । प्राज्यते (प्रवीयते) प्रेर्यतेनेन प्राजनं,  
 वायाधिति (सू०) पक्षेऽजैर्वा, प्रवयणं च । तुयतेनेनेति तोत्त्रम् । प्रेषणं च । खन्यतेनेन खनित्रं कुदा-  
 लादि ॥ १२ ॥ य (दा) न्ति लुनन्ति चानेन, दाम्नीतिष्टन् (सू०) । (लवित्रं) अर्तित्पुसूकनसहचरश्चः (सू०) ।  
 लावप्यते युयते युयते चानेनेति, चर्मरज्जुः । इतो हलप्रकरणमारन्धनित्यर्थः । निष्कान्ता— ईषास्मा-  
 निरीषम् । कुटति कुटकं यस्याग्रे फलो वप्यते । फलति विहीयते भूमिरनेन फालः । कृषति स्मां कृषकः,  
 कुन्—क्षिप्तिप्रत्ययोः (उ०) । कृषिकः फलं च । लाङ्गति लाङ्गलम् । हलति विलिखति हलम् ॥ १३ ॥  
 गोभूमिर्द्वार्यतेनेन गोदारणम् । सीयते वप्यतेनेन सीरः । शाम्यति शम्पा । ईषति—ईषा, ईष उच्छे ।  
 स्यति भुवं सीता हलनेच्छा ॥ १४ ॥ मीयते क्षियते मेयिः, मेयन्ते (सं) गम्यन्तेस्मिन्वा, खलेदार्षिति  
 हलवन्तात्सप्तम्याः (सू०) इत्यलुक्, पशुबन्धननिमित्तम् । खलेदानी च । खलं तु खलवान् धान्य-  
 कम् । अस्तेतञ्जते वा— आशुः, शीघ्रराक्ता वा, यद् दुर्गः— आश्रय्या शाकिजीप्रयोः । मीणाति मीहिः  
 बाष्टकादिधान्यविशेषः, मी भरणे, यतः— मीहिर्यत्र ममूरो गोधूमो मुद्गमापतिलचणकाः । अणकः  
 श्रियङ्गुकोद्रवमयुष्टकाः (शालिगदक्यः) ॥ द्वौ च कलावकुल्यौ णसप्तदशानि धान्यानि । शितस्तीक्ष्णः  
 शुकः किंशहरस्व शितशुकः । युयते यवः ॥ १५ ॥ तत्र नीले यवे, तुज्यते तोक्मः, तुजिर्हिंशाः ।  
 कलमिति सारमयते कलयः, कं लाति वा । सीदन्यनेन सतीनकः, सातीनकोपि । क्षियते हरेणुः ।  
 खण्यते खण्डिकः । कोरं भक्तं वृषयति कोरद्वयः कदमत्वात् । केनाम्भवा— उयते कोद्रवः ॥ १६ ॥  
 (मसूः) मसी परिणामे । मङ्गयतेनेन मकुष्ठः । मीयते मयुष्टकः । घरति सर्वपः । तुदति तुन्मुमः ।  
 कुस्तिमम्भते कदम्बः ॥ १७ ॥ (सिद्धार्थः) सिद्धार्थोजनो रक्षामत्वात्, एष सर्वपः । गुप्यति परिवेष्ट-  
 यति गोधूमः, गो धुनेति वा । मुष्टु मन्यते सुमनः, अक्रान्तः । युयतेम्भवा यावकः । कोलाति कुन्नेन  
 मस्यति परिणमति वा कुन्मायः, अर्धस्त्रियो यवादिः, धान्यविशेष इत्येके । जप्यते दीयते वनकः । इतिभि-



उत्तारोर्ध्वप्रयोगस्तु कुसीवं बुद्धिजीविका ।  
 यात्रयासां याचितकं निययायापामित्यकम् ॥ ४ ॥  
 उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तुमाहकौ कमात् ।  
 कुसीविको धार्पुषिको वृध्याजीवश्च धार्पुषिः ॥ ५ ॥  
 क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।  
 क्षेत्रं द्वितीयशालेयं व्रीहिशाल्युज्ज्वोचितम् ॥ ६ ॥  
 यय्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि तत् ।  
 तित्यतैलीनवन्माधोमाधुमङ्गाद् द्विरूपता ॥ ७ ॥  
 मौलीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् ।  
 बीजाकृतं तूमकृष्टं सीत्यं कृष्टं च हत्यवत् ॥ ८ ॥  
 त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहृत्यं त्रितीत्यमपि तस्मिन् ।  
 द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥  
 द्रोणादकादिवापावौ व्रीणिकादकिकावयः ।  
 खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णावयस्त्रिषु ॥ १० ॥

इति स्वप्- तुक्, तत आगतेर्ध्व, अपमित्ययाचिताभ्यांकङ्कनौ ( सू० ) । मुनिस्तु- निमयः परिवर्तः  
 स्वादुद्वारोप्यापामित्यकः ॥ ४ ॥ उत्तम ऋणे उत्तमर्णः प्रयोक्ता, अधम ऋणे- अधमर्णो प्राहकः,  
 बुधुगति ( सू० ) सम.सः । कुसीवं गृह्णाति कुसीदिकः, कुसीददयोकादशाष्टछन्दसौ ( सू० ) । बुद्धि-  
 ययां प्रयच्छति धार्पुषिकः, प्रयच्छतिगण्यमिति ( सू० ) ठक्, बुद्धेर्बुधुषिभावः ( बा० ) । ( धार्पुषिः )  
 व्यञ्जनादिभन्तोपि, यन्मनुः- श्रोत्रियस्य कर्ष्यस्य वदान्यस्यापि धार्पुषी । बुद्धिमाजीवति वृध्याजीवः ।  
 द्विगुणिकश्च । बुद्धिर्लभः कलान्तरम् ॥ ५ ॥ कर्षति कृषिकः, औणादिक इकः ( वृषिकृष्योःकिन् ) ।  
 कर्षकोपि । कृषिरस्तस्य कृषीवलः, रजःकृष्यासुतीति ( सू० ) बलच्, बले ( सू० ) इति दीर्घः ।  
 व्रीहिणां भवनं क्षेत्रं द्वैतं, व्रीहिशाल्योर्दक् ( सू० ) ॥ ६ ॥ यवानां भवनं क्षेत्रं यवः, यवयवकषष्टिकषयत्  
 ( सू० ) । यवकोत्पयवः । षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते । उपाध्यायो यवादिभवने हितमिति पाठं परिकल्प्य  
 प्रस्तावात्- बोधमित्यशुद्धं पठति । तिलानां भवनं क्षेत्रं, विभाषातिलमाधोमाभङ्गाधुम्यः ( सू० ) इति  
 यत्कथौ । एवं मापादीनां द्विरूपता- माध्यं माषाणं, उम्यमौमीनं ( उमा-अतसी ), अणव्यमाणवीनं,  
 भक्ष्यं भाङ्गीनम् ॥ ७ ॥ मुद्रानां कोद्रवाणां च भवनं क्षेत्रं, धान्यानां भवनेक्षेत्रेणम् ( सू० ) ।  
 आदिशब्दान्मासूरीणादि । शेपाणि व्रीह्यादिभ्योन्यानि । शाकक्षेत्रे द्वयं- शाकशाकटं शाकशाकिर्न, भवने-  
 क्षेत्रेशाकटशाकिनोवक्ष्य्यात् ( बा० ) । अवीजं सवीजं संपन्नं बीजाकृतं, कृषोद्वितीयतृतीयशम्बबीजा-  
 कृतौ ( सू० ) इति डाच् । आदावुत्तं पश्चात्कृष्टं ( उत्तकृष्टं ), पूर्वकालेकति ( सू० ) समासः । सीतया  
 हत्यवेष्टया समितं संगतं सीत्यं, नोवयोधमैति ( सू० ) सीतया समिते यत् । हत्येन कृष्टं हत्यं, मतजन-  
 हत्यात्करणत्वंकषेयु ( सू० ) इति यत् ॥ ८ ॥ त्रिगुणं कृष्टं क्षेत्रं त्रिगुणाकृतं, संख्यायाधगुणान्ताभ्याः  
 ( सू० ) इति डाच् । त्रिहृत्यं त्रितीत्यमपि प्राग्वद्यत्, रयसीताहलेभ्यो याद्विधौ तदन्तविधिः ( वेनविधि-  
 स्तदन्तस्य ) । सर्वं पूर्वं डाच्-यच्च, द्वितीयाकृतं त्रिहृत्यं द्वितीयम् । शम्बाकृतं हि सम्यक् कृष्ट्वा तिर्यक्  
 कृष्टमाहुः ॥ ९ ॥ द्रोणस्य वापः क्षेत्रं द्रोणिकं, उप्यतेस्मिन्वापः, तस्यवापइति ( सू० ) ठक् । आदि-  
 शब्दात्प्रत्यादिभ्यः, संभवत्यवहरतिपचतीति ( सू० ) ठनि प्राप्तिशब्दादयः । ( खारीकः ) खार्याईकम्  
 ( सू० ) । बाध्यङिङ्गात्वात्क्षेत्रम् ॥ १० ॥ उप्यतेस्मिन्वप्रम् । के जले दार्यते केदारः । क्षीयते धान्ये-



स्मशानं स्थापितुवनं कुणपः शवमस्त्रियाम् ।  
 प्रमहोपमही वन्यां कारा स्याद्वन्धनालये ॥ ११० ॥  
 पुंसि भूम्यसवः प्राणाद्यैव जीवोत्सुधारणम् ।  
 आयुर्जावितकालो ना जीवातुर्जीवनौषधम् ॥ १११ ॥  
 इति क्षत्रियवर्गः । ८ ।

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्त्रयो विशाः ।  
 आजीवो जीविका वात्ता वृत्तिर्वैत (वैत) नजीवने ॥ १ ॥  
 क्षियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।  
 सेवा श्ववृत्तिरवृतं कृषिरुच्छशिलं त्रुतम् ॥ २ ॥  
 वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ।  
 सत्यावृतं वाणिग्भावः स्याद्वृणं पर्यवन्ननम् ॥ ३ ॥

जयाह्यस्य बायोः श्वे संभवात् । श्वति यात्यस्माज्जीवः शवः । प्रवृष्टते बध्यते प्रमहः । वन्यते  
 बाध्यते वन्दी दृढता स्त्री, बलवती हस्तक्षिप्तो राजपुत्रादिष्व, यदाहुः— वन्दी स्यात्पणवन्धस्यः ।  
 कीर्यते क्षिप्यतेस्यां कारा, मिदायह् ( विद्भिदादीति ) ॥ १२० ॥ अस्यन्तेऽसवः, स्वभावाद्बहुत्वे पुंलि-  
 ङ्गः । प्राणन्त्यर्माभिः प्राणाः, एवं शब्दस्तुषि भूम्नि । प्राणो नम बायुरित्येकवचनजीवार्थत्वात् । जीवनं  
 जीवः प्राणधारणम् । जीवापि । आभत्यायुर्जावितावाधिः, उसन्तः क्लीबे, छन्दस्युदन्तापि । जीक्यनेन  
 जीवातुः, जीवनाद्यौषधं जीवनरक्षोपायः, यथा— जीवातवे विसृज्य शूद्रमुनौ कृपाणम् ( उ० ), जी-  
 वितमौषधं चेत्युपाध्यायः ॥ १२१ ॥ इति क्षत्रियवर्गः । ८ ।

ऊर्मोमंवा ऊरव्याः, शरीरावयवार्थेति ( सू० ) यत्, यच्छ्रुतिः— ऊरू तदस्य यद्वैश्वः । अरणी-  
 बोर्धः, अर्थःस्वामिवैश्ययोः ( सू० ) इति साधुः । विशोपस्यं जातिवैश्यः, गणादिभ्योऽयम् ( सू० ) । भूमि  
 स्पृष्टति कृष्यादिना भूमिस्पृक् । विशनीति विद् । ( आजीवः ) आजीवन्यनेनेति करणे भावे वा  
 साध्यः । जीवनं जीविका, रोगाख्यायां ( सू० ) इत्यत्र धातुमात्राद् भावे ण्युल् वक्तव्यः ( धात्वर्थनि-  
 र्देशेणुल् ) । कृष्यादिस्तूपचागत । दत्तं वृत्तिरस्त्यस्यां वात्ता, प्रज्ञाश्रद्धावृत्तिभ्योऽणः ( सू० ) ।  
 वर्तन्तेनया वृत्तिः । वेति स्वादयनेन वेतनम् ॥ १ ॥ कर्षणं कृषिः, इक्षुयादिभ्यः ( वा० ) । पशुपाल्यस्य  
 कर्म पाशुपाल्यम् । वाणिजः कर्म वाणिज्यम्, ब्राह्मणादित्वात्प्यञ् ( गुणवचनं ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ) ।  
 दूतवणिग्भ्यांचिति वक्तव्यात् ( वा० ) वाणिज्यापि । चात्कुसीदम् । कृतामृताभ्यां जीवेषु मृतेन प्रमृतेन  
 वा । सत्यामृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कथंचनेति ये षड्वृत्तिभेदास्तानाह । ( सेवा ) शुन इव वृत्तिः  
 परपिण्डोपजीवितत्वादपमंमर्थः । न कृतममृतं पापिष्ठत्वात्, प्रमृतमिति तु सभ्यः पाठः । उच्छ्र  
 धान्यकणोच्चयः— शिलं धान्यमञ्जरी, समस्तं व्यस्तं विपर्यस्तं वैतत्, वन्यत्वादृतं सत्यम् ॥ २ ॥ मृतं  
 निर्जीवमिव । अमृतमनश्वरम् । किंचित्सत्यं किंचित्वासत्यं, अत्र मनुः— कृतमुच्छशिलं हेयं स्यादया-  
 चितममृतम् । मृतं तु याचितं मैत्र्यं प्रमृतं कर्षणं स्मृतम् ॥ सत्यानृतं तु वाणिज्यं तेनपि खलु जीव्यते ।  
 सेवा श्ववृत्तिराख्याता तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ अर्थते स्म कृणं, कृणमाद्यमर्थ इति ( सू० ) साधुः ।  
 ( पयुदधनं ) परित उदधनमुत्तमृणांमुद्धारत्वेन प्रहणम् ॥ ३ ॥ अर्थस्य प्रयोगः कलान्तरेण दानम् ।  
 कुत्सित सीदन्त्यत्र कुसीदम् । ( याचितकं ) अपमित्ययाचिताभ्यां इक्षुनो ( सू० ) । विनिमयाद् भाग्यपरि-  
 वर्तनादागतमापमित्यकं, मेह प्रणिदाने, उदीचांमाडेव्यतीहारे ( सू० ), मयतेरिदन्यतरस्यां ( सू० )

धैर्युचिः प्रतीकारो धैरनिर्यातनं च सा ।  
 प्रमादोपमापसंवाद्यसंवादा विप्रयो व्रतः ॥ ११२ ॥  
 अपक्रमोपयानं च रणे मह्यः पराजयः ।  
 पराजितपरागृहीतं त्रिषु गृहविरोहिणी ॥ ११३ ॥  
 प्रमापणं निवर्णनं निवारणं विशारणम् ।  
 प्रवासनं परासनं निपुणं विहिंसनम् ॥ ११४ ॥  
 निर्वासनं संक्षपनं विप्रन्यनमपासनम् ।  
 निस्तर्णनं निहणनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ ११५ ॥  
 निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।  
 उद्घासनममथनकथनोऽज्ञासनानि च ॥ ११६ ॥  
 आलम्भपिञ्जपिशरघातोन्माध( न्मन्य )वधा अपि ।  
 स्यात्पञ्चता कालधर्मो विद्वान्तः प्रलयोत्थयः ॥ ११७ ॥  
 अन्तो नाशो ह्योर्ध्वत्सुर्भरणं निधनोऽस्त्रियाम् ।  
 परासुभामपञ्चत्वपरेतमेतसंस्थिताः ॥ ११८ ॥  
 मृतप्रमीतीं प्रियेते चित्ता चित्या चितिः स्त्रियाम् ।  
 कथन्धोस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धं कठेवरम् ॥ ११९ ॥

समियुदुवः ( सू० ) इति वम् ॥ ११२ ॥ अपद्वारेण कमणं ( अपक्रमः ) । मह्योपसरणं, अन्वयो-  
 पचारात् । परिभूतोभिभूतोपि । त्रिविधस्यैव, नश्यति स्म नष्टम्- अस्त्यम् । तिराधीयते स्म तिरोहितं  
 गृहीतदिकम् ॥ ११३ ॥ अत्राहिंसार्थो अप्युपसर्गः शब्दाद् हिंसार्थो हेतुः, अक्रमकाश्च निवा सकर्मकाः ।  
 प्रमापणं, मीम् हिंसायां भिन्व, मीनातिभिन्नोतीति ( सू० ) आर्षं, युञ् । निपुणं बद्धेर्बुद्धेर्वा निवर्णनम् ।  
 निवारणं, कृम् हिंसायाम् । विशारणं, शृ हिंसायाम् । प्रवसतः प्रयुजिः प्रवासनम्, एवं निर्वासनम् ।  
 अमु क्षेत्रणेस्मात्परासनमपासनं च । वृद्ध क्षणेस्मात्निपुणं जीवःपालनम् ॥ ११४ ॥ ( संक्षपनं ) कथं-  
 मौरणतोषणेति मित इह हस्यः ( भित्ताहस्यः ) । निर्मन्यनं, प्रथि कौटिल्ये । निस्तर्णनं, तृहेर्हिंसायां निः-  
 पूर्णात्, स्तुद्धेर्वा निपुर्णात् । क्षणनं, क्षण हिंसायाम् ॥ ११५ ॥ निर्वापणं, पे आदे शोषणे । विघटनं, कृदु  
 हिंसायाम् । कथनं, कथ हिंसायाम् । उद्घासनं, जसु हिंसायाम् ॥ ११५ ॥ आलम्भः, समिराह्वयो  
 हिमार्थः, ( लभेः ) उपसर्गः स्वल्ब्योरिति ( सू० ) नुम् । पिञ्जः, पिञ्जहिंसार्थः । पिशरणं हिंसनं विशारः ।  
 इननं वधः, इनधवधइति ( सू० ) अप, वधादेशश्च, पक्षे घञि घातः । ( उन्माधः ) मध संक्षेपने ।  
 व्याघादनं विघातनं कदनं च निशुम्भनम् । ( पञ्चता ) देहस्तावन्महामृतारण्यः, मरणं त्वेतस्य पञ्चभावः  
 प्रत्येकं स्वांशं त्रैकमात् । कालो मृत्युघूतलक्षणः, क्षणायात्मको वा यदाहुः- काजः संहरति प्रजाः, तस्य  
 धर्मः क्षालधर्मः संहारः । दिष्टस्य कालस्य जीवितावधेरन्ते दिष्टगतः ॥ ११७ ॥ अमन्यन्तः परमैतः ।  
 मरणं मृत्युः, द्वयोः स्त्रीपुंसयोः । निवृत्तं धनमत्र निवर्णनं, निपुर्णं धनिर्मरणार्थं इति सम्भ्याः । प्रमथोर्वा,  
 दाघनिद्रा हिंसा संस्था प्रमालनम् । परागता असवोरप्य परामुः । संतिष्ठते स्म संस्थितः, संप्रवृत्तिवृत्ति-  
 भरणे वर्तते । समैते वाच्यालिङ्गाः ॥ ११८ ॥ बीयते स्म चित्ता । चेतस्या चित्ता, चित्ताप्रितिलेकेति  
 ( सू० ) साधुः । बीयते चितिः । एते प्रतदाधार्यन्त्याधाने वर्तन्ते । कस्य शिरसो बन्धोऽत्र कथन्धः,  
 केन बन्धो वा । क्रियया युक्तं नृजदपगतो मूर्धोऽस्यापमूर्धं यत्कलेवरम् । दण्डोपि ॥ ११९ ॥ शवशायनं  
 शमयानम् । पितृव्येनान्वननि भत्रनि पितृवनम् । प्रेतवनं करवीरं च । कृष्णं शम्भं पानि कुण्डः, धनं-

उद्यमाधोधनं जन्मं प्रधनं प्रविहारजम् ।  
 वृषमास्त्वान्नं संख्यं समीकं सांपरायि( संपराय )कम् ॥ १०५ ॥  
 अक्षियां समरागीकरणाः कलहविग्रही ।  
 संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ १०६ ॥  
 अभ्यामर्षसमाघातसंध्याभ्यामहाबाः ।  
 समुदायः प्रियः संयत्समित्वाजिसमिपुषः ॥ १०७ ॥  
 नियुजं बाधयुयेथ तुमुलं रणसंकुले ।  
 स्वेडा तु पिष्टनाकः स्यात्कारिणां घटना घटा ॥ १०८ ॥  
 क्रन्वनं योषसंरायो वृंहितं करिगर्जितम् ।  
 विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरो समौ ॥ १०९ ॥  
 प्रसभं तु बलात्कारो हठांथ स्खलितं छलम् ।  
 अजन्यं ह्रीव उत्यात उपसर्गः सभं त्रयम् ॥ ११० ॥  
 मूर्च्छा तु कस्मलं मोहांप्यवमर्षस्तु पीडनम् ।  
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः ॥ १११ ॥

न्यतेत्रास्कन्दनम् । संबसतेस्मिन् संद्वे, संप्रवक्षिर्वधायः । समीयन्तेस्मिन् समीकं, ईह गती । संप-  
 रायो मृत्युः प्रयोजनमस्य सांपरायिकं, [ टम् ], विनयादितात्कार्यं ( सू० ) अथा ॥ १०५ ॥ समि-  
 यति ( ते ) संप्रदन्तेस्मिन् समरः । न नीयन्ते चात्यन्तैः, नीकम्, अनैकमस्त्यत्र वा । रणन्ति दुन्दुभयो-  
 ल रणं, बधिरण्योद्योतिवक्तव्यादप् ( वा० ) । कल्पते क्षियतेत कलहः, कलं हिनबलं हन्ति वा । वि-  
 हृत्यत्र विग्रहः, प्रहृद्- इति ( सू० ) अप् । संप्रदन्तेन्योन्यं जन्यत्र संप्रहारः । अभिसंपतन्सता-  
 भिसंपातः । कलितेन कलिः । संस्फुटन्त्यत्र संस्फोटः, संस्फेड इति युक्तः पाठः, स्फिड अनादरे, भरते  
 तु संस्फेडः । संयुज्यतेन संगता रथयुगा अत्र वा संयुगः ॥ १०६ ॥ अभ्यामृत्प्रन्यताभ्यामर्षः । समाज-  
 न्यत्र समाघातः । संप्रामयन्तेस्मिन् संप्रामः । अभ्यागच्छन्त्यत्राभ्यागमः । आह्वयन्तेत्राहवः, आह्वयुदे  
 ( सू० ) इत्यप्, संप्रसारणम् । समुदीयन्ते मिलन्त्यत्र समुदायः । संयतन्ते संबच्छन्ति दास्यां संयत् ।  
 संयन्ति संगच्छन्तेत समितिः । आ- अज्यन्ते क्षिप्यन्तेताजिः । युप्यन्तेस्यां युत्-द् ॥ १०७ ॥ नियत  
 युद्धं ( नियुद्धं ) । ताम्यन्त्यत्र तुमुलं, तुमुः क्षीतो वा । ( स्वेडा ) स्वेड अभ्यक्ते घन्दे- इति दुर्गः ।  
 पिष्टानामिब नदनं भटानां सिंहनादः । स्वेला वा । ( घटा ) घटादयःवितः ( ग० ) इति विद्रुमि-  
 दादिभ्योऽ ( सू० ) ॥ १०८ ॥ समन्ताद्रवणं संरावः, उपसर्गेवः ( सू० ) इति घम् । ( वृंहितं ) वृद्धि  
 शब्दे । ( विस्फारः ) स्फुर संबलने । पटो हन्यतेस्य पटहः । आदम्बते- आडम्बरः, डमरुवत्स  
 वरम् ॥ १०९ ॥ प्रगता सभः प्रसभे, सभया युक्तायुक्तविचारो लक्ष्यते, प्रस, प्रसभ, प्रसवे वा । बलादिति  
 निरातो हठांथः । ( हडः ) हड प्लुतिशप्रत्ययोः । स्खलनं मार्गाचलनम् । छपति छिनति छलम् । न  
 प्रने साधु- अजन्यम् । उत्पतत्यकस्मादायाति- उत्पातः, उज्ज्वलादित्वाणः ( उज्ज्वलितकसन्तेभ्योः ) ।  
 उपसृज्यत उपसृज्यतेपसर्गः ॥ १११ ॥ कशति ( ते ) वैचित्र्यात्कश्मलम् । ( पीडनं ) पीड अंबगाहने ।  
 ( अभ्यवस्कन्दनं ) छलादाकमणमित्यर्थः । धाटी च । रात्रौ च सौप्तिकम् । ( विजयः ) विः स्वार्थे ल्ये-  
 चनाविबोचनवत् ॥ १११ ॥ प्रतीकं करणं प्रतीकारः शुद्धिः । निर्यातनं शोधनं, यत निष्कारोपस्कारयोः ।  
 जितकारणं जिताहवः । एतेषु पलायनार्थकाः, भेदस्तुष्टवः, ( सू० ), उद्विभ्रयतिर्योतिपुष्टवः ( सू० )

स्यावासारः प्रसारं प्रचकं चक्षितार्यकम् ।  
 अहितान्मत्त्वमीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९७ ॥  
 वैतालिका बोधकराद्यादिका घाण्टिकाः समाः ।  
 स्तुर्मागधास्तु ममघां बन्धिगः स्तुतिपाठकाः ॥ ९८ ॥  
 संशप्तकास्तु समयास्त्वंमांमावनिवर्तिनः ॥ ९९ ॥  
 रेणुर्हयोः क्षियां धूलिः पांशुर्नां न द्वयो रजः ।  
 पूर्वं क्षोकः समुत्पिप्रपिप्रली मशमाकुले ॥ १०० ॥  
 पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमक्षियाम् ।  
 सा वीराशंसनं युद्धयूमिर्यातिमयप्रदा ॥ १०१ ॥  
 अहंपूर्वमहंपूर्वमित्यहंपूर्विका क्षियाम् ।  
 आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ॥ १०२ ॥  
 अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः ।  
 द्रविणं तरः सहोपलक्ष्यौर्याणि स्थाम शुष्मं च ॥ १०३ ॥  
 शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्विता ।  
 वीरपानं तु यत्पानं घृते भादिनि वा रणे ॥ १०४ ॥

षते येनेत्यासारोन्वागच्छद्रुम् । प्रसारस्तु सेन्वाद्द्विस्तुणजलाद्यर्थं प्रसरणमिति कौटिल्यः, बहस्य-  
 निरुद्धवीवधासारप्रसारा मा इव प्रजम् ( शिशुः ) । प्राप्तिं चकं सेन्यं प्रचकम् । आभिमुख्येनाभिभूता-  
 रीन्वा यानमभिक्रमः ॥ ९७ ॥ वितालः शब्दः प्रयोजनमेषां वैतालिका राज्ञोवसण्ठाका मङ्गल-  
 [ मङ्गला ] ह्याः, प्रातर्बोधका इत्येके । ( चाक्रिकाः ) चकं राष्ट्रं घण्टाघातेन देवतायमे ये संसन्ति ते,  
 आषकाह्याः । ( मागधाः ) वंसोदीरणेन ये याचन्ते, आहुध- वैतालिकाश्च कथ्यन्ते कविभिः सौख्य-  
 यिकाः । राज्ञः प्रबोधसमये घण्टाक्षिण्यास्तु घाण्टिकाः । मागधाः स्तुतिवंशज्ञा इति, मयपेति वाच्यार्थः  
 कण्ठवादिः, यच्छ्रीमोजः- कमर्थिनः कुपुभ्यन्तु कं मगध्यन्तु मागधाः । कमिपुभ्यन्तु यज्या [युष्वा] नो  
 रामेरण्यं तुरप्यति ॥ वन्दन्ते स्तुवन्ति तच्छीलाः ( वन्दिनः ) । चत्वार एकार्या इत्येके ॥ ९८ ॥ संघ-  
 षन्ति पलायमानं, संघपथं वा युध्यन्ते दृढनिधयाः संशप्तकाः ॥ ९९ ॥ रीयते रेणुः, रीह गतौ । धूय-  
 ते धूलिः । पंशयति वलादि पांशुः, पशि नाशने । रज्यते वलायनेन रजः क्षीय, रजनरजकरजःसूपसं-  
 स्थानं ( वा ) इति नलोपः । ( क्षोदः ) क्षुदिर संपेवणे, धूलिप्राययं, यच्छाम्भतः- पूर्वाणि वास-  
 योगाः स्तुधूर्णो धूलिः सशर्करा । पित्रि हिंसायां, आह च- समुत्पिप्रपिप्रली ॥ १०० ॥ पतति धूयते  
 पताका । विजयते विजयन्तः, भोणादिको शब्द ( तूभूवहीति ), तस्यैव वैजयन्ती । केत्ये संशप्तकेऽ-  
 नेन केतनम् । ध्वजति धूयते ध्वजः, पताकादृशो ध्वज इत्येके । केतुर्नानार्थः । वीरा आशंसन्तेन  
 ( वीराशंसनम् ) ॥ १०१ ॥ अहं पूर्वमस्यां क्रियायामिति सर्वे यत्तु भुवते साहंपूर्विका. स्वार्थे कन्- म-  
 स्वार्थानो वा ठन् ( धतइतिठने ) । अहो पुरुषोदमित्यस्य भावः ( आहोपुरुषिका ), मनोवादिवाद्-  
 युष् ( द्रन्द्मनोवादिभ्यश्च ) ॥ १०२ ॥ अहं शक्तोहं शक्त इत्यस्यामहमहमिका, ठन् ( वीणादिभ्यश्च ),  
 अहंशब्दो निपातः । द्रवत्येनानरिं द्रविणम् । तरत्येनानापदं तरः । सहतेनेनारिं सहः, असन्तो द्वौ  
 शस्त्र भावः शौर्यम् । तिष्ठत्यनेन स्थाम । शुष्मत्येनानरिः शुष्मम्, शुष्मेत्येके ॥ १०३ ॥ शक्तं शक्तिः ।  
 प्राणं प्राणः । विक्रमन्तेनेन विक्रमः । वीराणां मयपानं वीरपानम् ॥ १०४ ॥ जायते जन्यं, मय्यो-  
 पेति ( सू ) साधुः । प्रदधान्ति प्रधनम्, धनिमार्णायोत्र निधनवत् । मियन्तेस्मिन् मय्यम् । आरक-



स्तरः सद्गादिमुद्यो स्यान्मसला तक्षिबन्धनम् ।  
 फलकोली फलं चर्म संप्राप्तो मुष्टिरस्य यः ॥ ९१ ॥  
 कुषणो मुद्ररषणौ स्यादीली करवा ( पा ) छिका ।  
 मिन्विपालः सुगस्तुल्यी परिचः परिघातनः ॥ ९२ ॥  
 द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परम्बधः ।  
 स्याच्छली चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९३ ॥  
 वा पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना स ( श ) र्वला तोमरोस्त्रियाम् ।  
 प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु स्त्रियः पाल्यभिकोटयः ॥ ९४ ॥  
 सर्वाभिसारः सर्वोषः सर्वसंनहनार्थकः ।  
 लोहाभिसार ( हा ) रोस्त्रभृता राज्ञा नीराजनो विधिः ॥ ९५ ॥  
 यत्सेनयाभिगमनमरी तक्षमिषेणनम् ।  
 यात्रा ब्रज्याभिनिर्माणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९६ ॥

इत्याम्र निर्याति । कलति विशीर्यते प्रहारैः ( फलं, फलकं ) फलं, मुनिना खड्ग, घमे दृष्टं, अयं तु लोकात् फलकं  
 मन्यते, यच्छाम्भतः— कामे शस्त्रे शराघमे व्युष्टं च फलकं फलम् । चर्ममकराचर्म । संयुज्जनेनेति  
 संप्राप्तः, समिमुष्टाविति ( सू० ) घम्, अस्त्र चर्मणो मुष्टिर्ग्रहणस्थानम् ॥ ९१ ॥ हुं शङ्का इति कुषणः,  
 द्वयोः वा, धर्मोचनोन्यः । मुद्रं गिरति प्रसते मुद्रः । इत्यनेन घनः, मूर्तौघनइति ( सू० ) छिपुः,  
 यच्छाम्भतः— बाधे मुस्तेम्बुदे सान्ने घनः स्वाहोहमुद्रे । इत्यत्र ईश्री, एकधारासिस्तुल्यकामुधम् ।  
 करवालात्, अस्त्रे ( सू० ) कन्, तरवालिकेत्येके । भिन्दतः पालयति भिन्दिपालः, भिन्दिपालो वा  
 हस्तक्षेत्रो लघुः । सज्यते सरति वा सगः । परितो इति परिघः, परांघ इति ( सू० ) डे करम्,  
 लोहचक्रो लघुः ॥ ९२ ॥ कुठान्दुसानिर्भति कुठारः । स्वं धियति निर्भति स्वधितिः । पराङ्मुखाति  
 परशुः परश्वध, पर्वधे पि, यदाह— याष्टीकपारश्वधिको यष्टिपर्वधेति को । शस्यतेनया सज्जी । असेः पुत्र-  
 बाल्यत्वम् । छुरति छिनत्ति छुरिका, छुरिकापि ॥ ९३ ॥ शलति विशत्यन्तः शल्यः । शङ्कतेस्नाशङ्क-  
 कुरायुधविशेषः, यच्छाम्भतः— संस्त्र कीटकयोः शङ्कुः शङ्कुः प्रहरणान्तरे । अन्यत्रोपचाराच्छस्यम् ।  
 सर्वाङ्—लाति सर्वडा ॥ स्तोम्यते प्रक्षुध्यते तोमरः, तुः सं. तो वा । प्राध्यते प्राप्नोति हस्तलेप्यः शस्त्रः ।  
 कुणति कुन्तः । कोणो गृहादन्वेदिक्— अस्त्राद्या, कुण शब्दोरकरणयोः । पातं पालिः । अधुनेभिः ।  
 कुणति कांटे ॥ ९४ ॥ सर्वेण सैन्येनाभिसरणं सर्वाभिसारः । सर्वेषामोषो बहनं सर्वोषः । सर्वे संनह-  
 न्त्र सर्वसंनहनम् । शस्त्रभृता राज्ञा यः शास्त्रिका विधिः प्रस्थानायाश्च स लोहाभिसारः, लोहं शस्त्र-  
 भिसार्यते प्रस्थानेनेति । नीरस्य शब्दमुद्रस्त्राजनं क्षेत्रे नीराजनं, मन्त्रोक्त्या बाहनायुधादेर्विशेष-  
 राज्ञे बात्र । नीराजनादनन्तरं कर्म लोहाभिसार इति मुनिः— विधिलोहाभिसारस्तु राज्ञा नीराजनेति,  
 दुर्गोपि— लोहाभिसारस्तु विधिः परो नीराजगन्तुरैः । दशम्यां दक्षितैः कार्यं इति । अत एव नीराज-  
 नाद्विधिरित्येके पठन्ति ॥ ९५ ॥ ( अभिषेणनं ) स्यापपाद्येति ( सू० ) णिच्, उपसर्गोद्धनेतीति  
 ( सू० ) वत्वम् । यान्त्यस्यां यात्रा । ब्रजनं ब्रज्या, ब्रजबजोर्भावेक्य ( सू० ) । ( प्रस्थानं ) प्रस्थानं  
 छांतमैत्यर्थः । गमेः— प्रहर ( सू० ) इत्यपि गमः ॥ ९६ ॥ सैन्यस्य सर्वतो व्याप्तिरासारः, भाषि



कविभ्यजस्य गाण्डीयगाण्डिवी पुनपुंसके ।

कोटिरस्यादमी मंथे तछे उपापातवारणे ॥ ८५ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं धीवीं उपा शिन्निगी गुणः ।

स्मत्प्रत्यालीडमालीडमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८६ ॥

लक्षं लक्ष्यं शरद्व्यं च क्षराम्यास उपासनम् ।

पृथक्पाणिविशिला अजिघ्नसगागुगाः ॥ ८७ ॥

कलम्बमार्गणशराः पत्नी रोप इषुर्ध्रयोः ।

प्रक्षेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजसिपूतरं ॥ ८८ ॥

निरस्तः ग्रहिते बाणे विपाके दिग्धलिमकौ ।

तूष्पापासङ्गातूणीरनिषङ्गा इषुधिर्ध्रयोः ॥ ८९ ॥

तूष्पां लखे तु निर्विशाचन्द्रहस्तासिप्रहयः ।

कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवा ( पा ) लः कृपाणवत् ॥ ९० ॥

स्वास्ति गाण्डीवं, गाण्ध्यजगात्संज्ञायामिति ( सू० ) वः, गाण्डिरिदन्त ईदन्तश्चात्र प्रक्षिप्य निर्दिष्टः । पुनपुंसके इति प्रथमाद्विवचनमजिघ्रिगम् । अस्य धनुषः प्रान्ते कोटिः, कुटतीति । अटल्यदनी, अपरं-दनी इत्येके । गोधा च गोधा च गोधे द्वे, सम्यक्कचित्वाद्, गुध पारवेशने । तलं चर्मादिमयो उपापाताधारः ॥ ८५ ॥ ( लस्तकः ) लस स्तेपणे । मूर्वाक्ष्यतृणत्व विकारो मौढी । शिनाति उपा । जीवापि । शिङ्के शब्दायते शिञ्जिनी । गुण्यतेभ्यस्ते गुणः । जङ्घयोधारि ( वि ) निवृत्तो स्थितिः स्थानकमिति तु विरोधः । आमेडि भुवमालोडम् । आदिशब्दात्समपादं वैशाखं मण्डलं च धनुर्वेदप्रसिद्धम् । भरतस्त्वम्-बाह-दैन्यवं समपादं च वैशाखं मण्डलं तथा । प्रत्यालीडमालीडं स्थानान्वेतानि वट् नृणाम् ॥ ८६ ॥ लक्ष्यत इति ( लक्ष् ), चम् व्यञ्च । शृणति शरद्विलस्तस्मै हितं शरद्व्यं, उगवादिभ्योयत् ( सू० ), करैर्वायते छद्यते वा । ( उपासनं ) असु स्तेपणे । पर्वति सिद्यति-असृजा पृथक्, पृथक्चतु मस्येति धनुर्ध्रयोः-पृथक् शरस्तथा शल्यं पक्ष्मनायुजगुनि वट् । वणति वण्यतेनेन वा बाणः । विधीयते निक्षि-प्यः, शिम् निधाने, विविधदिशो वा । अजिघ्नस गजुगामी ॥ ८७ ॥ कस्यते क्षिप्यते कलम्बः । मार्ग-यति दृक्च मार्गजः । शृणति शरः । रोप्यते निखन्यते रोपः । इष्यति-इषुः, इष गतौ । प्रहरो नानार्थः । प्रक्षेडते प्रक्षेडनः, विवरे रूपं, क्षेडिर्वीनेयः । नरमवाति, नराच एव नाराचः, स्थावेऽप्यु, लक्ष-क्षेपोयम् । ( पक्षः ) पक्ष परिग्रहे । वजति गच्छत्यनेन वाजः, न्वङ्कादेः ( सू० ) अनुत्थम् ॥ ८८ ॥ क्षिप्तान्ता बाध्यलिङ्गाः । निरस्यते स्म प्रहीयते स्म, क्षिप्त इत्यर्थः । विषेणाके प्रक्षिप्ते, दिक्षते स्म क्षिप्यते स्म । तूष्पते पूर्यते शरैस्तूणः, तूणीति लिङ्गरूपमेवार्थम् । उपासङ्गान्ते निषङ्गान्ते च बाण-वलेत्युपासङ्गानि वङ्गी । इषो धीयन्तत्रेषुधेः । कलापो नानार्थः ॥ ८९ ॥ लख ( लक्ष ) इति भिनसि लक्ष्मः । निष्कान्ताक्षितोऽङ्गुलिभ्यो निक्षिप्यः । चन्द्रवद् हासः प्रभास्य चन्द्रहासः । अस्त्वतेति । चण्डगंल्यपाद् अष्टिः, चन्द्रकः ( सू० ) इति प्रकृतिः, हिंसायां हिंसेषु रिष्टिः । बुद्धौ भयः कौक्षिकः, कुण्डुद्धीति ( सू० ) डकृत् । मण्डलाकृत्यप्रमस्य मण्डलाग्रः । करं वलनमस्य करवालः । कस्यते कृपाणः, वतिः पूरणावः ॥ ९० ॥ ( तस्यः ) तसर छद्मगती । मीयते मरिबन्धे प्रक्षिप्यते मेखला, यथा बहस्ते

ध्वजिनी बाहिनी सेना वृत्तनामीकिनी चम्पूः ।  
 बकयिनी बलं सैन्यं बह्वं बागीकमखियाम् ॥ ७९ ॥  
 म्यूहस्तु बलविन्यासो मेवा वण्डादयो युधि ।  
 प्रत्यासारो म्यूहपाणिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ८० ॥  
 एकैकैकरथा व्यम्बा पक्षिः पञ्चपदातिका ।  
 पक्ष्यङ्गीः सिगुधैः सर्वैः क्रमावाख्या ययोत्तरम् ॥ ८१ ॥  
 सेनामुखं गुल्मगङ्गी बाहिनी वृत्तना चम्पूः ।  
 अनीकिनी वशानीकिन्योक्षीहिण्यय संपदि ॥ ८२ ॥  
 संपक्षिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपस्यां विपवापदी ।  
 आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियः ॥ ८३ ॥  
 धनुःखापौ धन्वशरासनकोवण्डकार्मुकम् ।  
 इध्वासोव्यय कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८४ ॥

बाहिनी । सिनोति सेना, सह-इनेन वतते वा । प्रियते वृत्तना, पृष्ट् व्यायामे । चमत्सरीचम्पूः । बकयो रथ-  
 गुप्तिरस्यस्या बकयिनी । बलति प्राणिति बलम् । सेनैव सैन्यम्, चतुर्वर्णादित्वात् (सू०) ध्यम् । करोति च वृत्तं  
 चम्पूम् । अनिलनीकम्, न नीवते वा, सैन्यैकदेशायम् ॥ ७९ ॥ म्यूहते रच्यते म्यूहः । म्यूहस्येति शेषः, यदाहुः-  
 इषो मण्डलभोगौ बापुत्समथाचलो दृढः । म्यूहास्तेषां विशेषाः स्युश्चक्यूहादयोपि च ॥ प्रत्यासरति अग्नान्  
 प्रत्यासारः, सृष्टिपरइति (सू०) घम् । पाणिः पश्चाद्भागः । (प्रतिग्रहः) प्रातिगृह्यते वष्टभ्यतेनेन सैन्यम्  
 ॥ ८० ॥ पतति (पथते) पक्षिः सेनांशः, यद् भारतं- एको गजो रथश्चैको नराः पञ्च पदातयः ।  
 त्रयश्च तुरगास्तज्जैः पक्षिरित्यभिधीयते ॥ पक्षिगुणा सेनामुखं- गजत्रयं ३, रथत्रयं ३, अश्वत्रयं  
 ९, पदातयः पञ्चदश १५ ॥ ८१ ॥ तत्त्रिगुणं गुरुति गुण्यः- गजाः ९, रथाः ९, अश्वाः २७, पदा-  
 तयः ४५ । स त्रिगुणो गण्यते गणः- गजाः २७, रथाः २७, अश्वाः ८१, पदातयः १३५ । स  
 त्रिगुणो बाह्यते बाहिनी- गजाः ८१, रथाः ८१, अश्वाः २४३, पदातयः ४०५ । सा त्रिगुणा वृत्तना-  
 गजाः २४३, रथाः २४३, अश्वाः ७२९, पदातयः १२१५ । सा त्रिगुणा चम्पूः- गजाः ७२९, रथाः  
 ७२९, अश्वाः २१८७, पदातयः ३६४५ । सा त्रिगुणानीकिनी- गजाः २१८७, रथाः २१८७,  
 अश्वाः ६५६१, पदातयः १०९५५ । अक्षाणां रथकाष्ठानामूहोत्सस्यां, अक्षद्विन्द्यामिति (बा०)  
 वृद्धिः ॥ ८२ ॥ (संपद्) संपदादिभ्यः क्तिप् (बा०) । अथन्ति तां श्रीः, किञ्चिन्निर्वाच्यतीति (उ०)  
 क्तिप्- दीर्घश्च । विपक्षिर्दारिद्र्यम् । आयुध्यन्तेनेनायुधं, धर्म्यैकविधानं (बा०), स्वास्नापाम्यधिहनिषु-  
 प्ययम् । शस्यतेनेन सत्त्रं, दाम्नीशसेति (सू०) दृत् । अस्यतेस्त्रम् । हेतिर्नानार्थे ॥ ८३ ॥ धन्वते-  
 भ्यंते धनुः, अर्धर्चादिः (सू०) । चमस्य वेणोर्विकारश्चपम् । धन्वति (धन्व), कनिन् (उ०) । सदा  
 अस्यन्तेनेन शरासनम् । कुट्टं (हि) अनृतमाषणे, अस्मादण्डेन्, कुट्टेर्वा रेफलोपे कोट्टम् । कर्मणे प्रम-  
 कति कार्मुकम्, कर्मणउकम् (सू०) । इध्वाशः । आसोपि ॥ ८४ ॥ गाविः पक्षि-

चमीं फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिका ।

अनुष्ठुपः सहाययानुषरोमिष(स)रः समा ॥ ७२ ॥

पुरोगामेसरप्रष्ठामतःसरपुरःसराः ।

पुरोगमः पुरोगामी मन्वगामी तु मन्थरः ॥ ७३ ॥

जङ्घालोतिजवस्तुल्यौ जङ्घाकारिकजङ्घिकी ।

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जघनो जवः ॥ ७४ ॥

जप्यो यः शक्यते जेतुं जेयो जेतव्यमात्रके ।

जैवस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७५ ॥

सोम्यामिड्योभ्यमित्रीयोप्यम्यमित्रीण इत्यपि ।

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७६ ॥

स्यादुरस्यानुरसिलो रथिको रथितो रथी ।

कामंगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीमस्तथा भृशम् ॥ ७७ ॥

शूरो धीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जित्वरे ।

सांयुगीनो रणे साधुः शस्त्राजीवावयस्त्रिषु ॥ ७८ ॥

त्तरकोपि । वैजयन्तिका वरति वैजयन्तिकः, वरतीति (सू०) ठक् ॥ अनु पञ्चादवतेऽनुष्ठुपः । सह-  
भवते सहावः ॥ ७२ ॥ पुरो गच्छति पुरोगमः । (पुरोगः) गमय (सू०) इति कः । अमे  
सरसमेसरः, पुरोमतोमेपुषतेः (सू०) इति टः । प्रातिष्ठते प्रष्ठः, प्रष्ठोप्रणामिनीति (सू०) साधुः ।  
मन्नाति पादौ मन्थरः ॥ ७३ ॥ जङ्घे स्तोस्य जङ्घलः । जङ्घे एव कते राजदेवौशोस्य जङ्घ-  
कारिकः । जङ्घाभ्यां जीवति जङ्घिकः । तरोस्त्वस्तोति तरस्वी, अस्मादामेधेति (सू०) विनिः ।  
त्वरते स्म त्वरितः । प्रजयते प्रजवी, प्रजोरिनिः (सू०) । जवते तच्छीलो जवनः, जुचङ्कम्भेति (सू०)  
युच् । जवते जवः, पञ्चापच् (नंदिप्रहृति) ॥ ७४ ॥ क्षप्यजप्योशक्यार्ये (सू०) इति साधुः । (जवः)  
शक्यशादन्वत्रेत्यर्थः । जेतैव जैतः, तुमन्तत्वात्- प्रज्ञादित्वात् (सू०) अण्, जेतुरन् वा, फलतस्तुस्कार्थ-  
त्वम् ॥ ७५ ॥ अभिमुह्येनाभिघ्नानलं गामी, अभवनेयस्त्वौ (सू०), अभवभिघ्नश्च वेति (सू०) छः,  
चकारापत्त्वौ च । अभ्यमित्रश्च । ऊर्ज ऊर्जा वस्त्यस्येति, ज्योत्स्नातमिसेदि (सू०) साधुः । ऊर्जो-  
सन्तं मन्यते, घमन्तोमेति तु युक्, अन्ययोजस्वीति निपातनं व्यर्थं स्यात्, अस्मायामेधेति (सू०)  
विनिना सिद्धत्वात् ॥ ७६ ॥ उरसा बलं लक्ष्यते, तदस्यास्ति, पिच्छदित्वादिलच् (लेमादिपामाशीति) ।  
रथोस्यास्ति रथिकः, अतश्चनेटनौ (सू०) । (रथिरः) मेधारथाभ्यामिरभिरथौ (वा०), रथिन  
इत्यपपाठः । अनुकामं यथेच्छं गामी- अनुकामीनः, अवारपारात्यन्तानुकामंगामीति (सू०) कः ।  
अत्यन्तं भृशं कृत्वा गामी- अत्यन्तीनः, सः ॥ ७७ ॥ विक्रमते स्मेत्सहते विक्रान्तः । जवनशीलः  
(जेता), तुन् । (जिष्णुः) ग्लान्जिष्यध्वस्तुः (सू०) । (जित्वरे) इणञ्जिसर्तिभ्यःकरप् (सू०) ।  
संयुगे साधुः सांयुगीनः, प्रतिजननिध्वःक्षम् (सू०) । (त्रिषु) बाष्पल्लिङ्गत्वात् ॥ ७८ ॥ बाहो घन्त्वसां

शीर्षण्यं च शिरस्त्रेयं तनुत्रं वर्मं दंशनम् ।  
 उरश्चक्रः कङ्कटको जगरः कवचांस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥  
 आमुकः प्रतिमुक्तश्च पिनस्रश्चापिनस्रवत् ।  
 संनद्धो वर्मिताः सज्जो दंशितो म्यूढकङ्कटः ॥ ६६ ॥  
 त्रिष्णामुक्तावयो वर्मभूता कावचिकं गणे ।  
 पदातिपतिपद्मपादातिकपदाजयः ॥ ६७ ॥  
 पद्मश्च पदिकश्चाथ पादात् पतिसंहतिः ।  
 शास्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६८ ॥  
 कृतहस्तः सुप्रयोगविशालः कृतपुङ्खवत् ।  
 अपराद्धपृष्ठात्कोसौ लक्ष्याद्यभ्युत्सायकः ॥ ६९ ॥  
 धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुर्धरः ।  
 स्थात्काण्डवांस्तु क्राण्डीरः शाकीकः शक्तिहेतिकः ॥ ७० ॥  
 पाटीकपारम्भधिकौ यष्टिपर्वणहेतिकौ ।  
 मैत्रिशिकोसिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७१ ॥

शीर्षण्यम् । शिरसि मर्मं शीर्षण्यं, शरीरावयवयत् ( सू० ), शीर्षच्छन्दसि ( सू० ), येन दिते ( सू० ) ।  
 शिरसायते शिरसाम् । वृणोत्यङ्गं वर्मं । दंश्यते भ्रम्यते दंशनम् । कङ्कटश्च कङ्कटयति कङ्कटते वा  
 ( कङ्कटकः ) । जगतेष्वपि हस्ताजगरः, वन्म, छा- उरश्चक्रः जगरः । कवते कवचः, कं कवचयति  
 वा ॥ ६५ ॥ आमुक्यते बध्ने स्म मुकः । अग्निघाते स्मग्निन्दः । ( निन्दः ) बहि भागुरिरत्रोपम-  
 बाभ्योऽपसर्मयोः ( का० ) इति पक्षेऽप्येव । संनद्धते स्म संनद्धः । वर्मं संजातमस्य वर्मितः । सज्जयते  
 सज्जति वा सज्जः । म्यूढो भूतः कङ्कटोनेन म्यूढकङ्कटः ॥ ६६ ॥ नैवेत्यर्थः । ( कावचिकं ) ठम्-  
 कवचिनश्च ( सू० ) इति ठम् । पादाभ्यामतति गच्छति पदतिः । पादाभ्यामत्राति पदाजिः, पादस्व-  
 पदाज्यातिगोपहतेषु ( सू० ) इति पदः । हस्तपक्षे पद्मः, यक्ष्यं- पद्म भरद्वाजमुनिं लक्षिणम् ( भट्ट० ) ।  
 पादाभ्यामतति पादतिकः, कैणादिक इहः, विनयादित्वात्कार्येण्यत्र ( सू० ) । पतति ( पतते ) पतिः  
 ॥ ६७ ॥ पादाभ्यां चरति पदिकः, पदिभ्यष्टन् ( सू० ), इवेचरतीपदः कस्यात् ( वा ) । पदातीनां  
 समूहः पादाति, निष्ठादिभ्यो ( सू० ) । काण्ड निष्ठं य काण्डपृष्ठः । आयुधेन जीवति, आयुधाच्छयेति  
 ( सू० ) ठन्-छो ॥ ६८ ॥ कृतो सिद्धो हस्तावस्य कृतहस्तः । कृताः पुद्गलोनेनेति कृतपुङ्खः ।  
 अपराद्धा अकम्पलक्ष्णा बाणा अस्यापराद्धपृष्ठकः ॥ ६९ ॥ धन्व- अस्मारित धन्वो, मीमादिनादिनिः  
 ( सू० ) । धनुः प्रहरणमस्य धानुष्कः, ...- प्रहरणमिति ( सू० ) ठक्, इत्युक्तान्तात्कः ( सू० ) ।  
 निषङ्गस्तृणोस्त्यारित निषङ्गी । अस्त्राणि सन्त्यस्यास्त्री । ( कण्ठोरः ) काण्डाशदीरशीरचो ( सू० ) ।  
 शक्तिः प्रहरणमस्य शाकीकः, शक्तियशपोरीकक् ( सू० ) ॥ ७० ॥ पर्वणः परशो न दृष्टः, अतो  
 यष्टिस्थितिहेतिः शक्तिः काष्ठीराः पठन्ति, यन्मुनिः- परध्वः कुटारश्च स्वधितिः, तदस्य-  
 प्रहरणमिति ( सू० ) परध्वपादम् च । निष्ठाशांतिः प्रहरणमस्य नैष्ठाशिकः । ( प्रासिककौन्तिकौ ) प्राक-  
 कृतश्च प्रहरणमस्य ॥ ७१ ॥ वर्मफरोस्त्यस्ति वर्मा । फलति विद्योर्भवे चातेः फलकः, रतयोरेव-



रणगुतिर्वक्तव्यो ना ह्यपरस्तु युगंधरः ।

अनुकर्षो वार्यधःस्थं प्राप्तव्यो ना युगायुगः ( न्तरम् ) ॥ ५८ ॥

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युगं पत्नं च धोरणम् ।

परंपरावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥

आधारण्य हस्तिपका हस्त्यारोहा विषादिनः ।

नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ६० ॥

सध्येषु (३) वक्षिणस्थं च संज्ञा रयकुमुम्बिनः ।

रथिनः स्यन्वनारोहा अन्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६१ ॥

भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।

सेनार्या समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६२ ॥

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।

परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वादिनीपतिः ॥ ६३ ॥

कञ्चुको वारवाणोस्त्रो यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।

बभ्रन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोय शीर्षकम् ॥ ६४ ॥

वस्तु लोहादिमयी वृत्तिः । कृपते चन्द्रयते कृतरः । युगं बोद्धृक्कण्ठकाष्ठं धारयति युगंधरः, संज्ञावा-  
धनुर्वृत्तिरिति ( सू० ) खर् । अनुकृष्यतेनुकर्षः । प्रसज्यते बोद्धृक्कण्ठे प्राप्तव्यः । युगेनातति युगाद्वा-  
दितस्व युगो ना पुमान्, अन्यस्तु कृषिं युगं कालो युगं वा । युगायुगान्तरं वत्सदमनार्थमिति यौद्धा,  
वत्सात्प्राः [ गुणिः ] - युगं द्वितीयं प्राप्तव्यः ॥ ५८ ॥ सर्वं हस्त्यभरणं विमान्तम् । बोद्धृक्  
युगं, युग्यं यथात्रे ( सू० ) इति साधुः । पतन्त्यनेन पत्नं, दास्यतीति ( सू० ) इत् । धोरितेन  
धोरणम् । बोद्धृक्ः परम्परया बाधते, प्राबन्धिकमभ्यासास्थितम् । विनीता ( तका ) नामिदं ( वैनीतकं )  
वाप्ययानादि ॥ ५९ ॥ आधोयते हस्ती यैराधारणाः । हस्तिनः पान्ति हस्तिपकाः । हस्तिनमारोहन्ति  
हस्त्यारोहाः । निषीदन्त्ववश्यं निषादिनः । द्वौ द्वौ मिश्रार्थविलेके, अथौ द्वौ पाकौ परो द्वौ योद्धारौ ।  
नियच्छति नियन्त्रयति नियन्ता । प्राजयति ( प्राजति ) प्राजिता, वानुवृत्तेर्वाभावो नास्ति ( ६० ) ।  
युवति सूतः, पू प्रेम्भे । क्षयति क्षत्ता । सरयस्यापत्तं सारयति वाह्यं च सारथिः ॥ ६० ॥ सध्ये तिष्ठति  
सध्येषु (३), सध्येष्वच्छन्दसीति ( उ० ) ऋन् (ऋः) - विष, स्यास्थित्युगानिति वक्ष्यमाणम् ( वा० )  
वत्सम् । रयस्व कुटुम्बी वाहकः । ( रथिनः ) रथे योद्धारः । ( अन्वारोहाः ) अन्वारोहयाः । सीदन्त्व-  
वश्यं सारी ॥ ६१ ॥ मयति काङ्क्षन्ति युद्धं भटाः । युध्यते योधः, पचायत् ( नन्दिमहीति ) । ( सैनिकाः )  
रक्षतीति ( सू० ) ठक्, प्राहरिकायाः । सेनां समवयन्ति क्रियन्ति ( सैन्याः ), सेनावाचा ( सू० )  
इति षः, पक्षे ठक् ॥ ६२ ॥ बलं सैन्यं, सहस्रं योद्धारः सन्त्यय, तपःसहस्राभ्यां विनीनी ( सू० ),  
अन्वृण ( सू० ) । परिधौ सेनान्ते तिष्ठति परिधिस्थः । परितः समन्ताच्चरति रक्षितुं परिचरः । सेनां  
नयति नियुक्ते सेनानीः ॥ ६३ ॥ कञ्चयते पथ्यते कञ्चुकः । वारमाच्छादकं वानमस्य वारवाणा,  
पूर्वपक्षास्तंशायाम् ( सू० ) इति णत्वम् । वाणवत्स्य व्यत्ययेन मयूरवत्सकादिवा इति व्यभिचः ।  
सारं मनोति ददाति सारसनम् । अधिकमङ्गादधिकारः । सागमनाधिपाद् इत्येके पेठः, वन्मुनिः -  
अधिपाद् सारसनम्, दुर्गस्तु - तस्य सारसनं श्रेयं धिपाद् च निबन्धनम् ॥ ६४ ॥ शीर्षप्रतिकृतिः



नतयोवूः पत्र धारा घोषा तु मीयमस्त्रियाश्च ।  
 कविका तु सखीनोद्री शकं द्वीपे पुरः पुमान् ॥ ५० ॥  
 पुच्छोद्री लूमलाङ्गुले बाछस्तस्य बालधिः ।  
 त्रिपुपापुसलुठिली परावृत्ते गुणमुवि ॥ ५१ ॥  
 याने चकिन्नि मुसार्थे शताङ्गः स्यन्वनो रयः ।  
 भली पुष्प(स्व)रथचक्रयाने न समराय यत् ॥ ५२ ॥  
 कर्णीरयः प्रवृत्ते इयवं च समं त्रयम् ।  
 द्वीपेभ्यः शकटोद्री स्याद्गन्त्री कम्बलिकाक्षकम् ॥ ५३ ॥  
 शिषिका याप्ययाने स्याद्दोला प्रेक्षादिका स्त्रियाश्च ।  
 उभौ तु द्वैपवैयामी द्वीपिचर्मवृत्ते रयं ॥ ५४ ॥  
 पाण्डुकम्बलसंघीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।  
 रये काम्बलवाखायाः कम्बलाविभिरावृत्ते ॥ ५५ ॥  
 त्रिपु द्विपादयो रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।  
 धूः स्त्री द्वीपे यानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५६ ॥  
 चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।  
 पिण्डिका नाभिरक्षामकीलकं तु द्वयोरणिः ॥ ५७ ॥

नासान्तःप्रवेशः । कवते दन्तचर्याणाच्छब्दायत इति कविका । सलति चलति खलानं, खे तालुनि स्त्रीने  
 वा । शप्यते मुवा वृष्यते शपम् । खुरति विलिखति क्षमां खुरः ॥ ५० ॥ मूयते दंशार्तु-सारसति  
 पुच्छं, पूतो छापयति वा । लूयते लूमम् । लङ्गति खलति लाङ्गुलम् । बालो हस्त इव दंशवारणाद्  
 बालस्तः, प्रवृत्ता बाला वा । बाल्य धीयन्तेस्मिन्बालधिः । उपावर्तते स्त्रोपावृत्तांशः । लुठति स्म  
 लुठितः ॥ ५१ ॥ बाधनेन दानं साम्प्रदायिकाद्वयम् । शताङ्गो बहुरकः । स्यन्दते याति स्यन्दनः ।  
 रमन्तेस्मिन् रयः । इतो भटादेः प्राप्रयपकरणम् । पुष्ये यात्रोत्सवादौ मङ्गल्यो रयः पुष्करयः ।  
 चक्रमुक्तं बानं ( चक्रबानम् ) ॥ ५२ ॥ कर्मिषु स्कन्धेषु रयः कर्णोष्णः, दीर्घो लक्ष्यात्, पुष्कपोष-  
 मानो रयः । प्रवहन्त्यनेन प्रवहणम् । इयन्ते विहायसा यान्तीकानेन ( इयनम् ) विमानाह्वयम् । अभिति  
 बीस्फरोत्समः, अकुत् । शक्नोति धारं बोधुं शकटम् । गच्छति तच्छलीला गन्ती शकटिका । कम्बलिभि-  
 र्यन्तैर्बोद्धव्यं ( कम्बलिवाद्यकम् ) ॥ ५३ ॥ ( शिषिका ) शिवा श्रेयस्करी, संप्रदायिकन् ( सू० ) । याप्यस्यास्यपक्ष-  
 यानं, युगात्वं बानमिति गौडः । दोल्यते दोला काष्ठमयी रज्जुप्रालम्बवत् । प्रेक्ष्यते प्रेक्षा  
 हिन्दोलाह्वया । आदिशब्दाच्छया[य]नकादि याप्ययानानुवृत्तेः । द्वीपिनचर्मणावृत्तो रयः, द्वैपवैयाम्रादन्  
 ( सू० ) ॥ ५४ ॥ पाण्डुकम्बलेन प्रावृत्तो रयः, पाण्डुकम्बलादिभिः ( सू० ) । ( काम्बलवाखायाः )  
 परिपुत्रोरयः ( सू० ) इत्यण् । आदिशब्दाद् दुकूलायाः ॥ ५५ ॥ बाप्यलिङ्गात्वाद् द्वीपी गन्ती, द्वेपो  
 रयः, द्वैपमनः । शकटाद्यपि रथत्वेन मन्यन्ते । रथानां समूहे, खलगोरथात् ( सू० ), इतिप्रकृत्यवच  
 ( सू० ) इति वक्तव्यवच । ध्वंसति हिनस्ति बोधार्थं धूः, यस्या अग्रे बोधार्थो वध्यन्ते । बानमुखं  
 रथादेरग्रम् । रथारम्भकं चक्रदन्त्यन्, अपकरोति( कीर्यते ) अपस्करः, अपस्करोरथाङ्गमिति ( सू० )  
 साधुः ॥ ५६ ॥ रथस्य यथैकं तद्व्या रथाङ्गम् । तस्य चक्रस्यान्ते नेमिः, नयतीति । प्रान्ते धीवत  
 इति प्रधिः । पिण्डयतेऽयं यस्यां सा पिण्डिका । नभ्यते हिंस्यतेऽनेन नाभिः । अक्षस्य नाभिक्षेपका-  
 स्तान्तं प्रन्नार्थं कीलकः, अणाति शब्दायतेभिः, लक्षं त्वाणां ॥ ५७ ॥ त्रियते गुण्यर्थे रथां केन च

वीतं त्वत्तारं हस्तयन् वारी नु गजबन्धनी ।  
 चोटके वी( पी )तिरुगगुरंगाम्बुगुरंगमाः ॥ ४४ ॥  
 बाजिवाह्यार्धगन्धर्वहयसैन्यवर्तयः ।  
 आजानेवाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुनादिनः ॥ ४५ ॥  
 बा( व )नायुजाः पारसीकाः काम्बोजा वाहिका हयाः ।  
 ययुरम्बोध्यमधीयो अघनस्तु जवाधिकः ॥ ४६ ॥  
 पृथ्वः स्थीरी सितः कर्को रप्यो वोढा रथस्व वः ।  
 बालः किशोरो वाम्यम्बा वडवा दाडवं गणे ॥ ४७ ॥  
 त्रिप्यार्थीनं यक्त्वेन विनेनैकन गम्यते ।  
 कश्यं नु मध्यमम्बानां हेवा हेवा च निस्वनः ॥ ४८ ॥  
 निगालस्तु गलोद्देशे वृन्दे स्वधीयमाश्ववत् ।  
 आस्कन्दितं धोरितकं रेचितं बलितं प्लुतम् ॥ ४९ ॥

कार्यतेनवा वारी गजदानभूः । चोटके भूषो परिवर्तते चोटकः । वेति वति वीतिः । तुरं त्वरितं पच्छति  
 तुरगः, वः । ( तुरगाः ) खड्गिद्वयः (वा०) । (तुरंगमः) गजयेति (सू०) बाष् । अस्तुत्मानमथः  
 ॥ ४४ ॥ वज्रति तच्छ लो बाजी, बाजाः पक्षा अभूतस्येति वा । बाष्ते बहः । अवति बलवर्षा ।  
 बन्धतेऽयं बन्धः । हयति याति हयः । सिन्धो मरः सेन्धवः, विरोधेऽपि सामन्वृत्तिः । सपति  
 समवेति सतिः । इतां रथप्रहरणाग्रागश्चपरिकरः । आजनेन खेपेमानेवाः ( आजानेवाः ), आयत्ता  
 हस्तैः । विनीयन्ते विनीताः सुचिदाः ॥ ४५ ॥ वनायुजादिषु देशेषु— एते जाता हयविरोधाः । एवं  
 तुच्छराद्वेषि । मध्ये बाह्येऽर्थः । याति— अत्यर्थं ययुः । अश्वमेधाव हितीयमेधीवाः, अश्वमेधच्छ-  
 व (सू०) । अवते तच्छ लो जवनः, जुवह्कर्म्येति (सू०) युक् । मृगादिरपि । प्रजोरिनिः (सू०)  
 इति प्रजवीति च ॥ ४६ ॥ वयुते अस्मदिगुण्येसी पृष्ठः, स.पो वत् ( तत्रसाधुः ) । स्थूराणां  
 वनायुजादेवामनामिदं स्तैर् बल-स्त्यस्व स्थीरी । कर्कः शुक्लोष्णः, क्षियन्ते वर्णांतराभ्यस्येति ।  
 रथं वहति रथः, तद्गृहे तिरययुनेतिवत् (सू०) । कीयते बोध्यते कश्यते वा किशोरः । वाम्यते गर्भं  
 वापी, बाल्यम्— अयोध्यामीशः । हारी (वाहि) तापंम् (रघु०) । वडं वडं हवं वा वति वडवा,  
 क्षतिविषयत्वाद् डं नहिः । अथा त्वजादिः । प्रपूर्णां नार्थे । वडवानां समूहे बालवं, बाष्किद्वयम्ब  
 (सू०) इत्यम् ॥ ४७ ॥ (आश्वानं) अश्वस्येकाहगम इति (सू०) कम् । कशामिदं कश्यम् ।  
 हेव ह्व अम्यके शब्दे, गुरोर्बलइति (सू०) अः ॥ ४८ ॥ निगलन्त्यनेन निगालः, गलो अनुसन्धिः,  
 उन्मोषी इति (सू०) पम् । गलस्योद्देशः प्रदेशः देवममेरावर्तस्य स्थानम् । अश्वानां समूहः (आश्वीव,  
 अश्वं), कश.आश्वान्यायच्छादन्तरस्थाम् (सू०), वसे तु— अनुदात्तार्थम् (सू०) । अश्वानां चारहवा  
 द्याः पञ्च गतवः, चार्यते गतो स्वाप्यतेनया चारा, भिदादिवात्साधुः (विद्विदादिभ्योश्च) । आस्कन्दन-  
 म.स्कन्दितं, उत्तरिताह्वोतिवेगः । धोरणं धोरितं, धोर्ध्वं गतिवातुर्वे । रेचितमुत्तंभिताभ्यम् ।  
 कमात्स्व वा, यदाहुः— धोर्ध्वं बलितं चारा प्लुमुत्तेजितं कमात् । उत्तेरितं वेति पञ्च  
 विद्येतुरगं गतम् ॥ धोरितं गतिमात्रे दयोजनं बलितं पुरः । अमल्यसमुदासत् कुञ्चितार्थं गत-  
 धिक्म् ॥ पूर्वापरोक्षमन्तः कमादारोपणं प्लुतम् ॥ उत्तेजितं मन्थवेनं योजनं श्रवणमवा । उत्तेरितेति-  
 वेगाम्बो न प्लुतोति न पश्यति ॥ ४९ ॥ धोणते शब्देन बलते वोढा । प्रवते वडति श्रोत्रः, वृत्ते

प्रमिषो गर्जितो मत्तः समानुमान्तनिर्मयी ।  
 हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३७ ॥  
 गण्डः कटो मयो वानं वमथुः करशीकरः ।  
 कुम्भी तु पिण्डी शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३८ ॥  
 अवग्रहो छटाटं स्यादीषिका त्वक्षिण्टकम् ।  
 अपाङ्गवेशो निर्याजं कर्णमूढं तु चूलिका ॥ ३९ ॥  
 अघः कुम्भस्य बाह्वित्यं प्रतिमानमघोस्य यत् ।  
 आसनं स्कन्धवेशः स्यात्पद्मकं विन्दुजालकम् ॥ ४० ॥  
 पक्षभागः पार्श्वभागो वन्तभागस्तु योमतः ।  
 द्वी पूर्वपश्चाज्जङ्घाविदेशी गात्रावरे क्रमात् ॥ ४१ ॥  
 तोत्रं वैष्णुकमालानं बन्धस्तम्भेथ शुङ्खले ( ला ) ।  
 अन्दुको निगढोस्त्री स्यादङ्कुशोस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४२ ॥  
 दृष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ।  
 प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४३ ॥

संज्ञातास्य गर्जितः । उद्गमते स्मोद्गन्तः, उग्रम ( उद्गिरणे ) । राजवाणस्त्वैपवाग्रः समाद्यः समरोचितः ।  
 हस्तिनां समूहो हास्तिकं, अचित्तरि, धेनोपृक् ( सू० ) । गजानां समूहो गजतां, गजावेति वक्ष्यमा-  
 त्तल ( गजसहायाभ्यांचेति वक्ष्यम् ) । धयत्येनां धेनुका । वष्टि कामयते वशा ॥ ३७ ॥ ( गण्डति )  
 गडि वदनैकदेशे । कटति वर्षति मदं कटः । मादत्यनेन मदः, मदेनुपसर्गे ( सू० ) इत्यप् । यति  
 ऋण्यत्यनेनेति दानम्, दत्तिर्वा । वम्यते वमथुः, द्रुतेधुक् ( सू० ) । कुम्भाकृती मांससंघातो । वेति  
 संज्ञां बस्मादङ्कुशस्थानात्स विदुः, बत्पालकाप्यः— तत् रक्षावितानं द्वे विदु द्वौ श्रवणे गतौ । प्राक्च  
 पश्चाच्च तिर्यक्च बहुभेदाङ्कुशवारणा ॥ ३८ ॥ अवग्रहोऽङ्कुशोऽवग्रहः । ईषा छाङ्गकक्षीलेव— ईषि-  
 का । निबोत्यनेनाधु नियोगम् । बोत्यते पार्श्वगमनायाङ्कुशेनास्यां चूलिका ॥ ३९ ॥ बाह्यतेनेनाङ्कुश-  
 बोधनया बाह्वित्यम्, मदबाहिनि स्थाने तिष्ठति वा, बाह्यस्यापत्रंशोयम् । अस्व बाह्वित्यस्याघः प्रति-  
 मानं, प्रतिमीयतेनेनेति, दुर्मिन् प्रक्षेपणे, मीनातिमिनोतिदीडांस्त्यपिच ( सू० ) इत्यात्वम् । आस्वतेऽस्मिन्ना-  
 सनम् । पद्मप्रतिष्ठति रक्तवारापकं, तारुण्यं हि हस्तिनां देहं रक्तविन्दवः स्युः ॥ ४० ॥ हस्तिनां  
 योमतो भागः ( दन्तभागः ) । हस्तिनः पूर्वः पादजङ्घादिभागो गात्रम्, पश्चाद्भागोऽपरम् ॥ ४१ ॥  
 तुष्यतेनेन वैष्णवमेन द्वेषणेनेति तोरत्रम् । आलायते बध्यतेज्जालानं, ला— आदाने । शृणाति बन्धनेन  
 शुङ्खलम् । अन्दति बन्धति— अन्दः, अदि बन्धने, स्वायं कन्, इकोहस्वोऽङ्कुशोऽङ्कुशः ( सू० ) ।  
 निगस्यते बध्यतेनेन निगडः । अङ्कयते गम्यतेनेनाङ्कुशः । सरत्यनया सृणिः ॥ ४२ ॥ दृष्यते द्यते  
 वानया दृष्या । कक्ष्या मध्यदेशे भवा कक्ष्या । त्रियन्तनया वरत्रा मध्यबन्धनं, चर्मरज्जुः । ( कल्पना )  
 हस्तिनः सज्जीकरणं, मङ्गलैर्गौरिकादिना शुङ्गारेणेत्येके । प्रवत्येनां प्रवेणी । आस्तीयते हस्तिपृष्ठ आस्त-  
 रणम् । वर्णो वर्णकम्बलो भीमश्च । परिस्तोम्यने प्रस्तीयते परिस्तोमः, वर्णपरिस्तोम इत्येके । कुम्भते  
 कुपा ॥ ४३ ॥ वेति स्म याति भुङ्क्ते च वेति, विशेषेणेतं नष्टं वा । ( हस्त्यर्थ ) सेनाङ्गत्वासमाहारः ।

तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुपरः काल आयातिः ।  
 सावृष्टिकं फलं सद्य उदकः फलमुत्तरम् ॥ ३० ॥  
 अवृष्टं वृष्टितोयावि वृष्टं स्वपरचक्रजम् ।  
 महीधुजामेहिमयं स्वपक्षप्रमयं मेयम् ॥ ३१ ॥  
 प्रक्रिया त्वधिकारः स्यात्स्वाभारं तु प्रकीर्षकम् ।  
 नृपासभं तु यज्ञप्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३२ ॥  
 हेमं छत्रं त्वातपत्रं राक्षसं वृषलक्ष्म तत् ।  
 मद्रकुम्भः पूर्णकुम्भी भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३३ ॥  
 निवेशः शिविरं षण्ढे सज्जनं तृपरक्षणम् ।  
 हस्त्यम्बरपपादातं सेनाद्वयं स्यात्तुष्टयम् ॥ ३४ ॥  
 दन्ती दन्तावलं हस्ती द्विरद्वानेकपो द्विपः ।  
 मतद्गजो गजा नागः कुजरो धारणः करी ॥ ३५ ॥  
 इभः स्तम्भेरमः पद्मी यूथनायस्तु यूथपः ।  
 मद्योक्तो मयकलः कलमः करिशावकः ॥ ३६ ॥

तत्कालः । तदेत्यस्य भावस्तदात्मम् । एष्यत्यायतिरागामी कालः । संवृष्टं प्रत्यक्षं प्रयोजनमस्य सावृष्टि-  
 क्रम् । समनिहनि सद्यस्तात्कालिकं फलं, सद्यःपक्षपराधीति ( सू० ) साधुः । उद्वृष्टैर्भिलम्बैस्त्वृष्ट  
 उदकः ॥ ३० ॥ भयमित्युत्तरेण योजयम् । आदिद्यब्दात्पिशाचाशान्यादि । स्वराष्ट्राच्चौराष्ट्रविकोविमंभम्,  
 परराष्ट्राहृषिलोपादिभवं च । स्वपक्षाद्राजपुत्रादेरहेरिव गृहस्थिताद्रयम् ॥ ३१ ॥ प्रारम्भात्करणं प्रक्रिया ।  
 अविक्रियते प्रस्तुततेधिकारः, व्यवस्थाप्यापनमित्यर्थः । चमर्या इदं चामरम् । प्रकीर्षते निक्षिप्यते प्रकी-  
 र्णम् । भद्रस्यासनं, भद्रं रूप्यादिमयं वासनं भद्रासनम् । हेम इदं हेमं सिंहावलक्षितमासनम् ॥ ३२ ॥  
 छाषतेनेन च्छत्रम् । आतपात्प्रायत आतपत्रम् । तच्छत्रम्, यज्ञस्य- नृपातेकजुर्दं दत्त्वाः पूजे सिंहात-  
 पवारणम् ( रघु० ) । भद्रार्थं भद्रो वा कुम्भः । भुज्यते भ्रियते वा मृङ्गारः । सोर्षणं धातुः ( कनका-  
 लुका ) ॥ ३३ ॥ निवेश्यते संनिवेशेन स्थाप्यते निवेशः सेन्यावासः । शेरतेरिमंशिविरम् । स्वस्था-  
 वारोपि । सच्छोभनं जन्यतेनेन सज्जनं सज्ज्यतेनेन वा । उपरक्ष्यतेनेनोपरक्षणं सेन्यस्य प्रमुनीकरणं  
 गुल्मको वा । चतुरङ्गा हि सा ( सेना ), पदातीनां समूहः पादातं, भिक्षादिवात् ( सू० ) अण् ॥ ३४ ॥  
 दन्ती स्तोत्र दन्ती दन्तावलः, दन्तशिखान्तज्ञायां ( सू० ) इति बलञ्, बले ( सू० ) इति दीर्घः ।  
 हस्ती, हस्ताज्जाती ( सू० ) इतीनिः । द्वौ रदावस्य द्विदः । न एकेन पिबत्यनेकपः । द्वाभ्यां पिबति  
 द्विपः । मतद्वावृष्टेर्जातो मतद्गजः । गजति माद्यति गजः । नगे भवो नागः, न- भवो वा । कुजो  
 कुम्भाधोगतीं दृष्टे वा स्तास्य कुजः, ( प्रकरणे ) समुसकुजेभ्योरोवक्यः ( वा० ), कुजेतु रमते,  
 वः । वारवत्यरीन्धारणः ॥ ३५ ॥ एतीभः । स्तम्भे तृणे रमते स्तम्भेरमः, स्तम्भकर्षणोरोरभिजपोः ( सू० )  
 इत्यञ् । पद्मानि यौवने रक्तविन्दवोस्य सन्ति पद्मी । सामजः सिन्धुरः कुम्भी च । इतोर्भ्यः प्राग-  
 जवर्गः । मदेन दानाम्युना कलो मनोज्ञः । कलो भाति कलभते वा कलभः ॥ ३६ ॥ प्रभियते स्म प्रभिमः । गजौ



पञ्च शिखण्डादीनां यस्तुतीयाद्यमोचरः ।  
 विषिकाविष्णुपुनःपानिःशालाकास्तथा रहः ॥ २३ ॥  
 रहयोपांशु पाणिष्णे रहस्यं तन्त्रवे त्रिषु ।  
 समी विषा ( स ) म्मविष्वासी श्रेयो ग्रंशो यथोचितात् ॥ २४ ॥  
 अन्नेषन्त्यायकस्यास्तु देशकपं समजसम् ।  
 पुकमीपदिनं लम्प्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २५ ॥  
 न्यास्यं च विषु पद् संप्रधारणा तु समर्थनम् ।  
 अबवापस्तु निर्देशो निर्देशः शासनं च सः ॥ २६ ॥  
 शिखिवासा च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।  
 भागोपराधो मन्त्रुष्य समं तुद्धानपन्धने ॥ २७ ॥  
 द्विपापो द्विषो दण्डं भागधेयः करो बलिः ।  
 सुप्रविष्टं तुल्योदी प्राभृतं तु प्रवेशनम् ॥ २८ ॥  
 उपोयनमुपपाद्युपहारस्तथोपका ।  
 यौतकादि तु यदेष सुदायां हरणे च तत् ॥ २९ ॥

दीपो मन्त्रः, अष्टदशः शितं वलंकर्मेति ( सू० ) स्वार्थे लः, यदाहुः—पट्टकर्णो भिद्यते मन्त्रः । विवि-  
 ष्यते पृथक् कियते स्म विविष्मम् । विगतो जनो ( यतः ) विजनम् । छाद्यते स्म छत्रम् । निर्गता शलका  
 व्ययकोत्र निःशलाकम् । रहयति रह इत्येको रहःशब्दः सान्तः क्लेशे ॥ २३ ॥ अन्नेषोऽप्ययम् । अन्ने  
 अलिङ्गे द्वे ( रहयोपांशु च ) । अनुरहसं च । रहसि भवं रहस्यं, दिगादित्याद्य ( सू० ) । विधम्मन्  
 किञ्चिन्मन्त्राभासः । यथोचितादुपाङ्गं ( सु० ) धःपातो श्रेयः, श्रेयं चलने ॥ २४ ॥ नियतमीयते  
 म्बावः, परिन्योर्नीणोः ( सू० ) इति घञ् । कल्पनं कल्पः सामर्थ्यम् । दिग्भवमानस्तथोचितस्व कर्तृ देश-  
 रूपं, प्रशस्तं देशनं वा । सम्यगजसा सत्यमत्र समजसम् । उपाय एवोपधिकं, विनवादिस्थात्—उपाद्यो  
 हस्तत्वं च ( सू० ) इति ठक् । अभिनीयते स्माभिनीतम् ॥ २५ ॥ तद्व्याप्यं, नवादादनपेतं, धर्मपञ्च-  
 र्हेति ( सू० ) यत् । उचितं सान्तं च । संप्रधार्यते श्रेयं स्वरूपमापयते ययति संप्रधारणा मुक्तामुक्तापरीक्षा ।  
 अवनम्य ददनमववाधो मुक्तस्वरूपम् । निःशेषेण देशनं निर्देशः । नियतं देशनं निर्देशः ॥ २६ ॥ शासनं नियोजनं  
 शितिः । आश्लापनमाहा । संतिष्ठतेनवा संस्था । मर्याते मर्यापार्थं ( सीमार्थं ) प्रत्ययं, तत्र दीयते  
 मर्यादा । आ—अगति कुटिलं गच्छति—आगः, असन्तः क्लेशे । मन्त्र्यते हृदि मन्तुः । हृदि क्लेशमन्तु-  
 रानं, शेषलब्धने, शेष रक्षणे वा ॥ २७ ॥ द्वी पादौ प्रमाणमस्य द्विपाद्यः, पणपादमापयत्युपत् ( सू० ),  
 प्राप्यङ्गत्वाभावात् पण्यलतदर्थे ( सू० ) इति पदभावाभावः । भागोश एव भागधेयः, नामरूपमायेन्वो-  
 धेयः ( वा० ) । कथ्यते प्रत्येकं करः । बलन्तेनेन यन्त्रिः, राजप्राहाः पट्टमागादिर्भागः । प्रत्येकं स्वावर-  
 जङ्गमादिदेवः करः । निषोऽप्योपजोऽथो बलिरित्यवान्तर्भेदोर्ध्वाश्लोको नाश्रितः । चक्रन्तेनेन यद्वति  
 वा यथे नवीतरस्यामम् । आदिशब्दाद् गुल्मप्रतोल्यादौ प्रावेश्यनैका ( एक ) म्यदभ्यङ्गा राजप्राहा भागः  
 शुल्कः, शब्दति शलति वां मुखेन यात्यनेनेति । प्रकर्षेणाराधनार्थमाश्रियते बौधम्ये स्म प्राश्रितम् । प्रि-  
 श्वते प्रदीयते प्रदशनम् ॥ २८ ॥ उप समीपेऽयतेनोपायनम् । उपगृह्यत उपप्राप्तम् । उपप्रिष्टत उप-  
 हारः । उपदीयत उपदा । कौशलिकं दौकनं च । उपदादौच इत्येके, उपप्रदानमुक्तेच उपदा कथवा  
 समाः । युतयोर्वधुवरयोरिदं यौतकम् । आदिशब्दाद् बन्धुवतादि । सुष्ठु दीयते सुदायः, स दाय इत्येके,  
 यौतकादि धनं दायो दायो दानं च कथ्यते । द्वियते हरणम् ॥ २९ ॥ स यद्वी काद्य



लिखिताक्षराविन्यासे लिपिर्लिखितमे लिखी ।  
 स्वास्त्वैश्वरो दूतो दूत्यं तज्जायकर्मणी ॥ १६ ॥  
 अश्वनीनोऽश्वगोऽश्वन्यः पान्यः पथिक इत्यपि ॥ १७ ॥  
 स्वाम्यमात्यस्तुत्कोशराष्ट्रगुणबलानि च ।  
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोपि च ॥ १८ ॥  
 सन्निधर्मा विग्रहो याममासनं द्विधमाश्रयः ।  
 बह्वं गुणाः शक्तयस्तिष्ठः प्रभापोऽस्ताहमन्त्रजाः ॥ १९ ॥  
 क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रियगोः नीतिर्विद्वानाम् ।  
 स प्रतापः प्रभावश्च यत्तजः कोशदण्डजम् ॥ २० ॥  
 भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ।  
 साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमयो समौ ॥ २१ ॥  
 भेदोपजापापुपधा धर्मोऽर्थ्यत्परीक्षणम् ॥ २२ ॥

जक्षराविन्यासे तस्य वर्तते । लिख्यते स्म लिखिता (-तम्) । लिप्यतेन च पत्रं लिपिः । ( लिपिः )  
 जपादित्वात् ( ग० ) पक्षे वत्वम् । सादेश्यते सदेशो मुखस्वरूपम् । द्यतेनेन दयोऽक्षादक्षात्पर इति  
 इतः । ( दूत्यं ) दूतवणिग्भ्याञ्चतवकम्प्यात् ( वा० ) यः ॥ १६ ॥ अप्यानं अश्वदण्डनीनः, अश्व-  
 नोयत्सौ ( सू० ) । पन्यानं गच्छति पथिकः, पथःपथन् ( सू० ) । पन्यानं नित्यं गच्छति पान्यः,  
 पन्योणमित्यं ( सू० ) इति णः पन्यादेशश्च । अदुराविप्रकर्षस्त्रययोः पर्यायत्वम् । हे ( हे )-  
 शिकोपि । पाथेयं शम्बलम् ॥ १७ ॥ स्वं विद्यतेस्व स्वामी, स्वामिषैश्च ( सू० ) इति  
 साधुः । अमा सह समोपे वा भवोऽमात्यः, अमहकृतसितेभ्यस्तद्वाधैर्गोच्ययात्स्मृतः ( का० )  
 इत्यप् ( अव्ययात्स्यप् ) । कृतेने मृग्यत इति कोशः, कुणातः कोष इत्येकं । राजतं  
 राष्ट्रम् । दुःखेन गम्यतेऽस्मिन्दुर्गं, सुदुर्गोधिकरणेचातं ( वा० ) ङः । बलन्त्यनेनेति बलम् । अह्यान्वा-  
 रम्भकानि । णक्षित्यनेनया प्रकृतः । एकमुद्ध्यः सजातीयसमूहः श्रेणः । प्रकृतयो राज्याङ्गानीत्येव,  
 वत्कात्वाः- अमात्याणाञ्च पौराण्ये सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः ॥ १८ ॥ सञ्चानं सांघः, एकत्वमित्यर्थः ।  
 विरुद्धं प्रकृतं स्वत्वानापरमण्डलं दाहयिलोदावेप्रहः । यानं यातव्यं प्रति यात्रा । आसनं विग्रहादिनि-  
 श्चिः । द्वौ प्रकारौ द्वैधः, द्विभ्योऽधपमुम् ( सू० ), एकेन संभायान्यत्र यात्रयर्थः, बद्धा- बन्धिनोर्द्विधतो-  
 र्मथे बन्धमानं समर्पयन् । द्वैधोभावेन वर्तते काकाक्षिबद्व्यक्षितः ॥ अशक्त्या बहवदाधवणमाश्रयः ।  
 गुणा गण्योपकारकः । शक्तयेन जतुमाभिः शक्तयः । कोशदण्डिः प्रभुशक्तिः । उपम्य सहनमुत्साह-  
 शक्तिः । मन्त्रः पञ्चाङ्गो मन्त्रशांखः ॥ १९ ॥ प्रागवस्थानतः साक्षात्सदयोरपचयः क्षयः, साम्यं  
 स्थानं, उपचयो वृद्धिः । नोनेऽन्यत् धर्मद्विखगः [ एतत्त्रय नीतिर्विद्वानां राज्ञां त्रिवर्ग इत्युच्यते ] ।  
 प्रतपन्त्यतेन प्रतापः । प्रभवन्नयेन प्रभवः । तज उत्पत्त्यं, यद्गूरुनः- अधिलपावमानादेः प्रयुक्तस्य  
 पेष यत् । प्राणालयेष्यसहनं तत्तत्रः समुद्रहृत् ॥ २० ॥ उत्त्येनोपचयः । मायाऽस्तेन्द्रजालान्वत्रै-  
 वन्तर्भूतानि । सहसि बले भवे वाहसन् । स्वति वेरं सामयति वा साम प्रियवचनानि, साम सन्ताने ।  
 सान्त्व सामप्रयोगे ॥ २१ ॥ संतयोर्भेदनं भेदः । उतांशु जानमुत्रात्राः । उपचयते समीपे डीक्यते  
 परीक्षार्थमुपधा, धर्मकामार्थमयोन्यावेनाशयान्वेषणं, यत्कोटिलयः- उपधभिः शोचानोऽवाराजान-  
 ममास्यानाम् ॥ २२ ॥ पथ ( शब्दाः ) निःशलाकान्ता वक्ष्यमाणे वाच्यलिङ्गाः । न वक्ष्यामि यत्रावह-

उदासीनः परतरः पाष्णिमाहस्तु पृष्ठतः ।  
 रिपो धैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्वैः ॥ १० ॥  
 द्विद्विषपक्षाहितामित्रवस्तुशात्रवशाप्रवः ।  
 अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपारिपन्थिनः ॥ ११ ॥  
 वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत् ।  
 सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोनुवर्तनम् ॥ १२ ॥  
 यथाह्वर्णः प्राणिधिरव ( प ) सर्पश्चरः स्पर्शः ।  
 चारश्च गृहपुरुषश्चातः प्रत्यापयतास्त्रिषु ॥ १३ ॥  
 सांवत्सरो ज्यातिषिको देवज्ञगणकावपि ।  
 स्युर्माहूतकमाहूतज्ञानकातोन्तिका अपि ॥ १४ ॥  
 तान्त्रिको ज्ञातासिद्धान्तः सत्त्वा गृहपातिः समौ ।  
 लिपि ( पि ) करोक्षरचणाक्षरचुडचुम्ब लेखक ॥ १५ ॥

इयोदासीनः शत्रुमित्रभेदयोः ब्रह्मानं एव तदस्यः । न जे तुः पश्चात्कृतं राजा, पाष्णिमेव पाष्णिगृहा-  
 ल्यदृष्टान्ति ( पाष्णिग्रहः ) । प्रत्यन्तं दृष्टमगजकण्डलं परिसमाप्तं यदाहुः- अरिर्मेलमरंमित्रं  
 मित्रमित्तमतः परम् । तथा शत्रुमित्राश्च च पात्रगणाः पुरःस्थाः ॥ पाष्णिग्रहस्तथास्त्वं कर्तुं आसा-  
 रश्च तयोः पृथक् । मध्यमांथायुदासीन इति द्रष्टव्यं जवम् ॥ रपयते रियः, रघु गतो । समानं पणर-  
 कापीभिनिवेशान्तरः । इत्यारिः । इष्टद्वयम् । द्विषामेव ( सू० ) इति शत्रु । द्विषे तच्छलो  
 द्वेषः, कुशमण्यार्थेभ्यश्च ( सू० ) इति युज् । दुष्टं हृत्प्रमय्य दुर्हन्, सहृद्दुहृदोमतामलयोः ( सू० )  
 इति साधुः ॥ १० ॥ विरुद्धः पक्षो विपक्षः । शमलामित्रः । शातयति शत्रुः । ( शात्रवः ) प्रह्लादि-  
 भ्यश्च ( सू० ) इति पक्षद्वयम् । अभिहृन्मन्त्रिणानां । प्रियतं पयः, पृष्ट व्यायामे । इत्यस्यगतिः । प्रताप-  
 मर्षयते प्रत्यर्थी । पारिपन्थ्यातः पारिपन्थी, छन्दोऽपरिपन्थ्यदर्शयणं पयश्चातिरि ( सू० ) इति साधुः ।  
 प्रत्ययस्थाता प्रत्यनीकः पारिपन्थकापि । [ आन्तर्यामिन्सहस्रं द्रव्यं जघामुपयन्तीति ] ॥ ११ ॥ वयसा तुभ्यो  
 वयस्यः, नावयोधंमोत ( सू० ) यत् । समानं वयस्य संवयाः । मथानं विह्वलितं मित्तम् । समानं  
 कृषाति सखा, समानेभ्यःसंबोदातः ( उ० ) इति ( स ) डिञ् गृहापश्च । सहयुमोवः सख्यः, स-  
 ह्युयः ( सू० ) । सप्त पदानि क्रमाः मुप्तिदन्तानि वा व्यानोऽन ( मन्त्रपदान् ), स सप्तपदानमख्यं ( सू० ) इति  
 साधुः । तदोपासकस्यापि सप्तपदानः । साहृद् साहाद् सौहृदीयमत्र च । इच्छन्त्यनो गर्थः, अनुकूल  
 काम ॥ १२ ॥ देशकालेनितो वणे आकारो जातिवर्णनं वास्य यथ हर्षणः । प्रत्ययगुणध्वजपयः  
 प्रणिधिः । अवच्छिन्नं संपत्यवसरः । चरति चश्चरश्च, उल्लासिचरः । चरति चश्चरश्च, उल्लासिचरः ।  
 स्पर्शति बाधते परान्तरः । आप्यते स्मामः, अविसंवादिशक् । अन्यः । भाग्ये-य प्रत्ययितः ॥ १३ ॥  
 संवत्सरः कालोपलक्षणं, तद्वद् सांवत्सरः । तदर्थान्तिद्वद् ( सू० ) इति । उदासीनः प्रह्वानाभक्तः  
 कृतो ग्रन्थो ज्यातिषः, ज्यातिष वेद ज्यातिषिकः, कृतव्यादिः प्रत्ययः ( सू० ) । एवं पणकृतं क्रम  
 जानाति देवज्ञः । मुहूर्त वेद गोहूर्तिकः, क्रतुव्यादिः ( सू० ) इति । ज्ञातृज्ञानमस्यातीति ज्ञानी ।  
 कृतान्तं वेद कातोन्तिकः ॥ १४ ॥ तदोपासकः तदोपासकः । तदोपासकः तदोपासकः । तदोपासकः तदोपासकः ।  
 तान्त्रिकः । सिद्धो निवासीति श्रुतिपातस्तः । निवासी । तदोपासकः । तदोपासकः । तदोपासकः ।  
 लिपि करोति, दिशविभेति ( सू० ) इति । अक्षरेर्विज्ञाक्षरचणः, तनावतधुञ्चुपचणपी ( सू० ) ॥ १५ ॥

राजन्यकं च वृषतिक्षत्रियाणां नये क्रमात् ।  
 मन्त्री धीमधिवामात्योन्त्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥  
 महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहितः ।  
 द्रष्टरि द्यवहाराणां प्रादुर्वाकास्तदर्शकाः ॥ ५ ॥  
 प्रवि(ती)ष्टारो द्वारपालश्च स्थव्रः स्थितदर्शकाः ।  
 रक्षिवर्गस्तुवीरस्थायाध्यक्षाधिकृती समी ॥ ६ ॥  
 स्थायुकोपिष्ठतो मामे गांपां ग्रामेषु धुरिषु ।  
 मीरिक्कः कम्प्राध्यक्षां कृप्याध्यक्षास्तु नैष्किक्कः ॥ ७ ॥  
 अन्तःपुरं त्वधिकृतः स्थापन्तर्वशिको जनः ।  
 सौविदहाः कञ्जुक्किनः स्थापस्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥  
 श( व ) पदां वर्षयरस्तुत्वी सेयकार्थमुज्जीविनः ।  
 यिपयामन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

न्यानां समूहो राजन्यकम्, गोत्रोक्तोऽस्ति ( सू० ) वृम् । मन्त्रः कर्तृपावधारणमस्त्यस्य मन्त्रो ।  
 धिया सचनि समपेति प्रांसचिवः । अमा सह समोपे वा भवोमात्यः । सामवायिकोपि । ततो मन्त्रिणो-  
 न्यमात्याः कर्मसदाया नियोग्यास्याः ॥ ४ ॥ अमात्या इत्येव । महती मात्रा परिच्छद एषां महामात्राः ।  
 प्रदधाति प्रधानमादिष्टविद्युक्तम् । पुरो धीयते दिनोति वा पुरोहितः । सौवस्तिकोपि । इष्टु निर्मेता ।  
 व्यवहारं कृप्यानादिन्यायः, बस्तुमिति- वि नानाधेय संदेहे हरणं द्वार उच्यते । नानासंदेहहरणाद्  
 व्यवहारः प्रकीर्तितः ॥ पृच्छतीति शब्दः, किम्वाचिप्रच्छिन्नाति ( उ० ) किं दोषोऽक्षप्रसारणं च ।  
 प्रादुर्वाको विविधे वाक् ( विपाकश्च ) प्रादुर्वाकः । अद्याप्यायमुखानि स्थानानि वा पश्यति ( अक्षदर्शकः ),  
 आक्षदर्शकोपि । धर्माधिकारिकोऽक्षपटलिकश्च ॥ ५ ॥ प्रतिहिद्यन्ते वाप्यन्तेनेन प्रतिहारः । द्वारि तिष्ठति  
 द्वाःस्थः । द्वारं स्थितं दर्शयत्योपदेयति ( द्वाःस्थितदर्शकः ), द्वे संज्ञे इत्येके, द्वाःस्थित एव हि दर्शयति,  
 द्वाःस्थोपस्थितदर्शका इत्येके पेटुः । दण्डी दीवारिको वेत्रो, उत्सारकश्च । अङ्गारककृन्वं, अनीकं  
 तिष्ठत्यन्यकृत्वा । राक्षसध्वजिच्छायां बति शान्तातः । अधिष्ठतोऽध्यायमुखेऽध्यायः, अध्यायमिति वा,  
 अध्यायः, अध्यायः, अध्यायः, अध्यायः ॥ अधिष्ठिते- उपरि नियुज्यते स्माधिष्ठितः ॥ ६ ॥  
 तिष्ठति तच्छिष्टः, लक्षपतपदस्याभ्युपेत्युक्तम् ( सू० ) । अधिष्ठित इत्येव, गां भुवं पाति योपावति  
 वा गोपः । धुरिषोऽति निरुक्तो धौरिकः । हेरिक इति पाठे हिरण्ये नियुक्तः । रूपमादृतमस्य रूपं दीनारादि-  
 रूपमादृतप्रकारोऽयम् ( सू० ), निन्दे दीनारादौ नियुक्तो नैष्किक्कः ॥ ७ ॥ वंशस्थान्तरन्तर्बैशं कुल,  
 वियस्ताः सन्त्यस्थान्तरन्तर्बैशः, अन्तःपूर्वपदम् ( सू० ) इत्येकं । जनः कञ्जवामनद्विष्टम्हः । सुवि-  
 दन्तं विवाहं जानन्तं कान्ति सुविदहा ऊढाः स्त्रियः, तत्र भवाः सौविदहाः । कञ्जुक्किं विनीतवेष्टा-  
 मस्त्यस्य ( कञ्जुक्किं ) । कञ्जुक्किं वंशस्थायां स्थापयन्ति स्थापत्याः, बदा तिष्ठन्त्यस्मिन्वेष्टाः स्त्रियः, धम-  
 र्शकः ( वा० ), स्थयादौ पतिः स्वपतिः, तत्र भवा इति, दित्यदित्यादित्यपत्तुत्तरपदार्थः ( सू० ) ।  
 उपदेष्टोऽद्वय इमे धौविदाः ॥ ८ ॥ क्षाम्यति क्षण्डः, अत एवान्तःपुरपालकः । वर्षे रेतःसेकं नृजाल्या-  
 द्यादयति वर्षरः, इव क्षणप्रतिबन्धे वा । अर्धयते तच्छीलार्थी, अर्धाभासनिहिते ( वाः ) इतानिवां ।  
 मिमिगीपुदिप्यात्स्वपदितः ( शत्रुः ) । अतः सन्तोः परभूमिस्थं विजिगीषोमित्रम् ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वमाश्रीन

तथा परिषदीद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ।  
 व्यवायो धाम्यधर्मो मैथुनं निपुवनं रतम् ॥ ५७ ॥  
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ।  
 सबलस्तेष्वनुमं ज्ञान्याः सिग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥  
 इति ब्रह्मवर्गः । ७ ।

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियां विराट् ।  
 राक्षि रादपार्थिवस्मामृषूपमृषमहीक्षितः ॥ १ ॥  
 राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।  
 चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपान्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥  
 यनेष्टु राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।  
 शास्ति यश्चाज्ञाया राज्ञः स सम्राडथ राजकम् ॥ ३ ॥

व्यवयनं व्यवायः । मिथुनस्व क्रीपुंसयोर्दिदं मैथुनम् । मिथुनन्तेज्ञान्यादिमिश्रपुवनम् । रमणं रतम् ।  
 रतिः संवेदानं रहः सुरतं समोहनं संप्रयोगोपि ॥ ५७ ॥ त्रिसंख्याको वर्गः, धर्मकामार्थैस्त्रिवेधः । चतुर्णां  
 भद्राणां समाहारश्चतुर्वेदः, पातादः ( पात्रायन्तस्य न ) । तैर्धर्मकामार्थैः, यत्काश्चिद्वेदः— ब्राह्मणत्वारि  
 भद्राणि बलं धर्मं सुखं धनम् । जनीं— वधुमर्हन्ति ( वहन्ति ), संज्ञायां ज्ञान्याः ( सू० ) इति साधुः ।  
 जामातुर्वयस्याः, जनीवोडारोपि, यल्लक्षम्— यातेति ज्ञान्यान्वदकुमारी ( रघु० ) ॥ ५८ ॥ इति  
 ब्रह्मवर्गः । ७ ।

मूर्धन्यभिषिच्यते स्म, मूर्धावसिक्तोपि । राज्ञोपत्यं राजन्यः, राजश्वशुराद्यत् ( सू० ) इत्यत्र राज्ञोपत्ये  
 जातिप्रहणम् । हिरण्यगर्भेबाहुभ्यां जातो बाहुजः, बाहु राजन्यः कृत इति श्रुतेः । इत्यत्रस्यापत्यं  
 जातिः क्षत्रियः, क्षत्रादृषः ( सू० ) । क्षत्रं च क्षत्रत्राणान् । राजते राट्, ब्रह्मभस्मस्वजमुज्जति  
 ( सू० ) बलं, सलांजशोन्ते ( सू० ) इत्वं, वावसाने ( सू० ) चत्वम् । पृथिव्या रक्षा पार्थिवः,  
 सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणो ( सू० ) । महीं क्षियत्यधिपतिं महोक्षित् । [ नराधिपत्य ] ॥ १ ॥ अच्युपरीष्टे  
 तच्छीलोधीश्वरः । क्षप्रतिरथोपि । नृपचक्रं राजके वर्तते स्वाभ्येन, चक्रं राष्ट्रं वर्तयति वा चक्रवर्ती ।  
 सर्वभूमा भूमेरीश्वरः सार्वभौमः, अनुशक्तिकादित्वात् ( सू० ) उभयपदद्वयदिः । अत्राहुः— रामो दाशरथी  
 रावणारिकाकुलस्थराचवाः । सोमित्रिलक्ष्मणो लङ्कापनिषौलस्यरावणाः ॥ दशास्त्रीपान्त्रिजिन्मैषादो  
 मन्दोदरीमुतः । आजनेयस्तु हनुमान्हनूमान्माहतामजः । किष्किन्धाधिपसुग्रीवो द्वौ जटायुजटायुवौ ॥  
 अजातशत्रुः शल्यारिधर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । राधेयोद्गाधाधिपः कर्णो भीमसेनो हिडिम्बाजित् ॥ मांशतिः  
 कीचक्षरातिर्षकवेरी वृकोदरः । धनंजयोर्जुनः पाप्यो विजयः शकनन्दनः ॥ गान्धीवी फाल्गुनः सम्य-  
 साची मध्यमपाण्डवः । जिष्णुः किरीटी धीमत्सुः श्वेतवाजी कपिश्वजः ॥ पूषा कुन्ती च कृष्णा तु  
 पाश्वाली बाह्मन्यपि । द्रौपदी विक्रमादित्यः साहसाङ्कः शकान्तकः ॥ शूद्रकस्त्यमिमिश्रो वा शूद्रः  
 स्याच्छालिवाहनः [ सातवाहनः ] । धैरोचनो बलिः कार्तवीर्योर्जुनः सहस्रदेः ॥ अन्नो भूमिकदेवो  
 नृपः ( स मण्डलेश्वरः ) ॥ २ ॥ इत्यते स्मेशम् । मण्डलस्य द्वादशराजकस्य, समुदितं लक्षणं चैतत् ।  
 सम्यग्जाति सम्राट्, मोराजिसमःको ( सू० ) इति मस्य मः ॥ ३ ॥ राज्ञां समूहो राजकम्, राज-



अङ्गुलिभ्यो तीर्थं वैवं स्वल्पाङ्गुल्यामूले कायम् ।  
 म०५२ ॥ ७४ ॥ अङ्गुल्योऽपि त्र्यं गूले त्वङ्गुलस्य ब्राह्मम् ॥ ५१ ॥  
 स्याद् ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।  
 देवभूयादिकं ब्रह्महृद्यं सान्तपनादिकम् ॥ ५२ ॥  
 संन्यासवत्पनंशने पुमान्प्रायोध वीरहा ।  
 नष्टाग्निः कुहनालो भान्मिथ्यैर्योपथकल्पना ॥ ५३ ॥  
 ब्राह्म्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः ।  
 धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरयकीर्णी क्षतव्रतः ॥ ५४ ॥  
 सुप्ते यस्मिन्सन्तमेति सुप्ते यस्मिन्सुदेति च ।  
 अङ्गुमानभिनिर्मुक्तम्युदितौ तौ यथाक्रमम् ॥ ५५ ॥  
 परिवेत्तानुजोनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ।  
 परिवेत्तिस्तु तज्ज्यायान् विवाहोपयमी समौ ॥ ५६ ॥

स्तीर्यते दीयते तीर्थम् । स्वल्पा कनिष्ठाङ्गुलिः, द्विदमज्जलिभ्यश्च प्रजापतिभ्यो जलदानाप्रानात् ।  
 कः प्रजापतिर्देवतास्य कार्यं, करेत् (सु.) इत्यण्- इत्वं च । अङ्गुलिस्तत्रैवत्य, पितरो देवतास्य पितृ-  
 तीर्थं, वाय्वृत्तिप्रसोयत् (सू.) । ब्रह्म देवतास्य ब्रह्म तीर्थं, ब्राह्मोजाते (सू.) इति साधुः,  
 यथाहावल्गवः- कनिष्ठ-देशेन्यङ्गुलमूलान्यभं करस्य च । प्रजापतिर्वितृवन्नदेवतीर्थाननुकृमात् ॥ ५१-  
 मध्यं सौम्यं त्वादुः ॥ ५१ ॥ ब्रह्मणो ज्ञानस्य भवनं ब्रह्मभूयं, ब्रह्मणश्च (कर्म) मोक्ष इत्यर्थः,  
 भुक्तिभावे (सू.) इति वयम् । सह युनक्ति सयकृ, तस्य भावः सायुज्यम् । तद्वर्तिन देवत्वं देवसायुज्यं  
 च । आदिगद्यन्मूर्धभ्यादे । कृन्तति पापं कृच्छ्रं नाम तपः । तद्वर्तिन भवं सातपन, कृत्स्न्युतिः-  
 अहं सार्यं यद्वं प्रातस्त्रयहमयादयाचितम् । इदं परं च राष्ट्रीयं कृच्छ्रं सातपनं स्मृतम् ॥ आदि-  
 गद्यहमयादि ॥ ५२ ॥ संन्यसनं सर्वस्यागः, (तद्युक्तः) मरणध्ववतायः (प्रायः) । पुमानिति प्रायस्य  
 सान्तत्वं मादिज्ञायीति, प्रायोपवेशनमतिवृत्तिर्बभूव (रघु.) । नष्टाग्निः, वीरयते वीरोऽग्निस्तमुपेक्षया  
 हन्ति (वीरहा) । ईर्योपयाह्यस्य मिथुव्रतस्य दम्भेन परिवेत्तापनार्थं मिथ्याकल्पना कुहना, कुह निस्सा-  
 पनेस्मायुच् । अर्धसिंघाया विज्ञानदर्शनं वा कुहनिकाहयम् । शाश्वतस्त्वाह-ईर्ध्यालुर्दम्भचर्यां च कुहनः  
 कुहना कृत्वात् ॥ ५३ ॥ व्रते साधुः काले ब्रह्मः, तत्र भवो ब्राह्मः प्रायश्चित्तार्हः, संस्कारोत्तोपनवनम्,  
 वास्त्युतिः-सावित्रीपतिता ब्राह्म्या ब्राह्मस्तोमादृते क्रतोः, व्रतेऽसाधुरित्येके, पृथग्व्यपदेशेनेत्यर्थः । निरा-  
 क्रियते वेदहीनत्वाभिराकृतिः, आकृतेर्जातेर्वा निष्क्रान्तः, यत्स्युतिः-अनधीत्यु तौ वेदमन्त्रं कुर्वते  
 धर्मम् । स जीवन्नेव शाश्वतमाशु गच्छति सान्द्रः ॥ धर्मो ध्वजध्विभवाः सस्य धर्मध्वजी । लिङ्गाव्या-  
 देवैर्जिर्जिह्वास्य, मिक्षिष्य इत्यस्य जरा इति यावत् । अगन्तरे कीर्णं रेतोस्यावकीर्णा, वास्त्युतिः-  
 ब्रह्मसायुज्यकीर्णा स्याकमतस्तु क्षियं व्रजेत् ॥ ५४ ॥ अभिभूय निर्मुक्तः समितोर्द्धशाभिनिर्मुक्तः ।  
 अभिभूयोदितोर्द्धशाभ्युदितः ॥ ५५ ॥ ज्येष्ठे भ्रातृकृतविवाहे कनिष्ठो विवाहाद्वदोः, परिवर्ज्यं विन्दति  
 परिवेत्ता, वास्त्युतिः-यमज्येष्ठकलत्रं कुर्वते दारसंग्रहम् । ज्येष्ठस्ते परिवेत्तारः परिवेत्तिस्तु पूर्वजः ॥  
 उपलब्धं चैतद्यतोमिहोन्नततादावपि परिवेदनव्यवहारोऽस्ति । तस्य उपायमनग्रजः, परिवर्ज्यं विन्दति स  
 परिवेत्तिः ॥ ५६ ॥ विवहं विवाहः । उपयमनमुपयमः, यमः समुपनिवृत्तुव (सू.) इति पक्षे- वयम् ।



पवित्रः प्रयतः पूतः पाषण्डाः सर्वलिङ्गिनः ।

पालाशां वण्ड आषाढो व्रते रामस्तु वैष्णवः ॥ ४५ ॥

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनामासनं वृषी ।

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥

स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याभिषवः सवनं च सा ।

सर्वेनसामपञ्चसि जपं त्रिष्वधमर्षणम् ॥ ४७ ॥

वर्षाश्च पीर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ।

नियमस्तु स यत्कर्मनित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥

उपवीतं यज्ञसूत्रं प्राध्वृते दक्षिणे करं ।

प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ ५० ॥

प्रयतः । शुचिः पुण्यः पावनश्च । पाष(र)मणानि पाषण्डा वेदबाह्यव्रताः सर्वलिङ्गिनः क्षरणकायाः । स-  
र्वाणि लिङ्गानि सन्त्येषां, भ्रमव्रता इत्येके, आहुश्च- नानाव्रतधरा नानावेपाः पाषण्डिनो मताः । आषाढस्तु  
जात आषाढः, विशाखाषाढादण्मन्यदण्डयोः ( सू० ), यदाह- आषाढो व्रतिनां वण्डः । व्रत इत्येव,  
रम्भो वेणुपर्यायः ॥ ४५ ॥ कं जलमण्डे मध्ये लाति कमण्डलुः । कुण्डात् जानपदकुण्डेत्यमत्रे ( सू० )  
इति । ब्रुवन्तांस्यां सादन्ति वृषी । अज्यते- क्षिप्यतेजिनम् । चरितं चर्म । कृत्यते कृत्तिः । ( भैक्षं )  
भिक्षादिभ्योष्ण ( सू० ) ॥ ४६ ॥ स्वस्य वेदस्याध्ययनं स्वाध्यायः, इहयेति ( सू० ) षम् । जपनं  
जपः, व्यधजपोरनुपसर्गे ( सू० ) इत्यप् । सोमं सुवन्त्यद्विः परिव्राजयन्त्यस्यां सुत्या, संज्ञायांसमवेति  
( सू० ) ऋयप् । अभिषवणमभिषवः, उपसर्गात्सुनोतीति ( सू० ) षत्वम् । अर्षं मृष्यते शोष्यतेनेनाष-  
मर्षणं, अन्धैक्यो मन्त्रस्तदूपो वा, करणाधिकरणयोश्च ( सू० ) इति ल्युट्, तिरात्रोपवासादिस्तुप-  
रात् ॥ ४७ ॥ अमावास्या ( यां ) दर्शः, इत्यते चन्द्रोत्रेति, यागस्तुपचारात् । पूर्णिमायां पीर्णमासः, पूर्णो  
मासस्तत्तल भवः ॥ ४८ ॥ शरीरमात्रेणैव यत्क्रियते तत्, यम्यतेनेन चित्तं यमः, यमः समुपनिवि-  
षुचैत्यप् ( सू० ), आह च- अहिंसासत्यास्तेयव्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः । आगन्तु बाह्यं नृत्वादि साधनं  
यत्रेति, अत एव कृत्रिमं कर्म नियमः, यदाह- सौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः  
॥ ४९ ॥ शैव ऊर्ध्वलोतासिकः सिद्धान्तो शुद्धमार्गिकः [ शुद्धान्तो सिद्धमार्गिकः ] । पाषार्थिकः  
पाशुपतो लाकुलोप महाव्रती ॥ कापाली सोमसिद्धान्तो तान्त्रिकः स्याद्विशेषदृक् । यामलोद्वयमार्ग-  
स्यात्त्रिकभेदी षडर्थिकः । पूर्वप्राची महामार्गो भैरवी दक्षिणामगः । शाक्तो वामलोतसिकः कौल अन्व-  
यिको मतः । एकाग्रतः शाश्व [सात्व] तश्च वैष्णवः पाञ्चरात्रिकः । रक्षावरो भद्रन्तश्च शाक्यः श्रमणवन्दको ।  
भिषुः श्वेतः श्वेतपटः क्षणार्धदिगम्बरः ( दिगीश्वरः ) । नम्राटः श्रावकोऽर्हको निम्रन्यो जीवजीवको ॥  
[क्षीरे तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु । कक्षापट्टी च कोपीनं शार्दी च स्त्रीति लक्ष्यतः ॥] उपवीयते प्राविश्यते  
स्त्रोपवीतम् [ यज्ञोपवीतं च ] । अन्यदिगम्बरं करे प्रोद्धृते प्राचीनावीतं, प्रागेव प्राचीनं, विभाषाबेरादि-  
कृत्रियम् ( सू० ) इति सः, आश्रयते स्वावीतम् । यज्ञमूलमित्येव, नियतं वीयते स्म निवीतं, यन्मनु-  
प्रोद्धृतं दक्षिणे पाणवुपर्योत्युच्यते द्विजः । सम्ये प्राचीनमावीतो निवीतो कण्ठसज्जने ॥ ५० ॥ हेमन्-

पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विष्णुर्ब्रह्माविन्दवः ।

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिद्वयी ॥ ३९ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽन्यः ।

संस्कारपूर्वं ब्रह्मणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युक्ते ।

मिश्रः परिव्राट् कर्मन्वी पाराशर्येण मस्करी ॥ ४१ ॥

तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी वाचंयमो मुनिः ।

तपःश्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥

अथयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ।

यं निर्जितेन्द्रियमामा यतिनो यतयश्च ते ॥ ४३ ॥

यः स्थण्डिलं व्रतवशाच्छ्रुते स्थण्डिलशाख्यसौ ।

स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसः स्युर्ह्यातिगाः ॥ ४४ ॥

स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः । वेदपाठे— आस्यनिगंता जलकृपा ब्रह्माविन्दवः । ( ब्रह्मासनं ) ध्यानयोगो-  
रास्यतेनेन । ध्यान्मेकाग्रं ( तथा ) चिन्तनं, ददाह— तत्र प्रत्ययेकतानता ध्यानम् । योगश्चित्तवृत्तिनि-  
रोधः । कल्पते विधीयते प्रकल्प्यते बानेन विनियोगशास्त्रेणेति ॥ ३९ ॥ ( मुख्यः ) आधो विधिरित्यर्थः ।  
( अनुकल्पः ) मुख्याभावे प्रतिनिधिसंज्ञः । उपाक्रियतेनेत्युपाकर्म वेदपाठारम्भे विशिष्टो विधिः, रोहि-  
ण्यां छन्दोऽस्युपाकुर्यादिति हि श्रुतिः ॥ ४० ॥ वामेन वामः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन तु दक्षिण इति पादोपसं-  
ग्रहणम् । अभिवाद्यते— आशिर्वा कार्यतेनेत्यभिवादनम्, अत एवाभिवाद्योपसंग्राहः । मिश्रते मिश्रः,  
सनाथं समिदातः ( सू० ) । परिवर्ज्यं सर्वं संयत्य व्रजति परिव्राट्, परेऽत्रैः पथपदान्ते ( उ० )  
इति दिण् ( क्तिन् ) क्तं च । कर्मन्देन पाराशर्येण प्राक् मिधुतन्त्रमधीते, कर्मन्देकशाभादिभिः ( सू० ),  
पाराशर्यशिक्षास्मिन्मिधुनदसूत्रयोः ( सू० ) इति गिनिः । मा कृ(कृक)त कर्माणि मुक्तां शान्तिं ईः श्रेव-  
सीति मस्करी, मस्करोमस्करीणोवेषुपांरत्राजकयोः ( सू० ) इति साधुः ॥ ४१ ॥ तपोस्वास्तीति, तपः-  
कृताभ्याविनीनी ( सू० ), अण्च ( सू० ) । अन्येषामपिदृश्यते ( सू० ) इति दीर्घात्पारिकाङ्क्षी ।  
पारिराष्टि ( स ) कः सान्वासिकश्च । व. चं यच्छति मौनेनास्ते वाचंयमः, वाचियमोव्रते ( सू० ) इति  
कृन् । मन्यते मुनिः । मिधुपरांवायेतावित्येके । दाम्भ्यति दान्तस्तपःश्लेशानुद्विग्नः, वादान्तशास्त्रेति  
( सू० ) साधुः । वर्णोऽस्यास्तीति वर्णी, वर्णाद्ब्रह्मचारिणि ( सू० ) इतीनिः । ब्रह्म चरति तच्छ्रीक्यं वा  
ब्रह्मचारी ॥ ४२ ॥ वर्णनादावेरविशंवादिवाक् ( सत्यवचः ) । ( छातकः ) स्नातवेदसमाप्तौ ( ग० ) इति वावादि-  
त्वात् ( सू० ) कृन् । यो व्रतवांस्तौर्ध्याव्रते स्नातीत्याप्लुतः स स्नातकः, यत्स्त्वृतिः— गुरवे तु धनं  
रत्ना स्नायाद्वा तदनुद्वया । वेदव्रतानि वा पारं नीत्वा सुभयमेव च । यत् यमममस्यास्तीति व्रती ।  
वर्ण्यस्युपरमति यातः ॥ ४३ ॥ आद्यस्य स्थण्डिलशाखिनः, व्रते ( सू० ) इति गिनिः । परस्व  
( स्थाण्डिलस्य ), स्थण्डिलच्छायांतरिव्रते ( सू० ) इत्यण् । विगते रजस्तमसी येभ्यः, सास्विका इत्यर्थः ।  
द्वयवतिगच्छन्त्यतिकाममिति द्वावतिगाः ॥ ४४ ॥ पूयतेनेन पवित्रः । प्रयतते प्रवचस्युपरमति वा

बह तु त्रिष्वर्चमर्चयि पापं पापाय वारिणि ।  
 कमादातिध्यातिधेये अतिध्यये साधुनि ॥ १३ ॥  
 स्युरावेदिक आगन्नुरतिधिनां गृहागते ।  
 पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चाहणाः समाः ॥ १४ ॥  
 वरिवत्सा तु शुभेषु परिचर्याप्युपासकम् ।  
 ब्रज्यादाद्या पर्यटनं चर्या स्वीर्यापथ स्थितिः ॥ १५ ॥  
 उपस्पृशस्त्वाचमनमथ मीनमभाषणम् ।  
 आमुपूज्य द्रियां वायुत्परिपाटी अनुकम् ॥ १६ ॥  
 पर्यायद्यातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपास्ययः ।  
 नियमो व्रतमन्त्री तद्योपवासावि पुण्यकम् ॥ १७ ॥  
 औपवस्यं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ।  
 स्याद् ब्रह्मवर्षसं वृत्ताध्ययनद्विरयाञ्जलिः ॥ १८ ॥

शिनिहणाः । वारिणीत्येव, पादाध्यांभ्यां (सू०) इति यत् । अतिथय इदमातिध्वं, अतिधेय्यैः (सू०) ।  
 अतिधौ साधु- आतिधेयं, पथ्यतिधीति (सू०) इम् । कात्यास्त्राह- अनेनैकं विधिद्विरातिध्वमभि-  
 धीवने, आतिध्योतिधियाग्नुरिति च माला, शाश्वतोत् एवोभयनाह- आतिध्वं स्मरतिध्वं  
 आतिध्वमतिथिं विदुः ॥ १३ ॥ अवेये- अप्रतिवेशे भव आदेशिकः, नेकपामीनमातिथिं विधिं सङ्गतिर्कं  
 तथेति स्मृतेः । नगस्ति तिथिरस्यातिथिः, अतति सततं गच्छति वा, यत्स्मृतिः- अथनोभेतिध्वंवेव,  
 किं च- तिथिरित्येव साः सर्वे त्यक्त्वा येन महात्मना । अतिथिः स हि विवेकः शेषः प्राचूर्कः स्मृतः ।  
 प्राचूर्कः प्राचुराकांष्यभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ (नमस्या) नमोवरिवाधिरुःक्यजिति (सू०) नमः  
 पूजायां कथञ्, अप्रत्ययात् (सू०) । अरचायनमगावेतिः, अपवितथ (सू०) इत्यत्र चाम्यतेऽतिनि  
 (तिर्त्वं) विमोहोऽनेदृशं च वक्तव्यम् (वा०) । सपरे साधुः सपर्या, सह पर्यायक्रमेण वर्तते वा ॥ १४ ॥ उपस्पृशः  
 परिचर्यायां कथञ् (नमोवरिवाधिरुःक्यञ्) । शुभेषु गुरुसेवात् सकलवा । परिचर्यं (परिकर्या),  
 परिचर्यापरिसर्याङ्गयादाद्यानामुपसंहयानम् (वा०), परिचर्या तु पर्वेदिरिति भागुरिः । परिचर्या  
 तपस्याय इन्द्रातो विशाखिका । ब्रजनं ब्रज्या, ब्रज्यजोर्भावे कथप् (सू०) । कुटिलमटममटाया,  
 सूक्ष्मसूक्ष्मम्यव्यर्थेणोत्तानामुपसंहयानाद्यध्यन्तात् (वा०), अद्यापि, यन्त्यनुः- तोषेतिर्कं वृत्त्या  
 च कामजो ह्यमो गुणः, ईत्वं च निवरा कर्त्येतिवत् । एवं गदमदचरेति (सू०) चर्या । ईर्ष्याये  
 व्यामोनादिके संबोधमाग्राह्यं मिधुवते स्थितिरनुष्ठानम्, चर्या स्वीर्यां विदुषा इति गुणिः ॥ १५ ॥  
 उपस्पृशयन्तेऽत्रिः सान्बत्रोपस्पृशः । आचम्यतेम्भोजाचमनम् । मुनेर्भावे कर्म वा मोनं, इगन्ताचलपु-  
 पूर्णात् (सू०) इत्यण् । प्राचेतसस्तथादिकविः स्वन्नेत्रावरुणश्च सः । वात्मीदियाश्च गाधेयो विश्वामित्रश्च  
 कौशिकः ॥ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवर्तः सुतः ॥ पूर्वानुक्रमेणानुपूर्वं तस्य भावस्यानुपूर्वं, व्यञ्,  
 चित्वाह ईत्स्वम् । आचर्जनमावत् । उणादौ, परिपाटनं परिपाटिः, इम्, आकृत्परिपाट्योद्वन्तास्तीत्स्वम् ।  
 ॥ १६ ॥ पर्यवस्यं पर्यायः, परावनुपात्यइणः (सू०) इति चय । विचर्यः क्रमोऽध्ययनमातिक्रमश्च । ब्र[ह्म]स्वत  
 ब्रह्मवेत्तादि यन्त्रेति (व्रतम्) । तद्व्रतमुपवासकृच्छ्रचान्द्रायणादिकं पुण्यपर्यायम् (पुण्यकम्), संज्ञायां कृ  
 (सू०) ॥ १७ ॥ उपवस्ता प्राप्तोऽप्योपवस्यं, उपवसादिभ्यः (सू०) इत्यण्, उपवस्तस्वेदमोपवस्तमित्येके, बहु  
 स्तम्भे, चः, उपवस्तुरिदमित्यत्रापि, यत्स्मृतिः- माषाम्भु मसूराश्च ब्रह्मवेदोपवसादे । प्रकृतिपुरुषयोः पृथ-  
 ग्भावे विवेकः, भावानां पृथक्स्वरूपत्वमित्येके, विचिर पृथग्भावे । ब्रह्मणस्तत्त्वाध्यायार्थेऽर्थस्तेषां ब्रह्मवर्ष-  
 षे, ब्रह्मस्तिभ्यां वर्षसः (सू०) इत्यञ् ॥ १८ ॥ ब्रह्मणं वेदायात्र, छेः, यन्मनुः- संहस्य हस्तावधेयं

परेपराकं शमनं प्रोक्षणं तच्च यो वधः ।  
 वाच्यलिङ्गाः प्रमीतापसंपन्नप्रोक्षिता हन्ते ॥ २६ ॥  
 साम्राज्यं हविरमौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।  
 वीक्षान्तोवभूयो यज्ञस्तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥  
 त्रिष्वथ क्रतुकर्मैर्हं पूर्तं स्वातादिकर्मणि ।  
 अमृतं विषसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥  
 त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जनं ।  
 विभ्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनं ॥ २९ ॥  
 प्रावेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।  
 मृतार्थं तद्वदे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदैरेहिकम् ॥ ३० ॥  
 पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।  
 अन्वाहार्यं मासिकेशोष्टमोहः कुतपोऽप्ययम् ॥ ३१ ॥  
 पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा च गवेषणा ।  
 सनिस्त्वध्वेषणा याच्त्राभिपस्तिर्योचनार्थना ॥ ३२ ॥

द्विसायाम् । प्रोक्षणं लक्षणया वधः, प्रोक्ष्य हि यज्ञे पशुहन्त्यते । यज्ञ इति शेषः । ( प्रमीतः ) मीन-  
 द्विसायाम् ॥ २६ ॥ संनीयते ( साम्राज्यं ), पाप्यसाम्राज्येति ( सू० ) साधुः । हृत्यते हविः । वषष्-  
 न्त्रलिङ्गेन हुतं हुतं वषट्कृतम् । अत्रप्रियते पूर्यतेनेनावभूयः । यज्ञकर्माहंति यज्ञियं, यज्ञादिगन्ध्याचक्षणी  
 ( सू० ), यज्ञादिगन्ध्यातत्कर्माहंतीत्युपसंख्यानात् ( वा० ) घः ॥ २७ ॥ इज्यते स्मैष्टं वागादि, यदाह-  
 एकाग्रिकर्म हवमं प्रेतायां वच्च हृत्यते । अन्तर्वेशां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते । पिपातं स्म पूर्तं,  
 नप्याह्यापमूर्च्छिमदामिति ( सू० ) निष्ठानत्वाभावः । स्वातं वाप्यादि, आह च- वापीकृततवागानि  
 देवतायतनानि च । अन्नप्रदानमाराधनः पूर्तमार्थः प्रचक्षते ॥ न प्रियते न नश्यत्यमृतम् । विधिष्ट-  
 मदनं विषसः, उपसर्गोऽहः ( सू० ) इत्यप्, घञगोश्च ( सू० ) इति घस्लादेशः, यन्मुनिः- विषसाद्यो  
 भवेप्रित्यं नित्यं चामृतभोजनः । विषसो भुक्तशेषं रणयज्ञशिष्टमयामृतम् ॥ २८ ॥ स्वत उपसर्गवशा-  
 च्चैते दानार्थाः । स्पर्शनं तूपचाराहमं, पुच्छादो गवादि सृष्ट्या हि दीयते । ओहाक् त्यागे । अन्न दाने  
 ॥ २९ ॥ अंशतैरिति । उत्सर्गोऽपि । तददे प्रेतदिने मृतमुद्विष्य दानं पिण्डोदकादि, ऊर्ध्वदेहाह्नव-  
 मौर्ध्वदेहिकं, ऊर्ध्वदेहाचचदेहाचचेति ( ग० ) ठञ्, अनुशातेकादित्वात् ( सू० ) उभयपदद्विमाहुः ॥ ३० ॥  
 पितृभ्यो दानं, न्युप्यते निवापः । प्रदास्त्यल भ्रष्टं पितृकर्म, प्रज्ञाप्रदाचेति ( सू० ) णः । अन्वाहियते-  
 न्वाहार्यममावास्याभ्रादम् । कुं तपति सूर्योऽत्रि कुतपो मध्याह्नप्रवृत्तः भ्रादकालः, यस्मृतिः- दिव-  
 सस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे । स कालः कुतपो यत्र पितृभ्यो दत्तमक्षयम् ॥ ३१ ॥ भ्रादे द्विज-  
 शुश्रूषा ( पर्येषणा ), इषोरनिच्छार्थस्य ( वा० ) युज्यकण्यः, परंवा ( सू० ) । गवेष मार्गजे । गुर्वीदेः  
 कचिदप्ये प्रार्थनया नियोजनं सनिः, वण दाने । याचनं याच्ना, यजयाचेति ( सू० ) नह् । ( याचनम् )  
 आसन्नन्वइति ( सू० ) बाहुलकाद्युच् । अभिपसुनमभिपस्तिः, वष स्वमे ॥ ३२ ॥ आगन्त्वन्ताः वद







उपज्ञा क्षाममाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।

यज्ञः सद्योध्वरो यामः सातन्तुर्मखः कतुः ॥ १३ ॥

पाठो होमस्यातिथीनां सपर्यां तर्पणं बलिः ।

पते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

समज्या परिषद् गोष्ठी सभासमिति संसङ्गः ।

आस्थानी ह्रीवमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सङ्गः ॥ १५ ॥

प्राग्वंशः प्राग्वविर्गेहात्सदस्या विधिर्वाहीनः ।

सभासङ्गः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

अध्वर्युर्गतातृहेतारो यजुःसामर्गिवः क्रमात् ।

आग्नीधाद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥

वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरे ।

चपालो यूपकटकः कुम्भा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥

चन्द्रोपक्रमं ह्यकारणम् । उपज्ञाय- आरम्भणमुपक्रमः, यत्कात्यः- यस्मात्प्रवृत्त आरम्भः च उप-  
क्रमः, नन्दस्योपक्रमः- नन्दोपक्रमानि मानानि, उपज्ञोपक्रमतश्चाचिह्नसायाम् ( सू० ) इति नपुंस-  
कत्वम् । इत्येते बह्वः, यजमानेति ( सू० ) नह् । सूयते सामोऽस्मिन्सर्वः । अन्धान् रात्यन्धरः, न  
ध्वरति वा, न हृष्टेने । सप्ततन्तुः सप्तभिश्छन्दोभिस्तन्यत इति । मखति धर्म मखः । क्रियते कतुः  
॥ १३ ॥ स्वाध्यायो ब्रह्मयज्ञः, होमो देवयज्ञः, अतिथिपूजनं नृपयज्ञः, तर्पणं ब्राह्मण्यं पितृयज्ञः, बलिर्भू-  
तयज्ञः, वन्मनुः- अभ्याप ( व ) ने ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो देवो बलिर्भूतो नृपयज्ञोऽतिथि-  
पूजनम् ॥ १४ ॥ समजन्ति मिलन्त्यस्यां समज्या, संज्ञायांसमजनिषदेति ( सू० ) क्यप् । परिषदन्त्य-  
स्यां परिषद्, पर्वण । गावो नानोक्तयस्तिष्ठन्त्यस्यां गोष्ठी । सह भान्यस्यां सभा । संयन्त्यस्यां समितिः ।  
संसीदन्त्यस्यां संसद् । आतिष्ठन्त्यस्यामास्थानी । सीदन्त्यभिन् सदः, अद्युन्, सान्तः ह्रीरे ॥ १५ ॥  
वंशः कुलं स्थूला वा । प्राग्वंशेन प्राग्वंशः पत्नीशालाह्योमिशालाबाः प्र ग्यो भागः । सदसि स्यध्वः,  
ऊनाधिष्ठानाह्वा ऋत्विग्भेदाः सदस्याः । सभायां सीदान्ते सभासङ्गः । सभां स्तुषन्ति सभास्तम्भाः ।  
समाजं समदयन्ति सामाजिकाः, समवायान्समवेतीति ( सू० ) टक् । पार्षथाः पारिषदाः सम्मश्राव्य  
॥ १६ ॥ ऋत्विज इत्येव । अध्वरं याति न ध्वरति वाच्युर्नामर्त्विग्विधेयः, स यजुर्विष्कटः स्वात् ।  
उद्गमयत्युद्गता छन्दोगः स्यात् । जुहोति होता बह्वः स्कत् । अमीनिन्द्यमीद्, तस्य ( अमीधः )  
शरणमासीधः, अमीधःशरणेऽर्चय ( वा० ) इति रम् । आर्चयन्तारोतुवशात्सुब्राह्मणमच्छत्यच्छावाग्-  
मावस्तुद्रह्ममेवावर्णप्रतिप्रस्थातृप्रतिहन्तृनेष्टुप्रेतुसुब्रह्मण्याः । इयं सदस्याः सप्तस्थित्विजः । एतेस्तु सप्त  
स्वरूपवति ( सू० ) कुम्भे ग्रहणाद् वृक्षोप, म्रियन्त इति वार्याः, ऋक्षोर्ष्यद् ( सू० ) । वृताः कुम्भान्त  
वे बह्मृत्विजस्त इति कात्यः । ऋतो यजतीति ऋत्विक्, ऋत्विग्दशगति ( सू० ) साधुः ॥ १७ ॥  
विदम्येनां वेदिः, परिष्कृता चातुरक्षेण भूषिता यागार्थम् । अपरिष्कृतां त्वाह, तिष्ठन्त्यस्मिन्त्यष्टिकम् ।  
चत्वरे चत्वरम्, यागार्थमसंस्कृता भूमिः । तक्ष्णा पटितो यूपामे कटकाकृतिः, चप्यत उत्कीर्णं चपाकः ।  
( कुम्भा ) कुवि छादने, चिन्तिपूजिदधिकुम्भीरुद् ( सू० ) । म्रियतेनया वृतिः, यद्वपटं पर्विका ॥ १८ ॥

उपाध्यायोध्यापकोय स्याद्विषेकादिकुर गुरुः ।  
 मन्त्रध्याक्वाकृपाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥  
 ब्रह्मा च यजमानश्च स सोमयति हीक्षितः ।  
 इत्याशीतो यायजूको यज्या तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥  
 स गीष्प( ष ) स्तीष्ट्या स्यपतिः सोमपीथी तु सोमपाः ।  
 सर्ववेदाः स येनोष्टो यागः सर्वस्ववक्षिणः ॥ ९ ॥  
 अनुचानः प्रवचने साङ्गेधीती गुरोस्तु यः ।  
 लब्धानुष्टाः समापुस्तः सुत्वात्वभिषवे कृते ॥ १० ॥  
 छात्रान्तेवासिनीं शिष्ये शैक्षाः प्रायमकल्पिकाः ।  
 एकमहाव्रताचारा मियः सद्यज्ञचारिणः ॥ ११ ॥  
 सतीर्ष्यास्त्वेकगुरवधितवानमिममिच्छित् ।  
 पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहान्ययम् ॥ १२ ॥

वेति ( सू० ) चम् । गृणात्युपदिशति गुरुः, यन्मनुः- निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि ।  
 संभावयति चाग्नेन स विभो गुरुकथ्यते ॥ निषेधो गर्भाधानावधिः । आदिशन्दारुं सवनसोमन्तोत्तमयना  
 तर्क्यनामकरणः प्रप्राशनचै. होपनयनादीनि । आचरणीयः सेव्य आचार्यः, आचारं प्राहयतीति नैहकाः,  
 मन्त्र( व्याख्या ) छन्दोपाध्यापनाशिष्टेष्ट्याकृदुपनयनेन द्वित्रत्वापादनात्, ब्रह्माह- उनीय तु यः  
 शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्वित्रः । सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रकल्पे ॥ स्वाम्येनादिशयादेष्टा, आदिष्टीति  
 पाठे- आदिष्टयनेनेति, इष्टादिभ्यश्च ( सू० ) इतीनिः, कस्येन्विषयस्यकर्मण्युपसंहयानात् ( वा० )  
 सप्तमी । व्रती सनियमः ॥ ७ ॥ यजते यजमानः, पुण्यजोःज्ञानन् ( सू० ) । स व्रती सोमवत्यध्वे  
 दीक्षिताह्वः, दीक्षा संजातास्येति । सोमगानमिष्टोनादिकनुः, यद्- गौतमः- अमिष्टोमोत्यमिष्टोम उक्त्यः वोः  
 बशी वाजपेयोदिराक्षेऽतोर्वाम इति सोमसंस्था । यजनमिज्वा, यत्रयजोर्भावेकशृ ( सू० ) । अस्यर्थं यजति  
 तच्छीत्तो वायजुक्तः, यत्रयजपदशब्दः ( सू० ) इत्युक्तः । ( यज्या ) सुयजोर्हूनिप् ( सू० ) ॥ ८ ॥  
 स यज्या बृहस्पतिस्ववनहेतुना, स्थापयतीति स्थपतिः । पानं पीथः, पानुतुदिवचोतिथक् ( उ० ), धुमा-  
 स्वेतीप्रवम् ( सू० ), सोमपीथी तु पात्र्याः पंतुः । सर्वदायं, दीक्षितस्तु तत्कालम् । सर्वे बिन्दत्यस्मात्स-  
 र्ववेदाः, अनुतु ॥ ९ ॥ अनुककन्, उपेयिवाननाभाननूचनश्च ( सू० ) इति कानचि साधुः । प्रोच्यते  
 प्रवचनं वेदः । अधीतमनेनाधीती, इष्टादिभ्यश्च ( सू० ) इतीनिः, कस्येन्विषयस्यकर्मण्युपसंहयानात्स-  
 ममां ( वा० ) । अधीत्य गुरोर्ह्या गुरुह्यायः समावर्तते स समावृत्तः- स्नातकाह्वः, गुरोर्ह्यादनावृत्त-  
 स्न्यतको हि न कल्प्यते ॥ सुनोति सुत्वा सुयजोर्हूनिप् ( सू० ) । अभिषवः सोमकृन्नसंधानम् ॥ १० ॥  
 छत्रमेव छीलमस्व छात्रः, छात्रादिभ्योः ( सू० ), छात्रेण गुरुमेवा लक्ष्यते । गुरोरन्ते वसत्यन्तेवासी-  
 चायदासगतिश्चि ( सू० ) समम्पा अनुह् । छात्रनीयः शिष्यः । शिष्यायां भवाः शैक्षाः । प्रवचनकृत  
 आचारमन्त्रः प्रथो व्रनमेवां तमपीथये वा प्रायमकलिङ्काः । तुल्यवेदास्तुल्यव्रतास्तुल्यचाराश्चान्योन्व्यं, समानं  
 ब्रह्म चष्टी स ब्रह्मचारिणः, ब्रह्म वेदा ब्रह्म तपो ब्रह्म ज्ञानं च शाश्वतमिति, एकस्मिन्वेदे व्रतमाचरन्ति  
 वा; वने ( सू० ) इति गिनिः, वनेब्रह्मचारिणि ( सू० ) इति समानस्व सः ॥ ११ ॥ ( सतीभ्याः )  
 समानत्वार्थेवासी ( सू० ) इति यत्, तीर्थये ( सू० ) इति सत्वम् । तरन्त्यनेनाविद्यां तार्थं गुरुः । अग्नि-  
 विदादिनामः, अग्नेवेति ( सू० ) किप् । इत्येवं ह किमेति मुखापारंपर्यं स्थितमितिह, ततः स्वार्थे  
 पक्षे- अनन्तावसथेतिहमेव ॥ १२ ॥ उपज्ञायत इत्युपज्ञा, इदं प्रथमतया ज्ञानं, चन्द्रस्योपज्ञा

संततिर्गोभ्रजननकुलान्यभिजनान्वयो ।  
 वंशोन्वयायः सन्तानो वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥  
 विप्रक्षत्रियविदस्राष्ट्राणां तुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।  
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥  
 महाकुलकुलीनार्यसम्यसज्जनसाधवः ।  
 ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥  
 आश्रमोच्छी द्विजात्यमजन्मभूदेववाडवाः ।  
 विप्रश्च ब्राह्मणांसी पदकर्मा याग्याविभिर्युतः ॥ ४ ॥  
 विद्वान् विपश्चिद्वेषः सन्सुधीः कोविदो बुधः ।  
 धीरो मनीषी क्षाः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥  
 धीमान्सूरिः कृती कृष्टिलब्धवर्णो विचक्षणः ।  
 दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियश्छान्दसः समी ॥ ६ ॥

संतन्यतेनया संततिः । गूढते जन्मते कुन्यते वानेन । अन्वीयतेनयः । वर्य[न्य]ते जन्मते वंशः ।  
 अन्ववैत्यन्ववायः । त्रियन्ते वर्ण्यन्ते वा वर्णाः ॥ १ ॥ चत्वार एव वर्णाः, स्वार्थे ध्यम् ( चतुर्वर्णादीनां  
 स्वार्थत्पसंख्यनम् ) । राजबीजमस्यास्ति राजबीजी । राजवंशे साधुर्भवो वा राजवंश्यः । बीजे साधुर्भवो  
 वा वषा, सूर्यबीज्यो रामः, यत्प्रकरणे—अन्वेभ्योपिदृश्यते ( वा० ) ॥ २ ॥ कुलस्यापत्यं कुलीनः । आरा-  
 त्यापकेभ्यः कर्मभ्यो यात आर्यः, अरणीयो गम्यो वा । सभायां साधुः सभ्यः । संख्यासौ जनश्च सज्जनयते  
 वा सज्जनः । साप्नोति परकार्यं साधुः । आमुषायणोमुष्युग्रश्च । ब्रह्म वेदा ब्रह्म तपो ब्रह्म ज्ञान च  
 शाश्वतं, तत्त्वरत्नजर्मत्यवश्यं ब्रह्मचारी वर्णा । गृही गृहमेधी गृहाश्रमी श्रेष्ठाश्रमी । प्रतिष्ठन्तेस्मिन्प्रत्ये-  
 वनप्रत्ये भवो वानप्रस्थो वैखानसाख्यः । भिक्षते तच्छीलौ भिक्षुर्यतिः, सनाशंसभिक्षुः ( सू० ) ।  
 अस्मिन्चतुष्टके, आश्रम्यन्ति तपःगन्तस्मिन्नाश्रमं प्रत्येकं वर्तते ॥ ३ ॥ मातुर्यदमे जननं द्वितीयः  
 मैत्र्यन्वनादिति द्विजातिः । अमे—आदी—अप्रान्मुखाद्वा जन्मास्य, यच्छ्रुतिः—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासात् ।  
 बाहव इवातृप्तः । विशेषेण प्राति पूरयति विप्रः, विपाति विपाति पापं वा विप्रः, विप क्षेपे । ब्राह्मणोपत्यं  
 ब्राह्मणः । जातिमात्रोपजीवी स्याद्विप्रस्तु ब्राह्मणब्रुवः । षट् कर्माणि ब्राह्मणस्य—अध्ययनमध्यापनं ब्रजनं  
 साजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति ॥ ४ ॥ वेत्ति विद्वान्, विदेःशतुर्वसुः ( सू० ) । विप्रश्चिन्तयते विपश्चित् ।  
 दोषाज्ञानाति स्नात्वा ज्ञायादिति दोषज्ञः । सन् विद्यमान उत्तम इत्यर्थः, अन्ये ह्यसत्कल्पाः ।  
 शोभनं श्यायति सुधीः, अन्वेभ्योपिदृश्यते ( सू० ) इति क्लिप् संसारणं च । ओकः स्थानं वेति को-  
 विदः, कृद् शब्देस्माद्वा । धियमीरयति धीरः । मनस ईष्टे, मनीषास्त्वस्य वा मनीषी । जानातीति  
 ज्ञः, श्रुयधति ( सू० ) कः । प्रज्ञ एव प्राज्ञः, प्रज्ञादिभ्यश्च ( सू० ) इत्यण्, प्रज्ञास्त्वस्य वा, प्रज्ञाश्र-  
 दन्ते ( सू० ) णः । सम्यक् स्थानं ज्ञानमस्त्यस्य सहशवान्, संख्या विचारणा वा । पण्डते जानाति  
 पण्डितः, पठि गतो, सर्वं गत्यथो ज्ञानार्थो इति, पण्डा धीः संज्ञातास्य वा । कवते वर्णयति कविः,  
 कवितापि ॥ ५ ॥ सुव्रति सूरिः । कृतमस्यःस्तीति कृती कृतकृत्यः । कर्षति विविहृक्ते कृष्टिः । सन्धं  
 वर्णनं प्रसिद्धिर्येन स लब्धवर्णः । विचरे विचक्षणः । ( दूरदर्शी ) अप्रत्यक्षमुद्भूत इत्यर्थः । ( श्रोत्रिभः )  
 श्रोत्रियश्छन्दोधीते ( सू० ), श्रोत्राभ्यां कृतकर्मति । छन्दोधीते छान्दसः । मीमांसको जैमिनीये वे-  
 दान्ती ब्रह्मवादिनि । वैशेषिके श्वादेल्ह्यः सौगतः शून्यवादिनि ॥ नैय्यायिकस्वाक्षरादः श्वात्स्वाह्म-  
 दिक् आर्हतः । चावाकलोकायतिको सत्कार्यो साहस्यकारिलो ॥ ६ ॥ उपेक्षाधीयतेस्मादुपायायः, ईह-

चूर्णानि वासयोगाः स्तुर्भाषितं वासितं त्रिषु ।  
 संस्कारो मन्त्रमास्वाधैर्यः स्वासपथिवासनम् ॥ ११४ ॥  
 मास्यं माहात्म्यं नृपि केशमध्ये तु गर्भकः ।  
 मन्त्रहृत् शिखास्यि पुराण्यस्तं ललामकम् ॥ ११५ ॥  
 प्रालम्बमृजुलम्बि स्वात्कण्ठाद्वैकल्यं तु तत् ।  
 यत्तिर्यक् क्षिप्तगुरासि शिखास्वापीडशस्त्री ॥ ११६ ॥  
 रचना स्वात्परित्यज्य आभागः परिपूर्जता ।  
 उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीयवत् ॥ ११७ ॥  
 शयनं मन्त्रपर्यङ्कपल्यङ्काः सङ्ख्या समा ।  
 गेन्दुकः कन्दुको शीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ ११८ ॥  
 समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।  
 प्रसाधनी कर्कतिका पिष्टातः पटवासकः ॥ ११९ ॥  
 कर्पणे मु(म)कुरावर्शौ व्यञ्जनं तालवृन्तकम् ॥ १२० ॥  
 इति नृवर्गः । ६

साधकोदः । वास्यते सुगन्धीक्रियते वैयङ्ग्यमानैर्मिश्रेष्टे वासयोगाः । आगते मस्यते भाषितं, धुवोड-  
 वकल्पने निष् (धा० सू०) । वास्यते छायेत स्म, वस स्नेहच्छेदपहरणेभु । गन्धद्रव्यैर्भाषितं पुष्पाधैर्भाषितमि-  
 त्येके । संस्कारास्तिकादीनां गुणाचनम् । आध्यात्मिकपादिभिः । मासेव मास्यं, वातुर्गन्धैर्विस्मयम् (वातुर्ग-  
 न्धादीनांस्वार्थोपसंख्यानम्) । मास्यते धायते मास्य । सृज्यते स्रज्, कश्चिद्व्युत्पत्तिः (सू०) साधुः ।  
 मास्यमित्येव, गर्भस्वात्परिभक्तः । मास्यमित्येव, मन्त्रात्मभक्तम् । कल्पये कल्पयन् मुञ्चन्मादायम्  
 ॥ ११५ ॥ कण्ठाद्वैकल्यवत्प्रमाणं मास्यं प्राकट्यम् । विकल्पायां भवे वैकल्यं, यतोपपीतम्यायेन मा-  
 स्यम् । मास्यमित्येव, आसीद्व्यत आसीदः । सेते शिरशि केसरः । उत्तरोपि ॥ ११६ ॥ शिखादिना  
 रचना, अन्यापि । आमुज्यतेनेनाभागः । उपधीयतेस्मिन् शिर उपधानम् । उपवृत्ततेनेनोपवर्हते  
 वा- उपवर्हः शिरानिवेशनम् । शिरतेत्र छाया, संख्यासमयेतिव्यप् (सू०) । (सप्तमीये) कृत्स्-  
 न्युद्योबहुलम् (सू०) इत्यधिकरणेऽनीयर् । तृत्तिकापि ॥ ११७ ॥ मन्त्रयते धार्यतेनेन मन्त्रः । पर्यङ्-  
 कयते पल्यङ्कः, परेष्वप्यङ्कयोरिति (सू०) वा ल्यम् । स्रज्येनां भ्रष्टः स्रज्वा । गाते गाः, गच्छ-  
 भिन्दुको गृहको गेन्दुकः, गिन्दुक इत्येके, (गे) गगने- इन्दुरिवेति वा । कण्ठयतेभ्यते क्रीडाधिभिः  
 कन्दुकः, कं शिरो दुनोति वा नमनोप्रमनेक्षणात् । कीट्य आते । व्युत्पादान्प्रकाशो गुलिका  
 गिरिकष ती । (प्रदीपः) प्रः स्थायै मेरुधुवेवत् । [कज्जलज्जजः, रणेन्वने गृहमनिः स्नेहाद्य] ।  
 पीठत उपवेद्यनेन प्रस्यते पीठम् ॥ ११८ ॥ समुज्यते समुद्रच्छति वा समुद्रगकः । संपुज्यते  
 स्नेष्यते संपुटकः, भूषण.दावपगम् । प्रतिगृह्णास्वाविलकदि प्रतिग्राहः, निमाणाग्रहः (सू०)  
 इति णः । पतद् गृह्णाति पतद्ग्रहः । कर्पण्याहया, प्रसाध्यन्तेनया केषाः । कर्कते कर्कटी,  
 कर्कान्दन्तास्तनोति वा । पिष्टेन कुङ्कुमचूर्णादिनातति पिष्टातः । पटो वास्यतेनेन पटवासः ॥ ११९ ॥  
 वृष्यत्यनेन सुवेधा वरुणः । मङ्कयते मण्ड्यतेनेन मु(म)कुरः । आहस्यते रूपमस्मिन्नादर्शः । आरमदशोपि ।  
 व्यजति वातोनेन विक्षयते वा व्यञ्जनम्, तालस्थेव वृन्तमस्य तालवृन्तम् । तालस्यवृन्तरुष्यत इत्येके  
 [तालवृन्तामास्यस्येत्येके] ॥ १२० ॥ इति नृवर्गः । ६



कालीयकं च कालानुसार्य चाथ समार्थकम् ।  
 वंशकागुरुराजाहलोहकुमिजजोद्गकम् ॥ १२६ ॥  
 कालागुर्वगुरु स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।  
 यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्जरसावपि ॥ १२७ ॥  
 बहुरूपोप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ।  
 तुरुष्कः पिण्डकः सिद्धो यावनोप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥  
 धीवासो वृकधूपोपि श्रीवेष्ट ( पिष्ट ) सरलद्रवौ ।  
 मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरीचाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥  
 ककोलकं काशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।  
 घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताम्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥  
 गन्धसारो मलयजो भद्रधीश्चन्दनोस्त्रियाम्  
 तैलपर्णिकगोशीर्षं हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥  
 तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रत्नं रक्तचन्दनम् ।  
 कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥  
 कर्पूरागुरुकस्तूरीककोलैर्यक्षकर्वमः ।  
 गात्रानुलेपनी वर्तियर्णकोष्ठी विलेपनम् ॥ १३३ ॥

न गुरु-अगुरु । कालागुरु काकटुष्कस्यम् । रोहति लोहम् । कुमिभिर्जन्यते कुमिजम् । जोद्गकं गिरि-  
 जम् । आहुध-अमुध प्रवरं लोहं कुमिजगधमनार्यजमिति (शाश्वतः) ॥ १२६ ॥ मल्लिकापुष्पगन्धगुरु मङ्गल्या-  
 स्यम् । वक्षान्धूपयति यक्षधूपः । सर्जरसस्य रसः सर्जरसः । राति प्रीति रालः, रालापि ॥ १२७ ॥  
 बहुरूपो नानाकृतिगन्धः । वृक्षधूपयति वृकधूपः । तुरुष्के यवनदेशजः । पिण्डको द्रव्यान्तरेः सह  
 पिण्डितः स्वरूपात्र स्यवते । सिद्धः ह्यो वृक्षः, विल उज्ज्वे, सुगन्धिप्रस्तावास्तुनरिहोक्तः । पयसो दुग्धकी-  
 रस्य विकारः क्षुतिः पायसः ॥ १२८ ॥ प्रिया वासो वेष्टश्च निर्यासः, वेष्टते वेष्टः । सरलस्य देवदादमे-  
 दस्य द्वयो निर्यासः । विकसति सीगन्धमस्याः कस्तूरी, कं स्तुयते वा । कोलमिव कोलकम् ॥ १२९ ॥  
 ककन्ते कक्, ( ककं ) कोलति संस्त्ययति ककोलकम् । कोशे फलान्यस्य कोशफलम् । कस्पते कर्पूरः ।  
 चन्द्रयेव सारोस्व शैल्यत् सिताम्रत्वाच्च । चन्द्रपर्यायो ह्यादकत्वात् । हिमा पीतत्वा वासो वालुका च हि-  
 मवालुका ॥ १३० ॥ भद्रा श्रीरस्य । चन्द्यते ह्यायतेनेन चन्दनम् । तैलपणंगोशीर्षौ गिरी आकरावस्यं ।  
 हरिचन्दनस्य चन्दनं, हरि कपिलं वा, तच्चानिशीतलं पीतमाहुः । श्रीखण्डं च ॥ १३१ ॥ हरिस्त्वेव पर्णा-  
 न्यस्याः तिलपर्णी नक्षी-आकरोत्सा इत्येके । पत्रेष्वङ्गति पत्राङ्गम् । पत्राङ्गं च पत्राङ्गापभ्रणोद्यम् ।  
 ( कुचन्दनं ) कौ चन्दनम् । जातीलतायाः कोशं जातीसरयास्यम् ॥ १३२ ॥ एतैः पिण्डकैर्बहुभिः  
 पङ्क्तः । सकुङ्कुमैरिस्त्रागमः, धन्वन्तरिस्तु-कुङ्कुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा । महासुगन्ध-  
 मित्युक्तं नामतो यक्षकदम् ॥ द्वौ द्वौ भिन्नायां विलेके । वर्तियर्णि नद्यादौ प्रसिद्धा ॥ १३३ ॥ पूर्णं पत्रा-



अर्धोक्तं परस्त्रीणां स्वाश्वच्छातकमंशुकम् ।  
 स्यात्त्रिष्व्याप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥  
 अस्त्री वितानमुल्लोचो दृष्याद्यं बल्लवेस्मनि ।  
 मतिस्त्रीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥  
 परिकर्माङ्गसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिमार्जना मृजा ।  
 उद्धर्तनोत्सावने द्वे ह्युभे आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥  
 स्नानं चर्चा तु चार्चिक्यं स्यासकोय प्रबोधनम् ।  
 अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे स्त्रियौ ॥ १२२ ॥  
 तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।  
 द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामय कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥  
 काश्मीरजन्मामिशितं वरं वाह्यीकपीतनम् ।  
 रक्तसंकोचपिशुनं वी( धी )रलाहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥  
 लाक्षा राक्षा जतु ह्युभे यावोलक्तो मुमामयः ।  
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमय जायकम् ॥ १२५ ॥

आ प्रपदादाप्रपदं, आप्रपदं प्राप्नोति ( सू० ) इति खः ॥ ११९ ॥ वितन्यते वितानः । उपरि स्नेश्यत  
 उल्लोचः, उल्लोच्यते पनीयते नेनातपादि वा, चर्चकाह्वयः । कर्कोपि । दृष्यते नेनान्यदर्शनं दृष्यम् । आप-  
 लाव्यप्रपट्टी । पट्टकृद्यं गुणशालिं [ लय ] नी स्थूलां [ लं ] च । मतिस्त्रिनोति प्रतिबध्नाति प्रतिस्त्रीरा ।  
 जवन्यस्यां जवनिका । तिरस्क्रोति छादयति तिरस्करिणी काण्डपट्टाह्वयोः । कचित्- पर्व्वकिका परिकारः  
 पर्यङ्क्यावसविषका । अथलं त्वंशुकान्ते नीवी सारसनमुचयः ॥ १२० ॥ मलपरिमार्जनार्थं क्रिया परि-  
 कर्म स्नानोद्धर्तनादिः । मार्जनं मार्ष्टिः शुद्धिमात्रम्, वसेस्तिः ( उ० ) इति बाहुलकात्, प्रथमप्रज्ञेति  
 ( सू० ) वः, मृजेष्टिः ( सू० ) । मृजति पिद्भिदादित्वादह् ( सू० ) । उद्भाषते मलेनेनोत्सादनम् ।  
 छद् अपवारणे, उच्छादनमिति तु सभ्याः । ( आप्लावः, आप्लवः ) विभाषादिरुच्छेति ( सू० ) वा  
 धम् । मज्जनं च ॥ १२१ ॥ चर्च्यते नयाङ्गं चर्चा । चर्चिकायां चर्चने साधु चर्चिक्यं चन्दनादिना  
 पुण्ड्रादि । तिष्ठत्यङ्गे स्यासकः । चर्चिक्यं त्वपभ्रष्टम् । अनुबोधः, यथा कस्तुरिकादमेयादिना । पत्राङ्ग-  
 तिलेखा ( पत्रलेखा ) । ( पत्राङ्गुलिः ) श्राविडकादि ( पु ) लिङ्गादिभेदेन कपाले पत्रमङ्गः ॥ १२२ ॥  
 तमालपत्राङ्गुलि कस्तुर्यां ललाटे तमालपत्रम् । तिलकाङ्गुलि तिलकम् । चित्रकं नानावर्णम् । विधिनष्टि  
 विशेषकम् । इत्थं तिलकभेदा एते, पर्यायत्वं त्वद्वारविप्रकर्षात् । अत्र द्वितीयवचनयोः तिलकविशेषयोः पुन-  
 र्पुनस्तयोः । पुण्ड्रं च । कुं कंति कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥ अमरवि शिखा केसोत्थाग्राधिपम् । म्रियते, वरं,  
 प्रहृष्ट- इत्यप् ( सू० ) । वहीकदंशजं ( बाह्योक्तं ), यद्यप्योक्तददिविषये- कुभुवुर्वाजिनः स्थाप्योक्त-  
 कुङ्कुमकेसरान् । पीतयल्लङ्गं पीतनम् । रञ्जनाद्रक्तम्, अत एवाद्यक्तम् । संकोचस्य पिशुनं सूचकम् ।  
 वीरं स्थिररागम् । लोहितं चन्दनमिव । वर्णं च । पुष्पं देस्साम् ॥ १२४ ॥ लक्ष्यते छाया । रक्षति देहं  
 राक्षा, रतिलात्योर्वा । जायते जतु । यैति बावकः । न लज्जते स्म- अलक्षकः, अलक्षति वा । हुमस्त्व-  
 मव इव निर्यासः । धन्वन्तरिस्तु- त्यासा पलंक्या राक्ष दक्षिण्य कुमिजं जतु । कृतप्नान्नाह्वयः वा च  
 हुमन्याभिरलक्षकः ॥ लक्ष्यते लवङ्गम् । देवश्रुतिमत्कुसुमं देवानां वा । ( श्रीसंज्ञं ) भीषण्यम् । ( ज्य-  
 यक्तं जायकाद्यपर्व्वतमवम् ॥ १२५ ॥ ( कालीयकं ) क. लवणसारम् । वंशमं वंशकम्, वंशिकेत्येके ।

अनाहृतं निष्प्रबाणि तन्त्रकं च नवाम्बरे ।  
 तत्स्वाङ्गमनीयं वरीतयेर्वद्योर्युगम् ॥ ११२ ॥  
 पत्रार्थं धीतकीशैव्यं क्षुण्णत्वं महाधनम् ।  
 क्षीमं दुष्टं स्याद् द्वे तु मिथीतं प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥  
 क्षिबां क्षुण्णे बलस्य दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः ।  
 रैर्ध्वमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥  
 पटचरं जीर्णवत् समी नलककर्पटी ।  
 बलमाच्छादनं वासयेत् बलनमङ्गुलम् ॥ ११५ ॥  
 सुषेलकः पटोली ना वराशिः ( सिः ) स्थूलशाटकः ।  
 निबोळः प्रच्छवपटः समी रत्नकम्बली ॥ ११६ ॥  
 अन्तरीयोपसंभ्यामपरिधानान्यधोऽङ्गुके ।  
 द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गी समी वृहत्तिका तथा ॥ ११७ ॥  
 संभ्यानमुत्तरीयं च धोळः कूर्पासकोल्लियाम् ।  
 नीशारस्तु प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

हेरः क्षलनं भोगव्याहननं तद्वहितमनाहतम् । प्रोयतेस्यां प्रवाणी तन्नुवावशाका सा निर्मातर  
 ( निष्प्रबाणि ), निष्प्रबाणिध ( सू० ) इति साधुः । तन्त्रादचिरापहते ( सू० ) इति कनि तन्त्रकः ।  
 उद्गम्बतेभिलष्यते- उद्गमनीयम् । युगमविबक्षितं, बलस्यम्- गृहीतपत्युद्गमनीयवत्तेति ( उ० सं० )  
 ॥ ११२ ॥ लक्ष्मणवद्विपत्त्रेणु कृमिलाल्पेर्णाकृतं पत्रार्णम्, पृषोदरादित्वाद् ( समाधः ) । धुमावा  
 विकारः क्षौमम् । दुष्टते धुमाया आकृष्यते दुष्कृलम् । निवीयत आच्छायते निवीतम्, व्येम् संवरणं,  
 निवृतमिति शुक्तिः ॥ ११३ ॥ दश्यन्ते दशाः, पुंसीत्येके । बस्यते दाभिस्ता दस्तयः, अधिष्ठनदशस्य  
 स्वस्वाच्छादनादनाहः, बतय इत्येके । आनयतेनेनानाहः, सर्वत्रेदम् । ( परिणाहो विशालता ) वित्ताराहया  
 ॥ ११४ ॥ पट इवाचरति पटति, सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्या ( बा० ) इत्येके, ततः घञन्ताद् भूतपूर्वेकद्  
 ( सू० ) । नचं भवो नलकः, नयते वा, ओणञी ऋढे, इदमर्थं येन पूयते तत् रुडोवं तत्पुंस्त्रेपि वञ्जे  
 ऋते । कन्त्यते कूर्पटः । बस्यतेनेनाहं वासः, धसन्तं द्वीये । क्लियते वेळम्, वेळद्विषयत्, क्लि  
 ऋते । संभ्यानमुत्तरीयस्य कम्बम् । प्रोतः सिन्धुधरं च ॥ ११५ ॥ पटति द्वितीयेते पट्यम्, अक्षीति चिन्तं  
 इत्येर्धेनाहः । वृहत्तिकां वराशिः, वा पुंलिङ्गः । वत्सार एकावा इत्येके । निबोः स्वतेनेन निबोळः येन तुल्यव्या-  
 षि कम्बयते, शुक्तिः धौलपुणेर्धेवं वा । रमतेस्मिन् रत्नकः । काम्यते कम्बलः, कम्बलः कमनीयो भवतीति  
 निर्वचनाद् ॥ ११६ ॥ अन्तरे भवमन्तरीयं, गढादित्वाच्छः ( सू० ) । उपसंवीयतेनेनाह्यमुपसंभ्यानम् । प्राप्तिवते-  
 नेनाहं प्रावारः, वृणोतेराच्छादने ( सू० ) वम् । उत्तर ऊर्ध्वं ह्य आसम्भ्यत उत्तगसङ्गाः । ( वृहत्तिका ) बृह-  
 ताच्छादने ( सू० ) कन् ॥ ११७ ॥ संवीयतेनेन संभ्यानम् । उत्तर ऊर्ध्वं भवमुत्तरीयम् । बस्यते  
 कण्ठेनेन वोलः, आप्रपदीनं कम्बुकम् । कूर्परेत्यते कूर्पासः क्षीणां कञ्जुलिकाहयः । निवीयते क्षीता-  
 वनेन नीशारः, क्षामयुक्तां निवृत्तेति ( बा० ) वम्, बलस्यम्- गौरिवाकृतनीशारः प्रायेण क्षिशिरे कृशः  
 ॥ ११८ ॥ ऊर्ध्वोत्थाच्छादकमङ्गुलमधोऽङ्गम् । चर्चं भगवन्ति कण्ठातुकं, यस्य चक्रनकोपभ्रंसः । पादार्थं प्रपदं,

धैर्यवर्ण कण्ठधृषा छम्बनं स्यात्तुल्यन्तिदा ।  
 स्वर्णैः प्राकम्पिकायोरुच्चमिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥  
 हारो मुक्तावली देवच्छन्दोदी शतयष्टिका ।  
 हारमेधा यष्टिमेधाद् गुच्छा (स्त) गुच्छा (स्वा) र्दगोस्तनाः ॥ १०५ ॥  
 अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।  
 शैव मत्तप्रमाणा स्यात्सप्तविंशतिमीक्षिकाः ॥ १०६ ॥  
 आवापकः पारिहार्यः कटकः बलयोग्ययोम् ।  
 केयूरमङ्गलं तुल्ये अङ्गुलीयछमिका ॥ १०७ ॥  
 साक्षराङ्गुलिमुद्रा सा कङ्कणं करमूषणम् ।  
 स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना श्रियाम् ॥ १०८ ॥  
 ह्रीं च सारसनं पाय पुंस्कट्यां शूद्रसलं श्रियु ।  
 पादाङ्गवे तुलाकोटिमञ्जरी नूपुरोच्चियाम् ॥ १०९ ॥  
 हंसकः पादकटकः किंकिणी ध्रुवघण्टिका ।  
 स्वक्कलकुमिरोमाणि वलयोनिर्वृता श्रियु ॥ ११० ॥  
 बालकं क्षीमादि फालं तु कार्पासं चादरं च तत् ।  
 कौशेयं कुमिकोशांत्यं राङ्गवं मृगरामज्ज्व ॥ १११ ॥

कुमिकुलीवाभ्यसृति (सू०) इकम् । सडल्लकारान्ते ललन्तिदा । शिवाबलोकितेन हृदेत्येव ।  
 स्वर्णमयी कण्ठधृषा प्राकम्पिकेत्येव ॥ १०४ ॥ ह्रियतेनेन-चित् हारः । देवानां छन्दोभिप्रायोत्र ।  
 यष्टिकेता संरः स्रितित्येकार्पाः, यदाहुः- चतुःषष्टितो हारोपाद्यहीना ययोत्तरम् । रश्मिः कलापो मान-  
 वकोर्धहारोर्धगुच्छः । कलापच्छन्दो मन्दरश्च गुरश्चः सप्ततिक्कटकः । अन्ये त्वाख्यन्- दृष्टिशालतो  
 गुच्छो, गुच्छाच्छादनात् । चत्वारिंशत्तो गोस्तनो छम्बमानात्, गोपुरछोपि ॥ १०५ ॥ चतुःपञ्चाशत्तोर्ध-  
 हारो देवच्छन्दोर्धकात् । विंशतिल्लो मार्गवकोल्यत्वात् । एका- आबलते (अत्र) । शैव- एकावली  
 ॥ १०६ ॥ हस्तसुताद्वः, व्या-उच्यते आवापकः । परिह्रियते परिहारे मयो वा पारिहार्यः । कट्टि  
 कटकः । कट्टे दलनः । के बाहुशीर्षे यौति केयूरम् । अङ्गं दयतेङ्गदम् । अङ्गुल्या मयमङ्गुलीयकं,  
 जिह्वानूल्मङ्गुलेष्ठः (सू०), स्वर्णं कन् । ऊर्मिप्रतिष्ठितिकर्मिका ॥ १०७ ॥ अङ्गुल्या मोदयते  
 मुरयति बाहुगुलिमुद्रा, सा- कर्मिका । आहुध- कङ्कणं स्यात्प्रातिहारः, कं शुभं कणति कङ्कते सरति  
 वा । मीषते प्रक्षिप्यते मेखला । कङ्कयते बध्यते काञ्ची । सपति समवेति सप्तकी । रशान्ति  
 तां (रचना), रश्च कान्तो शोत्रः । निक्षिणी च । कलापो नानार्थे ॥ १०८ ॥ सारं सनोति  
 कारचनं क्षीक्यां वसप्रन्ननम् । उच्यते नीवी च । पुंस्कट्यां वा काञ्ची सा भृङ्गला, भृङ्गः  
 कलतीति । पादेङ्गमिष पादाङ्गदम् । तुलाकृतेर्जङ्गवायाः कोटिरिव तुलाकोटिः । मञ्जु मधुसूरीरवन्ति  
 मञ्जरीः । नुवति नूपुरः, नृ स्तवने ॥ १०९ ॥ हंसकश्चयति हंसकः । अवान्तमेदस्तेषां भरतोष्णे  
 स्मरतः । किञ्चिःकणति किंकिणी, किंकिणीत्येके । ध्रुवास्या षष्टिका वुचुरकाद्या । प्रहणकवाक्यमिदम्  
 (स्वक्कलकुमिरोमाणीति) । त्वगादयो वसत्व योनिवपादानकारणं, आदिष्टतिङ्गात्तम् । बाष्कलोमकास-  
 कार्यासारादकौशेयराङ्गवानाहतनिष्प्रदाभितन्त्रकाणि बाध्यतिङ्गादि ॥ ११० ॥ बल्कल्य स्वचो विकारो  
 बल्कल्यम् । धुमाया विकारः क्षोमम् । आदिशब्दाद् मं(मा)ङ्गादि । कलस्य विकारः फालम् । कोष्ठस्येदं  
 कोष्ठं नेत्रपद्मादि, फांशाङ्गम् (सू०) । रङ्गुनीगतिशेषः, कण्ठादिभ्यश्च (सू०) इत्यण् ॥ १११ ॥

कवरी केशवेणो(शां)य धमिलः संयताः कथाः ।  
 जिह्वा चूटा केशपाणी प्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥  
 वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्वी विशवे कचे ।  
 पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥  
 मन्दरुहं रोम लोम तद्वृद्धौ स्म(स्म)सु पुंमुले ।  
 आकल्पवेणी नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥  
 वरीते त्रिपलंकतालंकरिष्णुश्च मण्डितः ।  
 प्रसाधितोलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥  
 विभ्राद् भ्राजिष्णुरोचिष्णु भूषा तु स्यादलंक्रिया ।  
 अलंकारस्त्वामरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥  
 मण्डनं चाय मुकुटं किरीटं पुनपुंसकम् ।  
 चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥  
 बालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ।  
 कर्मिका तालपत्रं स्यात्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

संयता वद्धाः । ऊर्ध्वं मिलति धम्मिन्ने जूयद्बः, धमिः सौत्रो वा । धम्मेलं इति सभ्याः । वेते मूर्ध्नि  
 शीय( शय्य )ते वा शिखा, शीङ्गेइस्त्वथ ( उ० ) । चोदयते चूडा । प्रशस्ताः केशाः केशपाणी ।  
 शिरोलेख, ( सटा ) षट् अक्षरं । ( जटा ) जट संघाते ॥ ९७ ॥ ( वेणिः ) वेणु गतो । शिरशि भवः  
 शीर्षण्यः, शरीरावयवाश्च ( सू० ) इति यत्, येचतदिष्टे ( सू० ) इत्यत्र बाकेरोधिति ( बा० ) शिरसः  
 शीर्षन् वक्तव्यः । क्षिपेद्योन्यासंपुक्ते-अदिहते स्नानादीनिर्मले वा, शृद्धं घातने । कचादिलक्षणेविर्देशः  
 केशपाशः, केशपक्षः, केशहस्तः, प्रसंसावचनेश्च ( सू० ) इति समासः ॥ ९८ ॥ शिरसोन्मल रोहति  
 रोम । रम्योरैक्यालोम, लुपते वा । पुरुषमुखे रोमशूदिः, समभ्रुते स्मथु । दाढिकापि । म्यधनं वानार्थे ।  
 आकल्प्यत आकल्पः । वेवेष्टपद्गं वेधः, विशति चेतसीत्येके तालम्यं समाहुः, कर्मवेधायत् ( सू० ) इत्यत्र  
 तथा विचारात् । नेत्रयोः पथ्यं ( नेपथ्यं ) वस्त्रादिशोभा । प्रत्यङ्गं कर्म प्रतिकर्म । प्रसाधयेतेनेनाह्यं  
 प्रसाधनम् । पवैकायां इत्येके तथासत्, वेवो हि बलालंकारमन्त्रप्रसाधनेरङ्गशोभा, प्रसाधनं तु  
 समालम्भनं तिलरूपपत्रमङ्गादिना ॥ ९९ ॥ एते वक्ष्यमाणा रोचिष्णवताः । ( अलंकरिष्णुः ) अलंक्र-  
 निराह्यइति ( सू० ) इष्णुन् । परिष्कियते स्म, संपर्युपेभ्यइति ( सू० ) सुट् ॥ १०० ॥ भ्राजते तच्छ्रीको  
 भ्राजिष्णुः, भुवश्च ( सू० ) इति बाद् ( भ्राजतेः ) इष्णुन् । ( अलंक्रिया ) अलंकारवाच्या शोभा ।  
 कर्णे बभ्रुस्युटो ॥ १०१ ॥ मौलिनां नाथे । मुखे कुव्यते मुकुटं, मङ्कयतेनेन वा ( मुकुटं ) । कर्बते  
 किरीटम् । कोटीरं च । मणिरिति शेषः, तरतीव तरलः । नाथको नानार्थे ॥ १०२ ॥ बालपाशे साधु-  
 बालपाशः, बालबन्धनार्थं मुक्ताबलयः, उत्फुल्लतिह्यादि, बालेषु पाशसमूहो वा । पारितस्तथा भवा पारि-  
 तथ्या, पार्थो तथ्या वा, सीमन्तादिः । पत्रपाशानां समूहः पत्रपाशः । ललाटस्यालंकारो ललाटिका,  
 कर्णललाटात्कनलंकरे ( सू० ) । कर्णालंकारस्तात्पत्रवरोधोऽपि । कुण्डं छाति वृत्तत्वात्कुण्डलम् ।  
 कर्णे वेष्टयतेनेन वर्णवेष्टनम् । भिन्नरूपः, भवः कर्णालंकारा इत्येके ॥ १०३ ॥ प्रीवावा अलंकारो प्रवेष्टनं,



ओष्ठाधरी तु रत्नच्छरी दशनवाससी ।  
 अयस्ताधिपुङ्गव गण्डी कपोली तत्परो हनुः ॥ ९० ॥  
 रवना दशना दन्ता रवास्तालु तु काकुष्व ।  
 रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तायोद्यस्य मूक्षिणी ॥ ९१ ॥  
 ललाटमण्डिर्गोचिरुर्ध्वं हृग्यां ध्रुवी ख्रियाम् ।  
 कूर्चमखी सुवोर्मध्यं तारकाक्ष्यः कर्मीनिका ॥ ९२ ॥  
 लोचनं नयनं नेत्राक्षिपं चक्षुरक्षिणी ।  
 हृग्वह्नी चाक्षु नेत्राभ्यु रोदनं चाक्षमभ्यु च ॥ ९३ ॥  
 अपाक्षी नेत्रयोरन्ती कटाक्षोपाङ्गवर्शने ।  
 कर्णशङ्खग्रही पुंसि धृतिः स्त्री भ्रवणं भ्रवः ॥ ९४ ॥  
 उत्तमाक्षं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोख्रियाम् ।  
 चिहुरः कुन्तलो बालः कषः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥  
 तद्वृन्वं दीशिर्गोक्ष्यमलकाध्रुणकुन्तलाः ।  
 तं ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

उत्र वर्तते । अधो मवोऽधरः । ओष्ठाभ्यां सहिताधरी वा, अधरोप्योष्मात्रे वर्तते । ओष्ठाधः, कीम्बते  
 चिबुकं हन्वप्रसंधिः । गण्डी संहन्यते गण्डः । कम्पते कपोलः । तदधो गण्डः । तत्परस्तराध्याङ्गवे  
 कपोलाधः, हन्त्याहारं हनुः, पुंस्यपि ॥ ९० ॥ रयते विलेख्यतेभीभी रदनाः । दश्यते हम्पते चामीभिर्दशना  
 दन्ताम् । रदन्ति लिखन्ति रदाः । तल्ल्याहारोऽस्मिस्तालु । ईषस्कवते काकुं दशाति वा काकुदम् । रस्व-  
 तेन्या रसना । लेडि जिह्वा । खेला च । पाष्ठिकान्तर्गलगुण्डिका । ओष्ठ्येति जातावेकवचनम् । सृजति  
 बालां सखि, सृजणी इत्यपि क्वचित्कम्पन्तत्वान् ॥ ९१ ॥ ललत्यतारलंकारः, ललधदुलस्तिलकोट्यल वा  
 ललाटम् । अत्यते भूष्यतेलिकं, अलीकं च । गुध्यते पटादिना वेषयते गोधिः । भालं च । भ्रमति ध्रुः,  
 नेत्रोर्ध्वं रोमराजिः । कूर्चमिति भागुरिः, तप्त, लक्ष्यादर्शानान्, एवं कूर्चम् । तारयति तमसस्तारका,  
 तारकाज्योतिषीतीत्वाभावः ( वा० ) । अक्ष्ण इति खेचरीभ्यवच्छेदः । ( कर्मीनिका ) कर्मी दीप्ती ॥ ९२ ॥  
 लोच्यतेनेन लोचनं विलोचनं च । नायनेनेन दश्यं नयनं नेत्रं च । ईक्ष्यतेचनेक्षणम् । चष्टे वक्ति चक्षुः ।  
 अक्ष्णोत्याक्षिः दन्द्रचक्षुः ह्रस्वे । दश्यतेनया दक्ष्, दन्द्राख्रियाम् । अस्वतेक्षु, अक्षं च । अक्षत आकण्ड-  
 मभ्यु । बाष्पो नानायै ॥ ९३ ॥ बाह्याविति शेषः । अपकृष्टावद्भादपाङ्गो । कटे क्षिपति कटाक्षः, अपा-  
 ङ्गवन् दर्शनं यत्र, नेत्रविभागाख्यम् । कीर्यते शब्दोऽस्मिन्कर्मः । शब्दस्य ग्रहणेन शब्दग्रहः । अयतेनवा  
 धृतिः । धृणाति भ्रवः, असन्त. ह्रस्वे । ध्रोग्रं च ॥ ९४ ॥ शीर्यते जरसा शिरः । एवं कुमारशीर्षयो-  
 गिनिः ( सू० ) इति लिङ्गाच्छब्दार्थं प्रकृत्यन्तरम् । मूर्च्छति मूर्धा, पुमान् । मस्यति परिणमते मस्तकम् ।  
 कं बराङ्गं च नानायै । चयते चिहुरः, चिहुरः प्राकृते कस्य हादशान्, संस्कृतेपीति दुर्गः— कुन्तला  
 मूर्धजाः सस्ताश्चिकुराधिहुराः कचा इति । कुन्ताकारं लाति कुणति वा कुन्तलः । वत्यते बालः, ज्वल-  
 दित्यणो वा ( उबलितिकसन्तेभ्योणः ) । कचति कचः । के शते केशः । शिरसिजश्च ॥ ९५ ॥ केशानां  
 समूहे, अवित्तदस्तिधेनोष्ठक् ( सू० ), केशाभ्याभ्यायञ्छावन्यतरस्याम् ( सू० ) । अन्यन्ते भूष्यन्तेलकाः ।  
 ध्रुणकाख्याः केशाः ( ध्रुणकुन्तलाः ), चचराख्याः । कुरलाख्य । आग्र्यन्ति भ्रमरमतिकृतयो वा ( भ्रमरकाः ) ।  
 काकरयव पक्षः । शिखं व इयते शिरसि खण्डयते वा शिखण्डकः । क्षत्रियणां चूडा काकपक्ष इति  
 गीहः ॥ ९६ ॥ कृष्णान्तां, कं धृणाति वा कवरी, जानपदकुण्डगोणेति ( सू० ) दःप् । देशां रचना ।



पुनर्नवः करवती वसोती वसरोहिवाह ।  
 प्रादेशताडयोधर्मास्तर्ज्यादिभुते तते ॥ ८१ ॥  
 अक्षुष्ठे सप्तनिष्ठे स्वाधित्तिर्वासाक्षुष्ठः ।  
 पाणी चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताक्षुष्ठो ॥ ८४ ॥  
 द्वौ संहतौ सिंहप्रतली वामदक्षिणी ।  
 पाणिर्निकुञ्जः प्रसृतिस्ती गुतापप्रतिः पुमाव ॥ ८५ ॥  
 प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो गुह्या तु वक्ष्या ।  
 स रत्निः स्यात्परित्यक्त निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥  
 व्यामो बाधोः सकरयोस्वतयोस्तिर्यगन्तरम् ।  
 ऊर्ध्वविस्तृतयोः पाणिर्गुमावे पीरुर्ध्वं प्रिदु ॥ ८७ ॥  
 कण्ठो गलोप मीयासं शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।  
 कम्बुपीवा भिरेखा सावदुर्पाटा कुकाटिका ॥ ८८ ॥  
 यक्षशास्यं यदमं मुण्डमानमं छपनं युक्तम् ।  
 ह्रीवे प्राणं गन्धवद्वा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

( सू० ) साधुः, व सनति याति वा । वसं रति वसरः, न सन्वते वा, वसरेकका ( वनेईवरेकेकव-  
 कावाच्याः ) । पुनर्नवः करवह इत्येके पेटुः । त्रिभुवनवरणताभावः । कमाक्षुष्ठोपि । तर्ज्या भुते  
 तते प्रसारितेक्षुष्ठे धर्मे, प्रादिरभते प्रादेशः । मध्यमवा भुतेक्षुष्ठे तते तालः, तल प्रतिष्ठायाम् । अना-  
 मिदया भुते ततेक्षुष्ठे, गोकर्णोद्विन्नैर्धर्मः ॥ ८३ ॥ सह कनिष्ठ्या, ततेक्षुष्ठे वितस्तिः, वितस्वतीति ।  
 विष्टिः । हादद्याद्गुल इति सिद्धस्यानुवादः । चपटेनेन चपेटः, चपेटापि । प्रसृतं तलमस्त प्रतलः ।  
 प्रसृतो हस्तोऽस्य प्रहस्तः ॥ ८४ ॥ द्वौ प्रसृततली संहतौ सिंहप्रतली, सिंहो हि मिथिवाम्ना चपेटाम्ना  
 इति, संहस्तौ वा- इत्येके संहतः संघट्टं लातीति । संघट्टितो हस्तस्ताकादिना, प्रक्षियत इति  
 प्रसृतः, प्रसृतिश्च । निकुञ्ज इत्यपठः । प्रकुञ्जस्त्वधंप्रसृतिः । ती युते प्रसृती पार्श्वस्थौ बौद्धिको-  
 ज्जातेः, अक्षुष्ठे ( अज्यते ) जनेति, अम्यते जलमनेनेति विसृष्टाः । नाभ्ये तु- पताकाभ्यां तु हस्ता-  
 भ्यां संछेपाद्व्यतिः स्युः ॥ ८५ ॥ बाहो ( प्रकाष्ठे ) प्रसारितपावौ हस्तवतुर्ध्वत्वाद्गुहं मानम् । स  
 हस्तः, रत्नेः पुस्तपावौ वा । रमन्तेस्मिन्माला रत्निः, सह रत्न्या मुष्ट्या वर्तत इत्येके । नास्ति रत्निर्मु-  
 ष्टिरस्यारत्निः, निष्कान्ता क्विहास्मिन्निष्कनिष्ठे मुष्टिस्तेनोपकथितः स हस्तोऽरत्न्याभ्यः ॥ ८६ ॥  
 व्यामीयते रज्ज्वाद्येन व्यासति वा व्यामः, स्व स्वे पार्श्वे प्रसारितयोर्बाह्वोर्यथम् । ऊर्ध्वं विस्तृतो योः  
 पाणिश्च नुः पुंसो वत्र तन्मानमध्ये पीरुर्ध्वं नाम मानम्, पुरुषोर्ध्वमानं तत्पीरुध्वमित्येके, पुरुषहस्तिभ्याम्-  
 न्च ( सू० ) । हादद्याद्गुलं तु पीरुर्ध्वं ज्ञायमानम् ॥ ८७ ॥ कण्ठि कण्ठते वा कण्ठः । गिकति कण्ठे  
 प्रावाप्रमाणः । एवाति मिरति वा प्रीवा । शिरो धीयतेस्यां शिरोधिः । कं चारयति कंधरा, संशया-  
 यन्नुपजीति ( सू० ) खन् । संशयाकृतिप्रीवा कम्बुप्रीवास्या, अतो त्रिवलया वेति । न वदस्यति वापदुः ।  
 वदति पाटा । कृकं शिरोप्रीवमदति कृकाटिका प्रीवापथाद्भागः ॥ ८८ ॥ उच्यतेनेन वक्ष्यम् । अस्वच्छे-  
 स्मिन्नास्यम्, कृत्स्नयुतेवहुलं ( सू० ) इति शब्द, मुखं मुखान्तरालं च द्वयमाश्रयमिति शान्भवः । उच्य-  
 तेनेन वदनम् । मुण्डतेनेन मुण्डं, मुष्टिं तोडने । धानिति शसित्वेनाननम् । छपतेनेन छपनम् । कन्ध-  
 तेनेन मुखं, डित्त्वनेर्मुदसचोरातः ( उ० ), मुदितानि स्नान्यत्रत्येके । जिघ्रत्वेनेन घ्राणम् । घोषति  
 भ्रमति गन्धं घोणा । नासंत नासिका, कस्या गन्धवद्वा घोणा प्राणं नासा च नासिकेति मुनिः कुम्भ-  
 मयाह । सिद्ध्या [ वि ] गी च ॥ ८९ ॥ उच्यते तीक्ष्णाहारणौष्ठ इत्युभयावौपि- अपरस्ताभिश्चानुसरी-

मम योनिर्द्वयोः शिशो मेढं मेढमशेषसी ।  
 मुष्काण्डकांशो वृषणः पृष्ठवंशाधरं त्रिकम् ॥ ७६ ॥  
 पिच(चि)ण्डकुली जठरंवरतुन्यं स्तनी कुची ।  
 पु(पु)पुषं तु कुषामं स्यात्त मा कोरं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥  
 उरौ वत्सं च वत्सं पृष्ठं तु चरमं तनोः ।  
 स्कन्धो भुजशिरोस्तोत्री संधी तस्यैव जघुणी ॥ ७८ ॥  
 बाहुमूले उभे कक्षी पार्श्वमखी तयोरधः ।  
 मध्यमं चावलग्नं च मध्योत्थी द्वी परी द्वयोः ॥ ७९ ॥  
 भुजबाहु प्रवेष्टो वंः स्यात्कफो(पो) निस्तु कूर्परः ।  
 अस्थोपरि प्रगण्डः स्यात्प्रकाष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥  
 मणिबन्धादाकमिष्टं करस्य करमो बहिः ।  
 पञ्चशास्त्रः शयः पाणिस्तजनीं स्यात्प्रवेशिनी ॥ ८१ ॥  
 अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः प्रवेशिनी ।  
 मध्यमानामिका चापि कमिष्टा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

(सन्नेषचेतवत्र) खलो भगः पदमिति वक्तव्यादयः (हा-) । योति योनि । क्वाचिद् स्मरगृहं च । शिनोति  
 षंति भगं शिस्तः, शेष[ण] च । मेढलनेन मेढम् । मुष्काति गोपायति शुक्रं मुष्कः । अण्डयोः  
 कोशोण्डकोशः । वषति शुक्रं वृषणः । पेलधः । पृष्ठास्नोष ऊर्ध्वः संधी त्रिसंघर्षजम् ॥ ७६ ॥ पन्त्यमं  
 पिचण्डः, अपिचमत्पाहारं वा । कुष्यते कुक्षिः । जमत्याहारं जठरम् । उदीर्यति (दियति) उदरम् । तुदाति  
 तुम्ह, तुन्दिच । स्तन्येते बालैः स्तनी । कृयेते कुच्येते वा कुची । वसोहर्हा उरसजौ च । चुचिबलम्यकं  
 कायति शिवमानं चुचुक्म् । (कोरं) कुड घनत्वं, ना पुनित्वां न भवति । कक्षोमध्याङ्गिमास्थि कक्षा  
 ॥ ७७ ॥ उरस्यति सहते- उरः, उरस् कण्डबहिः । वस्यते छाद्यते वत्सम् । (वत्सः) वत्स  
 संधाते, असुन् । पच (कोडादयः) एकाधौ इयेके । पृथ्यते सिच्यते पृष्ठं देहस्य पश्चाद्भागः, पश्चान्मात्रे  
 तूपचारत् । स्कन्धते भारेण स्कन्धः । अस्यते भारेणांसः । अंसकक्षयोः सन्धिहृदिमास्थि, जायते  
 जघु ॥ ७८ ॥ कच्येते कक्षौ, यन्तावपि कक्षौ । (पार्श्वं) पार्श्वसंघर्षजम् : (बा०), पार्श्वे  
 इति द्विवचनं न्यायम् । मध्ये भवं मध्यमं, मध्यान्मः (सू०) । अवलगत्यवलग्नमिति कुपरात्वात् ।  
 विलग्नं च । मन्यते मध्यम् । परी भुजो बाहुश्च ॥ ७९ ॥ भुज्यतेनया भुजा, भुज्युन्वापिति (सू०)  
 साधुः । बहति बाहते प्रयतते वा बाहुः, बाहु प्रयत्ने । प्रवेष्टते प्रवेष्टः । घति ददाति वा द्रोः, सान्तः ।  
 कं कणति कफोणिः । कुजति कूर्परः, बाहुबाहुसंधेरालिखत्स्य पश्चाद्भागः, तथा च- कफोणिः कूर्परोऽ-  
 रत्नेः पृष्ठमिति नाममात्रा । अस्य कूर्परस्योर्ध्वं, प्रगम्यते प्रगण्डपते वा प्रगण्डो बाहुः । कूर्परस्याधः,  
 प्रकुप्यते प्रकोष्ठ उपबाहुः, यत्कात्स्यः- प्रकोष्ठमन्तरं विद्यादरतिमणिबन्धयोः ॥ ८० ॥ मणोर्ध्वेनोत्र  
 मणिबन्धो भुजपाण्योः संधिः । तस्मादारभ्याकनिष्ठायाः करमः, करे भातीति आङ्गिभिविचौ (सू०) ।  
 शेतेनिमन्सर्वं शयः, शम श्लेके, नाममात्रा तमयं पपाठ- पाणिः शमः शयो हस्त इति । पणन्तेनेन  
 पाणिः । हस्तकरो नानार्थे । मणिबन्धः पाणिमूले । तर्जयत्यनया तर्जनी । प्रदिशत्यवश्यं प्रवेशिनी  
 ॥ ८१ ॥ अङ्गुं पाणिपादं ल. ल्यङ्गुली । अङ्गौ तिष्ठत्यङ्गुष्ठः, सुपिस्थइति (सू०) कः, अग्राम्ब-  
 गोभूमीति (सू०) पन्त्यम् । अनामिका नामग्रहणयोग्या, ब्रह्मणोनया शिरःछेदनादत एवास्या पवित्रं  
 कियते । कनिष्ठास्तरा । ता अङ्गुष्ठायाः पञ्चाङ्गुल्यः ॥ ८२ ॥ नास्ति खमस्य नक्षः, नभ्राणपादिति

स्याच्छरीरास्थि कङ्काशः घृष्टास्थि तु कशोदका ।

शिरोस्थपि करोटिः स्त्री पार्श्वस्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

अङ्गं प्रसीकावयवापपनोय कलेवरम् ।

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥

कायो बहः क्लीबपुंसां स्त्रिया मूर्तिस्तनुस्तनूः ।

पादाङ्गं प्रपदं पादः पदङ्गमिच्छरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

तद्व्यन्धी घुटिकं गुल्फौ पुमान् पाष्णिग्रस्तयोः ।

जङ्घा तु प्रसृता जानूरुपर्वाङ्गीवक्त्रिग्रियाम् ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वक्ष्मणः ।

गुवं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभरथो द्वयोः ॥ ७३ ॥

कटां ना भ्रोणिफलकं कटिः भ्रोणिः ककुपती ।

पञ्चाङ्गितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीबं तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।

स्त्रियां स्फिची कटिप्रांथावुपस्थौ वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥

मुनिः, कश्यप इति । घृष्टप्रस्थो गडुः पुमान् । के रयति करोटिः करोटी च । पूर्वते पर्शुः, पर्शुरेव पर्शुका ॥ ६९ ॥ अङ्गलङ्गम् । प्रस्थेति प्रतीकः । अवयौल्यवयवः । अपहन्यतेपचनः, अपचनोऽङ्ग । मिंति (सू०) सःपुः । कश्यपे कलेवरम् । गात्रं गच्छति गात्रम् । उच्यते वपुः । संहन्यते संचात्यन्तस्मिन्-भङ्गानि संहननम् । शरीरं शरीरम् । वृष्यते सिध्यते वर्धते मलान्वा व-म् । विगृह्यते विग्रहः, ग्रहण-इति (सू०) अप् ॥ ७० ॥ चीयते कायः, निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्व-आदेयकः (सू०) । दिह्यते देहः । मूर्च्छते वर्धते मूर्तिः । तन्यते तनुः । प्रारम्भः पदस्य प्रपदं, पदशब्दः पादपर्यायोक्तिः । पद्यतेनेन पादः । पदिति लक्ष्यलक्षणयानोक्तिः, यस्तु मीः पदा न स्तृष्ट्या, पदशामेव यथातथेत्यादौ स पदश-मासिति (सू०) पदादेशः, अतः पदङ्गप्रारिति पाठ्यम्, क्रमे तु पदम् । अंहत्यनेनाङ्गिः । चरत्त्वेन चरणः ॥ ७१ ॥ पादप्रस्थो पार्श्वनिष्ठे, घोटते घुटिका, घुट परिवर्तने । गुब्धते गुल्फः । गुल्फाचः पञ्चाङ्गागः पाष्णिः, पुमानिति प्रायिकं, पृष्यते झल्यते विपादिका चिकित्सार्थं पाष्णिः । जङ्घन्वते कुटिलं गच्छति जङ्घा । प्रसरति प्रसृता । जायते जानुः । ऊवोः पवं प्रस्थिः । अस्थि विद्यतेप्राचीवत्, आसन्दावदङ्गीवदिति (सू०) सःपुः ॥ ७२ ॥ सजति सक्थि । ऊर्वयुरुः । वस्यथ ऊर्वधः, बह्वर्धे बह्वक्षः । मवते गूयते बानेन गुदम्, गुद परिवेष्टने वा । अपानित्यनेनापानम् । पाति मगोत्सर्गस्यापुः, पिबति वा झहम् । वसत्यभ्यन्मूत्रं वस्तिमूत्रपुटकम् ॥ ७३ ॥ कथ्यत आभियते कटः, शवे भोषो कालञ्जे च गजगण्डे भूषो कट इति शान्धतः । कटीरापि । धोष्यते संहन्यते भ्रोणिः, तस्याः फलकमिव-ककुपार्श्वनिःसृतांशोऽस्यस्याः ककुपती । कट्याः पञ्चाङ्गागः, निताम्यति घुरतसंमर्शमितम्बः । स्त्रीकट्याः पुरो भागः, द्वन्वते जघनम् ॥ ७४ ॥ कुम्सितं कु रणाति कुकुन्दरं, द्वयहीने क्लीबे । स्त्रायते स्फिच् । प्रथत उद्रियते प्रोथः । प्रोहोपि । ( उपस्थः ) वक्ष्यमाणो भगसिद्धो ॥ ७५ ॥ भज्यते भगं,

पिशितं तरसं मांसं पललं कथ्यमामिषम् ।  
 उत्तमं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥  
 रुधिरसुग्लोहिताक्षरक्तक्षतप्रशोणितम् ।  
 बुद्धाममांसं हवयं हन्मेवस्तुवपा वसा ॥ ६४ ॥  
 पद्यादधीयासिरा मन्या नाडी तु धमनिः सिरा ।  
 तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गार्धं किटुं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥  
 अन्यं पुरीतद् गुल्मस्तु ग्रीहा पुंस्यथ वस्त्रसा ।  
 सायुः स्त्रिया कालखण्डयकृती तु संमं इमे ॥ ६६ ॥  
 सृणिका स्यन्दिनी छाला दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।  
 मूत्रं प्रसाव उच्चार्यस्करी शमलं शकुत् ॥ ६७ ॥  
 पुरीषं गूयं वर्चस्कमली विघ्नाविषी समी ।  
 स्यात्कर्परः कपालोऽपि कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

कार्श्यं वा । मन्यते मांसं, मांसभक्षयितामुच्यते नैरुक्ताः [ मांसभक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाप्यहम् । एतन्मांसस्य मांसत्वे निरुक्तं मुनिरब्रवीदिति नैरुक्ताः ] । पात्यतेनेन देहः पललं, यच्छालाभ्यतः- पलनं तिलमिध्रे स्यात्पललं पिशितेति च । कथंते ( कथ्यते ) कथं, कुह गतौ । आमिष्यत व्यापयेवम् । जाङ्गलं च, पलं नानार्थे । उत्तम्यते शोष्यते- उत्तमम् । बलं लुनाति बलुरं, बलिः सौत्रो वा ॥ ६३ ॥ रुग्णदि क्षोनासि रुधिरम् । अस्म्यते न सज्यते वासूक् । लोहितं रक्तं च वर्णतः । अस्म्यतेक्षम् । शोणति शोणितं, शोणं वर्णं । बुद्धयते स्वादुत्वान्मृग्यते बुद्धा, नान्तः पुंस्यथं, द्रोत्येके, इष्येति वैद्याः । अमं मुखम् । हियते हन्- जीवाधारं पदं, दान्तं प्रकृत्यन्तरम् । मेवति स्निध्यति मेदः, असन्तत्वाद्धीये । उच्यते वपा । वस्ते मांसं वसा, शुद्धमांसस्य च स्नेहः सा वसेति वैद्याः ॥ ६४ ॥ पद्यादभ्यगे प्रीवायाः कृकाटि- कायां सिरा, मन्यते मन्या, सङ्गायांसमजनिषदेति ( सू० ) कथम् । नक्षत्रेयं नाडी सौधीयांत । धमयति धमनिः, धमिः सौत्रः । छिनोति कार्यं सिरा, विष् बन्धने । तिलति तिलकम् । क्लाम्यति क्लोम, उदर्यो जलधारः । हृदयस्य दक्षिणे यकृन्लोम वामे ग्रीहा पुष्कमर्थेति वैद्याः । मस्तकमज्जा, मस्तकमिष्यतीति मस्तिष्कं, इष गतौ । गुर्यते गार्धं, गुर्दं परिवेष्टनं । केटति किटुम्, किट गतौ । मलते धारयति कार्यं मलः ॥ ६५ ॥ अमल्यनेना- जमन्त्रम् । पूर्यते पुरीतत्, सान्तोयम् । गूयते गूयते मा वारिष्यति गुल्मः । ग्रेहते ग्रीहा, नान्तः । वस्ते छादयामि कार्यं वस्त्रसा । वसा ह[न]हारश्च । सायत्यङ्गं स्र.युः, णी वेष्टने । महासायुश्च कण्डरा, सायुसंचात इति वैद्याः । दक्षिणपार्श्वे कृष्णमांसाराः कालखण्डम्, कालखज्जमिलेके । यमं कपोति यङ्गुत् ॥ ६६ ॥ सरति सृणिका । स्यन्दते स्यान्दिनी । ललति लालि वा लाला । दूषयत्यसि दूषिका, दूषकाणि । ( प्रसावः ) पेद्रुस्तुवदति ( सू० ) घम् । उच्चार्यते प्रेर्यते- उच्चारः । अवाधः कीर्यत इति, वर्चस्क्रेवस्करइति ( सू० ) साधुः । शाम्यति शमलम् । शक्नोत्यनेन शकुत् ॥ ६७ ॥ विपत्यन्त्रं पुरी- षम् । गूयत उत्सृज्यते गूयम् । वर्च एव वर्चस्कम् । विविष्टतेनया विघ्ना । वेवेष्टि विट्, विशतीति साम्याः । कल्पते कर्परः, कृपे रो लो नास्ति बाहुलकात् । कं पालयति कपालं मूर्ध्नास्थि, घटादि- कण्डोऽप्युपचारान् । कीति कसति कीकसम् । कुले शरीरं साधु कुल्यं, कोलति संस्त्यायते वा । अस्म्यतेस्य ॥ ६८ ॥ कं कालयति कङ्कानलति वा कंकालः, देहहरमकोऽस्थिपञ्जरः । करङ्केपि । कशाश्केति



ग्लान्गलास्तू आमवायी बिकृतो व्याधितोऽप्यङ्गुः ।

आतुरांभ्यमितोभ्यान्तः समौ पामनकच्युरी ॥ ५८ ॥

वर्धुणो वर्धुरांगी स्यावर्शोरोगयुतोर्शसः ।

वातफी वातरांगी स्यात्सातिसारोतिसारकी ॥ ५९ ॥

स्युः क्षिपाक्षौ पुल्लचिल्लपिल्लाः क्षिपेक्ष्व चाप्यमी ।

उन्मत्त उन्मादयति श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

न्युज्जो भुमे रुजा वृद्धमामी तुण्डि(न्दि)ल्लतुण्डि(न्दि)मी ।

किलासी सिष्मलोन्धोऽहमूर्च्छालो मूर्तमूर्च्छितौ ॥ ६१ ॥

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।

मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगसुग्धरा ॥ ६२ ॥

ग्लयति तच्छीलो ग्लान्तुः, ग्लान्तिस्थान्तुः (सू०) । आमयोऽस्यामवायी, सर्वत्रा-आमवस्योपसंभवा-  
नादिनिर्दिष्टं (वा०) । व्याधिः संजातोऽस्य व्याधितः । अपटुमन्दः । आतुरत्यातुरः, आतरति रोमं  
वा । अभितोऽन्ते स्माभ्यान्तः (अभ्यमितश्च), इष्यस्त्वेति (सू०) वेद् । संवातयुत्तुमूर्च्छं (वे) ।  
मारिमोरी च देहतेति स्त्रीदुर्घः । पामास्यास्ति पामनः, पामर इत्येके, द्रावणीति स्त्रीभोजः । [ कच्यु-  
रस्यास्ति ] कच्युरः, कच्युद्धस्त्वन्व (वा०) इति रः ॥ ५८ ॥ (वर्धुणः) पामादिवाच्योऽस्मदी-  
दूर्ध्नाद्धस्त्वन्व (म०) इति नः । बीर्येन्द्रेण वा वर्धुः । अर्शाणि सन्त्यर्शांसः, अर्शआदिभ्योच् (सू०) ।  
वातो विघटेष्व वातफी, वातातिवाराभ्यांङ्कश्च (सू०) इति निः । एकदेशे विहृतत्वात्तत्सारकणि  
॥ ५९ ॥ क्षिप्यस्यपुल्लचिल्लपिल्लाश्चस्यच्युरीति वक्ष्य्यात् (वा०) स.भ.वः । च्युः क्षेदेति, तेन च्यु-  
र्गतः क्षेदपुण्ये नाम रोगः, तद्योगाच्चुत्तं च्युः, चुत्तच्युत्तच्युत्तः पुमान् । उन्मादो वातभूतादिदोषावित्त-  
विभ्रमः । श्लेष्मास्यास्ति, सिष्मादित्वाद्ध् (सू०) । (श्लेष्मणः) पामादित्वाजः (लोमादिपामादीति ॥ ६० ॥  
न्युज्जनं न्युज्जः, वम्, भुजन्त्युज्जीपाण्युपतापयोः (सू०) इति साधुः । भुग्नः कुञ्जः, न्युज्जेन कणि-  
गतेन भुग्नत्वेन योगाद् न्युज्जः पुमान्, वक्ष्य्यात्तः- विपादधोगतं न्युज्जं न्युज्जः कुञ्जं लक्ष-  
इतः । तुण्डिद्वयतनाभिः, तुन्दिस्तु जठरं, इलच् (तुन्दिद्वयइलच्) । (तुण्डिमः) तुन्दिद्वयं  
(सू०) मध्य, एकदेशविहृतत्वात् । (सिष्मलः) सिष्मादित्वाद्ध् (सू०) । अन्धोऽहम्, अन्ध इत्यु-  
पसंहारे । नास्ति रगस्याहम् । मूर्च्छास्त्वन्व (मूर्च्छालः), प्राणिस्थादातोलच् (सू०), शुद्धजन्मता-  
पापेभ्यते (ग०) । मूर्च्छंति मूर्तः, शालोपः (सू०) इति छलोपः, नप्याह्वयति (सू०) नवामावः ।  
मूर्च्छां संजातास्व मूर्च्छितः, पुरादिमूर्च्छेः को वा ॥ ६१ ॥ शोकति सति शुक्रम् । तेजयति तेजः  
असुन् । रीयते रेतः, रीह् स्रवणे । बीजयते वेति वा बीजं, बीजिह्मोऽहम् । वीरेऽह्मि वे साधु बीर्यम् ।  
इन्द्रश्चामनो लिङ्गमित्रीन्द्रिं, इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिति (सू०) साधुः । मिनोति मलान् संसक्तत्वा-  
न्मायुः । पतति संसते पित्तम् । कट्फल्यति कफः । क्षिप्यति श्लेष्मा । (त्वद्) त्वच्च संवातं ।  
असुजो धरा (असुग्धरा) ॥ ६२ ॥ (पिहितं) पित्रा अयसवे । तरो बलमस्त्यस्य तरश्च, तरन्त्यनेन



स्त्री धृत्युतं श्वः पुंसि काशः ( स ) स्तु श्वधुः पुमान् ।  
 शोफस्तु श्वधुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥  
 किलाससिध्ने कच्छां तु पामा पामा विचर्चिका ।  
 कण्डूः सर्पूय कण्डूया विस्फोटः पिटकस्त्रिषु ॥ ५३ ॥  
 व्रणो विद्यायीर्ममरुः क्लीबे नाडीव्रणः पुमान् ।  
 कोठो मण्डलकं कुष्ठश्चित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥  
 आनाहस्तु विबन्धः स्याद् ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।  
 प्रच्छर्दिका वमिषः स्त्री पुमांस्तु वमधुः समाः ॥ ५५ ॥  
 व्याधिभेदा विग्रहिः स्त्री ज्वरमेहभगंवराः ।  
 अस्मरी मूत्रकुष्ठं स्यात्पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥  
 रोगहार्यगर्दकारो भिषग्वैद्यी चिकित्सके ।  
 वान्तो निरामयः कस्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

शोफः शोचन् । श्वधतेनेन श्वधुः । विपद्यतेनया विपादिका, पादशतस्य ( सू० ) इत्यत्रान्वयापीति  
 वक्तव्याद् बुन्- गोपो वा ॥ ५२ ॥ समे इति शेषः । किलमस्यति किल्मसम् । सिध्यति सिध्यं मरु-  
 धित्राप्तम् । कषति कच्छः । पिबत्यङ्गं पामा । ( पामा ) बाहुभ्यामन्यतरस्यां ( सू० ) । विचर्च-  
 यति विचर्चिका, अङ्गुल्यादिसंधिषु सूक्ष्माः पिटकाः, सर्जविशेष इत्येके । कण्डूवति कण्डूः, मावेकिप्  
 ( संपदाभिन्- किप् ) । ( कण्डूवा ) अपत्यवात् ( सू० ) । सर्जति- सर्जः, कर्ज- सर्जं व्यञ्जने । वि-  
 स्फोटवति विस्फोटः । पटति संछिप्यति पेटति वा पिटका ॥ ५३ ॥ व्रणयति व्रणः । ईरयत्यङ्गमी-  
 र्यम् । इत्यलङ्कारः, उस् । नाज्या व्रणं, समासे पुंस्त्वम् । नालिष । कृत्यते शब्दशते कोठः । ( मण्डलकं )  
 मण्डलकमिति कुष्ठम् । समे इति शेषः । कुष्णालङ्कारं कुष्ठं, कुत्सितं तिष्ठति वा, अम्बाम्बगोभूमीति ( सू० )  
 वत्वम् । श्वेतेते श्वितं श्वेतकुष्ठम् । पापयेत्वाद् दुर्नामकम् । इत्यलङ्कारः । गुदजं गुदकीलकं च ॥ ५४ ॥  
 आनाहनं विष्णुनिरोधः । गृह्णाति ग्रहणी, जाठरोर्मिच्छतेनया वा तच्छेधित्वत् । रोगः । मलप्रवह-  
 प्रवाहिका, रोगस्वायांशुल् ( सू० ) । प्रच्छर्दनं प्रच्छर्दिका, रोगस्वायांशुल् ( सू० ) । वमनं वमिः ।  
 छर्दश्छर्दा च ॥ ५५ ॥ विद्रात्यनवा विद्रधिः, विद्रो धीयतेत्यां वा । मेहति मूत्रयतेनेन मेहः । प्रमेहोपि,  
 दीपवदीपवत् । भगं दारयति भगदरः स्त्रिष्वसौ पिटकं, पुःसर्वयोदोरिसटोः ( सू० ) इत्यत्र भगव-  
 शोर्बलक्यात् ( वा० ) खच् । स्त्रीपदं पादवल्मीकं केशान् त्विन्द्रलुप्तकम् । व्याधिभेद इत्येव । अस्मानं  
 शुक्रं रास्वस्मरी । शुक्रात्पूर्वं मूर्च्छितान्ता वाच्यङ्गिङ्गा ॥ ५६ ॥ अगदः क्रियतेनेनागर्दकारः, कारेस-  
 न्यागदस्य ( सू० ) इति मुम् । भिषज्यति भिषक् । विद्यामर्धते वेद वा वैद्यः । आयो सामान्येनोवधा-  
 दावपीत्येके । वमति वान्तः, वार्त्त इति तु युक्तं, यद्वस्यति- वार्त्तं फल्युन्यरोगं च त्रिषु, इतिरस्वास्ति,  
 प्रसाधदावाङ्गुलिभ्योः ( सू० ) । कल्यु साधुः कस्य । उल्लाघ्यते स्मोल्लाघः, कः, अनुपसर्गात्कुप्येति  
 ( सू० ) साधुः ॥ ५७ ॥ ग्लायति स्म ग्लानः, संयोगदेरातोपातोः ( सू० ) इति निष्ठा नत्वम् ।

विकलाङ्गस्तु पाण्डनः सर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।  
 खरणाः स्यात्खरणसो विमस्तु मतनासिकः ॥ ४६ ॥  
 खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रभुः प्रगतजानुकः ।  
 ऊर्ध्वगुरुर्ध्वजानुः स्यात्संभुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥  
 स्यादेवं बधिरः कुञ्जे गबुलः कुकरे कुभिः ।  
 शृभिरस्पतनौ भ्रोजः पद्मी गुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥  
 बालिरः केकरे खोके खत्रखिपु जरावराः ।  
 जगुलः कालकः पिपुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥  
 अनामयं स्याद्वारोग्यं चिकित्सा रुक्मतिक्रिया ।  
 भेषजौषधौ भेषज्यान्यगदौ जायुरित्यपि ॥ ५० ॥  
 स्त्री रुघुजा चोपत्तपरोगध्याभिगङ्गामयाः ।  
 पुमान्यक्ष्मा क्षयः शोषः प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

हसति हसः । वामोऽस्यातीति वामनः । निखर्त्रेः खट्वाः [ नः ] सर्वे इति नाममाला । खरा तीक्ष्ण  
 खरस्येव वा नासास्य खरणाः, खुरखराभ्यां वानम्वक्तव्यः ( वा० ), पक्षे- अमृतासिकायाः संज्ञाबानसंवा  
 स्थूलात् ( सू० ), पूर्वपदात्संज्ञायामगः ( सू० ) इति गत्वम् । नभ्यः धुदनासिकः । ( विप्रः ) वेप्रो-  
 वक्त्रव्यः ( वा० ) ॥ ४६ ॥ खुराकारा नासिकास्य खुरणाः-विकटघोणः । प्रगते विरले वाताविशेषां संधौ-  
 धौ संहते च जानुनी अस्य, प्रसंभ्यां जानुनोर्ध्वः ( सू० ), ऊर्ध्वद्विभाषा ( सू० ) ॥ ४७ ॥ एवंपशुरिव  
 -एवः । बद्धौ कर्णावस्य बधिरः । कुम्भित उज्जः कुञ्जः, पृथोदरादिः ( सू० ) । गडुरस्यास्ति गडुकः,  
 मिथ्मादित्वात् ( सू० ) लब् । कुण शब्दे, कुपाणिः कुणरिति नैदृक्ताः । कलंवकस्त्वव्युत्पन्नः खलति-  
 स्त्विन्द्रलुप्तकः । स्पृश्यते पृच्छति वा पृश्निः । ( धोणः ) ध्रौण संधाते, कुटिलजङ्घापादः । मुष्प्यते  
 मुण्डः ॥ ४८ ॥ बलते चेष्टते बलिरं नेत्रं तयोर्गदालिरः । के मूर्ध्नि करोत्याक्षिणी चलत्तारकल्पकेकरः,  
 एतमुपाध्यायः काव[व]र इत्याख्यत् । ( खोडः ) खुड प्रतिघाते । ( सञ्जः ) सजि वैकश्ये ।  
 रणो दुषर्मा द्विनमोपि । जराशब्दादुत्तरा उत्तानशयादयः खञ्जान्तास्त्रिलिङ्गाः । जडति जडुकः, जडलो  
 जडत्वाद्वा । काल एव कालकः । अपिपुत्रते पिपुः । तिलप्रतिकृतिस्तिलकः । तिल इव कालकस्तिल-  
 कलकः, देहे कृष्णं लक्ष्म ॥ ४९ ॥ आमयस्यावोनामयं, अग्नयेविभक्तिर्यमोपेति ( सू० ) अर्षाभावेऽप्यथीश्वरः ।  
 कितेभ्यश्चिप्रतीकारे सन् । भिषज्यत्यनेन भेषजं, भिषज कण्टादिः, अन्तावसथेति हर्षेषजा-  
 दिति ( सू० ) निर्देशाद् गुणः, भेषं रोगं जयतीति दुर्मः । ( ओषधे ) औषधेऽस्मात्ताविति ( सू० )  
 संधौण । ( भेषज्यं ) अनन्तावसथेति हर्षेषजाज्यः ( सू० ) स्मर्ये । अविषमानो गदोऽस्मिन्नगदः ।  
 जयति गोगाङ्गायुः, कृत्वापात्रायुण् ( उ० ) ॥ ५० ॥ दृश्यतेनया रुक्, किप् । ( रुजा ) भिषगु  
 ( विद्भिद दिव्यैः रु ) । व्याधायतेऽग्न्येर्वाधिः । गदति व्यथा गदः । आभीनात्यामयः, अम रोगेऽ-  
 र्माद्वा । आमोपि । यक्ष्यते पूज्यते रोगराजत्वायक्ष्मा । राजयक्ष्मापि । क्षीयतेनेन क्षयः । शुष्पत्यनेन  
 शोषः । प्रतिश्यायते खत्रति प्रतिश्यायः, श्यादृष्येति ( सू० ) गः । पीनं स्यात्यन्तं नयति पीनसः  
 ॥ ५१ ॥ क्ष्वणं क्षुन्, किप्, क्तः, अप् । काशतेनेन काशः । क्षौत्नेन क्ष्वयुः । शयति विरुपति

पठितं जरसा शौस्स्यं केशाक्षौ विस्मसा जरा ।

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनधयी ॥ ४१ ॥

बालस्तु स्यान्माणवको वयस्थस्तरुणो युवा ।

प्रवयाः स्यधिरा वृद्धो जीनो जीर्णो जरक्षपि ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्वशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोमजः ।

जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयो वरजानुजाः ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्बलभ्रूतां बलवान्मांसलोसलः ।

तुन्दिलस्तुन्दिम(क)स्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिच( चि )ण्डिलः ॥ ४४ ॥

अवटीटोवनाटश्चावघ्नटो नतनासिकः ।

केशवः कशिकः कशी वलिनो वालिभः समौ ॥ ४५ ॥

आदिशब्दाद्रोमादौ च । विस्वस्तेनया कचाङ्गं विस्मसा । जर्जन्यनया जरा, पिदभिदादिभ्योऽङ् (सू०) ।  
उत्ताना शते-उत्तानशया, अधिकरणेशोः (सू०) इत्यत्र-उत्तानादिपुर्कर्तृषु (वा०) इत्यच् । डिम्भेति  
प्राक् पक्षिकभेदे कं इह मानुषकमात् । स्तनं पिबति स्तनपा, (सुपिस्थ इत्यत्र) सुगतिं योगविभाग-  
स्कः । स्तनं धयति स्तनधयी, नासिकास्तनयोर्मां धेयोः (सू०) इति खन्, धेयश्चिच्चादङाप् । स्त्री-  
लिङ्गेन निर्देशः स्त्रीप्रत्ययदर्शनार्थः ॥ ४१ ॥ बलनि (ते) प्राणिनि बालः, उवलादिश्चाणः (सू०),  
बाङ् आप्लावेस्माद्वा । अपत्ये कुक्षिते मूढे मनोरोत्सर्गिकः स्तुतः । नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिध्यति  
माणवः ॥ इत्यर्थे कट् (माणवकः) । इयसि प्रत्यमं तिष्ठति वयस्थः । तरति तरुणः । योतिं माथी-  
भवति धिया युवा । प्रगतं वयोस्य प्रवयाः । तिष्ठति स्यधिरः । वर्धते स्म वृद्धः, एवमादौ गृह्णारिका-  
प्रवर्द्धा भूने कः, वर्तमानै युक्तः शोलितादिवत् । जिनाति स्म जीनः, प्राहिय्यावयोति (सू०)  
संप्रसारणं, संप्रसारणस्येति (सू०) दीर्घः, त्वादिवात् (सू०) निष्ठा नत्वम् । जीयति स्म जीर्णः, ऋकृ-  
कृति (सू०) इत्यनिट् ॥ (जरन्) जर्जयतेतृन् (सू०) ॥ ४२ ॥ आतशयेन वृद्धो वर्षीयान्, ईषसुनि  
प्रियस्थिरेषः (सू०) वर्षादेशः । दशमोवस्याविशेषोऽस्यास्ति दशमी, वयसिपूरणान् (सू०) इतीनिः,  
यन्मुनिः- इष्टो वयोदशमेनः सप्तमी दांमोति च । अतिशयेन वृद्धो ज्यायान्, उयच (सू०), वृद्धस्व-  
च (सू०) इति उयादेशः, ज्यादादीयसः (सू०) इत्यात्वम् । अमे जातोमियः, अमायत् (सू०),  
चय्यौच (सू०) इति घः । अग्र्यामीयो च । अग्रिमराठे, अग्रदिपथ्यदिमन् (वा०) । जघन्यजः पथा-  
ज्जातः । अत्यर्थे युवा कनिष्ठो यवीयश्च, युवालयोः कघ्न्यतरस्यां (सू०), स्थूदूरेति (सू०)  
यणादिलोपः पूर्वस्य गुणः । एवं कनीयान् रविष्ठय । अवरे जायतेवरजः ॥ ४३ ॥ छयति स्म छतः,  
छो छेदने । मांसमस्यास्ति मांसवः, सिध्मादिवात् (सू०) लच् । अंसवयः स्तः (अंसलः), बल्लो-  
साभ्यां क्तमबले (सू०) इति लच् । तुन्दं पिबण्ड्यास्यास्ति, तुन्दादिभ्यश्च लच्च (सू०) इति चादिनिठनौ ।  
उदारलोपि । तुन्दिरस्यास्ति तुन्दिभः, तुन्दिबलिवटभः (सू०) ॥ ४४ ॥ नतनासिकायाः सन्नायांटीट-  
मनाडुन्प्रटचः (सू०) । नतनासिकश्चापि टषोणः । नतयां नासिकायां नासानमनेप्येते वर्तन्ते । प्रशस्ताः  
केशाः सन्त्यस्य केशवः, केशाद्व्येतर्गस्याम् (सू०) । बालिस्त्वक्संकोचस्यास्ति, पामादिवाचः (लोमादि-  
पामादीति) । (बलिभः) तुन्दिलिवटभः (सू०) ॥ ४५ ॥ पृथनेपसायेते पोमण्डः । खर्वति खर्वः ।

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां कमाद् भावसमूहयोः ।  
 धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तृपपतिः समौ ॥ ३५ ॥  
 अमृते जारजः कुण्डो मृते भर्तरि गोलकः ।  
 भ्रात्रीयां भ्रातृजं भ्रातृभगिन्यौ भ्रातराबुमी ॥ ३६ ॥  
 मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसृजनयितारौ ।  
 श्वश्रुश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दहिता च ॥ ३७ ॥  
 वंषती जंषती जायापती भार्यापती च तौ ।  
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुस्वं च कललोस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥  
 सूतिमासो वैजननो गर्भो ध्रूण इमी समौ ।  
 तृतीयाप्रकृतिः शण्डः क्लीबः पण्डो नपुंसकम् ॥ ३९ ॥  
 शिशुत्वं शिशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं समे ।  
 स्यात्स्थायिरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

भावां ज्ञातेयं, कपिशारयोर्दङ् ( सू० ) । बन्धूनां समूहो बन्धुता, ग्रामजनबन्धु ( सहाये ) भवत्सह ( सू० ), तल्लि क्लीबस्वरूपम् । धुनोति धवः । प्रीणाति प्रियः, इगुपधेति ( सू० ) कः । पाति पतिः, पातेर्भित्तिः ( उ० ) । क्लृप्ता वरयिता वरश्च । जारवति जारः, दारजारीकर्तृरिणिलुक् च ( वा० ) । उपजानः पतिरुपपतिः ॥ ३५ ॥ भर्तरीत्येव । कुण्डपते कुलम्बनेन कुण्डः, कुडि दाहः । जारज इत्येव । गुण्यते लज्जाकरत्वाद् गोप्यते गोलकः, परनार्या प्रजायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ । पत्नी जीवति कुण्डस्तु मृते भर्तरि गोलक इति स्मृतिः । भ्रातरपत्यं भ्रात्रीयः, भ्रातृव्यश्च ( सू० ) इति वा छः । अत्रत्यो नानावै । भ्राता च भगिनी योत ( भ्रातरी ), भ्रातृपुत्रैस्वसृदहितृभ्याम् ( सू० ) इत्येकशेषः । [ एवं पुत्रौ ] ॥ ३६ ॥ माता च पिता च मातापितरौ, आनङ्कतोद्वन्द्वे ( सू० ) । ( पितरौ ) पितामात्रा ( सू० ) इत्येकशेषो वा । मातरपितराबुदांचां ( सू० ) इति- अन्यः साधुः । प्रसृमाता जनयिता चेति द्वौ त्रिसंज्ञौ । ( श्वशुरौ ) श्वशुरःश्वश्वा ( सू० ) इत्येकशेषो वा । [ पुत्रश्च दहिता च प्रागुक्तम् ] ॥ ३७ ॥ राजदन्तादौ ( सू० ) जायापत्योर्जायाशब्दस्य दभावो जभावो वा । निपात्येतं, वं भार्येति निघण्टुः । गर्भं आशेतेष्व गर्भाशयः । जरायुः । उलति वृणोत्युत्वं । कलवति के कलति वा कल्लः शुक्रघोषितममवायः, प्रसिध्यास्य पर्यायो नोक्तः, अस्तीतिशब्धेभानार्थे तु विधिः । उत्त्वर्षाव्यः कल्ल इत्येके, बन्मुनिः- तदुत्वं कल्लं च तत् ॥ ३८ ॥ दशमे मासि सूतश्च इति स्मृतेः, नवमे दशमे मासि प्रवैतः सूतिमासने ॥ निःसार्येत बाण इव यन्त्रछिद्रेण सत्वर इति स्मृतेः नवमो दशमो वा मासो, विजनने भवो वैजननः । गीर्येते गर्भः । प्रियते ध्रूणः कुक्षिस्थः । क्लीपुसाध्यामन्या तृतीया प्रकृतिः, लिङ्गा-न्तरत्वात् । धाम्याति शण्डः, [ वण्डोपि ] । क्लीबते क्लीबः । पण्डते पण्डः, पिण्डोपि । न क्लीपुसो नपुंसकं, नभ्राज्जपादिति ( सू० ) साधुः, स नपुंसकां भवेदिति भाष्यस्तुभ्योपि ॥ ३९ ॥ शिशोर्भावः शिशवं, प्राणमृज्जातीयञ्च ( सू० ) । यूनो भावो यौवनं, हायनान्तयुवादिभ्योण् ( सू० ) । ( वार्धकं ) गोत्रोक्तोद्वन्द्वत्वं ( सू० ) वृद्धाचेतिवचनव्यात् ( वा० ) वृश्च, मनोऽज्ञादिवात् ( द्वन्द्वमनोऽज्ञादिभ्यश्च ) भावकर्मणोरप्याहः, यथा- वार्धके मुनिवृत्तानाम् ( पु० ) ॥ ४० ॥ पलति शोभनेन पलितं, पल नतो ।



आहुर्दुहितरं सर्वेपत्यं तोकं तयोः समे ।  
 स्वजाते त्वीरसोरस्वी तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥  
 जनयित्री प्रसृमाता जननी भगिनी स्वसा ।  
 ननन्वा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पीत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥  
 भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।  
 प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥  
 पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रुः श्वशुरस्तु पिता तयोः ।  
 पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥  
 श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवदेवरी ।  
 स्वस्त्रीयो भागिन्यः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥  
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ।  
 भातुर्मतामहाद्यं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥  
 समानोदर्यसौदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।  
 सगोत्रवान्धवज्ञातिवन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

समे ) पुत्रे दुहितरि च भ्रामान्येन वर्तते । अग्रतमपत्न्यु, अग्रिने स. श्वश्रुत्वात् । स्तूयते तोकम् । संततिः संतानः, नन्दनोद्बद्धप्रजाः, [ तन्तुश्च ] । उरसा निर्मिते यवेनि- अभ्यतौ ( उरसोयश्च, उरसोणश्च ) । तनोति कुलं तातः, स्वर्धेऽण् । जनयति जनकः । पाति पिता । वसा च ॥ २८ ॥ या जनित्री त्रिलोक्या इति त्वन्तर्भाविन्यर्थस्त्वं । प्रसृयते प्रसूः । मातृम्यां गर्भो माता । भगं कल्याणमस्त्यस्या भगिनी । सुपुस्यते स्वसा, सावगेकंत् ( उ० ), नपत्स्वस्यादिभ्यः ( सू० ) इति ङीप् नास्ति । न नन्दति भ्रातृजायां ननन्दा, नचिनन्देः ( उ० ) इति ऋत् । न पुत्रत्यनया कुलं नप्त्री । पुत्रस्यापत्यं पौत्री सुतः स्यात्समाजा ॥ २९ ॥ यन्ने स्वर्धया याता, यन्नेर्द्विष्य ( उ० ) इति ऋत् । ( भ्रातृजाया ) ऋतोविद्यायोमिबन्धेभ्यः ( सू० ) इति पठ्या अलुगनासिन्, सप्तमीसमानान्, यथा- द्रव्यति भ्रातृजायाम् ( मेघ० ) । ( मातुलानी, इन्द्रवरुणेति ( सू० ) ङीपानुक्ती । उपाध्यायमातुलाभ्यां वा ( मातुलोपाध्याययो-शानुश ) इति पक्षे ङीत् ॥ ३० ॥ पत्युर्माता पत्न्याः श्वश्रुः, पत्न्या माता पत्युः श्वश्रुः, श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च ( वा० ) इत्युच् । तयोः पतिपत्न्योः पितान्योर्नृश्वशुरः, शु पूजितं कृत्वाभूत् । ( पितृव्यः ) पितृव्यमातुलमा-तामहपितामहाः ( सू० ) इति साधुः । ( मातुलः ) प्राग्वत् ॥ ३१ ॥ श्यालते श्यालः, स्वम वितर्कस्माद्वा ( श्यालः ), पत्युः श्याला इत्यर्थः । स्वामिनः पत्युः भ्राता कनिष्ठः पत्न्याः दीव्यति देवा, दिनेकं ( उ० ) । अतिरुमिभ्रमिचामेदे-विवादिभ्रमिदिश्वरः ( उ० ) देवः । स्वसुरपत्यं स्वस्त्रीयः, स्वसुच्छः ( सू० ) । जायां मिमीते जामाता ॥ ३२ ॥ प्रगतः पितामहान् ( प्रपितामहः ) । मातुः पिता मातामहः, [ तत्पिता प्रमातामहः ] । समानः पिण्ड एषां, यत्स्मृतिः-सपिण्डता तु पुण्ये समे विनिवर्तते । सप्तमादूर्ध्वं सगोत्राः । समानो नाभिर्मूलमेयां सनाभयः, ज्योतिर्जनपदेनि ( सू० ) समानस्य सत्वम् ॥ ३३ ॥ समान उदरे शयितः समानोदर्यः, समानोदरे-शयितः ( सू० ) इति यत् । सोदरशब्दात्-सोदरयः ( सू० ), -विभापोदर इति ( सू० ) समानस्य सत्वं वा । समाने गर्भं भवः सगर्भ्यः, सगर्भस्यूयगनुताद्यन् ( सू० ), छान्दसोपि लोकेभिधानात्, सह जायते सहजो भ्राता । समानं गोत्रमेयां सगोत्राः, ज्योतिर्जनपदेति ( सू० ) सत्वम् । ज्ञायते ज्ञातिः । ज्ञानाति बन्धुः । ( बान्धवः ) स्वार्थेऽण् । एकः स्वो ज्ञातिवचनः, अन्य आत्मीयार्थः ॥ ३४ ॥ शब्दे-



आपन्नसत्त्वा स्याद् गुर्विष्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।  
 गणिकादेस्तु गामिक्यं गामिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥  
 पुनर्धुर्विधिपूर्वता द्विस्तस्या विधिषुः पतिः ।  
 स तु द्विजोमेविधिषुः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥  
 कानीनः कन्यकाजातः सुतोयं सुभगासुतः ।  
 सौभागिनेयः स्यात्पारस्वज्येयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥  
 पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुः ।  
 सुतो मातृष्वसुश्चैव वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥  
 अथ बान्धकिनेयः स्याद्वन्धुलश्चासतीसुतः ।  
 कौलटेयः कौलटेरो भिक्षुकी तु सती यवि ॥ २६ ॥  
 तदा कौलटेनेयोस्याः कौलटेयोपि चात्मजः ।  
 आत्मजस्तनयः सुनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥

गर्भोत्वा गुर्विणी, श्रीष्टादित्वादिनिः ( सू० ) । गुर्वीति च भागुरिः । अन्तर्विद्यतेस्याः ( अन्तर्वत्नी ),  
 अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ( सू० ) । गणिकानां समूहो गामिक्यं, गणिकायायामिति वक्तव्यं ( बा० ) इति वच्  
 गर्भिणीनां समूहो गामिणः, इनप्यनपत्ये ( सू० ) इति प्रकृतिभावः ( नस्तदित इति टिप्पणे प्राप्ते ) ।  
 युवतीनां समूहो यौवतं, युवत्या अपुंवदिति गणपाठात् ( भिक्षादिषु ), भस्याढेतदिते ( बा० ) इति  
 पुंवद्रावो नास्ति ॥ २२ ॥ पुनर्भवति पुनर्भूः । विधेष्टि वाच्या भवति विधिषुः । द्वौ वारौ द्विस्त्र  
 संस्कृता, यदाहुः—अष्टता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृता पुनः ( याज्ञ० ) । मनुस्त्वन्यथाह—उभेष्टायां यचनूडायां  
 कन्यायामुद्धतेनुजां । सा चाग्नेविधिपूर्वता पूर्वा तु विधिपूर्वता ॥ तस्याः पुनर्भाः पतिः, किं च—पुनर्भूः  
 पतिरुक्त्य पुनर्भूद्विधिपूर्वतयेत्येषोऽप्युदन्तः, विधिषुः विच्छेत्वात्मन इति क्वच ( सुपञ्चात्मनः क्वच ) , किप्  
 ( अन्येभ्योऽपि ह्रस्यते ) । अग्नेनन्यभायत्वात्प्रधानं विधिव्यस्य सोमेविधिषुः, समासान्तविधिरनित्यः ॥ २३ ॥  
 ( कानीनः ) कन्यायाः कनीनचेत्यण् ( सू० ) । ( सौभागिनेयः ) कल्याण्पादीनामिनङ् ( सू० ) इति  
 ढगिनङ् । एवं दीर्घाग्नेनेय इत्यायुभेयं, इन्द्रगतिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ( सू० ) इत्युभयपदसुद्धिः, उत्तरत्र-  
 अनुगतिकादीनांचेति ( सू० ) । सुत इत्येव, परस्त्री कल्याण्पादिः ॥ २४ ॥ ( पैतृष्वस्त्रीयः )  
 पितृष्वसुच्छण् ( सू० ) । ( पैतृष्वसेयः ) ढकिलोपः ( सू० ) इति श्लोपकाह—ढक्—अन्त्यलोपश्च । सुत  
 इत्येव, मातृष्वसुश्च ( सू० ) इति छणि मातृष्वस्त्रीयः, ढकिलोपः ( सू० ) इति ढकि मातृष्वसेवः । विर-  
 द्वाया मातुरपत्यं वैमात्रेयोऽसौदर्यो भ्राता, शुभ्रादित्वात् ( सू० ) ढक्, स्त्रीभ्योऽढक् ( सू० ) इत्यत्र  
 स्त्रीप्रत्ययप्रहणात् । सांमातृस्तुभयमातृकः ॥ २५ ॥ बन्धक्या अपत्यं, कल्याण्पादीनामिनङ् ( सू० )  
 इति ढगिनङ्प्रदेशः । बन्धन्—कालि बन्धुला । कुलटाया अपत्यं, स्त्रीभ्योऽढक् ( सू० ) । ( कौलटेः )  
 क्षुद्राभ्योवा ( सू० ) इति ढक् ॥ २६ ॥ सा हि भिक्षार्थिनी कुलान्यटति, कुलटाबावा ( सू० ) इति  
 ढगिनङ्, पसे ढगेव क्षुद्रात्वाभावात्, अङ्गशीलहीना हि क्षुद्रा । तनेति कुलं तनयः । सुयते सुनुः ।  
 सुवति सुतः । पुत्रकटात्रायते पुत्तः, पुनाति वा, पुवोहस्त्वथ ( उ० ) इति कत्रः । दारकदाबावो च  
 ॥ २७ ॥ आत्मजादयः स्त्रियां वृत्ता दुहितृवाचकाः । गौरादौ पुत्रो । दोग्धि पितरो दुहिता । ( तयोः

वीरपत्नी वीरमार्या वीरमाता तु वीरसुः ।  
जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥  
स्त्री नमिका कौटवी स्याद् वृत्तिसंचारिके समे ।  
कात्यायन्यध्वृद्धा या का ( क ) वायवसनाधवा ॥ १७ ॥  
सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।  
असिक्नी स्याद्वृद्धा या प्रैष्यान्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥  
वारस्त्री गणिका वस्या रूपाजीवाय सा जनैः ।  
सत्कृता वारमुल्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥  
विप्रभ्रिका त्वीक्षणिका वैवज्ञाय रजस्वला ।  
स्त्रीधर्मिण्यपि चात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥  
ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।  
अस्त्रालुर्दोहदवती निष्कला विगतातवा ॥ २१ ॥

( वीरपत्नी ) नित्यसपत्न्यादिषु ( सू० ) इति नान्तत्वाद्-ऋन्नेभ्योऽङ् ( सू० ) । वीरं सूतवती वीरसुः सत्सुद्धिपेति ( सू० ) किप् । वीरप्रसूजगति भार्गवरेणुर्केव ( बा० रा० ) वीरस्य प्रसूमातेत्यर्थः । जीव-  
तोका तु जीवसुः । बोया तु कटहारिणी । जनयितुं प्रवृत्ता सा प्रजाता । ( प्रसूतिका ) सूतकापुतिका-  
इन्दारकाणांवा ( बा० ) इति पक्षे- इत्वम्, अ. ह्याप्रहणात्तुयोगेपि दीप् नास्ति ॥ १६ ॥ विवक्षा  
योषिन्मुक्केशोत्थागमः । कोटेन लज्जावशात्कुटिल्वेत्त वेति याति कौटवी । द्यन्तोस्या मौख्याद्  
वृत्ती । संचारयति ( संदेष्टं ) प्रापयति संचारिका । कतस्यापत्यमिव कात्यायनी, ऋषिपत्न्याकारत्वात् ।  
शिल्पकमेवं, कषायेण रक्तं वस्त्रं शुद्धत्वादस्याः काषायवसना, अधवा- अपुंस्का रणेत्यर्थः ॥ १७ ॥ शिष्ये  
प्रसाधनादि तेन या परवेश्मान्युपजीवति, स्ववशा स्वायत्ता, एकायता न भवतीत्यर्थः । सह-एरं प्रेरणं  
भरते सैरन्ध्री, चतुःषष्टिकलाभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी । प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री स्ववशेति चेति  
कात्यः । अधितपलितयोः क्वम् दीप् च । प्रादेषैष्ययोर्द्विः ( प्रादुहोदोदघेषैष्येभु ) । द्वे वाक्ये इत्येके  
तन, यन्मुनिः- असिक्नी स्याद्वृद्धा या प्रैष्यान्तःपुरयोषिता ॥ १८ ॥ वारे राजदेवादिसेवाक्रमे स्त्री  
वारस्त्री । गणः पेटकोस्त्यस्याः, गणयतीश्वरानीश्वरो वा गणिका । वेशो वेश्यावाटे भवा वेश्या । पण्यर्जी  
पण्यार्जी च । वारे सेवाक्रमे मुख्या ( वारमुख्या ) । कुट्टयति कुट्टनी । शो श्रेयो भालयति शंभं श्रेयोयुक्तं  
स्मिति वा शंभली । चुन्दी देश्याम् ॥ १९ ॥ विप्रभ्रो देवप्रच्छन्नं शुभाशुभेक्षणं वास्त्यस्याः ( विप्रभ्रिका ) ।  
देवं शुभाशुभं कर्म जानाति देवज्ञा, अन्तःपुरस्यापुंस्प्रवेश्यत्वात् । रजोस्त्यस्या रजस्वला, रजःकृष्णा-  
सुतीति ( सू० ) वक्तुम् । स्त्रीधर्मो रजोस्त्यस्याः स्त्रीधर्मिणी । अत्रैरप्यमात्रेयी र ( मलिनी ) मलिना-  
इत्यसिदीप् ( बा० ), मलादिभ्रन्ताद्वा दीप् ॥ २० ॥ ऋतु रजोस्त्यस्या ऋतुमती । उदकात्संज्ञायामिति  
उदक्या, उदकमर्हताति । पुष्पवत्येति माळा । पुष्पवत्यतीरिति प्राच्य्याः पेदुः, अभ्यते रक्षयतेभ्योऽ-  
धाः, अधिवृत्ततन्निर्भर्यः ( उ० ) । अविरात्रेयीत्येके, यत्कात्यः- अस्मि स्त्रीधर्मिणी विद्यादिति । पुष्पं  
सुतकलहेतुराद्रजः । ऋतुरेवार्तवम्, ऋतुः स्त्रीरजोत्र, ऋतो गर्भप्रदणकाले भवं वा, ऋतुः प्राप्तोस्व वा ।  
( सृष्टिप हिपतिदमि ) निश्रतन्त्राभ्रद्वान्यभालु ( सू० ) । दोहदं गर्भिण्यभिलाषोस्त्यस्या दोहदवती ।  
अस्त्रालु कलाभ्योऽशुद्धिभ्यो निष्कला जीर्णतुः ॥ २१ ॥ आपन्नं गृहीतं सत्त्वं गर्भोन्नापनसत्त्वा । पु-

कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका ।  
 पुंश्ली चर्षणी बन्धक्यसती कुलदेवरी ॥ १० ॥  
 स्वैरिणी पांशुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना ।  
 अवीरा निष्पातिसुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥  
 आलिः सखी वयस्या च पतिवती सभर्तृका ।  
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥  
 शूद्री शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जारिरिव च ।  
 आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोग्यः समा ॥ १३ ॥  
 अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यापि ।  
 उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥  
 आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्या क्षत्रिया तथा ।  
 उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

मदनं च । अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिका ॥ पुलन्तोयं ( अभिसारिका ) । वासकसग्जा विरहो-  
 कृष्टिता खण्डिता विप्रलम्बा कलहान्तरिता तथा श्रोतभर्तृका स्वाधीनदयितेत्यन्या सप्तान्वयत्वात्  
 दर्शिताः । पुमांसं चलयति पुंश्ली । कर्षति चेतश्चर्षणी, कृपेरादेशवः ( उ० ) । बन्धाति बन्धकी ।  
 कुलान्यदति कुलटा शकम्भादिः ( वा० ), कुत्सितं लट्तीत्येके । एति तच्छीला- इत्येव चपला, ह्यन-  
 श्रजिसर्तिभ्यः करप् ( सू० ) ॥ १० ॥ स्वेनेते तच्छीला स्वैरिणी, स्वादीरेरिणोः ( वा० ) इति वृद्धिः ।  
 पांशुमालिन्यहेतुरस्त्यस्याः पांशुला । ( अशिश्वी ), सह्यशिश्वीतिर्भाषायां ( सू० ) इति साधुः । न  
 विद्येते वीरो पतिपुत्रावस्या अवीरा । विश्वसिति स्म विश्वस्ता । विगतो धनो भर्तास्या विधवा ॥ ११ ॥  
 अस्र ( आलय ) त्यालिः, यच्छुभ्रतः- आलिः सखी सतुरालिरालिरावलिख्यते । समानं ह्याति सखी ।  
 वयसा तुल्या वयस्या, नौवयोधमेति ( सू० ) यत् । सघ्नीची च । ( पतिवती ) अन्तर्वन्तपतिवतीर्दुर्  
 ( सू० ), दीप् च । ( पलिकनी ) आसतपलितयोर्न ( वा० ), छन्दसिधनमेके ( वा० ), भाषावाम-  
 पीष्यत इति दीप् च । प्रजानातोति प्रज्ञा, इगुपथेतिः ( सू० ) । ( प्राज्ञी ) प्रज्ञादिभ्यधेति ( सू० )  
 स्वार्थेण । प्रज्ञास्त्यस्याः ( प्राज्ञा ), प्रज्ञाभद्रार्चोवृत्तिभ्योणः ( सू० ) ॥ १२ ॥ ( शूद्री ) पुंयोगादाह्वया ( सू० )  
 इति कान् । शूद्रजातीया स्त्री शूद्रा, शूद्राचामहस्पृशाजातिः ( वा० ) इति- अजादित्वाद्यप् । आभीरजा-  
 तीया महाशूद्रस्य स्त्री च, जातिलक्षणे पुंयोगे च दीप् । वैश्यभेद एवाभीरो गवायुपज्जीवी । अन्यत्र महती  
 चासौ शूद्रा च महाशूद्रा ॥ १३ ॥ स्वयं पुंयोगं विना । अर्यक्षत्रियाभ्यांवास्वार्थे ( वा० ) इति स्त्रीवा-  
 नुको, पक्षे टाप्, योपधत्वाज्जातिलक्षणे दीप्- नास्ति । स्वयमस्वेव । उपेयाभीवतेस्याः, अपादोने  
 क्रियामुपसंख्यानंतदन्ताश्चवादीष् ( वा० ) इति घञ् वा च दीप् । स्वयं मन्त्रव्याहृताचार्या । स्वतो  
 जातावित्यर्थः, योपधत्वाज्जातेर्दीप्- नास्ति ॥ १४ ॥ ( आचार्यानी ) इन्द्रवहणेति ( सू० ) दीपानुको  
 आचार्यादणत्वंचेति वक्तव्यम् ( वा० ) । पुंयोग इत्येव, ( उपाध्यायानी ) उपाध्यायमानुलाभ्यावेति  
 ( मानुलोपाध्याययोरानुगता ) पक्षे दीपानुको । पुट संश्लेषे, उभयव्यग्रना पोय नपुंसकाख्या ॥ १५ ॥

सुन्दरी रमणी रामा कोपना सेव भामिनी ।  
 वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥  
 कृताभिषेका महिषी भोगिन्योन्या नृपस्त्रियः ।  
 पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥  
 भार्या जायाथ पुंभूमि दाराः स्यान्तु कुटुम्बिनी ।  
 पुरन्धी सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥  
 कृतसापत्न ( त्रि ) काष्ण्डाधिबिज्ञाथ स्वयंवरा ।  
 पतिवरा च वर्या च कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥  
 कन्या कुमारी गौरी तु नग्निकानागतार्थथा ।  
 स्यान्मध्यमा वृष्टरजास्तरुणी युवतिः समं ॥ ८ ॥  
 समाः स्नुषा जनी वध्वश्चिरण्डी तु सुवासिनी ।  
 इच्छावती कामुका स्यात् वृषस्पन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥

इत्येव । सुष्ठु- आश्रिते सुन्दरी । रमन्तेस्यां रमणी । रमते रामा, ज्वलादित्वाष्णः ( सू० ) । कृप्यति तच्छ्रीला कोपना, कुधमण्डार्येभ्यश्च ( सू० ) इति युच् । भामिनां, भाम क्रोधे । उत्तमा स्त्रीपयाया । आश्रितेऽस्मिन् आरोहे नितम्बः, स वरोस्या वरारोहा । मत्ता क्षत्रिये वाशते भाति मत्तकाशिनी, कर्तृयुग्माने ( सू० ) गिनिः । वरो वर्णोस्या वरवर्णिनी ॥ ४ ॥ नृपस्त्रीत्येव । श्रीमहादेवावे कृताभिषेका, यथा वासवदत्त, मण्डते पूज्यते महिषी । पद्मावल्यायाः, भोगोस्त्यासां भोगिन्यः । पत्युनोयज्ञसंयोगे ( सू० ) इति पत्नी । पाणिगृहीतोस्याः, बहुवीर्यधाम्नोदात्तत्वं ( सू० ) इत्यत्र पाणिगृहीतोस्यादिना ( वा० ) विशेष इति शीष् । द्वितीया धर्मसहाया । सह धर्मोस्त्यस्याः सहधर्मिणी, यज्ञादौ सहाधिकारात् ॥ ५ ॥ भरणीया भार्या, संज्ञायां भूलः- ऋहलोर्ण्यत्वं ( सू० ) । जायतेस्यां पतिर्जाया, यन्मनुः- जायाः यास्तदि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः । दारयाति दाराः, दारजारौ कर्तरि लुक्च ( वा० ) । अथशब्दात्पुंभूमोर्न पूर्वभाक्त्वम् । दार च । कुटुम्बं पुत्रभृत्याद्यस्त्यस्याः कुटुम्बिनी । पुरं धत्ते पुरन्धी । पतिसेवेव व्रतं यस्याः सा पतिव्रता, यत्स्मृतिः- नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतमिति ॥ ६ ॥ कृतं सापत्नकं सपत्नी- भावोस्याः ( कृतसापत्नका ) । अभ्युपयुज्यते द्वितीया ( अन्या ) स्या अभ्यूडा । अधिबिन्दत्यस्यामधि- विज्ञा । स्वयं वृणीते स्वयंवरा, संज्ञायां भूतविर्जाति ( सू० ) खच् । पतिं वृणीते पतिवरा, खच् । म्रियतेनया वर्या, अवश्यमप्येति ( सू० ) साधुः, वरमर्हति वा । कुलस्य संपादयित्री स्त्री ( कुलस्त्री ) ॥ ७ ॥ कनति कन्या, कनी दीप्तौ, अप्यादिः ( उ० ), कन्यायाः कनीनच ( सू० ) इति लिङ्गाद् ङीप्- नास्ति । कुमारयति कीदृशे कुमारी कुत्सितो मारोस्या वा, अनृतत्वात् । अष्टवर्षा भवेद् गौरी दशमे नमिका भवेदिति स्मृतौ विशेषो नास्ति । गो ( गु ) ष्ते गौरी । नजते नग्ना, ओणजी ओलजी ऋषे । ऋनौ भवमार्तर्त्वं रजः । ( मध्यमा ) अजायतछाप् ( सू० ) । ( तरुणी ) वयसिप्रथमे ( सू० ) इति ङीप् स्यात्, नमस्नमीककस्युस्तर्गतलुनानामुपसंहयः नात् ( वा० ) वा ङीप् । ( युवतिः ) युनस्तिः ( सू० ) ॥ ८ ॥ स्नोति स्नुषा । जायतेस्यां जनी । बधूटी च प्रामटिकावत् । चिरिणोति चिरिष्ठी, चरति चरणैलेके, वयस्यचरमे ( वा० ) इति ङीप् । सुष्ठु वसति सुवासिनी, स्ववासिनीति ब्रवि- [ मि ] ङाः । ( कामुका ) लवपतपदल्युक्त्वं ( सू० ) । इवमिच्छति, सुप आत्मनः क्यच् ( सू० ), अभक्षीरवृषलवणानामात्मप्रतीक्यचि ( सू० ) इत्यात्राभक्षयोर्मैथुनेच्छायामिति ( वा० ) असुक् । जान- पदकुम्भति ( सू० ) मैथुनेच्छायां ङीप् कामुकी ॥ ९ ॥ यज्ञरतः- हित्वा लज्जाभये शिष्टा मद्नेन



पशूनां समजोन्येषां समाजोऽथ सचर्मिणाम् ।

स्याधिक्रायः पुत्रराशी वृत्करः कूटमधियाम् ॥ ४३ ॥

कापोतशैकुमायूरतैत्तिरादीनि तद्वृत्ते ।

गृहासकाः पक्षिमृगाश्चेकास्ते गृहकाश्च ते ॥ ४४ ॥

इति सिंहादिवर्गः । ५ ।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

स्त्री योषिद्वला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।

प्रतीपवर्शिनी वामा धनिता महिला तथा ॥ २ ॥

विशंषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।

प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥

समूहविशेषा वक्ष्यन्ते इति शेषः । सज्जातीयैः प्राणिभिः प्राणिभिश्च समूहो वर्गः, कृष्यते विजातीयैः इति । प्राणिभिः समूहः ( शेषः ), संद्वन्द्वे संघः, संघोद्घोषगणप्रसंसयोः ( सू० ) इति साधुः, कथं गोधंसः, मेघसंघाद्युपचारात् । सरति साधोषगवन्दम् । जन्तुभिरित्येव, कुल संस्थाने बन्धुषु च, ( वंश ) विप्रकुलम् । वृन्दमित्येव, यथा मृगयूयः, यु मिश्रणे ॥ ४२ ॥ संवीक्यते समजाः, समुद्योतः पञ्चमिति ( सू० ) अप् । पञ्चभ्योन्येषां वृन्दं ( समाजः ), यथा श्रोत्रियसमाजः । ( सचर्मिणां ) स्युह इत्येव, यथा धमणनिकायः, निबीक्यते निकायः, निवासचित्तेशरीरेष्विति ( सू० ) वम् कर्त्तव्यं । चान्तादेव-च्छित्तं वृन्दं, पुञ्ज्यते पुञ्जः पूर्यते वा । रक्ष्यते राक्षिः, रक्षिः सौत्रो दीप्यर्थः । उत्कीर्यते उत्किरः । कृष्यते कूटः ॥ ४३ ॥ कपोतादेस्तमूह एतानि वर्तन्ते, अनुदाणादेम् ( सू० ) । वादिशब्दादप्युच्यते । छायन्ते छेकाः पञ्चराशौ स्थाप्यन्ते । गृह्यन्ते गृहकाः, पदास्वेरीति ( सू० ) क्यप्, स्वार्थे क्त् ॥ ४४ ॥ इति सिंहादिवर्गः । ५ ।

मनोरपत्यं मनुष्यो मानुषवः, मनोजातावज्यतोषुकवः ( सू० ) । प्रियते मर्त्यः, स्वार्थे क्त् । मानवः, तत्स्येदमर्थेऽणु, अपत्यार्थे अन्यदभ्यां बाधितत्वात् । नृणाति नरः, नृ नवे । पप्रति पुमान् । पयभिर्भूतैर्जातः पयजनः । पुरि पुरि शयनात्पूरणत्वात् पुरुषः । ( पुरुषः ) अन्येवामपीति ( सू० ) वा दीर्घः । नवति ना, नयतोर्वेष ( उ० ) इति क्त् ॥ १ ॥ स्थाप्यते स्थां गम्येः क्त् । वेति पुंसा [ योषति ] योषित्, इच्छादिपुषिभ्यइतिः ( उ० ) । युष्य ( योष ) ल्यन्त्यं योषि वा योषा । वारोति, नूनरयोर्वृद्धिश्च ( ग० सू० ) इति छाद्गोरवादिपाठान्दीन् । समन्तः केचन्येकोऽस्त्वस्याः सीमन्तिनी । उद्यतेसौ भर्मा, बध्यतेनया भर्ता वा वधूः । प्रतीपं वक्रं पश्यति, अपाङ्गमनिरिक्षणात् । वामा विपरीतकक्षण्या शृङ्गारवेदनाद्वा । वनति भजति वनितः । मल्लते महिल्य । तथाचन्दान्महेतापि, वल्लभ्यस्- धञ-वद् द्विषतः प्राप्तनयः परमहेल्य । स्वोपि मनासे स्फुटो न वः परमहेल्य ॥ २ ॥ प्रशस्तान्यङ्गान्त्व-अङ्गना, अङ्गात्कल्याणे ( ग० सू० ) इति पामादिस्वातः ( लोमादिपामादीति ) । विधेति तच्छ्रीया भीरुः, मियः कुक्कुत्तौ ( सू० ) । कामयते कामिनी । वामे बाधके कोचने शल्या वायव्येवञ्च । प्रहृष्ये मदः कामवेगोऽस्याः प्रमदा । मानः प्रणयकोपोऽस्या मानिनी । कामयते कान्ता । कवति ल- ( क ) ल्यते वा ललना, लल विहासे, लल ईप्सायां वा । वितम्बिनी गुहमितम्ब ॥ ३ ॥ विशंषा



तिसिरि कुकुमो छावो जीवजीवकोरकः ।

कोवष्टिष्टिमः कोकः ककरो ( वर्तको ) वर्त ( ति ) कावयः ॥ ३६ ॥

नक्त्यक्षच्छयाः पत्वं पतत्वं च तनुरुहः ।

स्त्री पततिः पक्षमूलं चतुष्टोष्टिकमे स्त्रियौ ॥ ३७ ॥

प्रवीनोपुनसंजीनान्येताः सगगतिक्रियाः ।

पेशीकोशो द्विहीनेष्टं कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥

पोतः पाकोर्मको हिम्मः पृथुकः शावकः शिशुः ।

स्त्रीपुंसौ मिथुनं वृन्तं युग्मं तु युगलं युग्मम् ॥ ३९ ॥

समूहनियहव्यूहसंघोहविसरज्जाः ।

स्तोमीघनिकरप्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ४० ॥

समुदायः समुदयः समवायश्च यो गणः ।

स्त्रियां तु संहतिर्पुन्यं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४१ ॥

वृन्तमेवाः समैर्वर्गः संघसार्यो तु जन्तुभिः ।

सजातीयैः कुलं यथं तिरश्चो पुनरुसकम् ॥ ४२ ॥

तिसिरान्दं राति तिसिरिः । कुकुमन्दं करोति ( भाषते ) कुकुमः । लाति [ लावयति ] लयते वा लावः ।  
आवेन सहचरेण जीवति जीवजीवः, बाहुलकात्स्वच् । वक्तं ( ति ) ज्योत्स्नया तृप्यति चकोरः । ओको  
यजति कोयष्टिः शिखरी । टिट्टिशान्दं भाषते टिट्टिमः । कुकति [ कोकते ] कोकः । केति करोति  
ककरोः । वर्तत इति ( वर्तकः ), वर्तकाशकुनौप्राचा ( वा० ) इति साधुः, पक्षे वर्तिका । आदिघम्भा-  
त्कपिञ्जलादयः ॥ ३६ ॥ गिरति सं गकृत् । ( पक्षः ) पक्ष परिग्रहे । छावतेनेनाङ्गं छदः, छादैर्घे ( सू० )  
इति ह्रस्वः । पतत्यनेन पतत्रम् । पतन्तं प्रायते पतत्रम् । मूले, पक्षातिः ( सू० ) । चषति चरति  
चम्पुः । श्रोतयति श्रोतिः । तुष्टं च ॥ ३७ ॥ प्रकृष्टमूर्ध्वं संहतं वा वयनं, स्वादयओदितः ( ग० सू० ),  
( ओदितश्च ) इति निष्ठानत्वम् । एता इति हि बीनाद्युपलक्षणार्थे । पेशानां मांसखण्डानां कोशः ।  
अमति निःसरयस्मादण्डम् । तिलः सहा इति गौड्याः । कां लीयते कृत्पते कुरुमेति वा कुलवः ।  
निर्लोपतास्मिन् नीडः ॥ ३८ ॥ पुनाति पोतः । पान्त्येनं पिबति स्तनो वा पाकः । कृन्त्येते ( अर्धते )  
वृद्धि प्राप्यतेऽभेकः । वयति ( ते ) हिम्मः । प्रयते वर्धते पृथु कायति वा पृथुकः । श्यति क्षयति वा  
क्षावकः । शिनाति स्नेहेन शते बाल्यं शिशुः । स्त्री च पुमांश्च स्त्रीपुंसौ, अचतुरविचतुरेति ( सू० )  
साधुः । मयते संगच्छते मिथुनम्, मिथुमेथु संगमने । वृन्तमिति, वृन्तारहस्यमयोदेति ( सू० ) साधुः,  
यत्कालिदासः- वृन्तानि भावं क्रियया विवमुः । गुज्यते धर्मवृत्त्या युग्मम् । धर्मवृत्तौ तु युगं लाति  
युगलं, मत्पर्यायो बालश्च ( सिध्मादिभ्यश्च ) ॥ ३९ ॥ समूह्यते ढौक्यते समूहः । निबहति निबहः ।  
व्यूहते व्यूहः । संदुप्रते प्रपूयते संदोहः । विस्त्रियते विसरः । व्रज्यते व्रजः, गोचरसंचरवहव्रजेति ( सू० )  
सम्पुः । स्तूयते स्तोमः । ओद्यते- ओषः, न्यङ्कादिः ( सू० ) । निक्षीयते निकरः । म्रियते मारः ।  
संक्ष्वते संघातः, होहन्तेरिति ( सू० ) घः । संचीयते संचयः ॥ ४० ॥ समुदयनं समुदायः, अयते-  
धम् । समुदयः, इणोऽच् । समवेयते समवायः । चीयते चयः । गण्यते गणः । वृणोति वृन्दम् । निकु-  
रति निकुरम्बम् । कदम्बपतिर्कृतः कंसरसंचयात्मकत्वात् ( कदम्बकम् ), कुत्तितमम्बते वा ॥ ४१ ॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिङ्गमधुपाणिः ।  
 द्विरेफपुष्पलिङ्गभृङ्गपद्मपद्ममराहवा ॥ ३० ॥  
 मयूरो बर्हिणो बर्हि मीलकण्ठो मुजङ्गमुङ्ग ।  
 शिखाबलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३१ ॥  
 केका वाणी मयूरस्य समी चन्द्रकमेचकी ।  
 शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छवर्धे नपुंसके ॥ ३२ ॥  
 खगे विहंगमविहंगमविहंगमविहायसः ।  
 शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३३ ॥  
 पतत्रि(त्रि)पत्त्रिपतगपतपत्त्ररथाण्डजाः ।  
 नगौकोवाजिविकिरविविक्किरपतत्रयः ॥ ३४ ॥  
 नीडोद्भवा गह्वरन्तः पित्सन्तो नमसंगमाः ।  
 तेषां विशेषा हारीता मङ्गुः कारण्डवः पुवः ॥ ३५ ॥

मधुव्रतः । अलसली, अलिख । द्वौ रेफौ नाम्न्यस्य द्विरेफः । भृङ्गजति विभर्ति वा भृङ्गः । पद्म पद्मनि  
 चरणा अस्य पद्मपदः । भ्रमति भ्रमरः । चञ्चरीकमसले ( ने ) निन्दिररोलम्भा देश्याम् ॥ ३० ॥ मीना-  
 लहान् मयूरः । बर्हिमस्यास्ति ( बर्हिणः ), फलबर्हिभ्यामिनन् ( वा० ) । शिखास्त्यस्व शिखाबलः,  
 दन्तशिखत्संज्ञायाम् ( सू० ) बलन् । शिखी, ब्राह्मादिवात् ( सू० ) । मेघनादमनुलसति नृत्यति- अवश्यं  
 मेघनादानुलासी । चन्द्रकी शुक्लापाङ्गुल ॥ ३१ ॥ के मूर्ध्नि कायति केका । चन्द्रपतिभूतिचन्द्रकः ।  
 मेचको मिश्रवर्णत्वात्, यत्कात्यः- बर्हिःकृष्णसमे वर्णं मेचकं भुवते बुधाः । मयूरस्येत्येव, चन्द्रो-  
 पचारात् । शिखाभिर्देयते शिखण्डः । पिच्छ [ व ] ति पिच्छम् । बर्हिति नृत्येनोर्ध्वमिवति बर्हिम् । प्रच-  
 लाकोपि । कलापो नानार्थे ॥ ३२ ॥ खे गच्छति खगः, अन्यत्रापि दृश्यते ( वा० ) इति डः । विहा-  
 यसी गच्छति, गमेःसुपेवाच्यः ( वा० ) खच्वक्तव्यः, विहायसोविहति ( वा० ) डे, खच-  
 विद्वा ( वा० ) । विजिहीते विहायाः, यच्छताम्यतः- विदुर्विहायसं व्योम पक्षिणश्च विहायसः ।  
 शकुनोतीति, शक्रेरुनोन्तोन्त्युनयः ( उ० ) । पक्षाः सन्त्यस्य पक्षी । द्विर्जायत इति द्विजः ॥ ३३ ॥  
 पतत्राणि विद्यन्ते येषु ते पतत्रिणः । पतन्त्यनेनेति पतः पक्षः, पुंसिपदसंज्ञायाम् ( सू० ), पतेगच्छति  
 पतगः । पतति पतन् । पत्त्राणि पक्षा रथोस्य पत्तरयः । नगे- ओकोस्य नगौकाः । वाजो वेगोस्यास्तीति  
 वाजी । विकिरति भस्वं विकिरः- विक्किरः, विक्किरःशकुनिर्विकिरोवा ( सू० ) । वाति वयति  
 वा विः, वेङ्गाडि ( उ० ) । पतत्राणि सन्त्यस्य पतति वा पतन्त्री, पतेरुडिन् ( उ० ), पतेरुडिरेति  
 भग्न्या पतति प्रत्यङ्गदिदन्तं मन्त्यते ॥ ३४ ॥ गतिमुमिच्छन् पित्सन्, सनिमिमिति ( सू० ) इष्-  
 इभ्यासलोपो । नमसा गच्छति नमसंगमः, गमेःसुपुपसंज्ञयान्तात्त्वच् ( वा० ), वाचंयमपुंस्त्रीच  
 ( सू० ) इति चकारादमागमः, अत्यविचमितमिरमिलमिनमितिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसञ्जिति ( उ० )  
 नमः(भस)शब्दोस्तीत्येके । पतङ्गो नानार्थे । एते पतत्रिविशेषाः । हरिणं वर्णं मितो हारीतः । मज्जाति मङ्गु-  
 जलकाकः, न्यङ्कादिः ( सू० ) । कण्ठे भवं कारण्डं पञ्जरबन्धं वाति कारण्डवः । पुवते पुवः ॥ ३५ ॥

कुरी की ( कु ) शोध बकः कतः पुष्कराक्षस्तु सारसः ।  
 कोसककककाको रयाङ्गाद्ययनामकः ॥ २३ ॥  
 कावन्का कलहंसः स्वापुष्कोशकुररी समी ।  
 हंसास्तु श्वेतगन्तयकाङ्गा मावसीकसः ॥ २४ ॥  
 राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणीर्लोहितैः सिताः ।  
 मलिनीर्मलिकाक्षा रुपा स्तं भार्तराष्ट्राः सिततरीः ॥ २५ ॥  
 शारारिरासिराटि ( वि ) च बलाका विसकण्ठिका ।  
 हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २६ ॥  
 जतुकाजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका ।  
 वर्धवा मक्षिका नीला सरपा मधुमक्षिका ॥ २७ ॥  
 पतिका पुत्तिका स्यादंशस्तु वनमक्षिका ।  
 वंशी तज्जातिरत्पा स्थावृन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २८ ॥  
 भृङ्गारी चीरका चीरी सिद्धिका च क्षियामिमाः ।  
 समौ पसङ्गशालमौ लघोस्तौ ज्योतिरिङ्गणः ॥ २९ ॥

क्षियामजदित्वात्कोमा । वक्षि बकः, न्यङ्स्वादिः ( सू० ) । वकोटोपि । केन के जल वा द्वयते कतः ।  
 सरति मयः सारसो लक्ष्मणाहयः । विलीनाङ्गो दीर्घजङ्घ । कंकते वाशते कोकः । चकते चकः ।  
 चकेति वाक्- आह्वयास्य चक्रवाकः । रयाङ्गं चक्रमाह्वयो नाम चास्य रयाङ्गाह्वयो रयाङ्गनामा ॥ २३ ॥  
 कदम्बस्यायं संघचारिवात्कादम्बः । कलं मधुरवाहंसः ( कलहंसः ) । उंबः क्रोशस्तुकोशः । कुरति  
 कुररः, कुर शब्दे, कुरेति शब्दं राति वा । हन्ति गच्छति हंसः । श्वेतो गन्तः पक्ष अस्य श्वेतगन्तु ।  
 चक्राकाशङ्गो वृत्तत्वात्, चक्राङ्क इत्येके । मानसाह्वये देवसररयाकोस्य मानसोकाः ॥ २४ ॥ चञ्चु-  
 सहितैश्चरणीरिति लक्षणे तृतीया । मलिनेश्चञ्चुचरणेस्ते सिता मलिकाक्षाः, [ मलिकाकाश्रयाः ] शुक्रपाङ्ग-  
 गत्वात् । कृष्णोश्चञ्चुचरणैर्हतराष्ट्र- अमात्ये भवा भार्तराष्ट्रः, राजहंसोभ्यो न्यूनत्वात् ॥ २५ ॥ शृणन्त्येनो  
 शररिः । अतल्यातिः । अत्यादिः । एताः क्षियाम्, बलाट्कान् कायति बलनाकति याति वा बलाका ।  
 विसमित्र कण्ठोस्त्वाः, विसकण्ठिकेत्येके । शारिका गौराट् । पीतपादंति च वाच्यम् । त्रियते वरटा, क्षी-  
 षयत्वाज्जातेर्द्वि न्नास्ति, वरलापि । योषिदिलेख, लक्ष्मणीत्येके, अत एव लक्ष्मणाह्वयोस्तौ ॥ २६ ॥  
 जत्वि च कृष्णविङ्गलत्वाज्जतुका । अजिनं पत्राणि पक्षा अस्या अजिनपत्रा चर्मवटकृत्वात् । परमुष्ण-  
 न्वमस्याः शीतापहतराशत्, परं विरुद्धं वा तेजसोन्मकारान् ( परोष्णी ) । तैलं पिबतीति तैलपायिर्दि-  
 नित्यमास्यविकासान् । चतुःतन्त्रे ( क्षी ) ज्येकं, तैलाश्रय- अजिनपक्षत्वात् । मुखविद्या वल्गुलिका निष्क-  
 टनी च । वृणोति वर्धणा । मक्षन्ति हृष्यन्त्यस्य मक्षिका । सरन्ती पातयति सरपा ॥ २७ ॥ पतति-  
 अपतद्गतिं वा पतङ्गिका । पुष्कलसितं तनोति पुत्तिका, मधुमक्षिकाभेदेयं, यक्षिभिः- मक्षिकै  
 तैलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पीतकम् । आमरं तु भवेच्छुक्रं क्षत्रं तु कर्षितं भवेत् ॥ दशति दशः । ( दंशी )  
 दंशज्जातीया, जातेरिति ( सू० ) दंष्ट्रा । गन्धयतेऽर्दयति गन्धोली, गन्धशीत्येके । वृणोति वरटा तैला-  
 टाह्वया ॥ २८ ॥ व्याकृत्या भृङ्गमयति भृङ्गारी । चीति रीति चीरका । चीति रिणाति चीरी ।  
 वंशी वाद्यभेदस्तत्तुल्यशब्दा सिद्धिका चक्राह्वया, केऽणः ( सू० ) इति ह्रस्वः, सिद्धिकार्ति ( क्षी ) कृती-  
 नाभिति तु लक्ष्यम् । शलति शर्म लभते वाग्नौ शलभः । क्षं योनते ज्योतः । ज्योतिषेह्यति चक्षति  
 ज्योतिरिङ्गणः । इन्द्रोपको ज्योतिर्मांती कीदृमाणिक्यं च [ -माण्य ] ॥ २९ ॥ मधु व्रतयेति भृङ्गे

ध्यामादस्तु मरणाजः कप्ररीदस्तु सप्रको ।  
 लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्वावय चावः किक्कीरिपिः ( वः ) ॥ १६ ॥  
 कलिङ्गभृङ्गभृङ्गभृङ्गाटा अय स्याच्छतपत्न्यकः ।  
 दारवाघाटोय सा ( शा ) रङ्गः स्तोकावयतकः समाः ॥ १७ ॥  
 कृकवाकुस्ताम्रचूरः कुकुटश्चरणायुषः ॥ १८ ॥  
 चटकः कलाविङ्कः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ।  
 पुमपत्ये चाटकेः स्यपत्ये चटकेव सा ॥ १९ ॥  
 ककरेदुः करेदुः स्यात्कुकणककरौ समौ ।  
 वनाम्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ २० ॥  
 काके तु करटारिष्ठबलिपुष्टसकृत्यङ्गः ।  
 ध्वाङ्क्षात्मपोषपरमृद्वलिमुग्वायसा अपि ॥ २१ ॥  
 श्लोणकाकस्तु काकोलो वात्यूहः कालकण्ठकः ।  
 आतापि ( पि ) पिह्वी वाक्षाय्यगृध्रीं कीरशुकी समौ ॥ २२ ॥

राक्षसः । कप्ररीति कप्रनः । लोहपृष्ठं पृष्ठमस्य । कङ्कते कङ्कः । चपति चावः । किक्कीति दीप्यति  
 वासते किक्कीरिपिः, द्वे नामनी इत्येके, किक्कीरिपिरित्ये ॥ १६ ॥ के लिङ्गं पुडास्य कलिङ्गः । भृङ्-  
 ग्वेतिपुपत्नी ( भृङ्गः ) । धूमवानिवाटति धूम्याटः, धूम आटय पदैकदेशत्वात् ।  
 शतं बहुवः पत्न्यामि पत्ना अस्वः शतपत्न्यः । दारवाङ्गिति दारवाघाटः, दारवाङ्गोऽन्यत्स्वचटः सङ्गा-  
 वाम् ( वा० ) । सरति सारङ्गः, सह- आरङ्गति वा यूपका ( वा ) रित्वात् । स्तोकां कवति वासते  
 वासते वा स्तोकाः । चतते ( ति ) यावते चातकः । जलरञ्जोपि ॥ १७ ॥ कृकेन शिरोभीयेन बलि  
 कृकवाकुः । कुगुचारेण कुटति कुकुटः । शिखी कालङ्गश्च ॥ १८ ॥ चटति भिनति- आहारं चटकः ।  
 के शिरो लुनाति बलवति कलाविङ्कः । ( चटका ) आजायतयाप् ( सू० ), क्षिण्कादिवाभावः ( क्षिप-  
 कादीनां व ) । ( तयोः ) चटकस्य चटकायाश्चापत्यं पुमान्- चाटकेः, चटकायाएरङ् ( सू० ), चट-  
 कायेर्युपसंख्यानं ( चटकस्येति वाच्यम् ) । स्त्री च तदपत्यं च तत्र, शियामपत्येऽनुबन्धम्यः ( वा० ),  
 कर्तृनक्षितलङ्कि ( सू० ) इति यागे लुङ्ग्यपि स्त्रीत्वात्पुनश्चाप् ॥ १९ ॥ कर्कते रेटते । केति च रेटते  
 वासते ( करेदुः ) । कृ इति कणति कृकं नयति वा कृकणः । केति करोति वासते ककरः । परभृतः  
 काकीपृष्ठश्चात् । कोकते चितं गृह्णाति कोकिलः । अपिकायति पिकः । कलकण्ठस्यामाद्यश्च ॥ २० ॥  
 काशब्दं कायति कङ्कते वा लौत्स्यात्काकः । केति रटति करटः । नास्ति रिष्टं हिंसास्यामृतमुक्त्वादिश्रः ।  
 बलिभिः पुष्टे वैश्वदेवभागाद्वर ( गार्ह ) त्वाद् बलिपुष्टः । सकृत्प्रजायते सकृत्प्रजः, एकाण्डप्रसवात् । ध्वाङ्-  
 क्षति ध्वाङ्क्षः । आत्मनः स्वनाम्नो घोषेऽस्यात्मघोषः, काकोति वाशनात् । परान् पिकान् विमर्ते  
 परभृतः । वय एव वायसः, प्रगादित्वाद्यन् ( सू० ), वयते वा । एकदशधिरजोषी मौकुलिर्द्विकश्च ॥ ११ ॥  
 ( श्लोणकाकः ) वृद्धकांकांशिकाको वा, यदाहुः- श्लोणकाको दग्धकाको वृद्धकाको वनाधरा, दुष हिंसायां,  
 श्लोणोपि । द्वितीयं तृतीयं वा स्त्रीं बहुति दित्यद्, तस्यापत्यं वात्यूहः, देविकाशिशपेत्स्यात् ( सू० ) ।  
 कालः कण्ठोऽस्य कालाः कण्ठका रोमोद्भेदा वास्य कालकण्ठः कालकण्ठकः । जलरञ्जो ( जो ) पि । शिख-  
 रलोकिनेन समावित्येव । आतापः तापी । चिल्लति चिल्लः, चिल्ल रोयित्ये । दस्तते दक्षायः, मुद्वलित-  
 दिगृहिभ्यआपत्यः ( उ० ), ततोपः षेड् ( तस्येदम् ) । गृह्यति मांसं गृध्रः । कोशब्दमीरवति कीटः ।  
 शुकी नीलश्चात्, शबतीत्येके । प्रियङ्ग्वेनोपि ॥ २२ ॥ कुषाते कुह । ( कोषः ) प्रगादित्वाद्यन् ( सू० ),



कुम्भसारः कम्प्यः हुरः हुरः वरतीहिवाः ।  
 नीकर्णपुष्यतेष्वर्यरोहिताद्यमरो भृगाः ॥ १० ॥  
 बन्धर्वः शरभो रामः सुमरो गवयः शशः ।  
 हस्यावयो भृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजीतयः ॥ ११ ॥  
 उन्मुहूर्णिकोप्यासुगिरिका बालभूषिका ।  
 [ सुसुन्वरो गन्धमुखी कीर्तुण्डी विधान्धिका ॥ १२ ॥ ]  
 सरटः कृकलासः स्यान्सुखली गृहगोषिका ।  
 लूता स्त्री तन्त्रा[ न्तु ]वायोर्णनाममर्कटकाः समोः ॥ १३ ॥  
 नीला[ ल ] इयुस्तु किं कृ[ मि]ः कर्मजलीकाः शतपयुमे ।  
 वृषिकः शूकफीटः स्यादालिदुणौ तु वृषिके ॥ १४ ॥  
 पारावतः कलरवः कपोतोथ शशावनः ।  
 पत्नी इयेन उलूके तु वायसारातिपेचकौ ॥ १५ ॥

भृगाविशेषः । कुम्भेन शरः शबलः कुम्भशरः । रौते रुहः । न्यधनि न्वहृकः, न्वहृकादिवात् ( सू० )  
 कुम्भम् । रमते रम्बते वा रहृकः । सं वृजेति संवरः । रोहिताख्ये भृगे भरो रोहिषः । पृषतो विन्मुषिभः,  
 मत्स्ययो- यच् । एत्येगः । इयति ऋयः, ऋरी गतावि यस्मान्मूर्त्यः यः स्यात् । रोहितो रहृकात् ।  
 समति चमरः ॥ १० ॥ गन्धर्वः पश्यति गन्धर्वः । शृगानि शरवः । रमन्तेस्मिन् रामः । सरति सुमरः ।  
 पुष्यति गवते वा गवयः । शयति दुष्या गच्छते शशः । अदितश्चन्द्रादौ वा । इयः (?) । मृगेन्द्राद्यो  
 उच्छः । गवाद्याश्च वृथमाणाः पारवते पाथेः पारावः, तिथेवेति । श्वपदा हिंस्रशरः ॥ ११ ॥  
 उन्मुहूर्णः, अन्तोषि । मूर्धनि मूर्धिकाः । आखन्यासः । पुंशजोपि । खनको गुहाशयो गर्तादर्थ ।  
 हयो नानार्थः । गिरति गिरिका, बर्गपुत्रांलभूषिकेने दुर्गः । [ गन्धहावि श्रियाम् ] ॥ १२ ॥ सरति  
 सरटः । कृकं शिरोपीव लावयति कृकलासः, कृकेलास इत्यपि ( प ) ग्राहः । प्राप्तेपुंशः शशानक्य । जाह्नके  
 गान्धर्वकोची ह्याहजोञ्ज केकेने शचयम् । सुसुवति भिजति मुपत्री, मुप खान्ते, मुपजीति गौहः ।  
 गृहगोषिकेति सम्भः पाठः, यस्या परणोजीनि प्रासेदिः । लूते लूता । तन्त्रं तन्मुन्ययति तन्त्रवाचः  
 [ तन्मुन्ययः ] । ऊर्णो नाभारशोभनाभः । मर्कट इव रोह्यः रौह्यन्मर्कटः । जालिको जालकारश्च  
 ॥ १३ ॥ नीलति नील[ ल ] इयुः । कर्मजति किं कृ[ मि]ः, कर्मजमिगतिस्त्वन्मन्त्रइव ( उ० ) ।  
 श[ पु ] लक्षोपि । शतं पशूनामस्यः शतरी, कुम्भरशपुत्र ( सू० ) इति साधुः । उमे द्वे श्रियाम् ।  
 वृष्यति वृषिकः । शूकः कण्टकस्तम्भकोः कीटः ( शूकहीटः ), अरभेदेशयम् । आलमनयोत्रास्याली,  
 ज्यौतिर्वेडजी । दुगति दुग्गः, दुग्ग हिसायां, कः, शोण इत्येके, विशकीडयम् ॥ १४ ॥ पा( प ) रापत-  
 स्वार्य पारावतः, जरादिवात् ( ग० ) वचन् । रज्जव । केन पश्यते कपोतः, कस्य बायोः पोत  
 इत्यागमः, आरण्योर्ध्व, आशुः गुहकोतः, अथ रभेदेश मन्यते । पत्नीति सामान्यं विशेषे वर्तते,  
 बह्व्याख्यः- इयेनाख्यो निहः शशो पत्रगो शशजिगो, माला- इयेनः पतिशशादनौ । स्वावते  
 इयेनः । उज्जति नेत्राभ्यां दहःपुच्छः, ऊर्णोकोटनादेशो निहकन् । पञ्चति पीयते वा पेचकः ।  
 पूको निशटव ॥ १५ ॥ व्याजिप्रशति व्याघ्रटः । मर्द्धात्रापयं मर्द्धात्रोस्त्यस्य वा मर्द्धात्रावटके-



महाभारतमासुका मण्डके सप्तमस्तमिनी ।

लुजायो ( पो ) महिषो बाह्विषत्पावरीरिमाः ॥ ४ ॥

शिवा शिवा धुरिमायसोमायुगपुर्तकाः ।

सु ( सु ) भागो वयकः कोटुफेरफेरपंम्पुकाः ॥ ५ ॥

ओतुपिंशलो मार्जारो वृषदंशक आतुमुक ।

प्रयो गौधेरगीधरगीधेया गोधिक्कात्मजे ॥ ६ ॥

भ्याविषु शस्यस्तलोमि शलली शलल शलम् ।

वातप्रमीर्वातमृगः कोक ईहामृगो वृकः ॥ ७ ॥

मुगे कुरङ्गवातायुहरिमाजिनयोनयः ।

पेजेयमेण्यामर्मापेजेयस्त्रीयमुये त्रिपु ॥ ८ ॥

कवली कन्दली चीनमृगमृगमृगिकावपि ।

समृकयोति हरिजा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

हिनस्ति भल्लुकः, लक्ष्ये तु ( भल्लुकः ), दधति कुहरभाजामल भल्लुकयूनःमिति ( उ० राम० ) । कलति ( कल्योति ) कलः । अरुच आभिमुख्येन भल्लुति(ते) अरुचमलः, अरुचस्याभिमुख्यार्यव्ययम् । भल्लुति- ( ते ) भल्लुकः । भल्लुकोपि । गण्डति संहन्यते गण्डकः । खलति मिनति खल्यः । खल्यं वृक्षमस्मा- स्तीति खल्यी । बाध्नासोपि । ललति पङ्के ललायः । महति मलां शेते वा अदिवः । मलोपि । बाह्विषमृहं द्वेष्टि बाह्विषत्, द्विषोभिषे ( सू० ) इति शतप्रत्ययः । बाह्विषमित्येके । धर्मतिः कं जलमा- सरति कासारः, ईषत्सरति वा महाकायत्वात् । सीरिभिर्दन्तैर्भाति सीरिभः कुटुम्बो तस्यार्षं रैरिभः । रजस्वलोपि ॥ ४ ॥ शिनोति शिवा, शकुनावेदिनी वा, शृगालेपि शील्लिङ्गः, वल्गुमात्र- शिवाः कालः शिवा कोट्य भवेदामलली शिवा । गां मिनोति मीनाति वा गोमायुः । मृगान् धुरति मृगधुरतः । असृगाटाति सृगालः, सरति सृजति वा । कोकति कोट्य । के- इत्यर्थकं रीति केरुः केरवच । वमति वम्युकः सर्वभक्षत्वात् । केरजोपि ॥ ५ ॥ अवस्थापुभ्य ओतुः । विशन्- आत्मास्थापुन् विशलः, विषल्ये वा, विषल्ययति पर्याप्नोति वा, विशति भिनति- आह्वन्वा, विद् आत्मस्यांशुवित्वाद्वा, विद् बाधेन इत्यस्माद्वा । आपुभ्यो गृह्-मार्ष्टि मार्जारः । वृषानाष्टन्दशति वृषदंशः । जलेष्टयादन्त्या शिषेष्टया योषेयम्, अहेर्गोधायां जातो जाल्यन्तरमित्येके । ( गौधेर ६० ) गोघायावृक् ( सू० ), आगुर्दीवाम् ( सू० ), छात्रादित्वादृक् ( सू० ) ॥ ६ ॥ श्वानं विशन्तीति श्वावित्, नहिशतिवृषिष्यपीति ( सू० ) दीर्घः । शलति शल्यानि क्षिरति वा शस्यकं दिशेष्टयः । शलको [ लो ] णि । तस्य लोत्रि शल्लोकाख्ये, वन्माहा- श्वाविषल्लोकां शलली, शल गतौ । वातं प्रमिभते ( वातप्रमीः ), वातमिमुक्षपावनात् । कोकते पङ्कति कवते वाति वा कोकः । ईहा मृगस्येयास्य ईहामृगः, ईहां मृगयते वा । ईहां वदन्ते- ईहावृक एकेकरोधेन एक इत्युक्तेः । आरुचः श्लेष्टके । वृक वृक आदाने ॥ ७ ॥ मृगयते व्याधेमृगः । कौ रङ्गति कुरङ्गः । वातमयते वातायुः, वानं वृक्षमयते वानापुरित्येके । ह्रियते गीतेन हरिणः । अजिनस्व योनिः । ( ऐगेयं, विकारेवयवे वा, एण्यावृम् ( सू० ) ) । ( ऐण ) विकारादौ, प्राणिरजतांदिभ्योऽन् ( सू० ) । ऐण्यमेणं च वार्यलिङ्गौ ॥ ८ ॥ के वलति कदली, कन्दे लीयते कन्दली, इमन्तो । चिनोतीति चीनः । वमति वमृहः । प्रीवते प्रियकः । समृयं ( र्व्य ) ते समृहश्चित्रवर्णः । एते र्व्यपुपुष्काः ॥ ९ ॥ अमी

गुणराजाक्षयस्तालो नालिकेरस्तु छास्मलो ।

घोष्ठा तु पूनः क्युको गुवाकः सपुरोस्तु ॥ १६९ ॥

फलयुद्धममेते च हिन्तालसहिताक्षयः ।

सर्जूरः केतकी ताली सर्जुरी च गुणगुमाः ॥ १७० ॥

इति वनौषधिवर्गः । ४ ।

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्षकः केसरी हरिः ।

शार्दूलद्वीपिनी व्याघ्रे तरुस्तु धृगावनः ॥ १ ॥

बराहः सूफरो घृष्टिः कोळः पोत्री किरः ( रिः ) किटिः ।

वंशी घोषी स्तब्धरोमा कोडो मूवार इत्यापि ॥ २ ॥

कपिपुवंगप्लवगशाखावृगवलीमुखाः ।

मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ मल्लुके ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठिते बहुमूलत्वात्तालः । भूमिपिशाचो देश्याम् । नालिकामल्युफान्युष्पादीनोऽप्येति नालिकेरः ।  
हालकापत्रशाखत्वाद्वाक्ये । तत्फलं चोचम् । घुणति ( घोषते ) ब्रमाते- अथवा घोष्ठा । पवते  
पूगः । कामति क्युकोः । गुवत्यनेन संसक्तस्यदुग्वाकः । खानि पृणाति सपुरः कारपत्रशाखः ॥ १६९ ॥  
अस्य पूगस्य फलमुद्रतो वेगोऽस्योद्भूतं संसक्तत्वात् । पूगादयो हि फलमुत्पद्यः ह्रीवे, फल्लुक् ( सू० ) ,  
घोष्ठा तु, हरीतक्यादिभ्यश्च ( सू० ) इति लुगा, लुपियुक्त्वद्व्यक्तिवचने ( सू० ) इति कृत्वे फले च  
स्त्रियामेव । एते तालनालिकेरपूगाक्षयो हिन्तालेन चतुर्थेन सहिताः सर्जुराद्याश्चत्वारस्तृणप्रधाना वृक्षाः ,  
ताली आत्यन्तरम् । एवं सर्जुरी भूमिखर्जूरः । हिनोति वर्धते हिन्तालः । खर्जूरः, खर्ज व्यपने ।  
केत्यते ह्यायते गन्धेन केतकी । तालयति ताल्ये ॥ १७० ॥ इति वनौषधिवर्गः । ४ ।

हिनस्ति सिंहः । मृगाणां द्वीप्यादिशयकान्तानामिन्द्रः । पञ्चास्यो विस्तृतास्यः, पचि विस्तारवचने,  
कर्मणि घञर्थेकविधानम् ( वा० ), मुखपादैर्योद्धृत्वाद्वा । हर्षकः कपिलाक्षः । अत एव हरिः, हरस्याकर्षति  
वा । कण्ठीरवो देश्याम् । शृणाति शार्दूलः । द्वी वणांवीयते द्वीपोस्तस्य वा वनिवासिण्याद् द्वीपी ।  
व्याघ्रिग्रन् हन्ति व्याघ्रः । चित्रकायः पञ्चशिखश्च । तंर क्षिणोति मार्गं रुणद्धि तरुः- आरण्यः आ,  
तरु इत्येके । वृकोपि ॥ १ ॥ बरमाहन्ति बराहः । सूयतेस्यै सूकरः । वर्धति घृष्टिः । पीनत्वात्कोळः,  
कुल संस्थाने । पोत्री मुखप्रमस्वास्तीति पोत्री । किरति क्मां किरः, शृगुपेति ( सू० ) कः । केटति  
किटिः, किट गतौ । कुड वनलेस्मात्कोडः, कोडः कुडालो मुस्तादो दंष्ट्रायो मुखलाङ्गल इति दुर्गेः  
॥ २ ॥ कम्पते चलति कपिः । प्रवैगच्छति प्रवगः प्रवंगोपि, गमेःशुपि ( वा० ), खचडित् ( वा० ) इति  
प्रवंगः, अन्यतापिदस्यते ( वा० ) इति के प्रवगः, गमश्च ( सू० ) इति खचि प्रवंगमोपि । शाखा-  
संचारी मृगः ( शाखामृगः ) । वलयः ( स्यः ) मुखेस्य बलीमुखः । प्रियते मर्कटः कुम्भकर्णनिर्गणस्त्वात् ।  
वने रमते वनरस्तस्यायं वानरः, पक्षे नये वा । चिडेति जानाति कीशः, कीशन्दमोष्टे वा । वने- ओ-  
कोस्य वनौकाः । हरिर्नार्थः । कृष्णमुखो गोमाङ्गलः । कापेयं चापलादिकम् ॥ ३ ॥ भल्लति ( ते )

रसाल इत्युक्तदेवाः पुष्टकान्तरकावयः ।

स्याद्वीर्यं वीरतरं मृतेत्योशीरमखियाम् ॥ १६४ ॥

अमयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ।

लामज्जकं छपुलयमवपाहेष्टकापथे ॥ १६५ ॥

नलावयस्तुषं गम्यच्छयामाकप्रमुखा अपि ।

अस्मी कृतं कृत्यो वर्यः पवित्रमय कृतुणम् ॥ १६६ ॥

वीरसीगन्धिव्यामवेवजगधकरीहिषम् ।

छत्रातिच्छत्रपालघ्नी मातातुणकमृस्तुषी ॥ १६७ ॥

शय्यं शालतुषं शासो यवसं तृणमर्जुनम् ।

तृणानां संहतिस्तृणया नट्या तु नटसंहतिः ॥ १६८ ॥

पुण्ड्रदेशजत्वात् ( पुण्ड्रः ), पौष्पोपि । कान्तमुलमियति कान्तारः, कान्ता अरका भया अस्व वा ।  
आदिशब्दात्कोशकारायाः । आह च- इष्टुः कर्कटको वंशः कान्तारो वेणुनिः सृतः । इत्युच्यते पौष्ककच  
रसालः सुकुमारकः ॥ अन्यः कर्कटकपालिः स्यादित्युयोनीष्टुपालिका । तथान्न इत्युच्यते स्यादित्युक्तः  
कोकिलसकः ॥ वीरयते वीर्यं वीरतरं च तृणभेदः । अस्व वीरणस्य मूलं उच्यते कम्प्यत इत्युच्यते  
॥ १६४ ॥ अमयं रोगहृत्वात् । आह च- उशीरममृणालं स्यादमयं समगन्धिकम् । रणप्रियं वीरतरं  
वीरं वीरणमूलिका ॥ मलं यति नलदं अपारुष्यात्, नलति वा । अत एवामृणालमर्हतिम् । जल आशेते  
जलाशयं, शीतवीर्यत्वाद्वा । स्याति दोषान्-स, स मज्जासारोऽयं त्र्यमज्जकम् । लघुगुणेन लीयते लघु-  
लयम् । अवली[ दी ]यते दाहोऽनेनावदाहम् । इष्टं कापयमस्वाधोवातकृत्त्रादिष्टकापयम् । आह च-  
लामज्जकं सुनाः[ वासं ] स्यादमृणालं लयं कृतु । इष्टकापयकं शीघ्रं दीर्घमूलं जलाशयम् । इष्टप्रेम्-  
णालं लामज्जकमुशीरं च, तथा सेव्यं लामज्जकमुशीरं चेति । अवदाहमवदत्तमाहुस्तच्छोशीरं नलदं,  
यदिन्दुः- अवदत्तं रणप्रियम् । प्रत्यक्षतु सेव्यामृणालयोर्नलदोशीरैर्कार्यं शाब्दं भान्तः ॥ १६५ ॥ ( नल-  
दयः ) तृणजातोऽय इत्यर्थः । तृण्यतेयते पशुमिस्तृणम् । गम्यच्छयामाको तृणधान्यविशेषौ । गीर्यते  
गर्मुत् । श्वामं वर्णमकृति श्यामाकः । प्रमुखच्छन्दाग्नीवारायाः । तृणगर्मुती एकार्ये इत्येके । को शेते  
कुशः । कु( को )यति कुयः । दृणाति पारुष्यादर्थः, दृभ्यते वा । पूयतेनेन पवित्रं, सप्रन्धि तु पवित्रक-  
मिति स्मृतिः । कृतित्तं तृणं कृतुणं, तृणचजातापिति ( सू० ) कोः कृत् ॥ १६६ ॥ पुरे मयं पौरम् ।  
सुगन्धप्रयोजनं सुरभिः ( सौगन्धिकम् ) । प्यायते पशुमिष्यार्थं धूसरार्थं वा । देवैर्जगधमिदं जगत्त्वात् ।  
यत्र तत्र रोहति रोहिषं, रुहेर्देहिष ( उ० ) इति टिप्पणम् । आह च- कृतुणं शकतिर्भूमिभूतिकं रोहिषं  
ततम् । प्यामकं भूमकं पौरं मुद्रकं देवजगधकम् ॥ प्रयं सौगन्धिकं नीलपयं कृतुणं गन्धपाषाणम् ।  
छत्ताकारस्तृणाविशेषश्छत्ता । अतिकान्तश्छत्रामतिच्छत्रः, छत्रातिच्छत्रमित्येके । पारुष्यात्तत्  
इति पालघ्नः । मातास्यापि तृणान्यस्य मालातुणकः । भुवस्तृणं भूतृणः, पारस्कटादित्वात् ( सू० )  
भुट्, भूरुच्यं वा । आह च- भूतृणो रोहिणो भूतिर्भूमिकोऽथ कुटुम्बकः । मालातृणम् पालम्भश्छत्रा-  
तिच्छत्रकस्तथा ॥ १६७ ॥ शय्यते शय्यं, शयु द्वितीयः । बालं नवं तृणम् । पश्यतेयते शासः ।  
यूयते यवसं तृणजातिः । अर्ज्यतेर्जुनं, सर्वं च तृणमर्जुनमिति भागुरिः । ( तृण्या ) पाषादित्वात्  
( पाशादिभ्योः ) । ( नट्या ) प्राग्वद्यत् ॥ १६८ ॥ तृणराजाहवस्तृणद्रुममध्ये मुख्यत्वात् । तलति

कलम्यपोषकादी तु मूलकं हिलमोचिका ।  
 वास्तुकं शाकमेवाः स्युर्पूर्वा तु शतपर्विका ॥ १५८ ॥  
 सहस्रवीर्यामार्गव्या रहानन्ताय सा सिता ।  
 गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः ॥ १५९ ॥  
 कुरुविन्दी मेघनामा मुस्ता मुस्तकमक्षियाम् ।  
 स्याद् भद्रमुस्तको गुन्द्रा पूढाली चक्रलोचदा ॥ १६० ॥  
 वंशे त्वक्षसारकर्मास्त्वक्षिसारतृणध्वजाः ।  
 शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥ १६१ ॥  
 वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वमन्यमिलोद्यताः ।  
 मन्यिर्गा पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ॥ १६२ ॥  
 नडस्तु धमनः पोटगलोयो काशमक्षियाम् ।  
 इक्षुगन्धा पोटगलः पुंमनि तु बलध्वजाः ॥ १६३ ॥

संक्षिप्तं मूलं मूलकः, अविदंशतेष्वप्यस्य शाकत्वं, यो त्युभयोर्भवति लभते सोऽन्यतरतो व्यपदेशमिति । हिला-  
 द्वीर्यान्मोचयति हिलमोचिका । वसन्त्यस्मिन्गुगा वास्तुकं क्षारपत्राह्वयम् । कलम्यत्वाः पथ्येते शाकप्रकाराः,  
 शाकाख्यं पुष्पमूला ( पत्रगुण्या ) दोलित आरभ्य वा ( ५०७८ ) यन्माला-मण्डकपर्णा पालङ्क्या विक्षिका  
 चाप्यपोषका । चाह्वेरी हिलमोचा च कलमबी शाकजातयः ॥ दूरं वाति दूर्ध्वते वा पशुभिर्दूर्वा ॥ १५८ ॥  
 भृगोरिषं भार्गवी । सहस्रवीर्या बहुपर्वा महाप्रभावा वा । रोहति मूले रहा । अनन्ता दूरप्रसरणात्, नीलदूर्वेयं,  
 यदाह-नीलदूर्वा स्मृता घर्ष्यं शाद्वलं हरिता तथा । शतपर्वा शतवीर्या शतवल्गुसिता लता ॥ सहस्रवीर्या-  
 नन्ता च दुर्मरा भार्गवी रहा । गोरिव लोमान्यस्या गोलोमी । आह च- गोलोमी श्वेतदूर्वा च श्वेतगर्भा  
 सिता लता । नीलश्वेतयोः पर्यायविपर्यासोन्नेष्यः । श्वेतदूर्वाविशेषायम् । गण्डेर्प्रमन्यभिरल्यते गण्डाली ।  
 मत्स्याक्षितुल्यप्रमन्यः ( शकुलाक्षकः ) । आह च- गण्डदूर्वा तु गण्डाली तीक्षा मत्स्याक्षिकापि च । बडि-  
 नाडी कलापश्च वारणी शकुलाक्षकः ॥ १५९ ॥ कुरुदेशं विन्दति कुरुविन्दः । मेघपर्यायोऽम्बुधरत्वात् ।  
 मुस्यति खण्डयति रोगान् मुस्ता, लक्ष्ये त्रिलिङ्गा । गुग्गुद्रान्ति रोगा अस्या गुन्द्रा । धन्यन्तरिः भेदेनाह-  
 मुस्तमम्बुधरो मेघो धनो राजकशेरुकः । भद्रमुस्तो वराहोऽन्धो गाङ्गेयः कुरुविन्दकः ॥ उषटयुक्तलत्यु-  
 च्चया, चक्राङ्केयम् ॥ १६० ॥ वन्यते वंशः । त्वक्षि सरति त्वक्षसारः, सूर्यिरे ( सू० ) इति घञ् ।  
 ( त्वक्षिसारः ) तत्पुष्पेकृतिबहुलम् ( सू० ) इति सप्तम्या अलङ् । कर्म इयति कर्मारः । तृणानां ध्वजो  
 मुह्यः । यत्राभं फलमस्य यवफलः । वेणन्ति व ( वि ) यन्ति वानेन वेणुः । मा क्रियतेनेन मस्करः, मस्कर  
 मस्कारिणोवेणुपरिवाजकयोः ( सू० ) । तेजयति तेजनः । दूर्ध्वं तेजनः शरो वेणुश्च ॥ १६१ ॥ कीति चकति  
 कीचकः, कीचेति कायति वा । प्रन्यते प्रमन्यः । पर्वति पर्व । पिपार्ति परः । गुन्द्रो दर्भविशेषे रुडः, यदाहुः-  
 दर्भणां स्थाने शरैः प्रस्तरितव्यम् । तेजयति निशिनोति तेजनकः । घृणाति पाठ्याच्छरः । काशास्तिवी-  
 का च ॥ १६२ ॥ नडयत्यर्दयति नडः, नल गन्धे । धमनोन्तः सुधिरत्वात्, धमिः सौत्रः, यथा घान्तो घान्तः  
 काञ्चनस्येव राशिः । पोटन संश्लेषेण गजति पोटगलः । आह च- नखे त्रयो नडथेव स च पोटगलः  
 स्मृतः । धमनोन्तकथेति नडस्तु शर उच्यते ॥ काशते काशः । कोकिलः क्षर्याय इक्षुगन्धेत्येकः ।  
 दूर्ध्वं पोटगलः काशो नडश्च । बलन्ते बल्वजास्तृणविशेषाः ॥ १६३ ॥ रस्यते रसाक्षः । इष्यत इक्षुः ।



अवाकपुष्पी कारणी च सरणा तु प्रसारिणी ।

तस्यां कटंभरा राजपला भद्रपदेति च ॥ १५३ ॥

जनो जतुका अवा(श्च)पी जतुकाश्चकारतिनी ।

संस्पर्शाय शटी बन्धपुपी बन्धप्रनियकेत्यपि ॥ १५४ ॥

कर्चुरोपि पलाशोय कारयेहः कटिहकः ।

मुषवी चाय कुलकं पटोक्तस्तिककः पटुः ॥ १५५ ॥

कृष्णादकस्तु कर्णाकरे(री)र्षाकः कर्कटी त्रियी ।

ह्रस्वकः कटुतुम्बी स्यात्तुम्बलापुक्रमे समे ॥ १५६ ॥

चित्रा गवाक्षी गोतुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी ।

अशर्मजः स्यात्तुम्बा कन्दो गण्डीरस्तु समष्टिला ॥ १५७ ॥

कर्मणा । आह च-शतपुष्पा मिथियोषाशदका माषवी शफा । अतिच्छत्र्या त्ववाकपुष्पी शताह्वा कारवी स्मृता ॥ सरति बतसंकाचाभिवर्ततेऽङ्गमनया सरणा, सरणी तु युक्तः पाठः । कटं विभर्ति कटंभरा । राज-  
स्या मुहया बला बलकृत । आह च-प्रसारणी तु प्रसरा सरणी सारणी च सा । चारुपर्णी राजबला  
भद्रपर्णी प्रसारिका ॥ १५३ ॥ जायतेस्या जन्तुजनी । जतु करोति जतुका । संगतः शशोऽस्याः संस्पर्श ।  
आह च-जतुकारा तु जतुहन्तुकारी जनी स्मृता । जननी च संकर्श जतुका चक्रवर्तिनी ॥ शयति  
शटी, बन्धप्रनियकेकदेशः शटीति मूर्ध्नादिमाहुः ॥ १५४ ॥ पलाशाः सन्त्यस्य पलाशः । आह च-शटी  
शटी पलाशश्च श्रेया पृथुपलाशिका । सुगन्धमूल । गन्धाली बह्मण्या सुवता बधूः ॥ कस्य चित्समत ।  
शटीति कर्चुरस्य शटीत्वं शय्याः कर्चुरत्वं चेतीह कर्चुरोपादानम् ॥ द्वयर्थे चाह शटी गन्धपलाशः कर्चुर-  
वेति । कारणे वेत्येति कारयेहः । कटिं कर्ति कटिहः, कट्यावृणोति वा । सुष्ठु सूर्यते सुषवी । कोलति  
संस्पायते कुलकं, कुत्सितं लययत आस्वायते वा । पटति सरलत्वात्पटोलः । तिष्ठो रसेन । पटुर्देहपटुत्व-  
हृत्, लघुपानुसर इत्येके । आह च-पटोलः कुलकस्तिक पटुकः कर्कशश्छदी । राजीफलः पाण्डुकलो  
राजिमानमृताफला ॥ १५५ ॥ कोष्मणानिति, कुत्सितोष्माण्डेषु बीजेष्वस्य वा पित्तकारित्वात्कोष्माण्डः,  
कुप्यते करोति तृप्तिं वा । कर्कशाद्याविधिति-अर्कवृक्षोपवनः सरणत्वात्कर्कशः । आ-ईयंते-एवाकः  
कटुविभर्ता, उर्वाकमिव बन्धनादिति श्रुतेः-उर्वाकं स्तादुचिभंटीमाहुः । ह्रस्वः कर्कः कर्कटी, प्रामटीव-  
हौकिकष्टप्रत्ययः । इष्यत इषवाकुः, क्षत्रियधनत्वाद्वा । कटुका तुम्बी, तुषि अर्दने । आह च-कटुकात्तुम्बी  
तुम्बी ल(तु)म्बा पिण्डफला तथा । ह्रस्वाकुः क्षत्रियधनस्तिकपीजो महाफलः ॥ न लभ्यतेलाकुः, काष्ण-  
कम्, न लाति बान्तर्जलम् । समे इति क्षोत्वेनापि । अत्रेन्द्राद्याः-अलवस्तुम्बकः मोक्षो जलालवृक्षाम्बुनी ।  
मल्लाम्बुमहातुम्बीति- ॥ १५६ ॥ गोतुम्बा, अपभ्रंशोऽयं गवाक्षीत्वात् । आह च-ऐन्द्रीन्द्रवारुणी शाला इन्द्रीर्वा-  
रुषादनी । गवाक्षी क्षुद्रफला इषमाक्षी गवाक्ष्यपि ॥ द्वयर्थे चित्रा विशाला इवन्ती चेति विशालाबाधित्रा-  
त्वाद् भ्रान्तो ग्रन्थकृत । गवाक्षीविशेषो वा विशालेति न दोषः । विशाला महाफलत्वात् । इन्द्रवदक्षोपो-  
तीन्द्रवारुणी । आह च-अन्येन्द्रवारुणी श्रेष्ठ विशाला तु महाफल । आत्मरक्षा चित्रफला तुषवी त्रपुषी  
च सा ॥ सूर्यते प्रेर्यते सूरणः । कन्दोतेतिच्यते कन्दो मूलविशेषः । गण्डीन् प्रन्थनीरयति गण्डीरः,  
पुंलिङ्ग । सम्बगच्छीनि स्मृति समष्टिला सान्द्रत्वात्, समष्टिः नाम शाकं, यन्माला-गण्डीरो न समष्टिः  
॥ १५७ ॥ कल्मषमस्याः कल्मषी । अपमतोदका जागहत्तत्वात्, अपोदकामत्यकाद्येति धन्यन्तरिः ।



पद्माट उरणाक्षश्च पलाण्डुस्तु सुकन्धकः ।  
 लतार्थमुर्मुमौ तत्र हरितं तत्र महीपथम् ॥ १४८ ॥  
 लघुनं गृध्रनारिष्ठमहाकन्धरसोनकाः ।  
 पुनर्नया तु शोथन्ती वितुषं सुनिषण्णकम् ॥ १४९ ॥  
 स्याद्वातकः शीतलोपराजिता शण्पण्यपि ।  
 पारायताङ्घ्रिः कटमी पण्या ज्योतिष्मती लता ॥ १५० ॥  
 वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ।  
 विश्वक्सेनप्रिया घृ(गृ)ष्टिर्वाराही वदरेत्यपि ॥ १५१ ॥  
 मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी ।  
 शतपुष्पा सितच्छत्रातिच्छत्रा मधुरा मिसिः ॥ १५२ ॥

न्मेषवदसीष्यस्योरणाक्षः । इन्द्रायाः- चक्रमर्दः स्मृत्यक्ष प्रपुष्पाड्य नामतः । एकरेतो ददुहरो मेवाक्षे-  
 ङगजश्च सः ॥ पिपाते धातृपलाण्डुः । तत्र हरिते तत्र नीले पलाण्डौ लताको लवतकाख्यः । दुष्टे दुमो-  
 पवित्रत्वात् । धन्वन्तरिस्त्वभेदेनाह- पलाण्डुर्म(बै)वनेष्टश्च मुकुन्दो मुखदूपकः । हरिणोन्य पलाण्डुस्तु  
 लताको दुद्रुमश्च सः ॥ १४८ ॥ सुष्ठुतत्त्वाह- लघुनो दार्धपत्रश्च पिच्छगन्धो महौषधम् । फरणश्च  
 पलाण्डुश्च लवतकोपराजितः ॥ गृध्रनं यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः । महौषधं सर्वरोगाजिस्त्वात् ।  
 लशति छिनति रोगान्- लघुनम् । गृध्रति कुत्सितं शन्यते गृध्रनः । न रिष्यत्यरिष्टः । रसोनः पञ्चरस-  
 त्वात् । आह च- रसोनो लघुनारिष्ठो म्लेच्छकन्दो महौषधम् । महाकन्दो रसाख्योन्यो गृध्रनो दीर्घ-  
 फत्रकः । महौषधगृध्रनादीनामाकृतिभेदेपि रसायक्यादभेदं मन्यते । पुनर्नयेव ( छिन्नापि ) विशाख-  
 त्वात् । आह च- पुनर्नयो विशाखश्च कटिः स शिलाटकः । वृथैवः क्षुद्रवर्षाभूदीर्घपत्रः कटिः ॥  
 वितुषते वितुषकं नाम शाकम् । सुष्ठु निषीदन्त्यमस्मिन्गुणाः- सुनिषण्णकम् । आह च- शितिका[ सा ]-  
 रः सूतपुत्रस्तुत्या(?) च सुनिषण्णकः शाकभेदोयम्, यदाह- पाठा शृया शटी शाकं वास्तुकं सुनिषण्णकम् ।  
 विश्वचम्पमवर्त्तसि वचोभेदि तु वास्तुकम् ॥ १४९ ॥ शीतलवातक इत्येका संज्ञा, यद्वन्वन्तरिः  
 शण्पणी शीतलवातक इत्याह । द्वयैऽपराजिता शीतलवातको गिरिकार्णिका च । कटल्यावृणोति कटमी ।  
 पण्या स्तुल्या । ज्योतिष्मती- अग्न्याभत्वात् । लता दूरप्रसरात् । आह च- ज्योतिष्मती तु कटमी स्या-  
 त्सुवर्णलतेति च । ज्योतिष्का चाग्निभासा च लवणोत्का च दुर्दिना ॥ अयं लता प्रियङ्गुर्ज्योतिष्मती  
 सारिवा च । द्वयैः पारावतपदी काकजङ्घा ज्योतिष्मती च ॥ १५० ॥ वर्षासु भवं वार्षिकम् । आह  
 च- त्रायमाणा कृतत्राणा त्रायन्ती त्रायमाणिका । बलभद्रा बलदेश वार्षिकं गिरिसाजुजम् ॥ वाराही  
 वराहकान्ता, ( अत एव विष्णुवक्त्रा ) । अत एव घृ[ गृ ]ष्टिर्[ वं ]र्षणात् । अयं बदरा सुवर्जस्य  
 अश्वगन्धा वाराही च ॥ १५१ ॥ भवंति संपृच्यते मार्कवः । भृङ्गवशाजते रजवति कृष्ण-  
 करोति च भृङ्गराजः, भृङ्गरजोपि । आह च- भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवो भृङ्ग एव च ।  
 भृङ्गारकस्त्वैकरजो भृङ्गारः केशरजनः ॥ काकवन्मचति( ते ) वर्गेन संपृच्यते काकमाची । अत  
 एव वायसी, काचमाच्यपि । आह च- काचमाची प्वाङ्गमाची काकसाह्या च वायसी । शतपुष्पा बहु-  
 पुष्पा । सितच्छत्राभा ॥ १५२ ॥ अवाञ्च्यधोमुखानि पुष्पाण्यस्या अवाक्पुष्पी ॥ कारोरियं कारवी

नमस्कारी गण्डकाली समा( म )ङ्गा चद्विरेत्यापि ।  
 जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुसूता ॥ १४२ ॥  
 कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गदृग्वाङ्गजीवकाः ।  
 किराततिको भूनिम्बो नार्यतिकोय सप्तला ॥ १४३ ॥  
 विमला शा[ सा ]तला भूरिफेना चर्मकसेत्यपि ।  
 वायसोली स्वादुरसा का( व )यस्याय मकुलकः ॥ १४४ ॥  
 निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्षेण्युदुम्बरपर्ण्यपि ।  
 अजमोदा तृमगन्धा ब्रह्मवर्मा यमा[वा]निका ॥ १४५ ॥  
 मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पीष्करे ।  
 अल्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ॥ १४६ ॥  
 काम्पित्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ।  
 प्रमुखादस्त्वेङ्गजो बहुधनश्चक्रमर्दकः ॥ १४७ ॥

आह च- जीवन्ती जीवनीया च जीवा जीवनवर्धनी । मङ्गल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठा यशस्वी ॥ १४२ ॥  
 कूर्चः शीर्षेऽस्य कूर्चशीर्षः । शृङ्गः शृङ्गाभः । जीवयति जीवकः, जीवतीति वा दीर्घायुष्मात् । आह च-  
 जीवकः शृङ्गकः सर्जो दीर्घायुः कूर्चशीर्षकः । ह्रस्वाङ्गो मधुरः स्वादुः प्राणदविरजीव्यपि ॥ किरात-  
 देशे भवस्तिष्ठः किराततिकः । अनार्यः किरातः । आह च- किराततिको हैमकाण्टतिकः किरा-  
 तकः । भूनिम्बो नार्यतिकश्च कैरातो रामसेनकः ॥ १४३ ॥ सपति समवेति सप्तला । शा[ सा ]तं युक्तं  
 लाति शा[ सा ]तला । भूरयः फेनाभा बिन्दुवोऽस्या भूरिफेना । चर्मं कसति वर्धते चर्मकसा, चर्मकसे-  
 त्येके । आह च- सातला सप्तला सारा बिन्दुल विमलामल । बहुफेना चर्मकसा फेना दीप्ता सना-  
 लिका ॥ वायसवदवलीयते वायसोली काकोत्वाहया । कावे तिष्ठति कायस्या, कि ज्ञाने । आह च- का-  
 कोली मधुरा शुद्धा क्षीरा(री) धाङ्गोऽन्ध(लि)का मता । कायस्या स्वादुमांसी च वायसोली च कारि(लि)का ॥  
 ३यर्थे स्वादुरसा पृथ्वाका शतावरी काकोली(नी) च ॥ १४४ ॥ मकुलते विनृत्यान्मकुलकः । नियतः  
 कुम्भो निकुम्भः । दन्तामा दाम्यन्त्यनया दोषा वा दन्ती । आह च- दन्ती क्षीप्रा निकुम्भा स्वादुप-  
 चित्रा मकुलकः । तयोदुम्बरपर्णी च विनृत्या च पुष्पप्रिया ॥ द्वयर्थे प्रत्यक्षेण्यी इवन्ती दन्ती च । अज-  
 वन्मोदो गन्धोऽस्या अजमोदा । ब्रह्मदर्भाभा । मच्छलप्रिमः न्यै यमानी, पूर्वोक्षापीह शाकस्वात् पुनरुक्ता,  
 यवानो मत्वा वा प्रत्यङ्मुद भ्रन्तः । आह च- यवानी दीप्यको दीप्यो यवसाङ्गयनामकः । यमानिकोप-  
 गन्धा च दीपनीया च दीपनीः ॥ पूर्वोक्ता हि खराश्वेराजमोदा ब्रह्मकुशा च । तथा चेन्मोदायाः- अज-  
 मोदा ब्रह्मकुशा सताभा ले. चमकटः । बलीमोदा वस्तमोदा सेव हस्तिनयूरकः ॥ १४५ ॥ पुष्करमूले  
 क्षीणि नामानि । पद्मपत्रमिति प्रत्यङ्मुद भ्रान्तः, पद्मवर्णोति लिपिभ्रान्त्या पद्मपर्णमिति बुद्धवान्, यदाह-  
 मूलं पुष्करमूलं च पीष्करं पुष्कराङ्गयम् । काश्मीरं पुष्करजटा धीरं तत्पद्मवर्णकम् ॥ अत्यर्थं चरति- अ-  
 तिचरा । पद्माभा । चरति चारटी । आह च- पद्मचारिण्यातिचरा पद्मा पद्मावतीति च । चारटी गन्ध-  
 मूला च लक्ष्मीः श्रेष्ठा सुपुष्करा ॥ ३यर्थे- अन्यथा हरीतकी महाभ्रमणी पद्मचारिणी च ॥ १४६ ॥ काम्पि-  
 लदेशे भवः काम्पित्यः । चन्द्रोद्गादनाक्षेप्याद्वा । ( रोचनी ) रोचनीति सम्म्यः पाठः, यदाह- काम्पित्य-  
 कोय रक्ताङ्गो रोचनी रोचकस्तथा । रजनो लोहिताङ्गश्च कर्कशो रजचूर्णकः ॥ आहोदुः- कर्कशः स्वः  
 करजः[ भः ] स्यात् काम्पित्यः पटोलकः । प्रपुनाति प्रपुणति वा प्रमुखादः । एङ्वन्नेषप्रवद् भग्यते  
 शय्यत एङ्गजः ॥ चक्राणि ददुमण्डलानि मृदुनाति चक्रमर्दकः ॥ १४७ ॥ पद्मवदति पद्मादः । उरचव-

ओषधयो जातिमात्रे स्युरजाती सर्वमौषधम् ।

शाकाख्यं पत्रपुष्पावि तण्डुलीयोत्पमारिषः ॥ १३६ ॥

विशल्याक्षिशिखानन्ता फलिनी शकपुष्पयपि ।

स्यावृक्षगन्धा छगलाण्ड्या( न्या ) विंगी वृक्षवारकः ॥ १३७ ॥

जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्या सोमवल्लरी ।

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ॥ १३८ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।

तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका पीलुपर्णयपि ॥ १३९ ॥

वर्वरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ।

पलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ॥ १४० ॥

चाङ्गेरी चुक्रिका वन्तशठाम्बाम्ललोणिका ।

सहस्रवर्धी चुक्राम्लवेतसः शतवेध्यपि ॥ १४१ ॥

शोशितण्डुलीयकः, लघुतण्डुलाभवीजो वा । अल्पं मृप( ६१ )त्यल्पमारिषः । आह च- तण्डुलीयक उद्दिष्टः ख[ च ]गाला (?) तण्डुलेरकः । भण्डे, रस्तण्डुलीबीजो मेघनादो घनस्वनः ॥ १३६ ॥ लाङ्गलिबीजं पूर्वोक्तादि शाकत्वादिहोपासा । ऋक्षवृक्षन्ययति ऋक्षगन्धा, ऋक्षगन्धा वृक्षगन्धेति च पाठभेदः । छगल- स्वेवाणान्यस्धीन्यस्याम्बगलाण्ड्यी । आवेगी वृक्षत्वान्, उद्वेजको वा । वृद्धं वृद्धत्वं दारयति वृद्धदारकः, वृद्धं दारकीकुर्वते वा । जुङ्गाति वृद्धे दोषाज्जुङ्गाः, जुगि वर्जने । आह च- वृद्धदारक आवेगी जुङ्गको जीर्णबालकः । अन्तःकोटक(र)पुष्पा स्यादजाङ्गी छगलाण्ड्यपि ॥ अर्थे वृक्षगन्धा वृद्धदारकः पिण्डातुल्यं विदारी च ॥ १३७ ॥ ब्राह्मी पावनीरसात् । मत्स्याक्षी मत्स्यपुष्पा । वयस्या वयसः स्थैर्यकृत् । अर्थे सोमवल्ली वाकुची गुडूची ब्राह्मी च । हिमावती हिमजातरत्नान् । आह च- क्षीरीषी काश्चनक्षीरी पटु- पर्णी च कर्शनी । तिक्तादुग्धा हैमवती हैमदुग्धा हिमावती ॥ स्वर्णक्षीरी स्वर्णवती सुवर्णक्षीरिकापि च । अर्थे हैमवती हिमावती हरीतकी श्वेतवचा च ॥ १३८ ॥ हयपुच्छाकृतिः । काम्बोजदेशे भवा काम्बोजी । महासहेति मुद्गरपर्णीः सहाया भिषेयम् । आह च- माषपर्णी तु काम्बोजी कृष्णवृन्ता महासहा । आर्द्र- माषा सिंहवृन्ता माषा मांस ]माषाभ्युच्छिका ॥ तुण्डिकेरी- ओष्ठोपमफलत्वात् । विम्बमिव विम्बिका । आह च- विम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डिकरफला च सा । ओष्ठोपमफला गोष्ठा (?) पीलुपर्णी च तुण्डिका ॥ अर्थे तुण्डिकेरी विम्बी कर्पासी च ॥ १३९ ॥ शाकोयम्, वर्वरा कुटिलहस्तकेशाभा, अत एव कवरी । आह च- अजगन्धा खरपुष्पा वज्रगन्धाभगन्धिका । कवरी वर्वरागन्धा तुङ्गी पीतमयूरकः ॥ रस्यते रास्ना । आह च- रास्ना युक्तरसा स्या प्रेयसी रसनी रसा । सुगन्धनूला विरसा सेव युष्काफला मता ॥ अर्थे सुवहा रास्ना शैकालिका नकुश्री च ॥ १४० ॥ च.ङ्गां दन्तपटुत्वमीरयति चाङ्गेरी । चुक्रपते व्यपतेस्याचुक्रिका । अम्बे तिष्ठत्यम्बग्रा । अम्बजेव लुनात्यम्बल्लोणिका, अपभ्रष्टेयम् । आह च- ध्रुवा- म्ल्लिका तु चाङ्गेरी लोणिका चाम्ललोणिका । अर्थे- अम्बग्रा पाठा मोचिका चाङ्गेरी च, तथा चु- क्रिकाम्लिका चाङ्गेरी भण्डाकी च । आह च- अम्बोजेवत्येतसो मीमो रसाम्लोऽम्लवेतसः । रक्त- स्रवो वेतसाम्लः शतवेधी च वेधकः ॥ अर्थे चुक्रको वृक्षाम्लोऽम्लवेतसयुक्तश्च, तथा सहस्रवेधी- अम्लवेतसो हिङ्गुलता कस्तूरी च ॥ १४१ ॥ नमस्कारी अजलिरूपपत्रत्वात् । गण्डेषु प्रस्थितु कृष्णा गण्डकाली । समान्गन्धान्ध्याः समान्गन्धा । खदिरा कृष्णसूक्ष्मपत्रत्वात् । आह च- रक्तपाठी धमीपरना समान्गन्धाजलकारिका । नमस्कारी गण्डकाली रास्ना खदिरकेत्यपि ॥ जीवन्त्यनया जीवनी ।

शुक्तिः शंसः सुरः कोलवलं नलमयादकी ।  
 काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृतालकसुराभूजे ॥ १३१ ॥  
 कुटघटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ।  
 पुवगोपुरगोनर्वकैवर्तीमुस्तकानि च ॥ १३२ ॥  
 ग्रन्थिपर्णं शुक्वर्हं पुष्पं स्थौणेयकुङ्कुरे ।  
 मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्षा देवी लता लघुः ॥ १३३ ॥  
 समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि ।  
 तपस्विनी जटा मांसी जटिला लोमशामिषी ॥ १३४ ॥  
 त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ।  
 कर्चूरको द्राविडकः काल्य ( ल्य ) को वेधमुख्यकः ॥ १३५ ॥

नागहनुः संहः ॥ आढकीसंज्ञा धानाख्या तुवरीत्वात्, तुवरो हि कषायो रसः । कषाति काक्षी । प्रशस्ता  
 मृद् मृत्स्ना, स्तनोप्रशंसायाम् ( सू० ) । प्रियतेनेन हेम मृतालकम् । सुगृष्टो जातम् । आह च- धौ-  
 राश्री च मृतासङ्गः काक्षी कामी सुराष्ट्रजा । अजिता तुवरी स्तुत्या मृत्स्ना मृत्वा ( त्सा ) मृतालकम्  
 ॥ १३१ ॥ कुटन्ती नटति, कुटघटापि । दाशपुरे भवं दाशपुरं, दाशान्निपतिं वा, कैवर्तीमुस्तत्वात् । वने  
 जातं वानेयं, नयादिभ्योऽङ् ( सू० ) । प्लवते लघुत्वाद्धवः । गाः पिपति गोपुरम् । अत एव गोनर्दम् ।  
 आह च- परिपेलवं प्लवं वन्यं गोपुरं स्यात्कुटघटम् । सितपुष्पं दाशपुरं गोनर्दं जीर्णवृध्नकम् ॥ १३२ ॥  
 ग्रन्थिप्रधानानि पर्णान्तर्य ग्रन्थिपर्णं, ग्रन्थीन्वा पिपतिं ग्रन्थिमत्त्वात् । शुक्ल्येव बर्होणि पर्णान्यस्य शुक्-  
 वर्हं, शुक्लं बर्हमिति पदेकदेशत्वाद्वा द्वे संज्ञे । पुष्पयति पुष्पं विकचाह्वम् । स्थूणाया इदं रूपेण स्थौणे-  
 यम् । कुङ्कुरं शकृति । आह च- स्थौणेयकं बह्विचूडं शुक्लगुच्छं शुक्लच्छदम् । विकचं शुक्वर्हं च हरितं  
 शीर्णलोमकम् ॥ मरुन्माले मासुतसगाह्ये द्वे संज्ञे एते, अयं तु तुशब्दादेकां मन्यते, मरुत्सहिता माळा  
 वा । पिशुना गन्धसूचनात् । स्पृशति गन्धेः स्पृक्षा । देवी देवपुत्रीत्वात् ॥ १३३ ॥ वधूराशाकभृत्त्वात् ।  
 कोटिभिवर्षति मधु कोटिवर्षा । लङ्कासूप्यते लङ्कोपी, समुद्रान्तत्वात् । इन्द्राद्याः- स्पृक्षा माला पङ्-  
 कमुष्टिर्नाला देवी लतागुरुः । देवपुत्री च लङ्कोपी शीता पङ्कजमुष्टिका ॥ समाराता कोटिवर्षा निर्मा-  
 त्याशावधुः स्मृता । धन्वन्तरिश्च- स्पृक्षा सम्राज्ञाणी देवी लता लङ्कोपिकेत्यपि । पङ्कमुष्टिर्देवपुत्री  
 निर्मात्या पिशुना वधूः । अर्थे समुद्रान्ता कर्पासी यवासकः स्पृक्षा च । जटाः सन्यस्ता जटा । अत  
 एव तपस्विनी । समांसत्वान्मांसी । अत एवामिषी । गन्धमांसी चैयम्, यदाह- मांसी कृष्णजटा हिंसा  
 नलदा जटिलामिषी । जटा च पिशिता मेषी क्रम्यादा च तपस्विनी ॥ द्वितीया गन्धमांस्यन्या मूलकेशी  
 जटा स्मृता । पिशाची पूतना केशी भूतकेशी च लोमशा ॥ १३४ ॥ त्वक्पत्रमुत्कटम् । पत्राकृति पत्रम् ।  
 उत्कटं चमत्कारात् । भृङ्गं काष्ण्यतैस्स्याभ्याम् । चोचममिचोदकम् । वरमङ्गं त्वक्पत्रस्य वराङ्गकम् ।  
 आह च- त्वचं वराङ्गं भृङ्गं त्वक् चोचं शकलमुत्कटम् । कृन्तति त्वग्दोषं कर्चूरः, हरिश्चाभः । श्राव-  
 यति द्राविडः । कल्पकारी काल्यः । आह च- कर्चूरको गन्धमूलो द्राविडः काल्य एव च । वेधमुख्यो  
 दुर्लभश्च कस्य चित्समता शटी ॥ १३५ ॥ ओषं धयत्योषधी फलपाकान्ता जातिः । सैवोषं रोगहृत् ।  
 सर्वाभिति क्षौद्रघृततैलाद्यमयीषधं, ओषधेरजातौ ( सू० ) इत्यण् । तद्देशेषाच्छाकादीनाह । शक्यतेनेन  
 भोक्तुं श्यति देहं वा शाकम् । पत्रं निम्बशेदः, पुष्पं कीवदारादेः । आदिशब्दात्फलं वार्ताक्यादेः, मूलं  
 मूलकविशादेः, कन्दः सूरणादः, अङ्कुरो वंशादेः । आह च- मूलपत्रकरीराप्रफलाण्यविरुद्धाः ।  
 त्वक्पुष्पं कवकं चेति शाकं दशविधं स्मृतम् । विरुद्धकं तालास्थिमज्जेति गौडः, वयं तु क्षेत्रोष्ट्र ( इ )-  
 तस्य फलमूलादेः सेकाग्रवोद्भिन्नानङ्कुरान्विरुद्धान्मन्यामहे । कवकं छत्रिका । शाकविरोधानाह । ताम्रमति



अभिज्वालासुमित्रे तु धातुकी धातुपुष्पिका ।  
 पृथ्वीका चन्द्रबालीला निष्कुटिर्गुलाय सा ॥ १२५ ॥  
 सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी त्रिपुटा वृटिः ।  
 व्याधिः कुष्ठं पारिम(मा)व्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ॥ १२६ ॥  
 शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः ।  
 मृदामलाज्जटा ताळी शिवा तामलकीति च ॥ १२७ ॥  
 प्रपौण्डरीकं पुण्डर्यमथ तुषः कुवेरकः ।  
 तुषिः कच्छः कान्तलको नन्वित्रुतोय राक्षसी ॥ १२८ ॥  
 चण्डा घनहरी क्षेमदुष्पु(ष्य)व्रगणहासकाः ।  
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ॥ १२९ ॥  
 सु(शु)षिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।  
 धमन्यन्नकेशी च हनुर्हृद्विलासिनी ॥ १३० ॥

पृथ्वीका हिङ्गुपत्रिकोपकुञ्चिका सूक्ष्मला चेत्याहुः । द्वयर्थे तु त्रिपुटा त्रिवृत्सूक्ष्मला चेति लक्ष्यान्वयेन विनिर्धयः ॥ १२५ ॥ सा- एल्ल सूत्रा, उपकुञ्चत्युपकुञ्चिका । तुत्या चाल्यत्वात् । कुराति सन्दायते कोरङ्गी । त्रिपुटा त्र्यध्रिः । श्रुत्यति वृटिः, सूक्ष्मत्वाद्वा । आह च- सूक्ष्मला शमि[वि]को तुत्वा कोरङ्गी बहुला वृटिः । एला कोतवर्णा च चन्द्रबाला च निष्कुटिः ॥ द्वयर्थे त्रिपुटा त्रिवृत्सूक्ष्मला च । व्याधिपर्यायं कुष्ठत्वात् । को तिष्ठति कुष्ठम्, अम्याम्यगोभृमीति (सू०) बलं, कुष्णाति रोमान्वा । पारिषु तोयाद्येषु भवति पारिभ्यम्, भव्यगेयेति (सू०) साधुः । वाप्यं भवं वाप्यम्, व्याप्यामित्येके । पाकलं व्याधित्वात्, पाकं लाति वा । उत्पलं दंढहृत्वादुत्पलपुष्पत्वाद्वा । आह च- कुष्ठो रोमो गदो व्याधिरुत्पलं पाकलं रुजा । वाप्यं वानीरजं रामं कांवारं पारिभ्यकम् ॥ १२६ ॥ शंखिनी शौकस्यात् । चोरपुष्पी घनहरीत्वात्, राक्षो विकाशाद्वा । केशाः सन्त्यस्थाः केशिनी । चन्द्रनन्दनोत्त- चण्डा घनहरी चोरी चोरपुष्पा च तस्करी । तथा निशाचरी च स्यात्केशिनी ग्रन्थिक्रयपि ॥ वितुन्नते वितुन्नकः । मृदः संधातोस्या ह्यया । आमला- आमलकीत्वात् । अज्जटाश्चर्यदारिसंधाता, अद् आधयेद्भुतवत् । ताळ- यति मलांस्ताळी (ली) । आमलकीत्वाच्छिवा । ताम्यति तानलकी । आह च- तामलक्युत्तमा ताळी तमलं (कं) तु पुलाकिनी । वितुन्नकस्त्यज्जया च सटा चामलकीति च ॥ १२७ ॥ प्रपौण्डरीकस्यैव दाहहृत्वात्प्रपौण्डरीकम् । अस्त्यैकदेशानुकाराहोके पुण्डर्यम् । आह च- प्रपौण्डरीकं बहुस्यं पौण्डर्यं पुण्डरीयकम् । स्थलपद्ममिति गौंढाः । तुद्यते तुषः । कुवेरः कुत्सितदेहः । अत एव तुषिस्थाने कुम्भिपेदुः । कच्छघ(च्य)ते कच्छः । आह च- तुषिस्तुन्नक आपीतस्तुगिकः कच्छकस्तया । कुवेरकः कान्तलको नन्वित्रुतोय नन्दकः ॥ अभ्रत्याकाशेयम् ॥ १२८ ॥ रक्षयतेस्या राक्षसी । शिराति वसत्यास्मिन्नन्धः क्षेमकः । दुष्पुत्रधोरकत्वात् । गणं हासयति गणहासकः कोहनत्वात् । आह च- चोरकः सङ्कितवशः दुष्पुत्रः क्षेमको रिपुः । गणहासः कोहनकः कितवः फलको(चोरकः) ॥ गन्धद्रव्यं चेतत् । व्यालायुधं नखत्वात् । चक्रमेलं धूपद्रव्यैः करोति चक्रकारकम् ॥ १२९ ॥ नखीयं, विद्रुमलतामा । कपोताङ्घ्रिर्नलीकत्वात् । नटति वायुना नर्तयित्वाप्रती । धमनी शीपिर्यात् । अज्जनामकेशा (अज्जनकेशी) । आह च- नलीका विद्रुमलता कपोतचरणा नली । शुषिरा धमनी शून्या निर्मम्या नर्तकी नटी ॥ हन्ति हनुस्तीक्ष्णाम्रत्वात् । हृदे विलसति हृद्विलासिनी वेश्येव वा ॥ १३० ॥ शुक्त्याङ्घ्रितः । अत एव शंसः । कुराति विलिखति सूरः, प्राणिशफत्वाद्वा । कोमदलं बदरीपत्राख्ययेन्दुनोकोम् । न खनति नखम् । आह च- मसः करहरः शिल्पी करजोय सूरः शफः । शुक्तिः शंसः सर्प[च]वः कोशी[ली] हनु-



स्याल्लाहलिक्यमिशिरा काकाङ्गी काकनासिका ।  
 गोधापपी तु सुवहा मुसली तालमूलिका ॥ ११९ ॥  
 अजशृङ्गी विषाणी स्याद् गोजिह्वावार्तिके समे ।  
 ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्यथ द्विजा ॥ १२० ॥  
 हरेण रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।  
 एला-ल-वालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ १२१ ॥  
 बालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्कुन्दकम् ।  
 बालं ह्रीवेरवाहिष्ठोवीच्यं केशाम्बुनाम च ॥ १२२ ॥  
 कालानुसार्यवृद्धास्मपुष्पशीतशिवानि तु ।  
 शैलेयं तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ॥ १२३ ॥  
 मन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरमी रसा ।  
 महेरणा कुन्दुकी सल्लकी द्राविनीति च ॥ १२४ ॥

आह च- काकनासा धाङ्गनासा ककतुण्डकना च सा । गोघासा इव । पदान्यस्या गोधापदी, कुम्भ-  
 पदादिः ( सू- ) । हंसपदी च । मुष्पा ( स्व )ति खण्डयति दोषान्मुसली । द्वयर्थे तालपत्री मुसली  
 मिश्रेवा च ॥ ११९ ॥ अजस्येव शृङ्गाण्यस्या अजशृङ्गी, कर्कटशृङ्गीत्यर्थः । विषाणी शृङ्गीत्वात् ।  
 आह च- शृङ्गी कर्कटशृङ्गी च कुरङ्गी कर्कटाङ्गा । कुलीरशृङ्गी वक्ष च महाप्येषा नताङ्गयपि ॥  
 गोजिह्वाभफत्रा । दारयति रोगान् दावी, ओषधिविशेषः । नागवल्ली फणिलता पातालानीतत्वात् ।  
 द्विर्जायते द्विजा ॥ १२० ॥ हरति हरेणुः । रेणुका भस्मयोगात् । कुन्त्या दुर्वाससा दत्ता कौन्ती । भस्म-  
 ना धूत्या गन्धयति भस्मगन्धिनी । आह च- रेणुका राजपुत्री च नन्दिनी कपिला द्विजा । भस्मगर्भा  
 पाण्डुफल्य भस्मगन्धा हरेणुका ॥ गन्धद्रव्यं चेतत् । एला-ल-बदलति- एला-ल-वालुकम् । हरि पिङ्गा बालुकं  
 हरिवालुकम् । त्र्यर्थे सुरभिः सल्लकी मुरा- एलावालुका च ॥ १२१ ॥ पात्यते पालङ्क्या । मुखात्कुन्द  
 इव मुकुन्दः, मुखति रसं वा । कुन्यति कुन्दुः । आह च- कुन्दुः स्यात्कुन्दुकः कुन्द्यासी विहृ-  
 ङ्क्ष्यपि । मुकुन्दस्तीक्ष्णगन्धय पालिन्दो ( लङ्क्यो ) भीषणो बली ॥ बलते बालम् । जिहोति च ह्रीवेरम् । बहते  
 वर्धते बहिष्ठम् । उदीचीभवमुदीच्यम् । केशपर्यायं बालत्वात् । अम्बुनाम तृङ्गत्वात् । आह च-  
 बालकं वारि तोयं च ह्रीवेरं जलमम्बु च । केशं वज्रमुदीच्यं च पिङ्गमावपनं कचम् ॥ १२२ ॥ काल-  
 मनुरसति शीतोष्णाभ्यां कालानुसार्यम् । बृद्धं कालस्यापि । अश्मनः पुष्पं, अश्मानं पुष्पाति वा, तद्वर्ध-  
 जत्वात् । शीतत्वेन शिवं शीतसित्रम् । द्वयर्थे शीतशिवं सैन्धवं मिश्रेया चेल्लहः । तानि तु शैलेयं, शि-  
 लायां मयं शैलेयम् । आह च- शैलेयं पलितं बृद्धं जीर्णं कालानुसार्यकम् । स्वविरे च शिलाददुं शिला-  
 पुष्पं शिलाभवम् ॥ दैत्या मुराहदयैत्यनामत्वात् । ( मुग ) मुर संवेष्टे । आह च- मुरा गन्धवती दैत्या  
 गन्धाद्या गन्धमालिनी । सुरभिः श्रुतगन्धा च कुटी गन्धकुटी स्मृता ॥ १२३ ॥ गजैर्भक्ष्यते गजभक्ष्या ।  
 सुष्ठु वहति सवति सुवहा, सुखवति वैद्याः । महदीरणमस्या महेरणा । सत्कृत्य लक्ष्यते स्थायते गजेः  
 सल्लकी ( सल्लकी ) । हादोस्तस्या हादिनी । आह च- सल्लकी सल्लकी हादा सुरभिः सुखवा रसा । अभयप्री  
 कुन्दुकी गजभक्ष्या महेरणा ॥ १२४ ॥ अमेगर्वालेव रसा, मयपावनीत्वाद्वा । सुमिषा सुलभा । धातु-  
 रक्ता धातुकी, धातुप्रीत्वात् । आह च- धातुकी ताम्रपुष्पी च कुजरा मयपावनी । पर्वतोया सुमिषी  
 च वाह्येपुष्पा च शब्दिता ॥ पृथ्वीका बहुफला पत्रैलात्वाद्वा । एवं बहुला । चन्द्रस्य कर्पूरस्य वाहा  
 पुत्री च मत्कारात् । एलयति मुखदौर्गन्ध्यमित्येला । निष्कान्ता कुटेः कोशाभिः कुटिः । आह च- पत्रैर्ला  
 नृहदेला च त्रिदिना त्रिदिनोद्भवा । स्थूलका त्वक्मुगन्धा च पृथ्वीका चन्द्रकन्धका च त्रिपटे ( टी ) तं तदु- । त्र्यर्थे

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे ।  
 कदली वारणजुसा रम्भा मांषांशुमत्फला ॥ ११३ ॥  
 काष्ठीला मुद्रपर्णी तु काकमुद्रा सहेत्यपि ।  
 वार्ताकी हिङ्गुली सिंही मण्टाकी दुष्परिणी ॥ ११४ ॥  
 नाकुली सुरसा नाग(राक्षा)सुगन्धा गन्धनाकुली ।  
 नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ॥ ११५ ॥  
 विदारिगन्धांशुमती शा( सा )रुपर्णी स्थिरा ध्रुवा ।  
 तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कर्पासी बदरेति च ॥ ११६ ॥  
 मारद्वाजी तु सा घन्या शृङ्गी तु वृ-क्ष-भो वृषः ।  
 गाङ्गेरुकी नागवला क्षपा ह्रस्वा गवेषुका ॥ ११७ ॥  
 धामार्गवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः ।  
 ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥ ११८ ॥

तेस्या रम्भा । मुचति रसं मोचा । अंशुमानिव फलान्यस्या अंशुमत्फला, मानुफलाख्या ॥ ११३ ॥ ईषदष्टौल-  
 मस्याः काष्ठीला, काष्णी[ छी ]रस इयेके । आह च ( धन्वन्तरिः )—कदली मुकुवारा च रम्भा मानु-  
 फला मता । कष्णी[ छी ]रसश्च निःसारा मोचा हस्तिवि(वु)या तथा ॥ सहा सुदा, सहाख्यात्र । अयं हि  
 सहा मुद्रपर्णा बला नाकुली च, यतो महासहा मापयर्ष्यन्त्यते । वार्ताकं देश्याम् । मण्टाकी कण्टकार्या  
 अन्ययमित्ययं मन्यते, वैद्यास्तस्मिन्ना प्राहुः, यदाह— हिङ्गुली नृहीतीति च ॥ ११४ ॥ नकुलानां  
 प्रिया नाकुली । नागसुगन्धा सर्पसुगन्धात्वात् । छत्राकी छत्राभपर्णा । सुपु वहलामोदं सुवहा । अधेन  
 रास्नाधेन सर्पाक्षीति गीढाः, वैद्यास्तु नाकुलीगन्धनाकुल्यौ विदारीक्षारविदारीवद् मित्रे मन्यन्ते ।  
 आह च— नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा भोगिगन्धिका । सैव सर्पसुगन्धेति— । तथा— अन्या महासु-  
 गन्धा च सुवहा गन्धनाकुली । सर्पाक्षी नकुलेष्टा च छत्राकी विषमदंती ॥ ११५ ॥ विदायां गन्धोस्या  
 विदारिगन्धा । अंशुवः सन्यस्या अंशुमती दीर्घमूलत्वात् । शालस्येव पर्णान्यस्याः शालपर्णी । आह  
 च— शालपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णैतिगुहा ध्रुवा । विदारिगन्धांशुमती दीर्घमूला च पीतनी ॥ तुण्डि-  
 कान् गन्धादीनीरवति कण्टकिवातुण्डिकेरी । समुद्रः कण्टकैः कृतरक्षोन्ते स्याः समुद्रान्ता, वृषप्रसरत्वाद्वा ।  
 कल्पते कर्पासी । बदराक्षीव फलानि सन्यस्या बदरा, यन्माला— कर्पासी बदरः प्रोक्तो बादरः विच-  
 वथ ह । अयं तुण्डिकेरी विषा कर्पासी च, अयं समुद्रान्ता कर्पासी यवासकः स्त्रुका च ॥ ११६ ॥ वने  
 भवा बन्धा । सा कर्पासी । ( मारद्वाजी ) भरद्वाजस्येत्यागमः । भद्रापि । शृङ्गाणि सन्यस्य शृङ्गी ।  
 अत एव गृहाहयः । आह च— ऋषभो धूर्वहो वी[ धी ]रो मेतुको वृषभो वृषः । वितानी ककुद्दिन्द्राक्षो  
 बन्धुरो गोपतिः स्मृतः ॥ गाङ्गमोरयति पवित्रत्वात् गाङ्गेरुकी । नागानां बलकृष्णमत्स्य । क्षपति  
 हिनास्ति गन्धेन क्षपा । गवि जले—इन्द्रे ( एधते ) गवेषुका । आह च— गाङ्गेरुकी नागवला खरगन्ध-  
 निका क्षपा । विश्वेश्वर तयारिश्वा ख[ च ]ण्डा हरसा गवेषुका ॥ ११७ ॥ धामार्जति धामार्गवः । घो-  
 षति शब्दायतं घोषकः । स धामार्गवः पीतपुष्पो महाजाली, जालं वितानः । आह च— धामार्गवः  
 कोशफलो राजकोशानकी फला । कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजाली तथाप्यते ॥ ज्योत्स्नी रात्रौ भासनात् ।  
 पटति विस्तीर्यते पटोली । जाली सविताना । ऐरावतो नागराजो नादेवो भूमिजम्बुकवापि भ्रान्त्या-  
 प्राप्ता ॥ ११८ ॥ लाङ्गलवद् भेदनालाङ्गली । अग्निशिखा स्प्रष्टुमशक्त्वात्, अग्निमुखीत्येके । आह  
 च— कलिहारी तु फलिनो विशल्या गर्भगतनी । लाङ्गल्यग्निमुखी सौरा क्षिप्तान्तेन्द्रपुष्प्यपि । द्वयं—  
 अग्निमुखी भलातकी लाङ्गली च । काकयेवाङ्गं नासारुपं फलमस्याः काकाङ्गी, काकजस्येत्येके ।

मृद्रीका गोस्तनी प्राक्षा स्वाद्री मयुरसेति च ।  
 सर्वांनुमृतिः सरला त्रिपुटा त्रिपुटा त्रिपुट ॥ १०८ ॥  
 त्रिमण्डी रोचनी श्यामापाणिनी तु सुषेणिका ।  
 काला मसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेपिका ॥ १०९ ॥  
 मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका ।  
 विदारी क्षीरशुक्लेधुगन्धा कोट्री तु या सिता ॥ ११० ॥  
 अन्वा क्षीरविदारी श्याममहाभ्येतर्प्यं (क्षीं) गान्तिका ।  
 लाङ्गली शारवी तोयपिप्पली शकुलादनी ॥ १११ ॥  
 खराभा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ।  
 गोपी श्यामा शारिवा श्यामन्वनोत्पलशारिवा ॥ ११२ ॥

गोस्तनीति विशेषोपि सामान्यवृत्तिः । श्रुति सरसत्वाद् प्राक्षा । आह च- प्राक्षा चादफला कृष्णा पियाला  
 कालमेपिका । स्वाद्री मुक्ता मयुरसा मृद्रीका गोस्तनी स्मृता ॥ हारद्वरा च । सर्वा अनुमृतयोस्याः सर्वा-  
 नुमृतिः, नानारसेत्यर्थः । सरति सरला विरोचनीत्वात्, सरदेत्येके । त्रयः पुटाश्चादक्ष अस्यात्रिपुटा,  
 त्रिपुटी च, अत्येत्येके । त्रिभिर्विद्यते त्रिभिर्वर्त्यते छावते वा त्रिवृता त्रिवृत्, त्रिपुटास्याद्वा ॥ १०८ ॥  
 त्रिभिर्मण्डपत उद्घाव्यते त्रिमण्डी । रोचनी रुचिकर्त्री, रोचनीत्येके । शुक्लं, कृष्णमाह । पालयति पा-  
 णिन्दी । सुषेणोति सुषेणी । आह च- श्यामा त्रिङ्मालविका मसूरविदल च सा । कालार्धचन्द्रा पा-  
 णिन्दी सुषेणी कालमेप्यपि ॥ शुक्ला चापि त्रिमण्डोत्पात्काक्षाक्षी सरला त्रिवृत् । सर्वांनुमृतित्रिपुटा श्रवसा  
 कूटरवृष्टिणी ॥ आम्मसी रोचनी चैव चण्डविशोमणी तथा ॥ १०९ ॥ यष्टीरूपं मधुकं यष्टीमधुकम् ।  
 एकदेशान्मधुकम् । द्वीबत्वं तदति प्रतिहन्ति वृष्यत्वाद्धीतकं, क्लीतसंज्ञं वा । आह च- मधुयष्टी च यष्टी  
 च यष्टीमधु मधुयष्ट्या । यष्टीमधुकं मधुकं यष्ट्याहं मधुयष्टिका ॥ तल्लक्षणं क्लीतकं च- इति । विदारी मस्यते  
 विदारी । क्षीरे च शुक्ला । इधुगन्धा माधुर्यात्, क्षीरविदारीयं कृष्णो भूकृष्माण्डोर्यं वा [प्रासु देशे] ॥ शुक्लो मू-  
 ष्याश्चः सुगाली, रसं रुजतीति, कोट्री तु लक्षणया । आह च- विदारिका मता शुक्ला स्वादुकन्दा धृगालिका ।  
 ऋष्यगन्धा विदारी च ऋष्यवल्ली विदारिका ॥ त्र्यर्थे- इधुगन्धा विदारी कोटिलक्षको गोक्षुरच ॥ ११० ॥ ऋ-  
 प्यान्वान्वयत्यर्थेति ऋष्यगन्धा । आह च- अन्या क्षीरविदारी स्यादधुगन्धेयुववत्पि । क्षीरवल्ली  
 क्षीरकन्दा क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥ त्र्यर्थे महाभेदा नीलस्यन्दा यवशर्करा क्षीरविदारी च, तथा ऋष्यगन्धा  
 मूलकं रणालकं क्षीरविदारी च, तथा क्षीरशुक्ला क्षीरविदारी क्षीरकाकोली नीलस्यन्दा च । लाङ्गली  
 हलाकारा । शकुलादनी मत्स्यमक्षणात् । आह च- जलपिप्पल्याभिहिता शारदी तोयपिप्पली । मत्स्या-  
 दनी मत्स्यगन्धा लाङ्गली शकुलादनी ॥ १११ ॥ सरमभ्रुते खराभा । कारोरियं कारवी कर्मण्येत्यर्थः ।  
 दीप्योमिदीपनः । मीनात्यभिमान्यं मयूरः । लोच्यते लुच्यते वा मस्तकोत्पल वर्वरकारत्वालोचमस्तकः,  
 लोचमर्कट इत्येके । आह च- अजमोदा वस्तमोदा दीप्यको लोचमस्तकः । खराभा कारवी वल्ली मोचा  
 हस्तिमयूरकः ॥ त्र्यर्थे मयूरकोषामागौत्रमोदा तुत्यकश्च । गोपायति गोपी । (श्यामा) श्यामवर्णा । यच्छु-  
 ष्वतः- शारिवायां निधि श्यामा श्यामो च हरितासितो । क्षीर्यन्तेनया दोषाः शारिवा । चन्दनाङ्गा-  
 दनत्वात्, अनन्तेत्येके । उत्पलभपत्रोत्पलशारिवा । आहुश्च- शारिवा फणित्रिह्व च गोप्यास्कोता च  
 चन्दना ॥ ११२ ॥ योगनीचं योगे साधु वा योग्यम् । ऋणोति ऋद्धिः । रुदेरोवपि विद्येद्यस्यापि योग्या-  
 दीनि नामानि । आह च- ऋदेर्द्विद्विः सुखं सिद्धी रयाङ्गं मह्यलं वसु । ऋदिपुष्टां सुष्टां पुर्णं  
 योग्यं सक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ॥ केन वायुना दस्यते कदली । वारणानां पुमो धातुः, वारणवि(व)पेत्येके । रभ-



अहेरुरय पीतद्रुकाली ( ले ) यकहरिद्रवः ।  
 दार्वा पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ॥ १०२ ॥  
 वचोभ्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्षिका ।  
 शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंहौ तु वाशिका ॥ १०३ ॥  
 वृषाटरूपः सिंहास्यो वासको वाजिवन्तकः ।  
 आस्फोता गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता ॥ १०४ ॥  
 इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोफिलाक्षेक्षुरक्षुराः ।  
 शालेयः स्याच्छीतशिवच्छत्वा मधुरिका मिसिः ॥ १०५ ॥  
 मिथ्रेयाप्यय सीगुण्डो वज्रः स्नुक् स्त्री स्नुही गुडा ।  
 समन्तदुग्धायो विल्लममोघा चित्रतण्डुला ॥ १०६ ॥  
 तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुनपुंसकम् ।  
 व-ब-ला वाट्यालको घण्टारवा तु शणपुष्पिका ॥ १०७ ॥

हरिः पीतो द्रुः स्कन्धोऽस्य हरिद्रुः । दार्वा दारुहरिद्रा च पिण्डहरिद्रातोऽन्या । अत्यर्थं पचति पचंपचा ।  
 पिपलं रोगेभ्यः पर्जनी । आह च- हरिद्रा पीतिका पिण्डा रजनी रजनी निशा । गौरी वर्णवती पीता  
 हरिता [ द्रा ] वरवर्णिनी ॥ अन्या दारुहरिद्रापि हरिद्रुः पीतचन्दनम् । निर्दिष्टा वै कटकिनी स च काले-  
 यकः स्मृतः ॥ कालीयको दारुनिशा दार्वापीतद्रुपीतकाः । कटकटरी पर्जन्या पीतदारु पचंपचा  
 ॥ १०२ ॥ वक्त्यनया वचा, वाय्वाटवकृन् । षड् ग्रन्थयः पर्वाण्यस्याः षड्ग्रन्था । गोरिव लोमान्यस्या  
 लोमशत्वाद् गोलोमी । शुक्ला कृष्णा च द्रुधासौ, यदाह- वचोभ्रगन्धा गोलोमी जटिलोमा च लोमशा ।  
 अन्या श्वेतवचा मेघ्या षड्ग्रन्था हैमवत्यपि । अयं शतपर्वा दूर्वा वशा वचा च । वैद्यानां मातेव रोगजित्वात् ।  
 दिनस्ति रोगान् सिद्धी । उभ्यते काम्यते वाशिका ॥ १०३ ॥ वर्षति मधु इषः । अटान् गच्छतो स्व-  
 लटरूपः । सिंहास्याकारपुष्पत्वात्सिंहास्यः । वाजिदन्ता इव केसराण्यस्य वाजिदन्तकः । आह च-  
 वासकः सिंहपर्णी च वृषो वासोय सिद्धिका । अटरूपः सिंहमुखो भिषद्माताटरूपकः ॥ आस्फुटत्वा-  
 स्फोता । गिरि ( रे ) रश्मवत्कर्णिकास्य ( स्वा ) गिरिकर्णी । विष्णुनाक्रान्ता । अत एव रक्षाहेतुत्वात् परा-  
 जिता । आह च- अश्वधुरा श्वेतपुष्पा श्वेता च गिरिकर्णिका । कटभी श्वेतसारा च श्वेतास्या चापरा-  
 जिता ॥ द्वयं आस्फोता सारिवा गिरिकर्णिका च ॥ १०४ ॥ इक्षोरिव गन्धोऽस्याः, स्वाद्वीत्यर्थः । इक्षु-  
 सदृक्काण्डत्वात् ( काण्डेक्षुः ) । कोकिलस्येवाक्षीण्यस्य कोकिलाक्षः । इक्षुं रातोभुरः । स एव लोकोक्त्या  
 धुरः, पारुष्याद्वा । आह च- तथान्य इक्षुगन्धः स्यादिधुरः कोकिलाक्षकः । कामः [ सः ] काण्डेक्षु-  
 र्दिष्टः कांकेक्षुर्वायसेक्षुः ॥ शालायां मवः शालेयः, गुप्तत्वात्, अत एव शालीनः । शीतः शिवश्च ।  
 ( छत्रा ) छत्रातपश्चां । मस्यति परिणमति मिसिः । आह च- मिथ्रेया तालफ्त्री च तालपर्णी मिथि-  
 स्तया । शालेयः स च शालीनो नाम्ना शीतशिवो मतः ॥ १०५ ॥ सीगुण्डः सिंहगुण्डापञ्जराः, वन्मे-  
 खलाकुलिशतक सीगुण्डो । वज्रो भेदकत्वात् । स्त्रो ( स्नुष ) ति क्षीरं स्नुक् स्नुही च, स्नुहेति वैद्याः ।  
 गुडा दृढत्वात्, गुहेत्यपपाठः, यच्छाश्वतः- गुडो गोलेक्षुविकृती स्नुही गुष्टिकयोगुडा । सुधासि ।  
 आह च- स्नुक् सुधा च महाक्षो गुडा निक्षिपपत्रकः । समन्तदुग्धा गण्डीरा सीगुण्डो वज्रकण्टकः ॥  
 वज्रद्रुः स्नुक् स्नुहीत्येकं पेडुः । वेलाति वेल्म ॥ १०६ ॥ विलति भिनति विडङ्गं विलङ्गति वा ।  
 आह च- विडङ्गा जन्तुहन्ती च कृमिघ्नी चित्रतण्डुला । तण्डुलः कृमिहामोघा केरा [ केस ] ला मृगगा-  
 मिनी ॥ वल्लन्यनया बला, बल्लद्वद्वा । वटति वाट्यालकः । चन्द्रनन्दनी बला भद्रोदनी इत्या तथा वाट्या-  
 लक इत्याह । घण्टेवारौति घण्टारवा । शणस्येव पुष्पाण्यस्याः शणपुष्पी, पाककर्णपर्णोति ( सू० ) डीप् ।  
 आह च- शणपुष्पी नृहत्पुष्पी स चोक्तः शणघण्टकः ॥ १०७ ॥ मृद्वीका सौकुमार्यात् । गोस्तनाम

कृष्णोपकुल्या धैदेही मागधी चपला कणा ।  
 ऊषणा पिप्पली शौण्डी कोलाथ करिपिप्पली ॥ ९७ ॥  
 कपिवल्ली कोलवली धेयसी वसिरः पुमाश्च ।  
 चव्यं तु चविका काकचिष्ठीगुत्रे तु कृष्णला ॥ ९८ ॥  
 पलंकषा त्विधुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ।  
 गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ॥ ९९ ॥  
 विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ।  
 शुङ्गी महीषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ॥ १०० ॥  
 शतमूली बहुसुताभीरुनिर्वरी वरा ( री ) ।  
 ऋष्यप्रोक्तामीरुपत्नीनारायण्यः शतावरी ॥ १०१ ॥

उपकोलति संस्त्याम्युपकुल्या । विदेहदेशे भवा वैदेही । मगधभवत्वान्मागधी । चपति चपला । कणाः  
 सन्त्यस्या कणा । ऊषत्यूषणा, ऊष रुजयाम् । उषणापि, उष दाहे, तीक्ष्णतण्डुलत्वात् । पिपतिं  
 पिप्पली । शौण्डी क्षफत्वात् । कोला, कुल संस्त्याने । आह च- पिप्पली मागधी कृष्णा चपला तीक्ष्ण-  
 तण्डुला । उपकुल्या कणा श्यामा कोला शौण्डी तयोषणा ॥ इन्द्रध- पिप्पली तण्डुलफला वैदेही कृष्ण-  
 तण्डुला । करिपिप्पली नृदृत्राद् गजयोग्या वा ॥ ९७ ॥ कपिवल्ली मर्कटरोमत्वात् । एवं कोलवल्ली । वस्यते  
 छाद्यते रोमभिर्वसिरः । चव्यं, फलं चैतत्, चव्यते चव्यं च्यवते वा । आह च- चविका कोलवल्ली तु चव्यं  
 चवनमेव च ॥ तस्याः फलं विनिर्दिष्टं धेयसी हस्तिपिप्पली ॥ चन्द्रमनन्दनः सामान्येनाह चव्या कोला  
 च चविका धेयसी गजपिप्पली । चवना कोलवल्ली तु चव्यं कुक्षरपिप्पली । अयं मर्कटवल्ली- अपामार्गो  
 हस्तिपिप्पली स्वयंगुप्ता चेति, तथा वसिरोपामार्गः समुद्रलवणं हस्तिपिप्पली चेति । काकवर्णी चिष्ठी  
 प्रान्तोत्स्याः काकचिष्ठी । गुञ्जति शिम्ब्या गुञ्जा । कृष्णं प्रान्तं लाति कृष्णला । रक्तिकापि ॥ ९८ ॥ पलं  
 मांसं कषति पलंकषा । इक्षोरिव गन्धोत्स्याः स्वादुकण्टकत्वादिसुगन्धा । शुनो दष्टेव हिंसात्वाच्चदंष्ट्रा ।  
 गवां कण्टको वेधको गोकण्टको गोक्षुरत्वात् । गौर्महीति तु युक्तं, अत एव वनशृङ्गाटो भूक्षुराचाम् ।  
 आह च- गोक्षुरः स्याद् गोक्षुरको भक्षकः स्वादुकण्टकः । गोकण्टको भक्षकः [ ट ] कः बह्वङ्गः क्षुरकः  
 क्षुरः ॥ गोकण्टो गोक्षुरः कण्टी षडङ्गक्षिकटक्षिकः । त्रिकण्टकः कण्टफलः श्वदंष्ट्रमालदंष्ट्रकः ॥ अयं  
 पलंकषो लाक्षा गोक्षुरो गुग्गुलुश्च, तथा- इधुगन्धा विदारी कोकिलो गोक्षुरश्च ॥ ९९ ॥ विशत्यन्तर्विषा ।  
 वेवेष्टि विषा । प्रतीपा विषस्य प्रतिविषा, अगदत्वात् । शृङ्गयुक्त्वाच्छृङ्गी । आह च- अतिविषा  
 शुक्लकन्दा ज्ञेया विश्वा च भृङ्गुरा । श्यामकन्दा प्रातिविषा शुङ्गी चोपविषा विषा [ तथा ] ॥ महीषधं  
 तु विषं नातिविषा । अयं तु हि महीषधं ( विषं ) शुष्ठी लघुनं चेति विषा ( व ) शब्दं युज्यमानोऽयम् ।  
 क्षीरमवति क्षीरावी । दुग्धमस्त्यस्या दुग्धिका क्षीरकाकोलीयम् । आह च- द्वितीया क्षीरकाकोली क्षीर-  
 शुक्ला पयस्विनी । पयस्या [ वयस्या ] क्षीरमधुरा वीरा क्षीराविकारिका । अत्र क्षीरावी विकारिकेति, च  
 अन्यकृन्मन्यते, क्षीरेति विकारिकेति तु धैर्याः ॥ १०० ॥ शतं बहुनि मूलान्यस्याः शतमूली । बहुषां  
 सुवति बहुसुता । अभीरुः स्थिरपत्त्रा रसायनत्वाद्वा । इन्दीवर्युत्पलपुष्पा । वृणोति वरा । ऋष्यैः प्रोक्ता-  
 श्रिता द्वीपिशुत्वात् । नारायणी विष्णुजाता । शतेन वृणोति शतावरी । न हि नोलेहः, अभीरोरपत्र-  
 शोयं वा । हरमेखलो निषण्ठी दृष्टः, यदाह- सहस्रमूली सहस्रावरी- अहेररिति । आह च- शतवीर्या  
 शतपदी पीवरीन्दीवरी वरी । सहस्रवीर्याऽभीरुश्च तुङ्गिनी बहुपतिका ॥ ऋष्यप्रोक्ता द्वीपिशुर्वा [ द्वी ]-  
 पिका वरकण्टकः । मता पुरुषदन्ता च शतभर्युर्वरकण्टकः ॥ १०१ ॥ ऋष्यमति रोषान्कास्त्रिकः ।



यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।  
 रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ॥ ९२ ॥  
 पृथ्विपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्णोऽग्निपर्णिका ।  
 क्रोमुविष्ठा सिंहपुच्छी कलशिर्षावनिर्गुहा ॥ ९३ ॥  
 निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ।  
 प्रचोदनी कुली भुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ॥ ९४ ॥  
 नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ।  
 रजनी श्रीफला तुत्या द्रोणी दोला च नीलिनी ॥ ९५ ॥  
 अवलगुजः सोमराजा सुवलिः सोमवल्लिका ।  
 कालमेषी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि ॥ ९६ ॥

यासः । शैति यवासः । दुःस्पर्शः कण्टकिवात् । धन्वयासो मरुद्भवत्वात् । कुं नाशयति कण्टकिवात्कु-  
 नाशः । रोदयति खेदयति रोदनी, चोदनीति सभ्याः । कच्छूं रोगं राति कच्छुरा । अनन्ता समुद्रान्ता  
 च दूरव्यामेः । कृच्छ्रेण लभ्यते दश्यते दुरालभा । आह च- यासो यवासकोनन्ता बालपत्रो विकण्टकः ।  
 चोरमूलः समुद्रातो दीर्घमूलो मरुद्भवः ॥ धन्वयासो दुरालम्भा ताम्रमूली च कच्छुरा । दुरालभा च  
 दुःस्पर्शा यासो धन्वयवासकः ॥ ९२ ॥ पृथ्विध्वजग्रीव पर्णान्यस्याः पृथ्विपर्णी, सूक्ष्मपर्णी वा, यदाह  
 पृथ्विरुत्तनो । अद्भ्येर्बुध्नादारभ्य पर्णान्यस्या अद्भ्रिपर्णी । क्रोमुनिर्विष्ठा दत्तेव, क्रोमु-  
 च्छीत्वात् । सिंहस्येव पुच्छमस्याः सिंहपुच्छी, लोकोक्त्या सिंहपुच्छकः । कलशिर्षग्री पृथुलत्वात् ।  
 धावति प्रसरति धावनिः । गृहति रसं गुदा । आह च- पृथ्विपर्णी पृथक्पर्णी कलशिर्षावनी गुहा ।  
 शृगालविष्ठापृ ( इग्नि ) तिलापर्णी क्रोमुपुच्छिका ॥ ९३ ॥ निदिग्धेति निदिग्धिका । स्पृशति कण्टके-  
 रपतपति स्पृशी । व्याघ्री हिंस्रत्वात् । कण्टकबाहुल्यद बृहती । कण्टकानियति कण्टकारी । प्रचोदयति  
 कण्टकैः प्रेरयति प्रचोदनी । कोलति कुली । भुग्रात् भुद्रा हिंसा, भुद्रवार्ताक्येकदेशो वा । राष्ट्रमरुद्वस्या  
 राष्ट्रिका । बृहती तु निदिग्धिकेति भागुरिवः क्यः द प्रत्यकृद् भ्रान्तः, यत्तेनयोर्नहान्मदः । आह च-  
 कण्टकारी तु दुःस्पर्शा भुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका । कण्टालिका कण्टकारी धावनी दुःप्रवर्धयति ॥  
 यथा- बृहती सिंहानाकान्ता वार्ताकी राष्ट्रिघा कुली । विशदा स्थूभभ्याको महती तु महोदिका ॥  
 भागुरिर्हि द्वयोर्बृहतीत्वं मन्यते, यच्छाश्वतः- भुद्रया भुद्रवार्ताक्या बृहती छन्दसि कञ्चित् । द्वयै  
 प्रचोदनी कण्टकारिका दुरालभा च ॥ ९४ ॥ नीली काला च वर्णे, नीलात्प्राप्योपप्योर्द्वि ( वा ) ।  
 क्लीतकं विनिमयोस्त्यस्याः क्लीतकिका । ग्रामे भग्रा ग्रामीणा । रजयति नीलीकरोति रजनी । श्रीफला  
 रम्भफला । तुत्यते तुत्या । द्रव्यस्याः स्पर्शाज्जतो द्रोणी, तृणोत्थेके । दोस्यते दोला, मेत्स्येके । नीलो-  
 स्त्यस्या नीलिनी । आह च- नीलिनी नीलिका काला प्राप्या तृणी विशेषनी । तुत्या श्रीफलिका मेला  
 सारवाही च रजनी ॥ ज्येष्ठे मधुपर्णी गुडची काश्नरी नीलिका चेति, द्वयै क्लीतकिका मधुपर्णी नीलिका  
 च ॥ ९५ ॥ अवलगररम्याज्जातोवलगुजः । सोमेनाह्लादनेन राजते सोमराजा । कालेन मिष्यते शब्दपते  
 कालमेषी कृष्णफलत्वात् । वातं संकोचयतीति निर्वचनाद्वाकुची । पूतिः फलमस्याः पूतिकली, पाककणोति  
 ( सू० ) र्द्वि । ज्येष्ठे कालमेषी मज्जिष्ठा बृहती वाकुचिका च ॥ ९६ ॥ कर्षति कृष्णा, द्यामलत्वाद्वा ।

आत्मगुताजहाव्यङ्गा कण्डूरा प्रावृषायणी ।

ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुष्य मर्कटी ॥ ८७ ॥

चित्रोपचित्रा न्यमोधी द्रवन्ती शंखरी वृषा ।

प्रत्यक्षेणी सुतक्षेणी चण्डा मूषिकपर्णायपि ॥ ८८ ॥

अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमुयूरको ।

प्रत्यक्षपर्णी के (की) शपणी किणिही खरमञ्जरी ॥ ८९ ॥

हज्रिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ।

अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्वरवर्धकाः ॥ ९० ॥

मज्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेधि (शि.)का ।

मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्लयपि ॥ ९१ ॥

राति कण्डूरा । प्रावृषि मवा प्रावृषायणी । ऋष्यैर्मुनेः प्रोक्ता दर्शिता ऋष्यप्रोक्ता, ऋषिभिरप्रोक्ता हेय-  
त्वादित्येके । शूकप्रधाना सकण्डका शिम्बिरस्याः शूकशिम्बिः । कपिन् कषति कपिकच्छुः । मर्कटी  
कपिरोमफलत्वात् । आहन्तुः— ऋष्यप्रोक्ता स्वयंगुता कपिकच्छुष्य कण्डूरा । आत्मगुता दुरादम्भा  
जाङ्गलिर्दुरभिप्रदा ॥ अन्यङ्गा वृषभी गुता कण्डूरा शूकशिम्बिका । कपिरोमफला चैव समाना  
प्रावृषायणी ॥ हेया जाङ्गलिका सैव साजहा प्रावृषायणी ॥ ८७ ॥ चित्रानेकवर्णपत्रा । न्यमोद्गते  
रुणद्धि वा बहुमूलत्वाच्चमोधी । द्रवति द्रवन्ती । शं वृणोति शंखरी । वर्पति वृणोति वा वृषा । प्रतीची  
क्षेप्यस्याः प्रत्यक्षेणी । सुतानां मूलानां क्षेप्यस्याः सुतक्षेणी । चण्ड्यते चण्डा । मूषिकपर्णी— आह-  
कर्णाभपत्रा । आह च ( निषण्डः )— द्रवन्ती शंखरी चित्रा न्यमोधी मूषिकाद्वया । प्रत्यक्षेणी वृषा  
चण्डा पुत्रक्षेप्याद्युपनिष्ठा ॥ द्वयर्थे— उपनिष्ठा दन्ती पृथ्विपर्णी चेति, दन्त्यां द्रवन्तीभ्रान्त्या प्रत्यक्षपु-  
चित्तामाह ॥ ८८ ॥ अपकृतः ( आ ) समन्तोन्मार्गोत्यापामार्गः, अधःशय्यः (त्या) ह्यत्यवद् । शिखरे भवः  
शैखरिकः । अधर्म मार्ग वाति धामार्गकः, धाम अर्जति वा । मयूरप्रतिहृतिर्भयूरकः । प्रत्यक्षि  
पर्णान्यस्याः प्रत्यक्षपर्णी । केशपर्णी कपिल्येवत्वात्, अत एव केशवल्लीत्येके । किणिही जिह्वीते याति  
किणिही, स्पर्शात्किणोत्पादनात् । आह च— अपामार्गस्तु शिखरी प्रत्यक्षपुष्पी मयूरकः । अधःशय्याश्च  
किणिही दुर्ग्रहः खरमञ्जरी ॥ स एवोक्तः शैखरिको मर्कटी दुरभिप्रहः । पश्यपुष्पी च शिखरः कू-  
मर्कटपिप्पली ॥ द्वयर्थे धामार्गवोपामार्गः कोशातकी च ॥ ८९ ॥ हन्ति रोगं हञ्जी । ब्राह्मणी पवित्र-  
त्वात् । पद्मा पद्माभपुष्पा । भृञ्जति भार्गी, भृञ्जत्येके, अत एव ब्र.ह्मी । अङ्गाराभा बहवोऽस्या  
अङ्गारवल्ली । बालेयशाको गर्दभभोग्यत्वात् । वृणोति वर्धरो वर्धय, वर्धनाकृतिपत्यो वा । आह च—  
भार्गी गर्दभशाकश्च पद्मा ब्राह्मणयष्टिका । अङ्गारवल्ली हञ्जी च वचो बर्वरवस्तथा ॥ द्वयर्थे ब्राह्मी सृष्टा  
भार्गी च । आहन्तुः— ब्राह्मरीतिस्तथा सृष्टा भार्गी च ब्राह्मणी मता ॥ ९० ॥ मञ्जो मनोज्ञे वर्णे तिष्ठति मज्जिष्ठ,  
अम्बाम्बगोभूमीति (सू०) पत्रम् । विकसति दूरं विकसा । जिङ्गति प्रसरति जिङ्गी । समन्ततोद्गति सम-  
ङ्गा । काले मिथ्य (श्य)ते वाच्यते कालमेधी (शी) । भण्ड्यते भण्डीरी भण्डी च । योजनवल्ली दूरप्रसरा । आह च  
( निषण्डः )— मज्जिष्ठा कालमेधी च समङ्गा विकसादृणा । मञ्जुका रक्षयश्चिध भण्डी योजनवल्लयपि ॥ अ-  
हन्तुः— विकसा कालमेधी तु कालगोष्ठी च जिङ्गिका । रक्षा भण्डीरिका चेति— ॥ ९१ ॥ याति प्रसरति

शिवमल्ली पाशुपत एकाश्रीलो बुको वसुः ।  
 वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ॥ ८२ ॥  
 वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकामृता ।  
 जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ॥ ८३ ॥  
 मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रया ।  
 मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥ ८४ ॥  
 पाठाम्बष्टा विद्धकर्णी स्थापनी श्रयसी रसा ।  
 एकाश्रीला पापचेली प्राचीना वनतिकिका ॥ ८५ ॥  
 कटुः कटंभ( व )राशोकरोहिणी कटुरोहिणी ।  
 मत्स्यपित्ता कृष्णभेदां चक्रादङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥

मलिका शिवमल्ली, उक्तं च— बुक्ते बित्तं सयनुरं मुमना पाटल तथा । पद्ममुत्पलगेऽस्यमष्टौ पुष्पाणि शङ्करे ॥ पशुपतेरयं प्रियो वा पाशुपतः । एकोश्रीलो मन्दास्त्वस्य । वाति बुक्ते, बक इति प्राच्यः । वस्ते छादयति वसुः । आह च— वसुधसुक इत्युक्तः शिवार्कः [ इकः ] शिवशेखरः । महापाशुपतश्चैव मुनतः शिवमलिका ॥ [ जन्मवृक्षमस्ति नाशयति वृक्षादनी । वृक्षे रोहति वृक्षरुहा, वृक्षरोहेति वनेचराः ] । आह च— वन्दाकः स्याद्वृक्षरुहा शेखरी कामवृक्षकः । वृक्षादनी नटरुहा कामिन्यङ्गप्रियरोहिणी ॥ इयर्थे जीवन्ती गुडूची वृक्षरुहा शाकविशेषश्च ॥ ८२ ॥ वत्सानामदनं वत्सादनी । छिन्ना रोहति छिन्नरुहा । गुडति रक्षति गुडूची । तन्त्रयते धारयत्यागुस्तन्त्रिका । जीवयति जीवन्तिका । सोमवल्लभमृतत्वात् । मधूनि पर्णान्यस्या मधुपर्णा । आह च— गुडूच्यमृत्वल्ली च छिन्ना छिन्नरुहामृता । छिन्नोद्भवामृतलता वरा वत्सादनी स्मृता ॥ सेवोक्ता सोमवल्ली च कुण्डली चक्रलक्षणा । जीवन्ती मधुपर्णा च तन्त्रिका देवनिर्मिता ॥ इयर्थे विशल्या लाङ्गमल्ली दन्ती गुडूची च ॥ ८३ ॥ मूर्वाति वध्नाति मूर्वा, अत एवास्या विकारो मोर्वा । मधुरा रसास्या मधुरसा । मुरति संवेष्टयति मोरटा । तेजयत्यग्निं तेजनी । स्रयति रसं स्रवा, सुवेत्येके । मधूलिका माधुर्यात् । मधुनः श्रेणी पङ्क्तिर्मधुश्रेणी । गोकर्णा गोकर्णाभपत्रा, पाककर्णपर्णेति ( सू० ) टीप् । पीलोरेव पर्णान्यस्याः पीलुपर्णा । आह च— मूर्वा मधुरसा देवी पृथुत्वक् पीलुपर्ण्यपि । रव(मधु)श्रेणी रवादुरसा क्षिग्धपर्णा च मोरटा ॥ द्वयर्थे तेजनी तेजोवती मूर्वा च । आह्नुदुः— क्षिग्धच्छदा मधुश्रेणी पृथुत्वप्रसवाहिनी । रवश्रेणी मधुमती मुरङ्गी द्विजमेखला ॥ आलेलनी योगवहा मोरटा च मधुस्रवा । सुयो[ खो ]विता क्षिग्धपर्णा गोकर्णा सा मधूलिका ॥ पीलुपर्णा कर्मकरी प्रमथा मधुमतीति च ॥ ८४ ॥ [ पठ्यते पाठा ] । विद्धो बर्णौ यया विद्धकर्णा, शास्त्रे धूममाणत्वात् । स्थापनी वास्तुकर्मोपयोग्या । रस्यते रसा । पापचेली वृक्षात्वात् । प्राचीनवा प्राचीना । वने तिफरसा वनतिकिका । आह च— पाठाम्बष्टाम्बष्टकी च प्राचीना पापचेलिका । वृकतिष्ठा वनेतिष्ठा पापिका स्थापकी वृक्षी ॥ इयर्थे रसा राज्ञा स्रवती पाठा च ॥ ८५ ॥ कटुत्वावृणाति गलं कटंभरा । शोकहन्त्री रोहत्यगं राशोकरोहिणी । मत्स्यपित्तात्वाद्वा, मत्स्यानां पित्तं जीवति वा । कृष्णे भेदमष्टे दोस्याः कृष्णभेदा । शकुलानामदनं शकुलादनं शकुलादनी वा । आह च( निघण्टुः )— कटुका मत्स्यशकुला मत्स्यपित्ता च रोहिणी । कृष्णभेदा वृण्डरुहा राज्ञा कटुकरोहिणी । अशोकरोहिणी तिष्ठा चक्रादङ्गी शकुलादनी । कटुरोहिण्यरिष्टा च प्रोक्ता तिष्ठकरोहिणी ॥ द्वयर्थे कटंभरा कटुह्यः कटुकी च ॥ ८६ ॥ आत्मना गुप्ता स्पर्शाधिषयत्वात् । न जहाति शक्नानजहा । न विगताङ्गाव्यङ्ग्या कृष्णं

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ।

करवीरे करीरे तु ककरमन्यिलावुमी ॥ ७७ ॥

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धर्तुरः काञ्चनाह्वयः ।

मातुलो मदनश्चास्यफले मातुलपुत्रकः ॥ ७८ ॥

फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलङ्गकः ।

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ॥ ७९ ॥

जम्बीरोप्यय पर्णासे कठिन्नरकुठेरकी ।

सितेर्जकोत्र पाठी तु चित्रको वद्विसंज्ञकः ॥ ८० ॥

अर्काह्वयसुकास्फोट ( त ) गणरूपविकीरणाः ।

मन्दारश्चार्कपर्णेत्र शुक्लेलकप्रतापसौ ॥ ८१ ॥

श्रुत्वाद्वासो विकासस्य प्रतिहासः । शतं बहूनि प्रासाः कुन्ता इव पुष्पाभ्यस्य शतप्रासः, श्वेतवासी । चण्डय ( मत ) इति तीक्ष्णत्वाचण्डातः, रफोसौ । करवीर इव मारकत्वात्कराः कर्तारो बीरा अत्रेति । आह च—शतकुन्तः श्वेतपुष्पः प्रतिहासोभरोहकः । द्वितीयो रफपुष्पस्तु चण्डातो लघुदस्तथा ॥ चण्डा-  
तको गुल्मकश्च प्रचण्डः करवीरकः । करिण ईरयति कण्डकेः करीरो मरुहृक्षः । केति करोति ककरः, तीक्ष्णत्वात् । आह च—करीरे गूढपत्रं च शाकपत्रं मृदुफलम् । प्रस्थं तीक्ष्णसारं च ककरं तीक्ष्ण-  
कण्डकम् ॥ ७७ ॥ उन्मत्त उन्मादकत्वात् । धूर्तेति हिनस्ति-धूर्तः, अत एव कितवः । धरति धातुन्-  
धर्तुरः ( धस्तुरः ), धत्तुरमिति प्राच्याः । काञ्चनाह्वो भुक्तेस्मिन् हेमवर्णपृथ्वीदर्शनात्, यद्विन्दुः—  
संज्ञेया हेमनामभिः । नास्ति तुलास्य मातुलः, अमानोनाः प्रतिषेधे । मदयति मदनः । आह च—  
धर्तुरकः स्मृतो धूर्तो देविता कितवः शठः । उन्मत्तको मदनकस्तूरी चलतलस्तथा ॥ यतो धन्वन्तरि-  
मातुलं धत्तुर् मातुलपुत्रकं तत्फलमाह ॥ ७८ ॥ रोचयति रुचकः । आह च—फलपूरो बीजपूरः  
केमरी बीजपूरकः । बीजकः केसराम्लश्च मातुलङ्गस्तु पूरकः ॥ अनेकार्थे—सौवर्चलं मातुलङ्गं  
शिला चन्दनपेषणी । श्रीवामरणकं चेषु चतुर्षु रुचकं स्मृतम् । समीरयत्यामोदं समीरणः । मरो वाति  
मरुवकः । प्रस्थे सानो पुष्प्यति जाङ्गलत्वात्प्रस्थपुष्पः । खरत्वेन फणाभपत्रत्वादेस्यः फणिज्जकः ॥ ७९ ॥  
जम्ब्यते जम्बीरः, जम्बीरोपि । आह च—जम्बीरः खरपत्रश्च फणी चोक्तः फणिज्जकः । मरुतको  
मरुवको मदनमरिचकस्तथा ॥ पर्णान्यस्यति पर्णासः । कठिनं जरयति कठिन्नरः । कुण्ठाति कुठेरकः  
कृष्णार्जकाह्वयः । ( शुक्रः कुठेरोर्जकः ), अर्जयतीति । आह च—कुठेरकस्तु वैकुण्ठः क्षुद्रपत्रोर्जकः  
सितः । व ( व ) पत्रः कुठेरोन्यः पर्णासो बिल्वगन्धकः । पाठोऽस्यातीति पाठी । वेतति चित् चितो  
अन्तर्जायते चित्रकः, नानारूपो वा । बह्विपर्यायो दीपनत्वात् । आह च—चित्रको दहनो ब्यालः  
पाठीनो दाहणोम्रिकः । ज्योतिष्को बह्वी बह्विः पाठी पाठी कुटः शिखी ॥ ८० ॥ अर्काह्वोर्केपर्यायो ।  
वसत्यस्मिन्स्तेजो वसुकः । आङ्कुट्यास्फोटः । गणा बहवः ( यद्बहूनि ) रूपाभ्यस्य गणरूपः । विकिरति  
पुष्पाणि विकीरणः । मन्दाभिनयति मन्दारकः, मन्दा आरा अस्य वा । अर्काभानि पर्णान्यस्यार्कपर्णः ।  
शुक्राकौलकः, अलति भूषयतीति । प्रतापं स्यति प्रतापसः, प्रकृष्टास्तापसा येन वा । आह च—अर्कः  
सूर्याह्वयः पुष्पी विट्छूरश्च विकीरणः । जम्मलः क्षीरपर्णः स्यादास्कोतो भास्कोरविः ॥ राजाकौ  
वसुको व्यकौ मन्दारो गणरूपकः । एकाङ्गीलः सदापुष्पी स चालकः प्रतापसः ॥ ८१ ॥ शिवप्रिया



शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ।  
 सितासौ श्वेतसुरसा भूतवंश्यय मागधी ॥ ७१ ॥  
 गणिका यूथिकाम्बुषा सा पीता हेमपुष्पिका ।  
 अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ॥ ७२ ॥  
 सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ।  
 माध्यं कुन्वं रक्तकस्तु बन्धुको बन्धुजीवकः ॥ ७३ ॥  
 सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ।  
 तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ॥ ७४ ॥  
 नीला क्षिण्टी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगल्ल सा ।  
 सैरेयकस्तु क्षिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोरुणे ॥ ७५ ॥  
 पीता कुरण्टको क्षिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ।  
 ओद्गुप्सं जपा( वा ) पुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ॥ ७६ ॥

योस्यां शेफालिका । सुष्ठु बहल्यामोदं सुवहा । नीलवर्णा ( नीलिका ) । आह च- शेफालिका तु निर्गुण्डी यमको नीलमञ्जरी । अथै सुवहा रास्ना शेफालिका गन्धनाकुली च । भूतानि विशत्याह्लादयति भूतवेधी । मगधदेशे भवा मागधी ॥ ७१ ॥ गणिका चित्ताकर्षणात् । यूथो जालकमस्या यूथिका । अम्बे शब्दे तिष्ठत्यम्बुषा । आह च- यूथिका बालपुष्पा च पुष्पगन्धा गुणोज्ज्वला । गणिकाचारमोटा च शिखण्डी श्वेतयूथिका ॥ आह च- सुवर्णपुष्पा हरिणी पीतका पीतयूथिका । अथै हेमपुष्पा बिम्बी दुःस्पर्शा पीतयूथिका च । अति-क्रान्तो मुक्ताम्बिरक्तानतिमुक्तः । पुण्ड्रदेशे भवः पुण्ड्रकः, मण्डकायमेति निघण्टुश्च । मधो वसन्ते भवा माधवी । आह च- अतिमुक्ता माधवी च सुवसन्तो वनाश्रयः । अतिमुक्तः कामुकश्च मण्डको भ्रमरोत्सवः ॥ ७२ ॥ सुष्ठु मन्यते सुमना मनोज्ञात्वात् । मालयत्यामोदंमालती । जायतेनया प्रीतिर्जातिः । आह च- जातिर्मनोज्ञा सुमना राजपुत्री प्रियंवदा । मालती हयगन्धा च वैदिका (?) तैलमागि(वि)नी । सप्त मनोपुष्प्यन्तानीन्द्रियाणि लाति सप्तला, सपति समवेति वा । नवा स्तुत्या मालास्या नवमालिका । माधे मासि भवं माध्यम् । कुन्वसि कुन्दं, कुन्द इति माला । बध्नाति चित्तं बन्धूकः । बन्धुर्जीवानां बन्धुर्जीवकः ॥ ७३ ॥ सहते परिमलं सहा । कुं भूमिष्ठान्मारयति कुमारी, कुत्सितो मारोस्या इति वा, जरां न यातीत्येके । तरत्यनया[ दुःखं ] तरणिः, यश्चन्द्रनन्दनः- कुर्वकस्तारणिवेष्टी कुमार्यलिकुलप्रिया । अथै सहा मुद्रपर्णी ववा( वा ) तरणी च । कुरण्टको हि म्लानि न गच्छति तेनाम्लानः, वात्स्यायनोत एव कुर्वकस्थाने कुरण्टकमालाश्चेत्याह । वर्णपुष्पोपि । महतो विमर्दस्य सहा महासहा, आबन्तः, यन्माला- अम्लानस्तु कुरण्टकः । तत्राम्लाने, को रुयतेर्घ्यते कुरवकः । को रम्यते कुरण्टकः, कुरण्डकोपि । आह च- अधिम्लानोऽपरिम्लानस्तथैवा-म्लानकः स्मृतः । रक्तपुष्पः कुरवकः पातपुष्पः कुरण्टकः ॥ किंकिरातोसो ॥ ७४ ॥ या नीलपुष्पा क्षिण्टी, शुष्का क्षिण्टीति । वाणो हि द्विलिङ्गः, वण शब्दे । दस्यति क्षीयते दासी । आर्तः क्षीणो गलत्यातंगलः । सौरे भवा सैरेयाख्या क्षिण्टी- अरुणपुष्पा चेत्कुरवकोसौ ॥ ७५ ॥ सहचारस्या क्षिण्टी पीतपुष्पा चेत्कुरवकोसौ । आह च- सैरेयकः सहचरः सैरेयश्च सहाचरः । पीतो रक्तोऽथ नीलश्च कुष्ठमेतं विभावयेत् ॥ पातः कुरण्टको ज्ञेयो रक्तः कुरवकः स्मृतः । नील आर्तगलो दासी वाष्प आदनपाक्यपि ॥ ओद्गुदेशोद्भवं पुष्पं, जपतीति जपा । वज्रमिव दारकं वज्रपुष्पम् ॥ ७६ ॥ प्रतीपो-



व-ब-कुली वड्जुलोशोके समी करकवाहिनी ।

चाम्येयः कंसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ॥ ६५ ॥

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ।

श्रीपर्णमग्निमन्थाः स्यात्कणिका गणिकारिका ॥ ६६ ॥

जयोथ कुटजः शकी वत्सफो गिरिमल्लिका ।

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवमद्रयवं फले ॥ ६७ ॥

कृष्णपाकफलाविमसुषेणाः करमर्दकः ।

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोप्यय सिन्दुकः ॥ ६८ ॥

सिन्दुवारेन्द्रचुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यापि ।

वेणी ग(स्व)रागरी देवताडो जीमूत इत्यपि ॥ ६९ ॥

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशूल्यं(न्य) तु मल्लिका ।

भूपदी शीतमीरुश्च सैवास्फोता वनोज्जवा ॥ ७० ॥

मतो नागः कंसरोः नागकेसरः । चाम्येयो नागकिञ्चलः कनकं हेम् काञ्चनम् ॥ ६५ ॥ जयतीति जया । तर्कमियर्ति  
तर्कारी केतुत्वात् । अग्निं मन्थाति दीपनत्वादग्निमन्थः, अत एवारणिः । कणाः सन्त्यस्याः कणिका ।  
गणिकासमूहमियर्ति गणिकारी, स्वार्थे कन्, गणिं तर्कं करोति वा । त्र्यर्थे नादेयी जलजम्बूर्जलेतसस्तर्कारी  
च । लिङ्गसाकषाज्येयर्थेन-जयन्तं(न्ती) श्रीपर्णमिति चार्थेन जयपर्यायमाहुः, तन्न, वनोवधिवर्गे तस्या-  
नादृतत्वात्, यद्विन्दुः- अग्निमन्थोऽग्निमन्थनस्तर्कार्यहणिको जयः । अरणिः कणिका सैव तपनो वैजय-  
न्तिकः ॥ चन्द्रनन्युनयाह- अग्निमन्थोऽग्निमन्थनस्तर्कारी वैजयन्तिकः । वह्निमन्थोरणिः केतुर्जयः पाव-  
कमन्थनः ॥ तर्कार्या वैजयन्ती च वह्निमन्थनी जया । अरणिका जयन्ती च विजया च जयावहा  
॥ ६६ ॥ कुटिस्तो ( कुटे ) जायते कुटजः । शक इन्द्रवृक्षः, वस्ते त्वचं वत्सकः । आह च- कुटजः  
कोटजः कोटी वत्सको गिरिमल्लिका । कलिङ्गो मल्लिकापुष्प इन्द्रवृक्षोय वृक्षकः ॥ कलि गायति कलिम्,  
कलिङ्गदेशजं वा, अत एव कालिङ्गं कालिङ्गी च । इन्द्रयवं कुटजफलं, भद्रयवं तु कुटजबीजं, य-  
दाह- फलानि तस्येन्द्रववा बीजं भद्रयवास्तथा ॥ ६७ ॥ कृष्णं पाके फलमस्य । आविजते स्माविमः ।  
सुषेणकपिमुखाभः । करेण मृयते करमर्दः, कराम्लोपि । आह च- करमर्दकमाविमं सुषेणं पाणिमर्दकम् ।  
कराम्लं करमर्द च- ॥ [ कालः स्कन्धः प्रकाण्डोऽस्य ] । त्र्यर्थे कालस्कन्धस्तिन्दुकः श्यामखदिरस्तमा-  
लश्च । ताम्यति तमालः । तापिनच्छादयति तापिच्छः ॥ ६८ ॥ स्यन्दते सिन्दुकः । स्यन्दं कृणोति सि-  
न्दुवारः । इन्द्रस्य सुरसो यस्मिन्, दिव्य इत्यर्थः । अत एवेन्द्राणी । निष्कान्ता गुडाद्वेष्टनाभिर्गुण्डी निर्गु-  
ण्डी च । आह च- सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्दुवाकः । तिलपुष्पः शीतसहो निर्गुण्डी नील-  
सिन्दुकः । वेणीव वेणी । गरमगिरिति गरगरी मूषिकाविषधन्वात् । कर्णे ताडयति ताडः, मुख्यत्वाद्दे-  
वताडो राजताडवत् । जीमूतो ह्लादकत्वात् । आह च- जीमूतको देवताडो वृत्तकोशो गरगरी । श्रोका-  
खुविषहा वेणी देवताली च ताडकः ॥ ६९ ॥ भुवि रोहति भूरुण्डी । हस्तिकर्णपत्रा शाकविशेषः । इतो  
धत्तुरान्तानि पुष्पाणि । तृणशूले गुल्मे साधु तृणशूल्यम् । मल्लयते मूर्ध्नि मल्लिका । भुवि पदमस्या  
भूपदी । शीतमीरुश्च मदन्यन्ती प्रमोदनी । मदनीया गवाक्षी  
च भूपयष्टपदी तथा ॥ द्विपुटासौ विचक्रिलम्- । आस्फुट्यास्फोता गिरिमल्लिका ॥ ७० ॥ रोहते शेषः अच-

नाक्षस्तुषः कर्षफलो मृतावासः कलिद्रुमः ।  
 अमया त्वय्यथा पथ्या कायस्या पूतनामृता ॥ ५९ ॥  
 हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ।  
 पीतदुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ॥ ६० ॥  
 कर्णिकारः परिव्याधे लकुचां लिकुचो बभुः ।  
 पनसः कण्टाकिफलो निचुलो हिज्जलोम्बुजः ॥ ६१ ॥  
 काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलपूर्जघनेफला ।  
 अरिष्टः सर्वतोमद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ॥ ६२ ॥  
 पिचुमर्दश्च निम्बेथ पिच्छलागुरुशिषापा ।  
 कपिला भस्मगर्मा सा शिरीषस्तु कपीतनः ॥ ६३ ॥  
 भण्डिलोप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ।  
 पतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ॥ ६४ ॥

॥ ५९ ॥ हरति रोगान् हरीतकी । चेत्यतेनया स्रोतःशुद्धयेतकी । आह च- हरीतक्यमया पथ्या प्रपथ्या पूतनामृता । जयाव्यथा हैमवती कायस्या चेतकीति च ॥ ५९ ॥ श्रेयसी रास्ना हरीतकी हस्तिपिप्पली च । शिवाव्यथा पूतनेति चन्द्रः । सरलः, ऋजुत्वात्, आह च- सरलः पूतिकाष्ठं च चित्रा पीतदुःस्थितः । द्रुमोत्पलानीव पुष्पाभ्यस्या द्रुमोत्पलः, सुरभिश्च यम्, अन्यो निर्गन्धः ॥ ६० ॥ कर्णिकाभिर्यति कर्णिकारः । द्रुपथे परिव्याधो जलवेतसः कर्णिकारश्च । लकृत आस्थायते लकुचः । दृष्टते बभुः । पन्यते स्तूयते पनसः, पनस इति दुर्गः । लोकोक्त्या कण्टकयुक्तफलः । महासर्गोपि । निचोत्यतेम्बुना निचोक्तः ( निचुलः ) । हितजलस्यापन्नंक्षो हिज्जलोम्बुवेतसविशेषत्वात् ॥ ६१ ॥ काकप्रियोदुम्बरी । फलति फल्गुः । मलं शिथ्रं पावयति मलपूः श्वितभेषजम्, ( मलयः ) यु जुगुप्सायाम् । जघने जुघ्ने फला न्यस्या जघनेफला, आह च- काकोदुम्बरिका फल्गुराजी फल्गुवाटिका । फल्गुनः फलभारी च मलयः श्वित्रभेषजम् ॥ हिङ्गुगन्धिनिर्यासस्य । मालयते वेष्टयते काकैर्मालकः, शुक्रमालकैकदेशायाम् ॥ ६२ ॥ पिचु मर्दयति पिचुमर्दः, अरोगत्वात्, पिचुमन्द इत्येके । पवनेष्टोपीति सौश्रुताः । शाश्वतस्तु- हिङ्गुनिर्यासशब्दोऽयं निम्बे हिङ्गुरसेपि च । चन्द्रनन्दनस्तु शुक्रमालकमाह । अगुरुतुल्यसारा शिषापां अगुरुशिषापा, यदाह- शिषापा तु महाश्यामा कृष्णसारः स्मृतोऽगुरुः । अगुरुषुगन्धस्य शिषापासारं बाहुः । द्रुपथे पिच्छला शात्मलिः शिषापा च, यदाह- कुशिषापान्या कपिला भस्मगर्मा च सादिनी । शिरसीभ्यते शिरीषः, शीर्यते वा सौकुमर्यत् ॥ ६३ ॥ भण्डयते भण्डिलः, भण्डरोपि, आह च- शिरीषो मृदुपुष्पश्च भण्डिलः शंखिनीफलः । कपीतनः शुक्रतलः श्यामरक्तः शुक्रभियः ॥ भण्डरोत्येके । चम्पादेशो मवश्चाम्पेयः । चम्प्यतेत्येतिभ्यश्चम्पकः, चाम्पकोपि । आह च- चम्पकः सुकुमारश्च सुरभिः शीतलश्च सः । चाम्पेयो हेमपुष्पश्च काञ्चनः षट्पदातिभिः ॥ गन्धः फल्मस्या गन्धफली । प्रियङ्गुश्चम्पककलिकाचेति द्रुपथे गन्धफली । के सरति केसराः सन्यस्य वा केसरः ॥ ६४ ॥ उच्यते वकुलः । आह च- वकुलः सीधुगन्धश्च मयगन्धश्च शारदः । मधुगन्धो गूढपुष्पः शिम्बी केसरकस्तथा ॥ अस्तुतेऽंशाकः, शोकनाशकत्वाद्वा । यदाह- अंशकः शोकनाशश्च विचित्रः कर्णपूरकः । इयथे वज्जुलो वेतसः स्पन्दनोशोकश्च निश्चिरति कणान्तरकः । दाल्यते दाडिमः । आह च- दाडिमो दालिमः सारः कुट्टिमः फलवा(शा)डवः । स्वादुम्लो रक्षवीरस्तु करकः शुक्रवत्तमः ॥ नागप्रियाणि केसरवन्ति पुष्पाभ्यस्य नागकेसरः । आह च- नागपुष्पो

भद्रदाह तुकिमं पीतदाह च दाह च ।  
 पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्वेववाकण्यय द्वयोः ॥ ५४ ॥  
 पाटलिः पाटलामोघा काला स्याली फलेरहा ।  
 कृष्णवृन्ता कुवेराक्षी श्यामा तु महिलाद्वया ॥ ५५ ॥  
 लता गोवन्दनी गुन्ना प्रियङ्गुः फलिनी फली ।  
 विष्वक्सेना गन्धफली कारम्मा प्रियकञ्च सा ॥ ५६ ॥  
 मण्डूकपर्णपत्रोर्ध्वनटकद्वयद्वन्द्वं ( दुण्डु ) काः ।  
 स्योनाकः शुक्रनासर्षदीर्घवृन्तकुटभटाः ॥ ५७ ॥  
 शोनकश्चारली तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ।  
 अमृता च वयस्या च त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ॥ ५८ ॥

देवकाष्ठं भद्रकाष्ठं पूतिकाष्ठं च दाह च । सुरदाविन्द्रस्य तथैवामरदाह च ॥ अथै पारिभ्रः कोमिः  
 पारिजातो देवदाह च, तथा पीतदाहर्दाहूरिद्रा देवदाह पूतिकाष्ठं च । किमिं च तदिति पदैकदेशत्वा-  
 द्भीमवत् ॥ ५४ ॥ पाटम् ताम्रपुष्पत्वात् । अमोघा बहुफलत्वात् । काला कालवृन्तत्वात् । स्याली रसा-  
 धारः कुम्भीत्वात् । काचस्यालीत्येके । फले रोहति ( फलेरहा ) साङ्कुरफलत्वात् । कुवेराक्षी यक्षाक्षि-  
 तुल्यपुष्पत्वात् । आह च- पाटलोक्ता तु कुम्भीका ताम्रपुष्पांमुवासिनी । स्याली वसन्तद्वनी स्यादमो-  
 घा कालवृन्तिका ॥ द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा काष्ठपाटला । सा चैव श्वेतकुम्भी स्यात्कुवेराक्षी फले-  
 रहा ॥ पाटली कृष्णवृन्तेति. नो[मि] मिः । पाटला पाटलिर्वा नेति माला । श्यामा श्यामगौरवर्णात् ।  
 महिलाद्वया वनितापर्याया श्याम ( मा ) त्वात् ॥ ५५ ॥ गवि भूमौ वन्द्यते गोवन्दनी । गुणते क्षीरपते  
 गुन्ना । प्रीणाति प्रियङ्गुः । फलति विष्ठायेते फली । विष्वक् सिनोति सर्वतो वध्नाति विष्वक्सेना ।  
 ईषद्रम्भाकारा कारम्मा । आह च- प्रियङ्गुः प्रिववली च फलिनी कुञ्जिनी ( ? ) प्रिवा । वृक्षा गोव-  
 न्दनी श्यामा कारम्मा कर्षभेदिनी ॥ इन्दुगौर्वन्दनीति मिनति, यदाह- वन्दनी पुण्ड्रो-  
 मना । गन्धप्रियङ्गुः कारम्मा लता गोर्वचभेदिनीति ॥ अथै गुन्ना- एरका प्रियङ्गुः क्षां स [रा] च,  
 तथा प्रियकोसनः प्रियङ्गुः कदम्बयेति । हृष्ये गन्धफलिनी प्रियङ्गुभ्रम्यककलिका च ॥ ५६ ॥ मण्डूक  
 इव पर्णान्यस्य ( मण्डूकपर्णः ) । पत्रेषूपार्श्वे पत्रोर्ध्वः । नटति वातेन नटः । कट्टन्यङ्गान्यस्य रौक्ष्यात्क-  
 ट्टङ्गः । दुन्द्वति शिम्बिभिः कायति दुन्दुङ्गः । स्योनमुखवकति स्योनाकः । शुक्रनासेव पुष्पाण्यस्य  
 ( शुक्रनासः ) । ऋक्ष्णोति हिनस्ति ऋक्षः, अत एव भाष्यकः । कुट्टन्यकीभवन् नटति स्पन्दते कुट्टनटः  
 ॥ ५७ ॥ शवति शोनकः, गौडः शोणकमाहुः, शोणं वर्णं । इत्यर्त्तरलः । आह च- स्योनाकः शुक्र-  
 नासस्य कट्टङ्गोय कट्टम्बरः । मयूरजङ्घोरतुङ्कः प्रियजीवः कुट्टनटः ॥ सप्रोक्तः पृथुशिप्रिव  
 दुन्दुको दीर्घवृन्तकः । भाष्यकः शाङ्गकोफल्युवृन्तको जम्बुको नटः ॥ तिष्यं मङ्गल्यं फलमस्यास्तिष्यफला,  
 नित्यमामलके लक्ष्मीरिति । आमलके गुजानामलकी, अमला च । अमृता वयस्या च रसायनत्वात् ।  
 धात्री नानार्ये । आह च- वयस्थामलकं तिष्यं जातीफलरसं शिवम् । धात्रीफलं श्रीफलं च तथाभूतफलं  
 स्मृतम् ॥ विभेयस्माद् विभीतकः ॥ ५८ ॥ अक्ष्णोति व्याप्नोत्यक्षः, ना पुमान्- फले पुलिङ्गः ।  
 पु( तु )प्यति तुषः, इति निष्पण्डुषु न संवादस्तेषु तु मूलवर्णाभात् । कर्षफलोक्षसामान्यात्, कर्षो  
 विभीतके पलचतुर्मांसे च वर्तते । भूतानामावासः । कलेराश्रयो दुमः । आह च- विभीतक कर्षफलो वस-  
 न्तोक्षः कलिद्रुमः । संवतको भूतवासः कर्षोऽहायो विभीतकः ॥ इन्दुच- आ( अ )हार्यं बहुवीर्यं च  
 तुमुलं च विभेदकम् । नास्ति भयमस्या अभया । न व्यययस्ययथा । पयि साधुः पथा, हितेत्यर्थः ।  
 कायं तिष्ठति निष्कला न भवति कायस्या, वयस्त्वैत्येके । पूर्तं करोति पूतना विरेचनीत्वात्, पूतनेत्येके

चिरि( र )चित्तो मकमालः करजश्च करज्रके ।  
 प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ॥ ४८ ॥  
 करज्रमेवाः बहुप्रमथो मर्कट्यङ्गारवल्ली ।  
 रोही रोहितकः ग्रीहणवृषाडिमपुष्पकः ॥ ४९ ॥  
 गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ।  
 अरिमेवो विदुखदिर कदरः खदिरे सिते ॥ ५० ॥  
 सोमवल्कोप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ।  
 एरण्ड उरुवृकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ॥ ५१ ॥  
 चञ्चः पञ्चाङ्गुलामण्डवर्धमानव्यङ्गम्बराः ।  
 अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ॥ ५२ ॥  
 पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ।  
 शाल्यश्च मदनः शकपावपः पारिभद्रकः ॥ ५३ ॥

द्वयै करजः करजो नख ॥ ४८ ॥ बहु प्रमथोस्य हस्तिवारणाख्यः । मर्कट्यङ्गपाटनन्मर्कटी वल्ली-  
 करजः । अङ्गारा इव वल्लयोस्या अङ्गारवल्ली । आह च—उदकीर्यस्तृतीयोऽयः बहुप्रमथो हस्तिवारणी ।  
 अङ्गारवल्ली शादस्या काकणी करमालिका ॥ स्यै मर्कटी—आत्मगुतापामागौ वल्लीकरजश्च । रोहयति  
 रोहितः, रोहनीत्येके छिन्नरूपात्वात् । चञ्च—रोहितको रोचनकः ग्रीहणो रक्षपुष्पकः । रक्षप्यो  
 रोहितो रक्षः रोही दाडिमपुष्पकः ॥ ४९ ॥ गायतो विप्राध्यायतेवश्यं गायत्री । बालपत्त्रो यवासः खदि-  
 रयेति द्वयैषु धन्वन्तरिपाठमदृष्ट्वा बालपुत्रप्रान्त्या प्रन्वङ्गुलतनयमाह । सूक्ष्मपणोप्यसौ । खदति  
 खदिरः, खद स्यै । आह च—खदिरो रक्षसारश्च गायत्री दन्तधावनः । कण्टकी बालपत्रश्च जिह्वा-  
 शल्यः क्षितिक्षमः ॥ अरिदुःसहो मेदः सारो[ छावो ]स्यारिमेदः । विदुगन्धिः खदिरः पूतिखदिराख्यः ।  
 आह च—परिमेदोरिमेदश्च गोधास्कन्धोरिमेदकः । अहिमेदोहिमारश्च रिभः पूत्यरिमेदकः ॥ कं दृणाति  
 कफभत्वात्कदरः ॥ ५० ॥ सोमवल्कोऽकण्टकिवात्—शुक्रत्वाद्वा । आह च—कदरः श्वेतसारोऽयः सोम-  
 बल्कः पापिद्रमः । स्यै सोमबल्कः खदिरः कटुफला करजश्च । व्याघ्रस्येव पुच्छमस्य व्याघ्रपुच्छः ।  
 गन्धर्वस्य भूतविशेषस्येव मृगविशेषस्येव वा हस्तोस्य गन्धर्वहस्तः पञ्चाङ्गुलिपणत्वात् । एरयति वायु-  
 मेरण्डः । उरु वात्युरुवृकः । रोचते रुचकः ॥ ५१ ॥ चञ्चति चञ्चः, चञ्चुरित्येके । पञ्चाङ्गुलयोस्य  
 पञ्चाङ्गुलः । आमण्डवतीत्यामण्डः, आदण्ड इत्येके दीर्घदण्डत्वात् । व्यङ्गतिव्यङ्गम्बरः, अड उद्यमे,  
 व्यङ्गम्बर[ न ]इत्येके । आह च—एरण्डस्तरुणः शुक्रश्चित्रो गन्धर्वहस्तकः । पञ्चाङ्गुलो वर्धमान आ-  
 मण्डो दीर्घदण्डकः । रकोपरो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रतलो रुबु[ वृ ] । उरुवृको हस्तिपगन्धर्वचुहता-  
 मपत्ररुः ॥ अल्पैषे, कुटीशर्म शुष्काभ्योरः ( सू० ) । शमयति दोषाशमी शिवात्वात् । सक्तव इव  
 फलान्यस्याः । आह च—शमी सक्तुफला तुङ्गा क्लेशहन्त्रिफला शिवा ॥ ५२ ॥ पिण्डीतकः पिण्डीतकः ।  
 त्रियन्तनेन विषपुष्पात्वान्मरुवकः, मरो बाति वा । श्वसन्यनेन श्वसनः । करं हन्ति दुःस्पर्शत्वात् करह-  
 यति वा करहाटकः । शाल्यमस्यास्ति शल्यः । मदनयति मदनः । आह च—मदनः शल्यको राकः  
 [ वाय ] पिण्डी पिण्डीतकस्तथा । तत्करः करहाटश्च श्वसनो विषपुष्पकः ॥ द्वयै मरुवको जम्भोरो  
 मदनश्च, यच्छुभ्रश्चतः—पिण्डीतके पद्महन्दे करहाटपदं विदुः । पारिनिष्ठाग्रामं भद्रमस्य पारिभद्रकः ॥ ५३ ॥  
 शी स्कन्धे किलिमं निर्वास्य द्रुकिलिमम् । पूतिरुगन्धं काष्ठमस्य पूतिकाष्ठम् । सप्तप्रहणं द्रुकिलिमस्यै-  
 कायं, यदाह—देवदाह स्मृतं दाहं मुदाहं किलिमं च तत् । स्नेहविदं महादाहं भद्रदार्विन्द्रदाहं च ॥



वीरवृक्षोरुष्करोमिमुली महातकी त्रिषु ।

गर्दभाण्डं कन्वरालकपीतनमुपार्धकाः ॥ ४३ ॥

प्रक्षाल्य तित्तिडी चित्राम्बिकायो पीतसालके ।

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ॥ ४४ ॥

साले तु सर्जकार्या (प्या) श्वकर्णकाः सस्यसंवरः ।

नदीसर्जो वीरतरिन्द्रतुः ककुभोर्जुनः ॥ ४५ ॥

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयोः ।

इद्गुवी तापसतर्भूर्जे धर्मिषुदुत्यचौ ॥ ४६ ॥

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शात्मलिङ्गयोः ।

पिच्छा तु शात्मलीवेष्टे रोचनः कूटशात्मलिः ॥ ४७ ॥

सशब्दं भाण्डमस्येति युक्तं कन्दरालत्वात् । कं पीतयति कपीतनः, कपीते[ ने ]ति वा । आह च-  
 प्रसः कपीतनः शु ( शु ) इगी सुगार्भश्चादृशैः । प्र । को गर्दभाण्डश्च कमण्डलु पटः प्रवः ॥ ४३ ॥ तित्ति  
 तित्तिडी । चित्रिचमायतेम्लत्वात्मुक्तं ययासौ चित्रा, फलतयुक्तिका । आह च ( चन्द्रः )- आम्बिका पु-  
 क्रिका चुका साम्बला शुकाय शुक्तिका । अम्बिका चाश्वि[म्बि]का चित्रा तित्तिडीकं च तित्तिडी । पीतवर्णः  
 सालः ( पीतसालः ) । सृजति निर्यासं सर्जः । अस्यत्यसनः । बन्धूकस्येव रक्ताग्नि पुष्पाप्यस्य बन्धूकपुष्पः ।  
 काम्बत्वाध्रियत्वाध्रियकः । जीवयति जीवकः । बीजक इति तु निघण्टुः, संख्या बीजको हेयो बीजपूरस्तथा-  
 सनः । आहुध- बीजकस्त्वसनः काम्यः सौरिः कृष्णोलब[ क ]प्रियः । तिष्यपुष्पः पीतसालः प्रियकः  
 प्रियसालकः ॥ सुगन्धिनीलनिर्यासस्तथा बन्धूकपुष्पकः । स स्यात्प्रियकसालश्च महासर्जश्च नामतः ॥ ४४ ॥  
 स्यति सालः । कृत्यति कार्श्यः । अभकर्णाभयत्रः ( अभकर्णकः ) । सस्यं फलं संवृणोति सस्यसंवरः ।  
 आह च- सर्जकश्चाभकर्णश्च कषायी दीर्घपत्रकः । सस्यसंवरणः शूद्रः सर्जकः साल उच्यते ॥ वीरतरि-  
 र्जुननामसाम्यात् । ककुभः सन्त्यस्य दिग्म्यापकत्वात्ककुभः, कंकुभ्नातीत्यहया व्याख्या । अर्जुनः शौ-  
 कत्यात्, इन्द्रप्रियत्वाहित्येकः । आहेन्दुः- ककुभस्त्वर्जुनः पाथो नदीसर्जो धनंजयः । अश्रीफलधित्रयोगी  
 वीरो वीरान्तकस्तथा ॥ ४५ ॥ इन्द्रः कूटजोर्जुनो देवदाह च ॥ ४५ ॥ क्षीरिका क्षीरस्वादुत्वात्, आशे  
 तु मिश्राप्लावामनी । आह च- क्षीरिकोष्ठा च राजन्यः क्षीरी मृत्सृष्टि प [ क ]को वृषः । राजादनो  
 हवस्कन्धः कपीष्टः प्रियदर्शनः ॥ इद्गुतीद्गुदः । तापसा हारण्येस्याः स्नेहमुपभु ( यु ) जत । मृणाति  
 भूर्जे, भूर्जातो वा । आहुध- भूर्जो मृजो बहुपटो बहुत्वणो मृदुच्छदः ॥ ४६ ॥ पिच्छास्त्यस्याः पि-  
 च्छिला । पूरयति पूरणी । मुञ्चति रसं मोचा । स्थिरायुः काटसहत्वात् । सालेन दैर्घ्याच्छलति वा  
 शात्मली शात्मलिः । आह च- शात्मली रक्षपुष्पा च कुक्कुटी स्थिरजीवेता । पिच्छला\* तुलिनी मोचा  
 कण्टकारी च पूरणी ॥ मोचनीति च । पिच्छेव पिच्छा, आचामवद्गुलिसंमितत्वात् । शात्मल्या वेष्टे  
 निर्यासः । आह च- शात्मलीवेष्टकः पिच्छा निर्यासः स च शात्मलः । मोचसारो मोचरसो मोचनिर्या-  
 सकस्तथा ॥ रोचते रोचनः शात्मलिविशेषः । कूटेन कुत्सितत्वं द्योतयते, दुर्गादेर्हि परमैर्न्यदलनार्थं सा  
 क्षिप्यते । आह च- कुशात्मलिः शात्मलिको रोचनः कूटशात्मलिः ॥ ४७ ॥ चिरिणं विलति भिन्नति  
 चिरिवित्त्वः । नक्तं रात्रिबालमस्मात्प्रक्रमालो भूताश्रयत्वात्, रक्तमाल\* इत्येकः । कं रजयति करजः ( कर-  
 जश्च ) । प्रकीर्यते प्रकीर्यः । पुतिको दुर्गन्धः । कलेमारकः कलहहृत्, यदिन्द्रुः- कज्जो रक्तमालश्च  
 पुतिकश्चिरिवित्त्वकः । पूतपूर्णकरजान्यः प्रकीर्यो गौर एव च ॥ पूतीकरजः सुमनास्तथा कलहनाघनः ॥



विकङ्कतः सुषावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादापि ।  
 ऐरावतो नागरङ्गा नादेयी भूमिजम्बुका ॥ ३८ ॥  
 तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ।  
 काकिनुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ॥ ३९ ॥  
 गोलिहो शटलो घण्टा पाटलिर्मोक्षमुष्कौ ।  
 तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलज्ञावुकौ ॥ ४० ॥  
 श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैङ्कर्यकटफलौ ।  
 क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसावनः ॥ ४१ ॥  
 तू ( नू ) वस्तु यूषः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ।  
 तूलं च नीपप्रियककम्बास्तु हलिप्रिये ॥ ४२ ॥

आम्नाता । आह च- विकङ्कतः पृथुफलो ग्रन्थिलः स्वादुकष्टकः । गोपकष्टः काकपादो व्याघ्रपादोश्च  
 किङ्करी ॥ इरावत्या विद्युत इवाथ रक्तत्वादैरावतः । नागस्य सिन्दूरस्येव रङ्गोऽस्य नागरङ्गः, नागच्छति  
 सहस्र रङ्गोऽस्य वा । आह च- नागरङ्गस्त्वस्मृगन्यो नागरङ्गो मुखप्रियः । स ऐरावतकः प्रोक्षः  
 सुधानकाधवासनः ॥ नादेयी नदांजाता । भूमौ जम्भतेयते भूमिजम्बुः । चत्वारो नागरङ्गार्था इति  
 गौडः । आह च- जम्बुः सुरभिपत्त्रा च राजजम्बूर्महाफला । काकजम्बूर्मेषवर्णा नादेयी वेदिशो-  
 ल्यकः ( ? ) ॥ ३८ ॥ तिम्पति तिन्दुकः । शितिः कालः सारो मञ्जास्य शितिसारः । आह च-  
 तिन्दुको नीलसारश्च कालस्कन्धोऽसिमतसह । स्फूर्जकः स्फूर्जशन्दोपीति । काकवर्णस्तिन्दुः काकेन्दुः ।  
 कुत्सेतैर्लङ्घ्यते कुलकः, लक आस्वादाने । धर्षे कुलकः काकतिन्दुकः पटोलोपि । आह च-  
 तिन्दुकोन्यो द्वितीयस्तु स्फूर्जकः काकतिन्दुकः । काकेन्दुकश्च त्रिध्यातः कुपीलुः काकपीलुकः ॥ मर्दः  
 तिन्द्राख्यः ॥ ३९ ॥ गोभिलिङ्घते गोलिहः, गोलीडोपि । शटं संघातं लाति शटलः । इत्यन्ते घण्टा । पाटं  
 निस्तारं लाति पाटलिः । मोक्षति सहते मोक्षः । मुष्गाति रोगान् क्षारकत्वान्मुष्ककः । आह च- मुष्कको  
 मोक्षको घण्टा मूषको रञ्जकस्तथा । क्षारश्रेणो गोलिहश्च द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥ तिलाभयुष्पास्तिलकः । क्षुरति  
 पक्षवत्क्षुरकः । आह च- तिलकः पुरुषः श्रीमान् क्षुरकश्छत्रपुरुषकः । पिचुं तूलं लाति पिचुलः ।  
 ध्यायतेर्षावुर्कोपभ्रष्टः ॥ ४० ॥ श्रीपर्णी सुपर्णत्वात्, पाककर्णपर्णोति ( मू० ) डीप् । [ कुमुदप्रातकृतिः कुमुदिका,  
 कौ मोदते वा ] । कुम्भी रसाधारत्वात् । कं रसमोहं कैङ्कर्यः, अविभाविप्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थे वा । कटत्वाद्गुणो-  
 ति कषायत्वात्फलमस्य कटफलः । आह च- कटफलः सोमवल्कश्च श्रीपर्णी कुमुदा तथा । महाकुम्भी च कुम्भी च  
 भद्रा भद्रवतीति च ॥ द्वयर्थे कैङ्कर्ये कटफलो मदनफलं च । कामति क्रमुकः । पट्टास्यास्ति पट्टी पाटिका, रोधोयम् ।  
 लाक्षा प्रसादयति, रोधप्रस्तावे व्याख्यातमेतत् ॥ ४१ ॥ तुयते तूदः । यूषप्रातिभूतिवत्पातः । ब्रह्मणि वेदि-  
 के न पुत्रं ब्रह्मण्यः, अत एव ब्रह्मदारु । तूत्यते तूलं, तूलीति गौडः, तूल निष्कर्षे । आह च- तूलं तूदं च यूषं  
 च क्रमुकं ब्रह्मदारुम् । ब्रह्मदारु ब्रह्मनिर्गुणं ब्रह्मण्यं ब्रह्मचारि च ॥ नयति सुखं नीपः । प्रीणाति प्रियकः । के दाम्ब-  
 णि कदम्बः । हलिनः प्रियः सुराधिवसनान् । धाराकदम्बो राजकदम्बश्च, सौ, धूर्जिकदम्बोन्यः । आह च-  
 परः कदम्बः प्रावृषेण्यः कादम्बर्षो हलिप्रियः । नीपो धूलिकदम्बोन्यः सुवासावृत्ति [ त ] पुष्पकः ॥ ४२ ॥  
 विशेषेणेरयति वीराणां वा वृक्षो दुःस्पर्शत्वात् । अस्पर्षि स्फाटं त्रेणान् करोति- अरुष्करः, दिवाविभेति ( मू० )  
 टः । अभिवन्धुसमस्या दाहकत्वादभिमुखौ । भद्र इवातति दृणाति ( भद्रातकः ) । आह च- भद्रातकः  
 स्मृतो दुःखो दहनस्तपनोमिकः । अरुष्करो वीरतरुभक्षो चाभिमुखौ धनुः ॥ गर्दभ इवाब्धमस्य गर्दभाब्धः, गर्द

गालवः शाबरः लोभस्तिरीटस्तिस्वमार्जनी ।  
 आस्रथूता रसालोसी सहकारोतिसीरभः ॥ ३३ ॥  
 कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ।  
 कुम्भोदखलकं क्लीबे कीशिको गुग्गुलुः पुरः ॥ ३४ ॥  
 शैलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ।  
 राजादनं पियालः स्यात्सन्नकद्वर्धनुःपटः ॥ ३५ ॥  
 गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ।  
 श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ॥ ३६ ॥  
 कर्केन्धुः ( न्धू ) वदरी कालिघोण्टा कुवलफनिल ।  
 सौवीरं वदरं कालमथ स्यात्स्वादुकण्टकः ॥ ३७ ॥

कषायकृद्ब्रथिलको मधुपृष्णकः । मणोपथं कालहीनो हिमपुष्पोत्तिभेयजम् ॥ उन्सादनो घनत्वकस्तारः  
 शाबररादयः । रोध्रः शाबरकः श्वेतत्वगनीसारभेयजम् ॥ द्वितीयः पट्टिकारोध्रो बृहत्पत्रस्तिरीटकः । उत्ताल-  
 कस्तिन्वकश्च पट्टी लाक्षामसदनः ॥ अम्यनेभिलघ्यत आम्रः, अमृतम्योर्दीर्घश्च ( उ० ) इति रक् ।  
 स्यान्नति रमं चूनः, चूयत इति श्रीभोजो निरबोचन् । रसमलति रसालः । सहकारयति मेलयति  
 आमुंमौ सहकारः, मुरासन्नवाद्वा । यदाह- आम्रथूता रसालश्च सचेष्टो मदिरासन्नः । कामाङ्गः सह-  
 कारश्च परगुटमहोत्सवः ॥ ३३ ॥ कुम्भोदखलाकाराद् वृक्षकोशान्निर्याति कुम्भोदखलकम् । कोशे भवः  
 कौशिकः, उल्लूक इत्येव नपचरत्वात् । गुहति रक्षति वातरोगाद् गुग्गुलुः । पिपर्ति पुरः, इगुपधेति  
 ( मू० ) कः, उदोऽपपूर्वस्य ( मू० ) इत्युत् । आह च- गुग्गुलुः कालनिर्यासो जटायुः कौशिकः पुरः ।  
 नपचरः शिवो बुगो मद्विषाक्षः फ ( प ) लेकषः ॥ ३४ ॥ शिलति शिनोति रोगान्वा शैलुः शैलुकश्च ।  
 श्लेष्माणमतानि शीतवीर्यत्वाच्छ्लेष्मातकः, अत एव शीतः । उद्दालयत्यङ्गमुद्दालकः श्वेतेन स्फोटकारि-  
 त्वात् । बहु वृणोति स्रोतासि बहुवारः । आहन्तुः- शैलुः श्लेष्मातकः शीतो वसन्तकमुमसुया ।  
 उद्दालकः कर्तुरेतः शैलुको भूतवृक्षकः ॥ पिच्छिलः शपितः शैलुस्तथासद्वाजकुरिततः ॥ लेखवाटो  
 बहुवार इति । राज्ञामदनं मिष्टवान् । पियति सरलवात्पियालः, रि पि गतौ, अपियात्येके । सन्नकः  
 सन्नदुः सरन्नोभ्य सन्नकदुः । धनुष इव पटो विस्तारोऽस्य धनुःपटः, धनुःकारान्तो व्यस्त इति गौडो  
 भ्रान्तः, यदाह- पियालोय सन्नकन्धारा बहुलवल्कलः । सन्नकद्वधापपटो लस्ते [ ल ] नस्तापसप्रियः ॥  
 यथं राजादनः पियालः क्षीरिका च ॥ ३५ ॥ गमे सरसत्वाद् भारोऽस्या गम्भारी । कृश्यति तनूकरोति  
 काश्मरी काश्मर्यश्च । मधूनि मिष्टानि पणान्यस्या मधुपर्णी, पाककर्णपर्णीति ( मू० ) कौप । आह च-  
 काश्मर्यः काश्मरी द्वारा काश्मरी मधुपर्णपि । श्रीपर्णी सर्वतोभद्रा गम्भारी कृष्णवृन्तिका ॥ ३६ ॥  
 कर्को लोहितेन्धुः कर्केन्धुः, शकन्नाद्व्याप्यरूपम् ( वा० ) । वदति वदरी, वद इत्यर्थः । कालिः, कुल  
 संस्थाने, कुल ( ड ) वात्येस्माद्वा । गुणानि वृक्षा [ त ] वाद् भ्रमने घोण्टा । को भूमौ बलति कुवलम् ।  
 फेनिलं कर्कषधनम् । सौवीरदेशो भवं ऊर्वरम् । अत्र यास्त्रया वृक्षार्थाः, अन्ये फलाद्याः, घोण्टा तुभय-  
 स्पृष्ट, यथेन्धुः- वदरी श्रिग्धपत्रा च राष्ट्रवृद्धिकरी तथा । फलं तस्याः स्मृतं कोलं केकिलं फेनिलं  
 कुरम् ॥ कोलं मूक्षफलं तत्तु ज्ञेयं कर्केन्धु कन्दुकम् । स्वादुः कटुः सिधतिक्ता तच्च कोलं फलं मतम् ॥  
 धन्यन्तरिः सामान्यनाह- वदरं कौविल कोलं सौवीरं फेनिलं कुलम् । कर्केन्धुः कन्दुकं स्वादुः कटु  
 सिधतिक्ता गुडा ॥ यथं कुवलं नालाद्यं वदरं च । कौशिकत्वार्थकोलिकमिति च सन्धः पटः, कौशल-  
 मिति तु वक्ष्याः । चन्द्रेयि- वदरी गोरघोण्या च घोण्या पुष्पश्च कौशिका । शिरश्चन्द्रा कौशल्य-  
 राष्ट्रवृद्धिकरी तथा ॥ ३७ ॥ विकटकते प्रसरति विकटकतः, कर्कशत्वार्थः । सुवा सुदुः ॥ ३८ ॥

अक्षोटकन्दरालौ ह्रवद्कोटं तु निकोचकः ।

पलाशं किंशुकः पर्णां वातपोथोथं घतसं ॥ २९ ॥

रथाभ्रपुष्पविदुलशीतवानीरवञ्जुलाः ।

द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवंतसे ॥ ३० ॥

सौ( शो )भाञ्जने शिशुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।

रक्तांसी मधुशिशुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥

बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषी मालूरश्रीफलावपि ।

प्लुक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यमोधो बहुपाट्टः ॥ ३२ ॥

कष्टकित्वात्रिकोचकः । आह च- अङ्कोटाङ्गुलकौ रेची निर्दिष्टे दोषकीलकः । पीतसारस्ताम्रफलो गन्धपुष्पो निकोचकः ॥ प्रशस्तानि पलाशानि सन्त्यस्य पलाशः, पलमभ्युतं रक्तपुष्पवाद्वा । किञ्चिच्छुब्धे नीलः किंशुकः । वातं पोथयति वातपोथः । चन्द्रात्र- पलाशः किंशुकः पर्णो यज्ञियो रक्तपुष्पकः । क्षारश्रेष्ठो वातपोथो ब्रह्मवृक्षः सामिद्धरः ॥ २९ ॥ बेलम्भोनुवर्तते वितस्यत वा वतसः । रमन्तेस्मिन्त्यः । अभ्राणोव पुष्पाण्यस्याभ्रपुष्पः । विदाल्यते वेगेन विदुलः । शीतो वीर्येण लेपाद्वाइशमनात् । घनति भजत्यम्बु वानीरो वञ्जुलश्च । परिविध्यतेम्भसा परिव्याधः । नद्यां भवा नादेयी, नित्यं लो, वेतसी तु द्रव्येः । त्रिष्वर्थेष्विन्दुर्नादेयी तक्षारी जलवेतसी भूमिजम्बुश्च । चन्द्राया विभागेनाहुः- वेतसो विदुलो नम्रो वञ्जुलो दाघपत्रकः । नादेयी गन्धपत्रश्च जलैकाः सभृनस्तथा ॥ नदीकूलप्रियस्त्वन्यः सुरातो घनपुष्पकः । जलजातस्तोयकामो विदुलो जलवेतसः । निचुलो वेतसादन्यो वक्ष्यते ( स्थलेवतसः ) ॥ ३० ॥ सुष्ठु भर्नाफ मुष्णं सौभाञ्जनः । शिनोति तैक्ष्ण्याच्छिपः । न क्षीवन्त्यनेन हृष्य [ क्ष ] त्वादक्षीवः । मुमति गन्धं मोचकः । आहुश्च- शिशुः स्याच्छुभमरिचं मुखभञ्जिततीक्ष्णकः । सौभाञ्जनस्तीक्ष्णगन्धः सुतीक्ष्णो घनपल्लवः ॥ शिशुर्हरितशार्ङ्गो मतो मूलकपल्लवः । घनच्छदस्तीक्ष्णगन्धो मु [ म ] रङ्गी दशनक्षमः ॥ तृतीयो मधुशिशुः स्यात्- । इयर्थं मोचकः कदलो शात्मलिः सौभाञ्जनश्च । चतुर्थ्यर्थेऽपि- न्द्रुक्षीवः समुद्रलवणं नोली महानिम्बः सौभाञ्जनश्च । मधुप्रधानः शिशुः ( मधुशिशुः ) । न रियन्त्यनेनारिष्टो रक्षाहेतुः । फेनाः सन्त्यस्य फेनिलः । चन्द्रात्र- अरिष्टस्तु सुमङ्गल्यः कृष्णबीजोर्धसाधनः । रक्षाधीजः शितकेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥ ३१ ॥ धिलति भिनति बिल्वः । शाण्डिलपोत्रः शिलूज इत्यागमाद्यजौ, शाण्डिल्य इव ब्राह्मणमन्यन्यात्, शैलूष इव नानारूपपरिवर्तनाद्वा । मलते मलान्मालूरः, मालूषो लाति वा । श्रीप्रदानि फलान्यस्य श्रीफलः । आह च- बिल्वः शलाघुः क्षाण्डिल्यो हृद्यगन्धः सदाफलः । शैलूषः श्रीफललघाद्वा कङ्कटः प्रतिमालतः ॥ द्रव्यलघो गच्छति मूलेः द्रव्यः गृह्यते ( द्रव्यते ) वा । जटाः सन्त्यस्य जटी । अत एव पृथ्यते पर्कटी, इत्यन्तोयं, ईदन्तोप्यस्ति, यच्छाश्वतः- विज्ञेया पर्कटी द्रव्यः द्रव्यः पिप्पलादपः । न्यक् तिर्यग्गुदि मार्गं मूलैर्न्यमो- हति वा न्यमोधः, न्यदृकादेवात् ( सू० ) धत्वम् । बहवः पादा मूलान्यस्य बहुपात्, संख्यासुप- र्वस्येति ( सू० ) अन्तलोपः । वट् [ य ] ति वेष्टयति मूदैर्बुतः । आह च- वटो रक्तफलः शृङ्गी न्यमोषः कुन्दजो ध्रुवः । क्षीरी वैप्रवणावासे बहुपादो वनस्पतिः ॥ ३२ ॥ आधौ श्वेतलोध्रे त्रिरीटाया रक्तलोध्रे । गालयति स्रावयत्यक्षि गालवः । शापरः शबरवृक्षः । रुणद्धि व्रणं रोधः, रलयोरेक्यालोध्रेऽपि । तिरयति रोगांस्तिरीटः । तिलति क्षिप्त्यल्लगमनेन नित्वः । मार्ग्युद्धतयत्यङ्गं मार्जनः, अत एवो न्मा ( त्वा ) दनः । आह च- लोध्रो रोधः शाबरकश्चिन्नकस्तित्वकस्तरः । तिरीटः कालहीनश्च । चिल्लो शबरपादपः ॥ द्वितीयः पांश्वारोधो गालवः स्थूलवल्कलः । जण्डुधो बृहवल्कः पट्टी साक्षाप्रसादनः ॥ इन्द्रुश्च- रोधः





बार्हतं च फले जम्बू जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

पुष्पं जातिप्रभृतयः स्वलिङ्गा व्रीहयः फले ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेपि पुष्पं क्लीबेपि पाटला ।

वांधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुन्नराशनः ॥ २० ॥

अभ्वत्थोऽथ कपित्थं स्युर्दधित्यग्राहिमन्मथाः ।

तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।

कोविदारं चमरिकः कुडालो युगपत्त्रकः ॥ २२ ॥

स्त्रीत्वम् । पु पयिकाशे जानिलतायाः पुष्पं जानिमूलिनी शकालिका यूथिका, चम्पकं वकुलं शिरापं, अनुदत्तश्च ( मू० ) इत्यनेनश्च पुष्पमूलपुवहुलं ( वा० ) इत्येभ्यः पुष्प एव लुट् । व्रीहीणां फल एव, तदाह— व्रीहयः फले स्वलिङ्गा इत्येव, व्रीणाति व्रीहिः, व्री धी भरणे । यज्ञाणां फलं यज्ञः, माषा मुद्रास्त्रियाः, व्रीहिमुद्रायां विन्वादिभ्योऽण् ( मू० ), अन्यत्र अव्ययेनप्राण्योपधीत्यण् ( मू० ), तस्य फलपकश्रुपौ ( वा० ) इति लुट्, युक्तिरदभावात्, स्वलिङ्गा इत्येव ॥ १९ ॥ ( विदार्याद्यास्तु मूले ) स्वलिङ्गा इत्येव । विदार्यं भुज्येन ( विदारी ), विदार्यो मूलं विदारी, मूलं प्रतिश्रयम् । ( पाटला ) अनुदात्तादेश्च ( मू० ) इत्यनु, पुष्पमूलपुवहुलं ( वा० ) इति लुट्, लुप्ते युक्तिरन्तम् । आयसच्चाद्रमारीवृहत्थं शुभलायाः । पाटलायाः पुष्पं पाटलं, अतो व हुलकत्वं लुपभावात्, यच्छाश्वेतः— पाटलं कुसुमे वर्णयानुव्रीहिश्च पाटलः । अयिश्चादात्ताटला, दिस्त्रयणा पाटलीत्यत्र । पुष्प इति किं पाटलो नाम व्रीहिः । वोधिद्रुमो वांधिस्तथाह्वयः सर्वेष्वर्थास्त्रिणात् । तनुवृन्तत्वाद गुह्यवर्णनास्तत्रापि वाते चलदलः । पिप्पलानि देव्यां पत्राणि, तानि सन्त्यस्य, अर्शआदिवादनं ( मू० ), अपाटन इति नेलुकाः । एवमाथाः प्राकृता अर्गीति धन्वन्तरिः, यदाह— प्रायो जनाः सन्ति वनेचराया गोपदयः प्राकृतनामनग्न्याः । प्रयोजनार्थो वचनयुक्तियतस्ततः प्राकृत इत्यदोषः ॥ किं च— रम्यार्थवपाकेभ्यो मूलान्युपाकल इत्यात् । आकाराद्दशकालदेवैर्नोपश्रयमुब्रजेत् ॥ २० ॥ अश्वेषु तिष्ठत्यथैवाश्रयः, वृषोदरादिभ्यात् ( मू० ) सस्य तत्त्वम् । आह धन्वन्तरिः— पिप्पली के- शवावासश्चतुर्पलः पवित्रकः । मद्गन्धः इयमदेऽश्वयो वोधिसन्तो गजः शनः ॥ केशवावासमङ्गत्यादयो- ब्राह्मणप्रयोगत्वात्तुक्तः । एवमुत्तरत्र । कपिषु तिष्ठति कपित्थः कपिभिर्यजन् । दक्षि तिष्ठति दधित्थो दधिफलत्वात् । व्रीही विशम्भकारिभ्यात् । मन्मथो मन्दनाह्वयः पर्यायेणोक्तः । दन्तेषु शठोम्लत्वात् । आह च— कपिभ्योऽथ दधित्थस्तु व्रीही फलमुगन्धकः । अक्षर्यदो दधित्थलविरपाकी कपिभिर्यः ॥ दूषार्थं पुष्पफलः कृष्णाण्डः कपित्थश्च, तथा दन्तगठो जम्बोरः कपित्थश्च । ज्यैष्ठ्यं मदनः सिङ्घोतकः कपित्थो धत्तुरक्ष ॥ २१ ॥ उदुङ्घिताम्बर उदुम्बरः, उत्वं लक्ष्यात् । मशकगर्भाणि फलान्यस्य जन्तुफलः, कृमि- फलः पर्यायेणोक्तः । आह च— क्षीरवृक्षे हेमदुग्ध उदुम्बरसदाफलो । अणुफलसम्बद्धो यज्ञाङ्गो श्वेत- वल्कलः ॥ आहुन्द्रुः— उदुम्बरस्तु यज्ञाङ्गः सुवक्षुः श्वेतवल्कलः । हेमदुग्धः कृमिफलः क्षीरवृक्षः स कायनः ॥ कोभूमेर्विदारणत्कोविदारः, अत एव कुडालः । चमरंस्यास्ति चमरिकः । आह च— कोवि- दारं कुडालः कुदारः कुडालो कुली । ताम्रपत्रश्चमरिको महायमलपत्रकः ॥ युगपत्त्रक इति यमल- पत्रपर्यायेणोक्तः ॥ २२ ॥ शरदि पुष्पेति शारदः, शारदात्येके । आह च— सप्तर्णः शक्तिर्णंस्त्रिणंस्तु सुपर्णकः । सप्तच्छदो गुग्गुलुस्तथा शास्त्रमालपर्णकः ॥ आहुय— सप्तर्णो वृहत्त्वकः सप्ताहो गुच्छपुष्पकः । सप्तच्छदः सप्तच्छदो गुग्गुलुस्तथा वधोच्चारणश्च, आरमत्र जयन्त्यारजो मद्यास्तेषां वधांवेति वा । राजा चासौ वृक्षश्च, रोगराज वृक्षश्च वा राजवृक्षः । शर्मो शिर्षमवकति श-



काष्ठं दारिन्धनं त्वेध इधमेधः समित्स्त्रियाम् ।

निष्कुहः कोटरं वा ना बल्लरिमन्त्ररी स्त्रियौ ॥ १३ ॥

पत्रं पलाशं छदनं वलं पर्णं छदः पुमान् ।

पल्लवोर्ली किलसलयं विस्तारो विटपर्णस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

वृक्षादीनां फलं सस्यं वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।

आमे फले शलाघुः स्याच्छुष्के वानमुमे त्रिषु ॥ १५ ॥

क्षारको जालकं क्लीबं कलिका कोरकः पुमान् ।

स्याद्गुच्छः ( त्स ) कस्तु रतवकः कुड्मलो मुकुलोस्त्रियाम् ॥ १६ ॥

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं स ( सु ) मम् ।

मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यवयः स्त्रियाम् ।

आश्वत्थवैष्णवप्राक्षनैयमोधिङ्गुदं फले ॥ १८ ॥

वृक्षगर्तः, ना पुमान्, रूपात्यक्षे ह्रीये । दल्लो बल्लरिः । मन्त्रने मन्त्राः घृनादेर्नवोद्धि ॥ १३ ॥  
पतति पत्रम् । अपलयते शाल्यते पलाशम् । छाद्यतेनेन छदनं छदश्छादयेद्द्वयसंग्रहः ( सू० ) इति  
हन्त्रः । दलति दलम् । पिपति पर्णम् । माटिः पत्रशिरा । फलतः पल्लवः । किंचित्सरति तिमलयम्,  
विकसति लीयमानं वा । नवपत्रं प्रवालाख्यम् । शाखादेर्विस्तृतिर्विस्तारः, प्रथमेवावशब्दे ( सू० )  
इति पत्र । विटन्याति विटपः, यत्कात्यः— स्कन्धादूर्ध्वं तराः शाखा कटप्रा विटयो मतः, विटन्याको-  
शान्यस्माद्वा ॥ १४ ॥ वृक्षादीनामिति पूर्वेषां संबन्धनि । वृणोति वृणम् । प्रसवः पुष्पादिः,  
यत्कात्यः— बन्धने पुष्पफलयोर्वृणमाहुः । शलति शलाघुः । फल इत्येव, ( वानं ) । पेभोवै शोषणे,  
ओदितश्च ( सू० ) इति निष्ठा नत्वम् । शलाघुवाने अभिधेयलिङ्गे ॥ १५ ॥ क्षरति प्रसूयते क्षारकः ।  
जालमिव जालकं नवकलिकावृन्दम् । सूक्ष्मा कलिः कलिका, कल्पेन क्षयते कलिका । कुर्थते ( क्षयते )  
कोरकः । पुष्पसंघातो रम्यत्वाद् गूयते गुच्छः, गुड्म इत्येव । सूयते रतवकः । गुलुच्छेपि । ईषद्विकसिता-  
कलिका, कुटति कुड्मलं । [ मुचति कलिकाश्च मुकुलः ] । दुर्गावास्तवान्तरभेदं न मन्यन्ते—  
मुकुलाख्या तु कलिका कुड्मलं जालकं तथा ॥ १६ ॥ मुपु मन्यते सुमनसः, रूपाद्गुह्यम् । पुष्पयति  
पुष्पम् । प्रसूयते प्रसूनम् । कुसयति कुसुमम् । मन्वाख्यः, मङ्गयते मण्डयतेनेन पुष्पं मकरन्दः ।  
परागच्छति परागः पुष्पधूलिः ॥ १७ ॥ वक्ष्यमाणं वदयन्त्यदि वृक्षलतेऽपिजातीयं स्त्रीपुंसदिलिङ्गमपि  
प्रसूयमाने पुष्पे फले मूले च वर्तमानं द्वाभ्यां हीनं नपुंसकलिङ्गं ज्ञेयमित्यर्थः । अवयवेचप्राण्योषधि-  
वृक्षेभ्यः ( सू० ) इति विकारावयवोरुपग्रहस्य प्रत्ययस्य लुप्रकरणे पुष्पमूलपुचहुलं ( वा० ) इति लृ ।  
कचिद् अनुशतादेश ( सू० ) इत्यथो लृ । कदम्बस्य विकारः कदम्बं पुष्पमशोकं करवीरं, वदर्याः फलं  
बदरं कालं नालिकेरमात्रं फलमामलकमिति वृक्षलक्षणस्य मयटः फललुङ् ( सू० ) । मूरणस्यावयवः  
मूरणः कन्दः लुपियुक्तिवद्व्यक्तिवचने ( सू० ) इति स्त्रीपुंसो प्राप्नोः । हरीतक्याः फलं हरीतकी, अवयवेच  
प्राण्योषधौति ( सू० ) अणः— अनुशतादेश ( सू० ) इत्यनश्च हरीतक्यादिभ्यश्च ( सू० ) इति लृ, लुपि  
युक्तिवद्व्यक्तिवचने ( सू० ) इत्यत्र च हरीतक्यादिषु व्यक्तिरिति युक्तिवदभावात्त्वत्त्वम् । आदिशब्दा-  
त्कोशात्कांक्षावदर्यादिः । अश्वत्थादेः प्राक्षादिभ्योऽङ् ( सू० ) इति पुनर्दिधः फले लुप्रसिति । वैणोः  
बिन्वादिभ्योऽङ् ( सू० ) । नैयप्रोधमिति, न्यप्रोधस्यवचनेलस्य ( सू० ) इत्येज.गम ॥ १८ ॥ वृहत्याः  
फलं बार्हतम् । फलति फलं, फल निधत्तौ िजम्भवावा ( सू० ) इत्यणि जाम्भवम्, पक्षे ओरम् ( सू० )  
तस्य लुकि फलं जम्बु ( फललुङ् ), लृप्च ( सू० ) इति जम्बूः— लुपि युक्तिवद्व्यक्तिवचनत्वात् ( सू० )

वन्ध्याफलोवकेशी च फलयान्फलिनः फली ।

प्रकुल्लेः कुल्लसंकुल्लव्याकांशविकचस्कृटाः ॥ ७ ॥

कुल्लश्चेते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिपु ।

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुर्ह्रस्वशाखाशिकः क्षुपः ॥ ८ ॥

अप्रकाण्डं स्तम्भगुल्मी वल्ली तु व्रततिलता ।

लता प्रतानिनी वीरुर्गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥

मगाधारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चाच्छ्रयश्च सः ।

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाकावधिस्तिरोः ॥ १० ॥

समे शाखालते स्कन्धशाखाशालं शिफाजटे ।

शाखाशिफावरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥

शिरोग्रं शिखरं वा ना मूलं बुध्नोद्भिनामकः ।

सारो मज्जा नरि त्वक्छी वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

( मू० ) कुल्लः साधुः । उत्कुल्लमंकुल्लयोरुपसंख्यानम् ( वा० ), प्रकुल्लेति पाठे कुल्लं विकसने, अयं । वि-  
गन आकांशः संकोचांश्य वशाकोशः । विशेषेण कचति विकचः । स्फुरति स्फुरः ॥ ७ ॥ ( त्रिपु ) वा-  
च्यलिङ्गत्वान् । ( स्थ.पुः, ६० ) तिष्ठति प्रवति शङ्कतेस्मान् । ह्रस्वः शाखाः शिकामूलानि चास्य,  
क्षुपते क्षुपः सूक्ष्मलतादिप्रतानः ॥ ८ ॥ प्रकाण्डो गण्डस्तद्वद्विते, उद्भिद्विशेषः स्तम्भस्तृणसंघातो वा,  
तिष्ठतीति स्थः, स्थःस्तम्भजयकौ ( उ० ) । गुडति गुल्मः । नानार्थे विदपः । वलते वेष्टते वल्ली गुह-  
द्यादिर्मध्यादिश्च । वृक्षशाखापि ( लता ), यच्छाश्वतः— लता व्रततिराख्याता लता शाखा च  
शाखिनाम् । प्रकृष्टा तन्निरस्याः प्रतानप्रतानी च, जपादित्वाद्वचं ( ग० ) । लाति ( लतति ) लता ।  
लतानां प्रतानोऽस्यस्याः प्रतानिनी वा लता विरुत्, यत्कात्यः— वीरुत्स्वपणं ब्रूहि लताप्रतानगतगामिनी ।  
विरोहति चते ] वीरुत्, वीरुदिनि विगतनादुपसर्गस्य दीर्घः, नहि वृत्तीति ( मू० ) दीर्घः, न्यङ्क्वा-  
दिवाङ्मयम् ( मू० ) । विरुणादि वा, ( वीरुत् ), अन्येषामपि दृश्यते ( मू० ) इति दीर्घः । उलपते  
उलपः, उलः सौत्रा दीर्घस्यः आवरणार्थं वा, उलपते वा ( उलपः ) ॥ ९ ॥ आरुण्ये आरोह आग-  
त्यम् । उच्छ्रायणमुच्छ्रायः, उदिप्रयतिर्यतीति ( मू० ) अनित्यो घञ्, यच्छ्रयं— पतनान्ताः समुच्छ्र-  
याः । उत्सेध उग्रतिः, यच्छाश्वतः— उत्सेधो वृषुहर्ताः । प्रकाण्डे प्रकाण्डो वृक्षजद्व्या । स्क-  
न्धत आरुण्ये स्कन्धः ॥ १० ॥ ( शाखा ) शौखं ध्यात्री, श्यत्येनां वा । शिफायां । समे इत्येव ।  
शालति शाला शायने वा, यच्छाश्वतः— शाला तद्वत्स्कन्धशाखा शाला भग्ननिधने । शिनाते  
शिते वा शिफा । जटति जटनं वा जटा वृक्षादिमूलं, जट संघाते, निदायट् ( पिदभिदादिभ्योऽट् ) । एवं  
शिकालतयोः पर्यायायुक्त्वा स्वरूपमाह । अधो रोहन्ति शाख ( याः ) शिफा, शिफारूपा शाखाव-  
रोहोश्चादिरित्युपाधायः । बुध्नोद्भवं गता लता ( पि ), यदाह मूलं— मूलाच्चाग्रं गता लतेति ॥ ११ ॥  
बुध्नोद्भवं प्राकृत्यः शिखरं तु वा ना पक्षे पुमान्, रुपात्पक्षे स्त्री । ( मूलं ) मूल रोहणे । बुध्यतेनेन  
बुध्नो वृक्षादः पादपर्यायः । सरति सारः, स्थिरे ( मू० ) इति घञ् । मज्जति मज्जा, [ नरि पुंसि ] ।  
त्वच संवरणे । वल्यते छाद्यतेनेन वल्कं, वल संवरणे । वल्कं लाति वल्कं, श्यामलवत् ॥ १२ ॥ का-  
श्यते काष्ठम् । शीघ्रं दाह । विशेषमाह— इत्यनेन विवति । इन्द्रेनेनाभिरिन्धनाभिधं च, इपियुर्थीयतीति  
( उ० ) मक् । आद्यमेध एधेरमुनि दाण्डादर्थं, अपर एधः— अवोदर्थीयतीति ( मू० ) इत्येधभि-साधुः ।  
होमार्थं सभिधयेनेनया समित् । निष्कुप्यते निष्कुह्यते वा निष्कुहः, निष्कुह इत्येके । कुटति कोटके

धातुर्मनःशिलाद्यद्रैरिक्तं तु विशेषतः ।

निकुञ्जकुञ्जा वा क्लीबं लतादिपिहितोद्वरं ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः । ३ ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।

अमात्यगणिकागंहापवनं वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।

स्यादितद्वेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥

वीथ्यालिखावलिः पङ्क्तिः श्रेणी लखास्तु राजयः ।

वन्या वनसमूहं स्यादङ्कुराभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

वृक्षा महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।

अननकहः कुटः सालः पलाशो द्रुदुमागमाः ॥ ५ ॥

वानस्पत्यः फलेः पुष्पाक्षरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

ओषधिः फलपाकान्ता स्यादवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

रथके, गिरौ भवामिति गिरिणाविपहो गिरिकादण् । स्थान इति शेषः । कुञ्जिरावरणार्थो लोकान् । व्यधि-  
करणे सप्तम्यौ ॥ ८ ॥ इति शैलवर्गः । ३ ।

अटन्यस्यामटवी । इप्रति भ्रम्यन्ऽपत्रारण्यम् । वेपन्ते भयेनात्र विपिनं, वेपितृग्रोर्हस्वथ ( उ० )  
इतीनन् । गाहते गहनम् । कन्यते गम्यते स्मन्काननम् । वन्यते सेव्यते वनं वृक्षबहुलं स्थानम् । पूर्वं  
सहानयोरैक्यमाहुः । सत्रं नानार्थे । हिमारण्यथोर्महन्वेडीषानुक्तौ ( वा० ) । कुटाद् गृहार्थिष्कान्ता  
निष्कुटाः ॥ १ ॥ आरमन्त्यस्मिन्नारामः । करणेन निवृत्तः कृत्रिमो वृक्षप्रमूहः । समीपं वनस्थोपवनम्,  
तुल्यत्वेन नैकव्यः । अमात्यगणिकयोः पलक्षणार्थतत्त्वार्थः बाह्यादीनामपि ॥ २ ॥ आक्रीडन्त्यास्मिन्ना-  
क्रीडः । उद्यान्यास्मिन्नुद्यानम् । साधारणं राज्ञीभिः सह । प्रमदार्थं वनं प्रमदानां वा प्रमदवनम्, दयःपोः  
संज्ञाछन्दसोर्बहुलं ( मू० ) इति ह्रस्वः । अन्तःपुरं तस्या देव्यः ॥ ३ ॥ वियन्यनया वीथिः । आला-  
ख्यालिः । आवलयावलिः । पङ्च्यते पङ्क्तिः । श्रेयते श्रेणिः । सान्तरा पङ्क्तिर्निरन्तरा लेखा, यदाह  
मूलं-लेखास्तु राजय इति । लिख्यन्ते लेखाः । राजन्ते राजयः, पङ्कस्यपङ्क्तिप्रधारणाः । ( वन्या )  
पाशादिभ्यायः ( मू० ) । अङ्कुरनेङ्कुरः, आक्री लक्षणः । उद्भिद्यत उद्भिद् । प्ररोहोपि ॥ ४ ॥  
वृक्षपते लियते वृक्षः, वृक्षति वृणोति वा । शाखी, वीथ्यादौ ( वीथ्यादिभ्यश्च ) । पादमूलेः पिबति पादपः,  
एवमङ्गिभिः [ चरणपथ प्रभिदः ] । [ तरन्यनेनातपं तरः । अनसः शकटस्याकं गतिं हन्ति-अने-  
कहो निर्वचनान् ] । द्रुवैकदेशोऽस्यास्ति द्रुमः, द्रुमभ्यामः ( मू० ) । दुशब्दोपि, अवयवेषु हि वृत्ताः  
शब्दाः समुदायेष्वपि वर्तन्ते इति । न गच्छत्यगमः । अगनगौ नानार्थे । कुजोऽपच्छेपि ॥ ५ ॥ वन-  
स्थपतिर्वनस्पतिः, पारस्करादित्वात् ( मू० ) सुट्, भवर्थे दिव्यदिव्योति ( मू० ) ष्यः । पुष्पेभ्यो जातैः  
फलेर्हेतुभिः ( वानस्पत्यः ) । पुष्पं विना तैः फलेः ( वनस्पतिः ) । ओषं हजं धयत्योषधिः, फलपाक  
एवान्ता यस्याः । फलानि गृह्णातीति, फलेग्रहिण्यमभिरथि ( मू० ) इति साधुः ॥ ६ ॥ बन्धाति फलं  
वन्यः । अवके शन्ये-इत्येकेर्वा । फलं वह्नस्यातीति, फलबहोभ्यामिनच् ( वा० ) । प्रकलति स्म प्रफु-  
ल्लः, जिह्वा विशरणे, क्त-उत्पत्त्यातः ( मू० ) द्रुग्वत् ( निवेद्युत्त्वम् ) । अनुपसर्गान्फुल्लशीवेति

लोकालोकश्चकवालास्त्रिकुटस्त्रिककुत्सर्मा ।

अस्तस्तु चरमक्ष्माभृद्वयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

हिमवान् निपधो विन्ध्यः माल्यवान्पारियात्रि (त्र)कः ।

गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥

पापाणप्रस्तरघावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

कूटास्त्री शिखरं गृङ्गं प्रपातस्त्वतटं भृगुः ॥ ४ ॥

कटकोस्त्री नितम्बोद्रेः स्तुः प्रस्थः सानुरस्त्रियो ।

उत्सः प्रस्त्वणं वारिप्रवाहे निर्हरो झरः ॥ ५ ॥

दरी तु कन्दरो वा स्त्री देवखातबिलं गुहा ।

गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलापला गिरः ॥ ६ ॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

उपत्यकाद्रासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

अथैतन्कत्वालोकालोकः । चक्राकारेण बलेन वाडते वा चक्रवाडः, वाडु आगुह्ये, आवेष्टय द्रोणान् स्थितं  
 लक्ष्ये । त्रिकुटसर्वते ( मू० ) इति साधुः । अस्यल्लोकादीनस्यते वास्तः । चरन्त्यत्र चरमः पश्चिमो  
 मन्दरादयः । उदयन्तेस्माद् ग्रहा उदयः ॥ २ ॥ नियते मीदन्त्यस्मिन् निपधः । विन्ध्यने विन्ध्यः, अप्न्यादिः  
 ( उ० ) । माल्याकारतास्यास्ति माल्यवान् । पारियात्रायां भरः पारियात्रिकः शरीरोद्भवान् । गन्धेन मादयति  
 गन्धमादनम्, [ प्रयोगे च पुंलिङ्गता दृश्यते, मुगन्धिगन्धनादन इति कालिदासः ] । आदिशब्दान्म-  
 लयमन्दराद्याः । हिमःचलोद्विराजः स्यान्नलयधन्नाचलः ॥ ३ ॥ पिनष्टि, प्रस्तृणानि, गिरति, उपलानि,  
 अदनाति, शिनेति, एणातीति वाक्यानि । कूट ( य एन कूटं, कूट्यते वार्कदावाभ्याम्, कूट दाहे ।  
 शिखास्यास्ति शिखरं, शिखायाहस्त्रधेतरेः ( वा० ) । गृणाति गृङ्गम् । प्रानत्यस्मत्त्वपानः । तदशु-  
 न्यःतटः । प्रपातस्तु तटो भृगुरिति पाठे प्राम्यते यतस्तत्त्वम् भृगुः । विभक्तिं भृज्यते वा भृगुः ॥ ४ ॥  
 कटत्य. गृणाति कटको मध्यभागे मेखलःकटः । स्तोत्र्यम्भः स्तुः । प्रान्टनेस्मिन्सनभूभागत्वात्प्रस्थः,  
 घवर्थेकावधानम् ( वा० ) । सनोति ददाति सुखं सानुः । द्विष्यान्म्यांयक्षी । उनच्यम्भः— उत्सः । प्रस्त्वल-  
 स्मान्प्रस्त्वणम् । निर्धायते निर्धरः । प्रान्ताभ्यु [ -नि ] शीर्यते निर्धरशराधिव्येकाः ॥ दृश्यते दरी, पचादिवाद्  
 ( नन्दिप्रहोति ) । कुसितं दीयते कं दृणाति वा कन्दरा, पक्षे किंरातृमान् कन्दरोपि । समे इत्यर्थः,  
 देवत्रातमकृतं, ( बिल ) बिल भेदेन । गूहति गुहा । अगे ह्वरति गाग्रते वा गह्वरम् । अकृतक-  
 बिलविषये गुहा गह्वर चेत्येकं पूर्वेण सह गव्यन्ति, यन्कात्यः— देवखानि विष्टे गुहा, शाश्वतोप्याह-  
 गह्वरं बिलदम्भयोः । गण्डाः शैला इव स्थूलवाद् गण्डशैलाः, ( च्युताः ) भूह्रम्वादिना गलिताः ॥ ६ ॥  
 [ दन्तकास्तु बाह्विस्तिर्यक्प्रदशाभिर्गता गिरः ] । खन्यन्ते लोहादयोःस्याः खनिः खानेश्च । अकीर्यन्ते  
 धातवोऽस्मिन्नाकरः । गन्नापि, यच्छाश्वतः— भाण्डागारं विदुर्गन्तु खनी गन्नामुत्पादहे । मुह्यपर्वतान्ते धुद-  
 पर्वताः पादा इवावःस्थवाचरणाद्य । अंशेभूमिरित्येव, उपाधिर्याह्यकत्रासन्नरूढयोः ( मू० ), नयांसयोः  
 ( मू० ) इत्यत्र त्यक्तः— ( त्यक्तवर्धनिपेयः ) उपमह्यनार्द्रावाभावः ॥ ७ ॥ धत्ते धातुः । आदिशब्दान्म-  
 लिङ्गुलादिः, यदाहुः— सुशर्णस्थिताः प्राणि हरिताले मनःशिला ॥ गैरिकाग्रनकासीसलोहसासाः सहिङ्ग-  
 गुलाः ॥ गन्धकोप्रकमित्याद्या धातवो गिरिसंभवाः ॥ विशेषेण धातुर्धातुशब्देनैव प्रसिद्धः, गैरिकं हेम-

गोपानंसी तु पलभी छावने वक्रदारणि ।  
 कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुनर्पुंसकम् ॥ १५ ॥  
 स्त्री द्वाद्धारिं प्रतीहारः स्याद्वितर्कस्तु वेदिका ।  
 तारणास्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥  
 कूटं पृथ्वारि यस्तुस्तिनखस्तस्मिन्नथ त्रिषु ।  
 कवाटमररं तुल्यं तद्विष्कम्भांगलं न ना ॥ १७ ॥  
 आराहणं स्यात्सोपानं निश्रंणिस्त्वधिराहणी ।  
 समार्जनी शोधनी स्यात्संफरोवकरस्तया ॥ १८ ॥  
 क्षिप्तं मुखं निःसरणं संनिवेशां निकर्षणः ।  
 समौ संवसयग्रामौ वेस्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥  
 ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्सीमसीमे स्त्रियामुभे ।  
 घोष आभीरपत्नी स्यात्पक्कणः शवरालयः ॥ २० ॥  
 इति पुरवर्गः । २ ।

महीध्रे शिखरिस्मामुदहार्यधरपर्वताः ।

अद्रिगोत्रगिरिमावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

ग्रामार्थं यदि निर्गमितं दाह, वक्रद्वारधारः, पक्षिगङ्क्तिर्ह तत्रैकीयेते ॥ १५ ॥ प्रतिद्विष्यन्ते प्रतिरुध्यन्तेन  
 प्रतीहारः । नानार्थे बलवत् । दाहपरिकृता चतुरस्रा विभ्रान्तिभूः, विगतं तर्दनं यत्रेति वितादः । विद-  
 न्यभ्यां वेदी । मङ्गलार्थे तुरन्त्यत्र तोग्णं द्वाराम् स्तम्भोपरि रचितं सिंहद्वाराख्यम् । मङ्गलसूक्तो-  
 रणेभ्यो भवेद्द्वन्द्वमालिका । गोप्यते गोपुरं प्रतेली ॥ १६ ॥ दुर्गद्वारावतरणार्थः कमनिम्नो हस्तिन-  
 साभो मृ कूटः— अपसोपानाहयः ( कूटम् ), पक्षिरतमन्तःसोपानयुक्तं युद्धार्थमित्येके । कं शिरः  
 पाटयति प्रविशतां कवाटो द्वारपटः, जगादिस्त्वःकृत्वम् ( ग० ) । इत्यर्थः, अररि च । विष्कम्भो बन्धनि-  
 भित्तं, विष्कम्भान्यवग्रन्थान्यवग्रथम् । विष्कम्भात्येके पेटुः । अरेणाकृषणेन गल्लगलं दाहमयो लोहो  
 वा दण्डः । न ना पुमात्र भवति । पण्डित ॥ १७ ॥ आरुह्यतेवक्रपर्वते यानेनाराहणम् । सहोपानमस्य-  
 स्मिन् सोपानम् । निश्रयति भित्तिं नियता ध्रेणिः सोपानपङ्क्तिर्वात्र निश्रंणिः । अधिराहन्त्यवरोहन्ति  
 च यया दाहमया साधिराहणी । बहुलाहया रजोवारणी, मार्जन्वा पूते हि बहुलीकृत धान्यायाहुः ।  
 समूहना पयनीति स्मार्ताः । बहुकरी वर्षनी च । ( क्षिप्तं ) धृत्वादाविति शेषः । अवकीर्यतेवक्रः  
 ॥ १८ ॥ गृहादेर्नःस्त्रियते प्रविश्यते च येन तन्मुखां, यत्कौटिल्यः— मुखसमः संक्रमो मुन्नानुवादेन  
 निःसरणविधौ । समन्तप्रविशन्तेन संनिवेशः पुरादेर्द्विर्बिहरणम् । निवृत्तं कर्षणमत्र निकर्षणः ।  
 संवसन्त्यत्र संवसयः । प्रस्यते भोगिभिर्ग्रामः । ग्रामं ग्रामघानं खेटकं च । वसन्त्यस्मिन्वास्तुः, वसेस्तु-  
 ग्रारणिञ्च ( उ० ) ॥ १९ ॥ अन्ते चिह्नार्थं शल्यप्रक्षेपादुपशल्यं, उपशालने समीपव्रजणे साधु वा ।  
 सीयते बध्यते समा, [मनः] (मू०) उबुभाभ्यामन्यतरस्याम् (मू०) । क्षिप्वाघाटकटौ ( १ ) मालकोष्ठी  
 ग्रामान्तरादयो । घोषान्ति गावांश्च घोषः । आबिम्बत्यभित ईरयन्ति वा गा आभीरा गोपाः । पञ्चपते  
 पक्षिः— गृहालिः, कुटीग्रामकयोः पक्षिरिति तु शाश्वतः । पच्यतेस्मिन् पक्कणः । शवान्त भ्रमन्ति  
 शवरा आरुह्यकाण्डालाः ॥ २० ॥ इति पुरवर्गः । २ ।

महीधरयति महीध्रः, मूलविभुजादिश्वरः ( कप्रकरणेपलविभुजादिभ्य उग्रसंस्थानम् ) । द्रुतुमशक्यो-  
 हार्थः । ध्रियते धरः । पर्वताणि सन्त्यस्य पर्वतः, तत्पर्वतदम्भान् ( दा० ) । अयतेद्रिः । गां व्रयते  
 गोत्रः । गार्थते गिरिः । शिलानामयं शैलः, मत्वर्थेवाण् ( अण्च ) ॥ १ ॥ अन्तर्लोक्यते बद्धि न लो-



मठम्भाप्राविनिलयो गज्जा तु मविरागुहम् ।  
 गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागुहम् ॥ ८ ॥  
 वातायनं गवाक्षीय मण्डपास्त्री जनाश्रयः ।  
 हर्म्यावि धनिनां वासः प्रासादां देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥  
 सौधोस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।  
 स्वस्तिकः सर्वतः भद्रो नन्द्यावर्तावयंपि च ॥ १० ॥  
 विच्छिर्वकप्रभेदा हि भवन्तीश्वरसन्नाम् ।  
 खगगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥  
 शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्याद्वट्टः क्षाममस्त्रियाम् ।  
 प्रघाणप्रघणालिन्दा यहिद्वारं प्रकां प्रके ॥ १२ ॥  
 गृहावग्रहणी वहल्यङ्गनं चत्वरजिरं ।  
 अधस्ताद्वाकणि शिला नासा दारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥  
 प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकः ।  
 वलीकनीधं पटलप्रान्तेथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

विचार्यन्मठम्भाः, छत्रेण गुरुसेवा लभ्यते, छत्रादिभ्योः ( सू० ) । सन्त्रशाला प्रतिश्रयथ । बौद्धानो  
 तु विहारोस्त्री । गजन्ति रटन्यस्यां क्षेवा गज्जा । वसाय वासमभ्ये वा गृहम्, अपवरकं कोष्ठम् ।  
 [ कुट्टिमोस्त्री निषद्धा भुधन्द्रशाला शिरोगृहम् ] । न स्थिते हिंसेः कृतरक्षन्त्यादिरुम् ॥ ८ ॥ गवामिवा-  
 क्षीणि यत्नेति गवाक्षः, इन्द्राक्षयोः समामेचेत्यङ् ( ! ) । इन्द्राक्षो मातृगर्भः, [ मतलम्भोपाश्रयः स्यात्प-  
 र्मीवो मतवाणः ] । मण्डपेन नानालोकैर्मण्डपः । हरति मनो हर्म्यम् । आदिशब्दाद्वसगृहादि । वास  
 इत्येव, प्रसीदन्त्यस्मिन्नासादः, सादकारयोः कृत्रिम इति ( वा० ) दार्यः ॥ ९ ॥ सुधाशुभ्रं सौधम् ।  
 उपक्रियत उपकरोति वा पटमण्डपादि राजसदनम् । स्थितिं कायति स्वरुतः । नन्दी- आवर्तात्र  
 नन्द्यावर्तः । आदिशब्दादुच्यते धर्मानायाः ॥ १० ॥ विच्छिर्दृष्टप्रभेदा रचनाविशेषाः, उच्छिर्दिदौ, विशिष्टेच्छा-  
 निर्मितो विच्छन्दक इत्येके । स्त्रीणामगारं, अवलम्ब्यन्तेस्मिन्नवरोधनम् ॥ ११ ॥ शुद्धाः सुरक्षा मन्ताः अत्र  
 शुद्धान्तः । एते महिष्यामपि तात्स्थ्यद्वन्द्वे । अटन्यद्वयं [ द्यते ] त वाटेशालकः, अष्ट अतिक्रान्तिहस-  
 योः, प्राकाराण्येण गृहमिति कौटिल्यः । ( क्षोमः ) ध्रुवन्ति शब्दायन्ते योः ( अत्र ), अतः क्षोमः  
 प्राकारधारणार्थोभ्यन्तरः क्षोमाख्य इत्येके । प्रहण्यते प्रघणः प्रघाणः, अगारैकदेशेप्रघणः प्रघणश्च ( सू० ) ।  
 अत्यन्ते भूयतेऽन्दिः । द्वारप्रकोष्ठद्विद्वाराप्रवर्तिचतुष्किकन्ते- उपालिन्दकाख्या ॥ १२ ॥ द्वारप्रं  
 गृहते यया, वीथ्याख्येत्येके, कुनोदुम्बरमिति सम्प्रत्ययः । अवगृह्यते द्वारशाखनयावग्रहणी । दिक्षु  
 देहली । अङ्गुल्यवाङ्गनम् । चयते चत्वरम् । अजन्त्रज्जाजिरम् । सम्भोदोऽनामाधारदाह शिलाख्यं,  
 स्तम्भोर्ध्वं दावेन्तरस्थापनार्थं यदागृह्यते सा शिलेति गार्ङ्गः । सम्भोदोऽत्यर्थः, द्वारशाखावक्र-  
 दाहणी शिलानाम् इति माला, यदाह- नासा दारूपरि द्वारस्याधो दाह शिला स्त्रियाम् । ऊर्ध्वो-  
 दुम्बरमुत्तरसङ्गोपदुम्बरं देहलीत्याचार्याः ॥ १३ ॥ ( प्रच्छन्नं ) खगगारं इत्यम् । पार्श्वद्वारमकमत-  
 दिति कात्यः, यदाह- प्रच्छन्नमन्तद्वारं यत्पक्षद्वारं तदुच्यते । छादनान्तो वलीकाख्यः, वलति सवृणो-  
 तीति, कुम्भाद्विवांथी येन च्छाद्यते । नियतमिन्द्र नीयते वाम्भोनेन नीधम् । पटं लाति पटलम् ।  
 छाद्यतेनेनेति छदिः, इत्यन्तः कृषिः, इत्यन्तः प्रकृतिपुत्र ( सू० ) इति ह्रस्वः ॥ १४ ॥ गोपायति गोपा-  
 नसी । पटलधारो वेशपत्रो वलभो वलम्भ्याश्रुता वा, वल संवरणे । विशिष्टं दृश्यते विट्टकः, पक्षिवि-

तच्छाखानगरं वेशां वेश्याजनसमाश्रयः ।  
 आपणस्तु निपाद्यायां विपणिः पण्यवधिकः ॥ २ ॥  
 रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।  
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥  
 भित्तिः स्त्री कुड्यमङ्कै यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।  
 गृहं गेहादवसितं वेदम् सद्य निकेतनम् ॥ ४ ॥  
 निशान्तप( व )स्त्यसदनं भवनागारमनिरम् ।  
 गृहाः पुंसि च भूम्येव निकाय्यनिलथालयाः ॥ ५ ॥  
 वासः कुटी द्वयाः शाला सभा संजवनं त्विदम् ।  
 चतुःशालं मुनीनां तु पर्णशालाटजं स्त्रियाम् ॥ ६ ॥  
 चैत्यमायतनं तुल्यं वाजिशाला तु मन्दुरा ।  
 आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

स्मिन्त्रित्यशनग्रामांश्चे स्थानीयम् । नियतं गच्छन्त्यस्मिन्निगमः, गोचरसंचरेति ( सू० ) साधुः ।  
 गानाधीश्वरान्, दुर्गकेशौ राजधानी च । मूलनगरं राजधानी ततोऽन्यत्समुदायस्थानं ( शाखानगरं ),  
 शाखेत्युदाहोपलक्षणम् ॥ १ ॥ [ स्यात्साकेतमयोध्यायां विदेहा मिथिला पुरी । महोदया कन्यकुब्जा  
 कान्यकुब्जं महोदयम् ॥ काशी वाराणस्यद्वयी विदिशा चोच्चयिन्यपि । प्राग्ज्योतिषं कामरूपं द्वारका  
 द्वारवत्यपि ॥ ] विशान्त्यस्मिन्नामुखा वेशः । आपणोऽस्मिन्नापणः, गोचरसंचरेति ( सू० ) साधुः ।  
 निपादन्यस्यां निपया, संज्ञायांममर्जनपदेति ( सू० ) कथम् । विपण्यन्तेस्यां विपणिंणिगवीयी ।  
 आयो वणिक्स्थानेन्यौ दृढवर्तन्यामाहुः, यच्छाश्वतः- आपणः पण्यवधिकः च द्वयं विपणिंसंज्ञकम् ॥ २ ॥  
 रथं बहति रथ्या, तद्बहतिरथयुगेति ( सू० ) यत् । प्रतोल्यते प्रतोली । विगताशिखा मुण्डितव समन्ता-  
 द्विर्भायते जनसंमर्दत वा विशिखा । विपण्यादीन्येकैर्धानाहुः, यत्कौटिल्यः- विशिखायां सौवर्णिक-  
 प्रचारः । चीयते चयः प्राकाराचारः । उप्यतेस्मिन्वप्रः । प्रकियते प्राकारः, सादकारयोःरुत्रिमर्शति  
 ( वा० ) दीर्घः । वृणोति वरणः । स्यति पर्यन्तं करोति सालः । प्राग्व प्राचीनं विभाषाश्वरदिकृत्त्रियाम्  
 ( सू० ) इति खः, प्रचारमित्येकः । प्रियतेनयः वृत्तिः । वाद्ये वाटी- आवेष्टकोपि ॥ ३ ॥ भियते भित्तिः ।  
 कुड्यां साधु कुड्यं, प्रुपेदगादित्वान् ( सू० ) इत्यम् । तत्कुड्यमन्तर्न्यस्तास्थि, एडयत एडकम् ।  
 गृहाति गृहं, गेहेकः ( सू० ) । उद्वसिनोनि स्मोर्ध्वमवसीयते वोदवसितम् । विशान्त्यस्मिन् वेदम् ।  
 सौन्दर्यस्मिन्सद्य सदनम् । निकयतेस्मिन्निक्तेतनम् ॥ ४ ॥ निशाम्यन्यस्मिन् निशान्तं, निशाया  
 अन्तोत्रिलेकः । अःस्थायति संपार्ताभवति परत्यम् । भवन्यस्मिन् भवनम् । अग्यतेभिन्नगारं, अगानृक्षा-  
 नियति वा । मन्थते सुयतेत्र मन्दिरम् । ( गृहाः ) भूमेि बहुलं, गृहाणीत्ययःहुः । निचीयते निकय्यः,  
 पाय्यसाम्राय्यनिकाय्यति ( सू० ) साधुः । निलीयन्ते रत्नत्रलयः । आलीयन्तेभिन्नालयः, पुंसिधंज्ञायांचः  
 ( सू० ) ॥ ५ ॥ उप्यतेस्मिन्वासः । कुड्येभ्यां कुटी । शा( श )लन्यस्यां शाला, शालते वा । सह  
 भात्यस्यां सभा । वसतिर्वासतेन्यौ निवेशनमावसथः भक्षयायोपि । सज्जते संजवन्ते वास्मिन्सजवनम् ।  
 चतस्रः शलाः समहताश्चतुःशालम् । इदं गृहं मुनिगमन्त्रि पर्णशालाहृदम् । उदैर्देशां नृणपभोजयत  
 उदजम् ॥ ६ ॥ चित्वाया इदं चयं देवकुत्रे[ ल]महावृक्षोऽवगा[ वृक्षाद्युपा ]श्रयः । आयतन्तोस्मिन्नायतनम् ।  
 मन्दन्तेव मन्दुरा । आविशन्चोवेशनं गृहादन्त्यैकैः कर्मस्थानं, तेन शिल्पशालेति सम्भ्यः पाठः ।  
 प्राग्वन्त्यस्यां प्रपा, पञ्चर्थैर्कावधानम् ( वा० ) ॥ ७ ॥ मज्यतेस्मिन्मठः, मठ निवासः । छत्रशाला

सुराक्षि देशे राजन्वान्स्यात्ततोन्मत्र राजवान् ।  
 गोष्ठं गोस्थानकं तनु गौघ्रीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥  
 पर्यन्तभूः परिसरः सेतुराली स्त्रियां पुमान् ।  
 वामद्वारश्च नाकुश्च वल्मीकं पुनपुंसकम् ॥ १४ ॥  
 अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।  
 सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्यकपदीति च ॥ १५ ॥  
 अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितध्वनि ।  
 व्यध्वो दुरध्या विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥  
 अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।  
 प्रान्तरं दूरशून्याध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥  
 गव्यूतिः स्त्री कोशयुगं नत्वः किष्कुचतुःशतम् ।  
 घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्थोपनिष्करम् ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः । १ ।

पूः स्त्री पुरीनगयीं वा पत्तनं पुटभेदनम् ।

स्थानीयं निगमान्यन्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

भूमिस्थादिना (मू०) पञ्चम् । यत्र गावः प्रागासन् (गौघ्रीनं), गोष्ठात्सम्भूतपूर्वं (मू०) इति सप्तम् ॥ १३ ॥  
 परितः सरन्त्यस्मिन्नरिसरो प्रामादेः परिच्छेदभूः । सिन्धवन्ति बध्नन्ति तं सेतुः पुलिङ्गः । आल्य (त्य) -  
 तेभ्योग्रालिः स्त्रीलिङ्गः, सस्यार्थे जलाधारणोश्चम् । संक्रमस्तु तरणार्थो यन्माला-संक्रमो दुर्गसंचरः ।  
 वामं लूयते वामेर्वा वामद्वारः । न-अकृति नाकुः । वलन्ते प्राणिनोत्र वल्मीकम् ॥ १४ ॥ [ अयन्ते ]  
 वर्तन्ते मार्गन्ति-अतन्ति पद्यन्ते सरन्ति वानेनेति वाक्यमिति । पदभ्यां हन्यते पद्धतिः, हिमकापिहतिषु च  
 (मू०) इति पठ् । पदमस्मिन्दस्य (मू०) इति यति पद्या । पद्यत्वतदर्थे (मू०) । एके पादा  
 अस्यामेकपदी, कुम्भपद्यादी (कुम्भपदीषु च) साधुः ॥ १५ ॥ (अतिपन्था, इ०) नपुत्रनात् (मू०)  
 इत्यत्र सृतिप्रहणाद्, ऋक्पूरश्चरिते (मू०) सामासान्तो न भवति । संध्यासौ पन्थाश्च सत्पथः, समासान्तोऽन् ।  
 विरुद्धोवा व्यन्तः, उपसर्गोदध्वनः (मू०) इत्यन् । विरुद्धः पन्था विपथः । कुलितेनोवा पन्थाश्च (कदध्वा,  
 इ०), कोःकतपुरुषेर्वि (मू०), कापथ्यध्वयोः (मू०) । विपथं कापथं च क्रीवमाहुः, यद्वाभनः-  
 (पथःसंज्ञाव्ययादेः) संज्ञाव्ययपूर्वकस्य पथः (क्रीवता) इति ॥ १६ ॥ (अपन्थाः) पथोविभाषा  
 (मू०) इत्यच्, अपथनपुङ्गवम् (मू०) । शृङ्गेरटन्ति-अस्मिन्शृङ्गाटकम् । संस्थानकं (संस्थानं)  
 चत्वरं च । प्रगता अन्तरस्मात्प्रान्तरं दूरशून्यो मार्गः । कस्याम्भसन्तमुच्छति कान्तारम् । कान्तार-  
 प्रान्तरे एकाधै आहुः ॥ १७ ॥ (गव्यूतिः) गौर्यूनोऽन्यस्युपसंख्यानं (वा०), अध्वपरिमाणे च (वा०)  
 इत्यवादिशः । (नत्वः) णल गन्धे (गन्धे), किष्कुहेस्तस्तेषां चतुःशती नत्वमिति माला, कात्यस्तु  
 नत्वम् [विश] हस्तशतमाह । घण्टोरलक्षितानां हस्तिनां पन्था घण्टापथः, चाणक्योक्तोऽष्टदण्डः ।  
 सम्यक्सरन्त्यनेन संसरणं, यद्दुर्गः-बुधेः संसरणं वर्त्म गजादीनामसंकुलम् । पुरोपांनकरं चोक्तम्-  
 तत्संसरणं पुरं राजधानी तस्या उपनिष्कराख्यमुपनिष्कार्यतेत सैन्यमिति ॥ १८ ॥ यावापृथिव्यौ  
 रोदस्यौ यावाभूमौ च रोदसी । दिक्स्थिव्यौ गङ्गा तु [ दिवः पृथिव्याः संज्ञेयं ] रुमा स्याद्ववणाकरः ॥  
 इति भूमिवर्गः । १ ।

पक्षे तु पुरं नगरं च वाशब्दात्पत्तनसाहचर्यात्क्रीवे । पुर्यते पूः । नगाः सन्त्यस्य नगरं, नगपापु-  
 ण्डुभ्योरः (वा०) । पतन्त्यस्मिन्नपत्तनम् । पुट्टा भाण्डवाप्तनानि भियन्तेरिमन् पुट्टभेदनम् । तिष्ठन्त-

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।

लोकायं भारतं वर्षं शरायत्यास्तु योवधेः ॥ ६ ॥

वंशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उर्वीच्यः पश्चिमांसरः ।

प्रत्यन्तो म्लेच्छवंशः स्यान्मध्यवंशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।

नीवृज्जनपदां वंशविषयी तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥

त्रिष्वागोष्ठाक्षद्वयाय नङ्गाक्षद्वयं इत्यपि ।

कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्बहुवेततः ॥ ९ ॥

शाद्वलः शावह्निते सजम्बाले तु पङ्किलः ।

जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाधिधः ॥ १० ॥

स्त्री शर्करा शर्करिलः शर्करः शर्करावति ।

वंश एवादिमावेवमुज्जयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

वंशो नयम्बुवृष्टयम्बुसंपन्नद्रीहिपालितः ।

स्यान्नदीमातृकां देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

भारतं नाम ( वर्षं ) भूम्यक्षदेशः, वृष्यते सिच्यते वर्षम्, तथा च—‘हिमवान्दंमकूटश्च निपथो मेहरन्तरे । नीलः श्वेतश्च शङ्खगीवान् गन्धमादनमष्टममिति सीमाविच्छिन्नान्यन्यानीलाशुतदीन्यष्टौ वर्षाणि । शरा-  
वत्या नद्या मयादायाः प्राक्सहचरितो दक्षिणो देशः प्राच्यः ॥ ६ ॥ शरावत्या अवधेः पश्चिमेन सहच-  
रित उत्तरो देशः ( उदीच्यः ), यदाह—प्रागुदयो विभजते हंसः शरादके यथा । विदुषां शब्दसिध्दये  
सा नः पानु शरावती (काशिका) ॥ प्रतिगतोन्तमुक्तावधेः युतादिदेशः (?) प्रत्यन्तः । ( मध्यमः ) ब-  
न्मनुः—हिमवद्विन्ययोरन्तर्यप्राग्वनशनादपि । प्रत्यगेव द्रवणाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥ आर्या  
आवर्तन्तेस्मिन्प्रायावर्तः, यन्मनुः—आसमुद्रात्तु वै पूर्वोदयमुद्रात् पश्चिमात् । तयोरेवावर्तं गिर्योरायावर्तं  
विदुषुधाः ॥ नियतं वर्ततेस्मिन् नीवृन्, नहिष्ठतिवृषीति (सू०) दीर्घः । जनानां पदं जनपदः, पुंसं लो-  
कत्, जनैर्वास्यमानो राशहयोयम् । दिश्यते देशः स्यान्मात्रम् । किमिति विषयः । उपवर्ततेस्मि-  
न्पुपवर्तनं, उपावर्तनमिति कात्यः । पर्यकार्थान् हुः ॥ ८ ॥ गोष्ठं नशब्दनात्प्राग्व्याच्यलिङ्गाः । तदस्मि-  
न्प्रसूतिर्दशेतप्राग्नि (सू०), कुमुदन्ववेतसंभ्योऽमनुप (सू०), नङ्गादाङ्गुलव् (सू०) ॥ ९ ॥  
शादेन शप्तेण नीलः, यच्छाश्वतः—शप्पकर्दमयोः शादः । क्षीयते स्मिन् शादः, शादोस्तयस्मिन्शा-  
द्वलो देशः, इवलच्, यथा—न हि कोटरसंस्पर्धनौ तरुर्भवति शाद्वलः, शाद्वला दूरेति च नीलत्वो-  
पचारात् । पङ्कोस्यास्ति पङ्किलः, पिच्छादिन्वादिलच् (लोमादिशामादीति) । अनुगता  
अपोत्रानूपम्, ऊदनांदेशे (सू०) आकारस्य—ऊकारः, ततो दीर्घः, अप्रत्ययश्च । कषन्त्यापो  
यं स कच्छः, तथाविधेनूपप्रायः, कच्छमिति माला ॥ १० ॥ देशे लुपिलचोच (सू०), सिकताशर्क-  
राभ्यांच (सू०) इत्यण्मनुषी तु सार्वत्रिकौ । तदाह—मध्यान्मः (सू०) इत्यत्रादित्युपसंहयानात्  
(आदेशितवक्तव्यम्) आदिमौ शर्कराशर्करालौ देशे नियमान् । शर्कराश्मप्राया मृत् । सिकतासिकतिलौ  
देशे, सर्वत्र तु सैकतः सिकतावाच्य ॥ ११ ॥ नयम्बुजातसत्यसर्वार्धितो नदीमानृकः । वर्षजद्रीहिवर्धितश्च  
देशो देवमातृकः, देवोर्धं मातास्येति ॥ १२ ॥ नपुजनात् (सू०) इति सुराक्षीति समासान्ताभावः,  
राजन्वान्तोराज्ये (सू०) इति साधुः । देशो विषयोः पलक्षणम्, यथा—राजन्वांश्लोक उच्यते ।  
राजमात्रपुके देशे (राजवान्) । गावस्तिष्ठत्यत्र गोष्ठं, वज्रयैकविधानम् (वा०), अम्बाम्यम्बो-

उक्तं स्वर्व्यामविकालधीशब्दादि सनाढ्यकम् ।  
पातालभांगि मरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥

### द्वितीयं काण्डम् ।

वर्गाः पृथ्वीपुरश्माभूद्वनीषधिमुगादिभिः ।  
वृषत्तत्रविदशूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहं कृताः ॥ १ ॥  
भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा ।  
धरा धरित्री धरणी क्षाणी ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥  
सर्वसहा वसुमती वसुधावी वसुधरा ।  
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्षमावनिर्मिदिनी मही ॥ ३ ॥  
मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्ता मृत्ना च मृत्तिका ।  
उर्वरा सर्वसस्याक्या स्याद्वृषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥  
ऊषवानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गी स्थलं स्थली ।  
समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाग्रहते समं ॥ ५ ॥

अथोक्तान्वर्गान् संप्रहणोपसंहरति । एषां स्वर्गादीनां संगतं प्रनक्तुमशक्तिरुपानुगतं देवामुरमेघादिकं चोक्तम् । शब्दद्वयै रसगन्वादिप्रहणम् ॥ १ ॥ [ इत्यमरः ] इहोक्तो नामलिङ्गानुशासने । स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ इति श्रीमच्छ्रीरसाभ्युपेक्षितेनरकोशोद्घाटने स्वर्गादि काण्डं प्रथमं संपूर्णम् ।

श्रीगणेशाय नमः । अथ द्वितीयकाण्डे वर्गान् संपृच्छति । अङ्गोपाङ्गैरादिभिर्वाङ्मैत्रेयः खिलादिभिः सह वर्तमानैः पृथ्यादिभिः संपादिता वर्गा इह वक्ष्यमाणे काण्डे वदितुमारब्धा उदिताः, आदिकर्मणि क्तः ( मू० ) । आर्शसायोभूतवच ( मू० ) इति क्तः ॥ १ ॥ भवत्यस्मात्सर्व भूः, रेफान्तं त्वव्ययं, यथा भूर्भुवःस्थः । रसाः सन्त्यस्यां तस्येते वा रसा । विश्वं विभर्ति विश्वभरा, संज्ञायांभूतवृत्तीति ( मू० ) खत् । क्षातिभू ( रू ) पं क्षाणी । जितानि जायते वा ज्या, इत्येति मूर्ध्ववाह्या, यच्छाश्वतः— ज्या मोवा ज्या वसुन्धरा, ज्येति निघण्टुः । कदपपस्येयं काश्यपी, भार्गवेष जिवा ह्यस्मि दत्ता । क्षियन्त्येता क्षितिः, क्षि निशामे ॥ २ ॥ वेतु धनं धत्ते वसुधा । उर्वी विस्तीर्णःवत् । वसु धारयति वसुधरा । गोत्राः शैलाः सन्त्यस्यां गोत्रा, गार्वायने वा । कायति कृयते वा कुः । प्रयते पृथुतावतारिता वा पृथिवा, प्रयेऽपि वन्संप्रसारणं च ( उ० ) । पृथ्वीनि, वेतोऽगुणवचनाद् ( मू० ) ईप । क्षमते भारं क्षमा । अवति प्रजा अव्यते वा तृरवानेः । दैत्यमैशेयोगान्नेदिनी । मही मही । भूधात्रा रत्नगर्भा विपुला सागराम्बरा च, रत्नवतीति भागुरिः । क्षमा, इला च नानार्थे ॥ ३ ॥ मृयते मृत् । ( मृत्तिका ) मृदस्ति कन् ( मू० ) स्वार्थे । ( मृत्ता, इ० ) स्वार्थे सन्नेप्रशंसायाम् ( मू० ) । कृष्णभूतः कृष्णमृत्तिलोदग्भूम उदङ्मृदि । पाण्डुभूमः पाण्डुमृत्, कृष्णोदकपाण्डुः स्यात्पृथ्वीभूमरत्नं ( वा० ) । उर्वते शुभमुर्वमिर्वति वा ( उर्वरा ) । ( ऊपः ) ऊप रजायाम् ॥ ४ ॥ ( ऊपरः ) ऊपमृतीतिरः ( मू० ) । स्थलति ( स्थलम् ) । स्वत्यक्तृत्रिमा चेत्, जानपदकृण्डगोणस्थलेति ( मू० ) ईप, कृत्रिमा तु स्थला । प्रियन्ते तृपाता अस्मिन्महः । दधन्ति धन्वनि वा धन्वा । खिलं शून्यं लानि खलम् । न प्रहृन्त्यते हलादिभिरग्रहमकृष्टं क्षेत्रादि ॥ ५ ॥ जङ्गम्यते जगन्, वर्तमानेपृथ्वीहृदि ( उ० ) साधुः, शत्रन्तंवाद् ईप । विश्वान्स्मिन् विद्यति वा विद्यम्, टपस्य प्रतिपाते । अयं जम्बुद्वीपवर्मांशो भरतस्य क्षत्रियस्येदं



देविकायां सरथां च भवे दाविकतारवी ।  
 सौगन्धिकं तु कङ्कारं हल्लकं रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥  
 स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजम् च ।  
 इन्दीवरं च नीलस्मिन् सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥  
 शालुकमेषां कन्दः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।  
 जलनीली तु शवालं शैल्लोथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥  
 कुमुदिन्यां नलिन्यां तु वि-बि-सिनी पद्मिनीमुखाः ।  
 वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥  
 सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।  
 पद्मेकहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥  
 वि-बि-सप्रसूनराजीवपुष्कराभ्मोकराणि च ।  
 पुण्डरीकं सिताभ्मोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥  
 रक्तोत्पलं कोकनदं नाला नालमथास्त्रियाम् ।  
 मृणालं वि-बि-समञ्जादिकदम्बे षण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥  
 करहाढः शिफा कन्दः किञ्जल्का केसरास्त्रियाम् ।  
 संवर्तिका नवदलं बीजकोशो ( षो ) वराटकः ॥ ४३ ॥  
 इति वारिवर्गः । ९ ।

सौगन्धिकादयम् । के कङ्कारं कङ्कारं, शारदं शुक्रं चेतन् । हल्लति घृणते हल्लकम् । रक्तान् संधीनकति-  
 रक्तसंध्यकं, रक्तं संध्येव वा, रक्तोत्पलं चेतन् ॥ ३६ ॥ उत्पल्यते उत्पलति वा उत्पलम् । कौ बलते  
 प्राणिति कुवलयम्, कुत्सितो बहिर्वलयः पत्रत्रेणमस्येति श्रीभोजः । विशेषानस्याह । इन्दीन्दीवरं  
 कुवलयदलनीलेति सामान्यस्य विशेषवृत्तेः । अस्मिन् सिते, कौ मोदते कुमुदं, कः । के रौति  
 केरवो हंसस्तस्येदं त्रियं कैरवम् ॥ ३७ ॥ शालते शालुकं, कन्दो मूलमेपामुत्पलादीनाम् । ( वारिपर्णा )  
 वारि पिपति, फड्गा नाम शाकं, घृणत्येके । कुम्भोरत्नस्याः कुम्भिका, कुम्भोको वारिपर्णः स्यादित्येके ।  
 नीलिकाह्या जलशूषोपि, शेते जलं शेवलं शेवालं च, शीङ्गो-वलञ्चलनवालनः ( उ० ), शेवलं शे-  
 वालमिति तु द्रविडाः । कुमुदिन्यां ( लतायां ) कुमुद्वती, कुमुदनडवैतसंभ्योऽम्बुतुप् ( सू० ) ॥ ३८ ॥ नडाः  
 सभ्यस्यां नलिनी, पुष्करादिभ्योदेशे ( सू० ) इतीति । मुखशब्दात्पुटकिन्थविजिन्यभोजिन्यायाः ।  
 पत्यते लक्ष्मीरत्र पद्मम् । नलाः सन्त्यस्य नलिनम् । अरान् राजाविन्दत्यरविन्दम्, अनुपसर्गाद्धुम्पवि-  
 न्देति ( सू० ) शः ॥ ३९ ॥ शतसहस्रे बहुपलक्षणम् । कमम्बोलति भूयति कमलम्, केन मल्यते वा  
 कमलम् । कुशे जले शेते कुशेशयम् । तामः प्रकर्षो रसोऽस्य तामरसम्, तामः प्रकर्षार्थस्तारतम्यवत्,  
 ताम्यद्भी रस्यते वा ॥ ४० ॥ राज्यः सन्त्यस्य राजीवम् । पुष्पाति पुष्करम् । नालीकं च । पुणति म-  
 गत्यत्वात्पुण्डरीकम् ॥ ४१ ॥ कोकाश्रकाह्वा नदन्त्यरिमन्, आहुश्च-रक्ताब्जे रक्तकुमुदे कुधेः कोक-  
 मदं स्मृणम् । पद्मादिवृत्तस्य द्विलिङ्गार्थपाठः, ( नाला ) णल वन्धे । मृयतेयते मृणालम् । विस्म्यते-  
 ङ्ङृह्यते विस्म । सनेतेर्दे पण्डः, सत्त्वाभावोवाहुलकान् ॥ ४२ ॥ कं रहयतीति, करहान् कूलोऽथान्  
 पद्मादीनटति करहाटः । शिनोति दारयति क्षमां शिफा । कन्धति कन्दं पद्मादिमूलं, कन्धतेविष्यते वा,  
 कन्दोऽस्त्री । किञ्चिजलति जडीभवति किञ्जल्कः । के मरति केसरम् । संवर्तयति वेष्टयति संवर्तिका, पद्मा-  
 दीनां नवोद्भिर्न दलं शरच्चन्द्रिकाख्यम् । बीजातां पद्माक्षाणां कोशो बीजकोशः । वरमटति वराटकः,  
 कर्णिकेत्यर्थः, यच्छाश्वतः-बीजकोशो सरोजस्य कर्पदे च वराटकः ॥ ४३ ॥ इति वारिवर्गः । ९ ।

पद्माकरस्तदागोष्ठी कासारः सरसी सरः ।  
 वेशन्तः पल्लवं चाल्पसरो वापी तु वीर्धिका ॥ २८ ॥  
 खेयं तु परिष्ठाधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।  
 स्यात्वालवालमावालमावापोथ नदी सरित् ॥ २९ ॥  
 तरङ्गिणी शैवलिनी ताटिनी ह्रादिनी धुनी ।  
 स्नातस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥  
 भङ्गा विष्णुपदी जहुतनया सुरनिम्नगा ।  
 भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्तोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥  
 कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।  
 रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥  
 करतोषा सदानीरा बाहुदा सेतवाहिनी ।  
 शुतद्रिस्तु शतद्रुः स्याद्विपाशा तु विपाद स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥  
 शोणो हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याल्पा कृत्रिमा सारित् ।  
 शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा ( गी ) सरस्वती ॥ ३४ ॥  
 कावेरी सरितोन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः ।  
 द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तृत्तरी ॥ ३५ ॥

॥ २८ ॥ ( खेयं ) इवचनः ( सू० ) इति यत्, दुर्गवेष्टनसातिका । परित्यज्यते परिष्ठा, ङः । ( आ-  
 धारः ) क्षेत्रादिसेकार्थं यत् संचयीतेभ्यः । इक्षुसकार्थं तले द्रवतोम्भसः स्थानं, यदाहुः— आलकलं विदु-  
 र्धारा धारणं द्रवतोम्भसः, मुनिश्च— अपां धारणमाधारस्तदलं चालवालकम्, आल्यते सन्त्यते— आल-  
 बालम् । आवलते बहिर्निर्गमादम्भोत्रवालम् । आ— उप्यतेम्भोत्त्रावापः ॥ २९ ॥ नदत् पचादिः, डीप् ।  
 सरति सरित् । हादोस्तस्याः, हृदिनीत्येके । धुनोति धुनी । आ— अपगच्छति, अप्यंवाग्निना वेशे ( ये )-  
 नापेन च गच्छति वापगा । कुलंकषा भिक्षुरिणी शंखावका सरस्वती च ॥ ३० ॥ गां गाते गच्छति  
 गङ्गा, भगं गच्छति वा । विष्णुपदाध्या विष्णुपदा, कुम्भपदीपुच ( सू० ) इति साधुः । जहुना पीता  
 भोत्रेण त्रवतेति जाह्नवी । भगीरथावतारिता भगीरथी ॥ ३१ ॥ ( कालिन्दी ) कलिन्ददेशजा । यमेन  
 यमजा यमुना, यमी च । ( रेवा ) रेवृ प्रवगतौ । नर्मर्ष सोमवंशेन पुरुरवसाज्जितारिता ( नर्मदा ) ।  
 मेकलंदिः प्रभवोऽस्याः ॥ ३२ ॥ गौरीविवाहं हस्ताप्रदानतोयाज्जता ( करतोषा ) । सितेव सेतो ( वा-  
 हिनी ), यन्माला— मन्तव्या बाहुदार्जुनी । बाहुभिर्दायते तीर्थत वाहुदा, बहुदेन कार्तवीर्यार्जुनेनाव-  
 तारितेत्यागमः । शु पूजितमाशु वा तुदति शुतुद्रिः, एतदवुपयमानाः शतद्रुः सितद्रव्याहुः, इमं मे-  
 गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिषि हि श्रुतिः । वसिष्ठशापभयाच्छतधा द्रुवा-शतद्रुः । वसिष्ठं विपाशितवती  
 विपाद् ॥ ३३ ॥ ( शोणः ) नदीयम्, शोणं वर्णगतयोः । हिरण्यं बहुति ( हिरण्यवाहः ) । कृत्रिमाल्पा  
 च क्षेत्रादिसेकार्थं कुल्या, कुले कुटुम्बे साध्वी, यदाहुः— कुल्याधीनं कुलं विद्यादित्या— ( ? ) व्यवस्थिताः ।  
 दांपत्यं कुलाम्बुधेयं कुलं दा दलमुच्यते ॥ सारणी च । शरादीनांच ( सू० ) इति दांप्यं शरावती ।  
 ( चन्द्रभागा ) चन्द्रभागाभ्यां गिरिभ्यां प्रवहति, चन्द्रभागाग्रयामिति ( ग० ) साधुः, चन्द्रेण भागतो-  
 म्यस्ता चन्द्रभागेत्येकः । सरांसि सन्दरस्या सरस्वती ॥ ३४ ॥ कवेरस्य जलदेहस्येयं कावेरी । सरित्शोषा  
 एतं, अन्याः सरयूदविकागोदावरीवेण्यायाः । संगमो भिन्नयोः संभेदो नदीमेलः । प्रणवत्यम्भोनया  
 प्रणाली जलनिर्गमनमार्गो मकरमुखादिः, ( अन्ये ) स्त्रीनपुंसकयोरारुहः ॥ ३५ ॥ तत्रभवः ( सू० ) इत्यण्,  
 वैशिकाशिशोषेति ( सू० ) आवयम्, दाग्निनायनेति ( सू० ) सारवः साधुः । सुगन्धि ( न्ध ) प्रयोजनं

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मः कमठकच्छुपी ।  
 ग्राहोवहारो नक्तु कुम्भीरोध महीलता ॥ २१ ॥  
 गण्डूपदः किंचुलको निपाका गोधिका समे ।  
 रक्तपा तु जलोकायां स्त्रियां भूषि जलौकसः ॥ २२ ॥  
 मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शंखः स्यात्कम्बुरास्त्रियाम् ।  
 धुदशंखाः शंखनखाः (काः) शम्बुका जलशुक्यः ॥ २३ ॥  
 भेकं मण्डरुषर्पाभृशात्तरुषवदंशः ।  
 शिली गण्डुपवी भेकी वर्षाभ्वी कमठी इलिः ॥ २४ ॥  
 महुरस्य भ्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।  
 जलाशयः जलाधारास्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥  
 आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशयं ।  
 पुंस्यवान्शुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥  
 नमिस्त्रिकास्य चीनाहो मुखवन्धनमस्य यत् ।  
 पुष्करिण्यां तु स्नातं स्यादस्नातं देवस्नातकम् ॥ २७ ॥

यद्वापि ग्राहस्तनुनागाहयः, विभाषाप्रदः ( सू० ) इति णः । अबहिद्यतेनेनेति, गोचरादिसूत्रेऽवहारोपी-  
 त्युपसंहयानात् ( वा० ) वप्, पुंसिसंज्ञायां प्रायेण ( सू० ), अवहरति वा, श्याद्व्यथेति ( सू० )  
 णः । न कामति नक्तः । कुम्भिनमरयति कुम्भीरः । ( महीलता ) भूमिसूर्णम कृभिः ॥ २१ ॥  
 गण्डुवो ग्रन्थयः पदान्यस्य गण्डुपदः । किंचिच्छुल्यति किंचुलकः, लकान्तो वाच निजहाति शुच्यति च  
 ( निहाका, इ० ), बिलेशयादन्यायं जलघरः प्राणी । टकः ( गाण्डक ) पिबतेः मुताशोषोरिति ( वा० )  
 नियमादक्षपा, टक, क ह्येके । आ- उच्यते, ओकउचःके ( सू० ), उणादो सान्तोन्यः । शल्कादि-  
 वज्जलकति श्रीभोजः ॥ २२ ॥ मुक्ता स्फुः न्यस्मान्मुक्तास्फोटः । शोकाति शुक्तिः, शुक गतौ, किच् ।  
 शं खनति शाम्यति वा शङ्खः । काम्यते कम्बुः । सूक्ष्मनद्यादिनाः कृमयः, शंखनका इत्यसत् । शुङ्गकाथ ।  
 शं वान्ति शंबुद्या जलमात्रजाः ॥ २३ ॥ भिनोति भेकः । मण्डति मण्डते वा सरो मण्डकः । वर्षासु  
 भवति वर्षाभूः । शलति शालते वा शालरः, शालर इत्येके । प्रवते प्रवः । दणति शङ्खेः कणौ दंरुः ।  
 शिनोति शिलति वा शिली । गण्डुपद्मातौ पुंयोगे वा ह्रस्वः । ( वर्षाभ्वी ) भुवथेति ( उ० ) सान्द्रो  
 डीर् । दोलयति दुलः । कूर्मी च ॥ २४ ॥ महुराहो मत्स्यः । शृणाति शृङ्गी, सादृश्यायोग्यतया भ्रिया ।  
 जलकाकारेण दीर्घकोशत्वत् । दुष्टो नामो नमनमस्या दुर्नामा, दुःसंज्ञेत्येके । जलमाशयो हृदयमस्य जल-  
 शयः, जलमाशेत्यत्र वा । सामान्येनोपक्रमेण तत्र जलाशयेष्वपी विशेषाः संगमान्ताः । ( हृदः ) हावो  
 हृस्वः ॥ २५ ॥ नियतं पिवन्त्यत्र निपानम् । अहयन्तेस्मिन्नाय आहावः, निपानमाहावः ( सू० ) इति  
 साधुः, कूपसमीपे शिलादिनिषेधं पशुनाथ कूपोद्भूतः पशुनाथम् । अनन्त्यनेनान्वयति वान्शुः । प्रज-  
 हात्यम्बु प्रहिः । कुक्षिताः कर्वा- आपात्र कूपः । उदकं पीयतेस्मिन्नुदगानम् ॥ २६ ॥ अस्य कूपस्यान्ते  
 रज्ज्वादिधारणार्थं दाहयन्त्रं च्योत्रिका । कूपस्योर्थे- इष्टेकामिर्धनश्राने चीनाहो नान्दीपदाहयः । पुष्क-  
 रादिव्योदेशे ( सू० ) इतिान्तः । नागादिकण्टमकुत्रिममास्नातमित्येके ॥ २७ ॥ ( तद्गः ) तद् आघाते,  
 तडाक इत्येके, तगन्धकाते तडाकमित्ये । पद्माहरो योग्यत्वत् । कनामस्यैव कासारः, कासपृच्छति  
 वा नद्धाशुत्वान् । महत्तरः सरसी, गौरादिवाद्दोष ( पिद्रोषादिग्रन्थ ) । विशन्ति मज्जन्यस्मिन्ने-  
 दन्तः, मज्ज । पलते पल्लवः, पल गडो । उच्यतेस्यां वापी । दीर्घेन दीर्घका, संज्ञायां कन् ( सू० )

क्षीर्बर्धनायं नावोधेतीतनीकेतिनु त्रिषु ।

त्रिष्यागाधात्प्रसञ्जोच्छः कलुषानच्छ आविलः ॥ १४ ॥

निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्ययं ।

अगाधमतलस्पर्श केवर्तं दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

आमायः पुंसि जालं स्याच्छृणसूत्रं पवित्रकम् ।

मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्वडिशं मत्स्यवन्धनम् ॥ १६ ॥

पृथुरामा क्षपो मत्स्याः मीनो विसारिणोण्डजः ।

विसारः शकली चाथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उल्पी शिशुकः समी ।

नलर्मानश्चिलिचिमः प्रोप्री तु शफरी द्वयाः ॥ १८ ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथा क्षपाः ।

रोहिता मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

तिमिगिलाव्यश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।

तज्जदाः शिशुमाराद्रशङ्कवो मकरादयः ॥ २० ॥

अधिकारोयम्, अभिविधावाह । अच्छद्यते न च्छद्यते वाचलः । क लृपाति दिनस्ति कलषः । आ-  
अव-एलयत्नाविलः, आविश्यते- आभियते वा, विल भेदते ॥ १४ ॥ नमति निमनति वा निम्नं,  
म्ना अभ्यासे । गम्भीरं भियं राति गभीरं गम्भीरं वा । ऊर्ध्वं तन्यते- उत्तानं गभीरादन्यत् । नास्ति गाधः  
प्रतिष्ठास्यागाधम् । नास्ति तलेधःस्पर्शोस्यातलस्पर्शम् । के( जले ) वर्तते केवर्तो मत्स्यादिस्तस्यर्थं  
(घातकः) । यति दशति दाशोति वा मत्स्यान्दाशः । धीयते- आत्रियते धीवरः ॥ १५ ॥ कुत्सितं वेणुस्त-  
स्यां मत्स्याः कुवेणी, वेणु गतो, मत्स्यवन्धनीत्यर्थः । मत्स्यकरुण्डिका च । बलिनः (मत्स्यान्) द्याति  
बलिशम् । विष्यतेनेन वेधनं, विध विधान इत्यस्मत्, व्यधव्यधनमिति स्यात् ॥ १६ ॥ रोम पक्षेत्रं ।  
क्षपति क्षपः । मायति मत्स्यः, मच्छापि । मानाति मानः । मण्णादी (नन्दिप्रहोति) विसारी,  
ततो विसारिणः, विसारिणोमत्स्ये ( मू० ) इति स्वाथेऽण् । सुस्थिरे ( सू० ), व्याधिमत्स्य-  
बलेषु ( वा० ) इति कर्तरि विसारः । शकलानि पृष्टे सन्त्यस्य शकली, सशल्क इत्यर्थः ।  
शल्की च । गडति पुच्छच्छेदनास्तिवति गडकः । शकुलोत्र मत्स्यमाते ॥ १७ ॥ विशेषा-  
नाह । सहस्रदंष्ट्रो वादालो नाम मत्स्यः । पाठीनश्चित्रवक्त्रिः, बहुदंष्ट्रत्वात्पत्यतीति, भक्ष्यत्वेन पठ्यते  
वा । एतौ सादृश्यात्पर्यायौ । शिशुमारप्रतिकृतिः ( शिशुकः ) । उलूगीव्रन्तः, उल्हृपताति । सुपिर-  
तृणान्तथारी नलर्मानः नडाभो वा । चीयते मीयते च चिलिचिमः, चिलिचिमश्चिदोपपृष्टिदित वैद्याः ।  
प्रोपति पित्तकारित्वाप्रोप्री । शफान् राति शीघ्रगत्वाच्छफरी ॥ १८ ॥ सूक्ष्माथण्डात्रिःमृताश्च मत्स्याः  
क्षुद्राण्डमत्स्याः । पोता आधीयन्तेत्र पोताधानम् । क्षपा मत्स्याविशपा अमी । रोहिता रचत्वात् । मज्जति  
मद्गुरः । शालति शालते वा शालः । राज्यः सन्यस्य राजीवो वज्राभः । शक्नोति गन्तुं शकुलः ।  
तिम्यति तिमिः ॥ १९ ॥ तिमि गिलति तिमिगिलः, गिलेऽगिलस्य (वा०) इति मुम् । आदिशब्दात्तिमिगिल-  
गिलनन्यान्दी । जतादयः । याति यादः । जलजन्तुर्जलचरः । उन्नयुदः । शङ्कतेस्माच्छङ्कुः । मा कुर्या-  
त्किञ्चिदिति त्रस्यन्त्यरामान्मकरः । आदिशब्दाज्जलहस्तिप्राहायाः ॥ २० ॥ का लीयते कुलीरः, कुलिन-  
मीरयति वा, जनकभक्षत्वात्, यत्कौटिल्यः- कर्केटसधर्माणां हि राजपुत्रा जनकभक्षाः । कृणोति  
कर्केटकः । कुरति कुमूर्वति वा कूर्मः । काम्यते यज्ञार्थं के मर्धात वा कमटः । कच्छेन पिबति कच्छपः ।



पारावारे परार्वाची तीरे पात्रं तदन्तरम् ।

द्वीपांस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥

तोयांत्थितं तत्पुलिनं सिकतं सिकतामयम् ।

निर्ध्वरस्तु जम्बालः पट्टकोस्त्री शवकवंमी ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्यं स्त्रियां नौस्तरणिस्तरीः-रिः ॥ १० ॥

उडुपस्तु (पं तु) प्रवः कोलः स्रोतोम्बुसरणं स्वतः ।

आतरस्तरपण्यं स्याद् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्कर्णधारस्तु नाविकः ।

नियामकाः पोतवाहाः कूपकाः गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षे (क्षि)पणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।

अभिः स्त्री काष्ठकुडालः सेकपात्रं तु संचनम् ॥ १३ ॥

कुलमन्तारं स्यात् । परावाची इत्येके, अर्वाक्षब्दस्याव्ययत्वात् । न वारियतेस्यावारं न प्रियते वा । तयोः  
कुलयोर्मध्यं, पीयते पात्रं प्रवाहः । द्विधा गता आपोश्च द्वीपम् । अन्तरपामन्तरीपं, द्वयन्तरपसर्गभ्यापेक्ष  
(मू०), ऋक्पूरश्चरिति (मू०) अः समासान्तः ॥ ८ ॥ तत्तटं तोयात्कमेणोत्थितं पुलिने, पुलो महस्वमस्वा-  
स्तांत, तद् द्वीपमिति माला- वा ना द्वीपं च पुलिनम् । तदेव प्रकृतं पुलिनं, सिकतास्यास्ति सिकतं, देशे लु-  
लचांच (मू०) इत्यण् । [ निपीदन्त्यस्मिन् निपीदन्तं कृणोति वा निध्वरः । जमति प्रसते जम्बालः ।  
पञ्च्यते पट्टकः । शीयन्तोस्मज्जशब्दः । कृणोति कर्दमः ] । विश्वलथ ॥ ९ ॥ जलं प्रवृद्धमुच्छ्वासीति  
परिवहने यानि गममार्गैरेव परीवाहाः, यद्वश्यं- उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम् । तटाको (तटगो)  
दरसंस्थानां परीवाह इवाम्बुसाम् ( पंचतन्त्र ) ( चाणक्यश. ) ॥ परिव्राहोपि । कूपप्रतिकृतिः कूपकाः,  
शुष्कनद्यादौ जलार्थं गताः क्रियन्ते, यत्कात्यः- विवरान् कूपकानाहुः । विदारयति इमां विदारकाः,  
मालाच- चुण्डी ( ण्डा ) विवरोत्साद्य कूपकाः । ( नाव्यं ) नौवयोधमेति ( सू० ) यत् । नुयते नौः,  
ग्लान्दिभ्यांढीः ( उ० ) । तरन्त्यनया तरणिस्तरीश्च ॥ १० ॥ उडु-वते- उडुपस्तृणद्वयः । क्वन्तेनेव  
कोलः, कोलति संस्थापयति वा कोलः, यच्छ्वाभ्रवतः- पोतप्रवृत्तयोः कोलः कोलं तु वदीफलम् ।  
स्वतः कृतिमम् । आतरन्त्यनेनातरः, आवाप इत्येके । पणन्तेनेन पणः, पणे साधु पण्यं मूल्यं, साधौ  
( तत्रसाधु ) यत् । काष्ठमुपलक्षणं, काष्ठारमादिनयी जलधारिणी द्रोणी, द्रवत्यम्भोस्याम्, द्रोणिका त्व-  
म्बुवाहिनीत्येके पट्टः ॥ ११ ॥ समुद्दितानां यानं संयात्रा, सा प्रयोजनमस्य ( प्रयोजनम् ) सांयात्रिकः ।  
पवते वातेन पोता वाहनम् । कर्णो रितं, कर्णः श्रोत्रमरित्रं चेति दुर्गः । नावा तरति नाविकः, नौद्वय-  
चक्रन् (मू०) । निबन्तुं शक्ता- नियामकाः । निपा ( र्या ) माथ । गुणवृक्षो बत्र नौरज्ज्वा बध्यते, पोते  
ध्वजपदायाधार इत्येके । कूपे- आधारगते कायति कूपकः, गीडस्तु जलान्तस्तस्मैकूपकानाह ॥ १२ ॥  
येन नौवाहिनेसौ नौकादण्डः । क्षिप्यतेनश्च क्षेपणी, क्षेपण्यपभ्रंशः, क्षिपेत्पुपाध्यायः । के जले नावो  
बेन निपातयन्ति स केनिपातः, हलदन्तादिति (मू०) अलुक् । इत्यर्थेनारित्रम्, स्फयादि कोटिपात्रं  
वा । न बिभर्त्यभिः । काष्ठे कुडालः काष्ठमयो वा, येन निखन्यते भ्रमं पोतादिकं कुपेन पूर्यते । ( संचनं )  
येन नावो जलमुच्छ्रियते ॥ १३ ॥ क्वचित्- यानपात्रं तु पोतादिविभवे त्रिषु समुद्रियम् । सामुद्रिको मनु-  
ष्योऽपि ज्ञातादौ नौः सामुद्रिकः [ ज्ञाता सामुद्रिकः च नौः ] ॥ अर्थे नावोर्धेनानां, नावोद्दिगोः ( सू० ),  
अर्थाच्च (मू०) इति टच् । नावनतिक्रान्तमतिनु जलम्, अतिनीः पुमान् स्त्री वा । तिष्ठागाणात्-



समुद्रोब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोर्णवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलमिधिर्यक्षः पतिरपापतिः ।

तस्य प्रभदाः क्षीरोक्षी लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूमिर्वावीरि सलिलं कमलं जलम् ।

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।

अम्भोणस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशं ( सं ) वरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

भङ्गस्तरङ्गश्च जमिर्वा स्त्रियां वीचिरयोमिषु ॥ ५ ॥

महःसलालकल्लोलौ स्यादावतोम्भसां भ्रमः ।

पृषन्ति त्रिन्दुपृषताः पुमांसो विपुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥

चक्राणि पुटभेदाश्च भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।

कूलं रोधध तीरं च प्रतीरं च तटे त्रिषु ॥ ७ ॥

समुनति समुद्रः । अर्- उदकं भायते स्मिन्मन्त्रिभ्यश्च, कर्मण्यधिकरणेन च ( सू० ) इति किं, पेयवासवाहनपिबुच ( सू० ) इत्युदकस्येदः । न कुं पृथ्वाति मर्यादापालनादकूपारः । पारमार्थ्येणोति पारावारः, पारमिवावारमस्य वा पुष्करं च । उदकमस्त्यस्योदन्वान्, उदन्वानुदधौ च ( सू० ) इति साधुः । स्पन्दने सिन्धुः । सरणि रन्त्यस्य सास्त्रान् । सगरः खातः सागरः । अणोस्त्यास्त्यर्णवः, अण- सोलंपथ ( वा० ) इति वः सलोपश्च ॥ १ ॥ यादांसं पाति यादुपतिः, पाथः पतिरित्येके । मुगममेव हि मस्यमपापतेः— इति दर्शितव्यमस्ये पठया अलुह । वीचिनाली सर [ सर ] श्वजोऽवारपारथ । ( सारिदः ) उदकस्योदः सङ्गमः ( सू० ) । अपरं दानुदपूतदगुत्तेदेक्षदस्वाददाः ॥ २ ॥ आप्नुवन्त्यापः स्त्रियां बहुवे । पृषाति वावीरि च । सरति सलिलं, रलयोरिवम् । काम्येने कमलम् । जडति जलम् । पयने पीयते वा पयः, पय गते, पांइ पाने । कीला ज्वाला अलति वारयति कीलालम् । मन्वत्यस्मात्सर्वं भुवनम् ॥ ३ ॥ कं वान्ति कवन्धं, यच्छाश्वतः— कवन्धं सलिले हण्डे । कमन्धामिति द्वे नाप्ती इत्येके । अनस्युदकम् । पीयते पाति वा पाथः । पुष्पाति पुष्करम् । सर्वतोमुखं सर्वदिगन्तेः । अमत्यम्भः । कृणोत्यर्णः । तुदति ताति वा तोय, तुः तोय आवरणार्थं वा । नयति नीरम् । [ पश्यते क्षियाति वा क्षीरम् ] । अम्बुनि ( ते ) अम्बु । शं पृषाति शंवरम् ॥ ४ ॥ मेघानां पुष्पं प्रसभः । दकं जीवनं च, यथा इकलावणिकाः । ( अपां विचारोममयम् ) एकाचोनिर्गमं ( वा० ) इति मयद् । आप्यं तु लक्ष्यान्, अत एव आप्येति चान्द्रं सूत्रम् । ( भङ्ग ६० ) भङ्ग्यते तरत्युपतिं केति वाक्यानि, जमिर्वा ज्रियामिति काकाक्षिवत् । वीची तु निर्ये श्री ॥ ५ ॥ जलं लोलः [ लोलयति ] उदालः । कल्लन्तेनेन मयं इति कल्लोलः, कुलितो लोल इत्येके । लहरी- औपश्च । आवर्तते मण्डलेन भ्रमत्यावर्तः । पपति मिमंस्त्रिपृपत्, रूपभेदाक्षीब । विन्दति विन्दुः, बिदि अवयवे । दिगतः प्रोषो दाहोऽस्या विपुट ॥ ६ ॥ चक्राकारेण यान्त्यधः ( चक्राणि ) । पुटं भिच्चा निर्यान्तीत्युपपत्त्योत्प्रेक्षा । वक्राणीति माला । नदी- यद्वाहया इति च गौडो भ्रान्तः । तेन तान्ये भ्रमाः प्रगत्याया जलपथाः । कूलति कूलं, कूल आवरणे । हण्यम्भो रोधः । तरन्त्यस्मात्तीरम् । तीरप्रतीरे दीपप्रदीपवत् । तव्यते आहन्यतेम्भसा तटम् ॥ ७ ॥ ( नयाः ) परे पार्श्वे कूलं पारं, पार्यते समाप्यतेस्मिन्नि वा । अवीक् पार्श्वे कूलमवारम्, यदाह— अवीक्

पुंसि कृषि च काकोलकालकूटहलाहलाः ।  
 सौराष्ट्रिकः शौक्लिकयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥  
 वारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।  
 विषवेद्यो जाङ्गुलिको घ्यालमाह्वहितुण्डिकः ॥ ११ ॥  
 इति पातालभोगिवर्गः । ७ ।

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।  
 तद्भेदास्तपनावीचिमहारीरवरीरवाः ॥ १ ॥  
 संहारः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्त्वास्तु नारकाः ।  
 प्रेता वैतरणी सिन्धुः स्यादलक्ष्मीस्तु निःक्रन्तिः ॥ २ ॥  
 विष्टिराजुः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।  
 पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥  
 स्यात्कष्टं कुच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भयगामि यत् ॥ ४ ॥  
 इति नरकवर्गः । ८ ।

लघुतनुस्यमहो कलत्रं हालाहलं विषमित्राप्रगुण तदेव, यथा— कानमपायि मंगेन्द्रयकुण्डेयपि दुष्कृत-  
 हालहलंघः, यथा वा— मधु तिष्ठति वाचि योषितां हस्ये हालाहलं महाविषम् (भट्ट० गृङ्गा० ) । सुराष्ट्र-  
 शुक्लिकदरस्तु देशेषु भवाः सौराष्ट्रिकादयः । ब्रह्मणः पुत्रः [ यद् याज्ञहल्क्यः— त्वं विष ब्रह्मणः पुत्रः  
 सत्ये धर्मे व्यवस्थितः ] ॥ १० ॥ वत्सस्येव नाभिरस्य वत्सनाभः । ( जाङ्गुलिकः ) वसन्ता-  
 दिन्वान् ( सू० ) ठकू, जाङ्गुलिको विषमित्रागिति भागुरिः । आदिगुणैर्न दीव्यति ( आदिगुणिकः )  
 ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्गः । ७ ।

नराः कथयन्त्यास्मिन् नरकः । ( नारकः ) अन्येनानपि ( अन्येभ्योपिदयते ) इति बाहुलकाद्वा  
 दीर्घः । निष्कान्तः— अयान्निरयः, अयोनिकूलं देवम् । तपति सतःपर्याप्तं तपनः, तपन्त्यनेन वा । अन्त्य-  
 स्मादवीचिः, विरुद्धा वीचयोश्च वा, स्त्रियामपि । इहर्हिहः कन्दश्च तत्र भेदो रौरवः ॥ १ ॥  
 संहियन्तेत्र संहारः, संधात इत्येके । कालान्ययोमयानि मूत्रभ्यत्र कालमूत्रम् । आयशब्दात्ता-  
 मिस्रान्यतामिस्रदयः । सत्त्वाः प्राणिनः, सीदन्तीति । प्रकपेयताः प्रेताः । प्रेता अतिवाहिका ( ता )-  
 ध । नारको नदी, विगततरणो व्यर्थे पाताल मवा वैतरणी, विगततरणिविनीका वा । निष्कान्ता ऋतेः स-  
 न्मार्गान्निर्धृतिः ॥ २ ॥ विशतिं क्लेशं विशिर्नरके हठाक्षेपः । आजयने—आजुः, किञ्चिच्चच्छेति ( वा० ) कि-  
 न्दीर्घां, आ— अजयते वा, आजयेतनयोर्विष्टिः कर्मकर्मणोरपाति शङ्भवतः । ( कारणा ) कृष् हिंसायां,  
 णिच् । यत निकारादौ, णिच्, सतयान यातना नारकएक । दुष्टानि स्वान्त्यास्मिन् दुःखम् । प्रसूतेर्जात  
 दुःखं, ( आमनस्यं ) अमनसा भवः, वेमनस्यमित्यर्थः । पंडपि मनःपीडाश्च इति सभ्याः, यन्माला-  
 दुःखं प्रसूतिजं क्लृबे पीडा बाधा च वेदना, दुःखमाधिः प्रसूतिजमिति कात्यायः ॥ ३ ॥ कषिध्यात कष्टं  
 कष्टमविध्यतास्याहुः ( का० ), कुच्छ्रगहनयोःकृपः ( सू० ) इति नेट् । कर्पति कृन्तति वा कुच्छ्रम्,  
 आसमन्ताद्विषं लातीति—आभीलम् । एतानि शरीरपीडाधानि, लक्ष्ये तु नवाप्येकार्थाः । एषां दुःखादीनां  
 मध्याद्विशेषानिष्टा दुःखकष्टकृच्छ्राखिलिङ्गाः, यथा— सेयं दुःखा च दुरुपपादा च, दुःखः सुतो निर्गुणः,  
 सर्वं दुःखं विवेकिनः ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः । ८ ।

त्रिष्वक्संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः ।  
 शेषानन्तो वासुकिस्तु सर्पराजंथ गंगनसे ॥ ४ ॥  
 तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्बाहस इत्युभौ ।  
 अलगर्वा जलव्यालः समौ राजिलदुण्डुभौ ॥ ५ ॥  
 मालुधानां मातुलाहिर्निर्मुक्ता मुक्तकञ्चुकः ।  
 सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगाहिर्भुजगमः ॥ ६ ॥  
 आशीविषां विषधरश्चकी व्यालः सरीसृपः ।  
 कुण्डली गृहपाञ्चशुश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥  
 दर्वीकरो वीर्यपृष्ठा वन्दशूको बिलेशयः ।  
 उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥  
 त्रिधाहयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयः ।  
 समौ कञ्चुकनिर्मोको श्येडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

( शेषः ) शेषे हरिस्मिन् शिष्यते वा । वसुक्षयापर्यं वासुकिः । नागिन् नासिकास्य, अन्नासिकायाः संज्ञायान्तवस्थूलः ( मू० ) । गोनासाय नियोजितागदरजाः ( विद्वत्काल० ) इति गोनासिभिः ॥ ४ ॥  
 ( तिलित्सः ) तिल गतो । चरिन्द्रोपि । अजो गिरलजगमः, अजो नियो गरोस्य वा । शेतल्वं शयुः ।  
 बाहं गति स्थिति बाहमः— अचलः । चक्रमण्डली च । न लम्बयदयति निर्विपचान्, अलोव गर्दलालिगर्द इत्येके । राजि देहे लाति राजिलः । दुण्डु इति दुण्डुभः, दुडि हुडि निमज्जनं, दुण्डु [ ड ] भाषते दुण्डु [ ड ] इत्येके, निर्विषो द्विमुखोद्दिः, लक्ष्यं च— किं महोरगविषादिभिरुक्ते राजिलेषु गहडः प्रवर्तते ( रघु० ) ॥ ५ ॥ मालुर्मानुलाह्यौपथिस्तव धानमस्य मालुधानः । सर्पभेदा एते । ( मुक्त-  
 कम्बुकः ) सर्प इति शेषः । सर्पति सर्पः । विषये व्याप्यच्छति पृदाकुः । भुजेन कोटित्वेन गच्छति, गमेः मुपि ( वा० ), खचोडिद्वा ( वा० ), गमश्च ( मू० ) इति डः खच, एवं त्रेऽप्यम् । अंहल्योहिः ॥ ६ ॥  
 आश्यां विषमस्य, आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तथा विद्धो न जीवति, पृष्ठादगादित्वान् ( मू० ) रेफलोपे आशीशब्दायामिति सभ्याः । चक्रं मण्डलाकारतास्यास्ति चकी । व्याडनं हनुमुद्यमोस्यास्ति व्यालः, अड उद्यमं । कुटिलं सर्पति सरीसृपः, नित्यंकोटित्वेन गतो ( मू० ) इति यड, ( यडोचिचेति ) लृक्, पचाद्यञ् ( नन्दिप्रहिपचादाति ), रोड्कृतः ( मू० ) । गूडाः पादा अस्य गूडपान् । चधुपी श्रवसी अस्य चधुःश्रवाः, अत एव गोकर्णः । काकस्येवादरमस्य काकोदरः, काकोलं विषमुदरस्य वा ॥ ७ ॥  
 दर्वीकः फण एव करोस्य प्रहारादौ दर्वीकरः । गर्हितं दशति दन्दशूकः, लुप्तदन्तरि ( मू० ) यड्, यजजपदशायडः ( मू० ) इत्युक्, जपजभदहेति ( मू० ) अनुस्वार । बिले शोतं बिलेशयः, शयज्ञास-  
 वासिध्वकालान् ( मू० ) इति समस्या अलुक् । उरसा गच्छत्युरगः, उरनोलेपश्च ( वा० ) इति डः । पदभ्यां न गच्छति ( पन्नगः ), नन्नाणनपाद— ( मू० ) इत्यस्यापलक्षणत्वात्प्रत्यु प्रकृत्या । भोगः सर्पदेहः कुटिला गतिर्वास्यास्ति भोगी । जिह्मं वक्त्रं गच्छति जिह्मगः । कुम्भानमः कञ्चुको लोलहानश्च । राज-  
 सर्पां भुजगभुक् ॥ ८ ॥ आहो भ्रममाहयं, दृतिकुक्षति ( मू० ) दृत् । स्फटन्ति विशार्यन्तनया स्फटा, द्वयोर्वर्तमानायां स्फटायां फणापि द्वयोः, फटत्येके । फण गतो ( फणा ) । दर्वीः कफेलुश्च । कञ्चुकमिव कन्नयते बभ्यतेनेन् ( कञ्चुकः ) । निर्मुच्यते निर्मोकोदित्वक् । निर्वज्यनी च । श्वेदं मोहयति श्वेडः । गिरति जीवं गरः, गरं लाति गरल श्यामदयमलवन् ॥ ९ ॥ नवामी विषप्रकाराः । काकमेव चः काकोलः, ईपकोलति संस्त्यायति वा । कालस्य वर्णस्य कृतोत्र कालकृतः, मृत्युसंबन्धो व्याजो वा । हलाति विलि-  
 षति जतरं न विलिखति च हलाहलः, हालेव हलतीति लक्ष्यं हालाहलो हालहलश्च, यथा— स्निग्धं भव-

कन्दितं रुदितं कुट्टं जुम्भस्तु त्रिषु जुम्भणम् ।  
 विप्रलम्भां विसंवादां रिङ्खणं स्वलनं समं ॥ ३६ ॥  
 स्याद्विद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ।  
 तन्द्री प्रमीला भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः क्षियाम् ॥ ३७ ॥  
 अदृष्टिः स्यादसौम्येक्षिण संसिद्धिप्रकृती त्विमे ।  
 स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः ॥ ३८ ॥  
 कम्पोथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३९ ॥

इति नाट्यवर्गः । ६ ।

अधोभुवनपातालवलिसद्गरसातलम् ।  
 नागलांकांथ कुहरं सु( शु )षिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥  
 छिद्रं निर्व्ययनं रोके रन्ध्रं श्वभ्रं वषा सु( शु )षिः ।  
 गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रं सु( शु )षिरं त्रिषु ॥ २ ॥  
 अन्धकारोस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।  
 ध्वान्ते गाढन्ध्रतमसं क्षीणवतमसं तमः ॥ ३ ॥

दर्शनाग्नेष्टम् । अङ्गीकृतासंपादनं ( विसंवादः ) । स्वधर्मादेः स्वयत्नं ( रिङ्खणं ), रिखिलाकिकः, रिङ्गणमिल्यंके ॥ ३६ ॥ नियतं द्रायेतस्यां निद्रा । संविशन्तीन्द्रियाण्यत्र संवेशः । स्वानं स्वप्नः, स्वपोनम् ( सू० ) । इन्द्रियोणां तननं द्रायेतस्यां तन्द्री; निद्रा तन्द्रेत्यावन्तेऽपि । प्रमीलन्तीन्द्रियाण्यस्यां प्रमीला । भ्रुकुटिष्वे भ्रुकुसवःत्रैरूपम् । अन्ये त्वदृष्टिरित्येतेन संबन्धनिन, यदहुः— भ्रुकुटिर्देगमोम्या स्यात् ॥ ३७ ॥ सोमदेवताकत्वेन लक्षणयाधिकृतं सौम्यं, सोमादृष्टम् ( सू० ), शाखादिवात् ( सू० ) सोम्य इत्याहुः । असौम्ये विरुद्धे दर्शन इत्यर्थः । इमे द्वे क्षियां स्वरूपादेः पर्यायौ ॥ ३८ ॥ ( वेपथुः ) विनोभुत् ( सू० ) । क्षणुते दुःखं क्षणः । महः— अकारान्तः, सान्तस्तु तेजार्थः ऋषे । उद्धर्षति दुःखमुद्धः । उत्सृते सुखमुत्सवः । उद्धर्षणमुल्लसनं नैधिन्यं निर्धृतिः । प्रयोगार्थं संगीतकं गुणनिका । प्राङ् नाट्यात्पूर्वरङ्गः स्यात् । नाट्यार्थोपक्षेपः पूर्वं प्रस्तावना मुखं च स्यात् ॥ ३९ ॥ इति नाट्यवर्गः । ६ ।

पतन्त्यस्मिन् पातालम् । रसायास्तलमधः, रसा भूतलं पृष्ठं वायुः कृत्वा हरति विस्मापकं वा कुहरम् । सुषिर्धर्ममात्रेपि मधुवत्, ऊपमुशीतिरः ( सू० ) । शाश्वतस्तु निरस्तावययौ सुषिर-मुशी मन्यते, यदाहुः— गते गतोन्विते वायविशेषे सुषिरं त्रिषु । निविश्यते विवरम् । बिलंति बिलं, बिल भेदने ॥ १ ॥ छिद्य ( द्य ) ते छिद्रम् । निर्व्ययनेन निर्व्ययनम् । रोकेते प्रकाशतेनेन रौति वा रोक्म् । रगति रन्ध्रम् । श्वभ्रौति [ भ्रान्तं ] श्वभ्रम् । उप्यतेस्यां वषा, मिश्रदित्वाद् ( सू० ) । त्रिषु स्थिति सुषिः । गिरति गर्तः, गर्तापि । अवन्त्यस्मादवतः । सिद्धस्थानुशाराच्छुभ्रं भूतन्मैव, यत्कात्याः— श्वभ्र-गतविदागाधा भुवो विवरबाचकाः ॥ २ ॥ अन्यं करोत्यन्वकारः । धुन्वस्वान्तेति ( सू० ) ध्वान्तं साधुः । तमोस्थ.स्तीति तमिस्रं, ज्योत्स्नातमिष्येति ( सू० ) साधुः, क्षीतमतन्मम् । तिश्यतीव तिमिरम् । ताम्यन्त्यनेन तमः, अमुन् । भूभिच्छावं च । अन्वयत्यन्व्यं च तत्तमध्वान्तममम्, अवसमन्धे-भ्यस्तमसः ( सू० ) इत्यच् । क्षीणे ध्वान्तेवहीनं च तत्तमध्वान्तममम् ॥ ३ ॥ ( संतमसम् ) समन्तात्तमः । न-अगा नागाः, नञ्राडिति ( सू० ) नम् प्रकृत्या । कदा अपत्यानि काहवेयाः, शुभ्रादित्वात् ( सू० ) बद्ध, न तु— क्षीभ्योत्क् ( सू० ) कटुकमण्डलवोच्छन्दस्यङ्गिषेः ( सू० ), सर्वेभ्योन्वे देवयोनयोमी ।



कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ॥ ३१ ॥

स्त्रीणां विलासविध्वोकविभ्रमा ललितं तथा ।

हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ॥ ३२ ॥

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा ली(खे)ला च नर्म च ।

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडाखेला च कूर्दनम् ॥ ३३ ॥

धर्मो निदाघः स्वेवः स्यात्प्रलयो नष्टचष्टता ।

अवहित्थाकारगुप्तिः समौ संवेगसंज्ञमी ॥ ३४ ॥

स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक स्मितम् ।

मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ॥ ३५ ॥

तन्यते वा ( कुतुकं ), प्रज्ञादिवात् ( सू० ) स्वार्थे वाण्, तुल्यैकिको वा ॥ ३१ ॥ शृङ्गारभावभ्यो रत्यादि-  
भ्यो मनोविकारभ्यो जाताः क्रियाश्चेष्टा अलंकाराख्या लीलादयः ( हावाः ), ह्यन्यननेति हावः, यदाह-  
स्याद् भावमूवको हावो हेलास्यैवानुभावनम् । हिल हावकरणे, हेल् अनादरे वा । इति शब्दात्प्रकारार्थो-  
क्तिलिखितादयोपि । अत्र भरतः- अलंकाराश्च नाट्यज्ञेयया भावरसाश्रयाः । यौवनेभ्याधि-  
काः स्त्रीणां विकारा वक्त्रगोचराः । देहात्मकं भवेत्सर्वं सत्त्वाद्वायुः समुत्थितः । भावाभ्यमुत्थितो हावो  
हावादेला समुत्थिता ॥ तथा- हावः शृङ्गारभावामौ रम्योक्तिस्मितवर्धितम् । शृङ्गारप्रीडिमा हेला  
हेवाको यौवने हि यः ॥ किं च- लीला विलासो विच्छित्तिर्विभ्रमः किलकिञ्चितम् । मोहायितं कुट्टिमेतं  
विध्वोको ललितं तथा । विहृतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः ॥ प्रियस्यानुकृतिर्लीला स्मिहा  
वाग्वेषचेष्टितैः, लीङ् श्लेषणे । विलासोऽङ्गे विशेषो यः प्रियाप्तावासनादिषु, लस श्लेषणे । मन्दनानादर-  
स्यासौ विशिष्टा रूपदर्पतः, विशिष्टा क्षितिर्भक्तिरित्यर्थः । चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो मत्तः ।  
हर्षाद्गदितगीतादिव्यामिश्रं किल [ लि ] किञ्चितं, अलीकं किञ्चितमित्यर्थः, किलीति कष्टकृञितं वा,  
यया किलिकिलारावः । मोहायितं प्रियं स्मृत्वा साङ्गमङ्गविजृम्भणम्, सुट् प्रमदने । दुःखोपचारः  
सौख्येपि हर्षात्कुट्टिमेतं सतम्, कुट्ट च्छेदनादौ, तेन मितं, इत्थं लक्ष्यात् । विध्वोक्तेभिममतप्राप्तावपि  
गर्वादनादः, विषु क्षेपे, विपूर्वस्य वृकृतेवापञ्चशो विध्वोकः । अनाचार्योपदिष्टं स्यादलितं रतिचेष्टितम् ।  
वक्तव्याभाषणं व्याजाद्विहृतं दर्शितोद्भूतम्, अवसरागतं वचनं व्याजादिना हनं विहृतम् ॥ ३२ ॥  
द्रवति हृदयमनेन द्रवः । किलन्यनेन कलिः, किल क्रीडायां, केल चलने वा । नृणाति नर्म । वक्त्रोपि ।  
व्यञ्जयत इति व्याजोत्र स्वरूपाच्छादनं, यथा- ध्यानव्याजमुपेत्य चिन्तयसि काम् ( नामा० ) । अपदि-  
श्यतेपदेशः, अतद्रूपस्य तादृश्यं क्रीडायां वक्षनेयम् । स इव लक्ष्यते लक्ष्यम् । निभच्छलच्छद्यादयो-  
प्युपचारात् । एते केलिपरिष्वकिते रुढाः, क्रीडया खेलनं, लुक्का ( वा लुक्का ! ) मणिक्रीडायेकं ।  
( कूर्दनं ) कुर्दनमित्येके, कुर्द क्रीडायां, उपधायाञ्च ( सू० ) इति दीर्घाभावाधन्यः ॥ ३३ ॥ जिघर्ष-  
नेनाहर्ण धर्मः । निदशतेनेन निदाघः, न्यदकादिः ( सू० ) । प्रलीयते क्रियात् प्रलयः सान्त्विको भावः,  
मूर्च्छैत्यर्थः, यदाहुः- स्तम्भे विचेतनत्वं प्रलये गतचेतनत्वमत एव । सहसेव निपतनं भुवि भवति  
महाभूतशेषित्यान् ॥ ( अवहित्था ) अङ्गैकतस्य रोमाश्चादच्छादनादबहिःस्थितत्वम्, अवहित्थमित्येके ।  
( संवेगः ) भयादिना कर्मस्वावेगः ॥ ३४ ॥ उत्प्रास्यते सामर्थ्यान्यः क्रियतेनेन, सोपहास इत्यर्थः,  
आश्चर्यपूर्णं परच्छेदनम्, अवच्छुरितमिति कात्यः । स हास ईषिस्मितहास्यः । रोम्पामखनं रोमाश्चः,  
रोमाणि ह्यन्यन्येन रोमहर्षणम् । पुलको रोमविक्रियापि ॥ ३५ ॥ ( कन्दितं ) भावे कः ( नपुंसके  
भावेकः ) । ( मृम्भः ) मुखादिविकासः, घञि पुमान्, अप्रलये ( सू० ) क्री, क्रीडत्वं त्वञ्चिधो भयादिष्व-



क्षान्तिस्तितिक्षाभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।  
 अक्षान्तिरीर्ष्यासूया तु बोध्यरोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥  
 वरं विरोधा विद्वेजो मनुशोकी तु शुक् खियाम् ।  
 पश्चात्तापोनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥  
 क्रांत्पक्रांथामर्षरोषप्रतिधा रुदकुधौ खियाम् ।  
 शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥  
 प्रेमा ना प्रियता हार्द्व प्रेम स्नेहोथ बोहदम् ।  
 इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा वृद्ध याञ्छालिप्ता मनोरथः ॥ २७ ॥  
 कामाभिलाषस्तर्षश्च सौत्यर्थ लालसा द्वयोः ।  
 उपाधिर्ना धर्मचिन्तापुंस्याधिमर्त्तसी व्यथा ॥ २८ ॥  
 स्याच्चिन्ता स्पृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे ।  
 उत्साहांध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥  
 कपटोत्सी व्याजद्वंभोपध्वञ्छुन्नकैतवं ।  
 कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादो नवधानता ॥ ३० ॥

मन्दसक्षि यत्र तन्मन्दासम् । क्रीडावनम्रवत्रेन्दुरिति स्वोन्मलज्जावशाद्द्विवधुरवनमति मुखमिति मन्दास्व-  
 मित्येकं । ( क्रीडा ) क्रीडादमुं देवमुदीक्ष्येति पुंस्यपि । सा लज्जा परस्मादज्जावहे जा ( य ) तेपत्रपा  
 ॥ २३ ॥ ( क्षान्तिः ) कहुलकृत्तिना । ( तितिक्षा ) गुप्तिज्जिद्वन्मः- ( सू० ), निन्दाक्षमाभ्याधि-  
 प्रतीकारेष्वाति ( वा० ) सन् । क्षमा मर्षः सहनं च । अभिचारं ध्यानमभिध्या, परस्त्रविषयस्पृहेत्येके,  
 दोषचिन्तापूर्व परस्त्रे लिप्तेत्यर्थः, यत्कात्यः- विषयप्रार्थनाभिध्या । भाष्येदेः परदर्शनासदने ह्युत्साह-  
 निरीर्ष्या, अयं तु पुरोक्तकर्ममहने मात्सर्यमर्ष्या मन्यते य ईर्ष्युः परवित्तेद्वेषतिवत् । ( असूया ) असू-  
 कण्ठादिः ॥ २४ ॥ वीरस्य कर्म बलं, दुष्टादबुद्धैरमेधुनिकयाः ( सू० ) इति लिङ्गादण् । इत्यर्थाभ्या-  
 मृयाद्वेषणां भेदाद्- द्वेषो ना स्यादमृष्येयंति मालाकारां भ्रान्तः । मन्यते मनुयुर्दैन्यमिह, यच्छा-  
 भ्वतः- निगदन्ति क्व मनु मनु ( भवदैन्ययोः । शोचनं शुक् । ( विप्रतीसारः ) उपसर्गस्यपञ्चम-  
 नुष्ययहुलं ( सू० ) इति दीर्घः, पक्षे विप्रतिमारः । अनुशयो वक्ष्यते ॥ २५ ॥ प्रतिहन्यतेनेन प्रतिपः,  
 करणहनः ( सू० ), परीषः ( सू० ) इति बाहुलकाद् घत्व च । शुची शुद्धे, तृतीयदिपुभाषितपुंस्काद  
 ( सू० ) बाल पुम् । ( शील ) शील समाधानं । चर्यनेनेन चरितम् । चरित्यं च । ( उन्मादः ) निता-  
 नवस्थानभूतायाविशान् ॥ २६ ॥ प्रियस्य भावः प्रेमा, प्रियास्त्वयेति ( सू० ) प्रादेशः । हृदयस्य कर्म  
 हार्द्वम्, युवार्द्वत्वाद् ( हृदयानन्तयुग्मदिभ्योः ), हृदयस्यहृद्वेद्ययदणलसेपु ( सू० ) । प्रातिः प्रेम,  
 प्रीत्या मन्यते ( अन्येभ्यापिट्ठयन्ते ) । दाहमाकर्षणं ददाति दाहदम् । मन एव रथो दूरगामि यत्र मनो-  
 रथः । मनोगवी च ॥ २७ ॥ सातिशयेनेच्छ भृशं लसनं लालसा, लल इत्यायां वा । उपसर्गोपे-  
 आधिरस्य, उपपन्न आधिर्वा- उपाधिः । आधीयते चिन्तानेनेत्याधिः ॥ २८ ॥ ( आयायनं ) धै चिन्ता-  
 याम् । चिन्ति ( ति ) थ । स्त्वेनापि साम्यं ( उत्कण्ठोत्कलिकयाः ), आध्यानमिह संबन्धन्ति, यत्का-  
 दिका- आध्यानमुत्कण्ठापूर्वक स्मरणम् । उयमोद्योगौ च ( अव्यवसायार्थौ ) । उत्साहः सातिशयो  
 बोध्यं, वीरस्य कर्म, वीरवीर्यौ च ( सू० ) इति गण- ( सूत्र- ) पाठात्साधुः ॥ २९ ॥ के मूर्ध्नि पट इवाच्छा-  
 दकः कपटः । उपधीयते रक्तिकस्त्रेव सिन्दूरमुपधिः । छाद्यतेनेन रूपं छम, इहमन्वन्त्रिषुचेति ( सू० )  
 इहः । कितवस्य कर्म केतवम् । कृत्सिता सृतिर्हिसार्थं कुसृतिः, पूर्वत तु वचना फलम् । निकृष्टा  
 कृतिर्निकृतिः । शाठ्यं कर्म शाठ्यम् । अनवाहितत्वं कार्यवलेपः ॥ ३० ॥ कुम्भितुयतेनेन कृत्सितं

उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ।  
 कृपा वयानुकम्पा स्यादनुकोशाप्यथा हसः ॥ १८ ॥  
 हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं त्रिष्विव द्वयम् ।  
 विस्मयोऽभूतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥  
 वारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।  
 भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तृप्तममी त्रिषु ॥ २० ॥  
 चतुर्दश वरखासो भीतिभीः साध्वसं भयम् ।  
 विकारो मानसो भावोनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥  
 गर्वाभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः ।  
 अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्त्रिक्रिया ॥ २२ ॥  
 रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्षणम् ।  
 मन्दाक्षं ह्रीस्वपा व्रीडा लज्जा सापन्नपान्यतः ॥ २३ ॥

( विद्भिदादिभ्योऽङ् ) । कृपेः कृपा, भिदादिवाद्ङ् ( सू० ) । अनुकोशान्ति समदुःखा भवन्त्यनेनानुकोशः ॥ १८ ॥  
 स्याप्येव तु रसोभवेति भावरसयोः पर्यायत्वेन ध्वनति । ( हसः, हासः ) स्वनहसोर्बेल्यु ( सू० ) ।  
 हसनीयं हासे साधु वा हास्यम् । बधेर्भिन्द्यायां सन्, बाभत्सास्य बीभत्सः, अप्रत्ययान् ( सू० ), अर्श  
 आदिभ्योच् ( सू० ) । जुगुप्साप्रभत्वाद्धिकृतः, यदाह- विष्ठाकृमिज उद्वेगी क्षोभणो हथिरादिभिः ।  
 बीभत्सो द्विविध इति, रसे तु पुमान्- तद्वति त्रिलिङ्गः । ( बीभत्सं, विकृतं ) द्वयमित्यनयोः पर्या-  
 यतामाह । प्राग्वद्भावसरसयोः पर्यायत्वम् । अद्भुतस्य विस्मयस्यापिभावात्मकत्वान्, विपूर्वः स्मिद् अद्भुतायः ।  
 अत्- आश्चर्यायैव्ययम्, तस्य भयनमद्भुतम्, अदिभ्योद्धुतन् ( उ० ) । आचरणीयं, आश्चर्यमनिले  
 ( सू० ) इति साधुः । चित्र कदाचिद्दर्शने, अच् ॥ १९ ॥ भारोरयं प्रःसनकृद् भैरवः । दास्यति  
 विसं दाहणः । भाषयते भीषणः । विभ्यत्यस्माद् भीमः । ( भीमः ) भीमाद्योपादाने ( सू० ) ।  
 ( घोरः ) घुर भीमार्थे । विभ्यत्यस्माद्रायनकः, आनदःशीर्ङ्भयः ( उ० ) । भयं करोति भयंकरः,  
 मेघर्तिभयेषुकृजः ( सू० ) सच् । प्रतिगतं भयेन प्रतिभयम्, कुगतिप्रादयः ( सू० ) इति समासः ।  
 रुद्रस्यायं रौद्रः क्रोधात्मा । अग्नी अद्भुताया उपान्ता रसेषु पुंलिङ्गास्तादृनि त्रिलिङ्गाः । रीडादिकं  
 तु रसे नृसकमिति नारायणः ॥ २० ॥ रसानुक्तवैधाक्यभावानाह दरेति । दीर्यन्ते-  
 स्माहः, लिङ्गभेदेर्भेदाद् द्विलिङ्गः, दरी गुहा । साधूनस्यति साध्वसम् । भयं भीः,  
 संपदादिभ्यःक्वि ( वा० ) । भीतिभयं, अजिघर्षा- भयादीनामुरसंख्याननपुंसकेकादिनिवृत्त्यर्थम्  
 ( वा० ) । चेतसा भाष्यते मुख्यादिः स्वकारणाद्भवति वा चित्तवृत्तिविशेषो भावः, भावयति करोति  
 रसान्वा, यद्भूतः- नानाभिन्नयसंबन्धान्भावयन्ति रसानिमान् । यस्मात्तस्मादमी भावा विज्ञेया नाट्य-  
 योक्तृभिः ॥ ते च- रतिर्हास्य शोकश्च क्रोधात्साहो भयं तथा । जुगुप्सादिस्मयशमाः स्यापि-  
 भावा रसोद्भवाः ॥ भावं योनुभावयति मुखरागादिः, यदुक्तं- अनुभावस्त्वभिन्नयः पश्चादर्थप्रकाशनम्  
 ॥ २१ ॥ व्यभिचार्यादीनाह । मत्समो नास्तीति मननं मानः । ममताहंता दयोर्बलेषोपि । ( परिभव  
 इत्यादि ) परौभुवोवज्ञाने ( सू० ) इति वा घञ् । ( तिरस्त्रिक्रिया ) तिरोन्तर्धौ ( सू० ) गतिः, परिभवेन्तर्धु-  
 पचारान्, अतः- तिरसोगताविति ( चान्द्रसू० ) सत्वम् ॥ २२ ॥ रिह कथनादौ, रेहणं रीडा, कः, होहः ( सू० ),  
 वृत्तेषु पूर्वस्यदोषोऽर्णः ( सू० ) । अवहेलनमवहेलं, हेड् अनादरे, हलयोर्ऋक्यम् । अवहेलापि । न मुहु- उक्ष-  
 णमसूक्षणमिति लक्षणयावज्ञा गम्यते, यत्कीटिल्यः- अयमुक्तेः सिञ्चतीति दीर्घाश्चारायणः प्रावाजीत् ।  
 असूक्ष्णामुक्तेः, सूक्ष्मेतः- यर्यहलः ( सू० ) इति यलोपात् । निवारोभिभवः पराभवो न्यकारश्च ।

भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ।  
 स्त्रीविषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाञ्जुका ॥ ११ ॥  
 भगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः ।  
 जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृधारकः ॥ १२ ॥  
 राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृधारिका ।  
 देवी कृताभिषेकायामितरास्तु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥  
 अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजस्यालस्तु रात्रियः ।  
 अम्बा माताथ बाला स्याद्वासुरायस्तु मारिषः ॥ १४ ॥  
 अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे समे ।  
 हण्डं हन्त्रं हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥  
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यङ्गकाभिनयौ समौ ।  
 निर्दुते त्वङ्गसत्त्वाम्बां द्वे त्रिष्वङ्गिकासात्त्विके ॥ १६ ॥  
 गङ्गारवीरकरुणाञ्जुतहास्यमयानकाः ।  
 वामत्सरीद्वौ च रसाः गङ्गारः शुचिरञ्ज्वलः ॥ १७ ॥

इति हस्वः, अभ्रुकुंसादानां ( का० ) इति च पक्षे-आत्वम् । एवं भ्रुकुञ्ज्यादि । गणयती-  
 भ्रतन्- ईश्वरो गणः फेडकोस्त्यस्यां का गणिका वारमुख्या । अञ्जुका- असत्प्रकृतिप्रत्ययवि-  
 भागा देवकीभ्यदप्राया । नाट्योक्तौ नाट्यविद्यायां नान्यत्रेत्याधिकारः ॥ ११ ॥ भावयति भाव  
 इत्यवगमात्त्रायादन्यत्राप्येषां प्रयोगे न दोषः, यङ्गुरतः- मान्ये भावोपि वक्तव्यः किंवदन्तेषु मारिषः  
 ॥ १२ ॥ ( देवी ) श्रीमद्वादेभ्यो वासवदत्तदौ । अकृताभिषेकराक्षीमध्यादेकैका भगिनी पद्यावल्यादिः ॥ १३ ॥  
 यथानर्हस्य ब्राह्मणस्य पूज्ये, न ब्रह्मणि साधु ( अब्रह्मण्यं ), साध्वर्थेयत् ( तत्रेसाधुः ) । नाट्योदन्यत्र  
 रात्राधिकृतो रात्रियः, रात्राकारपारिषः ( सू० ) । अम्यते शन्यते बालेः, लोकेष्वम्बा हस्वविधेः  
 ( अम्बार्थनयोःहस्वः ) । कस्यते प्रीत्या वासुः । आरापपापकेभ्यः कर्मभ्यो जात आर्योऽणीयोभिमग्न्यो वा  
 । मर्षणासंभूतानामारिषः । मार्पोपि यथा परितप्यपत् ॥ १४ ॥ अत्ता मातेवात्तिका । नियतं स्थानं निष्ठा ।  
 निःशेषेण वहनं समाप्तिनिर्वहणम् । मुखप्रतिमुखगर्भवनपनिर्वहणाख्या हि पञ्च संधयः । नाट्योक्तौ नीचां  
 प्रति हण्डे आह्वानं, चेटीं प्रति हण्डे, सखीं प्रति हला ॥ १५ ॥ अङ्गस्य स्थानात्स्थानान्तरीनयनमङ्ग-  
 हारः स्थिरहस्तादिद्वौ त्रिशङ्का । व्यनक्ति व्यङ्गकः । आभिनुह्यं नीयतेधौनेनाभिनयः, वाचिकाङ्गिकाहार्य-  
 सात्त्विकरूपयो भावगूढकः । अङ्गेन यन्निर्दुतं तत् ( आङ्गिकं ), तत्र भवत्येवेति-अप्यारमादित्वात्  
 ( वा० ) उष्, निर्दुतंक्षयतादिव्यः ( सू० ) इति योगविभागादङ्गत्वा । सत्त्वं मनो गुणो वा तेन निर्दुतः  
 सात्त्विकः, यदाह-सत्त्वोक्तो मनसि ये प्रभवन्ति भावास्ते सात्त्विका इति, समाहितमनस्त्वङ्गाञ्जुक्तु-  
 र्जायन्ते ॥ १६ ॥ रत्यादयो भावा अनुक्रियमाणाः सामाजिकैः-रस्यन्ते इति रसाः, यदाहुः-  
 विभावैरनुभावेभ्य बुक्तेभ्य व्यभिचारिभिः । आस्वाद्यत्वात्प्रधानास्वास्यायेव तु रसीभवेत् ॥ कत्तलः  
 पुत्रादिस्नेहात्मा रतिभेदः एव । शान्तस्त्वलौकिकत्वाप्रोक्तः, चशब्दात्संगृहीतो वा । शृङ्गमुत्तमत्व-  
 मियति शृङ्गपरः । उत्तमपुत्रप्रकृतित्वेन जुगुप्सादिरहितत्वाच्छुचिः ( शुद्धः ) । उज्ज्वलो वेषेणोचित्येन च ।  
 लक्षणमेतन्न त्वेती शृङ्गारपर्यायो ॥ १७ ॥ उत्साहो हि वीररसस्य स्थायी भावः, एयं  
 स्थायी भावः रसीततयैवास्वाद्यत इति सर्वरसलक्षणं कटाक्षितम् । शोकास्था-  
 यिप्रभवः करुणो रसो धर्मद्वारेणोक्तः । [ पृथ्यतेनया ] घृणा । दम्पतेनया दया, दय रक्षणे, भिदाभय

चतुर्विधमिदं वाद्यवावित्रातोद्यनामकम् ।

मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्ग्यू-ग्यो-ध्वंकास्त्रयः ॥ ५ ॥

स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।

आनकः पटहांस्त्री स्यात्कोणो वीणाविवादनम् ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसंवकः ।

कोलम्बकस्तु कायास्या उपमाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमङ्गुडिण्डिमसंज्ञराः ।

मर्दलः पणवान्यं च नर्तकीलासिकं समे ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघं घनं क्रमात् ।

तालः कालक्रियामानं लयः साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं-त्तं च नर्तने ।

तौर्यत्रिकं नृत्य-त्त-गीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

उत्सङ्गस्थवान् । आलिङ्ग्यास्यास्थालिङ्गा [ ग्यः ] आलिङ्ग्य वादान् । ऊर्ध्वकृत्येन मुलेन वाद-  
नादृक् कायति- ऊर्ध्वक आर्भोगकास्त्रयः, आहुध- हरीतक्याकृतस्त्वङ्गयो यवमण्यस्तथोर्ध्वकः । आ-  
लिङ्ग्यर्ध्व गोपुच्छो मध्यक्षिणवामगाः ॥ नाट्ये चेतन् ॥ ५ ॥ यात्रादौ यशोर्य पटहो हन्यते स  
यशःपटहः । ढगिलव्यक्तं कायति ढक्का । विभ्यत्यस्या रणे भेरी । भम्भापि । दुन्दुशब्देन भाति भाय-  
यति वा दुन्दुभिः । आ-अनित्यानकः । द्रौ द्रौ भिन्नार्थावाहुः । कुणल्येन कोणो वादनकाष्ठं ढक्कापु-  
पयोगी, कुण शब्दे । शोततन्त्रीरग्येन वाद्यते, अत एव कोणो वादिप्रवादनमत्याहुः ॥ ६ ॥ कृञ्ची-  
णादण्डः प्रवालः, ज्वलादिवारणः ( उर्वस्मितकसन्तेभ्यांणः ), यच्छाश्वत्- प्रवालो वल्लकीदण्डे  
विद्रुमे नवपल्लवे । कङ्कते ककुभः, दण्डाद्यः शब्दमाग्भीर्वाथ दारुमयं भाण्डं यद् भक्षयाच्छाद्यते । केव-  
लम्बन्ते तन्त्र्योत्रेत्यपभ्रशो कोलम्बकः, कुल संस्त्यान इत्यस्माद्वा-अम्बक् । येन चर्मणा ( १ ) उपन-  
ह्यते ( उपनाहः ), यत्र तन्त्र्यो निबन्धन्ते च ( निबन्धनम् ) ॥ ७ ॥ डमियव्यक्तं शब्दमियाति डमरुः ।  
मङ्गुडु कायति मङ्गुङ्कारणान्, मङ्गुडुकं जलवायमाहुः । डिण्डिमसंज्ञा शब्दानुकारम् । संज्ञराः करटे-  
त्येके । मयते मर्दलः, मर्दं लाति मर्दल इति तु कवयः । पणाप्रत्यन्तस्तन्त्र्याः पणवः । अन्ये हुडु-  
काणामुत्पादयः । नृत्यति नर्तकी, शिल्पिनिष्ठुन् ( सू० ), नृत्तिसानिर्गजभ्यःपरिगणनं ( वा० ) ।  
लसति संनमति लासिका ॥ ८ ॥ विलम्बितादीनां लयानां तत्त्वायाः पर्याया इत्यभिधानकारः,  
नाट्ये तु विलम्बितानुसारेण क्रमात्तत्त्वाश्च वाद्यप्रकाराः । कालस्य क्रियया- भवापनिष्क्रमदिकया मानं  
परिच्छेदकं प्रतिग्राहेतुस्तालः- बद्धग्रादि ( ? ), मे [ गे ] याया मा [ गा ] नक्रियायाः कालनियमहे-  
तुस्त्येके, यद् वृत्तिलः- तत्र ज्ञेयः कलापाताः पादभाग [ पादमान ] स्तथैव च । मत्ता च परिव-  
र्तश्च वस्तु चैव विज्ञेयः ॥ मा [ गा ] नमे [ गे ] प्रयोरन्यूनाधिक्ये श्रुता लयो वृत्तादिः, वाद्यादी-  
नामन्योन्यं समत्वमिति यावत् । तालविशेषस्तु लयोन्यः ॥ ९ ॥ [ नाट्यशास्त्रे प्रत्येकं भेदास्ति । तत्रो-  
द्भूतकरणाङ्गहारनिर्वर्त्यमारभटीवृत्तिप्रधानं गीतकानुसारित्वादादौ तण्डु ( मुनि ) ना प्रणीते ताण्डवम् ।  
ललिताङ्गहाराभिनयं केशिकीशुतिप्रधानं वासकसज्जादिनायिकाचरितं ढोचिर्भि [ ति ] कादिनिबद्धं  
लिष्टवलाश्रयम् । नृत्ये [ तं ] त्वङ्गविशेषमात्रं विवाहान्युदभेदौ । नाट्यं तु सर्वरसं पदसंधि चतु-  
र्धृति दशरूपकाश्रयं नटकम्, तदाह- नृत्या [ त्ता ] दि त्रयं समुदितं- त्र्यस्येदं त्रिप्रमाणं तौर्यत्रिकं  
नाट्यं च । आभ्यामन्यलुटनमात्रम् ॥ १० ॥ भुवः कुंसनं भासनमस्य, इकोहस्वादयोगालवस्य ( सू० )



निकाणो निकणः काणः कणः कणनमित्यपि ।  
 वीणायाः कणितं प्रादः प्रकाणप्रकणावयः ॥ २५ ॥  
 कोलाहलः कलकलस्तिरर्था वासि-शि-तं रुतम् ।  
 स्त्री प्रतिभृत् प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे ॥ २६ ॥

इति शब्दादिवर्गः । ५ ।

निषावर्षमगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।  
 पञ्चमधैव्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठात्थिताः स्वराः ॥ १ ॥  
 काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनी तु मधुरास्फुटे ।  
 कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥  
 समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु बहुकी ।  
 विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥  
 ततं वीणादिकं वाद्यमानसं सुरजादिकम् ।  
 वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥

एते कणितमात्रे वीणायामवीणायां च, कणोवीणायाम्च ( सू० ) इति चकारेण नावित्यनुसर्ग इति ( च ) सामान्येनानुकर्षणात् । उपसर्गात्कणो वीणायामेव घणो विकल्पात्सोपकर्षार्थं हि तत्र वीणाप्रहणम् । एकं मुक्ताण्युक्ताणादिः ॥ २५ ॥ कोलान् सूकरानाहलते प्रासयति कोलाहलः । कलोवात्यन्तः, आभीरस्ये द्विर्भावः । रुतमनूष वासि-शि-तविधिः, तिर्यक्षो मृगपक्ष्यादयः, तिर्यग्येनिष्ठ पञ्चधा भवतीति । प्रतीपं भ्रूयते प्रतिभृत् । पदस्वरतालावधानात्मकं गानधर्वरागगालादिकं गीतं, प्रावेशिकयादि धुशस्त्रं गानमिति भरतापुष्पो विशेषो नाश्रितः ॥ २६ ॥ इति शब्दादिवर्गः । ५ ।

निषीदल्यस्मिन् राशे निषादः, निषदोपि । ऋषभो गोस्तस्यवादित्वात्, यदाहुः-- षड्जं मधुरा भुवते गावस्तृपमभाविणः । अत्रादिकं तु गान्धारं कोष्ठः कणति मध्यमम् ॥ पुष्पसाधारणे कले पिकः कूजति पञ्चमम् । धैवतं हेषते वाजी निषादं बृंहते गजः ॥ गां धयति [ मं वाचं धारयति ] इति गान्धारः । षड्भ्यो जातः षड्जः, यदाहुः-- नासां कण्ठमुस्तालु जिह्वां दन्तां च संस्पृशन् । षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः । धीवतामयं धैवतः । दारवी गात्रवीणा च द्वे बीभे स्वराधारौ, वंशसुरजादयोनुरकरणमात्रेवेति नोक्ताः ॥ १ ॥ ध्वनावित्येव, मधुरेत्येव शब्दे काकली, ईषल्ललोत्साम् । कलति कलयतीति वा कलः । मन्दते मन्द्रः, मद्रोपि । ध्वनावित्येव, तारयति स्वनं स्यानेभ्रष्टारः, यद्वन्तिस्तलः-- वृणामुरासि मन्द्रस्तु द्वाविंशतिविधो ध्वनिः । स एव कण्ठे मध्यः स्यात्तारः शिरसि गीबते ॥ कन्धमन्द्रतारा गुणिलिह्याः ॥ २ ॥ समन्वितोनुगतो रुयो द्रुतादिर्यत्र, एकः समस्तालो मानमस्यैकतालः, अभि-  
 षक्तप्रमान इत्यर्थः । एकं तननमस्यैकतानो वा, एकतानमनाकुलमिति बर्गः । वेति जायते स्वरोत्सां वीणा । बलते ( बलते ) स्वरोत्सां बलकी, कलतिः ( बलिः ) सौत्रो वा ह्यार्यः । विपञ्च्यते स्वरोत्सां विपञ्ची । षोडशती च । ( परिवादिनी ) परिवदत्यवश्यं समस्वरत्वात् ॥ ३ ॥ तन्त्रातननात्ततम् । आदिशब्दात्स्वरन्ध्राराव-  
 णहस्तकिमयादि । जानघाते स्म चर्मणानन्दम् । अवबदं च । आदिशब्दाद् ददुरकरटादि । सुषिरिष्ठं विद्यतेस्य सुषिरम्, सुषिरमिति प्राच्याः, ऊपसुषीति ( सू० ) रः । कांस्यमयस्तालो वादितम् । आ-  
 दिशब्दाच्छब्दादि । हन्यते घनं, मूर्तोघनः ( सू० ) ॥ ४ ॥ वाद्यते ( वायं, वादित्र ), आनुयते च, यज्ज-  
 रतः-- ततं वैवाचनदं च घनं सुषिरमेव च । चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोषं लक्षणान्वितम् ॥ मृयन्ते मृदगाः,  
 मृद--अह्मं वैपाम् । मुरात्सवेष्टनात्माय मुरजः । भेदा एषां विख्याः । अहकोत्यास्सहको [ कयः ]



अनुलापो सुबुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।  
 विप्रलापो विरोधाक्तिः संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥  
 सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्वः ।  
 संवशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिषुत्तरे ॥ १७ ॥  
 रुष(श)स्ती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।  
 अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥  
 निधुरं परुषं ग्राम्यमश्लीले सूहृतं मित्रे ।  
 सत्यं सङ्कुलक्लिष्टं परस्परपराहते ॥ १९ ॥  
 लुप्तवर्णपदं मस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।  
 अम्बूकृतं सानिष्ठेवमवच्छं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥  
 अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृपार्थकम् ।  
 अथ स्लिष्टमाविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥  
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ॥ २२ ॥  
 शब्दं निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ।  
 स्वाननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ॥ २३ ॥  
 आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः ।  
 स्वनिनितं वस्त्रपर्णानां भूषणानां तु शिञ्जितम् ॥ २४ ॥

श्रुत्यापि ॥ १६ ॥ चोद्यमाक्षेपाभियोगो शापाकोटी दुरेपणा । अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्या  
 विकल्पन- इति वक्तव्यम् । दुरेपणा दुरभिधानम् । ( चाटु, चटु ) प्रेम्णा श्लाघनं, चटतीति च्छेः  
 युण, उन् च । क, चाटुकम् । असत्या तु श्लाघा विरुद्धं कल्पनं ( विकल्पनम् ) । केन्वादिनाभिप्रातेर्  
 मुखस्वरूपं वाचिकं, वाचोव्याहनाधौयां ( मू० ) इति ठक् । उत्तरे वक्ष्यमाणा, यथा- रुषती वाक्,  
 रुषशब्दः, रुषद्वचः ॥ १७ ॥ ( रुपनी ) द्विलेख्यर्थः, न तां वददुषतीं ( गां ) पापलोकेत्याम् । अत उपतीत्य-  
 सम्यः पाठः । कलामु साधुः कल्या, काल्येति कात्यायाः । सान्त्वयनेनेति सान्त्वं, सामयतेर्वा- औणादि-  
 कस्त्वत् । ( हृदयंगमं ) गमेः युपिवक्तव्यात् ( वा० ) खच् ॥ १८ ॥ निश्चितं तिष्ठति निष्ठुरम् ।  
 विकुटं च । ग्रामे भवं ग्राम्यं, ग्रामायखर्वा ( मू० ) । असम्यग्मृतिहेतुधाश्लीलं- अश्रीप्रदं भाष्कादि ।  
 प्रियं सत्यं वचनं सूतृतं, सुप्रन्यते सूतृ । सूच तद्वत् च सूतृ ॥ १९ ॥ अन्योन्यविरुद्धं संकुलं क्लिष्टं च, यथा-  
 अन्धो मणिमुपाविध्यतमनङ्गुलिरावयत् । तमपीवः प्रत्यमुच्यतमजिह्वोभ्यपूजयत् ॥ १९ ॥ ( प्रस्तं )  
 असंपूर्णोच्चारितम् । अनश्नुनोभ्युनः करणमम्बूकृतं, च्वौच ( मू० ) इति दीर्घः । निष्ठेवस्पृष्टकारः, श्रि-  
 श्रिवेत्वादीर्घः ( चान्द्रमू० ), पक्षे सनिष्ठावम् । असंबद्धं दशदाडिमादि वाक्यं समुदायार्थशून्यम् ॥ २० ॥  
 ( अनक्षरं ) विरोधे नञ् । ( आहतं ) यथा- एष वन्द्यायुते । याति खनुष्पकृतशेखरः । मृगनृणां मन्त्र-  
 स्नातः शशाङ्कगन्धनुर्धरः ॥ सोलुष्ठनं तु सोत्प्रासं मणितं रतिहृजितम् । प्रच्यं हृद्यं मनोहारि, विस्पष्टं  
 प्रकटोदितमिति कचित्पाठः । स्लेच्छेर्मिलयं, धुन्धस्वान्तध्वानेति ( मू० ) साधुः । विगतं तथा सत्यं वच  
 वितथम् ॥ २१ ॥ सति साधु सत्यम् । तथा साधु तथ्यम् । समवति सम्यक्, तदेव समीचीनं, समेची  
 समीचीना वाक्, समःसमि ( मू० ) इत्यन्वतावप्रत्यये समिः, नामैतन्, सम्यक्त्वव्ययम् । वाग्भेदादि-  
 पुक्ताः, ( यथा ) सत्याशीः, सत्यः शब्दः, सत्यं वचः । यदा तु सत्यवाक्त्वादिना तद्वति वर्तन्ते तदापि  
 त्रिषु, यथा सत्यं कुलं, सत्या स्त्री, सत्यः पुमान् । एवं ग्राम्यनिष्ठुरादयः ॥ २२ ॥ ( निनाद इ० ) नाग-  
 दनदति ( मू० ) वा, स्वनह्रस्वावां ( मू० ), विभाषाद्विह्रस्वाः ( मू० ), उपसर्गः रुवः ( मू० ) इति च  
 यथास्वं घञप्री ॥ २३ ॥ मर्मरेति शब्दानुकरणम् । स्वनिनित इत्येव ( भूषणानाम् ), शिञ्जापि ॥ २४ ॥

समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः ।  
 वार्त्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥  
 आख्याद्वि अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।  
 हूतिराकारणाद्धानं संहृतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥  
 विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।  
 उपोद्घात उदाहारः शपनं शपयः पुमान् ॥ ९ ॥  
 प्रभ्रानुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरं समे ।  
 मिथ्याभियोगाभ्याख्यानमथ मिथ्याभिर्ज्ञानम् ॥ १० ॥  
 अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।  
 यशः कीर्तिः समा(म)ज्ञा च स्तयः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥  
 आश्लेषितं द्वित्रिरुक्तमुच्चैर्धुष्टं तु घोषणा ।  
 काकुः खियां विकारां यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥  
 अवर्णाक्षपनिर्वाक्षपरीवादापवादवत् ।  
 उपकोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥  
 पारुष्यमतिवादः स्याद् भर्त्सनं त्वपकारगीः ।  
 यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥  
 तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मेधुनं प्रति ।  
 स्यादाभाषणमालापः प्रलापानर्थकं वचः ॥ १५ ॥

आहूयतेनेनाह्वयः, बाहुलकाद् घः ॥ ७ ॥ नमत्यनेन नाम । ( नामधेयं ) भागरूपनामभ्योऽध्वयः ( वा० )  
 स्वार्थे । आकारणमाकारणा, युच्, ल्युङन्तेन समाहारो वा । बहुभिः कृता या हूतिः सा संहृतिः, ६१-  
 शाह्वय इति भागुरिः ॥ ८ ॥ विविधो वादः ( विवादः ) । ऋणादानादिर्व्यवहारः, यत्पृतिः ( याह्व० )  
 —वि नानार्थेव संदेहे हरणं हार उच्यते । नानासंदेहहरणाद् व्यवहारः प्रकीर्तितः ॥ वाचो मुञ्जमारभ्यः ।  
 उप समीप उध्दृश्य हन्यत उपोद्घातः, यदाहुः—चिन्तां प्रकृतसिद्धयथामुपोद्घातं प्रचक्षते । उध्दृत्याहि-  
 यत उदाहारः । वाचा शरीरस्पर्शनं ( शपनं ) । शापोपात्यमरमाला ॥ ९ ॥ प्रच्छन्नं प्रश्नः, यत्रया-  
 चेति ( सू० ) नङ्, पृच्छोऽश्रुडिति ( सू० ) शः । अनुयोगः पर्यनुयोगः । पृच्छा भिदादो ( पिद्भिदादीति )  
 । उत्तरन्त्यनेनोत्तरं, उदा वा तरप् । मिथ्याभियोगोऽसत्याक्षेपः । मिथ्यादूषणमभिशाप इत्येके ॥ १० ॥  
 शब्दने शब्दः प्रसिद्धः ( प्रणादः ), यत्कात्यः—शब्दे गुणानुरागोऽयः प्रणादः । यात्यस्तुने वा दिशो  
 यशः । ऊतियूतीति ( सू० ) कीर्तिः साधुः । समाज्ञायतेनया समाज्ञा । श्लोकाभिह्वये अनेकार्थे ॥ ११ ॥  
 ( आश्लेषितं ) द्विभूते पूर्वाचार्यसंश्लेषा, अतश्च प्रेङ् उन्मद इति पेटुः । द्वौ वारी प्राप्नु वारान्चेति, द्वित्रि-  
 चतुर्व्यःसुच् ( सू० ) । विशाब्दानाविवक्षातो धुर्धरविशब्दाने ( सू० ) इति नेट् । ( घोषणा ) श्वात्तश्र-  
 न्धोयुच् ( सू० ) । कायति काकुः । आदिशब्दाः आदिः ॥ १२ ॥ अवर्णो विररितवर्ण-  
 नम् । निष्कन्तो वादाभिवादः । उपकोशवदवर्णादयः पुंस्मानि वाच्ये प्रोहिम्यान्यथोक्तिः ॥ १३ ॥  
 ( पारुष्यं ) मैवं कृधाः ( इति ) वाच्यनेत्यर्थः ॥ १४ ॥ मेधुनमुद्दिश्य गालो इत्यर्थः, दूषणमित्येके । क्षा-  
 रणापि, क्षारणाक्षारणाक्रोशाः सानिशापाभिमेधुना इति दुर्गः ॥ १५ ॥ ( अनुलापः ) पीनः पुत्रेनोक्तिः ।  
 ( विलापः ) अनुशोचनमित्यर्थः । ( विप्रलापः ) विरुद्धं प्रलयनम् । मिथोन्योन्यमुक्तिप्रयुक्तो संलापः ।

अपभ्रंशोपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

तिङ्मुख्यन्तचयां वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेव आत्मायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः ।

स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

शिक्षत्यावि श्रुतरङ्गमोङ्कारप्रणवी समी ।

इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥

आम्वाक्षिकी वण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।

आख्यायिकापलब्धार्थां पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना कथा प्रवहलिका प्रहलिका ।

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाद्वतिस्तु संप्रहः ॥ ६ ॥

द्विदिदं हि महात्मनाम् ( भर्तृ० ), भवत्यथाहारम्भश्च हि वाचकमात्रम् । कारकान्विता संवदार्था वा क्रिया वाक्यम् - देवदत्त गामन्याज शुक्रा दण्डेन । मर्त्यकः कः इत्यायायनावगादन्वितत्वं लक्षणं, यज्ञै-  
मिनिः— अर्थकत्वादिकं वाक्यं साकाङ्क्षं चोद्गमगे स्मृतम् । भर्तृणां— साकाङ्क्षावयवं भेदं पराना-  
काङ्क्षशब्दक्रमः । कर्मप्रदानं गुणवैदिक्यं वाक्यमुच्यते ॥ एकं शब्दात्मनोऽन्यदर्थ-मकस्य वाक्यस्य  
लक्ष्म्येके ॥ २ ॥ श्रुते श्रुतिः । विदित्यनेन धर्मः वेदः । आम्नायेन पारपर्यणात्मनायः । त्रयोवयवस्त्रयी,  
अपर्यवणश्रुत्युद्धारः । त्रय्यनुवादाच्छ्रुत्यादिविधिरिति तिङ्गणकरदेपो नोद्भवतोयः । निगमोक्तार्थः ।  
वैदिको विधिः— चोदनालक्षणार्थो धर्मः, यद् गौतमः— श्रुतिस्मृतीवहितो धर्मः । स्मृत्युक्तोपि वैदिक  
एव, वेदमूलत्वात्स्मृतेः । तद्विधिरिष्टाद्वयस्त्रयार्थमोन्यः पूर्वाह्य इत्येके । ऋचये स्तूयतेनया ऋक् । स्याति  
पापं साम । इत्येतेनेन यजुः ॥ ३ ॥ अङ्गयते ज्ञायतेनेनाङ्गमुत्कारम्, शिक्षा कस्या व्यकरणं निरुक्तं  
ज्योतिषां गतिः । छन्दोविचिन्तितिर्येनः पञ्चमो वेद उच्यते । ( ओङ्कारः ) स्वार्थं कारः, वर्णाङ्कारः  
( वा० ) इत्यत्र निर्णीतत्वात् । प्रणयते प्रणवः । इति ह आर्षाद्येवतीतिहासः, इतिरन्वयार्थः, हः क्लिप्तार्थः ।  
पुरावृत्तं पूर्वचरितम् । उदात्तानुदानस्वरिताः, ऊर्वामादीयन द्युदात्तः । एकधृतिस्तु स्वराविभागः ॥ ४ ॥  
प्रत्यक्षगामाभ्यामोक्षितस्य पश्चादक्षगमनीक्षा, सा प्रयोजन यस्याः तान्त्राक्षिकी तर्कविद्या । द्म्यतेनेन  
दमनं वा दण्डः, स नीयते दम्यं प्रति प्रार्थयते यथा सा दण्डनीतिरर्थशास्त्रम् । वार्ता वैश्यवर्गे वक्ष्यते ।  
आचष्टे—आख्यायिका वृत्तार्थकथनाद्भूतचरितादिः । पुराणं नवं ( भवं ) पुराणं यतः— समर्थं प्रति-  
सर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशं नृचरैस्त्वं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ( विष्णुपु० ) ॥ ५ ॥ प्रबन्धस्य  
कल्पना कथा कादम्बर्यादिसंशयान् । प्रवेष्टेन प्राधान्यं भजते प्रवहलिका । प्रहल्यलमिप्राथं सूचयति  
प्रहलिका, हिल हावकरणे । शास्त्री प्रहलिका यथा— पानीयं पातुमिच्छामि त्वन्तः कमललोचने । यदि  
दास्यसि नेच्छामि नो चेद् दास्यसि देदि मे ॥ आर्थी यथा— जडं समुद्राद् भणित्रा पद्मासहराभिम  
दीवतं देसु । ता की समुद्राद् अ [मुहो हिअअभि गिवेसण् अ-]दि ( दि )दिम् ॥ ( यदि  
श्वश्चा भणिता पतिवासगृहे दीपकं दाह । तत् किं समुद्राद् अ [मुहो हृदये निवेशयति दष्टिम् ॥ )  
उत्सन्नविप्रकीर्णशालानां मन्वादिभिः स्मरणं स्मृतिः । धर्मः संधीयतेस्यां धर्मसंहिता । समाहरणं  
संक्षेपः ॥ ६ ॥ अपूर्णार्थाद्विधिमं द्विधिमं ] सनस्यते संक्षिप्यतेनया समस्या, संज्ञायांसमवेति ( सू० )  
बाहुलकात्कथं, ऋद्धिर्लोभ्यति ( सू० ) वा, संज्ञापूर्वकत्वाद् वृद्धभावनः, समान्यविचि सर्वप्रातिपदिकेभ्यः  
( वा० ) सुव इत्येके, ततः अवयवान् ( सू० ), यथा— दामोदरकरापात विद्वलीकृतचेतसा । दष्टं  
चाणूरमन्त्रेन शतचन्द्रं नभस्तलम् ॥ किं वदन्तीति किंवदन्ती लोकप्रवादः । वृत्तिलोकवृत्तं विद्यतेस्यां  
वार्ता, प्रज्ञाश्रद्धाचावृत्तिन्योणः ( सू० ) । वृत्तस्य चरितस्यान्तो वृत्तान्तः । उच्यते— उदन्तः, वदेष्टव्यं ( सू० ) ।

अवदानः सितो गीरावलक्षो धवलैर्जुनः ।

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

कृष्णं नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।

पीता गीरो हरिद्रामः पालाशो हरितो हरितः ॥ १४ ॥

लोहितो रोहितो रक्तः शोणः कोकनवच्छविः ।

अव्यकरागस्त्वरुणः श्वतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ।

कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गी कव्वुपिङ्गली ॥ १६ ॥

चित्रं किमीरकल्माषशव-वलेताश्च कर्वु-वु-रे ।

गुणे शुक्रादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः । ४ ।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषित वचनं वचः ॥ १ ॥

गार एव गीरः । अवलक्ष्यतेवलक्षः । धूयते मल्लोऽस्य धवलः, धावेद्देहः इति धीभोजः । अवर्त्यतेर्जुनः ।  
हरति हरिणः । पाण्डुः पाण्डुत्वमस्यास्तीति पाण्डुरः, नगपांसुपाण्डुभ्योरः ( वा० ) । ईषदव्ययः पाण्डुः,  
धूनीति चेतो धूपरः ॥ १३ ॥ वर्णान् कर्षति कृष्णः । नील वर्णः, कः । सितविह्वलसितः । श्यायते  
श्यामः । श्यामं श्यामत्वं लाति श्यामलः । कालयति मनः कालः । मेचयति ( मचति ) मिश्रीभवति  
मेचकः, मेचकः शिखिरुष्णम इति दुर्गः । पीयते वर्णान् पीतः । पलाशस्य वर्णस्यायं पालाशः पीतरक्तः  
कृष्णः, शाश्वतः पलाश इत्याह- राक्षसे किमुके वर्णं पलाशाह्वं हरित्यपि । हरति हरितः ॥ १४ ॥  
रोहति रोहितः, रलयोरेकत्वम् । शोणति शोणः, शोण् वर्णः । कोकनदच्छविः पद्माभः । पीतरक्तस्तु  
पिञ्जरः । रागात्र लोहित्यम् । इत्यल्लक्षणः । पाटलवर्णः ( पाटलः ), पाटलरज्ज्वा ॥ १५ ॥ श्यायते  
श्यावो धूसराहणः । कर्षमेकदेशेव वर्णोऽस्यैव कपिशः, लोमादिस्त्वात् ( सू० ) शः । धूनीति धूमं राति  
वा धूमः । धूमवर्णं लाति धूमलः । कडति कडारः । कपिवर्णं लाति कपिलः । पिञ्जति पिङ्गलः ।  
पिशति पिशङ्गः । कन्दते कटुः । पिङ्गं लाति पिङ्गलः । कव्वुरनेकायै । पिशङ्गो रोचनापाण्डुरिति  
कान्त्यः ॥ १६ ॥ चीयते चित्रम् । कीयते किमीरः । कलयति वर्णान् कल्माषः । शवति याति वर्णो-  
वशवलः । एति वर्णानेतः । कियते वर्णः कर्वुरः, कर्वति वा । गुणमात्रे वर्तमाना गुणाः पुंसि, पटस्व  
शुक्रः । गुणवद्वृत्तितायां त्वमिधेयलिङ्गाः, शुक्रः पटः, शुक्रा शाटी, शुक्रं वस्त्रम् । वर्णादनुदात्तात्तोपधा-  
त्तोनः ( सू० ) इति श्येनी श्येता, लोहिनी लोहिता ॥ १७ ॥ इति धीवर्गः । ४ ।

रूपभेदानुक्त्वा शब्दभेदानाह ब्राह्मीति । ब्रह्मण इयं ब्राह्मी, ब्राह्मो जाताति ( सू० ) साधुः ।  
अत एव शब्दब्रह्मणोधिष्ठायाः पर्याया एते । व्याहारादयस्त्वधिष्ठेयाः । विभर्ति भारती । भाष्यते भाषा ।  
गृणाति गीः । उच्यते वाक्, किञ्चचिप्रच्छीति ( वा० ) किप्, दीर्घोत्प्रेसारणं च । भाष्यते शन्यते  
वाणी । सरः प्रसरणमस्यास्याः सरस्वती । उच्यते वचः, असुन् ॥ १ ॥ संस्कृतादपभ्रश्यत इत्यपभ्रशः ।  
अपभ्रष्टः शब्दोपशब्दः, गावो गाणी गोपातलिङ्गादिः । शास्त्रे व्याकरणतन्त्रशास्त्रादौ यो वाचकः स शब्दः,  
लोकं समुद्रधोपादिरपि । वक्तव्यं वाक्यं, चजोःकुधिष्यतोः ( सू० ), वचोऽशब्दभेदायां ( सू० ) इत्य-  
न्यत्र वाच्यम् । तिङ्स्तसमूहो यथा- पचति भवति- पाठो भवतीत्यर्थः । मुपयन्तचयो यथा- प्रकृतिवि-



मोक्षे धीज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।  
 मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयानिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥  
 मोक्षोपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहमतिः स्त्रियाम् ।  
 रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥  
 गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।  
 कर्मेन्द्रियं तु पाप्यादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥  
 तुवरस्तु कषायोस्त्री मधुरो लवणः कटुः ।  
 तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥  
 विमर्दोऽथ परिमलो गन्धे जनमनोहरः ।  
 आमोदः सांतिनिहारी वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥  
 समाकर्षी तु निहारी सुरभिर्भाणतर्पणः ।  
 इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुक्त्ववासनः ॥ ११ ॥  
 पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्त्रं स्यादामगन्धि वत् ।  
 शुक्रशुभ्रशुचिर्भवेतविशदस्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥

( मू० ) साधुः । अविद्यमानं मृतमत्तामृतम् ॥ ६ ॥ भावभ्योपवर्जनमपवर्गः । महानन्दोपुनर्भवश्च ।  
 विरुद्धं वेदनमविद्या, अधर्मानर्षवद् विपर्यये नञ्, यदाह— आनत्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिमुखात्म-  
 ह्यातिरविद्या । अहमित्यस्य मननमहमतिः, अन्नात्मन्यात्माभिमानात्, अहमिति विभक्तिप्रतिरूपको  
 निपातः । रूपाद्याः पञ्च, विसिन्वान्ति वचनान्ति विषयाः, पञ्चाद्यन् ( मू० ), परिनिविभ्यः सेवसितसयेति ( मू० )  
 पत्वम् ॥ ७ ॥ गाव इन्द्रियाणि चरन्त्येषु गोचराः, गोचरसंचरति ( मू० ) साधुः । इन्द्रियैरर्थ्यन्त इन्द्र-  
 यार्थाः । अर्थान् । हृष्यत्यनेन हृषीकम् । विषयोऽस्यास्तीति विषयि । इन्द्रस्यैव मनो लिङ्गमिन्द्रियं,  
 इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गं ( मू० ) इति साधु । वाक्पाणिपादग्राह्यपस्याह्यं वचनादानगत्युत्सर्गानन्दरूपकर्म-  
 साधनमिन्द्रियम् । मनःपञ्चानि नेत्रजिह्वाघ्राणत्वक्श्रोत्राणि धीर्देवो बुद्धीन्द्रियाणीत्यर्थः ॥ ८ ॥ तु  
 इति सौत्रादावरणार्थादौणादिको वरच् । कपति कण्ठे कषायः । मधु माधुर्यमस्यास्तीति मधुरः, कष-  
 युपीति ( मू० ) रः । लुनाति जाड्यं लवणः, नन्यादित्वात् ( मू० ) त्युः, गत्वं च । कट्यावृणोति  
 कटुः । तेजति स्म तिवतः । अम्लमम्लः, अम्ले इत्येके— अम्लमाहुः । तुवराद्याः षट्, रस्यन्त इति  
 रसाः । गुणमात्रे रसः पुंसि, गुणवद्वृत्तित्वे तेभिषयलिङ्गाः ॥ ९ ॥ सुरभिर्मातृगन्धादिपरिमर्दोत्पन्नो  
 हृद्यो गन्धः परिमलः । स गन्धोऽतिदूरव्यापी मनोहारी वा, समन्तान्मोदनेनेनामोदः । वाच्यलिङ्गाद-  
 मागुणात्— अधिकारोयम्, ( अधिकारार्थः ) गुणाः शुक्रदय इत्येतस्मात्प्रागभिषेयलिङ्गाः ॥ १० ॥  
 अत्र यो यं प्रति प्रसिद्धस्तदनुवादे नान्यविधिः । निहृत्यवस्यं निहारी । सुष्ठु रभते सुरभिः । शो-  
 मनो गन्धोऽस्य सुगन्धिः, गन्धस्येदुत्पत्तीति ( मू० ) इत् । मुखं वासयत्यनुलिम्पति मुखवासनः, मुख-  
 वासयोग्य इत्येके, मुखवासस्यागुहवासन इति भागुरिः, यतः— आमोदो नित्योऽस्यास्ति अन्ये द्वौ द्वौ भि-  
 न्नावहः ॥ ११ ॥ पुरो विस ( श ) रणे दुर्गन्धे च, पूतिर्विसः पूतिरिव वा गन्धोऽस्व । विस्यति विस्त्रं,  
 विस टत्संघं । आमोपको ममस्तस्यैव गन्धोऽस्यामगन्धि, उपमानाच्च ( मू० ) इतीति । शोकति मनोश्मि-  
 न्शुक्रः, शुक्र गतो । शोभते शुभ्रः । शुच्यति शुचिः । विक्षिता वर्णं, भेतते भेतः । विशीयते विशदः,  
 विशाति चित्ते वा । श्यायते श्येतः । पण्डते याति मनोस्मिन्पाण्डरः— उणादौ ( अरः ) ॥ १२ ॥ अव-  
 दायने शोषयतेवदातः । सिनोति मनः सितः, पिप् बन्धने । गो ( गु ) रते मनोस्मिन्नोरः, गुरी उद्यमे,



जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तित्वं पृथगात्मता ।

चिन्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं ह्यमानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः । ३ ।

बुद्धिर्मनीषा धिपणा धीः प्रज्ञा हेतुषी मतिः ।

प्रज्ञापलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञातिष्वेतनाः ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा संकल्पः कर्म मानसम् ।

चित्ताभांगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः ।

संदेहद्वारौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः ॥ ४ ॥

संविदायूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंभवाः ।

अङ्गीकासाभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

अमुनि चेतः । ह्रियते विपर्ययद्वयम् । स्वनति स्वान्तं, शुब्धस्वान्तंति ( सू० ) साधुः । ह्रियते हृद् दान्तं । प्रकृत्यन्तरमस्ति, तदाधारोपि ह्युपुष्टीकम् । मन्यते मनः मनः । एव मानसम्, स्वार्थेऽण् ॥ ३१ ॥ इति कालवर्गः । ३ ।

मनुते मनीषा, मनस एव- ईषा वा । दे दि धेति धिपणा, धिप शब्दे । व्यायति धीयते वास्यां धीः । सेते शेः- मोहस्ते मुष्णाति शेमुषा, शमेः कसावेत्वाभ्यासलोपे डीञ्वा । उपलब्धिर्बा, हुलकावितन्, पिवादाडि तूपलम्भा स्यात् । प्रतिपत्तिः प्रतिपन्, सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्थाः । ज्ञप्तिः, कथं- चित्तापणार्थे, मिताहसः ( सू० ) । सांख्ये बुद्धिधर्मस्येते पर्यायाः, वैशेषिकादौ चतुर्दशापि बुधार्थाः ॥ १ ॥ मेधते सगच्छतेत्यां मेधा । मनसो व्यापारः संकल्पः । विकल्पोपि । पूर्वोक्तस्य चित्तस्य ' संतानद्वारेण स्थे धे ' र्यमाभोग इति बौद्धाः । पुनः पुनर्मनसि करणं मनस्कारः, अतः- कृकमेति ( सू० ) सत्वम् । समापनमवधानं प्राणधानं च । चर्चनं संख्यानं विचारश्च । विमर्शो वासना भावना, संस्कारोनुभूतायविस्मृतिरिति वक्तव्यम् ॥ २ ॥ अध्याहारमपूर्वप्रेक्षणम् । तरत्वेन संशयविपर्ययो तर्कः, तर्केण वा, तर्क मापार्यः । उभयकोटिस्मृज्ज्ञानं विचिकित्सा- एकप्रानास्तेः, कितः संशयं सन् । शीद्दिहोर्नानार्थयोः सशब्ददेशार्थो द्योत्यते, उपसर्गस्य वा सार्थो धातुपाधिवशात्तदकाशते । एव सर्वत्र । द्वौ पक्षौ परो यत्र द्वारः, पृथोदरादित्वात् ( सू० ) आत्वम् ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टिः परलोकाभाक्कृदिः । नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य, अस्तिनास्तिदिग्मतिः ( सू० ) इति ठक् । व्यापाद्वन् व्यापादः, व्यन्तादच् । रादः धिदास्ते निश्चयोस्य रादान्तः । मिथ्यामतिरतस्मिन्तदिति ज्ञानम् ॥ ४ ॥ पक्षोक्तिः प्रथिताङ्गीकारश्चयुभयौद प्रतिज्ञा । संविज्ज्ञानं, यथा- सत्संस्कारणातीता, नियमोपि, यथा- सविदे लङ्घयेच्च सः । धातुनामनेकार्थत्वादुपसर्गवशाद्वा तत्तदर्थत्वम् । आगममनाग, अमेथ हः ( उ० ) इति चकाराड् इः ॥ ५ ॥ मोक्षविषया मोक्षफला वा धीः ( ज्ञानम् ) । मोक्ष [ प्रतिपादक ] शास्त्रादन्यत्र शिल्पे चित्रादी शास्त्रे च धीर्विज्ञानम् । मोचनं मुक्ति- मोक्षः पाशेभ्य आत्मनः पृथग्भावः । अत एव केवल्यौट्या । निर्वात्यस्मिन्निति निर्वाणं, निर्वाणाऽवाप्त इति ( सू० ) साधुः, पैभौवे शोषणं । अतिशयेन प्रशस्यं श्रेयः । निश्चितं श्रेयो निःश्रेयसम्, अचतुरेति

स्याद्धर्ममस्त्रियां एण्यश्रयसी सुकृतं वृषः ।

मुत्प्रीतिः प्रमदां हर्षः प्रमां दामोदसंमदाः ॥ २४ ॥

स्यादानन्दधुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।

श्वःश्रयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥

भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।

शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

मतल्लिका मर्चाचिका प्रकाण्डमुदघतल्लजा ।

प्रशस्तवाचकान्यमन्ययः शुभावहां विधिः ॥ २७ ॥

देवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिविधिः

हेतुर्ना कारणं वी-वीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

विशेषः कालिकावस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।

प्राणी तु चेतना जन्मी जन्तुजन्मुशरीरिणः ॥ ३० ॥

यागाङ्गे नपुंसकं- तानि धर्माणि प्रथमान्यागन् ( धर्मः ), कले तु पुमान्- एष धर्मः सनातनः ( मनु० ) इति विशेषोक्त्य नेष्टः । लोकामो नाप्ययमेति यागिभाषिका धर्मोऽप्येवमस्ति । पुनाति पुण्यं पुण्यकर्मणि शुभे च । अतिशयेन प्रशस्तं श्रेयः तद्वत्पुनं प्रशस्तस्त्वयः ( मू० ) । मुक्रियते स्म मुकृतम् । वर्षति वृषः, कः । प्रमदसंमदाहर्षं ( मू० ) साधु ॥ २४ ॥ आनन्दनमानन्दधुः, द्वितीयायुः ( मू० ) । शृणाति क्लेशं शर्म । शयति दुःखं शानं, शो ननुकरणं, नन् । शोभनानि शानान्द्रियाभ्यगमिन् सुखयति वा सुखम् । अ आगामि श्रेयोत्र श्रेयसां च, शोभते श्रेयसां च, शोभते श्रेयसां च, शोभते श्रेयसां च ( मू० ) इत्यन् । भन्दते भद्रं, भदि कन्याणे । कल्यं नीरुजलमणति कन्याणम् । मङ्गलं मङ्गलम् । शोभते शुभम् ॥ २५ ॥ भवनशालं भावुकं, ( लपयतपद ) स्थाभयतेति ( मू० ) उक्तं । प्रशस्तो भवोऽस्यास्ति भविकम् । भवनाहं भव्य, भव्यगेयेति ( मू० ) साधुः । क्लेशान्- क्लेशात् क्लेशेन शयति वा कुशलम् । क्षिणाति क्लेशान् क्षेमः । शस्यते स्म शस्तम् । प्रशस्तं च । निःश्रेयसं मालायाम् । मनुनं कात्यः । द्रव्य इति विशेष्यालिङ्गतायामभिधेयालिङ्गम् । आदिमन्दाकलुषश्रेयसां विरमशब्दः ॥ २६ ॥ निरस्तावय- वा एवैते प्रशंसार्थाः, अत एव प्रशंसावचनं च ( मू० ) इति नित्यमात्मनः । प्रशस्तो गौर्गोमतल्लिका, ब्राह्मणमर्चाचिका, गोप्रकाण्डम्, कशोदघः, कुमार्गतल्लजः, तद्वज्रक इति तु लक्ष्यम् । सघोदघोऽङ्गणप्रशंसयोरिति ( मू० ) उद्घोऽसमांसि । एतयः ॥ २७ ॥ देवम्यागमन इदं देव- पूर्वकर्म । दिश्यते स्म दिष्टम् । भगव्यैश्वर्यादौरेदं भागं, भागमेव भागधेयम्, भागव्यनाम- भागधेयः ( वा० ) । भागाद्यच्च ( मू० ) भाग्यम् । नियम्यतेनया नियतिः । विधीयतेनेन विधिः । भागव्यत् भागधेयता च । द्वितीयायुः हेतुः । कार्यतेनेन कारणम् । बीज्यतेनेन वेति वा बीजम् । निर्दायेन जन्मोत्पत्तिर्निदानम् । आदावारम्भे कारण-मुपादानकारणम्, सहकारिकारणमन्यन् ॥ २८ ॥ क्षेत्र- देहमात्रं चेतयते क्षेत्रज्ञः । अतति संचर-त्यात्मा । पुरि शयनात्पुरुणा पुरुषः । प्रथमेननः गवे प्रधानम् । प्रारम्भात्क्रियतेनया प्रकृतिः, संचरज-स्तमसां साम्यावस्था- अव्यक्तावस्था । कालकुनो देहादेर्मन्दोवस्था- अन्यथास्थितियौवनादिः । गुणाः प्रकृतेर्धर्माः । सत्त्वं साधुत्वप्रकाशकं ज्ञानमुखहेतुः । रजो रागात्मक दुःखहेतुः । तामस्यनेन तम आवरकं मोहहेतुः ॥ २९ ॥ जनने जनुः, जनेशसिः ( उ० ) । उत्पत्तिसाहचर्याजानिः स्त्री, इक् ( ण् ) । जन्मी, श्रोत्रादिना ( मू० ) । जयते जन्मः ॥ ३० ॥ ( व्यक्तिः ) विशेषावस्था । चेतति चित्त, कः,

निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

स्त्रियां प्रावृद्ध स्त्रियो भूम्नि वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

पटर्मा ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।

संवत्सरा वत्सराब्दा हायनः स्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रा वर्षेण देवतः ।

देवं युगसहस्रं द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ वृणाम् ॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

संवतः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥

अस्त्री पट्टकं पुमान् पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ।

कलुषं वृजिननाघमहां दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

रम्भे सुरभति ता सुरभिः । कल्पोदयाम् । गिर्यन्त्यु प्रोमः । ऊष्मप्रतिकृतिरूपमकः ॥ १८ ॥ निदराते-  
स्मिन् निदाघः घन, न्यद्वक्त्रादिवाक्कुम्भम् ( मू० ) । उष्णो ओष ( नि- उष्णः । तपति तपः, अन्,  
यत्तस्यम्- तपन् वर्षाः शरदा दिमागमः ( शिशु० ) । प्रवर्षति प्रावृद्ध, नदिश्रुतिवर्षाति ( मू० ) दीर्घः ।  
भूम्नि बहुत्वे, वर्षमस्त्रियां वर्षन्ति वा वर्षाः । शीर्यन्तेभ्यो पाकेनोपपद्यः शरत् ॥ १९ ॥ यत्कात्यः—  
अदाय मार्गशोर्षाच द्वौ द्वौ मासास्तु स्मृतः । हेमन्ताद्धि वत्सरस्यारम्भः । ऋतुः पुलिङ्गः । संवत्समिति  
ऋतवोस्मिन् संवत्सरः, ऋतुपरिवर्तनात्मा लोमा, यद्भागुरिः— संपूर्णपरिवर्तस्तु स्मृतः संवत्सरो युगेः ।  
पारवत्सरोपि । इदावत्सर इदमत्सरोनुत्तरना उच्यते । आप्येनन्दः । जहाति—ऋतुत् हायनः, हृथवीहि-  
कालयोः ( मू० ) इति षुट् । समान्ति सनाः, यद् मान्ति वर्तन्ते ऋतवो यासां वा, स्त्रीबहुत्वेयं यथा—  
जीव्यासहस्रं समाः । समांसमांविजायते ( मू० ) इत्येकत्रयेण दृश्यते ॥ २० ॥ मासेन पौरुषेणेति शेषः ।  
पितृणामय पैत्रः, देवतार्थे पित्र्यः स्यात् । तत्र कृष्णः पञ्चोऽहः शुक्रो रात्रिः । वर्षेण पौरुषेणेति शेषः । [ देवताना-  
मयं देवतोहोरात्रः ] तत्रोत्तरायणमहः— दक्षिणायनं रात्रिः । [ ब्रह्मणेयं ब्राह्मः ] अहोरात्र इत्येष । देवहिं  
सषाष्टिः ( पटर्षाष्टकेः ) त्रिभिरहोरात्रैर्नन्दिव्यं वर्षं, तद्वादर्शिनः सहस्रेल्लोककं चतुर्युगं, तच्च देवानामेकं युगं,  
तत्सहस्रं ब्रह्मणे दिने भूतानां स्थितिकालः, तावत्येव रात्रिभूतानां प्रलयकालः । [ यन्मनुः ]— चत्वार्योहुः  
सहस्राणि वर्षाणां तु कृतं युगम् । तस्य तावच्छतौ तस्या संख्यासश्च तथाविधः ॥ इतरेषु ससंध्येषु ससंध्या-  
शेषु च त्रिषु । एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ यदेतत्परिसंख्यानमादावेव चतुर्युगम् । एतद् द्वा-  
दशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते ॥ [ देविकानां युगानां तु सहस्रं पारसंख्यया । ब्राह्ममेकमहर्ह्यं तावती रात्रि-  
रुच्यते ॥ ] ये द्वे देवे युगसहस्रं तौ वृणां कल्पौ, सर्वनाम्नां विधीयमानान्युत्तमानलिङ्गग्रहणे कामचारः । एकः  
स्थितिं कल्पयति, द्वितीयः क्षयं कल्पयति ( अतः कल्प द्वायुच्यते ) ॥ २१ ॥ मनुनां स्वायंभुवः स्वारोचिषीत्तमि-  
तामासिर्वतः ] चाधुर्पर्ववस्वतादीनां प्रजापतीनामन्तरमवकाशोविधिः । तैर्हि चतुर्दशभिर्मन्वन्तरे ब्रह्मणे दिन-  
म् । संवर्तते प्रलयोत् कल्पेन क्षायोन्मन्न् वा जगत् । कल्पस्यान्तोऽर्थः कल्पान्तः । एकः कल्पोत् क्षयार्थोऽस्यो  
वर्गादितार्थः, यच्छाश्वतः— कल्पः क्षास्ते विधी न्याये सर्वेन ब्रह्मणे दिने । संहारो युगात्ययः परिवर्त-  
श्च ॥ २२ ॥ क्षयहेतुं पापमाह । पमयते पट्टकः । पात्यस्मात्पाप्मा पापं च । केलयति किल्बिषम्  
कलयति कल्मषं कलुषं च । वजयते वृजिनम् । एत्येनः । न जहात्यवम् । अंहलंहः । दुरेति दुरितम् ।  
दुष्क्रियते स्म दुष्कृतम् । एनांहं सान्नी । मालायां क्रियम् । मलोनेकार्थम् ॥ २३ ॥ भारणादमः,

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत् ताः कलाः ।  
 तास्तु त्रिंशदक्षणास्तु तु मुहूर्ता द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥  
 ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्तं दश पञ्च च ।  
 पक्षा पूर्वापरा शुक्लकृष्णा मासस्तु तावुर्भा ॥ १२ ॥  
 द्वा द्वा माघादिमासा स्याद्वृत्तैरयनं त्रिभिः ।  
 अयने द्वे गतिरुदगदक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥  
 समरात्रिर्दिवं कालं विषुवद्विषुवं च तत् ।  
 मार्गशीर्षं सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥  
 पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेथ फाल्गुने ।  
 स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिका मधुः ॥ १५ ॥  
 वैशाखे माघे राधे ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।  
 आपादं श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥  
 स्युर्नभस्यर्षोष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।  
 स्यादाश्विन इषोप्याश्वयुजापि स्यान्तु कार्तिक ॥ १७ ॥  
 बाहुलोजौ कार्तिकिका हेमन्तः शिशिरोस्त्रियाम् ।  
 वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

क्षणं हिंसायाम् । ते क्षणा द्वादश, मुहूरियति मुहूर्तौ द्विषदिकम् ॥ ११ ॥ ते मुहूर्ता त्रिंशदहोरात्रा सहिता रात्रिरहो-  
 रात्रः, अहः सप्तैकदेशेऽत्यन्तं (सू०) द्वादशैव होरावा विभौ पुण्या । ते होरात्राः पञ्चदश, पञ्चति भूतनीति पक्षः, पक्ष  
 परिग्रहे वा । शुक्लो मासस्य पूर्वपक्षः कृष्णस्य पश्चिम, यतश्चेति नित्याया मासः । तौ पक्षा मास्यन्दस्त्वस्याये  
 माम इति निर्वचनेन चान्द्रेण माननायम् । गौरमावतनाक्षयमानस्यव्यथा, मस्यानि मिमाने वा ( मास )  
 ॥ १२ ॥ इत्यति ऋतुः । माघाद्यष्टमस्तु नोयनागम्मान । यदाह नैऋतुर्भास्त्रिभिः, अयने कौनेनायनम् । उत्तरा  
 दक्षिणा च यार्कस्य गतिः, ते द्वे अयने मिलिते वस्ये वर्षे ॥ १३ ॥ गमौ रात्रिर्दिवौ यत्र, अचतुर- (सू०)  
 इत्यादिना साधुः । विषु मास्यध्ययम्, तद्विद्यतेस्य विषुवत्, विषुव च, वो मन्वथे लिङ्गान् ( अन्येभ्योः  
 पिदृश्यते ) । विष्वगित्यन्तरपदलोपश्चाकृतमन्वथे ( वा ) इति हि विषुवत् ( वा ) युक्तः । मृगशीर्षेण  
 युक्ता मार्गशीर्षा पौर्णमास्यास्मिन्, यास्मिन्तर्पणमासी ( सू० ) इत्यण । महोत्सवस्मिन् महाः, मन्वथे-  
 मामतन्वोरिति ( सू० ) यत्, तस्य लुगकारेकारेकारेण ( वा ) पक्ष शुक्र, पक्ष्ये लोकान्, सहस्र  
 सहस्रस्य हेमन्तकावृत्त इति छान्दोग्यम् । एष तपाः- नभाः । मासवस्यमृगशीर्षस्य मगवान्मासः । आग्रहा-  
 यणी पौर्णमास्यस्मिन्नाग्रहायणिकः, आग्रहायण्यथाप्यष्टक ( सू० ) ॥ १४ ॥ ( पौषः- तैषः ) प्राग्र-  
 दण- द्वयम् । तथा च- पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषो मासे तु यत्र सा । नासा स पौषो माघायाश्चैवमे-  
 कादशापरे- इति कचित्श्राद्धास्ति । सद्यस्यास्तीति सद्यस्यः, मन्वथेमासतन्वोरिति ( सू० ) यत्, एव  
 तपस्यनभस्यौ । तपोस्यास्तीति तपाः । ( फाल्गुनिकः । विभाषाः फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकैश्चैवैव्यष्टक (सू०)  
 मधुर्वसन्तोस्यास्तीति मधुः, मधोमेघेन । न० ) इति वसन्तं वा लुक् ॥ १५ ॥ राधया युक्ता पौर्णमासी-  
 अस्मिन् राधः । शुभिवयनेस्य शुक्रः, लुगकारेकारेकारेण ( वा ) इति रेफः । शुभिवयनेस्य शुनिः,  
 इकारः । न भासनं मेघच्छन्नयादस्यस्य नभाः ॥ १६ ॥ गौतमवद्वदया युक्ता भाद्र पौर्ण-  
 मास्यस्मिन् भाद्रः । इत्यने- डडश्च विद्यतेस्य- डडः, अकारः ॥ १७ ॥ बहुर्गमयुक्ता बाहुली पौर्णमा-  
 स्यस्मिन् बाहुलः । ऊर्क-अत्रं चले वास्यास्तीति-ऊर्कः । हिमान्तोस्य हेमन्तः, प्रपोदरादिः ( सू० ) ।  
 ( शिशिरः ) शिनोत्यर्थं शीतं, शिञ्च निशानं । वसन्त्यस्मिन् मुखे, वस्ते भुव वा वसन्तः, जज्ञः । मुहु

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।  
 विभाचरीतमस्विन्यां रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥  
 तमिस्त्रा तामसी रात्रिर्ज्यांस्तीना चन्द्रिकयान्विता ।  
 आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥  
 गणरात्रं निशा बह्व्यः प्रदोषां रजनीमुखम् ।  
 अधरात्रनिशीथा द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥  
 स पर्व संधिः प्रतिपत्पञ्चदश्यांर्यवन्तरम् ।  
 पक्षान्तौ पञ्चदश्यां द्वौ पूर्णिमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥  
 कलाहानं सानुमतिः पूर्णं राका निशाकरं ।  
 अमावास्या त्वमावस्यां दर्शः सुयन्दुसंगमः ॥ ८ ॥  
 मा दृष्टन्दुः सिनीवाली सा नष्टन्दुकला कुहः ।  
 उपरागो ग्रहो राहुग्रस्तं त्विन्दो च पूर्णि च ॥ ९ ॥  
 सोपप्लवोपरकां द्वावग्न्युत्पात उपाहितः ।  
 एकयोक्तव्या पुष्पवन्तो दिवाकरनिशाकरो ॥ १० ॥

निशीथं च तस्यां निशीथिनी, महाजिह्वस्त्रा । रात्रिः मुखं गात्रः । आश्विनयोरर्धयानयोर्दिनव्यवहारस्त्रिवा-  
 म् । क्षणमवसरं दर्शान् क्षणदा विभ्रजिन्प्रदश्यः । क्षयते क्षपा, निदायद (मू०) । विभाति विभाचरी,  
 कानिच, वनोच्च । (मू०) । रात्रिः रात्रिः । रात्रिः तमसा रजनी । यामाः सन्त्यस्यां यामिनी । ताम्य-  
 न्त्यस्यां तमी । ( के भूयन्ति स्तनमण्डलानि कौटुम्बिका चन्द्रमसः कुतः प्रायः किमाह सीता दशवक्त्रनीता )  
 हाग महादेवस्ता तमानः ( विदग्धः ) इति तमसि । वागनेयी मालायाम् ॥ ४ ॥ रात्रिः काकाक्षिवत् ।  
 तमोस्त्र्यस्यां तमिस्त्रा, उद्योक्तातमिथेति (मू०) । मापुः । उद्योक्ता तामसां पञ्चप्रहरणं उद्योक्तादिभ्य उपसंख्यानं  
 ( वा० ) । शाश्वतस्तु-उद्योक्ता उद्योत्पन्नी रात्रिर्ज्यांस्त्रि चन्द्रमसः प्रभति । पूर्वोपराहयोः पक्षयोरिव  
 मध्ये वर्तमानत्वात् वर्तमानाहो वदामा निशा- निशामध्येषि दिवसः- पक्षिणीत्याहुः ॥ ५ ॥ गणानां रात्री-  
 णा समाहारः, अहःसंस्कदेशेति (मू०) । गह्वर्यात्वादत्र गमामान्तः, रात्राद्वाहाः पुसीति (मू०) । अस-  
 माहारं हि पुष्पम् य-माला-गणरात्रं नपुंसकम् । प्रारब्धा दोषा यस्मिन् (प्रदोषः) । समाविलेख ।  
 अर्थे रात्रेरर्धरात्रः, अर्थेनपुंसकमिति (मू०) । नपुंसकः । निशतं शरत्तेस्मिन् भूतानि निशीथः, अत एव  
 कात्यायनो निशीथं मुखजननात् । यानं यानः । प्रहियतेभ्यिन् प्रहरः, पुंसि संज्ञायां च (मू०) ॥ ६ ॥ स  
 मन्धिः पर्वति संवत्सः, दुर्गादि-प्रतिपत्पञ्चदश्यास्तु याधिः पर्वं प्रदिकं कर्तुम् । प्राच्यास्तु पर्वसन्ध्या-  
 क्षवमाह्वयन्, रूपभेदात्कथं । पक्षान्तं इति योनिकालमंज्ञा । पूर्णो माश्वन्तः पूर्णमास्तत्र भवा पूर्णिमासी ।  
 पूर्णो मासो वर्तते चास्याः पूर्णमासादहम् । पुरणं पूर्णिः, कृत्वादिभ्यस्तु निशावत् (वा०) इति नर्वे,  
 पूर्णो मासो वर्तते चास्याः पूर्णमासादहम् । पुरणं पूर्णिः, कृत्वादिभ्यस्तु निशावत् (वा०) इति नर्वे,  
 पूर्णो मिमौते पूर्णिमा, काः ॥ ७ ॥ सा पूर्णिमा कलाहानं निशाकरं, अनुमन्यतेनुमतिः । पूर्णं, राति मुखं  
 राका । ( अमावास्या ) अमा नह वनोक्ता चन्द्रासी । ( अमावस्या ) अमावस्या दन्त्यतरस्यां (मू०) ।  
 इति ष्यन्ति पक्षे कृशभाषो निपात्यन्ते । दर्शने यात्रिकैर्दर्शः, न दृश्यते चन्द्रोऽस्मिन् विपरीतलक्षणया ।  
 ८ ॥ मिनी मिता वाला कलास्याम् । कुहोर्ध्वमापि नर्वे, कुहं हस्ति तमसा वा । उपरज्यते छाद्यतेने-  
 नापरागः । ग्रहो ग्रहः, ग्रहवृद्धः (मू०) । राहुः ॥ ९ ॥ इन्द्राहुग्रस्तः सोपप्लव उपरकथ । एवं पूर्णापि ।  
 अमिकृत उपसर्गः, उप- आसन्नमहिननयेपाहितः, धुमकेत्वाह्य उत्पात इत्येके । एकयोक्तव्य- अष्टय-  
 यवचनेन रोदसीवत्, न तु पुष्पवानिन्दुः सूर्यो योच्यते, पुष्पं विकाशः प्रकाश इत्यर्थः ॥ १० ॥ निषेधो-  
 दिस्त्वन्दकालः । काशते काश । ताः काशान्निशकलयति कालं कला । ताः कलाक्षिशत्क्षणनलक्षणः,



किरणंस्त्रमयूखांशुगभस्तिपृणिपृष्ठन( रश्म )यः ।  
 भानुः करा मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दाधिपतिः स्त्रियाम् ॥ ३४ ॥  
 स्युः प्रभा रुधुचिस्त्रिड भा भाश्चुविद्युतिदीपयः ।  
 रोचिः शोचिरुभे क्लीबे प्रकाशो द्यात आतपः ॥ ३५ ॥  
 काष्णं कर्वाष्णं मन्दाष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वाति ।  
 तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मुगतुष्णा मरीचिका ॥ ३६ ॥  
 इति व्योमदिग्वर्गः । २ ।

कालो दिशोप्यनेहापि समयोप्यथ पक्षतिः ।  
 प्रतिपदं द्वे इमे स्त्रावे तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥  
 यस्मादिनाहनी वा तु क्लीबे विवसवासरी ।  
 प्रत्युपाहर्मुखं काल्यमुपःप्रत्युपसी अपि ॥ २ ॥  
 प्रभाते च दिनान्ते तु सायं संध्या पितृप्रसूः ।  
 प्राज्ञापरारुहमध्याह्नेस्त्रिस्थमथ शर्वरी ॥ ३ ॥

न्यास्मिन् रगा उच्यः । भिनेति क्षिपति तमो नयनः । अस्तुने- अयुः । गा यनास्ति दीपयति गभस्तिः, प्रभादिरादिः ( सू० ) । तिपति पृथिविः । तिपति स्थिति वा इमो पृथिविः भुवं वृष्ट्यं प[ व ]पति क्षि-  
 धति पूर्वं व [ णि ]मयेकैना क्लीबे कयः । क्षिपेस्मिन्स्त्रमो मरीचिः । दीपति दीपयते दीधितिः ॥३४॥  
 प्रभादनामादिभ्यश्चिस्त्रमयूखांशुगभस्तिपृणिपृष्ठनयोः पुनरिहोपादानं सामान्यार्थम् ।  
 दीपयानादयोः क्षणाधारणो आप कर्षिभः साधारणोऽह्वाः, यथा मुखदीपिः, चन्द्रानपः । रोचने दृक् ।  
 म.भायो धातुमेव । शोचिर्भेदाद्यन्ते ॥ ३५ ॥ कर्वाष्णं । न० । इति का-कर-कम्मुदायान्  
 त्रैलोक्यम् । एषा धर्मेनाथे काल्यः, भूमिस्थित्यभिधेयलक्षणम् । नेत्रनातिगमनीक्षणो । खरति खरति  
 वा खरम् । तद्वदिनि । प । तीक्ष्णं भूमिणि विधिवति स्थिते । अत्युपायं चेतत् । यदाहुः- तिग्मं तीक्ष्णं  
 कदुष्णं स्वनः । अत्युपायं तृतीयम् । तृतीयाः । तृतीयां तृतीयाकम् ( मृगतृतीया ) । मरीचिप्रति-  
 हतिर्नारीचकः । प्रतीति विह्वल मरीचकः यतिफलता ज्ञेयनामान्ति, अत एव मरुमरीचिकोच्यते ॥३६॥  
 इति व्योमदिग्वर्गः । २ ।

कलवर्गः कालवर्गः वा नो कालः । दिश्यते स्म दिष्टः । न- ईदृशेननेहा, अयुत्, कदुशनस्तुदशोने  
 हयाव ( सू० ) इति गाननह । समेति समतः । पक्षस्म मुखं प्रारम्भादन पक्षतिः । प्रतिपद्यते उपकम्यते-  
 नय प्रतिपत् । सा प्रतीदश्या यागो नः, नयने निधेः स्त्रीपुंदिष्ट्याः ॥ १ ॥ घमति तमो घस्यते-  
 ( अने अस्तुत वा घयः । घति तमो दिनम् । न जहाति कालमहः, नविजहानेः ( उ० ) इति  
 कनिष्ठ । दीपयति क्षिपयति । नयनं निमग्नं वा ययम् । प्रत्युपति निशां प्रतिपद्यति, प्रतिपत्ता- उषा  
 न तदा प्रत्युपः । शोचि माधुःकस्य, शाश्वतः काल्यमुपाह- कस्य प्रभातं यत्नं च कस्यो निरोग-  
 रक्षयोः । उच्यते । कर्वाष्णं कयः । एषा प्रत्युपः ॥ २ ॥ भानुं पृष्ठं प्रभातं, आदिकर्म-  
 भिवतः ( सू० ) । भिनातं भुजः । मे यमो देशम् । प्रताः प्रवेद्यम् । नायमव्ययम् । सायाह्नादिदीशानात्,  
 सायाह्नादिदीशानात् ( सू० ) गान्धोप, यति दिवसायः, गान्धोदे मये पथोति भाव्यं यतिपृष्ठनिवृत्त्यर्थम् । संध्याय  
 नयनो गान्धोपे अलोपत्री वाग्यो नयः । पितृ प्रसूः पितृप्रसूः, प्रसूणो ह्येषा पितृप्रसूवित्री तनुः ।  
 प्राज्ञापरारुह मय वाहः राजहः विवसवः ( सू० ) । अहोहोनेभ्यः ( सू० ) । निक्षः संध्याः समा-  
 हत त्रिस्थम । आधर्मायाः न० । इति पक्षे स्थिते नष्ट, यन्माला- त्रिस्थं तु ननुसकम् ।  
 तृतीयां तृतीयाकम् । शर्वरी ॥ ३ ॥ निशानि पितृप्रसूवित्री चेष्टा निशा, आतपोपयम् । ( सू० ) इति कः



नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।

दाक्षायण्यांश्विनीत्यादितारा अश्वयुगांश्विनी ॥ २२ ॥

राधा विशाखा पुष्य तु सिध्यतिपुष्यां श्रविष्यया ।

समा धनिष्ठाः स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तरिमन्त्रेवाग्रहायणी ।

इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २४ ॥

वृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्ष-गीष्प-तिर्धिषणा गुरुः ।

जीव आङ्गीरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डजः ॥ २५ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काश्य उशना भार्गवः कविः ।

अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २६ ॥

रोहिणेया बुधः सौम्यः समो सौरिशनेश्चरौ ।

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयां विधुतुदः ॥ २७ ॥

अनपादिति ( मू० ) नक्ष प्रकृत्या । कृष्णानि गच्छन्ति, कृष्णानि तमा वा- कृष्णम् । आ विद्यतेभ्य भम् ।  
तरन्त्यनयूतारा । ( तारका ) स्वाधे कन्, तारकाश्रयोनिर्भानि ( वा० ) इत्याभारः, केष्वपि यच्छा-  
श्वतः- नक्षत्रे चाक्षिमाधे च तारकं तारकापि च, तदर्थं न- द्विष्येभ्योऽस्मि पुराणमीककथनं ( मणि )-  
च्छाधेः स्थितं तारकं ( विद्वदाल० ) । अथेनं कृत्वा, उडु गती वा । दाक्षायण्यांश्विनीत्यादिताराः समविशन्तिर्भानि ।  
दाक्षस्यापत्यं दाक्षदणी, अतस्तु ( मू० ) अनन्तरापत्येपि द्रिषायनवम्, यानि योर्ध्वेति ( मू० ) फल्,  
यदा- इतोमनुचजातेः ( मू० ) इत्यत्र- इत उपनमनानाद् द्रिष, सौरभ्यमापृक्ताभ्यां च ( मू० ) इति  
चकारादामुरायणवन् फः- नक्षितः । अत्रानु यदुक्तं युक्तु, अथकर्मभ्यामज्ञानम् ॥ २२ ॥ राधेनाति  
कार्यं राधा । विशाखाति व्याघ्रानि विशाखा, ज्ञान- व्याघ्रौ । पुष्यमि- योनिक्षेत्रे ( मू० ) साधु, पुण्यात्यर्थान्पुष्यः,  
सिध्यत्यनेनार्थाः सिध्यः । त्वेपति तिप्यः, त्विष्यं द्रिष्ये, आश्रयिदिः ( उ० ) । धृष्यं शुभकर्मणि ध्रुविष्ठा ।  
दधन्ति, धन करोति धनिष्ठा, ध्रुविष्येभ्योऽस्मिन् ( मू० ) । प्रोष्ठा नामो पदावस्थाः प्रोष्ठपदा, अर्धग्रहणाद्  
भद्रपदा, सुवातःसुधेति ( मू० ) साधुः, फल्गुनोप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रं ( मू० ) इति वा बहुत्वम् ॥ २३ ॥  
मृगस्यैव शीर्षं शिरास्य, ये ताराणां तथावस्थानात्, शीर्षं प्रकृत्यन्तरम् । अग्र हायनोभ्या आग्रहायणी,  
मार्गशीर्षादारभ्य सवनरप्रवृत्तेः आग्रहायण्याध्यायक ( मू० ) इति निर्देशादण । इन्वका इति पय  
ताराः, इन्वन्ति प्रीणन्तीन्वकाः, भक्तो देवता इन्वका नमस्त्वानि- यतेः । इन्वकास्तारका इन्वलोसुर  
इति- उणाशं आभोजं देवां वाकरोत ॥ २४ ॥ विवृता पतिवृत्तमार्तः । नक्षत्रतोः करपथोऽथोरदेव-  
तयोर्ध्वेति ( वा० ) मुद्रतलोपि । गोपतिः गोपतिः, अतश्चोनापन- विपु ( वा० ) इति वा रेफः, पक्षे  
कस्कादिदशनात् ( मू० ) पश्यम् । ध्रुवपणाम्यास्तोनि ध्रुवपणः ऋणपणपदिसानि गुरुः, कुप्रादय\* ( उ० ) ।  
जीव्यतेनेन मृतसंजीवनीज्ञानाज्जीवः । अङ्गीरमोपत्ययादाङ्गीरसः । चित्रशिखण्डजः समर्पिजः, समुदा-  
येषु हि वृत्ताः शदश ( अवयवेषु वर्तन्ते ) इति । वाचस्पतिः, अत्राक्ष पट्यापतिपुत्रेति ( मू० )  
सत्वम् ॥ २५ ॥ शुक्रो रुद्रस्य शुक्रद्वारेण निर्गतः । केशरपथं काश्यः, कुर्याद्विषयोः ( मू० ),  
कविस्त्वभेदायथा- जमदग्निं पत्रममवादानमभयत, आयुर्दध्यायत । चतुर्वर्णोऽनोऽन्वाथ उपमन्व्यानम् )  
इत्येके । वशीयुशना, कदुरानर्शत ( मू० ) साधुः । सौरभ्यं भार्गवः । शिष्टपानियानि पीनत्वादङ्गा-  
रकः, आरस्तु भौमवत् । कुजो जायते कुजः । भौमरपथं भौमिः, शिष्टादिपदम् ( मू० ) । वक्षेपि ॥ २६ ॥  
रोहिण्या अपत्यम् । सोमः पितापि देवतास्त्विति, सोमादङ्गा ( मू० ) । इत्यादिभेदाभावात् । सूरस्याक-  
र्णपथं सौरः, सौरस्तु नागदम् ( मू० ) । उणाशं नामानुपपन्नं दृग्गुणयोः दृग्गुणपथमित्यर्थः ॥ २७ ॥

अवजां जयातृकः सामां ग्लोर्मगाङ्कः कलानिधिः ।

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥ १५ ॥

कला तु षोडशा भागो विम्बोर्त्स्नाभण्डलं त्रिपु ।

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यधार्धं समंगकं ॥ १६ ॥

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ।

कलङ्काङ्कौ लाङ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ॥ १७ ॥

मुपमा परमा शोभा शोभा कान्तिर्युतिश्छविः ॥ १८ ॥

अवध्यायस्तु नोहारस्तुपारस्तुहिनं हिमम् ।

प्रालयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १९ ॥

शीतं गुणे तद्वर्थाः सुशीं पी मः शिशिरं जडः ।

तुपारः शीतलः शीतो हिमः सतान्यलिङ्गकाः ॥ २० ॥

ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसंभवः ।

मेत्रावरुणिरस्येव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥ २१ ॥

सोमः, सूयते वा, नवो नवो भवति जायमान इति ध्रुवः । ग्लोर्वि ज्योत्स्ना ग्लोः, ग्लानुदिभ्यांङोः (उ०) ।  
 (द्विजराजः) वनः सोमो राजा द्विजानीनाम् । क्षपां करोत्युद्घातयति क्षपाकरः । मुषामृतिः [ मुषामृतिः ]  
 आवेयो रोहिणीश [मस्र] धा । अमृतानिगमः, समुद्रगवनीतं दद्याम् ॥ १५ ॥ चन्द्रस्येति शेषः । पञ्चभिरधिका  
 दश षोडश, पञ्चत्वंदत्तदशधःगुत्तरपदादेष्टुत्वंच (वा०), षोडशानां पूर्णः, तस्यपूर्णश्च (मैः) । कलयति  
 संहर्तति कला । विम्बेति भाति विम्बमाभोगः, गौत्रायम् । भित्ते स्म भीतं शकलं साधुः (भित्तशकलं) ।  
 शक्यते भेत्तुं शकलं शकलो वा । खण्डयन् खण्डे खण्डो वा । खण्डलं भागच्छेदं च । कुप्नोति-अर्धं  
 मासो निर्देशात्पुंसि, वाच्यलिङ्ग इत्येके, वर्द्धाका-खण्डमात्रवृत्ततायामभिधेयलिङ्ग इति । समप्रविभागे  
 त्वर्धं नपुंसकम् । [ सामि ] दलं नमोपि ॥ १६ ॥ चन्द्रोऽस्यस्थं चन्द्रिका । कुमुदानामयं विक्काशहेतु-  
 त्वाङ्कोमुदी । ज्योतिरस्यस्यां ज्योत्स्ना, ज्योत्स्नातमिमेति (मू०) माधुः । प्रसादो नैर्मन्यम् । कन्यते लक्ष्यतेनेन  
 कलङ्कः । अकिं लक्षणे ( अङ्कयतेनेनाङ्कः ) । ( लाङ्छनं । लाङ्छि ) लक्षणे । चहयति चिह्नं, चह  
 परिकरकने । लाङ्छनसाहचर्याविद्वादि ऋषिः । अभिज्ञानं च ॥ १७ ॥ प्रकृष्टा कान्तिः मुपमा, मुपु समेति,  
 मुपामादित्वात् ( मू० ) पत्वम् । काम्येन कान्तिः । छयति छिनत्त्यपारं छविः ॥ १८ ॥ अवधायते-  
 वध्यायः, श्याद्वधेतिणः ( मू० ) । निधियते नोहारः । तुप्यस्यनेन तुपारः । नोहल्ययति तुहिनं,  
 तुहिरदने । हिनोति वर्धते जलमनेनोति हिमम् । प्रलयादागते प्रालयं, कक्षयमित्रयुप्रलयानांयादिरयः  
 ( मू० ) । मेहति मिहिका नोहारः, [ महिकापि ] । नोहारस्या न्वन्या धूमनहिर्षा धूमिका च दद्याम् ।  
 ( हिमानी ) हिमारण्योमेहत्वे (ना०) लोपानुक् च ॥ १९ ॥ गुणे जाये शीतं द्रव्यं, श्येदो भावेक्तः  
 ( मू० ), द्रवमूर्तिस्पर्शयोःश्वर्तुः ( मू० ) सप्रसारणं, संप्रसारणस्येति ( मू० ) दीर्घः । तद्वर्थाः शीत-  
 वलयाया अभिधेयलिङ्गकाः । सुपु श्यायते मुशीमः । शिनोत्वर्थे श्यायते वा शिशिरः । जलति जडः, जल  
 जाये । शीतं लाति शीतलः । ( हिमः ) हिमादेः- अशशादिःवादात् ( मू० ) ॥ २० ॥ चन्द्रप्रसङ्गा-  
 दागतमुक्त्वा प्रस्तुतमाह । ध्रुवति ध्रुवः, कः । उत्तानपादस्यापन्य, कपित्वाद् कृत्त्यन्धर्कति ( मू० ) अणि  
 प्राप्ते, बाह्वादिवादिन् ( मू० ) । अगं म्यायति स्वम्भितवानगम्यः । मित्रावरुणयोरपत्यं मेत्रावरुणिः,  
 कृपिसमुदायस्यानृपित्वादिन्, देवताद्वन्द्ववान् ( मू० ) । पतिनृपपालोपेवमुद्रा, न मुदे राति, लोपा-  
 मुद्रा । समानो धर्मोऽस्यस्याः सधर्मिणी कर्त्तुः ॥ २१ ॥ न धारति नयति, क्षय गतिश्चिनयोः, नञ्वा-

यनजीमूतमुदिरजलमुग्धमयोनयः ।

कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघमयभ्रियम् ॥ ८ ॥

स्तनितं गर्जितं मेघनिघोषं रसितादि च ।

शंपाशतहृदाहादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ॥ ९ ॥

तडित्सां दामनी विद्युच्चञ्चला चपलापि च ।

स्फुजं धुर्वज्रनिष्पं मेघज्यातिरिरमद् ॥ १० ॥

इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम् ।

वृष्टिर्वर्षं तद्विधातेवमाहावग्रहा समौ ॥ ११ ॥

धारासंपात आसारः शीकरां मुकुणाः स्मृताः ।

वर्षांपलस्तु करका मेघच्छेदं हि दुर्दिनम् ॥ १२ ॥

अन्तर्धा द्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरवारणम् ।

अविधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ॥ १३ ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदशान्धवः ।

विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुराषधीशां निशापतिः ॥ १४ ॥

इति साधुः । जीवनस्य जलस्य मृतः पुत्रवन्धो जीमूतः । मोदन्तेन मुदिरः । धूमो योनिरस्य धूमयोनिः ।  
कमाददत्ते कादम्बा मेघास्ते सन्यस्यां कादम्बिनी, कदम्बे विहासो वात्सल्यम् । मेघिका देवयाम् ।  
( अभिरं ) समुद्राद्वाधः ( मू० ), छान्दमत्वमन्त्रम् ॥ ८ ॥ आदिशब्दाद् ध्वनिगतजादि । सं पि-  
यति शम्भा, शम्बेति प्राच्याः- शम्बा य इति नायने तेज इति व्याख्यन् । शतहरोर्विचित्रनेस्याः  
शतहृदा, वाहवज्योतिश्चात् । ऐरावतोऽग्रगो नागस्तस्य स्त्री- ऐरावती । क्षणप्रभा- अत्रिरयातिः ॥ ९ ॥  
ताडयति तडित्, ताडणिलुक्च ( उ० ) । मुद्राप्रतिष्ठापकदिक्मौदामनी, तैनेकदिक् ( मू० ) द्रव्यम् । विद्यो-  
तते विद्युत् । चटुला [ वज्रञ्चाला च ] देश्याम् । स्फुजं स्फुजेषुः, दिवतोऽधुव ( मू० ) । निष्पेषः संप्रदेश्य  
शब्दः, अशन्यापात इत्यंके । एतेन वज्राशान्त्यास्तडित् ( उ० ) वे मन्यते । इरयांभसा माधति- इरमद्,  
उपपश्यंरमदेति ( मू० ) साधुः । धूमज्यानिःसाललमरुतां नद्य एव मेघस्तवन्त्यं ज्योतिराविर्भवमेघज्यो-  
तिरित्युच्यते । विद्युदाख्ये वटवानलज्योतिरेव न मेघज्योतिरनेन शम्भा शतहरोर्यादिसन्दा अभिलषिता  
इति ॥ १० ॥ मेघप्रतिफलिता हि मूर्धेरमयो धनुराकारेण द्रव्यन्तं तदेवेन्द्रधनुरुपाते ऋजुवक् रोहि-  
तम्, रोहः संज्ञातोभ्येति, लोहितवाद्वा, ऋजुकः ( मू० ) इति प्रकृतिभावः । वर्षम्, अजिबधो भयन्दी-  
नामुपसंस्थानं नपुंसकेष्वादिभिरुच्यम् ( वा० ) । तद्विधाते तस्य वर्षस्य विधाते निरोधे ( अवप्राहः, अव-  
ग्रहः ), अवग्रहावर्षप्रतिचन्द्रइति ( मू० ) घञ् ( विभाषा ) ॥ ११ ॥ वटधारां सुतते पतनं धारा-  
संपातः । आमारणमासारः, मृष्टिरे ( मू० ) इति घञ् भावे । शीकृतं लिखति शीकरः । मृता वातभ्रिताः,  
यत्काल्यः- आसारो वेगवद्वर्षं वातास्ते वरि शीकरः । कृणाति हिनस्ति कार्यते वा करका, क्षिपकादिः  
( वा० ), कमण्डलो च करक इति पुंस्यपि वक्ष्यति । अहरयाहर्निशोपलक्षणम् । अहि मेघेन च्छप्रमा-  
च्छादनामिति व्यधिकरणे राशम्यो वा, यद्भागुरिः- दुर्दिनं ह्यन्धकारेभ्यः । वार्दलं देश्याम् ॥ १२ ॥ अन्त-  
धानमन्तर्धा, अन्तःशब्दस्याङ्किवधिणत्वेप्यसर्गवान् ( वा० ), आतथोपसर्गं ( मू० ) द्रव्यम् । ( अन्तर्धिः ) उपस-  
र्गधाः किः ( मू० ) । वटभागुरिरञ्जोपमिति ( का० ) पक्षे विधानम् । निरोन्तर्धाविति ( मू० ) गतित्वात्समासः ॥ १३ ॥  
आह्लादनाचन्द्रधारी मीमंति कालं मस्यति प्ररणमते वा माध चन्द्रमाः । सा आयुश्च सत्यभाभाभातिक्त् ।  
उन्तान्दुः, उन्देरिबादिः ( उ० ) । विधयन्त्येनं मुरा विधुः, धेत् पाने । शुभ्रांशुः सितकरः । राषधीरीट आप्या-  
वकृत्वाशेषांशः ॥ १४ ॥ अर्यां जातोऽर्जः । जीवयाति जीवानृकः, जीवयानृकनृदिष्य ( उ० ) । मूनेमृन्



द्योवित्री द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ।  
 नभान्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥  
 वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।  
 दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ॥ २ ॥  
 प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥  
 उत्तरा दिगुदीची स्याद्विष्यं तु त्रिषु दिग्मव ॥ ३ ॥  
 इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋतो वरुणो मरुत् ।  
 कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ॥ ४ ॥  
 ऐरावतः पुण्डरीका वामनः कुमुदोज्जनः ।  
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ५ ॥  
 क्लीबाव्ययं त्वपविशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ।  
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम् ॥ ६ ॥  
 अभ्रं मेघो वास्वाहः स्तनयितुर्वलाहकः ।  
 धाराधरो जलधरस्तडित्वान् वारिदांश्चुम्बत् ॥ ७ ॥

न भ्राजतेऽभ्रम्, कः । व्यति व्योम, ज्वलन्तरिक्षवतीति ( मू० ) ऊर्ध्वम् । पुष्कं वारि राति  
 ( खवति ) पुष्करम् । अभ्रं शब्दाद्यन्तम्बरम् । न भ्रमस्ति भाति नभः । अन्तर्लक्षणान्तरिक्षम्,  
 प्रोदरादित्वात् ( मू० ) इत्थम्, वावाप्रविष्टोरन्तरीक्ष्यते वा, छान्दसमित्वम् । गच्छत्यनेन गमने [ वं-  
 त्मविकारो गमेर्गन्धेति ( उ० ) घः ] । नाह्यन्तोऽस्मानन्तम् । सन्त्यते खम् ॥ १ ॥ वियच्छति विर-  
 मति वियत् । विष्णोः पदं क्रमोत्र विष्णुपदम् । आकाशान्ते स्याद्वयोत्राकाशम्, न काशते वा, छान्दसो  
 दीर्घः । विजहानि सर्वं विहायः । तारापथो मेघाध्वा च । महाविंशं देयाम् । दिशलवकाशं दिक्, क-  
 स्विग्दुष्कृमग्निदग्निगिति ( मू० ) साधुः । कं स्कुभ्राति विस्तारयति ककुप । काशते काष्ठा । अमृतं  
 आशाहरन्त्यनया हरित् ॥ २ ॥ यथासंख्येन प्राची पूर्वा, अवाची दक्षिणा, प्रतीची पश्चिमा, सर्वानाम्बोवति-  
 मायेरूपदस्यपुत्रभावः ( वा० ) । प्राग्मध्ये पश्चाच्चार्कोऽयलस्याम, अवो मध्याधे । अपाचीति कात्यः,  
 जगदिन्वायश्च वत् च । भवार्थे प्राचीनाद्याः । उत्तरत्यतिशयेनोच्चैर्वा — उत्तरा । उत्तरमयलर्कोऽस्यामुदीची ।  
 ( दिशं ) दिगादिभ्योयत् ( मू० ) ॥ ३ ॥ विदिगपि प्रसिद्धया दिक् । [ एते क्रमात्पूर्वादीनां दिशां विदिशां च  
 पतयः ] । रविः शुक्रो महोमृतः स्वर्भनुर्भानुजो विधुः । बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ ४ ॥ दिशं  
 धारका गजा दिग्गजाः क्रमात्, ऐरावतः पुण्डरीकः कुमुदोज्जनवामना इति भागुरिः क्रमं व्यत्यस्तवान् ।  
 मालापि — ऐरावतः सुप्रतीक इति । पुण्डरीकादिवर्णाकृतिभ्यां संज्ञा एताः । शोभनानि प्रतीकान्यङ्गा-  
 न्यस्य सुप्रतीकः । करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् । तादृक्कर्णा शुभ्रदन्ती चाङ्गना [ वा-  
 मना ] चाज्जनावती ॥ ५ ॥ दिशोदिग्मपदिशम्, विभक्त्यर्थेऽय्यीभावः, अव्ययीभावे तत्प्रभृतिभ्यः ( मू० )  
 समासान्तः, अव्ययीभावश्च ( मू० ) इति नपुंसकाव्ययत्वे । विंशति दिविदिक्, उभयव्ययदेशान्, यदाहु-  
 यान्यासामन्तरालानि विदिशः प्रादिशश्च ताः ( अमरमाला ) । अन्तरमवकाशमालात्यन्तरालम् । चक्र-  
 कोरेण बल्ले चक्रवालं, बाडते वा, बाड् आढव्ये । मण्ड [ ष्य ] न मण्डलम् । सुप्रद्वये दिशांर्मत्यनु-  
 वर्तयन्ति प्रसङ्गात्साम्येनेति सन्त्यः ॥ ६ ॥ अभ्रत्यगो राति वाभ्रम्, अभ्र गत्यर्थः, न प्रश्यन्त्यगो-  
 र्मद्यदित्येके, यदुक्तं — न भ्रमन्ति यतस्तेभ्यो जलान्यभ्राणि तान्यतः ( पुराणं ) । मेहनि मिशति मेघः,  
 न्यद्वक्वादिवाद् ( मू० ) घः । ( स्तनयितुः ) स्तनेधोरादिकान् स्तनिहपिषुषिगदिमदिभ्योणेतिनुञ्  
 ( उ० ) । बलाकाभिर्दीयते बलाहकः, वारिवाहको वा ॥ ७ ॥ हन्यते वायुना घनः, मूर्तापिनः ( मू० )

नित्यामवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ।

अतिवलयभृशाल्यथ्यातिमात्राद्वादनिरभरम् ॥ ६६ ॥

तीव्रकान्तनितान्तानि गाढबाढदुदानि च ।

ह्रीषि शीघ्राद्यसत्त्वेस्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥

कुर्वन्-रत्नचम्बकसखो यक्षराडगुत्पकेश्वरः ।

मनुष्यधर्मा धनदा राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥

किन्नरशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरबाहनः ।

यक्षैकपिङ्गौडविडभीषणपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥

अरयाद्यानं चित्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।

कलासेः स्थानमलका पूर्वमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥

स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः ।

निधिर्ना शेषधिभेदाः पद्मशंखाद्यां निधिः ॥ ७१ ॥

इति स्ववर्गः । १ ।

नियतं भवं नित्यम् । न जस्यनि तच्छीलमत्रयं, नमिकर्माति ( मू० ) रः । [ संसक्तमासक्तं च । ]  
अतिशेते जयत्यनेनातिशयः । भरः पूर्णता, भृ भरणे, ऋशेय ( मू० ) । अतिक्रान्तं वेत्तामर्थं मात्रां च ।  
बिभर्ति भृशम् । उदाहृते स्मोद्गाढम् । निःशेषण भरांश निभरम् ॥ ६६ ॥ तीव्रति तीव्रं,  
ताव स्योत्यं, रकः । एको निधितः ततोत्रैकान्तम् निताम्यति स्म नितान्तम् । बाहते बाढम्, धुन्धस्वन्तःवान्तेति  
( मू० ) पाठं भृशे साधु । दृढः स्थूललयोरिति ( मू० ) दृढं बलवति साधु । अतिमशोदं  
दरं च । सततमविच्छेदः प्रकर्षस्वतिशय इत्यर्थभेदः । असत्त्वं गुणक्रियाविशेषणत्वादव्यवृत्तित्वे  
सति शीघ्राद्या नपुंसके, यथा - भृशं मूर्खः, भृशे याति । एतन्मथ्यायसत्त्वगामि इत्यवृत्तिं तद्विलङ्घ्यं,  
यथा - शीघ्रा स्त्री, शीघ्राश्वः, शीघ्रं कुलम् । सत्त्वगामाति किं - भरोयं, गुणातिशयोयम् ॥ ६७ ॥  
कुत्सितं वे-वेरं देहोस्येति कुवे-वेरः, कुष्ठित्वान् । चम्बकस्य सखा चम्बकमस्तः, राजादः सतिभ्यश्च ( मू० ) ।  
मनुष्यस्येव धर्मः श्मश्रुलवादिस्स मनुष्यधर्मा, धर्मादनिर्गन्तव्यत्वात् ( मू० ) । धनं दयते रक्षति धनदः,  
एवं श्रीदः । राक्षो यक्षाणां राजा राजराजः ॥ ६८ ॥ विश्रवसोपत्यं वैश्रवणः, विश्रवसा विप्रहो  
विश्रवणेन वृत्तिराविविकन्यायेन, शिवादिभ्योऽण ( मू० ) । पुलस्तेरपत्यं गोत्रं पौलस्त्यः । नरो बाहनमस्य  
नरबाहनः, बाहनमाहितात् ( मू० ) इत्यनेन नरस्यानाहितवाचित्वाद्-णत्व नास्ति, पूर्वपदात्संज्ञायां ( मू० )  
इत्यपि नास्ति धुन्वादिवात् ( मू० ) । किन्नरादिस्वाम्येषि जात्या यक्षः, यजेयक्षेर्वा रूपम् । एकपिङ्ग  
पिङ्गलकनेत्रत्वात्, अतो भागुरिणा इयंश उक्तः । द्वविडा मातायेति, ऐलविलोपि इलयोरेकत्वस्मर-  
णान् ॥ ६९ ॥ अस्थितिं प्रत्येकं संबध्यते । उद्यान्यस्मिन्पुत्रानम् । चित्ररथेन गन्धर्वराजेन निर्वृतं चित्र-  
रथम् । नडः कूबरं रथावयवोस्य नडकूबरः । केल्योर्जलभूम्योरास्तं, के ( जले ) लसनमस्य वा कलासः  
स्फटिकस्तस्यायं स्फाटिकोदः ( कलासः ) । अलत्थलका, अल भूषणं, क्षिपकादिवात् ( वा० ) इत्वा-  
भावः । पुष्पमिव पुष्पकम्, द्वप्रतिकृतौ ( मू० ) कन् ॥ ७० ॥ किंचित्रोश्चमुसत्त्वात्किन्नरः, कुत्सितं  
नरो वा, किंक्षेपे ( मू० ) इति ममासः । मयते मयुः । नियतं धीयते निधिः, किः । दोष्यते शेषं स्या-  
त्पुनर्न धीयतेस्मिन्शेषधिः । ना पुंलङ्ग इति काकाक्षित्वान् । उक्तं च - महापद्म पद्म शंखो मक-  
रः । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च सर्वेध निधयो नव ॥ ७१ ॥ इति स्ववर्गः । १ ।

कालो वृण्डधरः भ्रातृदेवो वयस्वतान्तकः ।  
 राक्षसः कौणपः कृत्यात्कृत्यादांस्त्रप आशरः ॥ ५९ ॥  
 रात्रिचरा रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ।  
 तुधानः पुण्यजनो नैक्रतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥  
 प्रचेता वरुणः पात्री यादसांपतिरप्पतिः ।  
 श्वसनः रूपशो वायुर्मातिस्त्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥  
 पृषदश्वो गन्धर्वो गन्धवाहानिलाशुगाः ।  
 समीरमारुतमरुजगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६२ ॥  
 नभस्वद्वातपवनपवमान्प्रभञ्जनाः ।  
 प्राणापानः समानश्चादानो व्यानश्च वायवः ॥ ६३ ॥  
 शरीरस्था इमे रहस्तरसी तु रयः स्यदः ।  
 जयोथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥  
 सत्वरं चपलं नृणामविलम्बितमाशु च ।  
 सततनारताश्रान्तसंतनाविरतानिजम् ॥ ६५ ॥

॥ ५९ ॥ रात्री चरतीति रात्रिस्तः, चरन् ( मृ० ) । रात्रिः कृतिविभाषा ( मृ० ) इति पक्षे नुम् ।  
 कर्बुरो वर्णनं कर्बु द्विसासं वा । निरुद्धा रक्षसां मतेति [नम] माला, अतो नैक्रतोयान्त्रायाः कर्मवमाहुः ।  
 यातुनि यातना धायन्नेस्मिन् यातुधानः । पुण्यजने विपश्यन्तस्त्वयया । निरुद्धोदिकालस्यापत्त्यं नैक्रतः ।  
 यातयति व्यथयतीति यातुहृदो भोमवन् । रक्षन्त्यस्मदक्षः । विधुरोपि । कौनायो ननार्थे ॥ ६० ॥  
 प्रचेतयते प्रचेताः, अमुने । शृणोति वरुणः । यादसां जलचराणां पतिः, यादः पतिरिति वाच्ये पक्षे वाक्या-  
 न्यनुज्ञानम् । अपां पतिरप्पतिः । श्वसन्यनेन श्वसनः । स्पृशति स्पर्शनः । वाति वायुः, कृवापाजीत्युण्  
 ( उ० ) । मातिर खे श्वयति मातिरश्वा ॥ ६१ ॥ पृषन्मुगविशेषोऽस्य पृषदश्वः, पृषन्त्यमुकणाः सन्त्यश्वा  
 अस्त्येत्येके । गन्धस्य बहः । अकारादनुपपदः कर्मोपपदो ( भवति ) विप्रनिषेधेन ( वा० ) इत्यस्य प्रावि-  
 क्ताव्यपक्षे कर्मव्याण ( मृ० ) गन्धवाहः । अनन्येनानिलः, न निलति वा, णिल गहने । समीरयतीत्यवि-  
 चरन्नाद्यादर्थेति ( मृ० ) युचि च समीरसमीरणी, समेति समि ( मी ) र इत्ययेकदेशविकृतस्यानन्व-  
 वात् । म्रियन्तेनेन मरुन् । नरुदेव मागतः, स्वार्थे- अण ॥ ६२ ॥ नभोऽयस्तीति नभस्वान्,  
 तसामस्त्वर्थे ( मृ० ) इति भसज्ञा । पवते पवनः, युच । तथा पवमानः, पृथ्वीजोः शास्त्रम् ( मृ० ) ।  
 प्रभनक्ति प्रभन्ननः । प्रकम्पने मद्वायलथ । पृथ्वीकुलश्रद्धात् श्र-प्रामदन् । पसरणेन-अपसरणेन-आस-  
 मन्तात्-ऊर्ध्व-व्यामषा च - अनिल्यनेनेति, पञ्च । आनयनेऽन्तायेनांन रूपाणीति योगशास्त्रम् । एते  
 शरीरे व्यापका अपि नियतस्थानस्थाः, यदहुः- हृदि प्राणो गदपानः समानो नाभिसंस्थितः । उदानः  
 कण्ठदेशस्थो व्यानः सर्वशरीरगः ॥ ६३ ॥ वायोऽर्धमाहा । गृह्यन्तेन रहः । तस्मिन्नेन तरः, अमुने ।  
 विभर्त रयते बानेन रयः, अञ्च । स्यन्दन्तेनेन रयदः । स्यन्दोजवटि ( मृ० ) साधुः । जवन् जवः, जुह-  
 गतो, क्रुदोरप् ( मृ० ) । वाजोऽपि । वेगो नानार्थे । शिष्टपति व्याप्राति शीघ्रम् । त्वरते स्म त्वरितं तूष्णे  
 च, विभाषाभावादिकर्मणोः ( मृ० ) इतीदं, ज्वरन्वरेति ( मृ० ) उपधाया ऊट् । लघ्यते लघु । क्षिपति  
 क्षिप्रम् । अरमव्ययं, अतरेचि वा नामेव्यये, यच्छुश्रुत्वतः- अरमद्वेगरेषाद्वेगस्य शीघ्रशीघ्रगवोरापि ।  
 द्रवति स्म द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सह त्वरया वर्तते सत्वरम् । न विलम्बते स्माविलम्बितम् । अर्नुत आशु, कृवा-  
 पाजीत्युण् ( उ० ) । सवेगगतिर्वचनो जवः धर्मवचनाम्नु शीघ्रादथ द्रुतं - अर्थभेदः । सदागतिप्रस्तावादाह ।  
 सतन्यते स्म सततं, समोवाहिततयोरेति ( का० ) पक्षे मलुक । आरतविरतावर्ततश्चदा विरामावाक्यतो  
 नलसमासः । न श्रायति स्माश्रान्तम् । अविद्यमाना निदात्रातिशयम्, सा हि विरतिस्थानम् ॥ ६५ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहात्रो धनेजयः ।

कूपीटयोनिर्ज्वलमां जातवर्वास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥

बहिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोश्चिकेश उपबुधः ।

आशयाशो बृहदभानुः कृशानुः पावकानलः ॥ ५४ ॥

रोहिताभ्यां वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।

हिरण्यरता हुतभुग्बहना हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥

सप्तार्चिर्वमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।

शुचिरप्पित्तमौर्वस्तु वाडवां वडवानलः ॥ ५६ ॥

बद्धव्योर्ज्वालकिलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।

त्रिपुः स्फुलिङ्गगामिकणः संतापः संज्वरः समी ॥ ५७ ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परतराट् ।

कृतान्तो यमुनाध्राता शमनो यमराट् यमः ॥ ५८ ॥

एनपादिति (मू०) नम् प्रकृत्या ॥ ५३ ॥ बहिःशुष्मांत व्यस्नेन समस्तं वा जातम्, बहिर्दग्धः शुष्म बलमस्थिति, बहति बधने बहिः, यथा बहिर्मुखो देवाः । शुष्मन्यनेन शुष्मा, यक्षयम्— शुष्मणि प्रणयनाभिमास्थ- (सू०) ने (शिगु०) । बहिर्मुख इत्यमरमाला, यथा— यथा बहिर्मुखो वह्निर्मुखः (बा० रा०) । कृष्णो धूमो वर्त्मास्थ (कृष्णवर्त्मा) । शोचोषि ज्वालाः शोशा अग्नौ शोचिर्वेशः । उपबुधः रात्रौ बुध्यते प्रकाशते— उपबुधः, अहरादीनांपत्यादिषु (बा०) इति सूत्रः । आशनेत्रयाशयमाधारमधार्त- त्याशयाशः, आश्रयाश दृश्येकः । बृहदो भानवो रश्मयोऽस्य बृहदभानुः । कृशानुः कृशायनिर्नि- प्रर्णं वर्तते वा । पुनरिति पावकः । अर्जुनानेन लोक इत्यनेनलः ॥ ५४ ॥ रोहिताभ्यां यो भूगोशो वाहनमस्यादि रोहिताभ्यां, यदि वा रोहिता लोहिता अश्वो अस्थिति । वायुः मखानुचरो वा । मय वायुमलः । आशुशु- मिच्छयाशुशुक्षणिः, आहिशुषेः सन् उच्छन्दि (उ०) इत्यनेन । हिरण्यं रत्नस्य हिरण्यरताः, यत्नम्- [सू०] जितिः— अमेरपत्य प्रथमं सुवर्णमिति । हव्यं वाहयति देवाग्रयति हव्यवाहनः, हव्य (कथ्य) — पुरीषपुरीषेयुष्युट् (मू०) ॥ ५५ ॥ दाम्यति शाम्यति विनयययं दमनाः, आणयति उनम, दमना इत्येकः, दमेरुनसिः (उ०) । शुक्रं तेजास्यस्य शुक्रः, अश आदित्वाट् (मू०) । विभव वसु धनमस्य विभावसुः । शुचिः शोधकत्वात् । अपां पित मार भूमयोनिवादिपितृम् । उदविध । धारस्तु भामनं अस्मेति वाच्यम् । उर्वस्यापत्यमौर्वः, वरुणभयान्नात्रा— ऊर्वांगोपितत्वादित्येकः । वाडवोऽभमुखत्वात् ॥ ५६ ॥ उवलति ज्वालः (ज्वाला वा), उवलतिनकमन्तेभ्योणः (मू०) । (कालः) काल दग्धः । प्रायेणावर्चः स्त्री, ज्वाला भासा न पुंस्यर्चिरिति हि वक्ष्यते, अर्च्यनेर्चिः । हिनाति हेतिः । शिनोति शने वा शिम्वा । स्फुल्लस्ति चलति स्फुलिङ्गः, जानावपि न् दीप कन्दरायत् । संतापयति संतापः । संज्वरयति संज्वरः ॥ ५७ ॥ धर्मस्य राजा धर्मराजः । समवर्ती रिपो मित्रं च समवर्तनान् । परतराट् प्रता- पियः । कृतान्तो विनाशोनेन कृतान्तः । शमयतीति शमनः । यमेन राजते यमराट् । यमयतीति यमः, यमलज्जितत्वाद्वा ॥ ५८ ॥ कलयत्ययुः कालः । ध्रादेदेवः पितृपतित्वात्, ध्रादे देवत्वाद्वा । बद्धा विवस्वदपत्यसामान्यान्मनुवतु, यद्गुणः— ध्रादे देवकेनो मनुः । अन्त करोतीति, अन्त्ययत्यन्तकः, ष्वुल । रक्ष एव राक्षसः, स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यातिवर्तन्तेपीति पुंस्त्वम् । कुणपमानि कोणपः, शेष (मू०) इत्यण् । कथ्यमाममारासि (कथ्याद्), कथ्येचेति (मू०) हिप् (विद्) अण् च । अयं रक्त पिषलस्यः, आतानुपसर्गेकः (मू०), न अपयति कथ्यान्वादर्थे इत्येकः । आशुशुक्षणिः हिनस्याशरः



हाश्विनौ वस्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।  
 गतकाटिः स्युरः शिवो-वा दम्भोलिरशनिर्द्वयाः ॥ ४७ ॥  
 द्यौमयानं विमानोस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः ।  
 स्यात्सुधर्मा वससभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥  
 मन्दाकिनी विषड्गङ्गा स्वर्णदी सुरवीरिका ।  
 मेरुः सुमेरुहमाद्रिरत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥  
 पञ्चतं वनरवां मन्दारः पारिजातकः ।  
 संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥  
 सनत्कुमारां वैधात्रः स्वर्वेद्यावश्विनीसुती ।  
 नासत्यावश्विनौ वस्त्रायाश्विनैश्च तावुभौ ॥ ५१ ॥  
 स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेद्या उर्ध्वशीमुखः ।  
 हाहा हृहश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिविक्कासाम् ॥ ५२ ॥

शो विद्यतेस्य शवः, कशोभ्यावमेति ( म० ) वः । दम्भोति सेदयति दम्भोलः । अश्राति धैलानश्वनिः,  
 न शनैर्याति वा । व्याधामोपि ॥ ४७ ॥ व्योम्नि यान्यनेन द्यौमयानम् । विमानि वर्तन्तेस्मिन्वेक  
 विमानम् । नारं नरसमूहं गतिं भिनति कलहेनारदः । आद्यशब्देदेवलादयः । सुराश्वते मन्दादिपुत्र-  
 त्वात्पयथ, पण्डितमासे वा । सुष्ठु धर्मस्या सुधर्मा, यमदयं- सुवर्मानवमां पुरां ( सभां ) ( रघु० ),  
 धर्मदीनचक्रेवलात् ( म० ) । सह मान्यस्यां सभा स्थानम् । पीयते पीयूषं, पीमेस्वन् ( उ० ) ।  
 नास्ति मृतमवाप्तम् । मृष्ट पीयते सुधा, भेद पाने । समुद्रनवनीतं देश्याम् ॥ ४८ ॥ मन्दमकल्पवृक्षं  
 मन्दाकिनी, अक अग कुटिलायां गतो । सिद्धसिन्धुश्च । गङ्गामात्रस्य नामानि च वक्ष्यामः । भिनोति  
 क्षिपत्युत्तवाज्योतीपि मेरुः । सुमेरुश्विनाथः, इन्द्रमेहेन्द्रवत् । हेम्नोर्दिहमाद्रिः । रत्नानि सानावैरव  
 रत्नमानुः ॥ ४९ ॥ मन्दा आराधारा अस्य सरलत्वान्मन्दारः । पारिणः पारवतोऽप्येजातः पारिजातकः ।  
 सनन्त्यनेस्मिन्पुष्पाणि संतानः । कल्पवृक्षः संकल्पपूर्णात् । हरिन्द्रस्य चन्दनं, कपे पीतं वा ॥ ५० ॥  
 सनन्त्ये कुमारः । सनात्कुमारोपि । विधातुरपत्यं वैधात्रः । वैद्यसंहिताप्रणेतृत्वाद्भद्रोक्तः । न- असत्या-  
 वसाधू नासत्यौ, नभ्राणपादिति ( म० ) नभ्र प्रकृत्या । अश्विनौ सदधाधिकरौ । दस्यतो  
 हरतो रोगान्दस्यौ । अश्विन्या अपत्यं- ठकि- अश्विनैर्यौ । उभावेति द्वित्वादिकवचनाभावः ।  
 भागुरिस्त्वाह- नासत्यदस्यौ यमजावर्कजावश्विनौ यमा, नामत्यसहितौ दस्यपिति व्याख्येयं,  
 न त्वेको नासत्योऽस्यो दस्यः ॥ ५१ ॥ घृताची मेनका रम्भा- उर्वशी च तिलोत्तमा । मुकेशी मञ्जुषोषा-  
 याः कथ्यन्तेप्सरसो बुधैः । अद्भ्यः मृता अप्सरस इत्येकापि शब्दशक्तिस्त्वाम्भ्यान्, अप्सरा इत्यपि  
 दर्शनान् प्रायिकं बहुत्वम् । ऊरु अग्ने नारायणस्फोरुदभवत्तादुर्वशी, प्रपौदयदित्वात् ( म० ) हस्तः,  
 यक्षश्च- ऊरुदभवा नरसखस्य मुनेः मुख्याति ( विक० ) । मुखशब्दाद्भमादयः । हाहा एको हृह-  
 न्यः, एकं नामेत्येके, गन्धर्वौ च हाहा हृहरिति तु लक्ष्यम् । आलापनिकातुकारात्पुंस्येतो, अव्ययाविति  
 श्रीभाजः । आद्यशब्दात्पुत्रमुसुता गन्धर्वो देवगणयनाः ॥ ५२ ॥ अङ्गययूर्व यात्यग्निः । विश्वानरस्यापत्यं  
 विश्वानरः । बिदादित्वाद्भ ( म० ) । वदति हव्यं वदति । वीतयोश्चा ओत्रं हव्यमस्येत्यगमः, वीतिरशान्भिति  
 प्राच्याः । धनं जयति धनंजयः, संज्ञायांश्चतृर्जनि ( म० ) सच । उदकनामान्युत्तराण्येकशतंभिति ( नि-  
 रूक्तं ), कर्पूरम्याम्नसो योनिर्युमज्जवाग्नेयानां, अर्भो प्रास्तादुतिः मय्यगिति च ( मनु० ), कृषिर्द्वयोनिरस्येत्येके,  
 यदाहुः- अद्भ्योऽग्निर्वज्रतः क्षत्रममनो लोहमुत्थितम् ( मनु० ) । ज्वलति ज्वलनः, जुचइकम्येति ( म० ) जु-  
 च । ज्ञाता वेदा अप्रपाज्ञातवेदाः, ज्ञाते ज्ञाते विद्यो वा । तन् न पातयतीति तन्नृत्तान्, देहधर्मान्, नभ्र-



जिष्णुर्लैखर्षभः शक्रः शतमन्युर्विवस्पातिः ।

सुव्रभिा गोव्रभिद्वज्री वासवा वृषहा वृषा ॥ ४२ ॥

वास्तोष्पातिः सुरपातिर्बलारातिः शचीपातिः ।

जम्भमेदी हरिहयः स्वाराण्णमुचिस्वदनः ॥ ४३ ॥

संकन्दनो दुष्प्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।

आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी नयरी त्वमरावती ।

हय उच्चैःश्रवाः सृतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥

स्यात्प्रासादी वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः ।

ऐरावतोभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवलभाः ॥ ४६ ॥

श्रवाः, बुद्धयः शृणाति वा । शोभना नामीरा अग्रेसरा अम्ब मुनासिरः, शुः पूजायां शशुरवनः, शुना-  
सीरयोरपत्यमित्येकं । पुरु प्रभूतं हनं यज्ञेष्वाह्वानमस्येति पुरुहूतः । सुराण्यरीणां दारयति विपुर् वा प्रे-  
दरः, वाचयमपुर्दरीच ( सू० ) इति साधुः ॥ ४२ ॥ जयनशीलो जिष्णुः, ग्लानिस्थश्मस्तुः ( सू० ) ।  
लैखर्षभो देवश्रेष्ठः । शक्रोऽति शक्रः । शतं मन्यकः कतकोस्य सनक्रतुः । दिवः स्वर्गस्य पतिः । वृषा-  
पतिर्प्रेति ( सू० ) अलुकि, कस्कादिवात् ( सू० ) क्वे च दिवस्पातिः । सप्तु प्रायने मुवामा, म-  
निन्, शोभने ग्राम बले वाक्स् । गोक्रन् गिरान्पक्षच्छेदाद् भिन्नवन् गोव्रभिन् । वस्वपत्यं वासवः । श्व-  
बलजम्भनमुचयोमराः । वपेतीति वृषा, कनिन् ॥ ४३ ॥ वाभ्तोर्गृहक्षेत्रस्याधिपता वास्तोष्पातिः,  
वृषा अलुकि पत्वे, वास्तोष्पातियुद्धमेषाच्छब्द ( सू० ) इति लिङ्गात् । हरयः पिङ्गा हया अस्य  
हरिहयः । स्वः स्वर्गे राजते स्वाराट्, इलोपपूर्वस्यदीर्घाणः ( सू० ), व्रथश्रजेति ( सू० ) पः ॥ ४४ ॥  
संकन्दयति रिपुस्त्रीः संकन्दकः, स्युः । दुष्टं च्यक्ते परदोषे रेतस्मत्तदुद्भववनः, चलनशब्दादधीति ( सू० )  
पुच, दुःखेन च्यवते रणाद्वा । तुर त्वरितं साहयत्वाभिभवत्यरिस्तुरापाट्, तुरं वेगं सहते वा, छन्दसि-  
सहः ( सू० ) इति भिः, नहिर्गतिवृषति ( सू० ) पूर्वपदस्य दीर्घः, सहः साडः सः ( सू० ) इति  
षत्वम् । मेघो वाहनमस्य, इन्द्रो हि मेघानाविरय वपेति, मेघ ऐरावतो वाभ्राधिपानुत्क्रान् । आखण्डयति  
भिननयरीनाखण्डलः । ऋभूदेवान् क्षियत्यधिवसति ऋभुक्षाः, यद्रौ- अनेभुक्षितक ( उ० ), पथिमभृ-  
भुक्षामान् ( सू० ) । प्राचीनबर्हिर्हृहा वृतनापाट् पुलोमजिन् । उग्रधन्वा च पुराणे ॥ ४५ ॥ पुलोम्नो  
मुनेर्जाता, अत एव पौत्र्यमी । शचते शची, शच श्वच गतो । इन्द्रस्य स्त्रीन्द्राणी, इन्द्रवरुणेति ( सू० )  
श्रीवानुकी । तस्येति प्रत्येकं संवध्यते । अमरा विशन्तेस्याममरावतां, मतीबह्वचोनजिरादीनां ( सू० )  
इति दीर्घः । उच्चैःश्रवसी अस्योच्चैःश्रवाः । तस्य मूतः सारधर्मतलस्यापत्य मातलिः । तस्योपवनं,  
नन्दयति नन्दने, स्युः ॥ ४५ ॥ विजयने विजयन्तो जिष्णुः, ज्ञच, तस्यायं ( सू० ) इत्यण्, वैजयन्तो  
अस्यास्तौत्येकं । तस्य पुत्रो जयन्तः, पाकशमनस्यापत्य (पाकशासनिः) । इरावल्लभ्यौ जात ऐरावतः ।  
अभ्रस्थत्वादभ्रमातङ्गः, अभ्ररूप इत्येकं, यत्कात्यः— ऐरावतं विजानोयाप्रागमम्युद्गोचरम् । इरा-  
वणाद्भव ऐरावणः, विभाषोपधीति ( सू० ) वा णत्वम् । अभ्रे स्ते मांति न भ्राम्यति वा मन्थरगामि-  
त्वात्वादभ्रमुस्तदभाषा, यद्वक्ष्यम- अभ्रम्वा वधनान्तदोलितकुरः ( वा० रा० ) । सुरगजो गजमद्व-  
॥ ४६ ॥ हादः स्फूर्नेधुरम्याग्नाति हादिनी । वजनि याल्येव न प्रतिहन्यते वज्रम् । कुलिनः पर्वता-  
ज्येति पक्षच्छेदेन तनूस्तराति कुलिशं, कुस्मितं लिशति तद्गोच्यरीन्वा । भिनति तच्छीलं भिदुरम्,  
विदिभिर्दिच्छेदः कुरचः ( सू० ) । पुनाति पविः, हीरकस्य पविसंज्ञया प्रसिद्धत्वात् । शत बह्वधः कोट-  
स्यैव शतकोटिः । स्वरति स्वरः, शृतिवति ( उ० ) उः, शोभनान्येषां धारा अस्याति सान्ती वा ।

विभूतिभूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा ।

उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरा ॥ ३६ ॥

शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।

अपर्णा पार्वती दुर्गा भूदानी चण्डिकाम्बिका ॥ ३७ ॥

विनायको विघ्नराजैर्मातुरगणाधिपाः ।

अप्येकदन्तहरश्चलम्बादरगजाननाः ॥ ३८ ॥

कार्तिकेया महासेनः शरजन्मा पडाननः ।

पार्वतीनन्दनः स्कन्दः समानीरग्निभूर्गङ्गः ॥ ३९ ॥

बाहुल्यस्तारकजिह्मिशास्त्रः शिखिबाहनः ।

पाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।

वृद्धश्रवाः सु-शु-नासीरः पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४१ ॥

भावेः । अणिमा महिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्दमीशिता वधिता- ईशश्च यत्र कामावसायितेल्लक्ष्ये-  
श्वर्यम् । भूतिविभूति समानार्थं लोचनविलोचनवत् । उ मेति माता तपसो निषिद्धा ( कुमा० ) इत्यु-  
मा । कात्यायनाद् गर्गादिभ्योयत्र ( मू० ) इति यजन्ताद् ( सर्वत्र ) लोहितादिकतन्त्रेभ्यश्चिह्नः ( मू० ), विस्वाद्  
डांप् कात्यायनी । हैमवतोपायं हैमवती । ईष्टे तच्छैला- ईश्वरा, स्थेशभासेति ( मू० ) वरत् । अश्वेतोराशु-  
कर्मणिवरदृच ( उ० ) उपधाया इत्वमितीश्वरी ॥ ३६ ॥ शिवा स्वतः श्रेयस्करीत्यादिष्ववत्, यच्छाश्वतः-  
शिवं भद्रं शिवः शंभुः शिवा गौरी शिवाभया । पुंयोगे च शिवस्य स्त्री शिवी । भवस्य स्त्री भवानी,  
इन्द्रवरुणभवेति ( मू० ) डोपानुकी । एवं शर्वाण्यादि । अपर्णा तपसि पर्णानामप्यनशनात् । पर्वतस्या-  
प्यं पार्वती । दुःखेन गन्तुं शक्यतेस्यां दुर्गा, सुदुरोराधिकरणे ( वा० ) इति डः । चण्डी कोपना,  
चण्डीचाद् ( मू० ) डांप्, इकःकेऽणः ( मू० ) इति ह्रस्वः । अर्धैवाभ्यिका । जगन्माता- आर्या  
भग्वी सती दाक्षायणो च । गणनायिका देव्याम् ॥ ३७ ॥ विगतो नायको नियन्तास्य विनायकः,  
अन्येषां विनेता वा । अत एव विघ्नानां राजा विनियन्ता । द्रुयोर्मात्रोरपत्यं द्रुमातुरः [ गाङ्गेयोपि स्तः ],  
मातुरसंख्यासंभद्रपूर्वायाः ( मू० ) इत्यण्, अन्यस्योत्वं च । गुहोत्पादितदन्तत्वादेकदन्तः । प्रत्युषे  
हृष्यते शब्दायते हेरम्बं इति नेरुक्ताः, देशोपदप्रायं तु मन्महे । आखुरयोपि ॥ ३८ ॥ कृतिकानां  
बहुलाख्यानामपत्यम् । महती सेनास्य महासेनः । शरवणे जन्मास्य शरजन्मा । पडाननः कृतिकाया-  
मभिपतनीनां पर्णां स्तनपानात् । स्कन्धे शृङ्गं रेतोस्य स्कन्दयरीन्वा स्कन्दः । गूहते सेनां गुहः, कः  
॥ ३९ ॥ विशालासु जातो विशालः, नक्षत्राङ्गुलम्बुलम् ( मू० ) । शिखी मयूरो बाहनमस्य शिखि-  
बाहनः । पर्णां मातृणामपत्यं पाष्मातुरः । शक्तिधरः शक्तिधरः, अन्यथा शक्तिधरः शक्तिधारो वा  
स्यात् । कुमारो ब्रह्मचारित्वान्, कुमिसतो मारोग्येति वा । क्रौञ्चो गिरिस्तेन ह्यस्य कैलासमकृत्तिक्षार्ण  
गच्छतो मार्गो रुद्रोभूत्, अतस्तं दारयति कर्णदारणः, लुः । स्वामी च । गाङ्गेयोपि ॥ ४० ॥  
भृङ्गी भृङ्गरिदित्स्तुण्डिनन्दिनौ नन्दिकथरे । कर्णमोक्षे तु चामुण्डा चममुण्डातिचण्डि च चर्चि- ]-  
कति वक्तव्यम् ॥ इन्द्रः परमेश्वरयोगान् । मरुतो देवाः सन्त्यस्य मरुत्वान्, तसौमरवर्षे ( मू० )  
इति भसंज्ञायां पदकार्यं जड्वं नास्ति । मघः सौम्यमस्यास्तीति मघक्, भृक्षुश्च ( उ० )  
इत्यत्र तु निषादितस्य मघवन्नित्यस्य । पञ्च सो प्रादेशादीषांभावान्मघवन्, मघवा-  
बहुलम् ( मू० ) । वेवेति विड् व्यापकमोत्रोर्य विडौजाः, विडु वा- ओजोस्य, पृषोदादिवात् ( मू० )  
शक्तिः । विड भेदेन वा, विड भेदकमोजोस्य । पाकानां श्रुतिगर्भाणां शसनः । वृद्धे श्रवसी अरयेति वृद्ध-

भूतेशः खण्डपरशुगिरीशो गिरिशो मृदः ।

मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाभिपः ॥ ३१ ॥

उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।

वामदेवो महादेवो विरूपाक्षखिलोचनः ॥ ३२ ॥

कृशानुरताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।

हरः स्मरहरो भर्गस्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥

गङ्गाधरोन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।

व्यामकेशो मयो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

कपर्दस्य जटाजूटः पिनाकोजगद्व धनुः ।

प्रमथाः स्युः पारिपदा ब्रह्माण्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५ ॥

ईशानः, तच्छील्यवानश् ( म० ) शंकरः, कुबेहोति ( म० ) इति ॥ ३० ॥ गिरि इति - उपभोगे  
तनुकरोति गिरिशः, गिरिवास्यास्तीति, लोमादेवाच्छः ( म० ), गिरौ स्ते वा गिरिः, गिरौ छन्दसि  
( वा० ), स्ते के त्वागुत्तुर्लभिवत् । मृदति मुसयति मृदः । मृत्युं जयति मृत्युंजयः, संख्याभृतृर्जीति  
( म० ) इति । कृत्तिधर्म वासस्य कृत्तिवासाः ॥ ३१ ॥ उग्र इति कुवा समर्थेति - उग्रो रोदत्वात् । श्रीः  
शोभा कण्ठस्य श्रीकण्ठः । नीलगलान्गान्धनेनोक्तः कण्ठोऽस्य शितिकण्ठः । कामः श्रेष्ठो देवः, संसारे  
वामदेवाद्वा । विरूपाणि त्रित्वादर्थान्यन्य विरूपाक्षः, बहुवीहोसम्बन्धोः स्वाद्गात् ( म० ) इति ॥ ३२ ॥  
कृशानो रतेस्य कृशानुरताः, दद्या सोदमशयत्वादमो हि क्षिप्तं रेतः, अतएव पावकः कुमारः । धूर्जङ्गा  
जटास्वस्य धूर्जटिर्निहकृत् । नीलः कण्ठः लोहितश्च केशो नीललोहित इति पुराणम् । हरत्यर्थं  
हरः, हरति - अच् । स्मरं हरति स्मरहरः, हरतेरनुवचने ( म० ) अच् । विभर्ति भर्गः, भुज्यन्तेनेन काम-  
कालादयो वा । व्रण्यथ्यज्ञानस्य द्यम्बकः, दयाणां लोकानामम्बकः । पितेत्यागमः, यौर्भूमिरापस्ति-  
लोम्बा अस्पृष्टेति वा । ( त्रिपुरान्तकः ) त्रिपुरीति भाष्यदर्शनेपि लोकश्रयश्चात्रिपुरं पात्रादौ ( पात्रा-  
यन्तस्य ) ॥ ३३ ॥ गङ्गाया धरश्चक्रधरादिकृत्, अन्यथा कर्मण्य ( म० ), संज्ञायाभृतृर्जीति  
( म० ) खच् - वा स्यात् । अन्यको नामासुरस्तस्य रिपुः । क्रतुं दक्षयज्ञं ध्वंसतेतदयं क्रतुध्वंसी । व्याम  
योः के मूर्ध्नि शतेस्य व्यामकेशः, शीर्ष्णो योः समवर्तेतति ध्रुतेः, गङ्गां धारयितुं व्यामव्यापिनोस्य केशा  
वा व्यामकेशाः । भवत्यगमाद्विश्वं भवः । विभ्यत्यस्माद् भीमः, भीमादयोपादाने ( म० ) । तिष्ठतीति  
स्थाणूः । रोदनाद्रद्रः, सोरोदाद्यद्रोदीतद्रस्य रुद्रत्वमिति ध्रुतेः, रोदयत्यरिखीवी, रोदणिलुकूच ( उ० ) ।  
अद्विषुन्नोष्टमूर्तिश्च [ महानादा ] गजानुरारिश्च । महानादो देश्याम् । शिपिविशेषे वृषाकपिर्भैरवो नानार्थे  
॥ ३४ ॥ ईश्वरस्य जटाजूटः कपर्दनामो, कं शिरः पिपति कपर्दः, औणदिको दः । अस्य धनुः, पिनाको  
पिनाकः, शूलध्वं यनेकाध्वं वधयेत् । अजगवे विप्रतिपत्तिगम्यते, गण्ड्यज्जात्सङ्गायां ( म० ) इति  
मत्स्ये वे - अजकर्मिनि गण्ड्यम् । अथाजगवोस्थितिकारस्तद्गणि वृद्धिः स्यात्, यत्कात्यः - धनुर्वद-  
न्याजगवं पिनाकिकरमोचम् । पाच्ययास्तु, गण्ड्यज्जादिति पेदुः । अजगवं धनुः प्राक्कर्मिति तु पा-  
च्यया अपि । प्रमथन्ति प्रमथाः, अच् । परिषदि साधवः पारिपदाः, भक्ताः ( म० ) इति प्रकृते  
परिषदेष्येति ( म० ) योगविभागाद् गणः । संधाते प्रमथे गण इति गणा अपि । अस्याष्टौ परिवारत्वेन  
मानि वर्तन्ते मानुषाभ्यः । ब्राह्मी मोहेश्वरी चन्द्रो वाराही वैष्णवी तथा । कामारी चर्ममुण्डा च काल-  
संकर्षणीति च । ब्रह्माण्येत्यानुगाममाभावश्चैव प्रसिद्धं नाम । कर्षयिज्जातिवत्, ब्राह्मोऽज्जाताविति ( म० )  
ब्राह्मीत्याद्या इत्येके पेदुः, यद्भागुरि - ब्राह्मयाया मातरः स्युताः । रेवत्यो देश्याम् ॥ ३५ ॥ भवने

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।  
 कन्दर्पो वर्षकोनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥  
 शम्भरारिर्मनसिजः कुसुमेशुरनैन्यजः ।  
 पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥  
 ब्रह्मसूक्त्यकंतुः स्याद्वनिरुद्ध उपापतिः ।  
 लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरीप्रिया ॥ २७ ॥  
 शंखा लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यध्वजं सुवर्शनः ।  
 कीमोदकी गवा खड्गो नन्दकः कीस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥  
 गरुत्मान् गरुडस्ताक्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।  
 नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पद्मगाशनः ॥ २९ ॥  
 शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।  
 ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥

अनुदापोपदेसवन्तीति ( सू० ) अनुनासिकलोपे तुक्, मतो मनसो मथः [ मथान्तीति ] मन्मथः ।  
 त्रिभन्तेन मारः । प्रद्युम्नं युग्मं बलमस्य प्रद्युम्नः । मीनः केतनं ध्वजोऽथ मीनकेतनः, मीनो जलचरोप-  
 लक्षणम् । कमन्वयं कुत्सायाम्, कं दर्पोऽयं कंदर्पः कं दर्पयति वा । दर्पयतीति दर्पकः । न विशद-  
 मस्येत्यनङ्गाः, ईश्वरपदेदेहत्वात् । कामयतेनेन कामः, कामोऽस्त्यस्य वा, अर्थोऽप्यदित्वात् ( सू० ) ।  
 [ पद्म शरा अस्थेति पञ्चशरः, उन्मादनं शोचनं च तथा संमोहनं विदुः । शोषणं मरणं चैव पद्म बाणां  
 मनोमुक्ताः ॥ मदनोन्मादनश्चैव मोहनः शोषणस्तथा । संदीपनः समाख्याताः पद्म बाणा इमे स्मृताः ॥ ]  
 स्मरन्त्यनेनेति स्मरः, पुंसि संज्ञायां च प्रायेण ( सू० ) ॥ २५ ॥ शम्भरोऽसुरभेदस्तस्वारिः शम्भरारिः । मनसि  
 जायते मनसिजः, ङ, हलन्तात्सप्तम्याः ( सू० ) अलुक् । न मनसोन्यस्माज्जाबतेनञ्चञः । पुष्पाणि  
 धनुरस्य पुष्पधन्वा, वासंतायां ( सू० ) इत्यनङ् । आत्मना भवत्यात्मभूः, ब्रह्मागुरिः— शम्भरारिः  
 स्मरः स्वजः । हृच्छयधैत्रसखः शङ्खगारयोनिः पुष्पकेतुश्च ॥ २६ ॥ ब्रह्म इदं सूत्रे ब्रह्मसूः । ऋध्व-  
 नामा मृगः केतुरस्य ( ऋष्यकेतुः ) । उपा बाणदुहिता ( तस्याः पतिः ) । बलद्वयो हरेर्भक्तपुत्रपौत्राः,  
 यद्वागुरिः— ब्रह्मसूक्त्यकेतुश्च विष्वक्सेनात्मन्नात्मजः । संहितासु त्वेकं ब्रह्म बामुदेवसंकर्षणप्रपुष्प-  
 निरुद्धाव्यया चतुर्व्यूहात्मकमाहुः । विश्वकेतुरित्युपपाठः । लक्ष्यते लक्ष्मीः, लक्ष्मेर्मुट्च ( उ० ) इतीप्रत्ययान्तः,  
 अत एव दयन्तात्वाभावाद्, हलङ्गान्योर्दाषत्सुतीति ( सू० ) सुलोभाभावः । पर्णं विद्यतेऽस्याः पद्माद् अर्थ-  
 आदित्वाद् ( सू० ) । एवं कमला । श्रयतीति श्रीः, किञ्चिप्रच्छिन्ना ( उ० ) इत्यादिना किञ्चिदौ ।  
 मा रमा अधिजा-इन्दिरत्याश्रयम् ॥ २७ ॥ पद्मजने पाताले भवः पाञ्चजन्यः, बहिर्देवपद्मजनेऽथेति  
 वक्ष्यमात् ( वा० ) ऽवः । लक्ष्मीपतेरिति शेषः । सुखेन दृश्यते ( सुदर्शनः ), भाषायां चासियुधीति ( वा० )  
 तुच् । सुदर्शनः पुंषि लोकाध्यक्षादिहृगस्य, यथा- बन्धुरेष जयतां सुदर्शनः ( शिशु० ) । विष्णुः  
 कुमोदकः क्षौरिरिति बुरीपाठात्, कुमोदकस्येयं कीमोदकी लक्ष्मीपतेर्गदा । संहितासु मेण्ठादी कौपो-  
 दक्षीति पाठः, कृपादकाज्जातेत्याश्रयात् । नन्दयतीति नन्दकः । कुं भवं स्तुभान्ति व्याप्राप्तिं कुस्तुभेऽपि-  
 स्तस्यायं कोस्तुभः ॥ २८ ॥ गरुटः पक्षाः सन्त्यस्य गरुत्मान्, मयः ( सू० ) इति बत्वं यवादिपाठप्राप्तिः ।  
 गरुडिर्हयते गरुडः, पृषोदरादिरित्याहुक् ( सू० ), गिरति नागान्वा । नृहस्यापत्यं ताम्रपैः, गणादित्याहुक्  
 ( सू० ) । विनताया अपत्यं वैनतेयः, स्त्रीभ्योऽङ् ( सू० ) । सुपर्णो हेमपक्षत्वात् ॥ २९ ॥ शं शब्दोऽस्मा-  
 द्छम्भुः, मितद्ववादित्वाद् ( वा० ) बुः । ईशे- ईशः । पशुतां सुरनरतिरथा पतिः । शिवः श्रेयस्करत्वात् ।  
 ईशे- ईश्वरः, ताच्छीत्ये स्थेसमासोति ( नू० ) वरन् । महेश्वरो महोदधिवद्भूः । धृगपि धिनसि धर्मः ।



वैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।  
 पीताम्बरोच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥  
 उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।  
 पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥  
 देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।  
 यनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥  
 विष्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।  
 वसुदेवोस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥  
 बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोच्युताग्रजः ।  
 रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥  
 नीलाम्बरो रोहिण्यस्तालाङ्को मुसली हली ।  
 संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

स्वभूः स्वतो भवतीति ॥ १८ ॥ पुण्डरीके इवाक्षिणी अस्य पुण्डरीकाक्षः, बहुवीहोसकभ्यस्पोः  
 स्वाङ्गादिति ( मू० ) पच्, प्रसन्नलोचन इत्यर्थः । गां भुवं विन्दतीति गोविन्दः, वराह-  
 रूपेण गोः पृथिव्या उद्धर्ता, तद्वत् गोवर्धनाचलोद्धारो गवां ताता, अनुपसर्गाद्विन्देति ( मू० ) शः ।  
 गरुडो ध्वजश्रिङ्गं वाहनत्वेस्य । पीते अम्बरे वासधो अस्य । न च्यवतेच्युतः । शृङ्गस्य विकारो धनु-  
 रस्तस्य शार्ङ्गी । विष्वक्सर्वव्यापिनी सेनास्येति विष्वक्सेनः । जनानदेयति जनार्दनः, नन्यादित्वात्पुः  
 ( मू० ) ॥ १९ ॥ इन्द्रमुपगतो नुजः वासुदेवः । इन्द्रस्यावरं जातो नुज इन्द्रावरजः । पद्मं नाभावस्य पद्म-  
 नाभः, अचप्रत्यन्ववेति ( मू० ) प्राङ्निर्देशादच् । मधुनाम्नोसुरस्य रिपुर्मधुरिपुः । वसुदेवस्यापत्यं  
 वासुदेवः, जगत्याः सर्वहृदये बसतीति वासुः- कत्यान्ते दीव्यतीति देवः, वासुधासी देवश्च वासुदेवः ।  
 त्रयो विक्रमा अस्य त्रिविक्रमः, त्रिषु लोकेषु वा विक्रमः पादन्यासेत्यस्य ॥ २० ॥ शूरस्यापत्यं शौरिः ।  
 पुरुषोत्तमः पुरुषोत्तम इति सप्तमीतत्पुरुषः, ननिर्धारणे ( मू० ) इति पटीसमासनिषेधात्, कर्मधारये  
 च सम्महत्परमोत्तमेति ( मू० ) उत्तमपुरुष इति स्यात् । पुष्पफलपल्लवान्विता वनमालास्यास्तीति वन-  
 माली, व्रीक्षादिवादिनिः ( मू० ) । बलिं ध्वंसते बलिध्वंसी, मुन्यजातीणिनिस्ताच्छील्ये ( मू० ) ।  
 अधः कृत्वा क्षाणांन्द्रियाणि जातो धोक्षजः, अधोक्षणां जितेन्द्रियाणां वा जायते प्रत्यक्षीभवति, अक्षजं  
 ज्ञानमधोस्य वा ॥ २१ ॥ विष्वं विभृतीति विष्वंभरः, संज्ञायामृन्मृजीति ( मू० ) खच् । मधुकैटभाव-  
 सरो जितवान् । विधत्ते विधुः । श्रीवत्सलाग्रो रोमावतो वक्षसि लाञ्छनमस्य श्रीवत्सलाञ्छनः । गदा-  
 प्रज्ञो दाशाहो मुञ्जकेशोन्मिश्रशायो पुराणपुराणो बभ्रुरित्याद्युद्धम् । हरो ज्ञाने ह्यनका दुन्दुभ्यश्चास्य नेदुः,  
 अनकदुन्दुभो वसुदेवस्य पितृभ्यो ॥ २२ ॥ बलेन भद्रो बलभद्रः, बलस्त्वननिष्पादित्यायेन भोगक् ।  
 प्रलम्बं नाम्नासुरं हनवान् प्रलम्बघ्नः, अमनुष्यकर्तृकेच ( मू० ) इति टक् । [ रेवतीं रमयतीति,  
 नन्यादित्वान् ( मू० ) ल्युः ] । रामः सितान्नत्वात् । कामान् पालयति कामं रमरे वाप्रजत्वत्कामपालः ।  
 ॥ २३ ॥ रोहिण्या अपत्यं रोहिणेयः, शुभ्रादित्वात् ( मू० ) ङक् । तालवृक्षोद्भो ध्वजस्य तालाङ्गः ।  
 संकर्षति संहारमूर्तिवत्संकर्षणः, नन्यादित्वात्पुः ( मू० ) । कालिन्या यमुनाया भेदना हलेनाकर्षणात् ।  
 सस्वतोपि । [ एककुण्डलोऽनन्त इत्याद्युद्धम् ] ॥ २४ ॥ मदयति मदनः, ल्युः । मननं मत्-चेतना,



षडभिज्ञो वशबलोद्भववादी विनायकः ।

मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥

स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।

गौतमशार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।

हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥

धाताब्जयोनिर्दुहिणो विरिञ्चः कमलासनः ।

स्रष्टा प्रजापतिर्विधा विधाता विश्वसृष्ट विधिः ॥ १७ ॥

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरभ्रवाः ।

दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥

पूर्वनिवासानुस्मृतिः परचित्तज्ञानमात्रवक्ष्य कश्चिन्नेति षडभिज्ञा अस्य सन्तीति । दानक्षान्तिशीलवैर्य-  
भ्यान्निशान्तिबलोपायप्रणिधानज्ञानानि वश बलान्यस्येति । अद्वयं विज्ञानाद्वैतं वदत्यवश्यमद्वयवादी ।  
विनयति शास्तीति विनायकः । मन्यते मुनिः, मनेरुच ( उ० ), नेपामिन्द्रः । मुनिस्तु भीमवत्, सन्ति  
पदेषु पदैकदेशा इति । प्रिया योगविभूत्या घनो निविडः, प्रिया घन इव वर्णिता वा । शास्ति विनयति  
विनेयाञ्चास्ता, तृन्तुचौरांसिस्रदादिभ्यःसंज्ञायांचानिदौ ( ङ० ) । तापी च ॥ १४ ॥ यस्तु शकेषु  
जातः शाक्यमुनिर्बुद्धावतारः— शकोभिजनोत्येति, शण्डिकादिन्योज्यः ( सू० ) स शाक्यः सिंह इव  
शाक्यसिंहः, उपमितरूपप्रादिभिः ( सू० ) इति समासः । शाक्योपि भीमवत् । सर्वार्थेषु सिद्धो  
निष्पन्नः । अत एव सिद्धार्थः, यच्छाश्वतः— सिद्धार्थो बुद्धसंप्रदी । शुद्धोदनस्य राज्ञोपलं  
शौद्धोदनिः, शकन्वादित्वात् ( वा० ) पररूपम् । गौतमो गौतमगोत्रावतारात् । अर्कबन्धुः सूर्यवत्सत्वात् ।  
मायादेवी शुद्धोदनस्य राज्ञो भार्या तस्याः सुतः स इति । इत्यागमोक्तावतारभेदावृथक् नामानि ।  
[ सर्वज्ञो यौतरागोर्हन् केवली तीर्थकृञ्चिन्नक्रिकालविदाया ऊष्ठाः ] ॥ १५ ॥ बृंहति ब्रह्मा । आत्मना  
भवत्यात्मभूः । अत एव स्वयंभूशब्दे लब्धे स्वभूनिवृत्त्यर्थं वचः । एवं सर्वश्रोत्रेयम् । परमे पदे तिष्ठतीति  
परमेष्ठी, परमेस्यःकिदिति ( उ० ) इति, तत्पुरुषकृतीति ( सू० ) सप्तम्या अलङ्कृ, स्थास्थिनस्यृणां  
वक्ष्यत्वात् ( वा० ) वक्ष्यम् । पितृणामपि पिता पितामहः, पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः ( सू० )  
इति साधुः । हिरण्यं गर्भस्य हिरण्यगर्भः, हिरण्यस्य गर्भो वा ब्रह्माण्डप्रभवत्वात् । भूरादीन् सप्त लोका-  
नीष्ट इति लोकेशः ॥ १६ ॥ धाता विधाता कर्ता, वैर्यो धातुर्नैवोक्तः— उपसर्गोणां द्योतकत्वात् । इष्ट-  
स्यसुरेभ्यो दुहिणः । विरिञ्चे सृते विरिञ्चः, विभिर्हसे रिच्यते— उद्यते वा, विरिञ्चिरिति प्राच्याः ।  
विदधाति सृजति विश्रमिति वेधाः, विधति सृजति वेधाः, विध विधानेऽमुन्, विधाद्योवेषचेतिवा ( उ० ) ।  
विश्वं सृजति विश्वसृष्ट, प्रथमसृजसृजेति ( सू० ) पः, स्रलान्जशान्ते ( सू० ) । विधत्ते विधिः, उपसर्गोः  
किः ( सू० ) । शतपृतिशतानन्दो च । स्वविरो देस्याम् ॥ १७ ॥ वेवेष्टि व्याप्नोति विश्वं विष्णुः,  
विष्वःकिञ्चेति ( उ० ) नुः । नरस्यापत्यं नारायणः, नकादिभ्यः फक् ( सू० ) । नाराः सलिलं नारमम्मयं  
नरसमूहो वायनमस्य, आपो नारा इति प्रोक्ता इति स्मृतेः । तथा नराज्जातानि भूतानि नाराणीति तेषा-  
मयनं मार्गः । कृष्णो वर्णेन कर्पाति वारीन्— विकुण्ठस्यापत्यं वैकुण्ठः, विकुण्ठितसैहादिवक्त्रो वा संहिता-  
दिषु तथा दर्शनात् । विष्टर इव भ्रवसी कर्णावस्य विष्टरभ्रवाः, विष्टराकृतिर्जटा भ्रवोभ्यां निर्गतास्येति वा, अथवा  
विष्टरेभ्यस्तरो भ्रूयते वा । दाम— उदरे यस्य स दामोदरः, बाह्वे हि चापलाहाभ्रा बद्धाभूत् । हृषीकाणामि-  
न्द्रियाणामीशो वशित्वाद् हृषीकेशः । प्रशस्ताः केशा विद्यन्तेस्य— यदि वा केशिनमसुरं हतवान्—  
केशवः, केशाद्वोन्यतरस्याम् ( सू० ) । माया सस्या ध्रुवो अर्तो माधवः, मधोरपत्यं वा ।

बहिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा वानवारयः ।  
 वृन्वारका वैयतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥  
 आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः ।  
 महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणव्यताः ॥ १० ॥  
 विद्याधरस्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिनराः ।  
 पिशाचा गुह्यकः सिद्धो भूतामी वैयानयः ॥ ११ ॥  
 असुरा वैत्यर्वतयवनुजन्द्रारिवानयाः ।  
 शुक्रशिष्या वितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विपः ॥ १२ ॥  
 सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धूर्मराजस्तथागतः ।  
 समन्तभद्रो भगवान् मारजिह्वाकजिज्जिनः ॥ १३ ॥

न्वसः ॥ ८ ॥ बहिर्मुखमेवां बहिर्मुखाः । गीरेव निग्रहानुग्रहमर्थो वाणोन्नमेवां गीर्वाणाः ।  
 प्रास्ते वृन्दमस्त्येषां वृन्वारकाः, शृङ्गाशृङ्गाभ्यामारकनरक्तव्यः ( वा० ) । देव एव देवता, देवात्तत्त्वं  
 ( सू० ), स्त्रियार्थः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपि । देवतेव देवतं, प्रज्ञादित्वात् ( सू० )  
 स्त्रियै-अण्, विशेषविधेः पुंस्त्वं रूपभेदान् क्लृप्तत्वं तच्च प्रचुरप्रयोगम् ॥ ९ ॥ एते द्वादशत्वादिना सधेन  
 युक्ता गणदेवताः, संघचारिणो बहुवचनान्ता वा । एकत्वं तु समुदायेष्वपि कृताः शब्दा अवयवेष्वपि  
 वर्तन्ते इति । द्वादशादित्याः । तयोदश विश्वदेवाः, धाद्व्यः प्र विशन्तीति । अष्टौ वसवः, वसन्तीति ।  
 षट्त्रिंशत्पुतिताः, तुष्यन्तीति । चतुर्षाष्टराभास्वराः, अभ्यासन्त इति, स्थेदाभासेति ( सू० ) वरन् ।  
 एकोनपञ्चाशदनिलाः । षट्त्रिंशद् द्वे शते महाराजिकाः, महाराजशब्दोऽस्त्वेषामिति । सास्य देवता ( सू० )  
 इति माहाराजिका इत्येके, महाराजप्रोष्ठपदम् ( सू० ) । द्वादश साध्याः, साध्यन्त आराध्यन्त इति ।  
 एकादश रुद्राः । तुषिताया बौद्धपातञ्जलपुराणादौ दृष्टाः ॥ १० ॥ देवा योनिरुत्पत्तिस्थानमेषां,  
 देवांशा इत्यर्थः, देववददृष्टसंहतेभ्यः परमाणुभ्यः सद्यो जायन्ते वा । नागा अयेवम् । तथा च द्वितीय-  
 मर्थे-सिद्धगुह्यकभूता हि पिशाचा देवयोनय इति भागुरिः पण्डितः । दिशाधरा जीमूतवा-  
 हनादयः, चण्डगुर्दिकाजनादिविद्याधारिणश्च । आमु सरन्वससरो देवयोपितः-रम्भादयः ।  
 यक्षः कुबेरादयः रुद्राभराः । रक्षांसि मायाविनो लङ्घयिषामिनः । गन्धर्वास्तुम्बुरुप्रभृतयो  
 देवगायनाः । किनरा अश्वदिमुखाः शृङ्गारिणः । पिशाचाः पिशिताशास्तामसाः स्वयं निर्माताः ।  
 गुह्यका निषिष्यात्मा मणिभद्रादयः, गृह्णन्तीति । सिद्धाः, सिध्यन्तीति, प्राप्ताश्च गुणैश्चर्या विश्वावसु-  
 प्रभृतयः । भवन्तीति भूता बालप्रह्लादयो हिंसा रुद्रानुचरा वा, येनोन्मै भूतपतिः ॥ ११ ॥  
 असुराः सुराया क्षपणान्, सुरविहङ्गा वानर्षवन्, अस्पर्शित देवानां वा । दितिर्देनुश्चासुर-  
 मातुरी, अनया जातत्वादेत्या इति, अदित्या आदितेयवत्सिद्धम् । अनयादेवत्वाद् अष्टा इति पूर्वदेवाः ।  
 मुरान्द्रिपन्तीति सुरद्विपः, सत्सुद्विपेति ( सू० ) कृष्ण ॥ १२ ॥ सर्वं गत्यर्थो ज्ञानार्थो इति सुगतः  
 शोभनज्ञानः । तथागतः सत्यज्ञानः, तथेति सत्यार्थे विनयवत् । बुधते बुद्धः । धर्मः सत्त्वोद्धरण-  
 दिस्तेन राजते धर्मराजः, धर्मस्य राजा वा । संपूर्णान्तं निधयन् भद्रमस्य समन्तभद्रः । ऐश्वर्यस्य सम-  
 प्रस्य धर्मस्य यशसः प्रियः । वैराग्यस्यायं, मोक्षस्य पञ्चां भग इति स्मृतः ॥ तद्वान् । मारान् काम-  
 कोधादीन् जयति मारजिन् । बाँडास्तु रुद्रन्धमारः क्रुशमारो मृत्युमारो देवपुत्रमारथेति चतुरो मारानाहः ।  
 लोकाऽजयति तपसा लोकजिन् । जयति भवं जिनाति वा जिनः ॥ १३ ॥ दिव्यं चक्षुर्दिव्यं भ्रान्तं

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विन्ति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ।

निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

स्वरन्वयं स्वर्धनाकत्रिविवत्रिवशालयाः ।

सुरलोको घाविंवी द्व खियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा क्वास्त्रिवशा विबुधाः सुराः ।

सुपर्वाणः सुमनसास्त्रिविंशा दिवौकसः ॥ ७ ॥

आदितेया विविषदां लेखा अवितितनन्वनाः ।

आदित्या क्रमवांस्त्वन्ता अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

पदं प्रयोज्यमिति परिभाष्यते, यथा-त्रिषु स्फुलिङ्गोपप्रिकणः । तथा मिथुने क्लीपुंसलिङ्गे द्वयोरिति पदं ज्ञेयम्, यथा-वह्नद्वयोर्ज्वालकीटी । तथा निषिद्धं लिङ्गं यत् तच्छेषार्थं निषिद्धालिङ्गादवशिष्टं लिङ्गं ज्ञेयं, विशेषानिवेधे शेषाभ्यनुज्ञानान्, यथा-व्योमयानं विमानोष्माति, क्लीलिङ्गे निषिद्धे विमानस्य पुन-पुनकविकिः । तथा तुशब्देनैव वक्ष्य तत्तन्तुमयशब्द आदिर्यस्य तदयादि च पूर्वं न भजते-अप्रमेण संबध्यत इत्यर्थः । न्याससिद्धं केतन्-तुना पूर्वस्माद्विशेषयोनान्-अथशब्देन चार्थान्तरारम्भान्, यथा-पुलेमत्रा शचीन्दाणी नगरी त्वमरावर्ती, नित्यानवरताजलमप्ययातिशयो भर इति । भ्रान्तिस्थानविषयं केतन् ॥ ५ ॥ स्वर्गे परे च लोके स्वरिति वक्ष्यमाणत्वेऽहं प्रचुरप्रयोगार्थं स्वःशब्दोपादानं, वक्ष्यति च भूरिप्रयोगा वे शेषु पर्यायेष्वपि तेषु ते । अव्ययमित्यलिङ्गत्वार्थम् । मुष्टु-अर्ग्यते स्वर्गः, घम् । नास्त्यङ्कं दुःखमत्र नाकः, नाविद्यमानविरिषो वा, नप्राणनयादिति ( मू० ) नम् प्रकृत्या । तृतीया योल्लोकस्त्रि-दिवः-तृणविषये दिवौकसवद्विशब्दोऽयस्ति, दीव्यन्त्यस्तेति चतुर्थेकविधानम् ( वा० ), पूरणाधार्थिकत्वं च तृतीया त्रिभागवत् । प्रयाणां ब्रह्मादीनां योरित्येके । त्रिदशालयादयः सुरसदनायुपलक्षणम्, एवं यागिकेषु सर्वत्रोभेयम् । योशब्दोऽप्योकारान्तेऽस्ति, भर्त्ये गोतोऽणिन्, ( मू० ) इत्यत्र-ओतोऽणितेति ( वा० ) न्यासान्तराश्रयान् । दीव्यन्त्यस्यां योः, दिवः क्तिप् । तृतीयं विष्टपं त्रिविष्टपं भूभुवःस्वरिति श्रुतेः । त्रिविष्टपमिति प्राच्याः, प्रायेण ह्येते पर्वो शसो च व्यत्यस्य पठन्ति । गोर्नानार्थे । ऊर्ध्वलोकाया आयुषाः ॥ ६ ॥ न म्रियन्ते इत्यमराः । निष्कान्ता जराया निर्जराः । दीव्यन्तीति देवाः, देवसेवमेया-दयः पचादियु द्रष्टव्या इति-इमप्येति ( मू० ) को नास्ति । त्रिदश परिमाणमेषां त्रिदशाः, संख्यया-व्ययेति ( मू० ) बहुव्रीहिः, बहुव्रीहौमह्येयडजबहुगणान् ( मू० ) इति डन् समःसान्ते, त्रयस्त्रिंशद् देवाः सोमपा इति श्रुतेः । तिस्रो दशा वयोवस्था येषामिति गौडः । विगुह्यन्ते विबुधाः । सुरानि सुराः, सुर-पेश्यर्थे-कः, सुरा-एषामस्तीति वा, अशोआदिभ्योऽच ( मू० ), यतोऽप्यजाता मुषा तैः पीता, मुष्टु राजन्ते वा । शोभन्ते परं चरितमेषां सुपर्वाणः । मुष्टु मन्थन्ते सुमनसः, अमुन् । दिवि-ओक्को निवास एषां दिवौकसः, यममानार्थो दिवशब्दोऽस्ति, पृषोदरादिवान् ( मू० ) वा लिङ्गः ॥ ७ ॥ अदित्या अपत्यान्यादितेयाः, कृदिङ्कारादक्तिनः ( ग० ) इति ड्यन्तान्-स्त्राभ्योऽङ्क ( मू० ) । इदन्तान् दिल्लदित्यादित्येति ( मू० ) ण्य-आदित्याः । एवं दित्येदितेयाः । दिवो मादन्तीति दिविपदः, सप्त-द्विपेति ( मू० ) क्तिप्, हलन्तात्सप्तम्याः ( मू० ), हट्युभ्यां च ( वा० ) इत्यल्ल, सुपामादिवान् ( मू० ) पक्षम् । पक्षे युग्मद्वयः । लिङ्ग्यन्ते चित्रादौ ध्यानार्थं लेखाः । इधमिति ऋभसः । कृशब्देऽदि-तिवाची ततो भवन्तीति गौडः, उपकरणे मितद्वादिभ्यश्चउपमह्ययान् ( वा० ) । नास्ति स्वप्न एषामस्वप्नाः । न म्रियन्ते-अमर्त्याः, इसिन्प्रमितितन् ( उ० ), स्वार्थे यत् । अमृतमन्थेप्रमेयाममृता-

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।  
 सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥  
 समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।  
 संपूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥  
 प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।  
 स्त्रीपुनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥  
 भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।  
 कृतात्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां कमाहते ॥ ४ ॥

यस्य भगवतो ज्ञानदययोर्बोधकरूपयोः सिन्धोः समुद्रस्यैव गम्भीरस्यापारस्य । अगाधस्थान्यैर-  
 प्राप्ताज्ञानदयावधेः । अनघा निष्पाया गुणाः क्षान्त्यादयो बाधपक्षाः [ क्ष्याः ] सतज्जिज्ञासुः । सः- अक्षयः-  
 अक्षोभ्यो जातो मारजिज्वादनन्तज्ञानसन्तानो वा । भो धीरा योगिनः- ध्येयं प्रति धियमीरयती[न्ती]-  
 ति कृत्वा श्रिये भोगार्थे [ सौह्यार्थे ] अविद्यमानं मृतं मरणं यत्रैवमृताय मोक्षार्थं च सेव्यतामाराध्य-  
 ताम् । लेशसृष्टेः समुद्रः- अस्य विष्णोः स्वयो निवासः । अगाधोतलस्वरस्यः । रत्नादिमत्त्वाभिर्मल-  
 गुणः । लक्ष्म्यर्थे पीयूषार्थं च सुरैः सेवितः ॥ १ ॥ मन्यारम्भेभीषितसिद्धिहेतुं जिनमनुसृत्य धोतृ-  
 प्राप्ताहनायै स्वप्रवृत्तिप्रयोजनं साभिधेयमादिवाक्येनाह । सम्पद्य संघात्य- अन्यतन्त्राण्यभिधान-  
 शास्त्राणि लिङ्गानुशासनानि वा [ च ] संक्षिप्तैर्लेपकृतैः प्रतिसंस्कृतैः प्रत्येकं परिपाटीस्थापनादिना  
 कृतेतत्कैः संपूर्णं लक्ष्यलक्षणभ्यां संगृह्य पूरितं, वादान्तज्ञानान्तपूर्वैति ( मू० ) व्यन्तस्य निपातनन् ।  
 वर्गैः सजाति[ तीय ]समूहैः, सुखप्रहणार्थं वर्ज्यन्ते विज्जतीया अस्मिन्प्रत्यक्षसारवर्जनाद्वा । नात्राभि-  
 धानानां लिङ्गानां च स्त्रीपुनपुंसकानामनुशासनं व्युत्पादकं शास्त्रमुच्यते ॥ २ ॥ अथ श्लोकत्रयेण परि-  
 भाषां शास्त्रव्यवस्थापनार्थमाह । प्रायशो बाहुल्येन कापि चेत्यर्थः । रूपस्या[ स्ये ] वन्तादेर्विभक्त्य-  
 ल्लाभादेः- अम्- भावादेशाकारस्य भेदेन- विशेषेण स्त्रीपुनपुंसकानिह ज्ञेयानि, यथा- लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा,  
 पिनाकोजगवं धनुः । तथा कुत्रचित्साहचर्यात्, यथा- अश्वयुगश्विनी, ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः, वियद्विष्णुपदम् ।  
 अत्राश्वयुगश्वविन्यति साहचर्यद्विपुनपुंसकानि । क्वचिल्लिङ्गविशेषविधानात्, यथा- वादिर्वा द्वे त्रियाम्,  
 दुन्दुभिः पुमान्, क्लृबे त्रिविष्टपम् ॥ ३ ॥ अत्रामरकोशे भिन्नलिङ्गानां प्रातिपद्येनानुक्तानां भेदमाख्यातुं  
 द्वन्द्वो न कृतः, परवल्लिङ्गं हि स्यान्नावयवाल्लिङ्गम्, यथा- कुलिशं भिदुरं पविः, न तु कुलिशभिदुर-  
 पवय इति । तथैकशेषो न कृतः, शिष्यमाणां लिङ्गस्यैव हि प्रतीतिः स्यात्, यथा- नभः सं श्रुवणो  
 नभाः, न तु खश्रवणो नभसी इति । तथा संकरो न कृतः- संकरो व्याभिधत्ता- साहचर्यात्तल्लिङ्गत्वं हि  
 स्यात्, यथा- स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्गुनिः, न तु स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिरिति । एतच्च कमादने यत्र  
 संप्रहश्लोकादौ क्रममात्रं विवक्षितं तत्रानुक्तानां भिन्नलिङ्गानां द्वन्वादयः कृता एव, यथा- वर्गाः पृथ्वी-  
 पुरश्चामृदुनौपधिमुगादिभिः । नृवद्मसत्रविद्भूदेः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिता इत्यत्र द्वन्द्वसंकरौ, भ्रातादा-  
 चैकशेषश्च कृतः । उपाध्यायश्च कमादत इत्यन्तर्गदु मन्वानः क्रमेणाहते परिपाठ्योपादेयैव प्रत्य  
 इति व्यददत् । गौडोपीत्यमबुद्ध्या यथात्रायं संकरः कमादतेनुकर्मं विना भिन्नलिङ्गानां न कृतः-  
 अभिधानानुक्रमेणवाभिधानं तु कृत एव, यथा- कपदस्य जटाजूः पिनाकोजगवं धनुः, प्रमथाः स्युः  
 पारिपदा इति । मालाकारो हि स्त्रीलिङ्गादीन् प्रकरणैर्निरादिशत् । श्रीभोजस्तव्यथा व्याख्यत्-  
 यथैतं द्वन्द्वकशेषसंकराः कमादते पर्यायनिर्देशं विना भिन्नलिङ्गा ययुक्ता न स्युस्तदा न कृताः, पर्याय-  
 निर्देशं विना तत्कानां कृता एव, यथा- विशाधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः, तथा, पुत्रो पुत्रश्च दुहिता च,  
 तथा नानार्थे- संज्ञा स्याच्चतना नाम हस्तार्थश्चार्थमूचनेति ॥ ४ ॥ यत्र लिङ्गत्रयसमाहारस्तत्र त्रिविधेति



अथ  
श्रीमदमरसिंहविरचितं  
नामलिङ्गानुशासनम् ।

भट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेनामरकोशोद्घाटनेन सहितम् ।

प्रथमं काण्डम् ।

श्रीगणेशाय नमः । दिश्याच्छिवानि शिवयोस्तिलकायमान-

गोरोचनाचिललाटविलोचनं वः ।

अन्योन्याग्राहपरिरम्भनिषीदनेन

विण्डीभवन् बहिरिव स्फुटितोनुरागः ॥ १ ॥

अद्याप्यभिन्नमुदो योयौयिभिरमरकोश एष बुधाः ।

उद्घाट्यते ययेच्छं गृहीध्वं नामग्लानि ॥ २ ॥

प्रकृतिप्रत्ययवाच्यैर्व्यस्तसमस्तैर्निरुक्तनिगदाभ्याम् ।

इति समाहं पयिभिर्नाम्नां पारायणं कुर्मः ॥ ३ ॥

मग्ना अभिधानकृतो विचरीतारब्ध यत् विभ्रान्ताः ।

नामानि तानि भङ्क्तुं गहनमहो अध्यवसिताः स्मः ॥ ४ ॥

सहजो यः समुल्लासः क्षीराब्धेः सोपि मंस्यते ।

चान्द्र इत्यत्र किं कुर्मो गतानुगतिकं जगत् ॥ ५ ॥

वस्त्वेव तत्र हि भवेत् क्रियतेन्यथा यत्

कञ्छादयेद्दिनमपि करसंपुटेन ।

सारेतरान्तरविचारचणान् प्रतीर्थ्य-

स्तेनाहमेव वत्तं दुर्जेनचक्रवर्ती ॥ ६ ॥

( किन्तु ) यदतिवृष्यन्तस्या विभ्यतो वा परस्मा-

द्वरचनममहार्थं नीरक्षं दृश्यं वा ।

वरिवसितुमुदारान् - ढोकयामोतिमक्त्या

तदपि मयकवृत्त्या दृष्यते किं विद्वमः ॥ ७ ॥

जाता विश्वसृजः क्रमेण मुनिभिः संस्कारमापादिताः

शब्दाः संवत्सनादसाधुभिरपत्रघ्नः स्व भो भ्रातरः ।

वाग्देव्याद्य कृता मदेक्षारणा मात्रा यतोऽस्मान्मया

न्याम्ये कर्त्तानि वर्तनाय भवतां वद् इत्ययः कल्पिताः ॥ ८ ॥



# ERRATA &c.

Page.	Line.		स्पृताः	read	सृताः
16	9	for	स्वराचमम्	"	स्वराचमम्
"	11	"	दाक्षयणी	"	दाक्षयणी
18	17	"	कामुका	"	कामुका
49	17	"	बन्धुको	"	बन्धुको
66	6	"	काकविषी	"	काकविषी
70	4	"	कासारः	"	कासारः
85	18	"	कुटहारिणी	"	कुटहारिणी
94	15	"	पुष्पवत्यवी	"	पुष्पवत्यवी
"	30	"	अंसकस्योः	"	अंसकस्योः
104	23	"	चन्द्रोपप्लवङ्ग	"	चन्द्रोपप्लवङ्ग
115	13	"	दाहविलोदि	"	दाहविलोपादि
125	24	"	आश्रीय	"	अश्रीय
129	28	"	सेन्याद्वहिः	"	सेन्या(स्व) बहिः
137	16	"	पृथगाहुः	"	पृथगाहुः
145	18	"	भिवन्	"	भिनन्
148	11	"	(स्तम्भ) छाग	"	(स्तम्भ) छाग
152	3	"	भृतिभृक्	"	भृतिभृक्
160	7	"	परास्कन्द	"	पारिस्कन्द
"	13	"	वाचस्तिष्ठन्त्य	"	वाचस्तिष्ठन्त्य
165	21	"	चिरेण	"	चिरेण
168	30	"	(सीवन्)	"	(सीवन्)
183	30	"	क्योते	"	क्योते
184	8	"	गार्ग्यकं	"	गार्ग्यकं
188	24	"	रचाना	"	रचाना
206	22	"	after श्रेष्ठया- and before वरं कृपयताद्वापी }	insert वरराचिः । ईवाचिवे वया-	
213	28				
217	26	for	सिकतोपला ।	read	सितोपला ।
232	29	"	द्वाक्षमाली,	"	द्वाक्ष मृगाली,

Note.—A few misprints are corrected and omissions supplied in the Notes.

with the revised notions of Sāṅkhya philosophy as propounded by *Iśvarakrishna*. This circumstance again strengthens the probability that *Amarasimha* lived prior to *Iśvarakrishna*, that is, in the 4th century A. D.

*Amarakosha* was translated into Chinese by *Gunarāta* of *Ujjayini* in the sixth century (see *Max Muller's India : What can it teach us ?* 1st Ed. p. 328). In the *Kāvyādarśa* of *Dandin* who flourished in the latter half of the 7th century (See *Indian Antiquary* Oct. 1912, p. 232) we meet with words indicative of 'likeness' thus :—

इववद्वायथाशब्दाः समाननिर्माणाः । तुल्यसंकाशनीकाशप्रतीकशब्दाः ।

सदृशसदृशसंवादिषनातीयानुवादिनः । समकृणसदृशमस्यक्षोपमितोपमाः ।

These words or many of them appear to have been suggested to *Dandin* from the following lines in the *Amarakosha*—

कदा यथा तथेवेदं साम्ये— ( p. 229 ).

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृशः सदृशः सदृशः ।

संभारणः समानं च स्युस्तरपदे त्वमी । निमसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः । ( p. 164 ).

Dr. Bhandarkar has found the words तन्त्रं प्रचाने सिद्धान्ते ( p. 215 ) of *Amarasimha* quoted in the *Kāśikāvivarāṇanapanjikā* of *Jine-drabuddhi* who has been shown by Prof. Pathak to have flourished in the beginning of the 8th century. A reference to *Amarakosha* is also found in the *Amoghavṛitti* written in Saka 789.

### SOME ABBREVIATIONS &c.

सू.—Pāṇini's सूत्र or सूत्रांश

वा.—Kātyāyana's वार्तिक or वार्तिकान्तर

ग.—गणसूत्र or गणसूत्रांश

उ.—उणादिसूत्र or उणादिसूत्रांश

का.—कारिका or कारिकांश

भाष्य.—भाष्यवचन

इ.—भाष्यकारेष्टि

ज्ञा.—ज्ञापकवचन

धा. सू.—धातुपाठान्तर्गतसूत्र

[ ] Variants are generally shown in rectangular brackets.

) Additions and emendations proposed are included in ordinary brackets.

of Chandra's simpler and more intelligible Sûtra ईश्वरार्थादस्यःसमा. A justifiable inference from this and many other Sûtras is that Chandra's grammar was not before Amarasimha when he wrote his work. In this connection it is interesting to note the well-known line current amongst the orthodox Pandits :—अमरसिंहो हि पाणीयान् सर्वे भाष्यमनुचरत ।

Kshirasvâmin commenting on the word आप्य says :—

आप्यं तु लक्ष्यात् । अत एव- आप्यं वेति चान्द्रो सूत्रम् । ( p. 40 ).

On page 161, while explaining मन्द, Kshirasvâmin says :—

मन्दते स्वपितीक मन्दः । अत एव यदि जाड्य इति चान्द्रो वातुः ।

On page 157 the commentary has :—सशस्त्रोर्णा शशोर्णं, गृहस्थपूजकोवे । But here Kshirasvâmin does not cite Chandra's. Lingânusâsana which says :—सशोर्णं कारणं इत्म् । From these it may be inferred that Amarasimha preceded Chandragomin. Since Chandragomin, from whom the grammarian Vasurâta ( A. D. 480 ) is said to have learnt grammar directly, belongs to the fifth century A. D., Amarasimha may be assigned to the fourth-century A. D.

A correct explanation of the word ऋतु is found in Susruta, Charaka and even in Vâgbhata. But Amarasimha attaches to the word a wrong meaning. ( See Dr. Hoernle's Osteology p. 166. ) This fact may indicate that Amarasimha was posterior to Vâgbhata.

In passing it may be remarked that Amarasimha, though a Buddhist, had strong leanings towards Sâṅkhya philosophy as it evident from the use of the words :—

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः शिवाम् । ( See p. 24 and Com. thereon ).

This philosophy of Kapila was revised by Isvarakrishna or Vindhyavâsin, the rival of Buddhamitra and his pupil Vasubhandhu ( A. D. 480 ). Amarasimha says :—

अन्तराभवसत्त्वेष्वे गन्धर्वो दिव्यगायने । ( p. 207 )

'अन्तराभवसत्त्व' ( i. e. अन्तरा मरणजन्मनोर्मध्ये भवे सर्वं यातनाशरीरं ) is one of the senses of the word गन्धर्वः. Kumârila-bhata in his S'lokavârttika says :—

अन्तराभवदेहस्य नेष्यते विन्ध्यवासिना । तदस्तित्वे प्रमाणं हि न किञ्चिद्वगम्यते ॥

The theory of the existence of अन्तराभवदेह is rejected by Vindhyavâsin. This shows that Amarasimha was not acquainted

*Grammarians.*

प्राच्याः, प्रतीच्याः and उदीच्याः are referred to here and there in this commentary: Pāṇini, Kātyāyana and Patanjali are of course frequently referred to. The grammarian Chandragomin is cited nearly nine or ten times. Not only does Kshirasvāmin quote Kāśikā but reproduces even its mistakes (see Comment. on सप्तमः and ३० pp. 188 and 192). Lastly, the grammarian Bhoja is also quoted with great respect as जीमोज.

*Philosophical Authors.*

The Dharmasūtras of Gautama are quoted on pp. 28 and 114. Jaimini's Pūrva-Mīmāṃsā-Sūtra is quoted on p. 28. Sāṅkhya-sāstra is referred to on page 25, while Sāṅkhya-kārikā is quoted on page 217. We find mention of the Vaiśeṣika doctrine on page 25. Yoga-sāstra and its Sūtras are cited on pp. 13, 119 and 191. The great Mīmāṃsā-writer Kumārila-bhaṭṭa is quoted on pp. 28, 166 and 207. The seven principles recognised by the Jainas are mentioned on page 187; while Buddhism and its principles are mentioned on pp. 25 and 203.

Other authors and works quoted by Kshirasvāmin in his commentary are too numerous to mention here. For the convenience of Sanskrit scholars, they are given in a separate list. (Vide Appendix-I).

*The age of Amarasimha.*

In the Kālavarga, page 23, Amarasimha says :—

द्वौ द्वौ माघादिमासौ ह्यद्भुतस्तेरयं त्रिभिः ।

Upon this Kshirasvāmin remarks thus :—माघाद्युपक्रमस्ततोयनारम्भात् । It is obvious from this statement that in the days when Amarasimha lived or shortly before his time, the sun's course to the North must have commenced in the month of Māgha. Similarly the other remark of Kshirasvāmin :—हेमन्तादि वसवस्त्यारम्भः may be taken as confirmatory of the same view. From this it may be inferred that Amarasimha must have flourished 15 or 16 hundred years ago. Another clue to his age is found in the fact that he, though a Buddhist, follows the Pāṇinian system of grammar. The line :—

शास्त्रार्थाणि परा राजानमुप्यार्थादराजकात् । ( p. 236 ) ,

is a rendering of Pāṇini's well-known Sūtra समाराजानमुप्यर्था and not



*Rādhākānta*, *Upādhyāya* is *Achyutopādhyāya* whose commentary on *Amarakosha* is called *Vyākhyā-pradīpa*. *Gauda* was another commentator on *Amarakosha* before *Kshirasvāmin*. Both these commentators are quoted and criticized. The third is *Bhoja* about whose commentary we know nothing. Nor do we know anything about the commentators *Achāryāh*, *Nārāyanah*, &c.

### Medical Authorities.

Since *Kshirasvāmin* refers by name to *Susruta* thus :—  
 श्रुतस्त्वार (p. 80), एवनेष्टोपीति श्रुताः (p. 64), it may be inferred that the frequent reference to वेद्याः may be intended generally for *Charaka*. The next medical authority after *Charaka* and *Susruta* is *Dhanvantari* who in the opinion of *Kshirasvāmin* is older than *Amarasimha* :—  
 बालपक्षो बवासः सुदिरथेति धर्मेषु धन्वन्तरिपाठमदृष्ट्वा बालपुत्रभ्रान्त्या प्रत्यङ्मूल-  
 तनयमाह (p. 62). धर्मे-उपचित्रा दन्ती पृथिवीर्णं चेति । अत्र दन्त्यां दक्ष्णीभ्रान्त्या प्रत्यङ्मुप-  
 चित्रामाह (p. 69). पुष्करमूले त्रीणि नामानि । पद्मपत्रमिति प्रत्यङ्मूलं भ्रान्तः । पद्मवर्षेति  
 शिपिभ्रान्त्या पद्मपर्णमिति बुद्धवान् । यदाह- मूलं पुष्करमूलं च पौष्करं पुष्कराह्वयम् । काश्मीरं  
 पुष्करजटा धीरं तत्पद्मवर्णकम् ( धन्वन्तरिः ) (p. 79). शीतलवातक इत्येका संज्ञा यद्वन्वन्तरिः  
 शणपर्णी शीतलवातक इत्याह । *Amarasimha* considers *शीतलवातक* as a compound  
 and treats *वातक* and *शीतल* as separate terms for *शणपर्णी* (p. 80).

From these and other similar remarks it is obvious that *Dhanvantari*, whose work is known as *Nighantu*, must have preceded *Amarasimha* by a long interval. *Vāhata* or *Vāgbhata*, who was a Buddhist, is thrice or four times referred to in this commentary. His reference to the *Sāka* kings being very fond of onions enables us to assign him to the second or third century A. D.

लघुनानन्तरं बायोः पलाण्डुः परमौषधम् । साक्षादिव स्थितं यत्र शकाधिपतिजीवितम् ॥

यस्योपयोगेन शकाङ्गनानां लावण्यसारादिव निमित्तानाम् ।

कपोलकाम्या विजितः शशाङ्को रसातलं गच्छति निर्दिदेव ॥ (अष्टांगसंग्रह उत्तरस्थान Ch. 49).

Other medical writers *Chandra*, *Indu* and *Chandranandana* are very frequently quoted, especially in his comments on the *बनौषधिवर्ग*, by *Kshirasvāmin*. But nothing is known about their works. A *गणनिषण्ड* by *Chandranandana* is mentioned in a list of writers of medical *Nighantus*. Two or three references to *Nimi* show him to have been a medical writer about whom nothing definite is known. Nor do we know anything about the *हरमेखलतन्त्र*, an ancient medical treatise mentioned on page 71. *धातुविदः* mentioned on page 156 may, for aught we know, be medical authors.



From this it would appear that Kātya is older than Amarasimha. The same remark may be made as regards muni who may probably be identified with Vyādi. The third in the list is Bhāguri, as to whose priority to Amarasimha, Kshirasvāmin thus remarks on p. 70 :—

बृहती तु निदिग्धिपदेति भगुरित्याद्याद् ग्रन्थकृद् भ्रान्तः ।

On page 148 we meet with the remark of Kshirasvāmin that Mālākāra was led astray by mistaking सर for शर in Bhāguri's statement :—एतच्च शरं शरम् and that this author, i.e. Amarasimha, was in his turn misled by the latter. It is thus clear that in the opinion of Kshirasvāmin Bhāguri and the Mālākāra preceded Amarasimha. It may be pointed out here that the author of the Mālā is not only frequently quoted as an authority, but is sometimes adversely criticized by Kshirasvāmin.

Sāsvata, as it contains Anekārtha Samuchchaya only, is an incomplete work though frequently quoted by Kshirasvāmin. It is nevertheless much fuller than Amarasimha's Nānāarthavarga, though in some places both agree word for word, e.g. मनु and मनुष्य. On these grounds the Sāsvata may be regarded as a later work than the Amarakosha. According to the last verse in Prof. Zachariae's edition :—

महाबलेन कविना वराहेण च धीमता । सह सम्यक् परामृश्य निमित्तोऽयं प्रयत्नतः ॥

it was composed in consultation with Varāha who may be identified with Varāhamihira. On page 118 Amarasimha says that आतिथ्य means अतिथ्यर्थ, while Kātya and Mālā say that आतिथ्यः means अतिथिः. Kshirasvāmin adds that :—शाश्वतोऽयं एवोभयनाह 'for this very reason Sāsvata gives both the meanings'. This constitutes a further proof of Sāsvata's posteriority to Amarasimha.

The next authority quoted by Kshirasvāmin is Durga who together with Bhoja are his latest authorities. The Vedic Nighantu is twice quoted. The Amaramālā is thrice quoted though we know nothing as to its age and authorship. The Nāmamālā is thrice or four times quoted. Some quotations appear on pp. 72, 75 and 169 which are ascribed to Rudra by Bhānuji Dikshita.

Among the commentators on Amarakosha, who preceded Kshirasvāmin, are Upādhyāya, Gauda and Bhoja. According to

Kshiresvara Mahādeva at Kākupada near Kanoj. In his commentary, on page 47, he enumerates all the well-known towns situated in Central India. This circumstance may also be taken as confirmatory of the view that he was not a native of Southern India, but belonged to Central India.

A list of authorities quoted by him is given below :—

*Lexicographical Authorities.*

- |                         |                    |
|-------------------------|--------------------|
| 1 Kātya                 | 9 Abhidhānakāra.   |
| 2 Muni                  | 10 Abhidhānashesha |
| 3 Bhāguri               | 11 Anekārtha       |
| 4 Mālā and the Mālākāra | 12 S'riharsha      |
| 5 Nighantu (Vedic)      | 13 Durga           |
| 6 S'āsvata              | 14 Bhoja           |
| 7 Amaramālā,            | 15 Rudra.          |
| 8 Nāmāḥ                 |                    |

*Commentators.*

- |             |             |
|-------------|-------------|
| 1 Upādhyāya | 4 Achāryāh  |
| 2 Gauda     | 5 Nārāyanah |
| 3 Bhoja     | 6 Tikā.     |

*Medical Authorities.*

- |   |                  |
|---|------------------|
| 1 Susruta and Sausrutāh                   | 6 Indu           |
| 2 Vaidyāh (chiefly Charaka)               | 7 Chandranandana |
| 3 Dhanvantari and his Nighantu (medical), | 8 Dhātuvidah     |
| 4 Vāhala or Vāgbhaṭa                      | 9 Nimih          |
| 5 Chandra                                 | 10 Haramekhalam. |

Kesava in his Kalpadruma enumerates the Koshakāras thus:—

काश्याचस्पतिव्याडिभाग्यमरमद्ग(क)लाः । साहसङ्कमहेशाया विजयन्ते जिनान्तिमाः ॥

If the order, in which Kesava enumerates the names, may be taken as chronological, Kātya necessarily stands as foremost in time. He is cited with great respect and so often by Kshirasvāmin as to suggest his priority to Amarasimha. We are told that the year begins with Hemanta :—हेमन्तादि वत्सरस्यारम्भः, and Kshirasvāmin cites Kātya as his authority thus :

आदाय मागंतीर्षाच द्वे द्वे मासावतुः स्युतः । ( p. 23 )

## INTRODUCTION

Amarasinha's lexicon well-known to every Sanskrit student, is the oldest work of the kind now extant. It is of great interest to note that, though the production of a Buddhist, it has been universally accepted as an authority by the Brahmans and the Jainas alike. The fact that it has been commented upon by Buddhists like Subhâtichandra, by Jainas like Asâdharapandita and Nâchirâja, and by Brahmans like Kshirasvâmin, Mallinâtha\* and Appayyâdikshita testifies to its usefulness to every class of Sanskrit students. It is a well-known fact that translations of the Amarakosha into Chinese and Thibetan have been recently discovered.

Many commentaries on the Amarakosha have been published, the most well-known of these being the one by Mahesvara and the other called Vyâkhyâsudhâ by Bhânûjî-Dikshita. But the oldest and most important commentary now extant is the one by Kshirasvâmin which is here offered to Sanskrit scholars. Its interest mainly lies in the fact that Kshirasvâmin quotes numerous authorities, sometimes without naming them, in support of his statements. The date of this commentator is now known. He quotes Bhoja and is quoted by Vârdhamâna in the Ganaratnamahodadhi, and therefore belongs to the second half of the eleventh century. He was a man of profound learning, proofs of his erudition being found on every page. His works will be noticed in the Notes. He appears to have been a native of Central India from his use of the words प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, &c. His attachment to Râjasekhara and to Sri Bhoja makes this view highly probable. His mention of many words as Desi, which are really found in the Hindi and other Northern dialects, points to the same conclusion. Kshirasvâmin was a devotee of Sîva, as is obvious from the introductory verse and other indications in the commentary, and his name seems to have been suggested by the god

---

\* Mallinâtha's commentary is called Amrapadapârijâtam.

C—No. 332 of 1875-76. This Ms. is a new copy and contains the text and the commentary on the 1st Kānda and the first two *vargas* of the 2nd. It is said to be one of the Kāshmere collections. It is full of mistakes.

D—No. 273 of 1880-81. The age of the Ms. is Samvat. 1812 i. e. 1756 A. D. It is complete and probably copied from the same original as A. It is, unreliable, as the copyist interpolates not only extraneous information, but his own information and that from later commentators as well. It is very incorrect and the copyist is very careless.

E—No. 505 of 1884-87. This Ms. is correct and reliable, but it contains the text and the commentary only on the 1st Kānda.

F—No. 506 of 1884-87. This Ms. does not contain the text and the commentary on the 1st Kānda and the first four *vargas* of the 2nd. It is otherwise reliable and tolerably correct. It is very old and the copyist is somewhat careful.

N. B.—Besides omissions and additions of letters, *ह्रस्व* for *दीर्घ* a *Mātrā* for *anustrāra* and a line for *Visarga* are very frequent in the Manuscripts. The letters य for प or प for य, व for च or च for व, श for स or स for श, द for ड or ड for द, न for र or र for न, &c. are met with on every page.

---

## PREFACE.

—:0:—

My object in bringing out the edition of Amarakosha with Kshirasvâmin's Commentary is to make this valuable commentary easily accessible to Sanskrit scholars. I have succeeded in tracing many quotations met with in this commentary to their original sources. Still there are some quotations which I have not been able to verify and there remain some difficulties which I could not solve. These latter have been shown in the Notes and in Appendix I. My acknowledgments are due to Prof. K. B. Pathak and Sirdar K. C. Mehendale for the help which I have received from them in the course of this work. I must also tender my thanks to Dr. G. K. Garde for his kindness in supplying the interesting reference to Saka kings in the Ashîngasangraha of Vâgbhata.

POONA

March, 1913.

K. G. OKA.

This edition of Amarakosha with the commentary of Kshirasvâmin has been prepared from the following Manuscripts from the Deccan College collections :—

A—No. 88 of 1871-72. The age of the Ms. is Samvat 1678 i. e. 1622 A. D. It is very old and tolerably correct. It contains the text and the commentary on the 2nd and 3rd Kândas and not on the 1st, as the first 52 leaves of the copy are wanting. It is reliable, though the copyist is somewhat careless.

B—No. 333 of 1875-76. The age of the Ms. is Samvat 1690 i. e. 1634 A. D. It is complete and comes from Jaipur. It is very reliable, as the copyist never interpolates extraneous information. It is, therefore, taken as basis in preparing the present Edition.



---

---

Printed and published at the "LAW PRINTING PRESS."

449 Chauwar Peth, Poona City by

D. G. KHANDEKAR.

---

---

THE  
NÂMALINGÂNUSÂSANA

(AMARAKOSHA)

OF

AMARASIMHA

With the Commentary (Amarakoshodghâṭana.)

OF

KSHÎRASVÂMIN,

---

*Edited with critical Notes, an Essay on the time of Amarasimha  
and Kshîrasvâmin, a list of works and authors  
quoted, glossary of words, &c. &c.*

BY

KRISHNAJI GOVIND OKA,

*Late Sanskrit Teacher,*

D. E. S., POONA.

---

POONA.

---

1913.

---

Price Rs. 3-8.



11  
13  
17.36  
710 4

---

THE  
NÂMALINGÂNUSÂSANA  
( अमरकोष )

OF  
AMARASIMHA

with the Commentary ( Amarakoshodghatana. )

OF  
KSHÎRASVÂMIN.

---

PK

925

A53

1913a







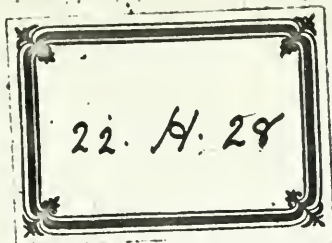


417-36.  
(The) Na'malingamsha'sana. — (संस्कृत). The work of Amarasinh  
with Kahirawamin's commentary. pp. 200. Edited with critical  
notes, an Essay on Amarasinh and Kahirawamin, etc., and published  
by Krishnaji Govind Oka, Poona. [1st Apr. 1913]. Royal 8vo. 1st  
edition.

Price, Rs. 2.

1011/19

1722.



INDIA OFFICE LIBRARY.

*This book is due for return on or before the  
date last marked below unless it has been  
renewed in accordance with the Library Rules*

---

AT 17 MAR 1858

---





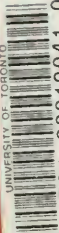








UNIVERSITY OF TORONTO



3 1761 00012041 0